GOVT. COLLEGE, LIBRARY
KOTA (Raj.)

इंगलैंड का सामाजिक इतिहास

लेखक

जी. एम. ट्रेवेल्यन

अनुवादक

रामपाल सिंह गौड़

यशदेव शल्य

आनन्द काश्यप

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आ
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
मानक ग्रंथ योजना के अन्तर्गत प्रका

© भारत सरकार

प्रथम हिन्दी संस्करण, २००० प्रतियाँ

अगस्त, १९६[illegible]

The English Language Book Society and Longmans, London द्वारा प्रकाशित 'ENGLISH SOCIAL HISTORY' by G. M. Trevelyan, Edition of 1962 से अनूदित।

प्रस्तुत पुस्तक वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
की मानक ग्रंथ योजना के अन्तर्गत, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार के शतप्रतिशत अनुदान से
प्रकाशित हुई है।

मूल्य : १५ रुपए

प्रकाशक : सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर।

मुद्रक : शर्मा ब्रदर्स इलैक्ट्रोमेटिक प्रेस,
अलवर।

प्रस्तावना

हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि इनमें उच्चकोटि के प्रामाणिक ग्रन्थ अधिक से अधिक संख्या में तैयार किए जाएँ। भारत सरकार ने यह कार्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के हाथ में सौंपा है और उसने इसे बड़े पैमाने पर करने की योजना बनाई है। इस योजना के अन्तर्गत अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं के प्रामाणिक ग्रन्थों का अनुवाद किया जा रहा है तथा मौलिक ग्रन्थ भी लिखाए जा रहे हैं। यह काम अधिकतर राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों तथा प्रकाशकों की सहायता से प्रारम्भ किया गया है। कुछ अनुवाद और प्रकाशन कार्य आयोग स्वयं अपने अधीन भी करवा रहा है। प्रसिद्ध विद्वान और अध्यापक हमें इस योजना में सहयोग दे रहे हैं। अनूदित और मौलिक साहित्य में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत शब्दावली का ही प्रयोग किया जा रहा है ताकि भारत की सभी शिक्षा संस्थाओं में एक ही पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर शिक्षा का आयोजन किया जा सके।

श्री जी. एम. ट्रेवेल्यन कृत 'इंगलिश सोश्यल हिस्ट्री' का हिन्दी रूपान्तर 'इंगलैंड का सामाजिक इतिहास' शीर्षक के अन्तर्गत राजस्थान विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। सर्वश्री रामपाल सिंह गौड़, यशदेव शल्य, और आनन्द काश्यप ने इसका अनुवाद किया है। मूल पुस्तक भारतीय विश्वविद्यालयों में इतिहास की स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए एक लोकप्रिय निर्धारित/अनुमोदित पाठ्य पुस्तक है। आशा है कि भारत सरकार द्वारा मानक ग्रन्थों के प्रकाशन सम्बन्धी इस प्रयास का सभी क्षेत्रों में स्वागत किया जायगा।

बाबूराम सक्सेना

अध्यक्ष

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली,

३० जून, १९६[illegible]

आमुख

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि हमारे विश्वविद्यालय के तत्वावधान में सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र की ओर से श्री जी. एम. ट्रेवेल्यन कृत सुप्रसिद्ध ग्रंथ "इंगलिश सोश्यल हिस्ट्री" का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। यह ग्रंथ भारतीय विश्वविद्यालयों में इतिहास की स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए एक निर्धारित/अनुमोदित पाठ्य ग्रंथ के रूप में दीर्घकाल से स्वीकार किया गया है। इसमें चौदहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक (चासर के काल से विक्टोरिया के शासनकाल के अन्त तक) के अंग्रेजों के समाज के विभिन्न पक्षों का विस्तारपूर्वक एवं सूक्ष्म विवेचन किया गया है। वर्तमान इंगलैंड की सुदृढ़ औद्योगिक अर्थव्यवस्था और संसार-प्रसिद्ध लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली के क्रमिक विकास की पार्श्वभूमि में जो सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक परिस्थितियां कार्यरत रही हैं उनका अत्यधिक गहन एवं रोचक विश्लेषण इस कृति की विशिष्टता है। अतः विद्वानों तथा जनसाधारण दोनों ही वर्गों के लिए इसकी उपयोगिता निर्विवाद है। आशा है ऐसे प्रामाणिक और उपयोगी ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित हो जाने से सम्बन्धित साहित्य में निश्चय ही सम्यक् योगदान हो सकेगा।

पुस्तक का अनुवाद सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र के अधिकारियों, सर्वश्री रामपाल सिंह गौड़, यज्ञदेव शल्य और आनन्द काश्यप ने किया है। अनूदित पाण्डुलिपि का पुनरीक्षण भी केन्द्र में किया गया है।

राजस्थान विश्वविद्यालय भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग एवं शिक्षा मंत्रालय के प्रति आभारी है कि उन्होंने ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ का हिन्दी संस्करण प्रकाशित करने का उसे अवसर दिया। मैं डा. शान्तिप्रसाद वर्मा, अवैतनिक निदेशक, सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र, का भी आभारी हूँ जिनके मार्गदर्शन में पुस्तक को प्रस्तुत रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था हुई है।

जयपुर,
५ जुलाई, १९६८

मुकुट बिहारी माथुर
उपकुलपति
राजस्थान विश्वविद्यालय

विषय-सूची

अनुवादक

अध्याय	१	से	८	...	श्री यशदेव शल्य
अध्याय	९	से	१३	...	श्री रामपाल सिंह गौड़
अध्याय	१४	से	१८	...	श्री आनन्द काश्यप

प्राक्कथन

यद्यपि मैंने इस पुस्तक को अभी इधर हाल (१६४१) तक की प्रकाशित पुस्तकों के प्रकाश में अद्यतन काल तक लाने का प्रयत्न किया है, किन्तु यह, लगभग सम्पूर्ण, युद्ध से पहले ही लिखी गयी थी। तब मेरा विचार रोम के काल से हमारे युग तक का इतिहास लिखने का था, किन्तु अन्त में मैंने वह भाग छोड़ दिया जो मुझे बहुत कठिन प्रतीत हुआ, यानि चौदहवीं शताब्दी से पहले की शताब्दियों तक का। युद्ध ने मेरे लिए कार्य समाप्त करना असम्भव कर दिया है, किन्तु मुझे यह लगा कि जो अध्याय मैंने समाप्त कर लिये हैं वे निरंतर छः शताब्दियों की कथा कहते हैं, अर्थात् चौदहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक की, और परिणामतः कुछ पाठक इसका स्वागत कर सकते हैं।

नकारात्मक पदावली में, सामाजिक इतिहास की इस प्रकार से परिभाषा की जा सकती है कि, यह एक जाति का ऐसा इतिहास होता है, जिसमें राजनीति का भाग छोड़ दिया जाता है। सम्भवतः किसी भी जाति के इतिहास से राजनीति का भाग छोड़ना कठिन कार्य है, किन्तु इंगलिश जाति के इतिहास से इसे अलग करना विशेष रूप से कठिन है। तो भी, क्योंकि कितनी ही इतिहास की पुस्तकों में केवल राजनैतिक इतिवृत्तों का ही आख्यान किया गया है और उनके सामाजिक परिवेश की कोई चर्चा नहीं की गयी है, इसलिए इस विधि का व्यतिक्रम (उलट) इस असन्तुलन के उपचार के रूप में उपयोगी रहेगा। मेरे अपने जीवन-काल में एक तीसरा अत्यन्त समृद्ध प्रकार का इतिहास अस्तित्व में आ गया है—अर्थात् आर्थिक इतिहास—जोकि सामाजिक इतिहास के गम्भीर अध्ययन में बहुत सहायक हो सकता है। वास्तव में सामाजिक चित्र आर्थिक परिस्थितियों में उभरता है, बहुत कुछ उसी प्रकार से राजनैतिक घटनाएँ सामाजिक परिस्थितियों में से जन्म लेती हैं। सामाजिक इतिहास के बिना आर्थिक इतिहास बंजर है और राजनैतिक इतिहास अबोधगम्य।

किन्तु सामाजिक इतिहास केवल आर्थिक तथा राजनैतिक इतिहास के बीच अपेक्षित कड़ी का कार्य ही नहीं करता है, इसका अपना एक निजी मूल्य तथा विशिष्ट लक्ष्य भी होता है। इसकी अवधि (स्कोप) इस प्रकार से परिभाषित की जा सकती है कि यह किसी देश के प्राचीन निवासियों के दैनिक जीवन का चित्रण है, और इस दैनिक जीवन की सीमारेखा में मानवीय सम्बन्धों एवं विभिन्न वर्गों के परस्पर आर्थिक

सम्बन्धों का, परिवार तथा घर के स्वरूप तथा लक्षणों का, श्रम तथा विश्राम सम्बन्धी स्थितियों का, मनुष्य के प्रकृति के प्रति रवैये का, और प्रत्येक युग की उस संस्कृति का जो जीवन की इन सामान्य परिस्थितियों में से जन्म लेती रही है तथा धर्म, साहित्य, संगीत, शिल्प, विद्या और दर्शन के क्षेत्रों में निरंतर परिवर्त्तमान रूप लेती रही है, समावेश किया जा सकता है।

हम प्रत्येक अनुक्रमागत युग के लोगों के वास्तव जीवन को कहाँ तक जान सकते हैं? इतिहासज्ञों तथा पुरातत्वविदों ने अपने अध्यवसाय पूर्ण अध्ययनों से बहुत विशाल ज़ानकारी एकत्र करली है और असंख्य आलेख, चिट्ठी-पत्र और पत्रिकाएँ सम्पादित की हैं। यह इतनी सामग्री है जितनी कम से कम आधे जीवन-काल तक किसी को भी अध्ययन-व्यस्त रखने के लिये पर्याप्त हैं। तो भी यह ज्ञान-भंडार भी सम्पूर्ण सामाजिक इतिहास की तुलना में बहुत अल्प है, जिसका सम्यक् ज्ञान तभी सम्भव है यदि हम उन करोड़ों व्यक्तियों—स्त्रियों, पुरुषों, बच्चों—की जीवनियों से परिचित हों जो इंगलैंड में इन सब युगों में रहे हैं। समाज-इतिहासकार, जो प्रायः साधारणीकरण करते हैं, उनका ऐसी थोड़ी सी विशिष्ट घटनाओं पर निर्भर करना अनिवार्य है जिन्हें प्रतिनिधि प्रकार का मान लिया जाता है, किन्तु वास्तव में पूर्ण सत्य इन से कहीं अधिक जटिल होता है।

और जबकि यह संग्रहीत ज्ञान-भंडार विषय की विशालता की तुलना में बहुत अल्प है, तब उस सामग्री की दयनीय अल्पता का तो कहना ही क्या जिसका उपयोग मैंने उस अल्प मात्रा में से भी चयन कर इस केवल २,००,००० शब्दों की पुस्तक में किया है। इससे पूरी छः शताब्दियों के इंगलैंड के वैविध्यपूर्ण तथा अद्भुत जीवन का विवरण देने के इस प्रयत्न की सीमाएँ स्पष्ट हैं। तो भी, ग्रास का अत्यल्प भाग, रोटी बिलकुल भी न होने से तो, अच्छा ही है। यह कम से कम भूख को तो चमकाएगा ही। यदि यह पुस्तक कुछ लोगों को प्राचीन साहित्य और आलेख पढ़ने के लिए थोड़ा और उत्सुक कर सकती है तो मैं समझूंगा कि इसका प्रयोजन सिद्ध हुआ।

निर्लिप्त बौद्धिक कौतूहल वास्तव में सभ्यता का प्राण है। सामाजिक इतिहास इसके सर्वोत्तम रूपों में से एक है। मेरे विचार में, मूलतः इतिहास का आकर्षण कल्पनात्मकता में है। हमारी कल्पना हमारे पूर्वजों को उनके असली रूप में देखने की आतुरता अनुभव करती है—उनके दैनिक कार्य-व्यवहार में तथा दैनिक सुख-दुख में। कार्लाइल ने पुरातत्वविद् अथवा इतिहासकार को "नीरस" कहा है। यह "नीरस" वास्तव में हृदय की गहरी तहों में एक कवि है। पुरालेखागार में उसे एक काव्य दिखाई देता है, चाहे वह उसे अपने पड़ोसी पर व्यक्त न ही कर पाए। किन्तु उसके जीवन की मुख्य प्रेरणा अतीत जीवन के याथार्थ्य का अनुभव करने की उत्कण्ठा, "विनष्ट काल के पुराख्यानों" के साथ परिचय की वासना है—"मृत नायिकाओं के लिए तथा हत योद्धाओं के लिए।"

स्कॉट आरम्भ में शुष्क पुरातत्वविद् ही था, क्योंकि उस प्रकार से वह अपार काव्य तथा अनन्त रोमांस की उपलब्धि कर सका था। वास्तव में साहित्य के सम्पूर्ण क्षेत्र में वह शुष्क पुरातत्वविद् का सबसे बड़ा समर्थक है। उसने, एक कमाल अत्युक्ति के साथ, कहा कि पुरातत्वविद् मानव के अतीत के सम्बन्ध में जो एक क्षुद्रतम तथ्य का भी उद्घाटन करता है वह शैले के सम्पूर्ण काव्य से अधिक कवितामय तथा स्कॉट के काव्य के सम्पूर्ण रोमांस से अधिक रोमांस पूर्ण है।

"अतीत" इस एक शब्द में जो कुछ निहित है उसकी ओर ज़रा ध्यान दें। कितना व्यथा-जनक, पवित्र और सर्वथा एक कवितामय अर्थ इसमें निहित है, एक ऐसा अर्थ जो उतना ही अधिक निखरता जाता है जितना गहरा हम इस अतीत की अतलता में बूड़ते हैं। उसी अतीत के और अधिक गहरे अतल में झांकना हमारे लिये आवश्यक हो जाता है। अन्ततः, इतिहास एक सच्ची कविता है, और यथार्थ, यदि इसकी सही व्याख्या की जाए तो, गल्प से कहीं अधिक समृद्ध और भव्य है।

इतिहास का विस्तृत अध्ययन ही हमें यह अनुभूति देता है कि अतीत उतना ही वास्तव था जितना कि वर्त्तमान है। संसार यह समझता है कि हम इतिहासज्ञ लोग मृत अतीत के धूल भरे आलेखों में खोए रहते हैं, कि हम अन्य कुछ नहीं देख पाते सिवाय—"जब तुम नदी का कुहरा देखते हो, तब धुंधलके में लिपटे, किरणों से अस्पृश्य प्रेत, परले किनारे पर मूर्त्त होते हैं।"

किन्तु जब हम पुरालेखों को पढ़ते हैं तब ये प्रेत हमारे लिये रूप, रंग, चेष्टाओं, वासनाओं तथा विचार-समन्वित होकर सजीव हो उठते हैं, केवल अध्ययन ही ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपने निकट तथा सुदूर अतीत के पूर्वजों को देख पाते हैं, जो पूर्वज उन पुराने युगों में दैनिक कार्य-व्यस्त रहते थे, श्रद्धांजलि अर्पित करने अथवा मतदान करने जाते थे, अथवा पड़ौसी के खेत-स्थित घर पर अधिकार करने तथा उसकी रखवाली करने वाले को उठा ले जाने के लिये जाते थे, अथवा पैटीकोटों वाली (अभिजात वर्ग की (अनु०)) नायिकाओं को पत्र पहुँचाने जाते थे। और पुनः, "किसानों से आपूरित विशाल-सुन्दर खेत" हैं। सन्ततियों के बाद सन्ततियाँ आईं, और बैलों के पीछे, अथवा घोड़ों के पीछे, अथवा मशीन के पीछे कृषक है और पीछे घर पर है उसकी पत्नी, सारा दिन कार्य-व्यस्त, दिन भर के समाचारों के अपने दैनिक बजट के साथ तैयार।

प्रत्येक भला और सरल, अपनी साधारणतम गतिविधियों में भी प्रथा तथा विधान के, समाज तथा राजनीति के और देश-विदेश की घटनाओं के, जिन्हें कि वह न जानता था और न समझता था, एक अत्यन्त जटिल और निरन्तर बदलते ताने-बाने से शासित था। हमारा प्रयत्न केवल उसके परिचित व्यक्तित्व की कुछ झांकियां भर प्राप्त कर लेना नहीं है प्रत्युत प्रत्येक बीतते युग के सम्पूर्ण ताने-बाने की पुनारचना

करना तथा यह देखना है कि वह व्यक्ति किस प्रकार से उसे प्रभावित करता था; और कुछ अर्थों में उन परिस्थितियों को, जो उसे परिवेष्टित कर उसका नियमन करती थीं, स्वयं उससे भी अधिक अच्छी तरह से समझना है।

सभ्य मानव को पशु-कल्प से पृथक् करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व यह चेतना है कि हमारे पूर्वज वस्तुतः किस प्रकार के थे, और इस विस्मृत अतीत का विविध-वर्णी चित्र क्रमशः पुनारचित करना है। आज के इस वैज्ञानिक युग में तारों को तोलना, अथवा जहाज़ों को हवा या सागर में तैराना उतना विस्मयजनक और उदात्तता देने वाला नहीं है जितना चिरविस्मृत घटनाओं का क्रम जानना तथा उन स्त्री-पुरुषों के वास्तव स्वभाव को जानना है जो यहाँ हमारे से पहले हो गये हैं।

ऐतिहासिक अध्ययन की कसौटी सत्य है, किन्तु इसमें प्रेरणा-स्रोत काव्यात्मक है। इसकी कविता इसके सत्य होने में निहित है। इसमें हम इतिहास के वैज्ञानिक तथा साहित्यिक दृष्टिकोणों का समन्वय पाते हैं।

किन्तु इस समय हमारे पूर्वजों के सम्बन्ध में हमें बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, इसलिये इस पुस्तक में बहुत सी कड़ियां कल्पित करना आवश्यक है। ऐसी अवस्था में यह विचारणीय है कि किस प्रकार से यह कहानी सबसे बढ़िया ढंग से कही जा सकती है। यह इतिहास राजनैतिक इतिहास के जाल के समान प्रसिद्ध राजाओं, शासन-सभाओं तथा युद्धों के नामों के कंकाल के चारों ओर नहीं बुना जा सकता। समाजिक विकास पर उनका प्रभाव वास्तव में ही होता है, जिसको प्रायः ही ध्यान में रखना आव-श्यक है। शुद्धतावादी (प्यूरिटन) क्रान्ति तथा उसका शमन दोनों घटनाएँ सामाजिक भी थीं और राजनैतिक भी। किन्तु, सब मिल कर, सामाजिक परिवर्तन की गति अन्तः सलिला के समान होती है, जो राजनैतिक घटनाओं का अनुसरण करने के बजाय, जो प्रायः सत ही होती हैं, या तो अपने ही नियमों का अनुसरण करती है अथवा आर्थिक परिवर्तन के नियमों का अनुसरण करती है। राजनैतिक घटनाएँ प्रायः सामाजिक परिवर्तन की परिणाम होती हैं, कारण नहीं। एक नया राजा, नया प्रधानमंत्री अथवा नयी शासन-सभा प्रायः ही राजनीति में एक नये युग का प्रवर्तन करते हैं, किन्तु शायद ही कभी ये लोक-जीवन को प्रभावित कर पाते हों।

तब फिर यह कथा किस प्रकार से कही जाय? किन काल-भागों में सामाजिक इतिहास को बांटा जाय? जब हम दृष्टि फेर कर इसकी ओर झांकते हैं तब हम जीवन का एक सुतरां प्रवहमान स्रोत देखते हैं, जिसमें एक निरन्तर क्रमिक परिवर्तन हो रहा है, किन्तु कभी कभी ज्वारभाटा भी आता है। इनमें महामारी शायद एक है और दूसरा है औद्योगिक क्रान्ति। किन्तु औद्योगिक क्रान्ति कई पीढ़ियों तक व्यापक है, इसलिये उसे उचित रूप से ज्वारभाटा या घटना नहीं कहा जा सकता। यह महामारी के समान जीवन-सरिता के आरपार आ गिरी कोई आकस्मिक बाधा नहीं है जिसने कुछ काल के

लिये इसकी गति को दिशान्तरित कर दिया हो, प्रत्युत इस सरिता की ही एक अन्तः-प्रवाहित धारा है।

राजनैतिक इतिहास में एक समय में एक ही राजा शासन करता है, एक समय में एक ही शासन-सभा बैठती है। किन्तु सामाजिक इतिहास में हम एक ही देश, एक ही मण्डल तथा एक ही नगर में एकसाथ विभिन्न प्रकार की अनेक सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं को साथ-साथ कार्य करते हुए पाते हैं। उदाहरणतः, कृषि के क्षेत्र में हम एकसाथ ही ऐंग्लो-सेक्सनों की, १८वीं शताब्दी में प्रचलित खुले क्षेत्रों की कृषि-व्यवस्था, अत्यन्त प्राचीन कैल्टों के ढंग से आवेष्टित खेत तथा आर्थर यंग द्वारा स्वीकृत वैज्ञानिक ढंग से कर्षित आधुनिक आवेष्टनात्मक कृषि (स्ट्रिप कल्टीवेशन) साथ साथ पाते हैं। ऐसी ही बात विभिन्न औद्योगिक तथा व्यापारिक संगठनों की है—सदियों से घरेलू दस्तकारी, व्यावसायिक शिल्प तथा पूंजीवादी व्यवस्था साथ साथ कार्य करते दिखाई देते हैं। सब चीज़ों में पुराना नये का अतिच्छादन करता है—धर्म, विचार पारिवारिक परम्पराएँ, सभी में। कभी एकदम स्पष्ट विभाजन नहीं होता, कोई ऐसा एक क्षण नहीं है जब सब अंग्रेज़ लोग नयी विचार-विधियां और दर्शन अपनाते हों।

ऐसी वस्तुस्थिति होने से, मुझे ऐसा लगा है कि यह कहानी इस ढंग से कहना सब से बढ़िया रहेगा जैसे जीवन रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है, अर्थात् काल-व्यवधानों के साथ दृश्यों की एक शृंखला प्रस्तुत करना। एक दृश्य तथा उसके अनुगामी दृश्य में बहुत कुछ समान भी होगा, जैसे चासर के युग में तथा कैक्स्टन के युग में, डा० जॉनसन के युग में तथा कोब्बैट के युग में—किन्तु इनमें बहुत कुछ भिन्न भी होगा।

किसी भी काल का सही चित्र प्राप्त करने के लिये नये तथा पुराने दोनों प्रकार के तत्वों को ध्यान में रखना आवश्यक है। कभी कभी, अतीत के किसी समय विशेष का मानसिक चित्र बनाते हुए लोग नये लक्षणों को पकड़ लेते हैं और उसमें अति-व्याप्त पुरातन को भूल जाते हैं। उदाहरण के लिये, इतिहास के विद्यार्थी पीटरलू के जनसंहार की कुख्यात राजनैतिक घटना से प्रायः इतने अभिभूत हो जाते हैं कि वे समझते हैं कि लंकाशायर फैक्टरी-मज़दूर १८१९ का एक प्रतिनिधि श्रमिक था, किन्तु वास्तव में वह नहीं था, वह केवल एक स्थानीय प्रकार का प्रतिनिधि था, नवीनतम प्रकार (टाइप), भविष्य की एक प्रतिकृति। कठिनाई यह थी कि शेष समाज, जो प्रतिशासन (रीजेंसी) काल के पुराने सांचे में ढला था, उस (नये श्रमिक) के आविर्भाव से आपातित परिवर्तन के साथ अपना सामंजस्य नहीं बैठा पाया था। उससे उन्हें चिढ़ होती थी, वे अपनी धारणाओं के संसार में उसके लिये कोई स्थान निश्चित नहीं कर पाते थे, क्योंकि वह तब उसमें संगत नहीं था, जैसाकि अब वह है।

इसलिये इस पुस्तक की विधि इंगलैंड के जीवन के दृश्यों की एक आनुक्रमिक कड़ी प्रस्तुत करना है, और इन दृश्यों में से प्रथम है चासर का जीवन-काल (१३४०-१४००)। यह मैं पहले ही स्वीकार कर चुका हूं कि इस पुस्तक के इस काल से

आरंभ होने का कारण व्यक्तिगत और आकस्मिक है। किन्तु वास्तव में आरंभ करने की दृष्टि से यह एक बढ़िया काल भी है। क्योंकि सर्वप्रथम चासर के काल में ही अंगरेज़ लोग एक जातीय और सांस्कृतिक समष्टि के रूप में स्पष्ट रूप से प्रकट हुए। घटक जातियां और भाषाएँ एक में घुल-मिल गयीं। अब उन्नत वर्ग फ्रांसीसी नहीं रहा था और न कृषक वर्ग ऐंग्लोसेक्सन : सब इंगलिश हो गये थे। इंगलैंड जब मुख्यतः बाहर के प्रभावों का गृहीता भर नहीं रह गया था। अब से वह अपने निजी प्रभाव उत्पन्न करने लगा था। इसने चासर, वाइक्लिफ, वाट्टेलर तथा इंगलिश नाविकों के युग में अपना निजी द्वीप, साहित्य-विधाएँ, धर्म, आर्थिक समाज तथा युद्ध निर्मित करने आरंभ कर दिये थे। इंगलैंड को रूप देने वाली शक्तियां अब विदेशी नहीं थीं प्रत्युत भीतरी ही थीं। उसकी प्रगति अब महान विदेशी पोपों तथा प्रशासकों की, सामन्तीय ज़मींदारों के फ्रांसीसी विचारों की, अंजोऊ (एक फ्रेंच प्रान्त (अनु०)) के वकील राजाओं की, फ्रेंच नमूने पर शिक्षित और शस्त्रसज्जित अश्व-सेना की तथा लेटिन प्रदेशों से आने वाले धर्म नेताओं की देन नहीं रही थी। अब से इंगलैंड ने अपने निजी प्ररूप तथा निजी परम्पराएँ विकसित करनी आरंभ कर दी थीं।

जब शतवर्षीय युद्ध में (१३३७-१४५३) "गॉड्डैम लोग" (जैसाकि जोन आफ़ ऑर्क उन्हें (अंग्रेज़ों को) घृणा से कहता था फ्रैंचों को विजित करने के लिये निकले तो वे वहां विदेशी आक्रमणकारियों के रूप में गये, और उनकी सफलता का कारण यह था कि वे एक राष्ट्र के रूप में संगठित थे और अपने एक राष्ट्र होने की उन्हें चेतना थी, जबकि फ्रांस में अभी यह चेतना नहीं थी। और आखिरकार जब वह विजय का प्रयत्न विफल हो गया तब इंगलैंड एक अपरिचित उपेक्षित द्वीप के रूप में यूरोपीय महाद्वीप से विच्छिन्न हो गया, और यूरोपीय संसार की केवल एक शाखा नहीं रह गया।

यह सच है कि हमारा एक विशिष्ट राष्ट्र के रूप में उद्भव नहीं हुआ। इसकी प्रक्रिया चासर के जीवन काल में न आरंभ हुई और न समाप्त हुई। किन्तु इन वर्षों में यह तत्व अधिक सक्रिय तथा स्पष्ट दिखाई देता है, बजाय उससे पहले की तीन शताब्दियों के, जबकि यूरोप की, इंगलैंड समेत, ईसाई तथा सामन्तीय सभ्यता राष्ट्रीय न होकर सार्वभौमिक थी। किन्तु चासर के काल के इंगलैंड में हम एक राष्ट्र को देखते हैं।

अध्याय १

चासर-कालीन इंगलैंड (१३४०-१४००)

खेत, गाँव तथा सामन्त-गृह

चासर काल के इंगलैंड में हम पहली वार आधुनिक को मध्ययुगीन में मिश्रित होता हुआ और इंगलैंड को स्वयं एक ऐसे स्वतंत्र-पृथक् राष्ट्र के रूप में उदित होता हुआ पाते हैं जो अब फ्रेंच-लेटिन यूरोप की एक शाखा मात्र नहीं रह गया था। वास्तव में कवि की अपनी कृतियां आधुनिकता के सवसे प्रमुख तथ्य को प्रस्थापित करने वाली थीं, वह था हमारी निजी भाषा का जन्म और उसका सामान्य रूप से स्वीकार, सेक्सन तथा फ्रांसीसी भाषाओं के शब्द आखिरकार सुष्ठुरूप से "इंगलिश वोली" में मिलते हुए, जिसे 'सव समझ सकते थे', और जो इस कारण से अव विद्यालीय शिक्षा तथा कानूनी काम-काज के लिये प्रयोग में लायी जा रही थी। वास्तव में उस समय वैल्श और कोर्निश जैसी पूर्णत: पृथक् वोलियों के अतिरिक्त अनेक प्रादेशिक वोलियां भी थीं। और समाज के कुछ वर्गों की एक दूसरी भाषा भी थी : सुपठित पादरियों की दूसरी भाषा लैटिन थी, दरवारियों तथा अभिजात वर्ग के लोगों की फ्रैंच थी, यद्यपि अव यह उनकी मातृ-भाषा नहीं थी किन्तु एक ऐसी विदेशीभाषा थी जो—

"वोवे के स्ट्रैट्फोर्ड स्कूल के पश्चात्"

सीखनी होती थी।

चासर के लिये, जिसका अधिकांश समय दरवार के परिवेश में ही गुज़रता था, फ्रेंच संस्कृति हस्तामलकवत् थी: इसलिये, जव उसने आधुनिक इंगलिश कविता का आने वाली अनेक शताब्दियों के लिये एक प्रतिमान स्थापित किया, तव उसके रूप और छन्द फ्रांस और इटली से लिये गये थे, जिन देशों में कि वह राज्य-कार्य से अनेक वार यात्रा कर चुका था। तो भी, उसने एक नया अंग्रेज़ी मुहावरा ईजाद किया था। उसी ने वास्तव में पहली वार "दि कैंटर्वरी टेल्ज़" में 'उपहास के अंग्रेज़ी रूप' को सम्यक् अभिव्यक्ति दी थी—एक चौथाई निन्दात्मक और तीन चौथाई सौहार्दपूर्ण—जिसके लिये हमें दान्ते, पेट्रार्च अथवा रोमेन ड' ला रोस की ओर देखने की आवश्यकता नहीं है, और जिसे हम वोकेक्स्यो अथवा फ्रोइस्सार्ट में भी नहीं पा सकते।

नवोदित जाति की अन्य विशेषताएँ इंगलैंड के एक धार्मिक रूपक "प्यर्स दि प्लौमैन" में व्यक्त हुई। यद्यपि वह भी एक विद्वान कवि था और अपने जीवन के

अधिकांश काल में वह लन्डन में ही रहा, किन्तु जन्म से वह मल्वर्न निवासी था और उसने ऐंग्लो-सेक्सन कविता से उत्पन्न एकांतरी मुक्त छन्द को अपनाया, जोकि उस समय पश्चिम प्रान्त में प्रचलित था। यह प्राकृत अंग्रेजी छन्द शीघ्र ही चासर के अन्त्यानुप्रासी छन्दों से स्थानान्तरित होने वाला था, किन्तु "प्यर्स दि प्लौमैन" की आत्मा हमारे पूर्वजों की धार्मिक श्रद्धा में, दूसरों के दुष्कृत्यों के प्रति उनके अविराम क्षोभ में, तथा अपने दुष्कर्मों के प्रति पश्चात्ताप में सदैव जीवित रही। अंग्रेज़ी शुद्धाचारवाद (प्यूरिटिनिज़म) सुधारवाद से कहीं अधिक पुराना है, और दो 'स्वप्नदर्शी'—प्यर्स दि प्लौमैन (हलचालक प्यर्स) तथा बुन्मन दि थिंकर (विचारक बुन्मन)—तीन शताब्दियों के अन्तर से होने वाले किन्हीं भी अन्य दो लेखकों की अपेक्षा कल्पना तथा अनुभूति में परस्पर अधिक निकट है।

जबकि लैंगलैंड तथा ग्रोवर ने, धर्म-विरोध किए बिना, मध्ययुगीन समाज तथा धर्म में व्याप्त भ्रष्टाचार पर आँसू बहाये और इसके उपचार के लिए एक नवीन और भिन्न भविष्य की ओर देखने के बजाय अतीत के आदर्शों की ओर देखा, तब वाइक्लिफ़ ने परिवर्त्तन का एक क्रान्तिकारी कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसका अधिकांश बहुत पीछे जाकर इंगलैंड के पादरी-विरोधी तथा धार्मिक रूढ़ीवाद-विरोधी आन्दोलनों द्वारा कार्यान्वित हुआ। इस कार्यक्रम का एक भाग था बाइबल का इंगलैंड की नयी बोली में अनूदित होना और सार्वजनिक होना। इन्हीं दिनों जॉन बाल ने मध्ययुगीन पदावली में एक अत्यन्त आधुनिक प्रश्न किया था—

जब आदम ने गुफ़ा खोदी तथा ईव ने ताना तना था
तब, उस समय कौन सभ्य-संस्कृत था ? —

क्योंकि आर्थिक क्षेत्र में भी मध्ययुगीनता आधुनिकता को स्थान दे रही थी और इंगलैंड अपने विशिष्ट सामाजिक वर्गों को विकसित कर रहा था। सामन्तीय जागीरदारियों का ध्वंस तथा इनमें चलने वाली अर्ध दास व्यवस्था की समाप्ति दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ चल रही थीं। विद्रोही किसानों की यह माँग, कि सभी इंगलिश लोग स्वतंत्र होने चाहियें, आज बड़ी सामान्य प्रतीत होती है, किन्तु तब यह एक नयी और विचित्र बात थी और यह विद्यमान सामाजिक व्यवस्था के मूल पर कुठाराघात करती थी। जिन कार्यकर्त्ताओं को पहले से इस स्वतंत्रता का वर प्राप्त था वे अधिक वेतन के लिए स्वीकृत आधुनिक इंगलिश पद्धति के अनुसार निरन्तर हड़तालें कर रहे थे। इसके अतिरिक्त, जिन नियोक्ताओं के विरुद्ध ये हड़तालें की जाती थीं वे मुख्य रूप से पुराने सामन्त नहीं थे, बल्कि पट्टावर कृषक, उत्पादन-कर्त्ता तथा व्यापारी थे। वस्त्र-उद्योग, जोकि भविष्य में प्रभूत धनार्जन का उपकरण बनने वाला था और इंगलैंड के समाज को एक नया रूप देने वाला था, एड्वर्ड तृतीय के काल में ही सागर पार के हमारे कच्ची ऊन के मध्ययुगीन व्यापार को तीव्रता से निगल रहा था और राज्य पहले से ही परस्पर स्पर्धी मध्ययुगीन नगरों के स्वार्थों में सामञ्जस्य स्थापित

करने का प्रयत्न कर रहा था, जिससे कि राष्ट्र के व्यापार की रक्षा तक, उसका नियंत्रण किया जा सके।

इस नीति को सफल बनाने के लिये समुद्री बेड़े का होना आवश्यक है और एड्वर्ड तृतीय का सोने का नया सिक्का उसे शस्त्र तथा मुकुट सहित जलपोत में खड़े हुए प्रदर्शित करता है।

राष्ट्रीय आत्म-चेतना अब उन स्थानीय वफादारियों को तथा कड़े वर्ग-विभाजनों को समाप्त कर रही थी जो सामन्त युग के सर्वदेशीय समाज की विशेषताएँ थीं और परिणामतः, फ्रांस को लूटने के लिये आरंभ किये गये सौ वर्षीय युद्ध में राजाओं और कुलीनों को नये प्रकार की शक्ति का समर्थन प्राप्त हो रहा था, यह थी आधुनिक प्रकार की प्रजातांत्रिक उद्धत देश भक्ति, जोकि सामंतीय राजनीति तथा युद्ध-विधि का स्थान ले रही थी। क्रेसी तथा एगिंकोर्ट में अब वे "बलिष्ठ अश्वारोही" धनुर्धर अपने देश के युद्ध में अगले मोर्चे पर थे जोकि इंगलैंड के अश्वारोही सरदारों और सामन्तों के साथ कंधे से कंधा मिला कर फ्रांस की पुरानी अश्वसेना का पुंज के पुंज हनन कर रहे थे।

शान्ति के पुरशासकों की संस्था, जोकि ताज द्वारा राजा के प्रतिनिधि के रूप में पड़ौसी प्रदेशों पर शासन करने के लिये नियुक्त की गयी थी, स्थानीय लोगों से ही निर्मित थी और इस प्रकार से यह उत्तराधिकार की सामंतीय परंपरा से विपरीत दिशा में एक कदम था। किन्तु यह अधिकारी तंत्रीय राज्यतंत्र की केन्द्रीकरण मूलक प्रवृत्ति के भी विपरीत दिशा में एक कदम था : इसने राजा के लाभ के लिये स्थानीय संपर्कों तथा प्रभावों को मान्यता दी और उनका उपयोग किया। यह एक ऐसा समझौता था जो इंगलिश समाज के (अन्य देशों के समाजों से पूर्णतः विशिष्ट समाज के रूप में) भावी विकास के लिये बहुत महत्वपूर्ण था।

ये सब आन्दोलन—आर्थिक, धार्मिक, राष्ट्रीय—पार्लियामेंट की कार्यवाहियों में झलकते थे, जोकि स्वरूपतः एक मध्ययुगीन संस्था थी, किन्तु जिसका आधुनिकीकरण आरंभ हो चुका था। यह अब केवल सामंतों, पादरियों, न्यायाधीशों तथा नागरिक अधिकारियों की समिति मात्र नहीं थी जिसका कार्य राजा को परामर्श देना अथवा उसे तंग करना था। लोकसभा अब अपने लिये एक सीमित स्थान बना रही थी। यह संभव है कि उच्चस्तरीय राजनीति में लोकसभा के सदस्य दरबार की प्रतिस्पर्धी पार्टियों की चालों में साधन मात्र बनते हों, किन्तु अपनी ओर से वे छोटे नगरों और गांवों के नये मध्यवर्गों की अर्थ-नीति को ही ध्वनित करते थे, और प्रायः ही इसमें वे अपने वर्ग-स्वार्थों से निर्देशित होते थे, वे जल और स्थल पर लड़े गये युद्धों के अयोग्य आयोजन पर राष्ट्र का रोष व्यक्त करते थे, और देश में योग्यतर व्यवस्था तथा उचिततर न्याय के लिये निरन्तर मांग कर रहे थे, जिसकी पूर्ति अभी ट्यूडर के काल तक नहीं होने वाली थी।

इस प्रकार से, चासर का युग अनेक आवाज़ों में बोलता है, जोकि आधुनिक काल के लिये दुर्बोध्य नहीं हैं। वास्तव में, यह संभव है कि हम उत्सुकतावश उससे अधिक समझ पाए होने की कल्पना करते हों जितना वास्तव में हम उसे समझते हैं। क्योंकि हमारे ये पूर्वज बौद्धिक, नैतिक तथा सामाजिक धारणाओं के ऐसे एक जटिल सम्मिश्र से निर्देशित थे जिसके वास्तव अभिप्राय को केवल मध्ययुगों के विद्वान् ही आज समझ सकते हैं।

चासर के जीवन-काल (१३४१-१४००) में हो रहे परिवर्त्तनों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन था सामन्ती दासत्व (मेनोर) की समाप्ति। खेती की पट्टेदारी तथा पैसे के रूप में वेतन की प्रथा दास-श्रमिक द्वारा स्वामी की जागीर की जोताई की प्रथा का स्थान ले रही थी, और इस प्रकार से इंगलिश गाँव का अर्धदासता से व्यक्ति-वादी समाज की ओर संक्रमण आरंभ हो चुका था, जिसमें सभी कम से कम वैधानिक रूप से, स्वतंत्र थे, और जिसमें पारस्परिक सम्बन्धों द्वारा स्थानान्तरित हो चुके थे। इस महान परिवर्त्तन ने गतिहीन सामंती संसार के ढांचे को तोड़ दिया और पूंजी, श्रम तथा व्यक्तिगत प्रयत्न की गतिशील शक्तियों को मुक्त कर दिया, जिसने कि कालानुक्रम में नागरिक तथा ग्रामीण जीवन को अधिक वैविध्यपूर्ण बना दिया और व्यापार, उद्योग तथा कृषि के क्षेत्र में नयी संभावनाओं के लिये पथ-प्रशस्त कर दिया।

इस परिवर्तन का अभिप्राय समझने के लिये यह आवश्यक है कि उस पुरानी व्यवस्था का भी संक्षिप्त विवरण दिया जाय जो धीरे धीरे स्थानान्तरित हो रही थी।

मध्ययुगीन इंगलैंड में जोताई का सर्वाधिक, यद्यपि एकमात्र नहीं, प्रचलित ढंग 'खुले खेत'[1] का था। यह वाइट के द्वीप से लेकर यार्कशायर की बंजर भूमियों तक सम्पूर्ण मध्यप्रान्तों में प्रचलित था। इस प्रथा के अनुसार, ग्राम एक समुदाय के रूप में विशाल, अविभाजित खेतों की जोताई अल्प खंडों के वितरण (स्ट्रिप एलाटमेंट) के सिद्धान्त पर करता था। प्रत्येक कृषक के पास एक या आध एकड़ के कुछ कृषि-योग्य खंड होते थे। उसके दीर्घ-संकीर्ण खंड एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए नहीं थे और इस प्रकार से वे एक संगठित खेत नहीं बनाते थे जिस पर कि बाड़ लगायी जाती, वे उसके पड़ोसियों के खंडों के बीच खुले मैदान में बिखरे होते थे।

सेक्सन तथा मध्ययुगीन ट्यूडर-स्टूअर्ट काल के कृषकों द्वारा जोते गये इन खंडों की बाह्य रूपरेखाएँ अब भी देखी जा सकती हैं। चरागाहों में दिखाई देने वाली 'मेढ़ें' तथा हल की रेखाएँ, जोकि कभी कृषि-योग्य भूमियां थीं, आज इंगलैंड के लैंडस्केप की यह सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। दीर्घ, उठानवाली तथा वर्तुल पीठ वाली 'मेढ़ें' अथवा 'भूमियां' नालों अथवा हल-रेखाओं के द्वारा एक-दूसरे से विभाजित थीं, जोकि

---

[1] द्रष्टव्य : इस प्रथा के उत्कृष्टतम विवरण के लिये सी. एस. ऑर्विन—दि ओपन फील्ड, (१९३८)।

हल के फले से पानी ले जाने के लिये बनाये गये थे।[२] टेढ़ी 'मेढ़' या 'भूमि', जोकि आज भी प्राय: ही स्पष्टत: दृष्टिगत होती है, उस 'खंड' की प्रतिनिधि है जो बहुत पहले किसी काश्तकार कृषक का था और जिस पर उसने हल चलाया था, और जिसके पास ऐसे और भी बहुत से खंड खुले क्षेत्र में थे। अधिकांश अवस्थाओं में ये खंड एक-दूसरे से घास की मेढ़ों द्वारा विभाजित नहीं थे बल्कि, हल द्वारा निर्मित खुली नाली से विभाजित थे।

ये खंड या खेत पृथक् पृथक् आवलयित नहीं थे। सम्पूर्ण विशाल 'खुला क्षेत्र', आवश्यकता होने पर, अस्थायी बाड़ों से घिरा रहता था। एक ही गांव के दो या तीन, या अधिक भी, कृषि योग्य 'क्षेत्र' हो सकते थे जो कृषकों में उपविभाजित रहते थे। इनमें से एक परती रहता था और शेष में बुवाई की जाती थी।

चारे के लिये चरागाहें भी इसी प्रकार से बोई जाती थीं। चरागाहें और कृषित क्षेत्र दोनों, चारा तथा फसल काट लेने के बाद ढोरों के चरने के लिये खुले छोड़ दिये जाते थे। प्रत्येक व्यक्ति के अपने पशु चराने के अधिकार ग्राम-समुदाय द्वारा सम्मिलित रूप से निश्चित किये जाते थे, जिससे प्रत्येक सदस्य के साथ न्याय किया जा सकता।

कृषि की यह व्यवस्था, जिसे कि आदि इंगलिश-सेक्सन आगन्तुकों ने जन्म दिया था, आधुनिक आलवाल की प्रणाली के आगमन तक जारी रही। जब प्रत्येक कृषक का उद्देश्य केवल अपने परिवार के उपभोग के लिये अन्न उत्पन्न करना था, विक्रय के लिये नहीं, तब यह प्रथा आर्थिक रूप से एक लाभप्रद प्रथा थी। इसमें व्यक्तिगत श्रम तथा सामूहिक नियंत्रण दोनों के लाभ सम्मिलित थे, इसमें बाड़ लगाने के व्यय से भी बचत थी, इसमें प्रत्येक कृषक को बढ़िया और घटिया दोनों प्रकार की भूमियों से उचित भाग मिलता था, यह व्यवस्था कृषकों को एक समुदाय के रूप में बांधती थी, यह दीनतम को भी भूमि का अपना स्वामित्व देती थी, और कृषि-नीति में उसका मत वर्ष भर के लिये सारे ग्राम को स्वीकार करना होता था।

काश्तकार कृषकों के इस प्रजातंत्र पर सामन्ती शक्ति तथा जागीर के स्वामियों के वैधानिक अधिकारों का बहुत भारी बोझ लदा हुआ था। ये काश्तकार कृषक, पारस्परिक सम्बन्धों में एक आत्मशासित समुदाय थे, किन्तु जागीरदार की सापेक्षता में वे

---

[२] डरोथी वर्ड्स्वर्थ के जर्नल के आरंभिक वाक्य, जोकि एक बरसाती रात के पश्चात् लिखे गये थे, सतह के नालों की इस व्यवस्था के स्वरूप तथा दृश्य का बड़ा सुन्दर चित्रण देते हैं। यह दृश्य एक समय इंगलैंड की कृषित भूमि पर सर्वत्र दिखाई देता था। एल्फोक्सडन, जनवरी २०, १७९८ "पर्वतों की उपत्यकाओं में हरित मार्ग जल-प्रवाह के पथ हैं। गेहूं के छोटे छोटे पौधे मेढ़ों के बीच से दौड़ती हुई जल की चांदी जैसी रेखा से कढ़े हुए से हैं।"

कृषिदास थे। उन्हें अपनी जोत की भूमि छोड़ने से वैधानिक मनाही थी—वे भूमि से निबद्ध थे। उनके लिये यह आवश्यक था कि वे अपना अनाज जागीरदार की चक्की से ही पिसाएँ। वे अपने बच्चों का विवाह उसकी आज्ञा के बिना नहीं कर सकते थे। सर्वोपरि, वर्ष के कुछ दिन उन्हें जागीरदार के प्यादे के आदेशानुसार उसकी भूमि पर कार्य करना पड़ता था। कुछ गांवों में बृहत् क्षेत्र के कुछ खंड जागीरदार के होते थे, किन्तु अधिकतर उसकी एक एकत्र जागीर भी होती थी।

दास कृषि की यह व्यवस्था, जिसमें जागीरदार की भूमि पर नियत दिन अवैतनिक कार्य करना अनिवार्य होता था, सारे इंगलैंड में प्रचलित थी। न केवल खुले क्षेत्रों की खंड-कृषि वाले प्रदेशों में ही, प्रत्युत दक्षिण पूर्व में, पश्चिम में तथा उत्तर में, पुराने घेरों की भूमियों में, जहांकि कृषि की भिन्न व्यवस्थाएँ प्रचलित थीं, सर्वत्र इसका प्रचलन था। नार्मन (फ्रैंचप्रदेश) के वकीलों ने जागीर के सामन्ती विधान को सारे इंगलैंड में ही समधिक एकरूप बना दिया था। नार्मन तथा आरंभिक प्लैंटेजेनेट के कालों में एक गाँव एक समाज था, जो एक ओर जागीरदार तथा उसके प्यादों आदि से तथा दूसरी ओर उसके कृषि-दासों से निर्मित होता था। स्वतंत्र लोग बहुत कम थे, विशेषतः डेन लॉ में।

किन्तु इंगलैंड में मध्ययुगीन कृषि का ठीक-ठीक रूप जानने के लिये हमें भेड़-पालन तथा गडरियों के जीवन को कभी नहीं भूलना चाहिये। हमारा द्वीप यूरोप में सर्वोत्तम ऊन उत्पन्न करता था और इसने शताब्दियों तक रोम तथा इटली की खड्डियों को कच्चामाल दिया, जो कि उनके लिये उच्चकोटि के उत्पादनों के लिये आवश्यक था और जो उन्हें अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता था। ऊनी थैला (वूल सैक), जो कि इंगलैंड के महाकोष के मंत्री की प्रतीकात्मक गद्दी था, इंगलैंड के राजा तथा उसकी प्रजा की वास्तव संपत्ति था, जो कि उन्हें भोजन के अतिरिक्त, जिसे कि वे भूमि से उपजाते थे और जिसका स्वयं ही उपभोग करते थे, पैसा प्रदान करता था। भेड़ें न केवल समृद्ध चरागाहों के प्रदेशों में, बृहत् यार्कशायर की अधित्यकाओं में कोट्सवोल्ड की पहाड़ियों में तथा सुस्सेक्स के मैदानों में और कछारों के हरित गीले द्वीपों में ही बहुतायत से उपलब्ध थीं बल्कि सामान्य कृषियोग्य खेतों में भी बहुत बड़ी मात्रा में पाली जाती थीं। और केवल भेड़ों के बड़े व्यापारी, पादरी तथा मठाधीश ही भेड़ें नहीं रखते थे (जिनके हज़ारों भेड़ों के इज्जड़ों को पेशावर गडरिये पालते थे) बल्कि साधारण जागीरों के किसान भी स्वयं ऊन का व्यापार करते थे और प्रायः ही उससे अधिक भेड़ें रखते थे जितनी जागीरदार की ज़मीन पर चराई जा जकती थीं। वास्तव में एड्वर्ड तृतीय के काल में किसानों द्वारा पाली गयी भेड़ों का अनुपात संसारी तथा पादरी ज़मींदारों द्वारा पालित भेड़ों की तुलना में बढ़ रहा था। (द्रष्टव्य ईलीन पावर—इंगलिश वूल ट्रेड, १९४१, अ. २)।

चासर का जीवन-काल स्थूलतः उस समय पड़ता है जबकि पुरानी कृषिदास-प्रथा का अन्त बड़ी तीव्रता से और बड़े कष्टदायक ढंग से हो रहा था। किन्तु यह परिवर्त्तन प्रक्रिया उसकी मृत्यु के काफी देर बाद तक अभी पूरी नहीं हुई थी और यह उसके जन्म से काफी पहले आरम्भ हो चुकी थी। बहुत से जागीरदारों ने बारहवीं शताब्दी में ही अपनी भूमि पर बलात् श्रम के बदले पैसा स्वीकार करना आरम्भ कर दिया था। इससे कृषिदास वैधानिक रूप से स्वतंत्र व्यक्ति नहीं बने, उन पर अब भी अनेक दासताओं के बोझ थे, और जागीरदार की भूमि पर कुछ दिन अवैतनिक कार्य करने के उनके दायित्व को जब भी वह चाहता पुनः व्यवहार में ला सकता था। तब भी प्रतिवर्ष श्रम के बजाय नज़राना दे देने की प्रथा चलती रही। क्योंकि जागीरदार के भू-प्रबन्धक ने भी अनुभव से यह देख लिया था कि अपने खेतों को छोड़कर कुछ निश्चित दिनों के लिए अनिच्छापूर्वक आये किसानों से खेती करवाने से वर्ष भर के लिए वेतन पर मजदूर रखकर खेती करवाना अधिक लाभप्रद है। किन्तु कुछ अवस्थाओं में स्वयं दास ही सेवा की पुरानी प्रथा को पसन्द करते थे।

इस प्रकार से, कृषि-सेवाओं के विनियम की प्रथा ने १२वीं शताब्दी के समाप्त होने तक कुछ प्रगति की। किन्तु अगली शताब्दी में इस प्रक्रिया का चक्र लगभग पीछे ही घूम गया। बैकेट के काल में जबकि कार्य-दिनों के बदले में पैसा स्वीकार कर लिया जाता था, दी मोंटफोर्ट के काल में पुनः कार्यदिनों की ही माँग की जाने लगी, और कुछ अवस्थाओं में नये बोझ भी लादे गए। एक सामान्य कड़ाई की नीति तथा जागीरदार के अधिकारों की परिभाषाओं का स्पष्टीकरण, ये १३वीं शताब्दी की विशेषताएँ थीं, विशेषतः मन्दिरों की कुछ बड़ी जागीरों में, जिनमें कि पहले विनिमय की प्रथा धीरे-धीरे प्रवेश कर रही थी।

तेरहवीं शताब्दी की इस 'सामन्ती प्रतिक्रिया' का एक कारण जनसंख्या का तेज़ी से बढ़ना तथा परिणामस्वरूप भूमि की भूख होना था। जैसे-जैसे दासों के परिवारों की संख्याएँ बढ़ीं वैसे वैसे खुले क्षेत्र में एक किसान को प्राप्त खंडों की संख्या भी कम होने लगी। आजीविका के साधनों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने से तथा काश्त के लिए भूमि प्राप्त करने में प्रतियोगिता तीव्र होने से जागीरदार के प्रबन्धक को दासों के साथ सौदेबाजी करने की अधिक सुविधा मिली और इस प्रकार दूसरी भूमि पर काश्त करने की आज्ञा के बदले में वह जागीर की भूमि पर कार्य करने की शर्त को और भी कड़ाई से लागू कर सका।

इस प्रकार, चौदहवीं शताब्दी का आरम्भ होने से पूर्व जागीरदारों की शक्ति दृढ़तर हो गयी। किन्तु इसके पश्चात् एक बार फिर स्थिति उलटी। एड्वर्ड द्वितीय के राज्य-काल में जनसंख्या की वृद्धि की दर कम हुई और अब पुनः कृषि-सेवा का पैसे से विनिमय करने की प्रथा में वृद्धि हुई। तब फिर १३४८-४९ में प्लेग का प्रकोप आया और परिणामस्वरूप इस प्रथा की गति और त्वरित हुई।

जब प्लेग के दो वर्षों से भी कम समय में इंगलैंड के एक तिहाई, और संभवत: आधे, निवासी मर गये तब इसका इंगलैंड के एक औसत परिवार पर क्या प्रभाव पड़ा ? स्पष्टत: बचे हुए कृषकों को जागीरदारों तथा उनके अधिकारियों के दण्ड-हस्त का भाजन होना पड़ा। अब पहले वाली पृथ्वी की भूख के बजाय पृथ्वी के लिये जोतने वालों की कमी हो गयी। खेतों की कीमतें कम हो गयीं और श्रम की मांग बहुत अधिक बढ़ गयी। कृषि-दासों के कम हो जाने से अब जागीरदार अपनी जमीन की काश्त नहीं करवा पाता था और दूसरी ओर खुले क्षेत्र में अनेक भूखंड वापिस जागीरदार के पास ही लौट आए थे, क्योंकि जिन परिवारों ने उन्हें जोता था वे प्लेग से मर गये थे।

किन्तु जागीरदार की कठिनाई किसानों के लिए सुअवसर था। स्वामी-हीन भू-खंडों पर किसानों द्वारा अधिकार कर लेने के कारण अब किसानों के पास अधिक खंड हो गये थे, और इन बड़े खंडों वाले दास-कृषक अब मध्यम श्रेणी के ज़मींदार हो गए थे और स्वयं भाड़े पर मज़दूर रखने लगे थे। स्वभावत: अब वे अपने दास पद के विरुद्ध और सामन्त के ज़मींदारों के कारिंदों के इस आग्रह के विरुद्ध विद्रोही हो उठे कि वे अब भी स्वयं ही जाकर सामन्त की भूमि पर अपने नियत कार्य-दिनों की जोताई करें। ऐसी परिस्थिति में जिन मज़दूरों के पास भूमि नहीं थी वे, हाथों की सामान्य रूप से ही कमी होने से, जागीर के कारिंदे और खुले क्षेत्रों के किसान दोनों से पहले से कहीं अधिक मज़दूरी मांग सकने की स्थिति में थे।

कुछ सामन्त अब भी कृषि-दासों से ही अपनी भूमि की जोताई करवाने की प्रथा का आश्रय लेते थे। किन्तु इन दासों की संख्या कम हो जाने से, तथा विद्रोहियों की संख्या बढ़ जाने से, पुरानी प्रथा के पहिये वहीं गड़ गये। प्राय: ही जब कभी सामन्त का कारिन्दा कृषि-दास को भूमि पर कार्य करने को बाध्य करता तो वह इससे बचने के लिए जंगल के दूसरी ओर भाग जाता जहाँ कि प्लेग के कारण प्रत्येक नगर और प्रत्येक गांव में मज़दूरों की इतनी कमी थी कि आगन्तुकों को बड़े-बड़े वेतन दिये जाते थे और कोई यह नहीं पूछता था कि वे कहाँ से आए हैं। एक दास, जो विधान द्वारा जागीर की 'भूमि से बंधा' था, वास्तव रूप में वह अपने आपको मुक्त कर सकता था, जब तक कि वह अपनी पत्नी और बच्चों से नहीं घिरा होता था, क्योंकि इन्हें प्रवास में साथ ले जाना अधिक कठिन होता था। अविवाहित दासों के, जोकि प्राय: ही युवक और पुष्ट होते थे, ऐसे पलायनों से खुले क्षेत्र में इनके खंड जागीरदार के हाथ पड़ते थे और इन्हें कोई तब तक नहीं लेना चाहता था जब तक बहुत थोड़े पैसे पर नहीं मिलते।

इसलिये, चासर के यौवन काल में सामन्त लोग पुरानी विधि से अपनी जागीर की जोताई कराने की प्रथा छोड़ रहे थे और इसके बदले नकद पैसा लेना स्वीकार करने लगे थे। क्योंकि जन-संख्या कम हो जाने से प्रतिव्यक्ति पैसा अधिक हो गया

था इसलिए दासों के लिए इतना पैसा वचा लेना या ऋण ले लेना सहज हो गया था कि वे अपने खेत का किराया भी दे सकते थे और अपने कार्य-दिनों का विनिमय-मूल्य भी दे सकते थे, और वहुत से किसान भेड़ें भी रखते थे, जिससे उनकी ऊन वेच कर भी वे पैसा कमा लेते थे।

ज़मीन पर कार्य करने के वदले में प्राप्त पैसे से सामन्त लोग स्वतंत्र मज़दूरों को मज़दूरी दे सकते थे, किन्तु वे प्रायः ही काफी नहीं दे पाते थे क्योंकि अव मज़दूर की कीमत वहुत ऊँची हो गयी थी। इसलिए वहुत से सामन्तों ने स्वयं कृषि करवाना वन्द कर दिया था और वे मध्यम-श्रेणी के ज़मीदारों को ठेके पर जमीन देने लगे थे। ये किसान प्रायः ही सामन्त के ढोरों को भी पट्टे पर ले लेते थे। कभी-कभी तो ये ठेका पैसे में चुकाते थे, किन्तु अधिकांशतः सामग्री के रूप में, अर्थात् सामन्त तथा उसके ठिकाने के लिए खाद्य सामग्री तथा पेय पदार्थों के रूप में, चुकाते थे। सामन्त के परिवार का भरण पहले सदैव घर के खेत की उपज से ही होता था, और अव जवकि भूमि पट्टे पर दे दी जाती थी, वस्तु रूप में कीमत चुकाने की पुरानी प्रथा का अव भी परस्पर सुविधा की दृष्टि से निर्वाह किया जा रहा था। चरागाहों वाले कुछ प्रदेशों में तो, जहाँ कि किसान ऊन वेचने के कारण वहुत धनी हो रहे थे, दास-कृषक सामन्त की सम्पूर्ण जागीर को ही पट्टे पर ले लेते थे और उसे परस्पर बांट लेते थे।

इस प्रकार से मध्यम श्रेणी के पर्याप्त सम्पन्न जागीरदारों के नये वर्ग अस्तित्व में आये। इनमें से कुछ सामन्त की भूमि पर काश्त करते थे, दूसरे उन नयी भूमियों पर कृषि कर रहे थे जो पहले वीरान पड़ी थीं, अन्यों ने पुराने खुले क्षेत्र में खाली खंडों को अपने अधिकार में कर लिया था। कुछ अनाज का व्यापार कर रहे थे, कुछ अन्य ऊन का, और शेष ढोरों का। उनकी संख्या-वृद्धि तथा समृद्धि में उन्नति ने नये इंगलैंड का स्वर आने वाली कई शताब्दियों के लिए निर्धारित कर दिया था। एक अंगरेज़ योमैन (yoeman) की विशेषताएँ—उसकी स्वच्छन्दता, उसका प्रसन्न साधु स्वभाव, धनुर्विद्या में उसकी कुशलता—ये सव शतवर्षीय युद्ध के काल से स्टुअर्ट के काल तक के आल्हा गीतों में भरे पड़े हैं।[3]

---

[3] 'योमैन' शब्द का अर्थ था मध्यम श्रेणी का कोई भी ग्रामीण, अधिकांशतः कृषक, किन्तु कभी-कभी एक सेवक अथवा एक सशस्त्र भृत्य भी (जैसे कैंटरवरी कथाओं में सामन्त भट (नाइट) के भृत्य तथा कैनोन के योमैन)। प्राचीन आल्हाओं में रोविनहुड एक प्रच्छन्न सामन्त नहीं है बल्कि एक 'योमैन' है। यह विचार कि योमैन आवश्यक रूप से एक स्वतंत्र कृषक होना चहिए जिसकी अपनी निजी भूमि हो, वास्तव में वहुत पीछे का है।

सामन्त तथा कृषि-दास के बीच की चौड़ी खाई, जोकि सामन्ती जागीर के समाज की विशेषता थी, अब कम हो रही थी। वास्तव में कृषिदास अब क्रमशः समाप्त हो रहा था। वह अब या तो स्वतंत्र भूमिचर कृषक बन रहा था अथवा भूमिरहित श्रमिक हो रहा था, और तब इन दो वर्गों में शत्रुता आरम्भ हो रही थी। कृषक अपने ही वर्ग के भीतर नियुक्त (भृत्य) और नियोजक (भर्ता) में विभक्त हो गये थे और इनके संघर्ष का आरंभिक रूप "श्रमिकों के अधिनियम" में देखा जा सकता है।

छोटे जमींदारों तथा भूमिधर किसानों के लाभ के लिए वेतन कम रखने के कानून पार्लियामेंट में पारित कर दिए गए। इस नीति का निर्धारण नए कृषीय मध्यवर्ग द्वारा किया गया था पुरानी तरह के बड़े सामन्तों द्वारा नहीं, यद्यपि बड़े जागीरदारों ने भी अपने कृषकों की मांगों का समर्थन किया; क्योंकि अधिक वेतन, परोक्ष रूप से, उन्हें मिलने वाले पट्टे के पैसे को प्रभावित करता था। किन्तु सीधी कलह कृषकों के दो वर्गों में ही थी : छोटे भूमिधर कृषक में तथा भूमिहीन श्रमिक में, जिसे कि भूमिधर किराये पर रखता था। उनके पिता चाहे साथ-साथ के भूखंडों पर एक साथ ही कृषि करते थे और सामन्त की भूमि पर दास के रूप में साथ-साथ कार्य करते थे, किन्तु उनके पुत्रों के स्वार्थ परस्पर विरुद्ध थे।

वेतन पर नियंत्रण के ये लोकसभा द्वारा पारित अधिनियम इस बात के प्रतीक थे कि अब व्यक्तिगत सेवा की स्थानीय प्रथा पर आधारित समाज से रुपये पर आधारित एक राष्ट्र व्यापी अर्थ-व्यवस्था की ओर धीरे-धीरे संक्रमण आरम्भ हो रहा था। प्रत्येक मध्ययुगीन जागीर अपनी विशिष्ट प्रथाओं द्वारा शासित थी, जोकि अब अधिकांशतः समाप्त हो चुकी थीं। इस समय इस प्रथा को राष्ट्रीय नियंत्रण द्वारा स्थानांतरित करने के लोकसभा के आरंभिक प्रयत्न आरम्भ होते हैं। श्रमिक अधिनियमों का स्वीकृत उद्देश्य वेतनों को चढ़ने से रोकना, और एक सीमा तक, कीमतों को बढ़ने से भी रोकना था। लोकसभा द्वारा स्वीकृत दरों को लागू करने के लिए और अधिक की मांग करने वालों को दण्डित करने के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किए गए थे।

इस प्रकार से, भूमिधर कृषकों के विरुद्ध, जिनके पक्ष में संवैधानिक न्याय था, भूमिहीन श्रमिकों का युद्ध प्लेग के आक्रमण से लेकर १३८१ के विप्लव तथा उसके बाद तक जारी रहा। हड़तालों, उपद्रवों तथा स्थानीय संगठनों के निर्माणों को अभियोग तथा कैद द्वारा दण्डित किया जाता था। किन्तु, व्यापक महामारी तथा इसकी स्थानीय आवृत्तियों के कारण उत्पन्न श्रमिकों की अल्पता के परिणामस्वरूप अन्ततः विजय श्रमिकों की रही। कीमतें वस्तुतः ही बढ़ी थीं, किन्तु वेतन उससे अधिक तेज़ी से बढ़े। इस काल में भूमि-हीन श्रमिक बड़ी सौभाग्यपूर्ण स्थिति में थे, जिसका प्यर्स दि प्लोमैन ने इस प्रकार से वर्णन किया है (B VI ३०८-३१९) : सो, हम अब यहाँ भूमि-हीन श्रमिकों को छोड़ कर, जो कम से कम कभी-कभी उष्ण मांस

से भोजन करता था अथवा अपने ठंडे शूकर-मांस और बासी गोभी पर क्रोध और विद्रोह से भर उठता था, खुले क्षेत्र के खंडों के छोटे भूमिधर कृषक की ओर लौटेंगे। उसका स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किस प्रकार से चल रहा था—जिस समय कि चासर किशोर राजा रिचर्ड के दरबार में समृद्धि तथा सम्पन्नता से युक्त मध्ययुग के निकट पहुँच रहा था ?

कुछ जागीरों में सामन्त तथा काश्तकार के संबंधों में परिवर्त्तन बिना किसी संघर्ष के ही हो गया था, क्योंकि दोनों पक्षों को यह स्पष्ट था कि दोनों पक्षों का लाभ दास-कृषि के स्थान पर नगदी में किराए की प्रथा स्वीकार करने में है। किन्तु उन जागीरों में भी, जिनमें ज़मीन में कार्य करने के बदले में पैसा दिया जा सकता था, सामन्त प्राय: ही कुछ अन्य दासोचित टैक्स लगाते थे, इनमें से विवाह के लिए टैक्स, किसी काश्तकार के मर जाने पर परिवार के सर्वोत्तम पशु को ले लेना, सामन्त की चक्की पर उसकी अपनी मर्ज़ी की कीमत पर आटा पिसवाने की अनिवार्यता होना--और इसी प्रकार से दासत्व के अनेकानेक अन्य ज्वलंत उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। ये अर्ध मुक्त कृषक अब पूर्ण उद्धार से, उनकी स्वतंत्रता की वैसी वैधानिक स्वीकृति से जैसी मैग्नाकार्टा में उन्हें मिली, कम पर कभी राजी नहीं हो सकते थे। इसके अतिरिक्त, बहुत सी जागीरों में अभी भी कृषकों को भूमि पर कृषि-दास का कार्य करने को बाध्य किया जा रहा था और इस प्रकार संघर्ष को और भी तीव्र किया जा रहा था।

स्वतंत्रता के लिए संघर्ष ने, जोकि एक जागीर से दूसरी जागीर में तथा एक खेत से दूसरे खेत में भिन्न प्रकार का रूप ले रहा था, असंगठित उपद्रवों को जन्म दिया और इस प्रकार से १३८१ के विप्लव के लिये पथ-प्रशस्त किया। १३७७ में पार्लियामेंट द्वारा पारित संविधान का प्राक्कथन बड़ा अर्थगर्भित है। इसके अनुसार जागीरों के सामन्त तथा 'पवित्र गिरजे' के अन्य लोग यह शिकायत करते हैं कि उनकी जागीरों के कृषि-दास यह दावा करते हैं कि उन्हें मुक्त किया जाय और सब प्रकार की दासता से छुटकारा दिया जाय, उन्हें उनके शरीर का और उनकी भूमि का स्वामित्व दिया जाय, वे अब किसी प्रकार की दीनता और विधान द्वारा उन पर आरोपित कोई दवाव नहीं सहन करेंगे, इसके अतिरिक्त सामन्त के अधिकारियों और उनके परिवारों का वध कर देंगे; और अधिक क्या, संगठित रूप से उपद्रव करेंगे और प्रतिज्ञा करेंगे कि सामन्त के दबाव का मुकाबला करने के लिए और उसका कड़ाई से उत्तर देने के लिए प्रत्येक दूसरे की सहायता करेगा।" (स्टेट्स ग्राफ़ रैल्म, अ० २, पृ० २)।

यदि वर्षों से ग्रामों की यह अवस्था थी तो हम १३८१ की विस्मयकारक घटनाओं को अधिक अच्छी तरह से समझ सकते हैं। लंडन की एक सौ मील की परिधि के भीतर के गावों में और पश्चिम तथा उत्तर की ओर इससे भी सुदूरवर्त्ती

क्षेत्रों में, पार्लियामेंट के वेतन निर्धारक विधानों का प्रतिरोध करने वाले श्रमिकों के संगठन तथा जागीर की प्रथाओं का प्रतिरोध करने वाले कृषि-दासों के संगठन सब लोगों को प्रशासक वर्ग के विरुद्ध सक्रिय और निष्क्रिय विद्रोह के लिए उकसा रहे थे। और फिर, यह सामाजिक असन्तोष केवल गावों तक ही सीमित नहीं था। सेंट अल्बेंस तथा बरी सेंट एडमंड्स के समान बृहत् ईसाई विहारों के साथ बसी हुई मंडियों में केवल दास ही नहीं बल्कि पौरवासी भी साधुओं के साथ निरन्तर संघर्ष-रत रहते थे, क्योंकि इन्हें वे नागरिक स्वतंत्रताएँ देने को तैयार नहीं थे, जो स्वतंत्रताएँ कि पीछे आने वाले राजाओं ने राजकीय भूमियों पर बसे नगरों को बिना किसी झिझक के दे दी थीं।

इंगलैंड के ये विद्रोही फ्रांस के फेकेरियों (फेकेरीज़) के समान ऐसे भूखे मरते हुए लोग नहीं थे जोकि निराशा के कारण उत्पात में प्रवृत्त हुए थे। सम्पत्ति तथा आत्मनिर्भरता की दृष्टि से उनकी स्थिति में तीव्रता से सुधार हो रहा था, किन्तु यह सुधार उतनी गति से नहीं हो रहा था जितनी गति से उनकी आकांक्षाएँ बढ़ रही थीं। उनमें बहुतों में सैनिकों का सा अनुशासन और आत्मसम्मान था, क्योंकि उनमें से बहुतों ने सेना में कवायद और शस्त्राभ्यास किया था। इंगलैंड के अनेक प्रसिद्ध धनुर्धारी विद्रोहियों की ओर थे और जंगलों में आन्दोलन के भीषण समर्थक थे, जैसे रोबिनहुड के उद्‌घोषित विद्रोही-कृषक, जिन्हेंकि उच्च वर्ग के न्याय ने जंगलों में ढकेल दिया था, पेशेवर डाकू, भग्न मनुष्य, अपराधी तथा फ्रांस के युद्ध के पद-मुक्त सैनिक घात लगाए बैठे थे।

सामाजिक विद्रोह के इन विभिन्न दुर्धर्ष तत्वों को ईसाई प्रजातंत्रवाद के प्रचार से विशेष उत्तेजना मिली थी। यह आन्दोलन ईश्वर के नाम पर निर्धनों के लिये स्वतंत्रता और न्याय की मांग करता था। जोन बाल तथा अनेक परिव्राजक ईसाई सन्तों और श्रमणों की शिक्षा भी इसी प्रकार की थी। और पादरी-प्रदेश के पुजारी, जोकि लगभग उसी वर्ग के थे जिसके कि कृषि-दास थे, प्रायः ही स्वतंत्रता की इनकी आकांक्षाओं के प्रति सहानुभूतिशील थे। इस आन्दोलन का आदर्शवाद ईसाई धर्माधारित था, अधिकांश अवस्थाओं में यह अरूढ़िवादी भी नहीं था, यद्यपि इसमें कुछ वाइक्लिफ के लोल्लार्ड पुजारी भी सम्मिलित थे। किन्तु रूढ़िवादी या रूढ़ि-विरोधी सब विद्रोही सम्पन्न पुजारियों के प्रति तथा निर्धनों की मांगों का विरोध करने के लिये उच्चवर्ग से मिले हुए एकतंत्रवादी पोपों के प्रति आदर खो चुके थे। सम्पन्न मठ, मठाधीश तथा सामान्य लोग, जो भी पादरी-प्रदेश के लोगों से दशमांश कर लेते थे तथा लोगों को भूखा मारते थे, वे पुजारी तथा पादरी-प्रदेशवासियों के लिये समान रूप से घृणाजनक थे।

इंगलैंड के दक्षिण-पूर्वी भाग में, जोकि विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र था, मठ विशेष रूप से घृणा के विषय थे और इन पर विद्रोहियों की हिंसात्मक कार्यवाहियों का बहुत

प्रकोप था। वरी सेंट एडमंड्स के महन्त का उसके अपने ही दासों ने वध कर दिया था। लंडन में वाट् लेटर के आदमियों ने टावरहिल पर कैंटरवरी के प्रमुख पादरी का वध कर दिया था, क्योंकि वह उस प्रदेश के अर्थ मंत्री के रूप में एक अप्रिय सरकार का प्रतिनिधित्व करता था। इसके प्रतिशोध में नारविच के विशप ने व्यक्तिगत रूप से सेना का नेतृत्व किया और पूर्वी एंगलिया में विद्रोह का दमन किया। इस प्रकार से समानतावादी तथा रूढ़िवादी तत्व, जोकि ईसाई धर्म में सदैव साथ साथ रहे थे, कुछ समय से एक दूसरे के प्रति खुले संघर्ष में रत थे।

यह विद्रोह एक अप्रिय कर के विरुद्ध उठा था। इसके दमनात्मक तथा कलुषित प्रशासन ने एस्सेक्स तथा कैंट में स्थानीय विद्रोह खड़े कर दिये थे, और इससे संकेत पाकर एकसाथ अट्ठाईस ज़िलों में विद्रोह भड़क उठा था। लोक-प्रिय नेताओं ने सब ओर सन्देश भिजवा दिया कि "जोन वाल ने आपकी घंटियां खड़का दी हैं।" अर्धशस्त्रसज्जित ग्रामीणों तथा कसबों के साधारण लोगों ने कहीं मठ-प्रदेशों के पादरियों के नेतृत्व में और कहीं पुराने सेनानियों के नेतृत्व में, और कुछ स्थानों पर सहानुभूतिपूर्ण कुलीनों के नेतृत्व में भी, विद्रोह किया। उन्होंने जागीरों तथा विहारों पर आक्रमण किये, उनके अधिकारों के दावों को बलात् छीन लिया, तथा घृणित चार्टरों तथा सामन्तों के सम्मान-पत्रों को फाड़ दिया। कुछ हत्याएं की गयीं और कुलीन लोगों को अपनी जान बचाने के लिये घर छोड़ कर वनों में भाग कर छिपना पड़ा, जिनमें से कि कानून द्वारा दण्डित लोग अभी अभी निकल कर आए थे।

इसके पश्चात् हमारे सामाजिक इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना घटित हुई—वह था लंडन पर अधिकार। ग्रामों से अनेक जत्थों को राजधानी पर आक्रमण करने के लिये भेजा गया जहांकि जनप्रिय नेताओं के अनेक सहयोगी विद्यमान थे। लंडन के वन-समुदाय ने तथा नगरपालों के एक दल ने इन जन सेनाओं के लिये द्वार खोल दिये। शासक वर्ग में इतना आतंक था कि टावर का अभेद्य विद्रोहियों को लगभग उसी प्रकार से समर्पित कर दिया गया जैसे १७८९ में वैस्टिले समर्पित किया गया था। वकीलों का व्यवहार विशेष रूप से घृणीय था और विदेशी शिल्पियों के वध को देशी प्रतिद्वंदियों ने प्रोत्साहित किया।

सरकार की भीरुता के कारण कानून तथा व्यवस्था भंग हो चुकी थी, इसे कुछ सीमा तक अंशतः साहस के द्वारा और अंशतः छल द्वारा पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया गया। किशोर राजा रिचर्ड द्वितीय, जिसेकि विद्रोहियों ने सर्वत्र अपने पक्ष का उद्घोषित कर दिया था, उनकी लंडन-सेना से मील एंड पर मिला और उसने दासत्व के सब दातव्यों के वदले प्रतिएकड़ चार पैसे देने की घोषणा कर दी और सब विद्रोहियों को क्षमा कर दिया। तीस क्लर्कों को स्वतंत्रता का घोषणा पत्र तैयार करने तथा प्रत्येक ग्राम और जागीर के, तथा सामान्य रूप से सभी मंडलों के, लोगों

को क्षमा करने के घोषणा-पत्र तैयार करने के लिये नियुक्त किया गया। इस बड़ी रयायत के बाद, जोकि विद्रोहियों के बहुत बड़े बहुमत के लिये सन्तोषजनक थी, उल्लंघन-कर्त्ताओं को कड़ा दण्ड दे सकना संभव था। वाट्टाइलर का स्मिथफील्ड में उस वृहत् समुदाय के सामने वध किया गया जिसका उसने नेतृत्व किया था। मेयरवाल्वर्थ के इस साहसपूर्ण कृत्य के बाद उच्चवर्ग ने अपना साहस पुनः सँजोया, अपने सैनिकों को एकत्र किया, लंडन तथा प्रान्तों में विद्रोह का दमन किया और उन्हें बहुत कठोर क्रूरता के साथ दण्डित किया। स्वतंत्रता के घोषणापत्र, पार्लियामेंट द्वारा यह कह कर समाप्त कर दिये गये कि ये बलात् स्वीकार करवाये गये थे। यह विद्रोह एक बहुत बड़ी घटना रहा और इसका इतिहास उस काल के सामान्य इंगलिश लोगों की जीवन विधि पर बहुत प्रकाश डालता है। इतिहासकार यह निर्णय नहीं कर सकते कि यह घटना दास-प्रथा को समाप्त करने में सहायक रही याकि बाधक, क्योंकि यह प्रथा १३८१ के बाद लगभग यथापूर्व रूप से ही जारी रही। किन्तु जिस भावना ने इस विद्रोह को प्रज्ज्वलित किया था वह इंगलैंड से दास-प्रथा की समाप्ति के लिये एक प्रमुख कारण थी, जैसाकि यूरोप महाद्वीप के शेष देशों में इस प्रथा के जारी रहने से देखा जा सकता है।

हमारे देश में व्यक्तिगत स्वतंत्रता बहुत पहले सार्वभौम हो गयी थी, और संभवतः यही कारण है कि 'स्वतंत्रता' शब्द से ही इंगलैंड के लोगों का इतना सैद्धान्तिक स्नेह है। किन्तु बहुत से दासों ने यह स्वतंत्रता भूमि से विलग होने की कीमत पर प्राप्त की, और देश की निरन्तर बढ़ती हुई समृद्धि के साथ आय की असमानता भी निरन्तर बढ़ी। सामन्त की अधीनता में सामंतीय जागीरें दासों के सहचारपूर्ण समुदाय थे—सब निर्धन, किन्तु लगभग सभी उन भूमियों में, जिनके साथ कि वे बंधे थे, अपने निजी अधिकारों से समन्वित। किन्तु एक सामन्त के अधीन आधुनिक गाँव समद्ध किसानों, ग्रामीण शिल्पियों तथा निरन्तर शहरों की ओर प्रवास कर रहे स्वतंत्र किन्तु भूमिहीन श्रमिकों के वर्ग का समाज था। समाज के एक रूप से दूसरे रूप की ओर यह संक्रमण शताब्दियों में चलने वाली एक दीर्घ प्रक्रिया थी जोकि १२वीं से १९वीं शताब्दी तक चली।

चासर के काल के नये इंगलैंड का विशिष्ट प्रतिनिधि भूमिधर किसान था, जिसकी सन्तानें अगली सदी में पूर्वी एंग्लिया में बड़े भूमिधर और राजनीतिज्ञ बनीं। उसके सम्बन्ध में यह बताया गया कि—"वह एक भला सरल स्वभाव का पति (पुरुष) था और पास्टन की अपनी भूमि पर रहता था और उस पर वर्ष के सारे दिन एक हल रखता था, और कभी कभी जौ के खेत में दो हल रखता था। यह कथित भूमिधर ग्रीष्म और शीत दोनों ऋतुओं में एक ही हल पर रहता था, और अपना अनाज नीचे रखकर मिल को घोड़े की नंगी पीठ पर जाता था और लौटते हुए सामान अपने नीचे रखता था। वह अपनी गाड़ी पर विभिन्न प्रकार का अनाज रखकर बेचने के लिये विटर्टोन जाता था, और गाड़ी स्वयं ही चलाता था, जैसाकि अच्छे पति (मनुष्य) को

करना चाहिये। पास्टन में वह अधिक से अधिक पांच या छः कोड़ी एकड़ भूमि रखता था (जोकि कृषि दास की साधारणतः अधिकृत भूमि से लगभग चार गुणा थी) और इससे काफी अधिक बँधेज की भूमि उसके पास जेमिघम में होती थी, जिसमें नदी के पास एक छोटी सी पनचक्की रहती थी। उसके पास और कोई चल संपत्ति या जागीर नहीं थी।

वह स्वयं स्वतंत्र होता था, किन्तु विवाह वह दास स्त्री से करता था। वह इतना पैसा बचा लेता था कि अपने बच्चों को स्कूल और उसके बाद कानून पढ़ने के लिये भेज सकता, और इस प्रकार उसने प्रसिद्ध नोर्फोक परिवार की सम्पत्ति की आधारशिला रखी जिसने कि दो आगामी पीढ़ियों में अनेक अन्य स्थानों पर अनेक जागीरें अधिगत कर लीं—और आने वाली सन्ततियों को "पास्टन पत्र" उत्तराधिकार के रूप में दिये।

१३८१ के विद्रोह से हमें ज्ञात होता है कि उन दिनों के इंगलैंड में पुलीस कितनी अपर्याप्त थी और कानून कितना अक्षम था। हत्या, बलात्कार, पीटना और हिंसापूर्ण डाका ये उन दिनों रोज़मर्रा की बातें हो गयी थीं। सामन्त, मिल मालिक तथा किसान सब की अपनी ज़िम्मेदारी थी कि वे अपने परिवार, सम्पत्ति तथा जीवन की रक्षा करें। राजा की पुलीस कभी पर्याप्त शक्तिशाली नहीं थी, किन्तु संभवतः एड्वर्ड द्वितीय के काल में, और संभवतः हेनरी द्वितीय के काल में भी, यह अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ थी। शतवर्षीय युद्ध ने फ्रांस से लूटी गयी संपत्ति के कारण व्यक्तियों को समृद्ध बना दिया था, तथा दरबार और किले की सुख-समृद्धि को बढ़ा दिया था; किन्तु यह देश के लिये सब मिलाकर एक अभिशाप ही था। इसने सैनिक उच्चवर्ग तथा उनके आश्रितों को राजा की अधीनता से निकाल दिया और इस प्रकार से अव्यवस्था और हिंसा को बढ़ा दिया।

राजा अपने बड़े सरदारों के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने में असमर्थ था, क्योंकि उसके सैनिक-साधन स्वयं वही थे जोकि इन सरदारों के पास थे। उसकी सेना अपने निजी शरीर-रक्षकों तथा अपने वंशजों से निर्मित नहीं थी बल्कि धनुर्धारियों के छोटे समूहों, सामन्तों और सरदारों, वेतन पाने वाले अश्वारोहियों, समृद्ध पेशावर सैनिकों—जोकि सरकार को अपनी सेवाएँ थोड़े या अधिक समय के लिये अर्पित कर देते थे, निर्मित थी। ऐसी सेनाएँ फ्रांस के युद्ध में बड़ी बढ़िया रह सकती थीं, और किसान-विद्रोह जैसे अवसरों पर, जबकि सभी उच्चवर्ग एक ही खतरे से प्रभावित थे, राजा की सहायक हो सकती थीं। किन्तु उन्हें स्वयं अपना ही दमन करने के लिये, अथवा अपने वेतन-दाताओं को, जिनके बिल्ले वे अपने कोटों पर लगाते थे, कैद करने के लिये प्रयुक्त नहीं किया जा सकता था। १६७८ में एक बार वास्तव में ही लोक-सभा ने दबाव डाला था कि व्यवस्था स्थापित करने के लिये एक विशेष कमीशन नियुक्त किया जाय। किन्तु यह नयी सेना अनिवार्यतः बड़े सामन्तों तथा उनके आश्रितों से ही निर्मित की गयी,

जिनके सम्बन्ध में शीघ्र ही पाया गया कि वे उनसे भी कहीं अधिक अवांछनीय थे जितने कि स्वयं अव्यवस्था उत्पन्न करने वाले लोग, जिनका कि दमन करने के लिये ये भिजवाये गये थे। अगले वर्ष लोकसभा ने इन्हें वापिस बुलाने का आदेश दिया, क्योंकि "राजा के प्रजाजन सामन्तों तथा कमिशनरों और उनके आश्रितों के दास बनाए जा रहे हैं।"

इससे एक बहुत मिलती-जुलती कहानी "पिअर्स दि प्लोमैन" में बताई गई है जिसके अनुसार कि 'शान्ति' (नामक पात्र) पार्लियामेंट में 'अन्याय' (पात्र) के विरुद्ध शिकायत के साथ पहुंचता है। 'शान्ति' की शिकायत के अनुसार, 'अन्याय' राजा के अधिकारी की हैसीयत से खेतों में बलात् घुस कर उन्हें लूट ले गया, स्त्रियों पर बलात्कार किया, घोड़े छीन ले गया, खलिहानों से गेहूं उठा ले गया, राजा के कोष में भुगतान के लिये एक हिसाब-पट्ट छोड़ गया। 'शान्ति' शिकायत करती है कि वह उससे न्याय प्राप्त करने की आशा नहीं करती, क्योंकि वह "मेरे आदमियों की हत्या करने के लिये भाड़े पर आदमी रखता है।" सो, ऐसी धारणा थी देहाती प्रदेशों में राजा के अधिकारियों के बारे में। ये सामन्त सचमुच ही महत्वाकांक्षी थे और राजा का नाम लेकर अपने लिये सम्पत्ति संग्रह करना चाहते थे। ये अत्याचारी लोग अंशतः राज्य के दीवालियापन के परिणाम थे। राजा सैनिक-व्यवस्था में परिवर्त्तन नहीं कर सकता था क्योंकि वह कुलीनों के आश्रितों को स्थानान्तरित करने के लिये आदमी नहीं रख सकता था।

तो भी किसानों को पुलीस के अभाव में जितनी हानि हुई उतना लाभ भी हुआ। स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करते हुए कृषि-दास, तथा श्रमिक-कानून के विरुद्ध निरन्तर विद्रोह-रत श्रमिक अब अपने से उच्च वर्ग की उतनी वास्तविक-दासता में नहीं थे जितने उन्नीसवीं शताब्दी के पुलीस द्वारा सुनियंत्रित देहात के कृषि श्रमिक, जबकि निर्धनों को धनुष तथा लाठी से वंचित कर दिया गया था और उन्हें अभी मतदान का शस्त्र नहीं प्राप्त हुआ था। चौदहवीं शताब्दी में, जबकि प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह लाठी या घूंसे से, धनुष या तलवार से 'अपना निजी भाग' लेगा—तब ग्रामीण उतनी आसानी से भयभीत नहीं होते थे।

जिस सैनिक-व्यवस्था से इंगलैंड ने 'शतवर्षीय युद्ध' लड़ा, उसने स्वयं राजा की शक्ति में वृद्धि नहीं की, इसके विपरीत, इसने उसकी प्रजा के एकाधिक वर्ग की शक्ति वृद्धि की। जबकि फ्रांस पर आक्रमण करने वाली सेनाओं का संगठन राजा ने सामन्तों व कुलीनों से किराये पर सैनिक लेकर किया था, आन्तरिक सुरक्षा के लिये सेना का संगठन साधारण लोगों में से जबरन भरती के द्वारा किया गया था। और यह जबरी भर्ती की हुई सेना इतनी सुसज्जित और सुशिक्षित थी कि स्काट लोग प्रायः ही अपनी इस भूल पर पछताते रहे कि उन्होंने राजा तथा उसके नवाब के फ्रांस गये होने पर इंगलैंड पर बिना सोचे समझे ही आक्रमण कर दिया।

बढ़िया कृपक धन्वा, 'जिसके अवयव इंगलैंड में बने थे', शैक्सपीयर की केवल एक अतीतोन्मुख मधुर कल्पना ही नहीं था बल्कि एक ऐसा यथार्थ था जो फ्रांस तथा स्काटलैंड के लिये सदैव हृदय-दाह का कारण रहा। इसी प्रकार से वह कारिंदों तथा कचहरियों के लिये भी, जो उस पर कानून द्वारा स्वीकृत वेतन-दरें चाहते थे, एक भयानक शक्ति था। वास्तव में, इन वेतन-दरों को कोई भी, छोटा या बड़ा, आदर की दृष्टि से नहीं देखता था।[४]

इस प्रकार से इंगलैंड के अधिकांश भाग में राज्य का आदेश चलता था, यद्यपि या तो प्रायः ही इसकी उपेक्षा होती थी अथवा उल्लंघन होता था। हत्यारे तथा चोर, यदि वे किसी बड़े सामन्त की नौकरी में नहीं होते थे, तो प्रायः ही उन्हें या तो जंगल में भागना पड़ता था अथवा किसी मन्दिर में जाकर शासन के प्रति वफादार रहने की शपथ लेनी पड़ती थी। कभी कभी वे पकड़े भी जाते थे और कचहरी में हाज़िर किये जाते थे। किन्तु तब भी वे प्रायः ही अपने पादरी से अनुनय-विनय करके, अथवा अपने वकील की होशियारी के कारण, छूट जाते थे। किन्तु तब भी, राजा के न्यायालय द्वारा प्रतिवर्ष अनेक हत्यारे और चोर फांसी पर चढ़ाए जाते थे। कानून का यंत्र इंगलैंड के पर्याप्त बृहत्तर प्रदेश पर सक्रिय था, यद्यपि यह बहुत जटिल तथा भ्रष्ट और अनियमित रूप से था।

किन्तु स्काटलैंड की सीमा पर के प्रदेशों में राजा का अनुशासन शायद ही कभी चला हो। युद्ध कभी ही रुकता था और पशु उठाने की घटनाएँ तो सदैव होती रहती थीं। उन मार्ग-रहित दलदली भूमियों में पुराने अश्वारोही योद्धाओं के कबीले बसे हुए थे, जो या तो निरन्तर परस्पर युद्धरत रहते थे अथवा स्काटों के साथ युद्धरत रहते थे। कोई व्यक्ति रक्षा अथवा वैर-परिशोध के लिये राजा के अधिकारी की ओर नहीं ताकता था। सीमान्तीय आल्हाओं के इस प्रदेश में सब पुरुष योद्धा थे और अधिकांश स्त्रियां नायिकाएँ थीं।

---

४ धनुष चलाने में अंग्रेज़ों की यूरोप में अद्वितीय स्थिति का रहस्य इसमें निहित था कि—"अंग्रेज आदमी अपना बायां हाथ स्थिर रख कर दायें से धनुष को नहीं खींचता था, बल्कि प्रत्यंचा के ऊपर अपना दायां हाथ टिकाकर अपने शरीर के संपूर्ण भार का दबाव धनुष के किनारों पर डालता था। संभवतः इसी से "धनुष झुकाना" पद अथवा "खींचने" का फ्रैंच पर्याय प्रयुक्त हुआ। (डब्लू गिलपिनः रिमार्क्स ऑन फॉरेस्ट सीनरी, १७९१) हफ लैटीमर ने जब यह वर्णन किया था कि "उसे किस प्रकार से बचपन में" अन्य देशों के धनुर्धारियों के समान केवल भुजाओं के बल से खींचने के बजाय शरीर के बल से खींचना" सिखाया गया था, तो उसका यही भाव था। यह एक ऐसी कला थी जिसे आसानी से नहीं सीखा जा सकता था।

चासर के लिये यह एक अज्ञात, सुदूर और बर्बर प्रदेश था—उससे कहीं दूर जितना फ्रांस—"बहुत दूर उत्तर में, मैं नहीं जानता कहां।" वहां पर्सी तथा अन्य सीमान्तीय सरदार स्काटलैंड के राजा की सेनाओं का प्रतिरोध करने तथा उनके घेरे से बचने के लिये बड़े बड़े किले बना रहे थे। एल्नविक, वार्कवोर्थ, डंस्टेन्वर्ग, चिप्चेज़, बेल्से तथा अन्य अनेकानेक ऐसे ही किले हैं। छोटे सरदारों ने भी अपने चौरस छोटे किले बनाए थे जोकि इन बड़े किलों के छोटे संस्करणों जैसे थे। यहां कोई जागीरें नहीं थीं, जोकि अपेक्षाकृत शान्ति की उपज होती हैं। किसान लकड़ी की झोंपड़ियों में रहते थे जिन्हें कि आक्रमणकारी नियमित रूप से जला देते थे, जबकि ये लोग तथा इनके ढोर भागकर इन किलों में छिपे होते थे।

यह वस्तुस्थिति ट्यूडर्स के भी बाद तक जारी रही, जिसने कि शेष इंगलैंड को एक स्थायी शान्ति दी थी। जब इंगलैंड तथा स्काटलैंड का जेम्ज़ स्टुअर्ट की अध्यक्षता में संघ बन गया और सीमा युद्ध समाप्त हो गये (१६०३) केवल तभी इन किलों के उत्तर में शान्तिपूर्ण जागीरें बननी आरंभ हुईं।

इस विरल आबादी में युगों में निरन्तर युद्ध की स्थिति बने रहने का एक परिणाम यह हुआ कि उन जंगली प्रदेशों में उच्च तथा नीच के बीच निकटता का भाव अपेक्षाकृत अधिक रहा जोकि आधुनिक युग तक चल रहा है। दलदली प्रदेशों के ये गडरिये तथा 'हिंड' (उत्तर के कृषि-श्रमिकों का नाम) कभी उस तरह से छोटे या बड़े भूमिधरों के उस तरह से दास नहीं रहे जिस तरह से पीछे के दिनों में दक्षिण के निर्धन श्रमिक थे। जबकि उत्तर अभी शस्त्रसज्जित तथा युद्ध के लिये दुर्ग-रक्षित ही था, और जबकि योद्धा सामन्त स्कॉट लोगों का मुकाबला करने के लिये अभी भी अपने दुर्गों का आश्रय लेते थे, तब इंगलैंड के अपेक्षाकृत अधिक प्रदेश में सामन्त तथा धनिक लोग ऐसे दुर्ग-गृह नहीं बनाते थे जोकि नियमित सेनाओं के घेरे का मुकाबला करने के लिये आवश्यक होते।

जबकि ब्लैक प्रिंस फ्रांस का ध्वंस कर रहा था तब इंगलैंड के देहाती प्रदेश लिये युद्ध वैसी एक साधारण बात नहीं था। किन्तु आन्तरिक उत्पात का भय सदैव बना रहता था—चाहे वह दुष्ट पड़ौसी के रक्षितों से हो, ग्राम के विद्रोही किसानों से हो, अथवा जंगलों में छिपे चोर-डाकुओं से हो।

इसलिये उन दिनों की गृह-निर्माण-कला में कुछ ऐसे परिवर्त्तन किये गये जिनमें इसकी झलक मिलती है। संपूर्ण दक्षिणवर्त्ती तथा मध्य प्रदेशीय मंडलों में जो जागीर-घर इन दिनों बने उनमें कभी ही कोई दो मंजिलों से अधिक ऊँचा होता होगा, और वे अच्छी तरह से व्यूहीकृत नहीं थे। किन्तु उनमें गोली चलाने के छोटे सुराख थे जिनके मुँह परिखा की ओर थे। इस परिखा को लांघने के लिये उठाए जा सकने वाले पुल बने होते थे। भीतर की ओर का भाग, जोकि घिरे हुए ग्राम की ओर

होता, उसमें बड़ी खिड़कियाँ रहतीं और उसका शिल्प अधिक घरेलू होता। ग्राम की ओर का आंगन कमरों से घिरा रहता था, ऐश्वर्यपूर्ण निवास की अपेक्षाओं के कारण हाल कमरा, बैठक तथा रसोईघर और बड़े कर दिये गये थे। अग्निकुंडों से निकले धुएँ को बाहर निकालने के लिये अब छत में रोशनदार काफी नहीं थे। इसलिये अब रहने के कमरों में बढ़िया अंगीठियां तथा दीवारों के अन्दर चिमनियाँ बनाई जाने लगीं। किन्तु खेत तथा कुटियाएँ अब भी चिमनियों से रहित थे। जागीर-गृह के पास बगीचा या स्त्रियों का केलि-कुंज होता था, जोकि, जैसाकि काव्यों में हम वर्णित पाते हैं, प्रेमालाप के लिये एक परम्परागत स्थान था।

पार्वत्य प्रदेश में पानी से भरी खाई उतनी प्रचलित नहीं थी, इन प्रदेशों की रक्षा-योजना में परकोटों का प्रचलन अधिक था। डर्बीशायर में हैड्डन हाल अर्ध-दुर्ग-रक्षित जागीर-गृहों का एक उत्कृष्ट नमूना है, जोकि दो ग्राम-आंगनों को घेर कर बना होता था और आने वाली अनेक संततियों की आवश्यकताओं के अनुसार उसमें निरन्तर वृद्धि की जाती रहती थी।

पश्चिम प्रदेश में रक्षा संबंधी चिन्ता के क्रमशः कम होने से कभी कभी बहुत बढ़िया प्रकार के घर पत्थर के बजाय चूने और लकड़ी से बनाये जाते थे। रोमन लोगों के चले जाने के समय से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी तक इंगलैंड में ईंटों की बहुत कमी थी। ईंट १५वीं शताब्दी के बाद पूर्व एंग्लियन तथा अन्य प्रदेशों में, जहाँ कि पत्थर की स्थानीय उपलब्धि कम थी, और जहाँ कि जंगलों से प्राप्त इमारती लकड़ी घटती जा रही थी, ईंट का उपयोग अधिक होने लगा था।

चासर के काल में युद्ध की विभीषिका के उस युग से, जबकि बहुत धनी परिवार भी नार्मनों के अंधकारपूर्ण और तंग चौकोण संरक्षण-गृह में ठुँसे रहते थे, जीवन अपेक्षा-कृत सुरक्षित और सुविधापूर्ण था। तेरहवीं शताब्दी में कैलिन्वर्थ रक्षागृह ने छः महीनों तक राज्य की सेना का प्रतिरोध किया, किन्तु शतवर्षीय युद्ध की तोपें इसके प्राचीन बल का बहुत शीघ्र ध्वंस कर देतीं। न अब इसे बड़े व्यक्ति की कचहरी के उपयुक्त ही समझा जाता था। इसलिये जोन आफ गॉन्ट ने इसके चरणों में एक महल बनवाया जिसमें उसने भोज देने योग्य एक बहुत बड़ा हाल कमरा बनवाया। इस कमरे में महीन और कोमल नक्काशी की चौड़ी खिड़कियों में से बहुत तीव्र प्रकाश की बाढ़ आती थी। किन्तु उसने अपने इस नये घर को एक तोप रखने योग्य दृढ़ स्तंभों से सुरक्षित रखने का भी ध्यान रखा।

जबकि नार्मन योद्धाओं के आयताकार गृह अब निवास-अयोग्य समझकर छोड़े जा रहे थे, कुछ उत्कृष्टतर प्लैंटजेनेट किले नये युग की आवश्यकताओं के अनुसार सुधारे तथा बड़े किये जा रहे थे। इनमें बहुत से, लुडलौ किले में मिल्टन के कोमुस नाटक का अभिनय होने के काल तक, राजकीय या व्यक्तिगत किलों के रूप में प्रयुक्त किये

जाते रहे। अन्त में, क्रामवैल के आदमियों ने बड़े लोगों के निवासभूत इन किलों में से अनेकों को ध्वस्त कर दिया।

निर्धनों के क्षेत्र-गृह तथा झोपड़ियाँ लट्ठों अथवा पट्टियों की, अथवा खंभों और शहतीरों की, जोकि गारे और कंकड़ आदि को सहारा देते थे, बनी होती थीं। फर्श प्रायः ही मिट्टी के होते थे और छतें छप्पर की। परन्तु क्योंकि ये निर्धनों के घर अब विलुप्त हो गये हैं इसलिये हम इनके सम्बन्ध में बहुत ही कम जानते हैं। सामाजिक परिवर्त्तन तथा संघर्ष के इस काल में इन गृहों के निवासियों की स्थिति के बारे में पहले ही कहा जा चुका है। किन्तु किसानों की निर्धनता अथवा सुखावस्था का अनुमान करना बहुत ही कठिन कार्य है, क्योंकि इनकी स्थिति एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक वर्ष से दूसरे वर्ष बदलती रहती थी। इनमें से बहुतों ने भेड़ें पालकर उनकी ऊन से बहुत सम्पत्ति संग्रह कर ली, ऊन की बड़ी मंडी को ये किसान ही ऊन मुहैया करते थे। उनका भोजन और शराब साधारण खेत की अनिश्चित उपज पर निर्भर करते थे और बुरे मौसमों में स्थानीय अल्पता या अकाल की स्थिति हो जाती थी। किन्तु मांस, पनीर तथा सब्ज़ियां उनके भोजन के समान रूप से महत्वपूर्ण अंग थे। बहुत से किसान मुर्गियाँ पालते थे और उनके अंडे खाते थे। अधिकांश किसानों की झोपड़ियों के साथ ज़मीन का कुछ भाग रहता था जिसमें वे मटर, लोबिया या साग आदि बोते थे और जहां कभी कभी गाय या सूअर भी रखा जाता था। खुले क्षेत्र के प्रत्येक किसान के बैल, वह दास हो या स्वतंत्र, गाँव की घुड़साल तथा चरागाह में रहते थे। ये दीन पशु, जोकि आकार में वर्तमान पशुओं से आधे थे, कम चारा मिलने से दुबले और वर्षों से हल पर जुतने के कारण सख्त थे। किन्तु वे या तो प्रतिवर्ष (११ नवम्बर को होने वाले) मार्टिन भोज के लिये मार दिये जाते थे, या सर्दी के लिये उनके मांस का आचार डाल दिया जाता था, या फिर क्रिस-मिस के भोज के लिये उनका वध कर दिया जाता था।

किसानों के भोजन में सूअर के मांस का उपयोग अधिक होता था, किन्तु गाँव के ढोरों में सूअरों की संख्या बहुत कुछ 'उच्छिट' की मात्रा तथा प्रकार पर निर्भर करती थी। कुछ जागीरों में बीहड़ और जंगल इन भूमियों को साफ करके कृषि के लिये घेरे जाने से पूर्व ही बहुत संकुचित हो गये थे। दूसरों में, विशेषतः पश्चिम तथा उत्तर में, उच्छिष्ट अनेक परिवारों के जीवन के लिये आवश्यक था। कुछ लोगों ने एकान्त स्थलों पर अधिकृत रूप से अपनी झोंपड़ियां बना ली थीं, और वे अपने पशुओं को किसी खाली पड़े स्थान पर चरा लेते थे। और प्रत्येक कानून का पालन करने वाले ग्रामीण को भी घर बनाने, कमरा गरम रखने या रसोई पकाने के लिये, अथवा अपनी गाड़ी, हल या अन्य औज़ार बनाने के लिये, अनधिकृत भूमि से लकड़ी काटने की आवश्यकता होती थी। परंपरागत पट्टे के किसानों के अधिकार एक जागीर से दूसरी जागीर में भिन्न थे, किन्तु प्रायः सब जगह ही उन्हें घर बनाने और औज़ार बनाने के लिये लकड़ी काटने तथा ईंधन के लिये 'जायज़ या नाजायज़', यानि खड़े पेड़ों से भी, छड़ियां काटने

की सुविधा थी। परती भूमि भी सूअर चराने या ढोरों और भेड़ों को चराने के काम में आती थी, और भेड़ें ऊन की बिक्री के कारण कृषक के बजट में सबसे मूल्यवान भाग थीं। इन दृष्टियों से, जंगलों के स्थान पर अनाज के खेत बढ़ जाने से, ग्रामीणों की सुविधाएँ और सम्पत्ति को हानि पहुँची। इस प्रकार से लाभ के साथ हानि थी और हानि के साथ लाभ था।

किन्तु भेड़, गाय, मुर्गी, तथा सूअर के मांस के अतिरिक्त और मांस भी होता है। परती तथा वन-भूमि शिकार के पशुओं की दृष्टि से खूब समृद्ध थी। राजा के जंगल में, जिसका क्षेत्र निरन्तर घट रहा था, तथा सामन्तों और सरदारों के बाड़ों अथवा वलयित जंगलों में, जिनका क्षेत्र निरन्तर बढ़ रहा था, हिरण तथा अन्य छोटे प्राणियों की रक्षा बड़े कठोर कानून द्वारा की जा रही थी। इन कानूनों को और भी अधिक कठोरता से नार्मन संरक्षक लागू कर रहें थे जिनका अपना एक लाठी का कानून था, और इसलिये जो राजा की कचहरी की चिन्ता नहीं करते थे। चोरी करना न केवल चोरों-डाकुओं के लिये ही आजीविका का साधन था बल्कि सब वर्गों के लोग यह करते थे—किसानों और श्रमिकों के अतिरिक्त, जोकि कभी पक्षी या खरगोश आदि खाने के लिये पकड़ लाते थे, कुलीन और गिरजे के छोटे अधिकारी भी यह चोरी करते थे।

१३८९ में पार्लियामेंट में लोकसभा के सदस्यों ने शिकायत की कि शिल्पी और मज़दूर, नौकर और अश्वरक्षक शिकारी कुत्तों को पालते हैं और शुभ दिनों के अवसर पर, जब भले क्रिश्चियन लोग पूजा के लिये गिरजे में गये होते हैं, ये लोग शिकार करने के लिये सामन्तों की शिकारगाहों, शशक-वनों आदि में चले जाते हैं और उन्हें बहुत हानि पहुँचाते हैं। इसलिये विधान में यह विज्ञापित किया गया कि "मानव-हृदय वास्तव में पापपूर्ण है। इसलिये अब से किसी व्यक्ति को, जिसकी भूमि से होने वाली आय ४० शिलिंग से कम हो, तथा १० पाउण्ड से कम आय वाले किसी पुजारी या चर्च के अन्य अधिकारी को, शिकारी कुत्ते या जाल आदि रखने की आज्ञा नहीं होनी चाहिये।" इसका कहाँ तक पालन हुआ, यह सन्देहास्पद बात है। (स्टेट्स आफ रैल्म, भाग २, पृ० ६५) इसके अतिरिक्त, बहुत से परती, दलदलपूर्ण अथवा वीरान जंगल थे जहाँ शिकारी जन्तु सम्यक् प्रकार से सुरक्षित नहीं थे और ये किसी विशेष खतरे के बिना ले जाए जा सकते थे।

शशक, जिन्हें उस समय इंगलैंड में 'कोने' नाम से पुकारा जाता था, मध्ययुगीन इंगलैंड के अनेक भागों में एक बड़ी मुसीबत बने हुए थे और व्यक्तिगत बाड़ों के अतिरिक्त, सब जगह से निकाल कर मार दिये जाते थे। सारिका और लवा के समान छोटे पक्षियों को पकड़ना और खाना उस समय इंगलैंड में वैसा ही प्रचलित था जैसा आजकल यूरोप के अन्य भागों में है। किसान या शौकीन शिकारी लोग बहुत बड़ी संख्या में इन्हें जालों में फँसा लेते थे। किन्तु किसान के हृदय को सबसे अधिक

आनन्द इस बात से मिलता था कि वह सामन्त द्वारा पालित प्रतिष्ठित पक्षी-समुदाय में से कोई पक्षी अपनी हांडी के लिये चुरा कर काट सकता था। ये पक्षी तबतक किसान के खेतों के धान पर मोटे होते थे जबतक कि वे सामन्त की प्लेट में नहीं पहुँच जाते थे।[५] इस प्रकार से मठों या सामन्त-गृहों से संलग्न नदी और नालों में ट्राउट नामक-मछली होती थी और तालाबों में बड़ी पाइक मछली होती थी। उच्च वर्ग के लोगों का अधिकांश समय घोड़ों और कुत्तों के साथ हिरण का शिकार खेलने में, या तीतर, बटेर और बगुले पर बाज छोड़ने में अथवा रात को लोमड़ी तथा बिज्जू आदि को जाल में फँसाने के लिये घात लगाकर बैठे रहने में बीतता था। स्त्रियों की उपस्थिति में मैदान के खेल तथा घोड़े से गिराने वाली खेल-प्रतियोगिताएँ उनके जीवन के मनोरंजनात्मक पक्ष थे। अधिक गम्भीर कार्यों में सम्मिलित थे विदेश में युद्ध, और देश में मुकदमेबाजी, राष्ट्रीय-राजनीति तथा स्थानीय प्रशासन।[६] कृषि की विधि के सुधार में उनकी वैसी रुचि नहीं थी जैसी उनकी सन्तानों में हुई। किन्तु सामन्ती जागीरों के टूटने से, और इसके परिणामस्वरूप बाज़ार के लिये उत्पादन के जो नये अवसर मिले उससे, कृषि-सुधार का पथ प्रशस्त हुआ और इस प्रकार से ज़मींदार वर्ग को कृषि-सुधार की नयी विधियाँ खोजने के लिये प्रोत्साहन मिला। वास्तव में लार्ड बर्कले ने, जोकि यद्यपि बहुत ही अपवाद रूप था, १४वीं शताब्दी में अपनी भूमि में बहुत सुधार किये।

आत्मश्लाघा मूलक भ्रम के कारण हमारे आधुनिक नागरिक वातावरण में पले कुछ लोग समझते हैं कि उनके पूर्वज क्योंकि कार्य-दिनों में, तथा सप्ताहान्त में भी, देहाती दृश्यों तथा ध्वनियों में रहने के लिये अभ्यस्त थे इसलिये वे अपने परिवेश की सुन्दरता और मनोहारिता की ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। निस्सन्देह उनमें से बहुत से प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति वैसे ही उदासीन थे जैसे आज के गँवार लोग हैं। किन्तु जैसाकि चासर तथा लैंगलैंड की कविताओं से देखा जा सकता है, सभी इस प्रकार से उदासीन नहीं थे।[७]

---

५ पन्द्रहवीं शताब्दी में किंग्ज़ कॉलेज केम्ब्रिज के सदस्य अपने मेंचेस्टर की जागीर से एक वर्ष में दो से तीन हज़ार तक कबूतरों को खाते या बेचते थे।

६ "शायर के सरदार-सामन्त" (लोक सभा में मंडलों के सदस्य) स्थानीय प्रशासन में व्यस्त थे। कुमारी वुडलफ ने पता लगाया है कि १६३६ आदमियों में से, जोकि एडवर्ड तृतीय की ५० विभिन्न पार्लियामेंटों में शायर के सरदार-सामन्त थे, १२५ लावारिस संपत्तियों को देखते थे।

७ मई मास में जबकि अनेक वस्तुएँ मनोरंजनार्थ प्रस्तुत होती हैं, और ग्रीष्म में जबकि वायु मंद-कोमल होती है मैं वन में अपना भाग्य आजमाने के लिये गया और झाड़खण्डों में हिरण या बारहसिंगे का शिकार करने गया, और जब भगवान

पुरुषों के पहरावे तथा अन्य वहुत कुछ में मध्ययुगीन से आधुनिक की ओर संक्रमण चासर के युग से आरम्भ हुआ कहा जा सकता है। दान्ते के समान वह स्वयं भी भव्य गाउन तथा सीधा हुड धारण करता था। यह एक विशिष्ट रूप से मध्य-युगीन वेश था जिसेकि सम्प्रदाय के लोग अव भी सरलतम रूप में धारण करते हैं। किन्तु चासर के समकालीन शौकीन लोगों ने, विशेषत: तरुणों ने, उस भव्य गाउन को छोड़ दिया था और छोटा कोट या जैकेट अपना ली थी, और ऐसे कसे हुए पायजामे डालने आरम्भ कर दिये थे जिनमें कि टांगों की पुष्ट वर्तुलता दिखाई दे। यह नया ढंग आज के पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले 'कोट और पेंट से मिलता-जुलता था, किन्तु हमारे वेश की नीरसता तथा मन्दतापूर्ण एकरसता उसमें नहीं थी। रिचर्ड द्वितीय की कचहरी में कोट तथा तंग पायजामे के रंग वहुत भड़कीले होते थे। वहुत वार एक टांग का रंग लाल होता था और दूसरी का हरा। "पुरुष अपनी जागीर को मानो अपनी पीठ पर धारण करते थे" और उनके द्वारा धारण किये गये रत्न-आभूषण उससे कम मूल्यवान नहीं होते थे जितने उनकी स्त्रियों के। एक वहुत अमिताचारपूर्ण राजदरवार के फैशन का अनुसरण करते हुए, सर्वत्र आभूषण मंडित युवक तड़क-भड़क के साथ दिखाई देते थे। उनके कमीज की वाहें वहुत चौड़ी होती थीं और कमर तक कसे हुए लंवी-तीखी नोक वाले वूट प्रार्थना तक के लिये नीचे झुकने में वाधक थे।

किन्तु शालीन वर्ग में लम्वे गाउन का प्रयोग ट्यूडर के काल तक समाप्त नहीं हुआ। वास्तव में कभी कभी तो स्वयं गाउन में भी अमिताचारिता रहती थी,

---

अंशुमाली दिन के रथ पर आरूढ़ नभ पर प्रकट हो रहे थे तव मैं एक निर्झर के किनारे खड़ा रहा, जहाँ की घास हरी और पुष्प-तारकों से खचित थी—जिनमें प्राइमरोज़, पैरीविकन्ज़ तथा वड़े-वड़े पैन्नीरायल फूल थे। ओस-कणों से जटित डेज़ी के फूल, कलियाँ तथा शाखाएँ वहुत सुन्दर लगती थीं। और मेरे चारों ओर कुहरे की हल्की फुहियाँ झर रही थीं। कोयल तथा कवूतर मधुर-तार स्वर में गा रहे थे, तथा तीर पर थ्रोसल पक्षियों के आतुर गीत उद्वेलित हो रहे थे। वन का प्रत्येक पक्षी तम के पुँछ जाने पर तथा प्रकाश प्रकट होने से साथ के दूसरे पक्षी से अधिक हर्षोन्मत्त दिखाई देता था। हिरण तथा हिरणी पहाड़ियों पर ऊपर चढ़ रहे थे, लूमड़ तथा मार्जार अपनी मांदों की ओर लौट रहे थे, खरगोशी झाड़ियों के पास से वाहर उछल कर निकलती, और फिर दुवक जाती थी। हिरण चौकन्ने होकर रुका, फिर सावधानी के साथ, चारों तरफ ध्यान से देखते हुए आगे वढ़ा, किन्तु अन्तत: वह झुका और खाना आरंभ किया। तव मैंने अपने धनुष की प्रत्यंचा खींची और हिरण पर तीर चलाया। तीर उसके वायें कंधे पर लगा; वह धरा-शायी हो गया और प्राण त्याग दिये।

उच्चपदासीन लोग बड़े मूल्यवान गाउन पहनते थे जोकि पीछे भूमि पर लटकते जाते थे, जैसे मानो वे स्त्रियाँ हों। शौकीन स्त्रियाँ और पुरुष दोनों ही सिर की पोशाकें बहुत चित्र-विचित्र प्रकार की पहनते थे जोकि सींग, या पगड़ी या मीनार जैसी होती थीं। ऐसे बहुत से निरर्थक और अस्थायी भोगैश्वर्य के साथ सुख-सुविधा की बहुत सी ठोस और स्थायी चीज़ें तथा नवीन जीवन-विधियां भी अस्तित्व में आई, जोकि अभी तक बची हुई हैं। इस युग में पहली बार हमारे देश में प्रतिष्ठित परिवार विशाल हालों से विमुख हुए जिनमें कि वे अपनी पैतृक बिरादरी के साथ भोजन करते थे और अधिक उत्कृष्टतर खाना घर पर खाते थे। शतवर्षीय युद्ध के आरंभिक तथा अधिक सफल काल में फ्रांस से जो लूट और भेंट के रूप में सम्पत्ति आयी उसने इंगलैंड की सामन्तीय परिवार-व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिये, ठीक उसी प्रकार से जैसे प्राचीन रोम में भू-मध्य सागर-तटवर्त्ती प्रदेशों की लूट और विजय के परिणाम स्वरूप कैमिल्लस तथा काटों की उग्र सादगी पूर्णतः समाप्त हो गई। फ्रांसीसी सामन्त, जोकि युद्ध में पकड़ कर लाए गये थे, कुछ अवस्थाओं में वर्षों तक बंदी रखे गये, जबतक कि उनके कृषि-दासों द्वारा अपेक्षित लूट का पैसा पूरा नहीं चुका दिया गया। इस बीच वे अपने अंगरेज़ बंदीकर्त्ताओं के घर सम्मानित अतिथियों के रूप में रहे, वे पुरुषों के साथ शिकार करते थे, स्त्रियों के साथ प्रेम-सम्बन्ध बनाते थे और सादे देहाती अंग्रेज़ों को सिखाते थे कि प्रत्येक सभ्य व्यक्ति को कैसी पोशाक पहननी चाहिये और कैसा खाना कैसे बर्तनों में परोसना चाहिये।

ऐसे शिक्षकों के होते विलासिता बढ़ने लगी और इसके साथ व्यापार बढ़ा तथा बाह्याडंबर का प्रसार हुआ, और यह ठीक उन्हीं साधनों से हुआ जिनका आचार की शुद्धता के पक्षपातियों ने इतना विरोध किया था। नगर के व्यापारी निरन्तर इस बात के लिये प्रयत्नशील रहते थे कि सामन्तों के दरबार में वेष-भूषा, प्रसाधन-सामग्री तथा खाने-पीने की नये से नये प्रकार की वस्तुएँ पहुँचा सकें। सामन्त लोग अपनी समृद्धि तथा अतिव्ययशीलता के द्वारा व्यापारी वर्ग की उन्नति में सहायक हो रहे थे, जो वर्ग कि आगे चल कर इनका स्थान लेने वाला था। हमारे नगरों का अधिकांश उत्पादन तथा विदेशी व्यापार, तथा पूर्व के साथ लगभग सम्पूर्ण यूरोपीय व्यापार सामन्तों तथा जागीदारों की विलासिता की सामग्री मुहैया करने पर ही पनप रहे थे, आधुनिक युग के समान विशाल जन-समुदाय की आवश्यकतापूर्ति के लिये नहीं। इंगलैंड के नगरों तथा व्यापार ने उन दिनों कोई भी उन्नति नहीं की होती यदि उन्होंने केवल कृषक तथा श्रमिक की आवश्यकताओं का ही ध्यान रखा होता, जोकि अपनी आवश्यकता के लिये स्वयं खाद्य सामग्री पैदा करते थे, और उनके कपड़े, फर्नीचर तथा खेती के औज़ार ग्राम-शिल्पी ही बनाते थे।

अध्याय २

चासर का इंगलैंड (जारी)

नगर तथा चर्च

चौदहवीं शताब्दी में अंग्रेज़ी नगर में अभी भी एक ग्रामीण और कृषि-प्रधान समाज निवास करता था और साथ ही यह उद्योग तथा व्यापार का भी केन्द्र था। इसके चारों ओर इसकी रक्षा के लिये एक पत्थर की दीवार अथवा टीले बने रहते थे और इस प्रकार इसे पहले के खुले ग्राम से पृथक् करते थे। किन्तु बाहर 'ग्राम-क्षेत्र' होता था, जोकि झाड़ियों आदि से घिरा नहीं रहता था और जहाँ प्रत्येक ग्राम-कृषक धान के अपने पृथक् खंडों पर कृषि करता था, और प्रत्येक व्यक्ति अपने ढोर अथवा भेड़ें नगर या ग्राम की सार्वजनिक चरागाह पर चराता था, जोकि प्रायः ही नदी के किनारे पर होती थीं, जैसाकि आक्सफर्ड या कैम्ब्रिज में उस समय थी।[1] १३८८ में पार्लियामेंट द्वारा यह विधान किया गया कि कटाई के समय शिल्पियों तथा उनके शिक्षार्थियों के लिये यह अनिवार्य है कि वे अपने शिल्प-व्यापार को छोड़ कर खेती की कटाई करके धान एकत्र करने तथा उसे घर में लाने में सहयोग दें। नगरों के नगरपालिकाध्यक्षों, कारिंदों तथा पोलीस के अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व था कि वे देखें कि यह क्रियान्वित हो रहा है। (स्टेच्यूट्स ऑफ़ रैल्म, II, ५६) नोर्विच में, जोकि इंगलैंड का दूसरा बड़ा नगर था, जुलाहों को इस काल के बहुत बाद तक प्रतिवर्ष फसल घर लाने में सहायता के लिये बाध्य किया जाता था। वास्तव में, लन्दन भी इस अर्ध-असंस्कृत नियम का अपवाद नहीं था। ग्राम्य तथा नागरिक में ऐसी कोई स्पष्ट सीमा-रेखाएँ नहीं थीं जैसी औद्योगिक क्रान्ति के बाद से दृष्टिगोचर होती हैं। उस समय कोई अंग्रेज़ आदमी ग्रामीण वस्तुस्थिति से पूर्णतः अपरिचित नहीं होता था जैसा वह आज होता है।

नगर प्रायः ही ग्रामों से अधिक गंदे और अस्वास्थ्यकर होते थे और उनमें प्रायः ही प्लेग पड़ता रहता था। किन्तु तब इसमें घनी मज़दूर बस्तियों के कारण ठसाठस भीड़ नहीं थी। इनमें घर अभी भी मनोरम उद्यानों, उपवनों, जोहड़ों तथा खेतों के

---

[1] कैम्ब्रिज चाहारदीवारी से सुरक्षित नहीं था बल्कि पानी से सुरक्षित था—पश्चिम में नदी थी तथा पूर्व में राजा की खाई।

बीच में बने होते थे। इसका कारण यह था कि रहने वालों की संख्या अभी भी बहुत कम थी—अच्छे बड़े नगर में दो से तीन हज़ार।

नगर-वासियों को ग्राम और नगर दोनों के लाभ उपलब्ध थे। प्राकृतिक सौन्दर्य का सर्व-आवेष्टी वातावरण सबकी भाषा और विचारों को प्रभावित करता था। चासर लण्डन-निवासी था, किन्तु उसने एक सुन्दर तथा चंचल युवती का वर्णन करते हुए चार रूपकों का प्रयोग किया है, इनमें से एक तो रूपक नवनिर्मित स्तंभ से था और अन्य तीन खेतों के परिचित-प्राकृत दृश्यों, ध्वनियों तथा गंधों से लिये गये थे :

'उसका रंग बहुत चटकीला था, उससे भी अधिक जितना सामन्त द्वारा नवनिर्मित स्तंभ; और उसका गीत ! वह इतना तीव्र और उत्तान था जितना खलिहान पर बैठ कर गाती हुई अबाबील का होता है, और वह इतनी चंचल और क्रीड़ामय थी जैसा अपनी माता का अनुसरण करते हुए कोई बछड़ा या अन्य शिशु। उसका मुख ऐसा मधुर था जैसा शहद-घुली यव-सुरा या मधु-सुरा, अथवा पाल में पके सेबों का ढेर'।

यह कविता कितनी सरल और सशक्त है किन्तु फिर भी कितनी सुन्दर ! ऐसी कविताएँ अब अलभ्य हैं क्योंकि इन्हें जन्म देने वाली दैनिक जीवन की परिस्थितियाँ अब समाप्त हो चुकी हैं, अथवा ये अब अन्य ऐसे तत्वों से आच्छादित हो चुकी हैं जो कुरूप तथा याँत्रिक हैं। यह भी चासर के युग की ही विशेषता थी कि युवती का इतना सुन्दर वर्णन करते हुए भी इस वर्णन में कहीं अस्वाभाविक अतिशयोक्ति नहीं की गयी है। (दि मिलर्ज़ टेल)

किन्तु इन छोटे नगरों में, यद्यपि ये अर्धग्रामीण ही थे, एक निराला ही नागरिक गौरव था। आत्म-प्रशासन के अधिकार तथा राजा, सामन्त, मठाधीश अथवा पादरी से खरीदे गये स्थानीय व्यापार के एकाधिकार को बनाये रखना और उसका क्षेत्र बढ़ाना, यह उनकी मुख्य चिन्ता थी। अपने नगर के व्यापारियों को उनकी भयावह यात्राओं के अवसर पर संरक्षण देने में तथा दूसरे नगरों में उनके उधार दिए गये पैसे को एकत्र करने में नगरपालिकाओं का कार्य अर्ध अन्तर्राष्ट्रनीति के स्तर का था। नोर्विच (नगर) साउथेंप्टन (नगर) से ऐसे ही बात करता था जैसे इंगलैंड फ्रांस से करता था। नगरों के बीच व्यापारिक समझौते एक साधारण बात थी। जहाँ तक लण्डन का सम्बन्ध है, इसके स्वायत्त शासन की शक्ति, जिसकी अधिकार-सीमा नदी के उतार और चढ़ाव दोनों दिशाओं में पर्याप्त विस्तृत प्रदेश तक थी, जर्मनी के अनेक "स्वतंत्र नगरों" के लिये स्पर्धा का विषय थी। यदि कोई राजा का अधिकारी अथवा गॉंट के जोन का भृत्य लण्डन के किसी नागरिक की अधिकार-सीमा में हस्तक्षेप करता था, अथवा नगरपालिकाध्यक्ष के अधिकार को चुनौती देता था, उसे इसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ता था।

किन्तु लण्डन के पास इतनी महत् अधिकार-शक्ति होने पर भी, तथा अन्य नगरों के पास इतनी 'स्वतंत्रताएँ' रहने पर भी, ये सब राज्य के वफादार सदस्य थे, जिसकी पार्लियामेंट आर्थिक प्रश्नों पर, जिस सीमा तक वे राष्ट्रीय महत्व के होते थे, अंशतः इन नगरों के परामर्श से विधान निर्माण करती थी, और व्यापार चौदहवीं शताब्दी में नगरपालिका के अधिकार-क्षेत्र से निकले बिना निरन्तर अधिक से अधिक राष्ट्रीय स्तर पर आ रहा था। इंगलैंड के नगरों का इतिहास इंगलैंड के इतिहास में, जिसके निर्माण में कि ये सहायक हो रहे थे, तदात्म हो रहा था, जबकि जर्मनी में, जोकि अभी एक राष्ट्र नहीं था, न्यूरंबर्ग तथा हांस नगरों के इतिहास उस काल के यूरोप के इतिहास में पृथक् अध्ययनों का निर्माण करते हैं।

किन्तु इंगलैंड में भी शतवर्षीय युद्ध के दिनों में लोगों में राष्ट्रीय भावना तथा राज्य के प्रति वफादारी उतनी अधिक नहीं थी जितनी अपने नगर के प्रति थी। पौरवासी का प्रथम कर्त्तव्य नगर-सेना में भाग लेकर नगर की दीवारों तथा खेतों की रक्षा करना था जिन्हें, फ्रांस अथवा स्कॉटलैंड के आक्रमण-कर्त्ताओं, कानून-बहिष्कृतों के दलों तथा बड़े लोगों द्वारा नियुक्त गुंडों से निरंतर भय रहता था। अनिवार्य भरती के सिद्धान्त से मध्ययुगीन लोगों के मन में कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होती थी, अन्यथा वह दूसरों से यह कैसे अपेक्षा कर सकता था कि वे उसकी तथा उसके सम्बन्धियों की निरन्तर खतरे से रक्षा करेंगे ? नगर-अधिकारी युद्ध तथा आन्तरिक व्यवस्था के कार्य के लिये, तथा सब प्रकार के नागरिक कार्यों के लिए : जैसे नगर-परिखा अथवा नाला खोदने, नगर का पुल सँवारने, नगर के खेतों की जुताई-कटाई में सहयोग देने, अपने घर के सामने के बाज़ार के भाग को साफ करने तथा सँवारने के लिये, लोगों को बुला सकते थे। सार्वजनिक कार्य में ऐसा योगदान तब दासत्व नहीं समझा जाता था जैसाकि सामन्त की भूमि पर कार्य को समझा जाता था। उन दिनों कोई यह नहीं सोचता था कि 'स्वतंत्रता' उन सैनिक अथवा अन्य कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने में निहित थी जिनके सम्पादन पर ही उसकी तथा उसके नगर की रक्षा निर्भर थी। अनेक शताब्दियों तक इंगलैंड के नागरिक जीवन के शिक्षणालयों में आत्म-निर्भरता तथा आत्म-प्रशासन की शिक्षा दी जाती थी, और एक सीमा तक गाँव के न्यायालय में भी यह शिक्षा दी जाती थी। उन दिनों कर्त्तव्यों के बिना कोई अधिकार नहीं थे।

इंगलैंड के प्रत्येक नगर के बाज़ार में राजनैतिक संघर्ष बहुत तीव्र और बलवत्तर रूप से चलता था। यह संघर्ष राष्ट्रीय दलों का नहीं था बल्कि शिल्प की राजनीति तथा नगर की राजनीति ही नगरवासी के दैनिक जीवन को प्रभावित करती थी। शक्ति के लिये संघर्ष शिल्पों के नगरपालिका के साथ झगड़ों में, व्यापारियों के छोटे उत्पादकों के साथ झगड़ों में, स्वामियों के उनके भृत्यों के साथ झगड़ों में, बाहर से

आकर बसने और व्यापार करने वालों के साथ सम्पूर्ण नगर के झगड़ों में, राजधानी के सब निवासियों के राजा के अधिकारियों के साथ अथवा सामन्त तथा पादरी के कारिंदों के साथ अथवा मठ के साधुओं के साथ झगड़ों में चल रहा था। निरन्तर परिवर्तित होते हुए ऐसे झगड़े सैंकड़ों नगरों में सैंकड़ों रूपों में शताब्दियों तक चलते रहे। इन नगरों में लंदन जैसे विशाल नगर से लेकर (जोकि राज्य के भीतर एक राज्य था) छोटे कस्बों तक में, जो अभी कारिंदों द्वारा शासित सामन्तयुगीन ग्राम के स्तर से ऊपर उठने की प्रक्रिया में थे, यह शक्ति के लिये संघर्ष चल रहा था। इन सब आन्तरिक तथा बाह्य नागरिक युद्धों में, प्रत्येक पक्ष सभी प्रकार के उपयुक्त शस्त्रों का,—जैसे कानूनी कार्यवाही, खुले दंगे-फिसाद तथा आर्थिक दबावों का—उपयोग कर रहा था।

लण्डन में समुद्री कोयला (इसका यह नाम इसलिये पड़ा था कि यह टाइनेसाइड से पोत द्वारा लाया जाता था) काष्ठ तथा काष्ठ-कोयले के स्थान पर क्रमशः अधिकाधिक उपयोग में लाया जा रहा था, और लण्डन में आकर बसने वाले मठाधीश तथा सामन्त इसके विरुद्ध यह शिकायत कर रहे थे कि इस कोयले के जलने से उत्पन्न होने वाली दुर्गन्ध से भयानक रोग फैलने का भय है।[1] आग के भय से लंडन में अब छतें घास-फूस के बजाय लाल ईंट की बनने लगी थीं। दीवारें अभी भी कीचड़ और लकड़ी की थीं, यद्यपि बड़े सामन्तों अथवा धनी नागरिकों द्वारा निर्मित बढ़िया पत्थर के सौधों की संख्या निरन्तर बढ़ रही थी, जैसेकि लंडन तथा वैस्टमिंस्टर के बीच जोह्न आफ गॉट का महल। किन्तु राजधानी की शिल्पकला का प्रमुख गौरव था इसके एक सौ गिरजाघर। बाज़ारों की सड़कें अच्छी नहीं थीं और किनारे पर चलने के लिये पार्श्व-पथ नहीं बने थे, सड़कें दोनों ओर ढलानदार थीं और किनारों की नालियों में मल बहता था, दुर्बल लोग भीड़ की ठेल-पेल में सड़क के बीच से ढकेले जाने पर दीवार से जा लगते और किनारे के कीचड़ में उनके पैर लथपथ हो जाते। नगराधिकारियों से प्रायः कोई भी रोक-टोक नहीं होने से लोग घरों और दुकानों से कूड़ा-कर्कट तथा जूठ आदि, बिना किसी स्वास्थ्य या सुविधा का ध्यान रखे, सड़क पर बिखरा देते।

लंडन से दो मील पर वैस्टमिंस्टर था, जो चारों ओर से विहारों तथा हाल कमरों से घिरा हुआ था। इसे रयूफस ने बनवाया था तथा रिचर्ड द्वितीय इसे देवदार के शहतीरों से और सुन्दर बना रहा था। वैस्टमिंस्टर राजकीय प्रशासन, कानून तथा पार्लियामेंट का एक प्रतिष्ठित केन्द्र बन गया था, यद्यपि इसमें न कुछ व्यापार होता था और न ही इसका निजी नागरिक प्रशासन ही था, और यह केवल महान लंडन के द्वार

---

[1] कोयले के घरेलू ईंधन के रूप में उपयोग के विरुद्ध बड़ा पूर्वाग्रह था जबतक कि लकड़ी की कमी के कारण इसका बहुत उपयोग बढ़ नहीं गया। गाँवों में, ट्यूडर के काल तक, इसका उपयोग प्रायः लोहार तथा चूना जलाने वालों तक ही सीमित था।

पर एक गाँव मात्र था। इंगलैंड की राजधानी में राजा की वैसी कोई पैठ नहीं थी जैसी पैरिस में लाग्रोरी की थी। जब राजा नगर में आया तो कभी तो वह लंडन के एक ओर वेस्टमिंस्टर में रहता था और कभी अट्टालिका में दूसरी ओर। किन्तु नगर, जोकि बीच में पड़ता था, उसका क्षेत्र नहीं था और इस दृष्टि से रिचर्ड द्वितीय रिचर्ड प्रथम से नगर की सेना, इसके न्यायाधीशों तथा इसके जनसमुदाय से अपनी आज्ञा मनवाने में किसी भी प्रकार से अधिक समर्थ नहीं था। मध्ययुगीन सन्तुलन तथा शक्तियों की समरसता, जिसमें से कि आधुनिक इंगलैंड की स्वतंत्रता की चेतना का उद्भव हुआ, राजाओं तथा राजधानी के संबंधों में स्पष्ट झलकते हैं।

अब लण्डन के बड़े वनिक लोग बड़े प्रादेशिक सरदारों के बराबर थे, और यह केवल इसीलिये नहीं था कि उनके अधिकार में नगर-सेना तथा इंगलैंड के समुद्री जहाज़ों का एक बहुत बड़ा भाग था, बल्कि इसलिये भी था क्योंकि वे सरकार को सूद पर पैसा भी ऋण देते थे। १२९० में एड्वर्ड प्रथम ने इंगलैंड से यहूदियों को निकाल दिया था और इस प्रकार से राजकीय ऋण की पुरानी प्रथा का अन्त कर दिया था। इंगलैंड में जो आज यहूदी-विरोधवाद यूरोप के दूसरे कई देशों की तुलना में कम है उसका एक कारण यहूदियों का उपर्युक्त निष्कासन भी है : हमारे पूर्वज एड्वर्ड प्रथम के इस कार्य के कारण यहूदियों के सहारे के बिना ही अपने आर्थिक तथा बौद्धिक जीवन-यापन के लिये अभ्यस्त हो गये थे, परिणामतः जब क्रामवेल के काल में इन्हें वापिस लौटने की आज्ञा दे दी गयी तबतक इंगलैंड अपने पैरों पर स्वयं खड़ा होना सीख चुका था और इसलिये इस वरद जाति के साथ, बिना किसी ईर्ष्या के, बराबर कदम मिलाकर चल सकता था।[1]

इसलिये, यहूदियों की अनुपस्थिति में, एड्वर्ड तृतीय ने अपने युद्धों के लिये पैसा फ्लोरेंस बैंकों से लिया, ये ही बैंक सामन्तों को भी ऋण देते थे। बोक्काचियों के डीकामेरोन् में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार से तीन फ्लोरेंस निवासियों ने 'लंडन में आकर एक छोटा घर लिया और इतने अल्प व्यय से रहे जितना संभव था, और सूद

---

[1] यहूदियों के निष्कासन से पूर्व उनकी सम्पत्ति और ऋण देने की शक्ति में ह्रास हो चुका था, अन्यथा उन्हें निकाला ही नहीं जा सकता था। साहूकार के रूप में इंगलैंड के लोग तथा विदेशी ईसाई उनका स्थान ले रहे थे। उद्योग तथा कृषि सम्पूर्ण मध्ययुगों में परिवर्तित तथा विस्तारित हो रहे थे और इन्हें इस बात की आवश्यकता थी कि राजा, सामन्त, किसान, दास तथा व्यापारी इनकी पूंजी ऋण पर लें। सूदखोरी के विरुद्ध कानूनों ने सूद को मर्यादित करने के बजाय बिल्कुल ही गैर कानूनी कर दिया, इसका परिणाम यह हुआ कि सूद बहुत बढ़ गया, यहां तक कि ५० प्रतिशत तक हो गया, क्योंकि यह लेन-देन अवैधानिक था। (लिप्सन १, पृ० ६१९-६२०)।

पर पैसा देते रहे।' जब उन्होंने पर्याप्त धनार्जन कर लिया तब वे फ्लोरेंस को लौट गये, 'किन्तु बैंक-व्यापार इंगलैंड ही में रखते हुए उन्होंने एलेस्सेंड्रो नामक अपने भतीजे को इसकी व्यवस्था करने के लिये वहां भेज दिया। उसने सामन्तों को उनके किलों तथा अन्य सम्पत्तियों को गिरवी रखकर पैसा देना आरंभ किया, 'जिसका उसे बड़ा लाभ हुआ।'

किन्तु राजा अपने प्रजाजनों से भी ऋण लेता था—जिन्हें हम 'महान नागरिक' की संज्ञा दे सकते हैं, और दूसरे नगरों के धनिकों से भी लेता था, जैसेकि हल के सर विलियम डी ला पोल से, जोकि इंगलैंड के एक महत् कुलीन घराने की स्थापना करने वाला प्रथम व्यापारी था। इन नये ऋण-दाताओं के साथ राजा का संबंध यहूदियों के साथ उसके संबंध से बड़ा भिन्न था, ये लोग राजा के हाथ में मात्र स्पंज थे जिनकी संपत्ति का वह शोषण करता था—असहाय आश्रित जन, जिन्हें कि केवल वही (राजा ही) लोगों के अत्याचार और वध से बचा सकता था। किन्तु अंग्रेज़ व्यापारी, जिन्होंने कि सरकार को शतवर्षीय युद्ध के लिये पैसा दिया, अपनी सहायता इच्छानुसार देने या न देने के लिये स्वतंत्र थे, और राजा की इस आश्रितता का वे अपने-अपने परिवार, अपने नगर अथवा अपने शिल्प के व्यापारिक तथा अन्य लाभों के लिये सौदेबाजी करने में उपयोग करते थे।

इन परिस्थितियों में ही एड्वर्ड तृतीय की आर्थिक, गृह संबंधी तथा विदेश नीति का ताना बाना तना गया था। शतवर्षीय युद्ध केवल सैनिक लूट अथवा अपनी वंश-मूलक महत्वाकांक्षाओं को लेकर ही नहीं लड़ा गया था, यह हमारे ऊन तथा वस्त्र-व्यापार के लिये फ्लैंडर्स तथा फ्रांस के बाज़ारों के द्वार खुले रखने के लिये भी लड़ा गया था। वान् अर्टेवल्डे तथा फ्लेमिश नागरिकों के साथ फ्रांस के विरुद्ध समझौता कूटनैतिक तथा व्यापारिक दोनों ही प्रकार का था।

इंगलैंड की राष्ट्रीय नीति राजा की आवश्यकताओं के दबाव के कारण तथा उसकी अपनी प्रजाओं के विरोधी स्वार्थों, तथा अपने विदेशी मित्र देशों के स्वार्थों में संघर्ष के कारण निरन्तर बदलती रहती थी। एक स्थिर सुरक्षावादी नीति से युक्त 'व्यापारवादी' युग अभी नहीं आया था, किन्तु देश ने इस दिशा में पहले से ही टटोलना आरंभ कर दिया था। विदेशी पोतों को इंगलैंड की बंदरगाहों में व्यापार करने से रोकने के लिये नौपरिवहन विषयक कानून रिचर्ड द्वितीय के काल में ही बना दिये गये थे, किन्तु ये लागू नहीं किये जा सके क्योंकि स्टुअर्ट के काल तक हमारा व्यापारी बेड़ा अभी इतना बड़ा नहीं हुआ था कि हमारे निरन्तर बढ़ते हुए व्यापार को अकेला सँभाल सकता। इंगलैंड के व्यापारी अपना अधिकांश समुद्रपारीय व्यापार विदेशी पोतों में ही करते थे।

किन्तु अन्ततः अब अंग्रेज नाविक एक बृहत् शक्ति बन रहा था। एड्वर्ड तृतीय ने इस शक्ति का प्रयोग ब्रिटेन की चैनल (इंगलैंड तथा फ्रांस के बीच का सागर) से

विदेशी जल-दस्युओं को निकालने के लिये किया था, और इसमें वह कई वर्ष तक सफल रहा। जिस जहाज़ी बेड़े ने इस स्थान पर दस्यु दल को १३४० में पराजित किया वह राजकीय जल-सेना का बेड़ा नहीं था : यह भिन्न-भिन्न नगरों के व्यापारी पोतों से निर्मित था, जो कि लड़ने के लिये एक राजकीय सेनापति की अध्यक्षता में अस्थायी रूप से भरती किया गया था। सागर-युद्ध में अभी तोपों ने स्थान नहीं लिया था। तो भी, सालामिस के अनुरूप ही पोत एक-दूसरे से भिड़ते और जूझते थे, और स्थल के समान ही जल में भी युद्ध तलवारों, भालों तथा तीरों से चलता था।

निर्यात के लिये मंडी, जिसमें इंगलैंड का पण्य एकत्र होता था और उस पर कर लगाया जाता तथा बेचा जाता था, निर्यात-कर की वसूली के लिये आवश्यक थी। राजा की अर्थ-व्यवस्था इस पर चलती थी, और यह अंग्रेज व्यापारियों को उन दिनों अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में चलने वाली धोखाधड़ी तथा लूटखसोट से भी बचाती थी। किन्तु 'मंडी की कम्पनी' ने निर्यात में आंशिक एकाधिकार प्राप्त कर लिया जोकि बहुत से ऊन के उत्पादकों तथा अनेक स्पर्धी व्यापारियों को स्वीकार्य नहीं था। मंडी के संबंध में अनेक तथा विपरीत स्वार्थों—कृषीय, औद्योगिक तथा व्यापारिक—के विरोधी मत थे, विशेषतः इसके स्थान को लेकर। एक समय यह इंगलैंड के कुछ नगरों में रखी गयी थी, उसके बाद फ्लैंडर्स में, अन्त में केलेइस में—जिसेकि अंग्रेज़ सेना ने फ्रांस में प्रवेश के लिये बंदरगाह के रूप में जीता और अपने अधिकार में रखा था। जब ऊन केलेइस पहुँचती थी तब विदेशी ग्राहक कुछ रकम तो नकद देते थे और शेष के लिये देयक दे देते थे, यह एक सामान्य प्रचलन ही था। दूसरों को हस्तांतरित करके देयक की कटौती की प्रथा भी तब बहुत प्रचलित थी, इस प्रकार से एक ऋण-दाता से दूसरे को देयकों के हस्तांतरण की व्यापारिक प्रथा कम से कम पांच सौ वर्ष पुरानी है। (लिप्सन १, ५६९)

केलेइस की मंडी से निर्यातित पण्यों में ऊन की मात्रा बहुत अधिक थी, किन्तु ऊनी कपड़े का निर्यात निरन्तर बढ़ रहा था, और अन्त में ट्यूडर के समय इस निर्यात ने ऊन का निर्यात पूर्णतः समाप्त कर दिया। किन्तु चासर के काल में, और बहुत पीछे तक भी, राजा को अधिकांश ऋण देने वाले ये मंडी के व्यापारी ही थे जोकि विदेशी करघों के लिये ऊन का निर्यात करते थे। और मंडी में निर्यात की जाने वाली ऊन पर लगाया जाने वाला निर्यात-कर राज्य की आय का बहुत बड़ा स्रोत था।[१]

---

[१] मंडी में ऊन तथा ऊनी कपड़ा दोनों एकत्र किये जाते, उन पर कर लगाया जाता तथा इन्हें बेचा जाता था। किन्तु 'मंडी-कम्पनी' केवल ऊन का व्यापार करती थी कपड़े का नहीं, परिणामतः स्वतंत्र व्यापारियों द्वारा कपड़े के निर्यात में निरन्तर वृद्धि से उसका क्रमशः ह्रास हो गया। चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में ऊन का निर्यात ३०,००० बोरे प्रतिवर्ष था, और कपड़े का निर्यात लगभग ५००० थान था।

ये लण्डन तथा केलेइस के व्यापारी, जिनके साथ कि राजा को ऋण तथा कर के लिये सौदेबाजी करनी पड़ती थी, ऊन उत्पादक जिलों, जैसे कोट्सवोल्ड्स, के साथ व्यापारिक तथा व्यक्तिगत सम्पर्क रखते थे, और वहाँ इन्होंने तथा इनके स्पर्धी कपड़ा व्यापारियों ने जायदादें खरीद ली थीं और पश्चिमी इंगलैंड के वड़े घरानों की स्थापना की थी। १४०१ में चिप्पिग कैम्पडन में 'लण्डन के स्वर्गीय नागरिक तथा इंगलैंड के ऊन-व्यापारियों के सिरमौर' विलियम ग्रेवल का शव दफनाया गया था। उसका पत्थर का बना घर अब भी द्वीप में अवशिष्ट सर्वाधिक सुन्दर ग्राम का एक अलंकार है, क्योंकि चिप्पिग कैम्पडन एक साधारण ग्लौसेस्टरशायर के प्रकार का गाँव नहीं था वल्कि इंगलैंड के बृहत्तर व्यापार के लिये यह एक संग्रह-केन्द्र था।

वास्तव में प्रो० पास्टन जिसे 'इंगलैंड के पूंजीवाद की महान प्रसव-ऋतु' कहता है, वह चासर का युग ही था। शतवर्षीय युद्ध के आरंभिक काल में राजकीय अर्थ-व्यवस्था की बढ़ी हुई आवश्यकताएँ, कर-व्यवस्था में नये प्रयोग, ऊन के व्यापार में सट्टेबाजी, इटेलियन अर्थ-व्यवस्था का भंग होना, तथा नये वस्त्र-उद्योग का आरम्भ होना, ये सब तत्व युद्ध के लिये पूंजी प्रदान करने वाली तथा सट्टा करने वाली, सेना को भोजन-सामग्री सप्लाई करने वाली तथा ऊन के व्यापार में एकाधिकार सम्पन्न एक नयी जाति को अस्तित्व में लाने के लिये संयुक्त हो गये। (इकनामिक हिस्ट्री-रिव्यू, मई १९३९, पृ० १६५)।

पूंजीपति जबकि वित्तदाता तथा सार्वजनिक साहूकार के रूप में मुख्यत: ऊन व्यापार में ही विद्यमान था, इसका उद्योगों के संगठनकर्त्ता के रूप में आविर्भाव हम इसी काल में वस्त्र उद्योग में पाते हैं।

जबकि कच्ची ऊन अभीतक मुख्य निर्यात सामग्री थी, घरेलू आवश्यकताएँ अधिकांशत: इंगलैंड में वने कपड़े से ही पूरी की जाती थीं। प्राचीन रोमवासियों तथा सेक्सन-वासियों के काल में तथा उसके वाद के काल में, इंगलैंड की गृहिणी का तथा उसकी नौकरानियों और लड़कियों का खाली समय कातने में ही वीतता था—जोकि हमारी आद्य मातृ देवी का कार्य कहा जाता है; और इसी प्रकार से, वहुत प्राचीन काल से, बुनने की अधिक कला पुरुषों के हाथ में थी, जोकि जुलाहे के रूप में प्रशिक्षित होते थे। ये सारा दिन अपनी कुटिया में अपने करघे पर बुनते रहते थे और इस प्रकार से स्थानीय कृषकों के लिये मोटा कपड़ा तैयार करते थे। बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दियों में जुलाहों के संघों ने बहुत से नगरों में, जिनमें लण्डन, लिंकोन, आक्सफर्ड तथा नोट्टिंघम भी

शताब्दी के मध्य में ऊन का निर्यात ४००० बोरे हो गया और कपड़े का निर्यात १००,००० थान से भी ऊपर हो गया। द्रष्टव्य, (इ० इ० रिख, दि आर्डिनेंस बुक आफ दि मर्चेंट्स दि स्टेपल, १९३)।

शामिल हैं, उत्कृष्टतर किसम का माल तैयार किया था। हेनरी तृतीय के काल में स्टेम्फोर्ड का कपड़ा वीनस में पर्याप्त प्रसिद्ध था, जबकि यार्कशायर, पूर्व और पश्चिम दोनों, अपने ऊनी कपड़ों के लिये पहले से ही प्रसिद्ध हो चुका था।

तेरहवीं तथा चौदहवीं शताब्दी के आरंभिक काल में बाजार के लिये बने स्तरीय कपड़े का उत्पादन इंगलैंड के नगरों में, जिनमें कि जुलाहों की संख्या बहुत घट गयी थी, बहुत गिर गया। ठीक बात यह है कि उत्पादक अब देहाती प्रदेशों की ओर प्रयाण करने लगा था, विशेषतः पश्चिम की ओर के, जहांकि कपड़े को साफ करने वाली मिलों को चलाने के लिये जल-प्रपात उपलब्ध थे। कपड़ा बनाने में आवश्यक अनेक प्रक्रियाओं में से एक, जोकि धोबी करता था, पहले मनुष्य के हाथों, पैरों या लकड़ी के डंडों से ही संपादित होती थी, किन्तु अब यह कार्य जल-शक्ति द्वारा किया जा रहा था। इसलिये अब १४वीं शताब्दी का आरंभ हुआ। उससे पहले ही, कोट्सवोल्ड तथा पैन्नाइन घाटियों और झील के प्रदेशों ने पूर्वी इंगलैंड के साथ वस्त्र उत्पादन के क्षेत्र में होड़ लेनी आरंभ करदी थी और वह उद्योगों के अवस्थान की दृष्टि से ग्राम प्रदेश के साथ होड़ लेना आरंभ कर चुका था। इसे तकनीकी आविष्कारों के महत्वपूर्ण सामाजिक परिणामों का एक आरंभिक उदाहरण कहा जा सकता है। (एंसा-हिस्ट्री रिव्यू, १९६१ में मिस कारास विल्सन का लेख इंडस्ट्रियल रेवोल्यूशन आफ दि थर्टीन्थ सेंचुरी)।

एड्वर्ड द्वितीय तथा तृतीय के राज्य कालों में हमारी सरकार के कार्य ने हमारे वृहत्तम उद्योगों को और भी प्रोत्साहन दिया। विदेश से वस्त्र का आयात अवैधानिक घोषित कर दिया गया। कुशल शिल्पियों को आमंत्रित किया गया, विशेषतः लंडन और पूर्व एंग्लिया में, और उन्हें राज्य ने स्थानीय ईर्ष्या से संरक्षण दिया, साथ ही इंगलैंड के जुलाहों को भी विशेष सुविधाएं दी गयीं। चासर के जीवन काल में चौड़े कपड़े का उत्पादन तिगुणा हो गया था और उसका निर्यात नौ गुणा हो गया था। भेड़ के चारे की दृष्टि से तथा सर्वोत्तम ऊन के उत्पादन की दृष्टि से इंगलैंड को जो अन्य देशों की अपेक्षा बहुत लाभ था उससे उसे संसार के वस्त्र बाजार को धीरे धीरे जीतने का अवसर मिला, जिस प्रकार से कि वह बहुत पहले कच्ची ऊन का बाजार जीत सका था।

वस्त्र-व्यापार की वृद्धि का आगामी अनेक संततियों तक चलते रहना अवश्यम्भावी ही था और इससे नगरों तथा ग्रामों में एक नये वर्ग का उदय हुआ, सामन्त-प्रासादों का वैभव और बढ़ा तथा झौपड़ियों की निर्धनता घटी, कृषि की विधि में परिवर्त्तन हुआ तथा उसके उत्पादन में वृद्धि हुई, हमारे पोतों को परिवहन के लिये माल मिला, हमारा व्यापार पहले सारे यूरोप में और फिर सारे संसार में फैला, हमारे राजनीतिज्ञों को अपनी नीति दूसरों पर लादने का अवसर मिला तथा राजनैतिक दलों को कार्यक्रम मिला और यह मैत्रियों, संधियों तथा युद्धों का कारण बना। वस्त्र-व्यापार इंगलैंड

का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग रहा जबकि, बहुत काल बाद, कोयला लोहा निर्माण में काम आने लगा था। शताब्दियों तक इसने नगरों तथा ग्रामों में लोगों के विचारों को अभिभूत रखा। इस दृष्टि से यह केवल कृषि से ही दूसरे पीछे था। हमारे साहित्य तथा सामान्य भाषा ने वस्त्र के उत्पादन से कितने ही पद-प्रयोग तथा रूपक ग्रहण किये हैं, यथा—'वार्तालाप का सूत्र' (थ्रेड ऑफ़ डिस्कोर्स) 'सूत कातना' (लंबी बात करना) (स्पिन ए यार्न) 'रहस्य का अनावरण करना' (अनरेवल ए मिस्ट्री) जीवन का तंतुवाय (वैब ऑफ़ लाइफ) 'महीन कता हुआ' (बढ़िया बना हुआ) (फाइन ड्रान) 'घर का कता हुआ' (सादा-ठोस व्यक्ति) (होम स्पन) 'कातने वालियों (कुमारियों) के सूत उधेड़ना' (से छेड़खानी करना) (टू टीज़ दि स्पिस्टर्स)।

चौदहवीं शताब्दी में पहले से ही यह स्पष्ट था कि वस्त्र-व्यापार का विस्तार एक नवीन अर्थ-व्यवस्था की अपेक्षा करता है। कच्ची ऊन से बढ़िया वस्त्र के निर्माण के लिये केवल एक शिल्प ही अपेक्षित नहीं है बल्कि कई शिल्पों की आवश्यकता है—जैसे धुनना, कातना, बुनना, धोना, रंगना, थान बनना आदि। इसलिये शिल्प-संगठन, जिन्होंने कि पिछली शताब्दियों में बुनाई में सुधार की दिशा में इतना महत्वपूर्ण कार्य किया था, घरेलू बाज़ार तथा विदेशी बाज़ार के लिये वस्त्र-उद्योग के बृहत्तर विस्तार की व्यवस्था नहीं कर सकते थे। अब व्यापारी से, जिसकी दृष्टि स्थानीय सीमाओं से अधिक व्यापक हो चुकी थी और जिसके पास पैसा था, यह अपेक्षा की जाती थी कि वह कच्चा माल, अर्ध निर्मित माल तथा पूरा तैयार माल एकत्र करेगा और एक शिल्पी से दूसरे शिल्पी को तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर, ग्राम से नगर में तथा नगर से बंदरगाह पर, और अन्त में स्तरीय माल को उचित बाज़ार तक पहुँचायेगा। इस सब के लिये पूंजी की आवश्यकता थी।

उद्योग के संगठनकर्त्ता के रूप में पूंजीवाद सर्वप्रथम वस्त्र-उद्योग में ही स्पष्टतः दिखाई पड़ता है। चासर के युग में ही पूंजीवादी वस्त्र-व्यापारी उत्पन्न हो चुका था जोकि विभिन्न स्थानों पर विभिन्न लोगों को नियुक्त करता था। वह एक ऐसे सामाजिक वर्ग का था जो मध्ययुगीय से अधिक आधुनिक था, और उस स्वामी-शिल्पी से भिन्न था जो अपने शिष्य-शिल्पियों तथा सहायक शिल्पियों के साथ एक बेंच पर बैठकर कार्य करता था।[1] औद्योगिक क्रान्ति के बहुत आरंभिक दिनों से भविष्य का अन्तिम रूप

---

१ अठ्ठारहवीं शताब्दी में पर्याप्त विकसित यंत्रों के आविष्कार से पूर्व तक 'पूंजीवाद' का अर्थ फैक्टरियां नहीं हुआ था। सिवाय पानी से चलने वाली धुलाई की मशीनों के, पूंजीपति शिल्पियों को उनके अपने घर पर ही कार्य देता था, और ये शिल्पी अपने निजी उपकरणों और यंत्रों का ही उपयोग करते थे। यह उद्योग की 'घरेलू' व्यवस्था थी। पूंजीपति को उत्पादित सामग्री के संग्रह के लिये गोदाम अवश्य देने पड़ते थे।

पूंजीपति नियोक्ता के हाथ में ही था। किन्तु कपड़े के उत्पादन ने उसे सारा उद्योग आत्मसात् कर सकने में समर्थ होने के चार सौ वर्ष पूर्व ही अस्तित्व में ला दिया था। नौवहन (जहाज़रानी), कोयला-व्यापार तथा गृह-निर्माण व्यापार भी इस आरंभिक काल में अंशतः पूंजीवादी आधार पर ही चलते थे। किन्तु आगे शताब्दियों तक अधिकांश उद्योग पुराने ढंग के ही स्वामी शिल्पी द्वारा, थोड़े से शिष्यों और छोटे शिल्पियों के साथ, जोकि उसी की छत के नीचे सोते तथा कार्य करते थे, चल रहा था, केवल उस पर शिल्प-संगठन का एक सामान्य निरीक्षण होता था। इसमें भी किसानों तथा स्वतंत्र श्रमिकों में उत्पन्न संघर्ष के समान ही स्वामी शिल्पियों और उनके द्वारा नियुक्त शिल्पियों में भी संघर्ष सुलग रहा था। दुकान में नियुक्त शिल्पी वही महत्वाकांक्षाएं अनुभव कर रहा था जोकि खेत में श्रमिक कर रहा था। उसने भी तब अधिक वेतन की मांग की जब प्लेग के कारण श्रमिक कम हो गये, श्रमिकों के लिये बनाये गये अधिनियम अंशतः उसकी मांगों को भी दबाने के लिये थे।

किन्तु इस विक्षोभ में केवल "वेतन के लिये संघर्ष" से कुछ अधिक भी निहित था। नगरों में अशान्ति के कुछ गंभीरतर कारण थे। व्यापार का विस्तार बढ़ जाने से तथा इसके लाभों में वृद्धि हो जाने से स्वामी तथा उसके कर्मचारी में सामाजिक और आर्थिक दुराव बहुत बढ़ रहा था और परिणामतः शिल्पी-वर्ग की समरसता में अब विक्षोभ उत्पन्न हो गया था।

शिल्पी वर्ग के उदय के आरंभिक काल में स्वामी, शिष्य तथा कर्मचारी लगभग एक ही श्रेणी के होते थे। वे सब एक-साथ 'छोटे' आदमी थे—एक दुकान पर कार्य करने वाले श्रमिक बन्धु, उसी भोजन को एक साथ खाने वाले। यद्यपि वे किसी भी आधुनिक स्तर से निर्धन थे, किन्तु वे एक गर्वीले भाईचारे के भाग थे। इन कलाकुशल व्यवसायी लोगों का वर्ग उनके सर्वसाधारण स्वार्थों का प्रतिनिधि था, और नगरपालिका के साधारण नियंत्रण के साथ यह नगर में शिल्प संबंधी मुआमलों का प्रबन्ध करता था, मूल्य-निर्धारण करता था, और स्वामी तथा कर्मचारी दोनों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए वेतन निर्धारित करता था। शिष्य लोग अपना शिक्षण-काल समाप्त होने पर या तो स्वामी बन जाते थे अथवा कर्मचारी बन जाते थे, और अधिकांश कर्मचारी देर या सवेर छोटे स्वामी बन जाते थे। स्वामी शिल्पी अपने कर्मचारियों के साथ कार्य करता था। वह अपने शिष्यों को प्रायः ही पीटता था और कभी कभी अपने कर्मचारियों को भी पीटता था, क्योंकि उन दिनों पीटना एक सामान्य प्रथा ही थी। किन्तु उन दिनों सामाजिक स्तर तथा जीवन-विधि में कोई बहुत स्पष्ट अन्तर नहीं था। वास्तव में, संगठनों से बाहर सदैव नगर में अकुशल श्रमिकों का एक ऐसा समुदाय रहता था, जोकि अत्यल्प वेतन पाता था और जिसका कोई ध्यान नहीं करता था। किन्तु संगठनों में बहुत समरसता और सन्तोष था।

चासर के युग में ये चीज़ें बदल रही थीं। उद्योग तथा व्यापार के विस्तार अनेकविध कार्यों को जन्म दे रहे थे और आर्थिक लाभों के अन्तर की मात्रा निरन्तर बढ़ रही थी। स्वामी अब शिल्पी बन्धु कम रह गया था और व्यवसायी अधिक हो गया था, जोकि व्यापार के संगठनों तथा वस्तुओं के विक्रय में व्यस्त था। कुछ शिष्य स्वामी बन जाते थे, विशेषतः यदि वे 'अपने स्वामी की लड़की से शादी कर लेते थे।' किन्तु अधिकांश शिष्य तो कर्मचारी ही बनने की आशा कर सकते थे, और बहुत ही कम कर्मचारी स्वामी बनने की आशा कर सकते थे। व्यापार में लगने वालों की संख्या में वृद्धि के अनुपात से शिल्पी स्वामियों की संख्या पहले की अपेक्षा घट रही थी। शिल्पी संगठनों की समरसता इनके सदस्यों के स्वार्थों की एकता पर आधारित थी, और एक मात्रा में इनमें सामाजिक समानता पर भी आधारित थी। किन्तु यह प्रति-वर्ष कम हो रही थी। नियोक्ता और नियुक्त में अन्तर निरन्तर स्पष्ट से स्पष्टतर हो रहा था। धनी व्यापारी और उस निर्धन शिल्पी-मुखिया में भी अन्तर बढ़ रहा था जोकि इस धनी विक्रेता के लिये अपने दो-तीन सहायकों के साथ मिलकर वस्तुएं तैयार करता था।

और इस प्रकार से हम चौदहवीं शताब्दी के कसबों में न केवल शिल्पी संगठनों के भीतर अधिक वेतन के लिए हड़तालें होती ही देखते हैं बल्कि कुछ अवस्थाओं में कर्मचारियों के स्वार्थों की रक्षा के लिये "कर्मचारी संघों" का निर्माण होता भी पाते हैं। कुछ व्यापारों में तथा कुछ नगरों में इन कर्मचारी संघों में छोटे शिल्पी मुखिया भी सम्मिलित रहते थे, क्योंकि वे भी धनी मुखियाओं के विरुद्ध थे, जोकि अब शिल्पी नहीं रहे थे और केवल व्यापारी हो गये थे। कुछ व्यापारों में व्यापारी तथा दस्तकार पृथक् हो रहे थे तथा ये व्यापारी शिल्पी संघ अथवा लिवरी कम्पनी पर अपने अधिकार द्वारा उद्योग का नियंत्रण अपने हाथ में ले रहे थे। दस्तकार, चाहे शिल्पी हो अथवा शिल्पी-सहायक, अपनी आर्थिक स्वतंत्रता प्रायः खो चुका था और एक गौणतर स्थिति की ओर अग्रसर हो रहा था। नगरों का शासन बड़े व्यापारियों के हाथ में था। किन्तु आधुनिक श्रमिक संघ की भावना पहले से ही सक्रिय हो चुकी थी।[१]

ये आर्थिक तथा समाजिक परिवर्त्तन, जोकि चौदहवीं शताब्दी में आरम्भ हुए थे, अनुगामी युगों में भी निरन्तर जारी रहे। किन्तु इसमें कोई एकरूपता नहीं थी, इसलिये इस सम्बन्ध में कोई साधारणीकरण अनुचित है। प्रत्येक शिल्प तथा प्रत्येक

---

१ पिछले मध्य युग के भव्य कैथेड्रलों, सुन्दर चर्चों तथा सामन्तों के किलों के निर्माता शिल्पियों के संगठन इन संगठनों के समान निर्मित नहीं हुए थे, बल्कि पूंजीवादी आधारों पर निर्मित हुए थे। इसलिये 'स्वतंत्र राज-शिल्पियों' में श्रमिक संगठन वृत्ति बहुत उग्र थी। ये लोग आधुनिक राज शिल्पियों से बहुत भिन्न थे।

नगर का इतिहास एक-दूसरे से भिन्न थे। किन्तु शतवर्षीय युद्ध में तथा रोज़ेज़ के युद्धों में उद्योग तथा व्यापार में वृद्धि की सामान्य दिशा उपर्युक्त प्रकार की थी।

इसलिये, चासर के काल में समाज के ढांचे में बृहत् परिवर्त्तन हो रहे थे। सामन्तों के क्षेत्रों में दासता समाप्त हो रही थी और कृषि तथा व्यापार का नियंत्रण हाथ में लेने के लिये नये वर्गों का उद्भव हो रहा था। गांवों तथा नगरों दोनों में मध्ययुगीन संस्थाओं के ऊपर आधुनिक संस्थाएँ जन्म ले रही थीं। किन्तु मानवीय परिस्थितियों के अन्य बड़े भाग, धर्म तथा कर्मकांड में, चर्च के अधिकारियों के कठोर रूढ़ीवाद के कारण संस्थात्मक परिवर्त्तन रुका हुआ था, यद्यपि यहाँ भी विचार तथा मत तीव्रता से गतिशील थे।

वास्तव में परिवर्त्तन की बहुत देर से अपेक्षा थी। पुरोहित वर्ग के दुराचार की निन्दा न केवल लोल्लाई (ईसाई सुधारक) सम्प्रदाय के धर्म-निन्दक ही कर रहे थे बल्कि श्रद्धालु लोग भी कर रहे थे—लैंगलैंड, गोवर तथा चासर की उतनी ही निन्दा कर रहे थे जितनी वाइक्लिफ कर रहा था। चर्च निश्चय ही 'भ्रष्टाचारी' था, किन्तु यह पूरे चित्र का केवल एक पहलू है—चर्च में अनेक शताब्दियों से इसी प्रकार से भ्रष्टाचारण था, किन्तु फिर भी वह सुरक्षित था, और चासर के काल में वह उससे अधिक भ्रष्ट नहीं था जितना राजकीय न्याय तथा सामन्तों और उनके संरक्षितों के कार्य भ्रष्ट थे। मध्य युगों में अधिकांश संस्थाएँ आधुनिक मानदंडों से भ्रष्ट थीं, किन्तु जहाँ पुरोहित वर्ग से इतर लोग समय के साथ बदल रहे थे, चर्च स्थिर खड़ा था। इसके दुर्निवार विशेषाधिकारों तथा निरन्तर बढ़ती हुई सम्पत्ति की ओट में सुरक्षित नेताओं ने नैतिक निन्दा तथा ईर्ष्यापूर्ण लोभ को, जोकि इसके तथा इसकी सम्पत्तियों के प्रति चारों ओर उग्र हो रहा था, शांत करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। साधारण लोग न केवल अब पहले से आलोचक ही अधिक कटु थे बल्कि उससे कहीं अधिक शिक्षित और अतएव कहीं अधिक दुर्घर्ष भी थे जितने कि वे एसेल्म तथा बैक्केट के काल में थे, जिस काल में कि पादरी लोगों का शिक्षा पर लगभग एकाधिकार था। तो भी चर्च ने व्यापक असन्तोष को दूर करने के लिये कुछ भी नहीं किया, और पन्द्रहवीं शताब्दी में वह तूफान कुछ शान्त हो गया। किन्तु यह विराम बहुत ही अचिरस्थायी था और अन्ततः प्रशासकों द्वारा सुधार के सब प्रयत्नों के विफल होने पर आखिर ट्यूडरों के नेतृत्व में क्रान्ति हुई।

बहुत से पादरी भी चर्च के आलोचक हो गये थे, और ये भी उतने खुले आलोचक थे जितने अन्य लोग। ऑक्सफोर्ड के शिक्षित लोग, और पादरी प्रतिष्ठिानों के बहुत से पुजारी भी, जिनका दशांश कर धनी महन्तों और विदेशी पादरियों को जाता था, सुधारकों का कार्य कर रहे थे और विद्रोही तक हो गये थे। इसके अतिरिक्त, स्वयं ये लोग भी, जिनकी कि निन्दा की जा रही थी, परस्पर भी दोषारोपण और निन्दा

कर रहे थे और ऐसे गाली गलौच का प्रयोग कर रहे थे जैसी मध्य युग में ऐसे विवादों में प्राय: ही प्रयुक्त होती थीं। श्रमण पादरी विशपों तथा गृहस्थ पादरियों पर लांछन लगा रहे थे और ये लोग श्रमणों की निन्दा कर रहे थे। चासर की कथाओं (टेल्ज़) में श्रमण (फ्रेअर) पादरी तथा सम्मोनर पादरी एक-दूसरे की चालों की पोल खोल कर सामान्य लोगों के उपहास-भाजन बनते हैं। सभी ओर से, चर्च के भीतर और वाहर, सब प्रकार से पादरियों की निन्दा की जा रही थी।

तो भी कुछ नहीं किया गया। सामन्तों तथा शिल्पी संगठनों (गिल्डों) के विपरीत चर्च आर्थिक परिवर्तन की प्राकृतिक क्रिया से अथवा जनमत के दबाव मात्र से ही परिवर्तित नहीं हुआ। इसके लिए कुछ निश्चित प्रशासकीय तथा वैधानिक सुधारों की आवश्यकता थी और इनको लागू करने के लिये कोई साधन-व्यवस्था नहीं थी, सिवाय ऐसी अवस्था के जोकि पोप और पादरियों के हाथ में थी। किन्तु जिस पोप ने पहले *युगों में इंगलैंड में चर्च की हालत सुधारने के लिये इतना कार्य किया अब वह सर्वथा* कुछ नहीं कर रहा था। उसने अपनी शक्ति का उपयोग ऐसे दुराचरणों को प्रश्रय देने के लिए किया जो रोमन चर्च की संपत्ति बढ़ाने में सहायक हो सकते थे—जैसे पादरी-पद का विक्रय, गिरजे में न रहना, अधिक पादरी-पद स्वीकार करना, कृपाओं का विक्रय करना आदि। ये सब कृत्य उस आलोचना-प्रधान युग की नैतिक चेतना को बहुत खलते थे।

किन्तु पोप के समर्थन-सहायता के विना भी इंगलैंड के विशप कुछ न कुछ तो कर ही सकते थे। और चासर के युग में विशप लोग, बहुत कम अपवादों को छोड़कर, योग्य, परिश्रमी तथा अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति थे। तब क्यों उन्होंने चर्च में सुधार करने का प्रयत्न तक नहीं किया?

इसका मुख्य कारण था उनकी सांसारिक कार्यों में अधिक रुचि होना। यद्यपि विशपों को चर्च की आय में से वेतन मिलता था किन्तु वे अपना जीवन राज्य की सेवा में ही लगाते थे। पार्लियामेंट के कानून होने पर भी पोप और राजा मिलकर चर्च के उत्कृष्टतम स्थान बेच रहे थे। पोप बहुत से समृद्ध मठों में अपने विदेशी कृपा-भाजनों को थोप देता था और वह प्राय: ही सौदेवाजी के रूप में विशपों की नियुक्ति का अधिकार राजा के हाथ में छोड़ जाता था। और राजा अपने मंत्रियों तथा अन्य अधिकारियों को वेतन राजकीय आय में से देने के बजाय चर्च की आय में से देता था। १३७६ तथा १३८६ के बीच इंगलैंड तथा वेल्स में २५ विशपों में से १३ राज्य के भी उच्च पदाधिकारी थे और अन्य बहुत से राजनीति में महत्वपूर्ण भाग ले रहे थे। बहुत बार वे विदेशों में राजदूत के रूप में भी भेजे जाते थे। अन्य कुछ राजा के पुत्रों की नौकरी के द्वारा ऊँचे पदों पर पहुँचते: बाथ तथा वेल्स का विशप ब्लैक राजकुमार के लिये गासकोनी का चांस्लर रहा, सालिसवरी का विशप जोन आफ़ गॉंट

के लिये लंकास्टर का चांस्लर बना। रैल्फ का चांस्लर सामान्यतः बिशप ही होता था, जैसे प्राइमेट सडबरी, तथा विलियम ग्राफ़ वैंकेहैम।

नार्मन राजाओं के काल में बिशप-मंडल तथा राजकीय मंत्री परिषद् में निकट सम्बन्ध होने से उस असंस्कृत देश को योग्य तथा शिक्षित अधिकारी-तंत्र प्राप्त हुआ। इन बिशप लोगों को धर्माध्यक्षता के अधिकार के कारण ऐसा सम्मान प्राप्त था जिसने उन्हें राज्य कर्मचारियों के रूप में अशिक्षित तथा असभ्य सामन्तों का मुकाबला करने में समर्थ बनाया। किन्तु जो व्यवस्था किसी समय देश के लिए बहुत मूल्यवान् थी अब उसकी आवश्यकता निरन्तर घट रही थी। अब साधारण लोगों में से भी बहुत से, जिनमें से चासर भी एक था, राज्य कर्मचारी होने के योग्य हो गये थे। अब सचिवालय सम्बन्धी कार्य पर पादरियों के एकाधिकार तथा बड़े राज्य पदों पर बिशपों के एकाधिकार के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हो रही थी, जो उचित ही थी। अब बहुत से अत्यन्त कुशल तथा बुद्धिमान वकील जैसे नाइवेट, तथा सुशिक्षित लोग, जैसे रिचर्ड स्क्रोप, सहज ही प्राप्य थे जोकि राज्य के बड़े से बड़े कार्य को भी योग्यता पूर्वक कर सकते थे। इस प्रकार के लोगों ने ही ट्यूडर राजाओं के राजत्व में महन्तों तथा सामन्तों को राज्य के पदाधिकारियों के रूप में स्थानान्तरित किया था। पीछे के प्लैंटेजेनेटों के राज्यकाल में ऐसे परिवर्त्तन के चिह्न पहले से ही दिखाई देने लगे थे। पादरियों के राजकीय सेवा में रखे जाने के विरुद्ध लोक-सदन की १३७९ की याचिका के कारण कुछ वर्षों तक राज्य के चांस्लरों तथा कोशाध्यक्षों के रूप में एक पादरी और एक संसारी व्यक्ति रहता था।

ये बिशप लोग प्रशासकीय कार्यों में इतने व्यस्त रहते थे कि अपने चर्च के प्रदेश की दुरवस्था की ओर कोई ध्यान नहीं दे पाते थे। यदि रैक्टर-पद खाली होते, अथवा दुष्ट व्यक्ति या कम वेतन पाने वाले लोग उन स्थानों में भरे होते, तो ये लोग कहते कि ऐसा सदा से ही चला आया है। यदि पोप इन्हें कृपाओं अथवा झूठे अवशेषों को बेचने के लिए आदेश देता तो ये इसे उचित व्यापार ही मानते थे, इस सम्बन्ध में अधिक सोचे बिना ये लोग 'क्षमा-भाजनों' को पोप के क्षमा-पत्र बांटते थे और इनको प्राप्त करने वालों को जनता के सम्मुख प्रशंसित करते थे।

अपने कार्यों के एक अंग—धार्मिक न्यायालयों की उचित व्यवस्था—की ये बिशप लोग उपेक्षा कर रहे थे और इसके बड़े दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हो रहे थे। जहाँ तक वसीयतों तथा विवाहों का प्रश्न है, जोकि उस युग में चर्च के अधीन थे, ये न्यायालय उस काल के सामान्य-न्यायाधीशों तथा वकीलों से अधिक भ्रष्टाचारपूर्ण और अयोग्य नहीं थे। किन्तु बिशप के न्यायालय का अधिक विशिष्ट कार्य, जिसेकि वह प्रायः अपने सहायक (आर्कडीकन) पर छोड़ देता था, चासर के काल में बड़े षड्यंत्रों को जन्म दे रहा था। इनके ऐसे अपराधों का दण्ड, जो सामान्य न्यायालय

के क्षेत्र में नहीं आते थे, जैसे लम्पटता आदि, धार्मिक न्यायालय देता था। किन्तु वास्तव में ऋण न चुका पाने पर उसे प्रायश्चित्त में बदलने की प्रथा उन दिनों एक सामान्य बात हो गयी थी। और सरकारी प्रथा यह होने पर बिशप के न्यायालय के अधिकारियों द्वारा अपराधियों के घरों पर उनसे रिश्वत लेकर उनके भेद छिपाना एक स्वाभाविक बात थी। सम्मन देने वाले तो इसमें बहुत ही बदनाम थे।

यद्यपि बिशप लोग अपने अधिकांश कार्यों की उपेक्षा करते थे किन्तु फिर भी चर्च के मुआमलों में उनका ध्यान इतना अधिक था कि वे चर्च के विशेषाधिकारों तथा धर्मस्व के लिए किसी भी हस्तक्षेप के विरुद्ध लड़ने के लिए तत्पर रहते थे तथा धर्मविरोधियों को कुचलने में कुछ नहीं उठा रखते थे। वास्तव में धर्म-विरोध ने पहली बार कुछ महत्वपूर्ण रूप से अपना सिर उस समय उठाया जब वाइक्लिफ ने (१३८०) मास (ईसाई पर्व विशेष) में बलिदान करने पर तत्व-परिवर्त्तन होने की धारणा का खंडन किया।

निस्सन्देह, बहुत से पादरियों के प्रदेशों की सेवा कुछ बहुत ही ईमानदार और योग्य व्यक्ति कर रहे थे, जोकि बहुत कुछ चासर की 'दीन व्यक्ति' (पूअर पर्सन) की कल्पना के अनुरूप थे। और एकमात्र इन्हीं लोगों के लिये चासर के मन में प्यार और आदर था। लोगों से प्राप्त भेंटों का बहुत बड़ा भाग ऐसे लोगों को बांट दिया जाता था जो पादरी वर्ग के नहीं थे, अथवा जो केवल साधारण लोग ही होते थे। और बहुत अधिक बार चर्च किसी मठ का भाग होता, अथवा किसी अनुपस्थित धनी, बहुपदधारी बिशप के अधिकार में होता था और इस पर कोई बहुत कम वेतन पाने वाला मूढ़ पादरी था जो मास पढ़ाता था, जो उन लैटिन शब्दों को कुछ भी नहीं समझता था, जिन्हें कि वह गुनगुनाता था। अन्य लोग, जो अपना कार्य अधिक सम्यक् रूप से कर सकते थे, अपने कार्य छोड़कर लंडन या आक्सफर्ड में, अथवा किसी बड़े आदमी के घर में, घूमते थे जहांकि उन्हें अधिक स्वतंत्र तथा उत्तेजनापूर्ण जीवन तथा अधिक शुल्क मिल पाता था। पादरी के हल्के का पुजारी बहुत कम ही कभी अध्यक्ष (रैक्टर) होता था, अक्सर तो वह उपाध्यक्ष भी नहीं होता था, अधिकांशतः वह पुरोहित ही होता था, जो बहुत कम वेतन पर पदासीन पादरी द्वारा उपेक्षित कार्यों का सम्पादन करता था।

इसका अर्थ यह हुआ कि इंगलैंड के गाँवों के निवासी पुरोहित से अध्यापन तथा उपदेश का लाभ बहुत कम होता था, यद्यपि मास (ईसाइयों का पूजा समारोह) प्रतिदिन होता था। किन्तु इस अभाव की पूर्ति बहुत सीमा तक उपदेश-कर्त्ता श्रमणों द्वारा नियमित भ्रमणों के सिलसिले में, अपने थैले के साथ घूमने वाले क्षमा-दाताओं द्वारा, वैक्लिफ के धर्मालोचक सुधारकों द्वारा तथा बल के अनुयायी ईसाई प्रजातंत्रवाद के प्रचारक उपदेशकों द्वारा की जा रही थी। चर्च के क्षेत्र में हस्तक्षेप करने वाले

इन लोगों को हम चाहे गेहूं की खेती में शायिघास बोने वाले (अर्थात् बाधक) कहें अथवा ईश्वर की खेती की समृद्ध करने वाले, उन्होंने देश के धार्मिक तथा बौद्धिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भाग लिया। उन्होंने उस काल के नवीनतम विचारों, शिक्षाओं तथा समाचारों का सुदूरतम खेतों और झोपड़ियों तक प्रसार किया, जिनके निवासी अन्यथा अपने पड़ौस से परे भी कभी नहीं जा पाते थे और कोई लिखा शब्द नहीं पढ़ सकते थे। ये धार्मिक परिव्राजक पैदल या घोड़े की पीठ पर चक्करदार पंकिल सड़कों के रास्ते अथवा हरी वीथिकाओं के रास्ते निरन्तर घूमा करते थे। इनके इस घूमक्कड़ वर्ग की सूची में अधिक साँसारिक प्रकार के लोगों, जैसे चारणों, ऐन्द्रजालिकों, बाजीगरों, भिखारियों, जादूगरों तथा विरागी और गृहस्थी तीर्थयात्रियों को भी रखा जा सकता है। ये सब घुमन्तू लोग, सुस्सरेंड के शब्दों में, जीवाणुओं के समान थे जो कि जनसमुदाय के अचल भाग को नये युग तथा विशालतर संसार के नये विचारों की छूत लगाते थे। ये लोग भी मध्ययुगीन से आधुनिक की ओर संक्रमण में सहायक हो रहे थे। किन्तु पादरी द्वारा नियुक्त पुजारी अपने चर्च की चार दीवारी के भीतर राजा था, और वहां वह रविवारों को पूजा कराता था जिसमें कि गाँव के अधिकांश लोग भाग लेते थे।

प्रत्येक रविवार को चर्च के फर्श पर झुकने वाला किसान लैटिन के शब्दों का अर्थ नहीं जान पाता था, किन्तु तब भी, जब वह आराध्य को देखता था तथा परिचित किन्तु रहस्यपूर्ण शब्दों को सुनता था तो उसके हृदय में पवित्र विचारों का संचार होता था। उसके चारों ओर दीवारों पर धर्म ग्रंथों से तथा सन्तों के जीवन से चित्रित दृश्य विद्यमान होते थे, और दीवारी पर्दे के ऊपर की गैलरी पर "अन्तिम निर्णय" का चित्र आकर्षक रंगों में चित्रित रहता था—स्वर्ग उत्तम व्यक्तियों का स्वागत करने के लिये तत्पर और दूसरी ओर जलता हुआ नरक, जिसमें कि दंडधर राक्षस नग्न आत्माओं को प्रपीड़ित कर रहे चित्रित होते थे। नरक का भय एक बड़ी प्रभावशाली शक्ति था, जिसका लाभ सभी धार्मिक पोप-पादरी बड़ी निर्दयतापूर्वक उठाते थें, जिसका उद्देश्य चर्च को अधिक प्रभावशाली बनाना भी होता था और दोषियों से पश्चात्ताप करवाना भी। रूढ़िवादी लोग चर्च-विरोधियों को तथा चर्च विरोधी लोग रूढ़िवादियों को नारकीय कष्टों के अधिकारी बताते थे और इस बात में सभी सहमत थे कि अब नरक में स्थान बहुत कम होगा क्योंकि वहां श्रमणों की बहुत भीड़ पहले सी ही लगी है।

किसान ईसा की कुछ उक्तियों तथा उसके जीवन के कुछ वृतांतों को जानता था, और इसके अतिरिक्त बाइबल की अनेक कथाएं, जैसे आदम और ईव की, नोआह की बाढ़ की, सोलोमन की पत्नियों तथा उसकी बुद्धिमता की, जेज़ेबल के भाग्य की, जेफ्फेथाह तथा उसकी लड़की की "जिससे कि उसने कूएं के पास गुज़रते हुए संभोग किया था।" यह सब, और ऐसा ही बहुत कुछ और, वह उक्ति चमत्कार पूर्ण भाषा में वर्णित धार्मिक कथाओं तथा श्रमणों के रोमांचक और मनोरंजन धर्मोपदेशों से सीखता था। उसने कभी इंगलिश भाषा में बाइबल नहीं देखी थी, और यदि उसे इंगलिश में मिलती

भी तो भी वह उसे पढ़ नहीं सकता था। उसके अपने घर में वैसा कुछ नहीं था जैसा पारिवारिक प्रार्थना या बाइबल के पाठ के अनुरूप कहा जा सकता। किन्तु तब भी धर्म तथा धार्मिक भाषा ने इसके जीवन को आवेष्टित किया हुआ था। क्रॉस पर लटके ईसा का चित्र प्रायः ही उसकी आंखों के सम्मुख रहता था तथा ईसा के सूली चढ़ने की कथा उसके मन में रहती थी।

पापों की स्वीकृति एक आवश्यक कर्तव्य था, जो कि सामान्यतः पादरी या पुजारी के सम्मुख किया जाता था, किन्तु बहुत बार यह आगन्तुक श्रमण के सम्मुख भी किया जाता था, जो कि इससे मुक्ति अधिक सहज में दे देता था, और बहुत बार (जैसा कि प्रायः कहा जाता था) रिश्वत में पैसा लेकर, अथवा अच्छे भोजन के बदले में, अथवा अन्य किसी लाभ के लिये, वह 'क्षमा प्रदान' कर देता था।

किन्तु इन श्रमणों के सम्बन्ध में बहुत कुछ और भी कहना अपेक्षित है। सेंट डेमिनिक के काले श्रमण और उनसे भी अधिक शालीन स्वभाव के सेंट फ्रांसिस के धूसर वर्णी श्रमिक तेरहवीं शताब्दी के इंगलैंड में एक सच्ची ईसाई शक्ति के वाहक थे, और चौदहवीं शताब्दी में भी चर्च का अधिकांश प्रचार कार्य वे ही कर रहे थे। अब भी वे महान् उपदेशक थे और उन्होंने उपदेश के लिये आकांक्षा उत्पन्न कर दी थी। बौद्धिकता के प्रति प्रबुद्ध युग का अपढ़ सामान्य जन बोले गये शब्द की अधिकाधिक मांग कर रहा था, और पादरी से उसे वह पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता था।

परिणामतः श्रमण चासर के युग में भी युग की दिशा का निर्धारण कर रहे थे। वाइक्लिफ के अनुयायियों द्वारा जन-प्रचार को जो इतना महत्व दिया जा रहा था वह इन श्रमणों की नकल भी था और ईर्ष्या के कारण भी था। प्रोटेस्टैंटों ने जो आगे चलकर पूजा स्थान के बजाय उपदेश मंच को अधिक महत्व दिया, वह वास्तव में उन्होंने श्रमणों द्वारा प्रवर्तित इस आन्दोलन को ही आगे बढ़ाया था।

रूढ़िवादी गृहस्थी पादरी, जो श्रमणों की यह कह कर निन्दा कर रहे थे कि ये लोग अपढ़ लोगों को आकर्षित करने के लिये भोंडी और धर्मतत्व से रहित कहानियां सुनाते हैं, उसका एक कारण यह भी था कि ये अपने उपदेशों में विशपों, मठाधीशों तथा पुजारियों के निठल्लेपन की तथा इनके कर्मचारियों के भ्रष्टाचार की निन्दा करते थे। वाइक्लिफ के जीवन के पहले भाग में श्रमण लोग सम्पन्न पादरियों के विरोध के लिये उसके मित्र थे, किन्तु जब उसने तत्वान्तरण (ट्रांसब्स्टेंश्येशन) के विरुद्ध अपना मत प्रतिपादन किया तब सभी श्रमण संप्रदाय उसके शत्रु हो गये। सिद्धान्ततः तो श्रमण लोग, मठाधीशों से भिन्न, भिक्षावृत्ति से रहते थे, उनकी अपनी कोई सम्पत्ति नहीं थी तथा वे सन्त फ्रांसिस द्वारा उपदिष्ट धार्मिक त्याग (निर्धनता) से रहते थे, किन्तु व्यवहार में उन्होंने बहुत धन-संपत्ति का संग्रह कर लिया था, जिसे कि वे अपने भव्य

विहारों में जमा किये हुए थे। वाइक्लिफ सिद्धान्त को तो पसन्द करता था किन्तु वह उनके व्यवहार का आलोचक था।

यदि हम अंग्रेजी शुद्धाचारवाद के कुछ विशिष्ट लक्षणों, जैसे सन्यासवाद, दुश्चरित्रता के विरुद्ध अभियान, रविवासरीय उपासना-नियम के कट्टर पालन, नरक से भय, विशपों तथा धनी पुजारियों का विरोध, विरोधियों की कठोर निन्दा, मर्मस्पर्शी तथा प्रेरणापूर्ण उपदेशों, अश्रुगलद् भावुकता, दीनों और निर्धनों को इसकी समानतावादी अपील आदि के मूल की खोज करना चाहें तो यह हमें मध्ययुगीन चर्च में, और विशेष रूप से श्रमणों के आन्दोलन में मिल सकता है। किन्तु ये प्रवृत्तियां केवल श्रमणों में ही पायी जाती, पादरी लैंगलैंड बुन्यन का पूर्वगामी था और वाइक्लिफ के लिये लेटियर तथा वेस्ले द्वारा चरितार्थ सन्यास एक अनुसरणीय आदर्श हो सकता था। जिन विद्वानों ने इधर हाल ही में १४वीं शताब्दी के धर्मोपदेशों तथा अन्य गद्य-पद्यात्मक धार्मिक साहित्य का अत्यन्त विस्तृत और गंभीर अध्ययन किया है, वे इस बात के बहुत विरुद्ध हैं कि कोई आधुनिक दल मध्ययुगीन धर्म पर अपना अधिकार जताए या कोई अन्य दल उसका खंडन करे। क्योंकि, उसके अनुसार, मध्ययुगीन चर्च हम सब का जन्म प्रदाता है।[1]

दूसरी ओर, उत्तरकालीन अंग्रेजी प्रोटेस्टेंट धर्म में ऐसे तत्व थे जो किसी भी प्रकार से मध्ययुगीन नहीं कहे जा सकते। पारिवारिक पूजा तथा पारिवारिक और व्यापारिक जीवन का धर्म को समर्पण ये प्रोटेस्टेंटों की पीछे की देनें हैं। मध्ययुगीय आदर्शों तथा कार्य-कलाप में इनको कहीं स्थान नहीं था, क्योंकि मध्ययुगीय आदर्श मुख्यतः आदिम ईसाइयत की विरागात्मक तथा असांसारिक प्रवृत्तियों से प्रेरणा प्राप्त करते थे। यद्यपि व्यवहार में ऐसी कोई बात नहीं थी, किन्तु तब भी सिद्धान्त में यही आदर्श थे।

जबकि श्रमणों के शत्रु यह शिकायत करते थे कि ये लोग बहुत अति करते थे और अव्यापार में व्यापार करते थे, ईसाई साधुओं के विरुद्ध भी यह दोषारोपण किया जाता था कि ये लोग प्रायः कुछ नहीं करते हैं। जिन मठों तथा आश्रमों ने कभी इंगलैंड को एक उत्कृष्ट नेतृत्व दिया था, उनमें अब धार्मिक उत्साह की ज्वाला तथा ज्ञान का प्रकाश बहुत मन्द पड़ गये थे। अब राजा कभी किसी विरक्त मठाधीश को आमन्त्रित कर पृथ्वी पर दया करने की प्रार्थना नहीं करता था और उससे यह अनुरोध नहीं करता था कि वह राज्य के बदले में अपनी अनुकम्पा और वरदान दे दे। अब कैंटरबरी का महन्त विद्वत्ता तथा दार्शनिकता में पैरिस के विश्वविद्यालय के प्रोफेसर

---

[1] पीपल्स फेथ इन दि टाइम आफ वाइक्लिफ, बी. मैन्निंग, पृ० १८६-१८६, तथा पैस्सिम, प्रीचिंग इन मैडीवल इंग्लैंड, जी. आर. औस्ट, पृ० XII, ६१-६५ तथा पैस्सिम (कैम्ब्रिज प्रैस)।

की स्पर्धा के योग्य नहीं रहा था; अब देश का उच्च चिन्तन तथा शिक्षण ऑक्सफर्ड में केन्द्रित था और वहाँ बौद्धिक प्रभाव मुख्यत: श्रमणों तथा गृहस्थ पादरियों का था। न अब ये महन्त लोग राजनीति में वैसा महत्वपूर्ण भाग लेते थे जैसा बैरोन युद्ध में लेते थे। पुरावृत्त अब भी मठों में ही तैयार किये जाते थे, किन्तु वे केवल पिछले युग की एक साहित्यिक परम्परा का ही संवहन कर रहे थे जबकि फ्रोइस्टर नामक एक असन्यासी व्यक्ति इतिहास लेखन में नये प्रतिमान स्थापित कर रहा था। तेरहवीं शताब्दी में सेंट अल्बांस मठ का मैट्थ्यू पैरिस नामक एक साधु वास्तव अर्थ में एक महान् इतिहासज्ञ हुआ है, किन्तु चासर के काल के मठीय पुरावृत्त लेखक, यहाँ तक कि वाल्सिंघम जैसा अत्युत्कृष्ट लेखक भी, घटनाओं के सापेक्ष महत्व को समझने में समर्थ नहीं थे और न उनमें यह सामर्थ्य ही थी कि वे अपने मठों की चार दीवारी के बाहर संसार की घटनाएँ समझ सकते। उसे अपने मठ के स्वार्थों के अतिरिक्त अन्य किसी चीज का ध्यान नहीं था। उसका सारा जीवन मठ की सीमाओं में ही बीता, वह केवल अपनी सुदूर-स्थित सम्पत्तियों के किराये इकट्ठे करने के लिये, अथवा मठपति के साथ शिकार के लिये, अथवा कभी लंदन जाने के लिये ही अपने मठ से बाहर निकलता था। घर पर वह अपना समय अपने भाई-बन्धुओं के साथ बिताता था जिनके अनुभव का क्षेत्र उतना ही सीमित था जितना उसका अपना था। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मठ के लोग नगर-निवासियों या किसानों की मांगों का इतना कड़ा विरोध करते थे जिनके लिये कि परिवर्त्तित परिस्थितियों में मठों के स्थानीय विशेषाधिकार अत्यन्त कष्ट तथा क्षोभ-जनक प्रतीत होने लगे थे। सब प्रकार से संसार आगे बढ़ रहा था, किन्तु मठ का जीवन स्थिर खड़ा था। केवल यार्कशायर तथा उत्तर में ही मठ लोकप्रिय थे और सामान्य ध्वंस के काल तक वैसे रहे।

चासर के काल के इंगलैंड में मठों के साधु सांसारिक रूप से चतुर तथा समृद्ध थे, और मठों में विश्रामपूर्ण ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत करते थे, अथवा साधारण व्यक्तियों की वेषभूषा में घूमते थे तथा शिकार करने, अथवा अपनी संपत्तियों की संभाल करने में व्यस्त रहते थे। वे संख्या में बहुत अधिक नहीं थे—तो भी हेनरी अष्टम् के काल में, जबकि उनको समाप्त किया गया, वे ५००० से अधिक थे। अपने पूर्वजों के अनुरूप श्रम करने का अभ्यास छोड़ देने के कारण उनके अनेक एकड़ों तक विस्तृत विशाल प्रतिष्ठानों की दैनिक कार्य-व्यवस्था के लिये उन्हें नौकर-चाकरों की पूरी एक सेना ही रखनी पड़ती थी। बरी सेंट एड्मंड्स तथा एबिंग्डन के मठ इसके उदाहरण हैं। मठों के साधु जीवित या मृत के लिये, तथा अपने संरक्षकों और संस्थापकों के लिये प्रार्थनाएँ तथा मास स्वयं करवाते थे। वे अपने दीनों को दैनिक बलि पैसे तथा आमिष के रूप में बांटते थे; तथा अभ्यागतों को, जिनमें से बहुत से बहुत धनी होते थे, अत्यन्त उदार आतिथ्य प्रदान करते थे। धनी अतिथि मठाध्यक्ष या उपाध्यक्ष के साथ भोजन करते थे, और साधारण अतिथियों को मठ के अतिथि-गृह में स्थान मिलता

था। संस्थापकों के सम्बन्धी प्रभावशाली सामन्त तथा सरदार मठों के अतिथि, अधिकारी अथवा प्रतिनिधि होने का दावा करते थे और इनकी सम्पत्ति के बहुत बड़े भाग का उपभोग करते थे, और साथ ही साधु, और विशेषतः मठाध्यक्ष भी अपनी सुख-सुविधा के लिये बहुत अधिक व्यय करते थे।[1]

मठों ने इस समय तक भूमि, दशांश कर, हस्तगत चर्चों, कोशों तथा संरक्षकता के रूप में विशाल संपत्तियों का संग्रह कर लिया था—इतना कि उनकी 'निठल्ले' और 'निर्धन प्रजा के रक्त-शोषक' कह कर आलोचना होने लगी। लोकसभा ने यह घोषित किया कि इंगलैंड की सम्पत्ति का तीन चौथाई चर्चों के अधिकार में था, जिसका अधिकांश नियमित पादरियों का स्वामित्व था। तो भी मठों के ये स्वामी निरन्तर आर्थिक कठिनाइयों में रहते थे। कभी तो अपने मठों और संलग्न चर्चों को भव्य शिल्प से सुसज्जित करने के उत्साहातिरेक के कारण और कभी केवल कुप्रबन्ध ही के कारण। ऐसे महन्त, जिनमें कार्लाइल के सेम्सन के समान अन्य गुणों के अतिरिक्त, व्यापार की योग्यता भी अच्छी थी, पिछले दिनों में बहुत दुर्लभ हो गये थे, यद्यपि कुछ प्रमुख गिरजों के महन्त, जैसे कैंटर्बरी का, पिछले दिनों में भी अपने वित्त का सुचारू प्रबन्ध रखते रहे तथा अपनी सुदूर-स्थित संपत्ति की उचित व्यवस्था करते रहे। प्लेग का प्रकोप मठों पर उतना ही भयानक था जितना सामान्य लोगों पर। इटेलियन तथा अंग्रेज़ साहूकार, जिन्होंने कि यहूदियों को स्थानान्तरित किया था, उतना ही अधिक सूद ले रहे थे और मठों के साधु उनके फँदे में आसानी से फँस जाते थे। मठ प्रायः ही साहूकारों से, उन्हें जीवन भर का वार्षिक-व्यय-शुल्क देने के बदले में, पैसा उधार ले लेते थे और वह प्रायः ही बहुत लम्बी आयु जीता था।

पहले समय में मठीय ज़मीदारों की भूमियाँ, जिनका प्रबन्ध सीधे उनके अधिकारी ही करते थे, सम्पत्ति के प्रबन्ध तथा कृषि-सुधार के उत्कृष्ट उदाहरण थे। और यह स्थिति केवल यार्कशायर के उपत्यका प्रदेश में ही नहीं थी बल्कि दक्षिण के कृषि-योग्य तथा चरागाहों वाले प्रदेशों में भी थी। किन्तु १५वीं तथा १६वीं शताब्दियों में मठों की भूमियाँ प्रायः ही साधारण लोगों को दीर्घकालीन पट्टे पर दी जा रही थीं, और ये लोग या तो इन पर स्वयं कृषि करते थे या आगे पट्टे पर दे देते थे। इस तथा अन्य अनेक प्रकार से मठों की सम्पत्तियों पर सामान्य लोगों का नियंत्रण अन्तिम विलयन से बहुत पहले आरम्भ हो चुका था।

मठों में बहुत बार प्रवाद के अवसर भी उपस्थित हो जाते थे, और धर्म पर श्रद्धा

---

[1] स्नेप-इंगलिश मोनास्टिक फाइनेंसिस, कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रैस, १९२६; सेविने-इंगलिश मोनास्ट्रीज़ आन दि ईव आफ़ दि डिस्सोल्यूशन, ऑक्सफर्ड स्टडीज़, सं० विनोग्राडोफ, १९०९।

रखने वाला गोवर इस सम्बन्ध में उतना ही निश्चित तथा जितना वाइक्लिफ, कि महन्त लोग दुराचारी हैं। किन्तु यदि उस युग के सभी वर्गों में आचरण के निम्न-स्तर को तथा अविवाहित पादरियों की विशिष्ट कठिनाइयों को ध्यान में रखकर देखा जाय, तब यह समझना उचित है कि इस दृष्टि से मठों में वहुत अधिक दुराचार था। निश्चय ही पिछले युगों की त्याग भावना मर चुकी थी और अब महन्त लोग नियम-निष्ठता के आदर्श नहीं रहे थे। सामान्य साधु भी अब, उस युग के जीवन-स्तर के अनुसार, वहुत ऐश के साथ रहते थे, वढ़िया और चुस्त कपड़े पहनते थे तथा पौष्टिक और सुस्वादु भोजन करते थे। उनके आमिषाहार पर लगाये गये पहले के निषेध अब शिथिल हो गये थे। वे वाहरी खेलों (फील्ड स्पोर्ट्‌स) के शौकीन थे—किन्तु उसी प्रकार से अन्य लोग भी थे। इन खेलों में स्वयं कोई दोष नहीं था, किन्तु इसमें उनके साधु होने का वैशिष्ट्य नहीं रहता था, और इस प्रकार से उनकी साधु के रूप में उपयोगिता समाप्त हो जाती थी। यही कारण था कि वे इस कारण से भी आलोचना के विषय थे। लैंगलैंड उनके विरुद्ध जो भयानकतम दोषारोपण कर सका वह था :

वह घुड़ सवारी करता था, गली-कूचों में आवारा घूमता था, प्रेम-दिवसों (सामन्ती दरबार की बैठकों) का वह नेता था, तथा भूमि-क्रेता था, एक जागीर से दूसरी जागीर में वह घोड़े पर घूमता था, उसके पीछे पालतू कुत्तों का झुंड रहता था, मानो वह कोई लार्ड हो।[१]

और कवि उस दिन की प्रतीक्षा करता है जो काल-क्रम में आया भी—

जिस दिन कि अबिंग्डन के महन्त तथा उसकी सभी सन्तानों पर राजा आघात करेगा, और उस आघात के घाव का कभी उपचार नहीं होगा।

चर्च के सुधारक, जो कि पोप तथा बिशपों से व्यग्र और विक्षुब्ध थे, अब राज्य-शक्ति की ओर आशा से देख रहे थे। पार्लियामेंट तो पहले से ही चर्च की वहुत बड़ी सम्पत्तियों का भाग छीन लेने की मांग कर रही थी, जिन्होंने कि अनेक पीढ़ियों से

---

[१] साधु के जीवन की लैंगलैंड द्वारा आलोचना, अधिकांश आधुनिक आलोचना के समान, जिसमें वाइक्लिफ की आलोचना भी शामिल है, उनके विरक्त तथा एकान्त जीवन के विरुद्ध नहीं थी, वल्कि ठीक इसके विपरीत, उनके द्वारा इस आदर्श से विमुख रहने के कारण थी। 'मध्य युगों को इसमें कोई सन्देह नहीं था कि विरागात्मक जीवन चुनने वाली मेरी कर्म का जीवन चयन करने वाली मार्था से उत्कृष्ट थी। किन्तु साधु अब मार्था वने बिना ही मेरी का जीवन त्याग चुके थे। मैं पाठकों को पिअर्स दि प्लोमैन अच्छी तरह से समझने के लिये इस विषय पर आर० डब्लू० चॉवर की पुस्तक मैन्स अनकंकर्ड माइंड (१६३६) पढ़ने का परामर्श दूंगा।

दान-कर्त्ताओं की विशाल भूमियों को निगल रखा था, और एक एकड़ भी वापिस नहीं किया था। किन्तु अभी समय नहीं आया था कि सामान्य लोगों की नैतिक चेतना यह समझती कि सांसारिक शक्ति चर्च की धार्मिक सम्पत्तियों को इस प्रकार से छीन सके। पार्लियामेंट में राजा की सर्वशक्तिमत्ता अभी वैधानिक रूप से पूर्णतः निश्चित नहीं हुई थी। चर्च तथा राज्य की पार्लियामेंट तथा पादरी-सभा की समानान्तर सत्ताएँ समाज में वास्तव सन्तुलन का प्रतिनिधित्व कर रही थीं।

चासर के युग में चर्च मानवता की सेवा की एक बहुत बड़ी शाखा में न तो ह्रासोन्मुख था और न अचल ही। चर्च सम्बन्धित शिल्प की सतत किन्तु निरन्तर गतिमान परम्परा अभी भी भव्य गति से अग्रसर हो रही थी और इंगलैंड को वास्तु शिल्प के अत्यन्त समृद्ध निर्माणों से भर रही थी, जिनकी तुलना न तो प्राचीन काल ही कर सकता है और न आधुनिक ही। वास्तु कला में प्लेग के कारण आये संक्षिप्त अवरोध के अतिरिक्त मठों तथा चर्चों में अंग्रेज़ी वास्तु कला की प्रगति और लहरीली ज्वालाकृतिवत् नक्काशी के युग से ऋजु लम्बाकृति की ओर हुई, इसकी मुख्य विशेषता नक्काशी की समृद्धता तथा वृहदाकार खिड़कियां थीं जिनमें कि प्रस्तर स्तंभ बने होते थे। विशप अथवा उसका सहकारी अपने निरीक्षण के समय छोटे पुराने नार्मन काल के चर्च की 'बहुत छोटा बहुत अंधेरा' कहकर भर्त्सना करते थे यद्यपि वह अपने ढंग से बहुत उत्कृष्ट बना होता था। नये चर्चों में प्रकाश रेंगता हुआ नहीं आता था बल्कि रंगें शीशों में से होकर बाढ़ के समान आता था। इन शीशों का रहस्य आज पूरी तरह से हमारी पहुंच के बाहर हो चुका है, उससे भी अधिक जितना कि शिल्प का जादू। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मध्ययुगीय चर्च बहुत सम्पन्न हो गया था, इसमें भी सन्देह नहीं है कि उनके स्पर्धी अध्यक्ष तथा समितियां गर्व, ऐश्वर्य तथा संकुचित महत्वाकांक्षाओं के शिकार थे, किन्तु यदि चर्च का वही रूप होता जैसा सैंट फ्रांसिस अथवा वाइक्लिफ—जो कि एक निवेदित इसाई धर्म-परायण व्यक्ति था—चाहता था, तो वे अत्यन्त भव्य मठ और विहार कभी नहीं निर्मित हो पाते जो शताब्दियों से खड़े एक के बाद दूसरी पीढ़ी को दृष्टि पथ से, भक्ति का महत्तम अनुभव प्रदान कर रहे हैं।

मध्ययुगीय चर्च का एक बहुत बड़ा अंग, जिसमें लाभवंचित पुजारी, डीकन (छोटे पादरी) तथा क्लर्क थे, देश भर में बिखरे हुए थे और सब प्रकार की जीवन वृत्तियों में लगे हुए थे, इन पर चर्च का कोई नियंत्रण नहीं रहा था। अधिकांश अवस्थाओं में वे आजकल के सामान्य सांसारिक लोगों द्वारा किये जाने वाले कार्य करते थे। वे क्लर्क थे (इस शब्द के दोनों अर्थों में) जो व्यापारियों, जमींदारों या राज्याधिकारियों के यहां लिखने और हिसाब रखने के कार्य करते थे। दूसरे सामन्त-गृहों अथवा किलों में व्यक्तिगत पुरोहितों के रूप में धार्मिक कृत्य सम्पादन कर रहे थे अथवा वे चांट्री पुजारी के रूप में मृत व्यक्तियों की आत्माओं की शान्ति के लिये दान लेकर पूजा करते

थे। अनेक एक कार्य से दूसरे कार्य पर घूमते आलस्य और अन्य बुरी आदतों के शिकारी होते थे और अन्त में किसी भी कार्य के अयोग्य हो जाते थे।

व्यापार-गृहों तथा कानूनी और राजकीय कार्यालयों में नियुक्त 'क्लर्क' समाज के लिये उपयोगी कार्य कर रहे थे, और अपने अन्य सहकारियों से न बुरे थे न अच्छे। किन्तु इस बात को देखते हुए कि ये लोग चर्च के नियंत्रण में इतने कम थे, यह एक 'दुर्भाग्य पूर्ण' (अनुचित) बात थी कि ये लोग किसी भी अर्थ में पादरी गिने जाते थे। पादरियों से, निम्न स्तर के पादरियों के निम्न स्तरों के अतिरिक्त, पादरियों के लिये विवाह निषिद्ध था,[1] जबकि इनमें से अधिकांश के लिये यह अच्छा था कि वे विवाह करके गृहस्थ का जीवन व्यतीत करें। उस समय के साहित्य में 'क्लर्क' प्रायः ही प्रेम सम्बन्धी षड्यन्त्रों के नायक के रूप में चित्रित किये गये मिलते हैं। इसके अतिरिक्त. जब वे चोरी या हत्या के अपराध करते थे तब वे पादरी होने के आधार पर राजा के कठोर न्याय से बच जाते थे और धार्मिक न्यायालय के हल्के प्रायश्चित का दंड उन्हें भोगना पड़ता था। इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 'अपराधी क्लर्क' अक्सर अपने तथा चर्च के लिये, जिससे कि उनका बहुत शिथिल संबंध होता था, अपयश और निन्दा अर्जित करते थे।

क्लर्कों के लेखन, अध्ययन तथा लेटिन में शिक्षा का पहले ही काफी अच्छा प्रबंध था। लेटिन की शिक्षा देने वाले तीन से चार सौ तक विद्यालय, जिनमें से अधिकांश बहुत छोटे प्रतिष्ठान थे, इंगलैंड भर में बिखरे हुए थे। प्रायः मठों या विहारों के, अथवा हस्पतालों, व्यापारिक संगठनों अथवा प्रार्थना-मन्दिरों के आधीन होते थे। ये अधिकारी जिन अध्यापकों को नियुक्त करते थे वे संसारी पादरी होते थे। निम्न वर्गों के चतुर लड़के ऐसे स्कूलों के द्वारा क्लर्क अथवा पुजारी की स्थिति प्राप्त कर लेते थे, क्योंकि चर्च अभी भी उन महत्वाकांक्षाओं का वाहक था जिनकी उपलब्धि निर्धनों के लिये भी संभव थी। किन्तु १८वीं शताब्दी तक, जबकि धर्मार्थ विद्यालय अस्तित्व में आए, सामान्य लोगों की साक्षरता देने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया।

१३८२ में विलियम वैंकेहम ने, संसारी पादरियों के उत्कृष्टतर शिक्षण के लिये विंचैस्टर में एक लैटिन विद्यालय की स्थापना की जो अपनी भव्यता और विशालता में

---

[1] वास्तव में बहुत से पादरी, जिनमें पैरिशों के पादरी भी शामिल थे, विवाहित थे। ऐसे विवाह अनियमित और भंग करने योग्य थे, किन्तु तब तक भंग नहीं किये जाते थे जब तक न्यायालय में उनके विरुद्ध शिकायत नहीं की जाती थी। अन्य अल्पाधिक स्थायी रखेलपन की स्थिति में रहते थे। आंग्ल पादरी नार्मन विजय के बाद चर्च द्वारा आरोपित ब्रह्मचर्य की व्यवस्था के विरुद्ध थे। इसके विरुद्ध तब तक संघर्ष जारी रहा जब तक कि "सुधार" ने विद्रोहियों को विजय से मंडित नहीं कर दिया।

अभूतपूर्व था, और यह उतने ही भव्य भावी विद्यालयों के लिये, जैसे एटन के, एक आदर्श बना। आगे चलकर इनमें कुछ अनुपात में सामन्तों और अन्य शक्ति संपन्न लोगों के बच्चे भी विद्यार्थी बनने वाले थे। इस नियम में, जैसा कि मध्ययुगीय विद्यालयों के एक इतिहास लेखक का कथन है, पब्लिक स्कूल व्यवस्था के बीज विद्यमान थे। (ए. एफ. लीश, विंचेस्टर कालेज, पृ. ६६)।

इंगलैंड के दो विश्वविद्यालय पहले से ही विद्यमान थे, किन्तु तब तक ये अभी इन विद्यालयों के स्पर्धी नहीं बने थे, क्योंकि कैंब्रिज केवल १५वीं तथा १६वीं शताब्दियों में ही राष्ट्रीय महत्व की संस्था बन सका था।

चासर के काल में, आक्सफर्ड इंगलैंड का बौद्धिक केन्द्र था और उसमें वाइक्लिफ का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण तत्व था, जब तक कि वह तथा उसके साथी विश्वविद्यालय से उसके स्वायत्त जीवन में राजा तथा बिशपों के हस्तक्षेप द्वारा, निकाल नहीं दिये गये, या मूक नहीं बना दिये गये (१३८२)। यदि आक्सफर्ड संगठित होता तो उसकी स्वतंत्रताओं का अपहरण अधिक कठिन होता। किन्तु वहाँ देर से शिक्षकों के दो दल थे, संसारी तथा नियमित पादरियों के दल, संसारियों ने वाइक्लिफ का पक्ष लिया जबकि दूसरे उसके विरुद्ध हो गये।

'नियमित' केवल साधु तथा श्रमण लोग ही थे, जिनके अपने मत के अनेक बृहत् शिक्षणालय विश्वविद्यालय के साथ सम्बन्धित थे। इससे पहली शताब्दी में श्रमण लोग ग्रोस्सेटैटै, रोजर बेकन तथा डंस स्कोटस आदि के द्वारा शैक्षणिक विचार का नेतृत्व कर रहे थे, और अब भी आक्सफोर्ड में इनकी शक्ति बहुत थी।

'संसारी', जिसमें संसारी पादरी वाइक्लिफ जैसे पुजारी, तथा निचले स्तर के डीकन तथा क्लर्क सम्मिलित थे, अपने आपको मुख्य विश्वविद्यालय के कर्त्ता-धर्ता मानते थे। ये लोग शिक्षार्थी पहले थे और चर्च के आदमी पीछे। ये लोग विश्वविद्यालय की 'स्वतंत्रताओं' के प्रति उतने ही सचेष्ट थे जितने नगरवासी लोग अपने नगर की स्वतंत्रताओं के प्रति। ये पोप के हस्तक्षेप, राजकीय शासनादेश तथा नगर के दावों के प्रति सदैव जागरूक रहते थे उनके अधिकार आक्सफर्ड के गंदे होस्टलों में रहने वाले उद्दंड और हिंसा-पूर्ण अवर-स्नातकों द्वारा पूर्णतः सुरक्षित थे। ये अवर-स्नातक अवसर उपस्थित होने पर बिशप के संदेहवाहक को मारने-पीटने, राजा के अधिकारियों को हूट करने तथा कुलपति के विरुद्ध नगरपालिकाध्यक्ष का पक्ष समर्थन करने वाले जन समुदाय को भालों-छुरों से मारने के लिए तत्पर रहते थे।

नगरजन तथा विश्वविद्यालय के लोग बाजार में खुली लड़ाई में छुरों तलवारों तथा तीरों तक का प्रयोग करते थे। १३५५ में नगरनिवासियों ने क्लर्कों तथा विद्यार्थियों की संगठित रूप से हत्या की : बचे हुए आक्सफर्ड से भयत्रस्त होकर भाग गये और विश्वविद्यालय बन्द कर दिया गया, जब तक कि राजा ने अध्यापकों और

विद्यार्थियों को सुरक्षा का आश्वासन देने के लिये हस्तक्षेप नहीं किया। कैंब्रिज में, १३८१ के दंगों में, नगर के लोगों ने विश्वविद्यालय के रजिस्टरों और अन्य अभिलेखों को ध्वस्त कर दिया।

मध्ययुगीय विद्यार्थी, कालेज प्रथा के विकास से पूर्व, उपद्रवी उद्दंड तथा दुराचारी था। वह अत्यन्त निर्धन था, वह पुस्तकों के अभाव तथा अध्यापन की अपर्याप्तता के कारण प्रायः बहुत कम सीख पाता था और बिना उपाधि प्राप्त किये ही विश्वविद्यालय छोड़ देता था। किन्तु फिर भी अनेक विद्यार्थी सीखने को बहुत उत्सुक थे, अथवा कम से कम वाद-विवाद में चतुर होने के लिये। इनमें से कुछ चौदह वर्ष की आयु के होते थे, किन्तु अधिकांश आजकल के अवर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की आयु के थे। अधिकांश अभी भी सामान्य संसारी जन ही थे, किन्तु लगभग सभी, कम से कम, क्लर्क बनने के इच्छुक थे, यदि साथ-साथ पुजारी भी बन पाते तब तो कहना ही क्या। इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि आक्सफर्ड तथा कैंब्रिज के जीवन-काल में अर्जित आदतें ही बहुत से पादरी-पुजारियों के बाद हिंसापूर्ण और षड्यंत्रपूर्ण आचरणों के लिए उत्तरदायी थी। विश्वविद्यालयों के अधिकारियों ने, राज्य तथा चर्च की मूर्खता का अनुकरण करते हुए विश्वविद्यालय में युवकों के लिये खेल-कूद आदि व्यायामों का निषेध कर दिया, किन्तु इसके लिये विशेष प्रयत्न करने की कोई आवश्यकता नहीं देखी कि वे मदिरालय या वेश्यागारों में नहीं जांय, कुछ तो लूटमार के लिए गिरोह बना कर गाँवों में घूमते थे।

किन्तु आखिरकार, इंगलैंड ने इन कुत्साओं का उपचार खोज लिया। कालेज-व्यवस्था का उद्भव यद्यपि पैरिस में हुआ था, किन्तु अन्त में यह इंगलैंड के दो विश्व-विद्यालयों का विशिष्ट लक्षण बन गया। तेरहवीं शताब्दी के पिछले वर्षों में आक्सफर्ड में अनेक कालेज स्थापित किये गये, तथा कैम्ब्रिज में पीटर हाउस कालेज की स्थापना हुई। किन्तु कालेज-जीवन अभी भी अपवादरूप ही था, तथा वाइक्लिफ की आजीविका के आरंभिक दिनों में आक्सफर्ड विश्वविद्यालय के तीन हज़ार विद्यार्थियों में से एक सौ से भी अधिक इस अनुशासन में रहे होंगे, यह सन्देह की बात है। किन्तु वाइक्लिफ की मृत्यु से पूर्व ही वाइकेहम के विलियम ने अपने भव्य कालेज की स्थापना कर दी थी जिसमें सौ क्लर्क अध्ययन करते थे। अनुकरण के लिए ऐसा आदर्श रहते इंगलैंड की कालेज व्यवस्था अगली दो शताब्दियों में नित्य नये प्रतिष्ठानों की स्थापना के साथ बढ़ती गयी।

धार्मिक विवाद के कारण कालेजों की माँग तथा उसकी पूर्ति करने में प्रतिष्ठापकों की तत्परता बढ़ गयी थी। कट्टरपंथी लोग अगली पीढ़ी में क्लर्क (पादरी) बनने वाले बच्चों को ऐसी संस्थाओं तथा ऐसे अध्यापकों के संरक्षण में रखना चाहते थे जो वाइक्लिफ के विद्रोही विचारों से बचा सकते थे, जो कि इन सरायों तथा

होस्टलों आदि में निरन्तर फैल रहे थे जिनमें ये विद्यार्थी ठुंसे रहते थे। यहाँ ये विद्यार्थी जमीन आसमान तक की सभी बातों पर ऐसी स्वतंत्रता से विवाद करते थे जो उत्तरदायित्व शून्य तथा उद्दंड युवकों की विशेषता है। और, धार्मिकता सम्बन्धी बातों के अतिरिक्त, माता-पिता तथा अन्य व्यावहारिक लोग शिक्षा-गृहों की उपयोगिता युवकों को भौतिक तथा आचारिक दोषों से बचाने के रूप में भी देखते थे, जो कि संभवत: उनकी दृष्टि में, उतने ही बुरे थे जितने वाइक्लिफ के बौद्धिक दोष। कालेज व्यवस्था ने इंगलैंड में अपनी जड़ जमा ली और वहाँ ऐसी फली-फूली जैसी अत्यन्त कहीं नहीं फली-फूली। इस काल में कालेज की आय का प्रबन्ध अधिकांशत: मठों की आय के प्रबन्ध की अपेक्षा उत्कृष्टतर था।

परिणामत: जब पन्द्रहवीं शताब्दी में धार्मिक तथा चर्च सम्बन्धी प्रश्नों पर विवाद करने के विरुद्ध लगाये गये प्रतिबन्ध लड़खड़ा गये तब एक शताब्दी तक इंगलैंड के विश्वविद्यालयों में तीव्रगति से बौद्धिक विकास हुआ तथा कालेजों की संख्या में वृद्धि हुई और परिणामस्वरूप विद्यालयों में आचार तथा अनुशासन का स्तर बहुत समुन्नत हो गया और विद्यालय-जीवन का सांस्कृतिक स्तर भी उन्नत हुआ। इंगलैंड की बाद की पीढ़ियाँ इसके लिये उत्तर मध्यकालीन ऑक्सफर्ड तथा कैंब्रिज की बहुत ऋणी हैं।

शिक्षा की एक बहुत महत्वपूर्ण शाखा ने अपने लिये आक्सफर्ड तथा कैम्ब्रिज के अतिरिक्त एक अन्य स्थान खोजा। व्यावसायिक वकीलों ने, जो कि राजा की कचहरी में चलने वाले सामान्य विधि-नियमों का निर्माण कर रहे थे, इस विधान की शिक्षा के लिये लन्दन तथा वेस्टमिंस्टर के बीच अपने लिए छात्रावास तथा विधि-समितियाँ बना ली थीं। मेटलैंड ने उसका वर्णन इस प्रकार से किया है : ये वकीलों की संस्थाएँ थीं, जिनके साथ अच्छे खासे क्लब, कालेज जैसी कुछ संस्थाएँ तथा श्रमिक संघ जैसे संगठन भी संयुक्त थे। उन्होंने सरायें तथा आश्रमादि अपने अधिकार में कर लिए थे। ये प्राय: बड़े सामन्तों की सम्पत्तियाँ थे, उदाहरणत: जैसे लिंकोन के अर्ल की सराय। गिरजे के सरदारों के घर तथा चर्च उनके हाथ में पड़ गये। कचहरी की सरायों के सदस्य वकीलों तथा उनके शिष्यों को कचहरी में वकालत करने का एकमात्र अधिकार था। ये सार्वजनिक वकील, सामान्य जनों में सबसे पहला शिक्षित वर्ग था, और इसलिए राष्ट्र की वृद्धि में इस वर्ग का बहुत महत्व था।

अध्याय ३

कैक्स्टन के युग का इंगलैंड

(हेनरी षष्ठम् १४२२। एड्वर्ड चतुर्थ १४६१। एड्वर्ड पंचम १४८३। रिचर्ड तृतीय १४८३। हेनरी सप्तम् १४८५)

आज हमारे लिये यह कल्पना करना भी बड़ा कठिन है कि आविष्कारों के युग से पूर्व सामाजिक परिवर्तन की दर कितनी मन्द थी। इंगलैंड में चौदहवीं शताब्दी की सामाजिक तथा बौद्धिक हलचल के बाद यह आशा की जा सकती थी कि कुछ बृहत् तथा नाटकीय घटित होगा। तो भी, पन्द्रहवीं शताब्दी जीवन के अधिकांश पक्षों में अत्यधिक अपरिवर्तनशील प्रमाणित हुई।

यदि चासर प्रेत रूप में केक्स्टन के जीवन-काल में (१४२२-१४९१) इंगलैंड में कहीं आता तो उसे लगभग ऐसा कुछ दिखाई नहीं देता जिससे उसे विस्मय होता, सिवाय इस बात के कि चर्च के विरुद्ध इतनी सब चर्चा का कोई भी परिणाम नहीं निकला। जब वह परिचित प्रकार की गंदी और टूटी-फूटी सड़कों पर चलता, तथा गहरे नालों और टूटते पुलों को पार करता तो वह किसानों को अपने बैलों के साथ बड़े खुले क्षेत्रों के उन्हीं खंडों को जोतते हुए पाता, और केवल उसी अवस्था में उसे यह ज्ञात हो पाता कि इनमें से बहुत कम लोग अब पहले के समान भू-दास रह गये हैं, यदि वह सामन्त के दरबार में जाकर देखता। रास्ते पर मिलने वाले लोग अब भी उसी प्रकार के होते जिस प्रकार के लोगों से वह इतना सुपरिचित था—उतनी ही संख्या में तीर्थयात्री और उसी प्रकार के हास्य-प्रिय लोग, जैसों के साथ उसने कैंटर्बरी की यात्रा की थी; श्रमण, सम्मान देने वाले, क्षमा-वितरक अब भी उसी प्रकार से सामान्य लोगों को छलते हुए; अपने सामान से लदे घोड़ों की पंक्तियों की संभाल करते हुए व्यापारी; उसी प्रकार से अमीर तथा मठों के लोग अपने बाजों और शिकारी कुत्तों के साथ; सामन्त के सैनिक और भृत्य धनुष और बाण से सुसज्जित उसी प्रकार के अनुचित और अनाचारपूर्ण प्रयोजनों में नियुक्त जैसे ग्राम-प्रदेशों को अपने अत्याचार से भयभीत रखने वाले गांट के जोह्न के भृत्य थे। अलबत्ता वह उनकी इंगलैंड की भूमि पर लड़े गये युद्धों की चर्चा से यह निष्कर्ष निकाल सकता था कि इस समय अव्यवस्था उससे भी कहीं अधिक भयानक थी जितनी कि स्वयं उसके जीवन-काल में थी, किन्तु शासन की भ्रष्टता के कारण वही थे जो उसके काल में थे, बड़े आदमियों के सैनिक ईमानदार लोगों को,

न्यायालयों को, यहां तक कि स्वयं उच्चतम न्याय सभा (प्रिवी काउंसिल) को भी त्रस्त कर रहे थे। चासर को सड़क पर चलती वातचीत से यह अनुमान करने में कोई देर नहीं लगती कि एंगिकोर्ट का युद्ध उसके देशवासियों के मनों में पुनर्जागृत हो गया है जिसका विचार शुरु में क्रेसी ने रोपित किया था; जवकि वह स्वयं अभी वच्चा था। उसने इंगलैंड में यह भावना स्फूर्तित कर दी थी कि प्रत्येक अंग्रेज़ तीन विदेशियों को पराजित कर सकता है, और कि फ्रांस पर राज्य करना और उसे लूटना इंगलैंड के लोगों का एक व्यावसायिक कार्य तथा मनोविनोद का विषय है। परिणामतः इंगलैंड के अपने सामाजिक दोष सदा की तरह ही असाध्य वने रहे। क्योंकि फ्रांस में उसकी सफलता अव एंगिकोर्ट के वाद उससे अधिक स्थायी नहीं रही जैसी क्रेसी के वाद रही थी; चैनल पार से पुनः पीछे धकेली जाने पर व्यक्तिगत रूप से स्थापित सेनाओं ने वड़े आदमियों के सेवक सैनिकों के रूप में इंगलैंड में पुनः आंतरिक शान्ति को भंग करना आरंभ किया।

हमारे इस विचरण करते हुए प्रेत के ध्यान में यह भी पड़ सकता है कि अधिकांश नगर उसके काल से, अव तक विना किसी वृद्धि-विकास के, उसी प्रकार से खड़े हैं, और कुछ तो सिकुड़ भी गये हैं। किन्तु लंदन और व्रिसल वड़े हैं और इनके चारों ओर कुछ वस्तियां भी विकसित हुई हैं। नगरों तथा ग्रामों में कुछ वहुत उत्कृष्ट नये चर्च, व्यावसायिक संस्थाओं के भवन तथा प्रार्थना-मन्दिर वन गये हैं, तथा पुराने चर्चों को भी इतने ही उत्कृष्ट भवन साथ वना कर वड़ा कर दिया गया है। वह देखता कि ये सव एक अत्यन्त अलंकारपूर्ण शैली के शिल्प में वनाये गये हैं। उसे यह एक नया ही वना दिखाई देता, उसी प्रकार से उसे ईंटों के भवन भी दिखाई पड़ते, जैसे कि अव पूर्व के देशों में देखे जा सकते हैं—सामन्त-गृह, द्वार-गृह, कैंब्रिज के कालेज—जैसे क्वीन का कालेज, और नोवलों (सरदारों) के महल, जैसेकि टैट्टरशैल का, सव लाल ईंटों के ऊंचे ऊंचे वने हुए—तथा एटन में राजा का कालेज (किंग्स कालेज)।[१]

वन्दरगाहों वाले नगरों में दाढ़ी वाले मल्लाह, वहुत कुछ उसी प्रकार के जैसे चासर द्वारा वर्जित 'जहाजी' थे, इस प्रेत-देही चासर को इंगलिश चैनल तथा विस्के की खाड़ी की अनगढ़ कथाएं सुनाते, स्पेन की वृहत् नौकाओं, जेनेओं, व्रेटनों तथा फ्लेमों के व्यापारिक वेड़ों के माल को लूटने वाले अंग्रेज़ जल-दस्युओं की सफलता की तथा विदेशी लुटेरों के साथ लड़ाई की कहानियां कहते। इंगलिश समुद्रों संवंधी इन परिचित और पुरानी चर्चा के वीच शायद एक विचित्र और नवीन अफवाह भी ध्यान में पड़ती कि

---

[१] इंगलैंड में रोमन-काल की पतली टाइल ईंटों के प्रयोग के वाद कभी ईंटों (व्रिक्स) का निर्माण या प्रयोग नहीं हुआ, जव तक कि फ्लैंडर्स से ईंटें आनी आरंभ नहीं हो गयीं ('व्रिक' यह नाम ही फ्रांस या वैलून में उत्पन्न हुआ था) पन्द्रहवीं शताव्दी में पूर्व के देशों का वहुत व्यापक प्रयोग हुआ।

कुछ विदेशी मल्लाह समुद्री रास्ते से अफरीका होकर या सागर के ही बीच से पश्चिम की ओर इंडीज जाने की सोच रहे हैं, और कि ब्रिसल में कुछ लोग इस पर विश्वास करते हैं।

जागीरों में, नोबलों (सरदारों) के किलों में तथा राजा के दरबार में कवि के प्रेत को अपनी प्रिय संस्कृति अभी भी जीवित मिलती, यद्यपि थोड़े धुंधले रूप में। यह एक सुन्दर बात थी कि वह देखता कि लोग उसकी कविताएं अभी भी पढ़ रहे थे; किन्तु वह अपने उत्तराधिकारियों को प्रायः अकर्मण्य पाता, जो केवल निष्फल नकल मात्र कर रहे थे। युवकों की कल्पना मध्ययुगीन प्रेम-काव्य की अन्योक्ति पद्धति और रीति-बद्धता में कैद थी, और वे अब भी ट्रॉय के विरुद्ध यूनानियों के युद्ध की कहानियों में रस ले रहे थे। किन्तु राजा आर्थर के मंत्रिमंडल की कहानियां 'फ्रेंच पुस्तक' से मैलोरी के अमर इंगलिश गद्य में नये सिरे से कही जा रही थीं।

और यदि चासर की आत्मा एड्वर्ड चतुर्थ के कंधों पर से कैक्स्टन द्वारा फ्लैंडर्स से लाई गयी उस मशीन पर झांक सकता जो कैंटर्बरी कहानियों की, वास्तव पांडुलिपियों ही जैसी प्रतिलिपियां तेज़ी से निकाल सकती थी, तो कवि इस खिलौने पर बहुत ही हर्षोत्फुल्ल हो उठता। किन्तु शायद वह इसकी आवाज में उन मूसलों की चोटों की धमक नहीं भांप पाया होता जिसने पीछे मठों और किलों को धराशायी कर दिया और अनतिदीर्घ काल में धर्म तथा इंगलैंड के प्रजातंत्र को नया रूप दे दिया।

फ्रांस से इंगलैंड की सेनाओं के दूसरी बार निष्कासन के बाद घर पर रोसेस के युद्ध (१४५५-८५) आ पड़े। इन्होंने इंगलैंड के सामाजिक जीवन को कहां तक प्रभावित किया? इसका उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि हम 'रोसेस के युद्ध' से क्या अभिप्राय समझते हैं? यदि हमारा इन युद्धों से अभिप्राय केवल २,००० से १०,००० मनुष्यों की सेनाओं द्वारा कभी इधर उधर लड़े गये संघर्षों से है जो सेंट अल्बांस, टाउट-बार्नेट तथा बोस्वर्थ फील्ड के समान युद्धों में निष्पन्न हुए, तब उत्तर होगा कि यह प्रभाव बहुत अल्प हुआ। ऐसे युद्धों का निर्णय, चाहे ये यॉर्कशायर तथा मिडलैंड जैसे सुदूर प्रदेशों में ही क्यों न लड़े गये हों; प्रायः ही, बिना किसी विशेष आपत्ति के; लंदन तथा सम्पूर्ण राज्य द्वारा स्वीकार किया जाता था, और इस प्रकार से, इसमें जीतने वाला सामन्तों का दल सारे इंगलैंड पर शासन करता था। यॉर्क तथा लंकास्टर के घरानों के लिये यह संभव नहीं था कि वे उस तरह के गृह-युद्धों में प्रवृत्त हो सकते जैसे पीछे चार्ल्स प्रथम तथा लांग पार्लियामेंट द्वारा लड़े गये थे। जबकि विशाल तथा उत्साही सेनाएं एक नियमित लूट तथा राष्ट्रीय कर के सहारे नियमित अभियानों के लिये, बीसियों परिखा-रक्षित नगरों तथा सैंकड़ों किलों और जागीरों पर घेरे डालने के लिये बनाई गयी थीं। रोसेस के लार्डों का अपने देशवासियों पर ऐसा कोई अधिकार नहीं था : क्योंकि वे राज्य के लिये अपने प्रतिस्पर्धी दावों के आधार

पर किसी सिद्धान्त अथवा किसी जन-प्रिय भावना का सहारा नहीं ले सकते थे, और न ही कोई पक्ष भारी कर लगा कर, व्यापार में बाधा पहुंचा कर, अथवा ग्राम-प्रदेश को नष्ट-भ्रष्ट कर लोकमत को अपने विरुद्ध करने का खतरा मोल ले सकता था, जैसे हमारी सेनाओं ने अभी हाल ही बहुत गंदे ढंग से फ्रांस में किया था। इस प्रकार, इस अर्थ में तो यह ठीक ही है कि 'रोसेस के युद्ध' सैनिक दृष्टि से इंगलैंड के सामाजिक जीवन में केवल सतही ही थे।

किन्तु यदि, 'रोसेस के युद्धों' से हमारा अभिप्राय उस सामाजिक अव्यवस्था से हो, जिन्होंने कि अन्तरायों के साथ वास्तव युद्धों को जन्म दिया, तो यह स्पष्ट है कि उस काल में सारा ही सामाजिक ताना-बाना एक व्यापक कुशासन से प्रभावित हो चुका था। "अति शक्ति सम्पन्न शासितों" तथा "शासन की शिथिलता" के कारण हानि इतनी गहरी हो चुकी थी कि अनुगामी शताब्दी में ट्यूडर राजवंश इस कारण से लोक-प्रिय हो गया क्योंकि वह इतना सशक्त था कि वह "सबल सरदारों तथा जागीरदारों" पर लगाम डाल सकता था।

यह सामाजिक अव्यवस्था किस बात में निहित थी ? यह अव्यवस्था वास्तव में ग्राम-प्रदेश में ही थी, नगरों में यह विशेष नहीं थी। किन्तु इंगलैंड की आबादी का दस में से नौ भाग ग्रामीण ही था, और सामाजिक अव्यवस्था का मुख्य कारण जमींदारों के जमीन के लिये परस्पर झगड़े ही थे।

अधिकांश लोगों के आचरण उनके परिवेश के अनुसार ही निर्धारित होते हैं। जैसे अट्ठारहवीं शताब्दी में किसी ऐसे भूमिपति के सम्बन्ध में सोचना कठिन था जो अपनी भूमि के चारों ओर आलवाल नहीं बनाता हो और नालियां आदि नहीं बनाता हो, अपने खेत के मकान दुबारा नहीं बनाता हो, वृक्ष नहीं लगाता हो, अपने हाल कमरे को और बड़ा नहीं करता हो तथा अपने ग्राउण्डों को सजाता नहीं हो। उसी प्रकार से पन्द्रहवीं शताब्दी में भी एक ग्रामीण जमींदार अपने अधिक महत्वाकांक्षी पड़ोसियों की नकल करता था जब वह देखता था कि वे अपने समय तथा शक्ति का व्यय, अंशतः अपनी जागीरों को सुरक्षित रखने तथा उनके किराये इकट्ठे करने में, और अधिकांशतः अपनी सम्पत्तियों तथा जागीरों को विवाह-सम्बन्धों के द्वारा, या फिर किसी कानून का नाजायज़ सहारा लेकर अपने पड़ौसी की जमीन बलात् हस्तगत करने में, करते थे। और जो लोग स्वयं इस प्रकार के अन्याय के शिकार थे, वे उत्तराधिकार में प्राप्त अपनी न्यायोचित भूमि आदि की रक्षा इसी प्रकार से कानूनी कार्यवाही तथा पाशव शक्ति के सम्मिलित प्रयोग से करते थे। इंगलैंड के मंडल (काउंटी), जैसे पास्टनों के नार्फोक, अपनी अल्प या महत् शक्तियों के साथ, शिशु विवाह के द्वारा संपुष्ट मैत्री-संधियों के साथ, अपने शक्ति-सन्तुलन के साथ, अपने स्वत्व के दावों और प्रतिदावों के साथ, जोकि सदैव सुलगते रहते थे और कभी-कभी खुले संघर्ष अथवा वैधानिक धोखाधड़ी में परिणत हो जाते

थे, शेष यूरोप के अनुरूप ही थे। समाज की इस स्थिति तथा रोसेस के युद्धों में सम्बन्ध को १४६९ में नार्फोक के ड्यूक द्वारा ३,००० मनुष्यों की सेना के साथ कैसर के किले पर घेरा डालने के उदाहरण से देखा जा सकता है, जिसका आधार—अधिकार सम्बन्धी विशुद्धत: व्यक्तिगत झगड़ा था।

भूसम्पत्ति पर धावे की कला में मारपीट, लाठी-प्रहार आदि, यहाँ तक कि हत्या भी, सम्मिलित थी, और यह सब दिन-दहाड़े और सबके सामने खुले किया जाता था जिससे कि उसका प्रभाव और भी अधिक हो, और न केवल स्पर्धी दावेदार को ही, बल्कि न्यायाधीश आदि को भी अपने प्राणों का भय हो उठे। न्यायाधीशों से न्याय भी केवल औचित्य के आधार पर ही नहीं मिलता था। किसी शक्तिशाली सामन्त या सरदार का भृत्य होने पर दूसरों की संपत्ति छीनने, यहाँ तक कि हत्या तक कर देने पर भी दंड से बचत हो जाती थी।

ऐसी परिस्थितियों में, कोई भी मंडल में प्रभावशाली होने का महत्वाकांक्षी, अथवा अपने पड़ोसी की भूमि हथियाने को उत्सुक, अथवा अपनी भूमि का स्वामित्व सुरक्षित रखने को उत्सुक कोई शान्त व्यक्ति उस प्रदेश के किसी सामन्त का संरक्षण खोजता था, कि वह उसका 'कृपालुस्वामी' हो जाय, जिससे कि जब न्यायाधीश अथवा पंचों के सम्मुख उसका अभियोग आये तो वे डर जांय, अथवा यदि प्रिवी कौंसिल स्थानीय न्याय में हस्तक्षेप करे तो वह (सामन्त) उसमें उसका पक्ष समर्थन कर दे। भय अथवा कृपा के बिना प्रतिकार (रीड्रैस) न तो कचहरी से मिलता था और न प्रिवी कौंसिल (उच्चतम न्याय-परिषद्) से ही मिलता था।[1]

अनुगामी शताब्दी में ट्यूडरों ने उच्चतम न्याय परिषद् को राजाओं और सामन्तों के हस्तक्षेप से मुक्त किया, संरक्षित गुंडों का दमन किया तथा देश में व्यवस्था स्थापित की। किन्तु वे भी मानव-प्रकृति को परिवर्तित नहीं कर पाए—न अपने आप में ही और न अपनी प्रजाओं में ही। शैक्सपीयर ने एलिजाबेथ के समृद्धिपूर्ण युग में न्यायाधीश शैलो तथा उसके सेवक डेवी के मुंह से कहलवाया है कि पन्द्रहवीं शताब्दी में, और कुछ कम मात्रा में बाद के और उत्कृष्टतर काल में, जबकि शैक्सपीयर जीवित था, न्याय किन सिद्धान्तों के आधार पर होता था :

"डेवी : मान्यवर, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप कृपया वोंकोट के विलियमविज़र पर हिल के क्लेमेंट पर्क्स के विरुद्ध रियायत करें।

---

[1] उदाहरण के लिये, १४५१ में नार्फोक के जिलाधीश ने जॉन पॉस्टन को बताया कि रोबर्ट हंगरी फोर्ड पर अभियोग चलाना निरर्थक है क्योंकि उसे राजा से लिखा आया है कि वह ऐसी समिति बनाए जो लार्ड मोलिन्स को छोड़ दे।

शैल्लो : डेवी, उस विज़र के विरुद्ध अनेक शिकायतें हैं; जैसा मुझे ज्ञात है, वह विज़र एक दुष्ट और धूर्त है।

डेवी : मैं आपकी यह बात स्वीकार करता हूं कि वह दुष्ट है; किन्तु तो भी, मान्यवर, एक दुष्ट आदमी को भी अपने मित्र की प्रार्थना पर तो कुछ रयायत मिलनी ही चाहिए। मान्यवर, एक ईमानदार व्यक्ति अपने लिये स्वयं कह सकता है, जबकि एक दुष्ट व्यक्ति यह नहीं कर सकता। माननीय, मैंने पिछले आठ वर्षों से आपकी सेवा बड़ी लगन से की है; अब यदि मैं तीन-चार मास में एक-दो बार भी किसी दुष्ट व्यक्ति की सज्जन के विरुद्ध सिफारिश नहीं कर सकता तो आपकी सेवा का मुझे क्या फल मिला ?

शैल्लो—अच्छा जाओ : मैं आश्वासन देता हूं कि उसे कोई हानि नहीं होगी।

पन्द्रहवीं शताब्दी में भूमि-अधिकार को लेकर निरन्तर मुकदमे चल रहे थे, जो प्रायः वर्षों तक बिना निर्णय हुए चलते रहते थे। ये मुकदमे उस भूमि को जोतने वाले के लिए बहुत गम्भीर समस्या होते थे, विशेषतः जब उसके दोनों दावेदार अपने सशस्त्र आदमी भेजकर जबरदस्ती किराया वसूल कर लेते थे। नौकरों तथा मुकदमों पर खर्च बढ़ जाने के कारण तथा उस समय की कृषि विषयक मन्दी के कारण जमींदार अपने महलों आदि को सँवारने में बहुत कृपण हो गये थे और किरायों के सम्बन्ध में बहुत अति करने लगे थे, क्योंकि गाँव के प्रतिष्ठित लोग पैसे के लिए अपने किराये देने वालों की सूची की ओर ही देखते थे। उन दिनों में नगदी आय के लिए भेड़ पालने के अतिरिक्त प्रायः एकमात्र साधन किराए का पैसा ही था, यद्यपि घर की आवश्यकता के भोजन तथा कपड़े उसके अपने खेत से अथवा वस्तु-सामग्री के रूप में प्राप्त किराए से ही प्राप्त हो जाते थे।

भूमिपति के अपने मुजारों से सम्बन्धों में—चाहे वे खुले खेतों के हों या आवलयित (एन्क्लोज़्ड) खेतों के—प्रतिवर्ष आधुनिक प्रवृत्तियों का समावेश हो रहा था। सामन्तवाद तथा कृषिदासत्व क्रमशः समाप्त हो रहे थे। किन्तु भूमिपति की सामन्त-कल्प स्थिति अपने क्षेत्र के न्यायालय के प्रभावशाली अध्यक्ष के रूप में अब भी बनी हुई थी। उस न्यायालय में ही जागीर के सामन्त तथा उसके स्थायी काश्तकारों (कापी होल्ड टेनेंट्स) के मुआमलों पर विचार होता था तथा उन्हें दर्ज किया जाता था, तथा खुले क्षेत्र के किसानों के आपसी मुआमलों तथा सार्वजनिक चरागाह और परती भूमि सम्बन्धी मुआमलों पर विचार किया जाता था। यह हो सकता है कि व्यवहार में काश्तकार सामन्त अथवा उसके प्रतिनिधि की इच्छा के विरुद्ध कुछ कर पाने में समर्थ नहीं रहते हों, किन्तु काश्तकार भी कचहरियों में न्यायाधीश होते थे तथा खुली कचहरी की कार्य-विधि, जो कि जागीर की परम्परागत रीति से निर्धारित होती थी,

सामन्त के अत्याचार पर एक वास्तव अंकुश थी, और साथ ही इससे सबके लिए स्वशासन का अवसर होता था जिनमें कि दीनतम भी अपना भाग ले सकता था।

ज़मींदार तथा उसके मुजारों के बीच मकान आदि की मरम्मत तथा किराये की मात्रा और उसके भुगतान आदि की नियमितता को लेकर होने वाले झगड़े सामन्तप्रथा से पट्टेदारी प्रथा की ओर संक्रमण शील उस युग की विशेषता थे, क्योंकि पट्टेदारी सम्बन्धी नियम अभी परम्परा से पुष्ट नहीं हुए थे। भूमिपति (जमींदार) इन झगड़ों में ही फंसे रहते थे, जैसाकि उनके पत्र-व्यवहार आदि से पता चलता है, और उनके प्रतिनिधियों—साधारण अथवा क्लर्क—के लिए विद्रोही मजारों से निपटना कोई आसान कार्य नहीं था। जेम्स ग्लीएस (पास्टनों का एक पुजारी तथा भृत्य) जोकि उनके बच्चों के शिक्षक के रूप में तथा विश्वासपात्र सचिव और भूप्रबन्धक के रूप में कार्य करता था, मुजारों के पशुओं तथा हल आदि को बंधक रख लेता था अथवा बन्धक रखने की धमकी देता था। किन्तु उसमें भी मानवता थी: उसने एक मुजारे के लिए कहा कि वह उसे नहीं छू पाएगा—"मैं यह कभी नहीं कर पाऊँगा क्योंकि केवल उसकी माता के घर में ही उसकी कुर्की करना सम्भव है; और यह करने का साहस मुझ में नहीं है, क्योंकि उसके दुराशीष और क्रंदन मैं नहीं सहन कर सकता।"

गुमाश्ते के कार्य प्रायः सामन्त या जागीरदार के व्यक्तिगत पादरी द्वारा ही सम्पादित किये जाते थे, अथवा कभी गिरजे के पादरी द्वारा भी संपादित किए जाते थे, और वह अपनी भूमि के मुजारों से किराया आदि लेने जाता था। आजीविका-दाता द्वारा धार्मिक व्यक्ति का ऐसे सांसारिक कार्यों में उपयोग बहुत वार उसे बहुत से अनुचित कार्यों में भी फँसा देता था।[१]

लौकिक जनों द्वारा अपने सांसारिक कार्यों के लिए पादरियों का उपयोग, जोकि उस काल की परम्परा के अनुसार किया जा रहा था जबकि केवल पादरी लोग ही पढ़-लिख सकते थे, अब भी समाज के सभी स्तरों पर हो रहा था। क्योंकि सन्त-स्वभाव राजा हेनरी षष्ठ भी अपने कर्मचारियों को पादरीपद अथवा चर्च सम्बन्धी अन्य पदों से लाभान्वित करता था। क्योंकि अन्यथा वह उन्हें ऐसे देश में वेतनादि कैसे दे सकता था जहाँकि लोग कर को सहन करने को तैयार नहीं थे?

---

१ स्टीवेंसन के "ब्लैक ऐरो" में पादरी ओलिवर ओट्स के अपने स्वामी सर डेनियल ब्रैक्ले से सम्बन्ध पास्टन पत्रों के सूक्ष्म अध्ययन के आधार पर चित्रित किए गए हैं, जैसे कि इस पुस्तक में अन्य भी अनेक संकलित सामाजिक तथ्य हैं; तथापि यह सही है कि आर. एल. एस. को श्रमण (फ्रेअर) तथा सन्त (मोंक) के भेद का ज्ञान नहीं था। पन्द्रहवीं शताब्दी की विचारधारा तथा सामाजिक व्यवहार का एक अन्य, और अधिक विद्वत्तापूर्ण, अध्ययन श्री इवान जोह्न के क्रिपल्ड स्प्लेंडर (१९३८) में हम पा सकते हैं।

वहुत वार पादरी लोग अपना अधिकांश समय किसान के रूप में विताते थे। वे चर्च से प्राप्त अपनी भूमि में (जोकि सामान्यतः पचास से साठ एकड़ का होता था) जन्मजात किसान के समान ही जोकि वे थे, कृषि करते थे और वहुत वार दूसरों की भूमि भी ठेके पर ले लेते थे। फील्डिंग के जोसेफ एंड्रयूस का पात्र पार्सन ट्रुलिवर, जिसका कृषि में वहुत उत्साह था, मध्ययुगीन परम्परा का अवशेष था।

प्रायः ही खुला खेत आवलयित कर दिया जाता था और कृषकों द्वारा स्वयं समझौते से आपस में समेकीकृत खेतों के रूप में विभाजित कर लिया जाता था। तथा परम्परागत काश्तकारों में भूमि का खुला क्रय-विक्रय चलता था। पन्द्रहवीं शताब्दी के इंगलैंड का मितव्ययी कृषक, उन्नीसवीं शताब्दी के फ्रांस के कृषक के समान ही पैसा वचा कर अपने छोटे खेत को वड़ा करने के लिये अपने पड़ौसी का खेत खरीदने का प्रयत्न करता था।

सव मिलाकर, किसान तथा मज़दूर के लिए पन्द्रहवीं शताब्दी एक वढ़िया काल था तथा जमींदार के लिये दुष्काल था। प्लेग की अविरत आवृत्तियों के कारण, महामारी (ब्लैक डैथ) के दिनों से जनसंख्या में कमी की पूर्ति अभी तक नहीं हुई थी, और दास-प्रथा के समाप्त हो जाने से मज़दूर को इस कमी से लाभ उठाने का पूर्ण अवसर मिला, क्योंकि अव वह अपने स्वतंत्र श्रम का वहुत मूल्य प्राप्त कर सकता था। अव जागीरदार के लिए न केवल जागीर की भूमि पर कार्य के लिए श्रमिकों को वेतन पर लगाना वड़ा महंगा पड़ता था वलिक पट्टे पर देना भी उतना ही कठिन था, चाहे वह उसकी जागीर की भूमि हो या खुले क्षेत्र की। तेरहवीं शताब्दी की भूमि की भूख के स्थान पर, जो कि जागीरदार के लिये वड़ी लाभप्रद थी, अव भूमि से अतितृप्ति और कृषि कार्य के लिये श्रमिकों की कमी हो गयी थी, और यह वस्तुस्थिति चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दियों में ट्यूडर के काल तक निरन्तर वनी रही।

रोसेज़ के युद्धों के काल में इंगलैंड उससे भी अधिक निर्धन हो गया जितना वह फ्रांस के साथ असफल युद्ध, अनुगामी गृह-कलह तथा जनसंख्या में कमी के कारण हो गया था। नगरों तथा वन्दरगाहों में प्लेग की आवृत्ति वहुत प्रसिद्ध थी, जहाँ कि देहिका युक्त चूहों की संख्या-वृद्धि के लिए वड़ा अवसर था। अभिप्राय यह कि देश का वह भाग जहाँ सम्पत्ति का अधिकांश उत्पादित होता था, वही वहुधा अव्यवस्थित तथा महामारियों से आक्रान्त भी था। इन कारणों से कुल राष्ट्रीय आय उससे कम थी जितनी चासर के दिनों में थी; किन्तु अव यह अधिक समविभाजित थी। सामान्य आर्थिक स्थिति कृषक तथा निर्धन के पक्ष में थी।[1]

---

[1] इसी प्रकार से, आज राष्ट्रीय आय उससे कम है जितनी अभी यह हाल ही में था, किन्तु अधिक सम-विभाजित है। द्रष्टव्य—प्रोफेसर पोस्टन का महत्वपूर्ण लेख "पन्द्रहवीं शताब्दी" (हिस्ट्री रिव्यू, मई १६३६)।

ग्रामीण समाज के इस काल का विवरण हमें पास्टन परिवार के पत्रों तथा अन्य छोटे संकलनों, जैसे 'स्टोनर तथा सेलीपेपर्ज़', से अधिक अच्छा मिलता है। पन्द्रहवीं शताब्दी ऐसी पहली शताब्दी थी जिसमें उच्च वर्ग की स्त्रियां और पुरुषों में तथा उनके एजेंटों (क्लर्क तथा सामान्य दोनों प्रकार के) में पत्र-व्यवहार की परंपरा थी—यह कह देना आवश्यक है कि ये पत्र वे अंग्रेज़ी में लिखते थे। ये काल चाहे कितने ही अव्यवस्थित क्यों न रहे हों, किन्तु शिक्षा ने उस काल की अपेक्षा स्पष्टतः बहुत प्रगति कर ली थी जिनमें कि राजा तथा सामन्त लोग उन दस्तावेजों को भी पढ़ नहीं सकते थे जिन पर कि वे अपनी मुहर लगाते थे।

कैक्स्टन के काल में पत्र मन बहलाव या गप के लिये नहीं लिखे जाते थे बल्कि किसी व्यावहारिक उद्देश्य से ही, प्रायः कानून, व्यापार अथवा स्थानीय राजनीति के कार्य से, लिखे जाते थे। किन्तु वे प्रासंगिक रूप से हमें घरेलू रीति-रिवाज के बारे में भी कुछ जानकारी देते हैं। पारिवारिक जीवन, प्रेम तथा विवाह का जो चित्र इन शताब्दी के पत्रों से उभरता है वह ध्यान देने योग्य है; और इनके द्वारा प्रकाश में आने वाले कुछ तथ्य, जो आधुनिक पाठकों को बड़े विचित्र प्रतीत हो सकते हैं, ऐसे हैं जो उन अपेक्षाकृत पुराने युगों की भी विशेषता थे, और शायद अधिक ही, जिनके कि कोई लिखित रिकार्ड हमें उपलब्ध नहीं हैं।

बच्चों को जो अपने माता-पिता के प्रति अत्यधिक और औपचारिक सम्मान प्रकट करने के लिये बाध्य किया जाता था, घर तथा स्कूल में उन्हें जो कड़े अनुशासन में रखा जाता था, उनकी तथा नौकरों की जो अक्सर पिटाई होती थी, उस सब में किसी को आश्चर्य नहीं होगा। किन्तु कुछ पाठकों को, जिनकी कल्पना में मध्ययुगों का चित्र वीरता और प्रेम का है, जिसमें सरदार-सामन्त लोग स्त्रियों के सम्मुख अपने घुटनों के बल बैठे रहते थे, यह जानकर बड़ा धक्का पहुंचेगा कि सामन्त तथा अन्य उच्च वर्गों में विवाह से प्रेम का कोई भी संबंध नहीं था; प्रायः ही दूल्हा-दुलहन बहुत छोटी आयु

---

४५० जागीरों में से, जिनके पन्द्रहवीं शताब्दी के विवरणों का अध्ययन किया गया है, चार सौ से अधिक की भूमियों के भाग मुजारों के हाथ में चले जाने से उनकी वसूली में भी कमी हो गयी। घटती हुई जनसंख्या तथा गिरी हुई कीमतों का प्रभाव किसानों पर क्या हुआ होगा, इसका अनुमान किया ही जा सकता है। इसका परिणाम हुआ भूमि की सुलभता तथा किरायों में कमी। भूमिधारियों की स्थिति में सुधार के साथ भाड़े के श्रमिकों की स्थिति में भी सुधार हुआ। इसलिए कृषि-उत्पादन के मूल्यों में कमी से वास्तविक हानि जागीरदारों को हुई।

जोह्न साल्टमार्श का लेख "प्लेग ऐण्ड इकनामिक डिक्लाईन इन इंगलैंड इन दि लेटर मिडल एजिज़" (दि कैम्ब्रिज हिस्टोरिकल जर्नल, १९४१ भी द्रष्टव्य)।

में जीवन भर के लिये बांध दिये जाते थे, और यदि कभी बड़ी आयु के भी होते तो भी माता-पिता उन्हें सबसे बड़ी कीमत देने वाले को बेच देते थे। पास्टन तथा अन्य बड़े घराने अपने बच्चों के विवाह को अपने परिवार की उन्नति के खेल में एक चाल के रूप में देखते थे, जिससे या तो धन अथवा जायदाद की प्राप्ति की दृष्टि से लाभ होता अथवा जिससे एक शक्तिशाली संरक्षक की सहायता की प्राप्ति के रूप में लाभ होता था। यदि बलि के लिये नियत कोई व्यक्ति प्रतिरोध करता तो इस विद्रोह का दमन इतने क्रूर शारीरिक दंड के साथ किया जाता कि उसकी कल्पना भी कठिन है– कम से कम उस अवस्था में यदि वह लड़की अथवा स्त्री संरक्षित होती। जब एलिजाबेथ पास्टन ने पचास वर्ष के एक वृद्ध और कुरूप विधुर से विवाह करने में झिझक दिखाई, तो उसे तीन मास तक निरन्तर "प्रति सप्ताह एक या दो बार, कभी कभी एक दिन में दो बार, पीटा जाता था, और उसका सिर दो-तीन स्थानों से फाड़ दिया जाता था।" ऐसे थे उसकी माता एग्नेस के ढंग, जोकि एक अत्यन्त धार्मिक, सम्मानित तथा विशाल पास्टन परिवार की सफल अधिष्ठातृ थी। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से माता-पिता इस बात की विशेष चिन्ता नहीं करते थे कि उनके बच्चों से कौन विवाह करता है, बशर्ते कि उन्हें पैसा मिल जाता; जोह्न विडम ने, जोकि पास्टनों के पड़ोसियों में से एक था, लंदन के एक व्यापारी को अपने पुत्र के विवाह का अधिकार बेचा था।

ये देर से बद्धमूल मध्ययुगीन प्रथाएं, जोकि अभी पन्द्रहवीं शताब्दी में भी बड़ी प्रचलित थीं, पहली दृष्टि में मध्ययुगीन साहित्य की टोन से बड़ी असंगत प्रतीत हो सकती हैं; विगत तीन शताब्दियों में, कविता का विषय प्रेम की तड़प तथा नायक के अपनी प्रेयसी के प्रेम में समर्पण का अत्यन्त भाव-पूर्ण तथा रहस्यात्मक रूपकों द्वारा आख्यान करना ही रहा। वास्तव में पास्टनों तथा उनके पड़ोसियों का ऐसे ही साहित्य से परिचय था। किन्तु इस प्रेम काव्य का—दान्ते के पर-स्त्री प्रेम के अत्यन्त अलौकिक कल्पना-चित्रों से लेकर दरबारी ऐयाशी के आदर्शीकरण तक –विवाह से कोई भी संबंध नहीं था।

मध्ययुगीन शिक्षित स्त्री या पुरुष के लिये विवाह जीवन में एक प्रकार का संबंध था और प्रेम दूसरे प्रकार का, इनका परस्पर कोई संबंध नहीं था। विवाह से संयोग-वश प्रेम भी हो सकता था, जैसाकि निस्सन्देह यह प्रायः ही होता भी था। किन्तु यदि यह नहीं होता तब स्त्री अपनी जबान से अपने अधिकार का दावा करती थी, और कभी कभी इसमें उसे सफलता भी मिलती थी। किन्तु 'स्वामित्व' पति का ही था और वह जब इसका दावा घूंसे या छड़ी से करता था, तब जनमत उसकी निन्दा नहीं करता था। इस असमान संघर्ष में स्त्री को निरन्तर सन्तानोत्पत्ति का कष्ट भी झेलना पड़ता था—जिनमें से अधिकांश शीघ्र ही मर जाते थे और परिणामतः उनका स्थान भरना पड़ता था। ऐसा विवाह कोई आदर्श व्यवस्था नहीं हो सकता था, किन्तु शताब्दियों तक यह

इंगलैंड की जनसंख्या बनाये रखने में उपयोगी सिद्ध हुआ, जोकि उन प्लेग तथा चिकित्सा विषयक अज्ञान के दिनों में बड़ी महत्वपूर्ण बात थी।

विवाह का क्या अर्थ होना चाहिए, इस संबंध में किसी आदर्श की उद्भावना उस काल के जनमत ने अभी नहीं की थी। इसमें चर्च भी कोई योगदान नहीं कर रहा था, क्योंकि उसका वैराग्यपरक आदर्श औसत मानव-प्रकृति के प्रतिकूल था। पादरी लोग स्त्री को शैतान द्वारा मनुष्य को फांसने के लिये फैलाये गये जालों के रूप में देखते थे। चर्च ने अपने अधिकार द्वारा स्त्रियों की अवैध कामुकता तथा हिंसा से रक्षा करने का सचमुच ही प्रयत्न किया; और कम से कम उसके विवाह-बंधन का समर्थन करने के कारण पुरुष के लिये अपनी पत्नि का परित्याग करना अधिक कठिन था—यद्यपि कभी कभी पैसा देकर तलाक ले ही लिया जाता था। किन्तु धार्मिक अधिकारी वर्ग, जोकि इस बात पर आग्रह करता था कि पुजारियों का ब्रह्मचारी होना आवश्यक है, विवाह को एक निम्नतर स्थिति मानता था। इस अपूर्ण संसार में सामान्यजन को विवाह करने की अनुमति देना आवश्यक है, किन्तु उन्नत आध्यात्मिक स्तरों पर स्त्री-पुरुष संबंध को स्वीकृति नहीं दी जा सकती। इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पादरी लोग संस्कार-समारोह आदि द्वारा बच्चों की सगाई तथा विवाह को धार्मिक स्वीकृति दे रहे थे और इस प्रकार से इस संबंध में संसारियों के इस भौतिकवादी दृष्टिकोण को स्वीकार कर रहे थे कि इसमें लड़के-लड़की की अपनी पसंद देखना आवश्यक नहीं है और माता-पिता इसमें सौदेबाजी कर सकते हैं।[१]

क्योंकि विवाह सामान्य रूप से प्रेम के आधार पर नहीं होते थे, इसलिये लैंग्यूडोक के ट्रोबेडर ग्यारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में, तथा उनके अनुगामी फ्रांस तथा इंगलैंड के कवि, 'जो कि प्यार के देवता' का प्रशस्ति-गान करते थे, प्यार की वासना के लिये विवाह जैसी चीज़ को अप्रासंगिक मानते थे। किसी ने बड़ी चतुराई से यह कहा है कि "किसी समाज में, जिसमें विवाह के प्रति पूर्णतः उपयोगितावादी दृष्टिकोण है, यौन प्रेम का आदर्शीकरण अनिवार्यतः व्यभिचार के आदर्शीकरण से आरंभ होता है।" किन्तु वास्तव में यह आवश्यक नहीं है।[२]

मध्ययुगीन कवियों की पश्चिमी जगत् को महान् देन थी स्त्री-पुरुष के प्यार की

---

[१] चर्च ने जिस सीमा तक बाल-विवाह पर नियंत्रण करने का प्रयत्न किया, अथवा कहें, *बाल-विवाह की अनुमति दी,* उस पर विमर्श के लिये द्रष्टव्यः कौल्टन की पुस्तक चासर तथा उसका इंगलैंड, पृ० २०४-२०८, १९२१ संस्करण।

[२] कहा जाता है—प्रेम-विषयक एक अदालत ने यह निर्णय दिया था कि दो विवाहित व्यक्ति परस्पर प्रेम नहीं कर सकते। इस विषय में मैं पाठक को एक एक अत्यन्त विद्वतापूर्ण पुस्तक का हवाला देना चाहूंगा—(दि एललीगोरी ऑफ़ लव, ए स्टडी इन मैडीव्यल ट्रेडीशन; लेखक, सी. एस. ल्यूईस ऑफ़ मैग्डेलन, आक्सफर्ड, १९३६)।

यह आध्यात्मिक अवधारणा—सब आध्यात्मिक धारणाओं में सर्वोत्तम, जो स्त्री-पुरुषों को उनके शील तथा गुण में सहज उन्नत कर देती है :

प्रेम का भगवान्, जो कि एक वरदान रूप है,
वह कितना शक्तिशाली और कितना महान् है।
क्योंकि वह अवनत हृदयों को उन्नत और
उन्नत हृदयों को अवनत बना सकता है;
और कठोर हृदयों को वह कोमल बना सकता है।
और उसी से हृदय का सब श्रेय आता है,
सब सम्मान तथा सब शालीन्य आता है,
वही देता है—पूजा, निर्बन्धता, तथा हृदय का सब ओज,
पूर्ण आनन्द तथा पूर्ण आश्वासन,
हर्ष, सौख्य तथा नवता, विनम्रता, उदारता और मृदुता,
सच्ची मित्रता तथा साहचर्य,
चूक से लज्जित होने के प्रति भय और ग्लानि;
क्योंकि जो प्रेम का सच्चा सेवक है,
वह लज्जा का पात्र होने के बजाय मरना अधिक पसंद करेगा।

मानव-जीवन के लिये यह एक प्रेरणा का नया स्रोत था जो प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित था। यह विचार प्राचीनों को पूर्णतः अज्ञात था और आरंभिक चर्च को भी इसका कोई पता नहीं था। क्या मध्ययुगीन कवियों की यह अत्यन्त मूल्यवान अवधारणा, एक अन्य क्रान्ति द्वारा, विवाह-संस्था से सम्बन्धित की जा सकती थी ? क्या प्रेमी लोग अपने आप ही पति-पत्नि का संबंध स्थापित कर सकते थे ? क्या युवा-प्रेम का बंधन वार्द्धक्य और मृत्यु पर्यन्त प्रलम्बित किया जा सकता था ? यह परिवर्तन अब विवाह की अवधारणा और बाह्यय स्वरूप के विकास द्वारा इंगलैंड में वास्तव में ही हो चुका है। यह परिवर्तन कोई अवश्यंभावी नहीं था। उदाहरणतः फ्रांस में अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह अब भी एक सामान्य बात है, यद्यपि यह ठीक है कि फ्रांस के संस्कृत लोग अपने बच्चों की सहमति तथा परस्पर समानता के प्रति उससे कहीं अधिक ध्यान देते हैं जितना एग्नेस पॉस्टन देती थी। और ऐसे विवाह प्रायः ही सफल होते हैं। किन्तु इंगलैंड में आयोजित विवाह प्रेम-विवाह से स्थानान्तरित हो गया है; माता-पिता ने बच्चों के अपने चुनाव का अधिकार स्वीकार कर लिया है। ग्रैटेना ग्रीन का युद्ध जीत लिया गया है।

प्रेम तथा स्वतंत्रता की विजय के पीछे अज्ञात योद्धाओं तथा बलिदान होने वालों की एक दीर्घ परंपरा है। निस्सन्देह प्रेमियों द्वारा विवाह करने की अनेक घटनाएं सम्पूर्ण मध्य युग में निरन्तर होती रही हैं। पुरुष सदैव अपने माता-पिता की आज्ञा

का पालन नहीं करते थे, और कोई-कोई माता-पिता सहानुभूतिशील भी होते थे, और बहुत से छोटी आयु में मर भी जाते थे। चासर की फ्रैंकलिन की कहानी प्रेम-विवाह तथा प्रेम द्वारा ही उसके निर्वाह की एक अत्यन्त सुन्दर कहानी है। और पन्द्रहवीं शताब्दी में समय की गति मन्द थी। स्कॉटलैंड के जेम्स प्रथम ने, जोकि एक कवि-राजा था, अपनी प्रेमिका को अपनी रानी बनाया था, और उसके सम्मान में उसने "किंग्सक्वायर" नामक काव्य की रचना की थी।

नीरस पास्टनों तक के समाज में भी हमें पत्रों के रूप में कम से कम दो प्रेम विवाहों के विवरण उपलब्ध होते हैं। पहली घटना १४७७ में मार्जरी ब्रूथ तथा जोह्न पास्टन की है। इसमें लड़की ने अपनी कोमल-हृदया माता की स्वीकृति जीत ली थी। नीचे मार्जरी का पत्र दिया जा रहा है (पुस्तक में वह मूल हिज्जों में दिया गया है) जो कि उसने जोह्न को उस समय लिखा था जबकि उस सम्बन्ध में अभी बातचीत चल रही थी, और विशुद्ध आर्थिक कारणों से वह बहुत आशाजनक नहीं थी :

"अति सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित, तथा मेरे अतिप्रिय वेलेंटाइन, मेरी माता ने मेरे पिता से सारी बात अत्यन्त सुचारु रूप से कह दी है, किन्तु वह मेरे लिए उससे अधिक दहेज नहीं जुटा सकती जितना कि मेरे पास पहले है और आपको ज्ञात है। ईश्वर जानता है कि इसका मुझे कितना दुःख है। किन्तु यदि आप मुझे प्यार करते हैं, जैसाकि मेरा विश्वास है कि आप अवश्य करते हैं, तो आप इस कारण से मुझे नहीं छोड़ेंगे, ऐसी मेरी धारणा है।"

इसी परिस्थिति पर उसका अलग पत्र, जो यद्यपि व्याकरण की दृष्टि से बहुत ठीक नहीं है, किन्तु तो भी इतना द्रावक है कि इंगलिश गद्य में उससे अधिक द्रावक किसी कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है।

"यदि आप इतना दहेज तथा मुझे प्राप्त कर सन्तुष्ट हो सकें तो इस भूमि पर मेरे से अधिक सौभाग्यशालिनी कोई लड़की नहीं हो सकती। किन्तु यदि आप इतने से सन्तुष्ट नहीं हो सकते हैं, अथवा आप उससे बहुत अधिक चाहते हैं जितना मेरा अनुमान है, तब मेरे भले, सच्चे और मधुर वेलंटाइन, आपको इसके लिए यहाँ आने का कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है; तब यह कहानी समाप्त होने दो और इसकी दोबारा कभी चर्चा भी नहीं करना; मैं सारा जीवन तुम्हारी सच्ची प्रेमिका रहूंगी तथा शेष जीवन तुम्हारे लिए प्रार्थना करती रहूंगी।"

जोह्न के लिए यह पत्र पर्याप्त था। वह अनेक युवकों की तुलना में कहीं अधिक अपना स्वामी था; उसका पिता मरा हुआ था और उसने अपनी माता तथा अन्य संबंधियों की असहमति के बावजूद यह विवाह कर लिया।

पास्टन कुल की दूसरी प्रेम-कहानी का वृत्त अपेक्षाकृत अधिक दीर्घ और कठिन रहा, परन्तु परिणाम इसका भी उतना ही सुखद रहा। मार्जरी पास्टन ने पास्टन-प्रदेश के बैल्लिफ रिचर्ड कैल्ले के पास जाकर गुप्त रूप से अपना वाग्दान करने का साहस किया। ऐसी सगाइयाँ अनिवार्य मानी जाती थीं और चर्च उनको स्वीकार करने से इन्कार नहीं कर सकता था, किन्तु ये कभी-कभी दोनों पक्षों की सहमति से तोड़ दी जाती थीं। यह लड़की वर्षों तक अपने परिवार के आक्रोश तथा दमन के सम्मुख दृढ़ रही, जब तक कि अन्त में उसकी अनम्यता से थक कर तथा अपने अत्यधिक महत्वाकांक्षी बैल्लिफ की अत्यावश्यक सेवाओं को बनाए रखने के लिए पास्टनों ने प्रेमियों को अपना विवाह सम्पन्न करने की अनुमति नहीं दे दी।

पन्द्रहवीं शताब्दी के पिछले भाग के गाथा काव्य में प्रेम-विवाह के लक्षण अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई देने लगे थे, जैसे इस्लिंग्टन के बैल्लिफ की लड़की की पूर्वज नट ब्राउन मेड तथा गाथा काव्य की अन्य सैंकड़ों नायिकाओं के प्रेम-विवाह वर्णन में। शैक्सपीयर के युग तक पहुँचते-पहुँचते हम काव्य तथा नाटक में प्रेम को विवाह के एक उचित आधार के रूप में चित्रित पाते हैं, यद्यपि यह एकमात्र उचित आधार नहीं माना जाता था। वैवाहिक स्वतंत्रता के लिए बच्चों का माता-पिता के विरुद्ध संघर्ष उस समय लोक-कल्पना में सहानुभूतिपूर्ण स्थान बना चुका था, तथा एलिजावेथ-युग के रंगमंच पर सर्वाधिक प्रचलित रुचि का विषय विवाह के इच्छुक प्रेमियों का परस्पर के प्रति सच्चा समर्पण तथा घर से भाग जाने वाले युगलों के साहसपूर्ण कार्य थे, जिनका चित्रण हम मास्टर फैंटन तथा एन्ने पेज जैसे पात्रों में देख सकते हैं। स्पष्टतः प्रेम-विवाह ट्यूडर-काल के अन्त तक अधिक प्रचलित हो गया था, किन्तु बाल-विवाह का भी अभी काफी प्रचलन था: इस मुआमले में सुधारोपरान्त का चर्च उतना ही दोषी था जितना मध्ययुगीन चर्च था। १५८२ में, बिशप चैडर्टन ने अपनी एकमात्र लड़की जोन का विवाह नौ वर्ष की आयु में एक ग्यारह वर्ष के लड़के से कर दिया: इसका परिणाम बुरा हुआ। एक अन्य अवसर पर तीन वर्ष की आयु के जोन रिगयार्डन को एक पादरी ने अपनी गोदी में उठा कर उससे एक पाँच वर्ष की लड़की के प्रति विवाह के निर्धारित शब्द बोलने के लिए प्रेरित किया। समाप्त होने से पूर्व उस बच्चे ने यह चिल्लाते हुए गोदी से उतरने के लिए बड़ी जिद्द की कि वह आज नहीं पढ़ेगा; किन्तु उस पादरी ने कहा "तुम्हें थोड़े शब्द और कहने पड़ेंगे, तब जाकर खेलना।"

और इस प्रकार से इंगलैंड के सामाजिक इतिहास में प्रेम-विवाह की दिशा में दीर्घ संघर्षयुक्त विकास-क्रम निरन्तर जारी रहा, जब तक कि जेन ऑस्टिन तथा विक्टोरियनों के युग में विवाह के लिए वरण की स्वतन्त्रता को समाज के ऊँचे से ऊँचे वर्गों में स्वीकार नहीं कर लिया गया तथा अर्थ-लोलुपता पर आधारित विवाह को

अनुचित नहीं माना जाने लगा। अवैध तथा अबोध 'प्रेम का देवता', जिसकी वेदी का निर्माण मध्य युगीन कवियों ने किया था, अब वैध स्वीकार कर लिया गया था, तथा अल्फ्रेड़ टैनीसन और रोबर्ट ब्राउनिंग और उसकी पत्नी के इंगलैंड में उसे प्रतिष्ठा मिल चुकी थी।

संभवत: निर्धन वर्गों में विवाह के लिए वरण के रास्ते में अर्थलाभ सम्बन्धी प्रयोजन हमेशा से ही कम बाधक रहे थे। इस विषय पर हमें बहुत कम साक्ष्य उपलब्ध हैं, किन्तु हम यह मान कर चल सकते हैं कि कृषक वर्ग में मध्य युग में, और इसी प्रकार से सब युगों में, युवक-युवती इकट्ठे वन में जाते, फिर वहाँ से चर्च में, क्योंकि वे परस्पर प्रेम करते थे और साथ यह विश्वास भी रहता था कि युवती अच्छी माता तथा गृहणी प्रमाणित होगी, तथा युवक कार्य-कुशल व्यक्ति है अथवा उसके पास खुले क्षेत्र में भूमि के एक खंड के अतिरिक्त, सूअरों का बड़ा है। अवैध यौन-सम्बन्धों को वैध बनाने के लिए विवाह करने की प्रथा काफी सामान्य थी, विशेषत: समाज के निम्न स्तरों में, जिनमें कि कुमारी लड़की की चौबीसों घंटे रखवाली नहीं की जा सकती थी। किन्तु पास्टनों की लड़कियाँ सदैव अपनी माता अथवा अभिभावक की कड़ी निगरानी में रहती थीं, और परिणामत: कुलीन लंपट लोग व्यभिचार के लिए या तो निर्धन वर्ग की लड़कियां खोजते थे अथवा धनियों की पत्नियां।

जब एकबार स्त्री का विवाह हो जाता था तो वह कर्म, प्रभाव तथा, कुछ अवस्थाओं में, अधिकार के भी क्षेत्र में प्रवेश करती थी। पास्टनों के पत्रों से पत्नियों की अनेक पीढ़ियों का विवरण मिलता है, जो कि किसी भी अर्थ में अपने पतियों की दास नहीं थीं बल्कि उनकी परामर्शदाता और विश्वस्त संगिनियां थीं। इन पत्रों के अनुसार, उनका ध्यान अपने पति के स्वार्थों के प्रति अधिक था और परिणामत: उनके अनेक बच्चे उसकी बलि चढ़ते थे। वे माता की अपेक्षा गृहणियाँ अधिक अच्छी थीं। उनके पत्रों से प्रदर्शित होता है कि वे परिवार के व्यापारिक तथा कानूनी मुआमलों में, और घरेलू कार्यों में भी—जहाँ कि उनका एक छत्र राज्य था—भाग लेती थीं।

एक या अधिक सामन्त-गृहों के लोगों के भोजन-वस्त्र का प्रबन्ध करना ही अपने आप में एक बहुत बड़ा कार्य था, जिसके लिए उसी प्रकार की प्रबन्ध-कुशलता आवश्यक होती थी जैसी हमारे आज के युग में सार्वजनिक कार्यों अथवा व्यावसायिक कार्यों में लगी हुई स्त्रियों को आवश्यक होती है। उन दिनों घर की आवश्यकता की सामग्री दुकानों से तुरन्त जाकर खरीदी नहीं जा सकती थी। जो सामग्री जागीर में से प्राप्त नहीं हो सकती थी उसके लिये महीनों पहले आदेश देना पड़ता था—फ्रांस की शराबें, भूमध्य सागर के प्रदेशों में उत्पादित चीनी, मिर्च-मसाला, संतरे, खजूरें तथा बढ़िया किस्म का कपड़ा। यह गृहणी का कार्य था कि वह भावी आवश्यकताओं का अनुमान पहले से करे तथा प्रदेश की राजधानी के बड़े व्यापारियों

को उस वस्तुजात के लिये आदेश दे। बहुत बार तो ये आदेश लन्डन में भी देने पड़ते थे, क्योंकि अनेक बार नॉर्विच तक ऐसी सामान्य विदेशी वस्तुएँ सप्लाई नहीं कर पाता था जैसी आज छोटे कसबों के बाजारों में मिल जाती हैं। जहाँ तक घर के भीतरी कार्य का प्रश्न है, भोजन तैयार करना, जमा करना और जागीर के बाहर से मांस और शिकार का प्रबन्ध करना तथा तालाबों से मछली लाना, इसके अतिरिक्त दूध के पशुओं की सम्भाल करना, शराब की भट्टी तथा रसोई का प्रबन्ध देखना ये सब उस जागीर की स्वामिनी के कार्य थे। सामन्त-गृह के लोगों के अधिकांश कपड़े भी इस गृह-स्वामिनी के निर्देश में ही सामन्त-गृह के भीतर ही काते, बुने तथा सिये जाते थे। उनकी लड़कियाँ अपने वस्त्र खरीदने के लिये नगर में नहीं जाती थीं, यद्यपि प्रायः ही उनकी बढ़िया पोशाक लंडन से खरीदी जाती थी। युवा पुरुष, जोकि उतने ही उत्कृष्ट और भड़कीले कपड़े पहनते थे जितने उनकी बहनें पहनती थीं, बाहर घूमने की अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता होने के कारण बहुत बार बाजार के दर्जी से भी कपड़े सिलवा पाते थे।

इस प्रकार से हम एक समृद्ध परिवार की गृहणी के असंख्य तथा निरन्तर चलने वाले कार्यक्रमों को देख सकते हैं, और आवश्यक परिवर्तनों के साथ, सब स्तरों की गृहणियों के कार्यक्रम की कल्पना कर सकते हैं।

इस काल में सामन्त-गृहों के कमरों की दीवारों पर पर्दे टंगे रहते थे: हाल कमरे तथा अन्य अच्छे कमरों की दीवारों पर कढ़े हुए और चित्र-विचित्र पर्दे लटके होते थे, जिन पर शिकार के, धार्मिक या अन्य प्रतीकात्मक चित्र बने होते थे। ये पर्दे अब अजायबघरों की शोभा हैं। सामान्य कमरों में एक रंग के या धारीदार बुने हुए कपड़े लटके रहते थे। इंगलैंड के प्रासादों में अभी फ्रेम किये हुए चित्रों ने स्थान नहीं पाया था किन्तु दीवारें प्रायः ही चित्रित होती थीं। एटन कालेज के उपासना-गृह में जो भित्ति-चित्र बचे हुए हैं, जोकि एक इंगलैंड के चित्रकार विलियम बेकर ने बनाए हुए हैं, यदि उनसे कुछ अनुमान किया जाय तो कहा जा सकता है कि रोसेज़ के युद्धों के काल के इंगलैंड में दीवारों पर बहुत सुन्दर चित्र होंगे—जोकि बहुत समय पहले नष्ट हो गये थे।

दीवारों के भीतर चिमनियाँ बनाने की प्रथा अब बीच के कमरे में खुली अंगीठी बनाने की प्रथा को, जिनका कि धुआँ खुली खिड़कियों से बाहर निकलता था, क्रमशः स्थानान्तरित कर रही थी। पास्टन लोग अपने प्रासादों में यह महान सुधार हेनरी षष्ठ के काल में ही आरम्भ कर चुके थे, किन्तु इस परिवर्तन की गति मन्द थी, क्योंकि एलिजाबेथ तक के युग में हम विलियम हैरीसन को पुरानी प्रथा को व्यथापूर्वक याद करते हुए पाते हैं।

हैरिसन को डाक्टर जोन्सन के उस अत्यन्त रूढ़िवादी कथन के साथ भी सहानुभूति होती जो उसने १७५४ में पुराने गोथिक हालों के बारे में थोमस वार्टन के सम्मुख व्यक्त किया था—"इन हालों में पुराने जमानों में अंगीठी हमेशा कमरे के बीच में होती थी, जबतक कि जनवादियों (व्हिग्ज़) ने यह कमरे में एक ओर को नहीं हटा दी।" किन्तु यह क्रान्तिकारी सूझ एक भी जनवादी के आविर्भाव से पूर्व धीरे-धीरे तीन-चार सौ वर्ष तक परिवर्तन-क्रम से गुज़री थी।

सामन्त-गृह अथवा किले में उस युग में पारिवारिक जीवन की .जो एक कठोर धारणा थी उसमें अविवाहिता बूआ आदि को एक व्यर्थ बोझ समझा जाता था। यदि किसी लड़की का विवाह नहीं हो पाता था तो उसे, सम्भव होने पर, अनिवार्यतः साध्वियों (नन्स) की शाला में भेज दिया जाता था। उससे सम्यक् रूप से छुटकारा पाने के लिये पैसा दान कर दिया जाता था, और इस प्रकार वहाँ लड़की जीवन भर के लिए आदरपूर्वक स्थान पाती थी। दान में पैसा दिए बिना साध्वी-शाला में प्रवेश पाना लगभग असम्भव होता था। इस प्रकार से चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दियों में इंगलैंड में साध्वीशालाओं का निर्माण होता था और उनको वित्त मिलता था। सिद्धान्त में वे जो भी रही हों, तथा बहुत प्राचीन काल में जो भी रूप उनका रहा हो, इस युग में वे निर्धनों के शरणागर नहीं थे, न ये विशेष रूप से धार्मिक स्त्रियों के आवास थे। इन शालाओं में पोप के प्रायिक आगमनों के वृत्तान्तों से पता चलता है कि इनमें स्त्रीत्व की मात्रा पर्याप्त थी, अनुशासन थोड़ा शिथिल था, यद्यपि लोकापवाद बहुत कम ही कभी होता था। साध्वी, विशेष रूप से मठस्वामिनी, को सदैव यह ध्यान रहता था कि वह एक कुलीन स्त्री है। चासर की मादाम एग्लेंटाइने के समान भक्ति-परायण होने के बजाय वह फैशन तथा व्यवहारकौशल की आदर्श थी।

पोशाक तथा आचरण सम्बन्धी जो नियम बहुत पुराने समय में विरागात्मक विचारों के प्रवर्तकों ने बनाए थे उनका अधिकांशतः तिरस्कार ही हो रहा था। छः से अधिक दीर्घ शताब्दियों तक पादरियों ने मठों में फैशन के विरुद्ध संघर्ष किया किन्तु इसमें कोई सफलता नहीं मिली। निरीक्षणार्थ आने वाले पोप पर अधिकांशतः स्त्रियों के वाचालतापूर्ण कोलाहल की बौछार होती थी, मठ-स्वामिनी साध्वियों की शिकायत करती हुई और सब साध्वियां एकसाथ मठ-स्वामिनी की शिकायत करती हुई, जब तक कि वह भद्र पुरुष, बिना कुछ विशेष किये, इस तूफान के सम्मुख भाग नहीं खड़ा होता था। बिशपों ने 'शिकारी कुत्तों' के गिरोहों को—और कभी कभी बन्दरों को भी—हटाने के अनेक प्रयत्न किये, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। इनसे ये बेचारी स्त्रियां, नियम के विरुद्ध, अपने दीर्घ एकान्त काल में मन बहलाती थीं। चर्च के लिंकन नामक हलके के एक तपस्विनी विहार में जब बिशप ने आकर पोप की आज्ञप्ति की एक प्रति प्रस्तुत की और तपस्विनियों को उसका पालन करने के लिये कहा, तो वे

उसके पीछे दरवाजे तक भागीं और आज्ञप्ति की पुस्तक को उसके सिर पर यह चिल्लाते हुए मारा कि वे उसका पालन नहीं करेंगी।

तपस्विनी-विहार यद्यपि संख्या में बहुत थे किन्तु ये बहुत छोटे होते थे। इंगलैंड में एकसौ ग्यारह विहारों में से केवल चार में तपस्विनियों की संख्या तीस से अधिक थी। देश में तपस्विनियों की कुल संख्या १५०० से २००० थी। किन्तु प्रत्येक विहार में नौकर और एक या अधिक पुजारी भी रहते थे।

पन्द्रहवीं शताब्दी में ये विहार आर्थिक रूप से, तथा अन्य प्रकार से भी, अधोगति की ओर जा रहे थे। हेनरी अष्टम् के इस संबंध में कठोरता से कार्यवाही करने के पूर्व रूढ़िवादी विशपों के संकेत पर चालीस वर्षों में आठ तपस्विनी-विहार समाप्त कर दिये गये थे। उदाहरणतः, १४९६ में सन्त रेडगुंड के तपस्विनी-विहार के स्थान पर एलाई के विशप अलकोक ने जीसम कालेज "कैम्ब्रिज की स्थापना की और विहार को इस आधार पर समाप्त कर दिया कि इनका ठीक प्रबन्ध नहीं हो रहा है, तथा कैम्ब्रिज कालेज समीप होने के कारण दुराचार बहुत बढ़ रहा है।" कैंब्रिज के उन दो विद्वानों के अनुवर्ती, जो चासर के काल में ट्रम्पिंगटन मिल में आए थे, सन्त रेडगुंड की तपस्विनियों में बहुत अधिक रुचि ले रहे थे। अन्त में केवल दो तपस्विनियां बची थीं, एक अनुपस्थित थी और दूसरी 'बच्ची' थी। कम से कम, ऐसा विशप का कथन था जोकि एक अधिक उपयोगी संस्था की स्थापना करना चाहता था।

संत रेडगुंड तो विशेष रूप से बुरी अवस्था में था, और यह सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि इंगलैंड के मध्य युग के तपस्विनी विहार आज की अपेक्षा कम उपयोगी तथा प्रशंसनीय थे।

विक्लिफ द्वारा चर्च की बृहत् संपत्तियों की आलोचना करने के काल से लेकर हेनरी अष्टम् के इन पर आक्रमण तक चर्च को भूमि तथा पैसा दान देने का काफी प्रचलन था, किन्तु अब यह दान साधुओं अथवा तपस्विनियों के घरों में कम जाता था और मन्दिर तथा स्कूलों को अधिक प्राप्त होता था। इन पिछले दिनों में धनिक तथा सामान्य नागरिक दान तथा वसीयतनामा करते समय अपने तथा अपने बन्धु-बांधवों की चिन्ता अधिक करते थे, बजाय पवित्र चर्च के। विद्यालयों को मिला दान सामान्य लोगों और पुजारियों दोनों की शिक्षा में बराबर काम में आता था। पूजा-गृह-प्रतिष्ठान मुख्यतः एक आत्मप्रसाधक कार्य था : पूजा-मंदिर में एक या दो पुजारियों को वेतन देकर संस्थापक की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना (मास) करने के निमित्त रखा जाता था, और परलोक के संबंध में किसी की जो भी धारणाएं हों, यह इस लोक में अपना स्मारक रखने का एक साधन तो था ही। पूजा-गृह प्रायः ही चर्च के एक ओर अत्यन्त सूक्ष्म शिल्प-कौशल से निर्मित होता था और उनमें संस्थापक की कब्र बनी होती थी। कुछ लोग अपने स्मारक के रूप में पृथक् भवन ही बनवाते थे—छोटा चर्च या

पूजा-मन्दिर, जोकि संस्थापक का नाम अनुगामी संततियों की स्मृति के लिये सुरक्षित रखता था।

पन्द्रहवीं शताब्दी, अपनी सब अव्यवस्था के बावजूद, शिक्षा की सुविधाओं में वृद्धि तथा तदर्थ प्राप्त धन की दृष्टि से बहुत अच्छा काल था। चासर-काल के इंगलैंड में अनेक विद्यालय थे, किन्तु "सुधार" के पूर्व उससे अधिक थे। पन्द्रहवीं शताब्दी के बिशप, जोकि अधिकाशत: व्यवहार-कुशल और अच्छे थे, विद्यालयों को पैसा देने में रुचि रखते थे। नगर-परिषदें तथा व्यक्तिगत नागरिक लोग, जोकि संपत्ति तथा जमींदारों के साथ पारिवारिक संबंधों की दृष्टि से उन्नति कर रहे थे, विद्यालय स्थापित करने में बड़ा गर्व अनुभव करते थे, जोकि उनके नगर अथवा प्रदेश के अन्य बच्चों को उन्नति का अवसर प्रदान कर सकते थे, "जिससे कि वे बड़े होकर पुजारी अथवा बिशप बन सकें, अथवा भविष्य में मेयर, व्यापारी, राज्य मंत्री, क्लर्क, न्यायाधीश तथा वकील आदि बन सकें, जो कि उनकी जागीरों का सुप्रबन्ध कर सकें अथवा राज्य प्रबन्ध कर सकें।[1]

वास्तव में, इंगलैंड ने बहुत बढ़िया माध्यमिक शिक्षा-व्यवस्था का विकास किया। इनमें से बहुत से विद्यालय 'निर्धनों' को निःशुल्क पढ़ाने के लिये स्थापित किये गये थे; किन्तु श्रमिक वर्ग इससे लाभ नहीं उठा रहा था बल्कि केवल सापेक्षत: निर्धन लोग ही इससे लाभ उठा रहे थे—अर्थात् निम्न मध्यम वर्ग के लोग, छोटे जमींदारों के बच्चे या संरक्षित अथवा मध्यम श्रेणी के जमींदारों अथवा नागरिकों के बच्चे, जोकि इन विद्यालयों के माध्यम से देश की सरकार में भाग लेने के लिये आगे आते थे। इस प्रकार से, शिक्षित-जन तथा पादरियों के नये वर्ग के आगमन ने अगली शताब्दी में होने वाले सामाजिक तथा बौद्धिक परिवर्तनों के लिये भूमि तैयार की, क्योंकि दोनों ने ही शीघ्र बाद में होने वाले महान आन्दोलनों में भाग लिया था। सामान्य धारणा के विपरीत, व्याकरण विद्यालय (ग्रामर स्कूल) अंग्रेजी भाषा-सुधार के परिणाम नहीं थे: वे इसके कारण थे।

पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक, यूनानी तथा सिसेरोवादी नवजागरण का संदेश हमारे द्वीप तक पहुंचने से पूर्व माध्यमिक शिक्षा विंचेस्टर तथा एटन के समान समृद्ध

---

[1] १६३० और १६७५ के बीच पोपों तथा बिशपों के लेखों में "शिक्षित जन-साधारण" का प्राय: ही वर्णन आता है—जोकि उस समय एक नयी बात थी। पन्द्रहवीं शताब्दी बीतते बीतते यह पद-प्रयोग समाप्त हो गया, क्योंकि जिस वर्ग का यह पद वर्णन करता है वह अब इतना सामान्य हो गया था कि वह कुतूहल उत्पन्न नहीं करता था, और ग्राम-स्कूल सामान्य लोगों को अधिक से अधिक संख्या में शिक्षा दे रहे थे।

नगरों से लेकर छोटे नगरों तक सभी में, लैटिन के अध्यापन तक सीमित थी—वर्जिल, ओविड, तथा कुछ ईसाई लेखकों के ग्रन्थ ही पढ़ाए जाते थे। मध्य युगीन चर्च का बहुत पुराने समय से प्राचीन लेखकों के प्रति, उनकी मूढ़तापूर्ण गलतियों के बावजूद, एक उदारतापूर्ण आदर का रवैया था, और इस उदारता में से ऐसा बहुत कुछ उत्पन्न हुआ जिसे यूरोपीय संस्कृति में उत्कृष्टतम तत्व कहा जा सकता है। व्याकरण विद्यालयों में विद्यार्थी लैटिन भाषा में गद्य और पद्य रचना करते थे और कक्षा में लैटिन से इंगलिश में अनुवाद करते थे, जोकि उस समय तक अध्यापन का एक सर्वस्वीकृत माध्यम हो चुकी थी; केवल कुछ ही विद्यालयों में फ्रेंच का वैकल्पिक प्रयोग होता था, वह भी इसलिये नहीं कि बच्चे घर पर फ्रेंच बोलते थे, बल्कि इसलिये कि 'कहीं फ्रेंच भाषा पूरी तरह से ही नहीं भूल जाय।' किन्तु विद्यालय के समय के बाद लैटिन के सिवाय अन्य कोई भाषा बोलने की मनाही थी। कुछ शताब्दियों तक यह विचित्र नियम कोड़ों की मार द्वारा लागू किया जाता था। कभी कभी तो यह भेद लेने के लिये कि कोई विद्यार्थी खेल आदि के समय इंगलिश का शब्द तो नहीं बोलता, सवैतनिक गुप्तचर तक रखे जाते थे। यह कहना कठिन है कि यह कठोर निषेध व्यवहार में कहां तक लागू होता था। क्या लैटिन पन्द्रहवीं शताब्दी के व्याकरण विद्यालय के विद्यार्थी के लिये उससे कम 'मृत भाषा' थी जितनी कि वह उन्नीसवीं शताब्दी के पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी के लिये थी ? ऐसा सोचने के लिये बहुत से कारण हैं कि वह थी। उन दिनों के व्याकरण-विद्यालय जितना परिचय लैटिन का देते थे वह उन दिनों किसी भी व्यवसाय-वृत्ति के लिये आवश्यक था। इसकी आवश्यकता केवल पुजारियों को ही नहीं थी, उतनी ही आवश्यकता राजदूतों, वकीलों, राज्याधिकारियों, डाक्टरों, व्यापारियों के मुनीमों, और क्लर्कों आदि को भी थी।

सामन्तों तथा अभिजातों के लड़के भिन्न-भिन्न प्रकार से शिक्षा प्राप्त कर रहे थे जोकि भेद उनके माता-पिताओं के स्तर तथा व्यक्तिगत दृष्टिकोण के अनुसार होते थे। कुछ तो अपने घर पर ही रहते थे और उन्हें पादरी पढ़ाने के लिये, वनाधिकारी शिकारीदि सिखाने के लिये और कोई वृद्ध आरक्षक अथवा पड़ौस का कोई सामन्त शस्त्र-विद्या सिखाने के लिये आता था। किन्तु अधिकांशतः वे घर से दूर ही भेजे जाते थे। इंगलैंड की यह प्रथा विदेशियों को बड़ी निष्करुण प्रतीत होती थी, किन्तु परिणाम में यह हानिकारक की अपेक्षा लाभदायक ही अधिक थी। कुछ विद्यार्थी व्याकरण-विद्यालयों में भर्ती होते थे और वहां लैटिन पढ़ थे, और सम्पन्न नगरवासियों तथा सामन्तों के योग्यतम बच्चों के निकट-परिचय में रहते थे। दूसरे गैरसरकारी छोटे स्कूलों में जाते थे, किन्तु वहां भी किसी विवाहित व्यक्ति के संरक्षण में रहते थे।[1] शेष किसी सन्त की देखरेख में किसी मठ में रहते थे। किसी समय, चौदह से अट्ठारह वर्ष

---

[1] स्टोनर लैटर्स, अ. १, पृ० २१।

की आयु के बीच, कुछ विद्यार्थी आक्सफर्ड तथा कैम्ब्रिज भी जाते थे, जबकि अन्य अपनी शिक्षा राज्य दरबार में अथवा बड़े सामन्तों के दरबारों जैसे घरों में सहायक अथवा अनुचर के रूप में पूर्ण करते थे। वहां सबसे अधिक मूल्य लैटिन के ज्ञान को नहीं दिया जाता था बल्कि घुड़सवारी, क्रीड़ा-प्रतियोगिता, शिकार, नृत्य, वादन, तथा गायन में निपुणता का तथा प्रेमकला के सब रूपों का मूल्य था। नैतिकतावादी लोग इन संस्थानों की "युवकों को भ्रष्ट करने वाले स्थान" कह कर निन्दा करते थे। निस्सन्देह, इनमें कुछ दूसरों से उत्कृष्टतर थे, किन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सामन्त तथा इनके दरबार के लोग निरन्तर पतन की ओर जा रहे थे तथा जागीरों, दफ्तरों, व्याकरण-विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के लोग आगे आ रहे थे। नया युग उनके हाथों में आना निश्चित था। सम्पन्नों के बहुत से लड़के, जो जीवन के पिछले वर्षों में बहुत सफल होते थे, उनमें से होते थे जो शिल्पियों तथा व्यापारियों के शागिर्द होते थे। यह एक ऐसी परम्परा थी (जो कि इंगलैंड के समाज को फ्रांस के समाज से पृथक् करती थी) जिससे कुलीन लोग सामान्य लोगों में मिश्रित होते थे।

वैखम के विलियम का विंचेस्टर कालेज तथा १४४० में हेनरी चतुर्थ द्वारा स्थापित एटन कालेज धीरे धीरे आज के पब्लिक स्कूलों का, इस शब्द के इंगलिश अर्थ में, रूप ले रहे थे—ऐसे स्कूल जिनमें सम्पन्नों के बच्चे पढ़ते थे। विंचेस्टर स्कूल में आरंभ से ही इस वर्ग के बच्चों की भारी संख्या थी, और आरंभ से ही यह राष्ट्रीय स्तर का स्कूल था, केवल एक स्थानीय व्याकरण स्कूल नहीं था। इसमें सम्पूर्ण दक्षिण से, मध्य प्रदेश से, और यहां तक कि चशायर तथा लंकाशायर तक से, विद्यार्थी आकर भर्ती होते थे। बहुत से विद्यार्थी अट्ठारह वर्ष की आयु तक इसमें रहते थे। रोसेस के युद्ध-काल में एटन महान् आर्थिक कठिनाइयों में था। किन्तु, श्री लीश के अनुसार, इस बात ने "इस स्कूल के एक बृहत् पब्लिक स्कूल बनने की दिशा में संक्रमण की गति को मन्द करने के बजाय तीव्र ही किया, क्योंकि उच्च वर्ग जबकि अपने बच्चों के शिक्षणार्थ कुछ नहीं देते थे, अन्य साथियों के घरों में तथा एटन शहर में, जहांकि उन्हें ओप्पीडंस् कहा जाता था, खाने का बहुत पैसा देते थे।"

इस प्रकार से १४७७ में युवक विलियम पास्टन नार्फोक जागीर से लैटिन का अनुवाद तथा गद्य-पद्य रचना सीखने के लिये तथा सद्व्यवहार सीखने के लिये एटन भेजा गया था, यद्यपि उसके माता-पिता उसके खाने आदि का पैसा चुकाने में बहुत आलसी थे, यहां तक कि उनका नौ महीने का पैसा बकाया हो गया था। एक बार उसके अध्यापक ने उसे बीस शिलिंग उधार दिया था, जोकि, उस समय की शिलिंग की कीमत देखते हुए, बहुत बड़ी रकम थी।

एक प्राचीनतर पीढ़ी में प्रथम जोह्न पास्टन भीतरी मन्दिर (इनर टेम्पल) में जाने से पूर्व ट्रिनिटी हाल में कानून पढ़ने के लिये पड़ौस के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय

में गया था। मुकद्दमेबाजी के इस युग में, उच्च वर्ग के व्यक्ति के लिये अपनी संपत्ति की रक्षा के निमित्त कानून जानना आवश्यक था। जैसाकि जोह्न पास्टन की व्यवहार-कुशल माता एग्नेस ने उसे कहा था :

"मैं तुम्हें सलाह दूंगी कि तुम अपने पिता के कानून सीखने के परामर्श को दिन में एक बार अवश्य अपने मन में दुहराओ, क्योंकि वह अनेक बार यह कहते थे कि पास्टन में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पैरवी करना आना चाहिये।"

जोह्न का पुत्र वाल्टर पास्टन अधिक दूर, आक्सफर्ड में, पारिवारिक पुरोहित तथा सर्व कार्य कुशल जेम्ज़ ग्लॉयस के संरक्षण में भेजा गया था। उसकी माता मार्गरेट को चिन्ता थी कि कहीं विश्वविद्यालय के धर्मशिक्षक उसे धर्म पढ़ने के लिये प्रेरित नहीं करें :

"मैं उसे एक बढ़िया कार्य-व्यवहारी व्यक्ति बनाना अधिक पसन्द करूंगी बजाय एक निकम्मा पुजारी बनाने के।"

१४७४ में जब वाल्टर पास्टन आक्सफर्ड में था तब उसने मैग्डेलन कालेज की, जिसकी स्थापना कि बीस वर्ष पहले वेअनफ्लैट ने की थी, दीवारें उठती हुई अवश्य देखी होंगी। इस कालेज का निर्माण रोसेस के युद्धों के कारण विलंबित हो गया था। मैग्डेलन कालेज वैकेहम के "नवीन कालेज" की, जोकि उस समय एक सौ वर्ष पुराना था, शिल्प की दृष्टि से बराबरी करता था। कैम्ब्रिज में भी हेनरी चतुर्थ के कालेज का भवन उसके राज्यकाल की अव्यवस्था के कारण विलंबित हो गया था : यहां तक कि मंदिर भी ट्यूडर के युग में जाकर पूरा हुआ।[1] किन्तु नदी के पास बना क्वींस कालेज, जिसे कि अंजरु की मार्गरेट ने स्थापित किया था, उसके शान्त स्वभाव के पति के जीवन-काल में ही विकसित हुआ, जोकि इस बात का प्रमाण था कि अब ईंट से भी बहुत बढ़िया भवन-निर्माण हो सकता है।

सम्पूर्ण पन्द्रहवीं शताब्दी में कैम्ब्रिज आक्सफर्ड के प्रतिस्पर्धी के रूप में आगे बढ़ रहा था। यद्यपि १३८२ में चर्च अथवा राज्य दोनों ने विश्वविद्यालय से विक्लिफवाद का निरास कर दिया था, किन्तु अपने बच्चों को विश्वविद्यालय भेजने के इच्छुक पवित्रतावादी माता-पिता अब भी इस पर सन्देह करते थे। अंशतः इस कारण से भी आक्सफर्ड में विद्यार्थियों की संख्या घटी तथा अगले सौ वर्षों में कैंब्रिज में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी, और अब तक उपेक्षित कैंब्रिज में कालेज स्थापित करने की ओर राज्य का ध्यान आकर्षित हुआ। उस शताब्दी के अंत तक अधिकांश बिशप कैंब्रिज से

---

[1] विलिस एंड क्लार्क, १, पृ० ४६४।

निकले विद्यार्थी थे। किन्तु यद्यपि यह शिशु विश्वविद्यालय संख्या की दृष्टि से तथा वैभव और शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में बहुत प्रगति कर रहा था, किन्तु न तो कैंब्रिज ने और न आक्सफर्ड ने ही विद्वत्ता तथा चिन्तन के क्षेत्र में ट्यूडर राजाओं के काल तक कोई महत्वपूर्ण योगदान किया। चिन्तन तथा विद्वत्ता अनिवार्यतः धर्म द्वारा प्रतिष्ठित रूढ़ियों के अनुसारी थे और धर्म अब उस तरह से सृजनात्मक नहीं रहा था जैसे महान् मध्ययुगीन विद्वान थे।

किन्तु इस रूढ़िवादी युग में कालेज-व्यवस्था ने अत्यन्त गहरी जड़ें पकड़ ली थीं और इस चीज़ ने मध्ययुगीन विद्यार्थियों की उपेक्षित तथा अनुशासन-विहीन स्थिति का अन्त कर दिया था। प्रायः सब आन्दोलनों में सफलता के पहले दौर में बहुत आगे बढ़ जाने की प्रवृत्ति रहती है; इस तरह से पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दियों में अवर-स्नातकों में अनुशासन बहुत अधिक कठोर हो गया। कम से कम ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि ऐसा रहा होगा यदि यॉर्किस्ट तथा ट्युडर-कालों के कालेजों तथा विश्वविद्यालयों के नियम व्यवहार में वास्तव में ही आते होंगे, क्योंकि उस समय अवर-स्नातकों के साथ स्कूल के लड़कों जैसा ही व्यवहार किया जाता था। एक दण्ड डंडे से पीटना भी था, जो कि उससे पूर्व विश्वविद्यालयों में कभी नहीं होता था। यह बात इस कारण से और भी ध्यान देने योग्य है क्योंकि उन दिनों अवर-स्नातकों की औसत आयु पहले की अपेक्षा और भी अधिक थी: जब इरासमस आक्सफर्ड तथा कैंब्रिज में था तब सत्रह वर्ष की आयु के विद्यार्थियों की संख्या का अनुपात चौदह वर्ष की आयु के विद्यार्थियों से वाइक्लिफ के युग की अपेक्षा अधिक था। किन्तु यह जानना सदैव कठिन होता है कि नियम किस सीमा तक व्यवहार में लाये जाते थे। स्वभावतः ऐसी बातें परिस्थिति और व्यक्ति के अनुसार बदलती रहती हैं। जो भी हो, वह समय हमेशा के लिये समाप्त हो गया था जबकि शैक्षणिक अनुशासन नाम की कोई चीज़ ही नहीं थी। पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक आक्सफर्ड तथा कैंब्रिज का कालेजीय ढांचा सदा के लिये रूप ले चुका था।

इंगलैंड में जब स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही थी उस समय उन्हें क्या पढ़ाया जा रहा था? उस समय धार्मिक ग्रन्थों की बहुत मांग थी, किन्तु बाइबल से बहुत कम परिचय था। इसका आंग्ल अनुवाद बिना लाइसेंस के रखने को चर्च के अधिकारी धर्म-द्रोह का एक असंदिग्ध प्रमाण समझते थे। लोल्लार्ड सम्प्रदाय (वाइक्लिफ का मत) की शिक्षाएं, जिनके पीछे अब नेतृत्व तथा विद्वत्ता का बल नहीं रहा था, निर्धनों तक सीमित रह गयी थीं। यह मत अब अवैध घोषित कर दिया गया था, किन्तु यह मरा नहीं था बल्कि परिस्थिति बदलते ही दोबारा अंकुरित होने के लिये तैयार था। पन्द्रहवीं शताब्दी में प्रतिष्ठित धर्म के विरोधी बीसियों की संख्या में जला दिये गये थे, किन्तु अनेकों ने सूली से बचने के लिये मत-परिवर्तन भी कर लिया था, अनेक ध्यान में ही नहीं आए, कम से कम कैद से तो बच ही गये।

धार्मिक पुस्तकों, स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले प्राचीन लैटिन ग्रन्थों तथा वास्तविक विद्वानों के पढ़ने योग्य बृहद् ग्रन्थों के अतिरिक्त सामान्य नागरिक तथा उच्च वर्ग के लोग इंगलैंड तथा फ्रांस के गद्य-पद्यात्मक इतिवृत्त, गद्य में लिखी अनन्त प्रेम-कथाएं तथा ट्रॉय, राजा आर्थर के बारे में गाथाएं तथा असंख्य अन्य परम्परागत कथाएं पढ़ते थे।[१] चासर, लैंगलैंड तथा मैंडेविले की यात्राओं की पुस्तकों की प्रतिलिपियों का निरन्तर निर्माण (जब मगरमच्छ मनुष्य को खाता है तो कैसे रोता है) सिद्ध करता है कि ये प्राचीन-लेखक उस समय अत्यन्त जन-प्रिय थे। इंगलिश पद्य में राजनैतिक व्यंग्य हस्तलिखित रूप में बहुत प्रचारित होते थे। इसी प्रकार की १४३६ में लिखी गयी इंगलिश नीति की निन्दा (लिबल ऑफ़ इंगलिश पालिसी) पुस्तक थी जिसमें कहा गया था कि राज्य का प्रथम कर्त्तव्य राष्ट्रीय सागर में एक शक्तिशाली जहाजी बेड़ा रखना है, और यह उतना ही आवश्यक सैनिक सुरक्षा की दृष्टि से है जितना व्यापारिक दृष्टि से।

व्यक्तिगत पुस्तकालयों के अतिरिक्त सार्वजनिक पुस्तकालयों की भी स्थापना हो रही थी, जैसे आक्सफर्ड में ड्यूक हम्फ्रे का पुस्तकालय, कैम्ब्रिज में विश्वविद्यालय पुस्तकालय, लण्डन में ग्रे फ्रेअर्स पर ह्विटिंग्टन का पुस्तकालय तथा गिल्ड्हाल में पुस्तकालय। मनोरंजनात्मक साहित्य में बैले (गाथा काव्य) के अतिरिक्त और कुछ विशेष नहीं रहा था और वे अधिकांशतः मौखिक रूप से गाये जाते थे, बजाय पढ़े या लिखे जाने के। कहानियों के लिये मानव की शाश्वत क्षुधा मौखिक शब्द के द्वारा अधिक सन्तुष्ट हो रही थी। काल की लंबी घड़ियां बिताने के लिये स्त्री-पुरुष कहानी सुनाने की सामाजिक कला का उपयोग करते थे तथा संगीत से मन बहलाते थे।

कैक्सटन ने जब इंगलैंड में छापने की मशीन स्थापित की थी उस समय समाज तथा शिक्षा की ऐसी अवस्था थी।

विलियम कैक्सटन (१४२२-१४९१) नवीन मध्यम वर्ग तथा उसकी समुन्नत शिक्षा की उपज था। वह एक सुपरिचित आधुनिक प्रकार का आरंभिक तथा उत्कृष्ट

---

[१] महारानी एलिजाबेथ के स्कूल मास्टर रोजर एस्कम ने लिखा था : "हमारे पूर्वजों के काल में जबकि पोपतंत्र इंगलैंड को स्थिर पानी के समान आवृत्त और निमग्न किये हुए था, हमारी भाषा में वीरता के किस्सों के सिवाय, जो कि कालयापन के लिये पढ़े जाते थे, कोई साहित्य नहीं पढ़ा जाता था। उदाहरण के लिये, इनमें से एक 'आर्थर की मृत्यु' (ला मार्ट डि आर्थर) था जिसका रस केवल दो बातों में था, खुले मानव-वध में तथा स्थूल अश्लीलता में······तो भी मैं यह जानता हूं कि कब ईश्वर की बाइबल को दरबार से निष्कासित किया गया और "राजा आर्थर की मृत्यु" को प्रवेश दिया गया।

उदाहरण था जिस प्रकार ने कि संसार के लिये इतना महत्वपूर्ण कार्य किया था। यह प्रकार था एक व्यक्तिवादी अंग्रेज़ी मानव का, जो व्यापार की योग्यता तथा प्रशिक्षित उत्साह के साथ अपनी निजी 'हॉबी' में संलग्न रहता था। लंडन मर्सर्ज़ कम्पनी के एक सफल व्यापारी के रूप में उसने लो कंट्रीज (निम्न स्थलीय प्रदेशों) में अपने तीस वर्षों के निवास-काल में इतना पैसा एकत्र कर लिया था कि वह पीछे के वर्ष अध्ययन में बिता सके। उसने पहले फ्रेंच की पुस्तकों का अनुवाद इंगलिश में करना आरंभ किया। इसमें जबकि अभी वह व्यस्त ही था, वह मुद्रण-कला के नये रहस्य की ओर आकर्पित हो गया और इसके बारे में उसने ब्रजेस तथा कोलेज में अध्ययन किया। १४७४-७५ में उसने विदेश में अपने दो अनुवाद प्रकाशित किये (इनमें से एक मध्यकालीन रोमांस था और दूसरा "शतरंज के खेल और उसके नियम" था) ये इंगलिश भापा में प्रकाशित होने वाली पहली किताबें थीं।

पीछे १४७७ में वह अपना प्रेस इंगलैंड में ले आया, इसे वैस्टमिंस्टर में एब्बे के पास स्थापित किया, और वहां अपने जीवन के शेष १४ वर्षों में राजा तथा सामन्तों के संरक्षण में लगभग एक सौ पुस्तकें मुद्रित कीं, और इनमें से अधिकांश इंगलिश भापा में थीं। इनमें चासर, गोवर तथा लिडगेट की पुस्तकें तथा मेलोरी की "आर्थर की मृत्यु" भी सम्मिलित थीं और सिसेरो की पुस्तकों तथा ईसप की कहानियों के अनुवाद भी थे। उसका उद्योग विलक्षण था। प्रेस पर कठोर तथा निरन्तर परिश्रम करने के बावजूद उसने बीस ग्रन्थों का अनुवाद किया। उसमें वास्तव में "अपनी इंगलिश भापा में" अपने देशवासियों के लिये उत्कृष्ट तथा उपयोगी ग्रंथ प्रस्तुत करने के प्रति एक अपूर्व उत्साह था। अनुवादक, मुद्रक तथा प्रकाशक के रूप में उसके अध्यवसाय तथा सफलता ने साहित्यिक अंग्रेज़ी की आधारशिला रखी तथा अनुगामी शताब्दी में अंग्रेज़ी के विकास तथा इसकी गौरव-वृद्धि में बहुत महत्वपूर्ण योगदान किया।

उसका इस मुद्रणकला का उपयोग, जो कि उसने इंगलैंड के जीवन के एक अंग के रूप में स्थापित की थी, एक साथ आदर्श और व्यावहारिक दोनों था, किन्तु यह विवादास्पद तनिक भी नहीं था। तब भी इसके बाद से प्रैस सब राजनैतिक तथा धार्मिक विवादों के लिये साधनभूत हुई। विचारों तथा ज्ञान के विस्तार का प्रवेग अत्यधिक तीव्र हो गया। किन्तु जिस वर्ष कैक्स्टन की मृत्यु हुई, प्रेस के ये संभावी परिणाम अभी देखे नहीं गये थे।

दूसरी ओर, कैक्स्टन शिक्षितों के लिये अंग्रेज़ी भाषा का रूप निर्धारण करने में अपने कार्य के महत्व को खूब अच्छी तरह से समझता था। इसलिये वह बोली के सुघड़तम रूप के संबंध में बहुत परामर्श लेता था तथा विचार करता था। इन कठिनाइयों का उसने इनीडोस के प्राक्कथन में वर्णन किया है जोकि वर्जिल के एनीड के फ्रेंच भाषा में रूपान्तर का अनुवाद था।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि कैक्स्टन के पास चुनाव का अवसर था। उसके पास सहायता के लिये कोई शब्दकोश नहीं थे। जब वह अपने पुस्तक संकुल अध्ययन-कक्ष में बैठता था तब उसके लिये एक नियमित अंग्रेज़ी भाषा नहीं थी जिसकी सीमाओं का तो वह विस्तार कर सकता किन्तु जिसकी योजना को स्वीकार करना उसके लिये अनिवार्य होता। इंगलैंड में बोलियों की संख्या उतनी ही अधिक थी जितनी मंडलों की थी, और वे भी निरंतर बदलती रहती थीं। उत्तर के रहने वाले, पश्चिम के ग्रामीण, यहांतक कि कैंट की गृहणी भी लंडन के व्यापारी की बोली नहीं समझ सकती थी और न ही परस्पर संवाद कर सकती थी। यद्यपि अन्ततः लंडन की तथा दरबार की बोली की विजय अवश्यंभावी थी किन्तु इस विजय को निश्चित तथा त्वरित पहले तो चॉसर और उसके पन्द्रहवीं शताब्दी के अनुगामियों ने किया जिन्होंने कि पश्चिमी मध्य प्रदेश के पियर्स कृषकों की बोली को शिक्षितों में से निकाल बाहर किया, उसके बाद कैक्स्टन की प्रेस ने किया, और अन्त में तथा सर्वाधिक अंग्रेज़ी की बाइबल तथा प्रार्थना-पुस्तक ने किया, जोकि ट्यूडर के काल में प्रेस की कृपा से उन सबके पास पहुंच गयी जो पढ़े लिखे थे, और कुछ अवस्थाओं में उन के पास भी जो नहीं पढ़ सकते थे, केवल लिख ही सकते थे। इस प्रकार से, पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दियों में इंगलैंड के शिक्षितों को 'साहित्यिक अंग्रेज़ी' से मिलती-जुलती एक सामान्य बोली मिली, और जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार हुआ यह बोली सारे देश की भाषा हो गयी।

लंकाशायर तथा यॉर्क के राजाओं के 'अव्यवस्थित राज्यकाल में लंडन शान्त रहा तथा उसका वैभव निरन्तर बढ़ा : उत्सवों के अवसर पर उसके दंडाधिकारियों की सज्जा तथा नगर में से और नदी के किनारे पर उनकी परेड की प्रभावशालित निरन्तर अधिकाधिक बढ़ती गयी; उसका नागरिक, धार्मिक तथा गृह्य वास्तुशिल्प और भी अधिक सम्पन्न तथा सुन्दर हो गये। इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि शताब्दी के अन्तिम वर्षों में स्कॉट कवि डुंबर ने प्रशंसा पूर्ण हर्ष से कहा था "हे लन्डन, तुम सब नगरों में रत्न हो"।[1]

---

[1] हेनरी सप्तम् के राज्यकाल में एक इटली के यात्री ने लिखा था कि "केवल एक ही बाजार में, जिसका नाम स्ट्राडा है और जो सन्त पॉल चर्च की ओर जाता है, सुनारों की बावन दुकानें हैं जोकि सोने-चांदी के छोटे-बड़े अनेक प्रकार के बर्तनों से इतनी भरी पड़ी हैं कि मिलान, रोम, विनाइस तथा फ्लोरेंस के बाज़ारों की सब दुकानों में इतना वैभव नहीं होगा।" (इटालियन रिलेशन ऑफ़ इंगलैंड, काम्डन सोसाइटी, १८४७, पृ० ४२)। 'स्ट्राडा' सम्भवतः अब के स्ट्रैंड का नाम नहीं था बल्कि चीपसाइड का नाम था। द्रष्टव्य : कुमारी डेविस का "हिस्ट्री" के अप्रैल, १९३२ के अंक में लेख।

इस काल में लन्डन की सरकार शिल्पी प्रजातंत्र द्वारा शासित नहीं हो रही थी बल्कि बृहत् व्यापार-कम्पनियों के सदस्यों द्वारा शासित हो रही थी। पन्द्रहवीं शताब्दी के लन्डन के सब नगराध्यक्ष तथा नगरपिता पंसारियों, वस्त्र-व्यापारियों और कुछ घट कर मछली व्यापारियों तथा स्वर्णकारों में से ही थे। इन बृहत् कम्पनियों के सदस्य, इनके नामों से चाहे जैसा भी अनुमान होता हो, वस्त्र-उद्योग तथा पंसारी के व्यापार तक ही सीमित नहीं थे बल्कि उनके मुख्य लाभ-स्रोत सब प्रकार के समुद्रपारीय व्यापार थे, मुख्यतः अनाज, ऊन तथा वस्त्र। यूरोप के मुख्य व्यापार केन्द्रों, जैसे ब्रजेस आदि में, उनके घर तथा एजेंट रखे होते थे, जैसे विलियम कैक्स्टन था। न केवल लन्डन में बल्कि अन्य बन्दरगाहों में भी इंगलैंड के अधिकांश पोतों पर उनका स्वामित्व था, और वे विदेशी पोतों को भी किराये पर ले लेते थे। किन्तु इटली के तथा उत्तरी जर्मनी के व्यापारी अभी भी अपने ही जहाज़ों में अपना वस्तुजात लन्डन में ला रहे थे। पोत-घाट, जिनमें अनेक देशों के पोतों की भीड़ लगी रहती थी, ब्रिज से नदी तक विस्तृत थे, उनके दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे मकान थे तथा राजमहल और शस्त्रागार देशद्रोहियों के नित्य नवीन आने वाले सिरों से विभूषित होते थे।

व्यापारी अभिजात वर्ग ने, जोकि राजधानी पर राज्य कर रहा था, राजगद्दी के लिये स्पर्धी परिवारों के संघर्ष से अपने आपको बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक पृथक् रखा (लन्डन ने केवल स्टूअर्ट के काल में ही राजाओं को बनाने-हटाने में भाग लिया)। किन्तु उन्होंने लाल तथा श्वेत रोसेस की सेनाओं को लन्डन की स्वाधीनता तथा व्यापार का आदर करने के लिये बाध्य कर दिया और प्रत्येक अनुगामी सरकार ने, चाहे वह हेनरी षष्ठ की हो या एड्वर्ड चतुर्थ अथवा रिचर्ड तृतीय अथवा हेनरी सप्तम् की, सभी राष्ट्रीय कोश की समृद्धि के लिये अपने व्यापारियों के सद्भाव को आवश्यक समझा। एड्वर्ड चतुर्थ जब कभी व्यक्तिगत अथवा गार्हस्थिक कार्यों से लन्डन जाता था तब उनकी मित्रता अर्जित करने के लिये तथा उन्हें प्रसन्न करने के लिये ऐसे कार्य तक करता था जो राजा के गौरव के योग्य नहीं कहे जा सकते। व्यापारी लोग सरकार को अब भी पैसा उधार दे रहे थे। राजकीय जागीर तथा लार्ड हेस्टिंग्स और एस्सेक्स के अर्ल के समान शक्ति-सम्पन्न राजनीतिज्ञों की जागीरों के बाहर की ऊन लन्डन के व्यापारियों के माध्यम से विदेशों में ही बेची जाती थी। स्टोनर्स के समान ग्रामीण उच्च वर्ग के लोग, जोकि पश्चिम प्रान्त के भेड़ों के गल्लों के स्वामी थे, अपने आपको ऊन के व्यापारी कहलाने में गौरव का अनुभव करते थे। उस प्राचीन काल में भी भूमि तथा पूंजी के स्वार्थों में भेद था। व्यापार में अर्जित सम्पत्ति भूमि की ओर प्रवाहित हो रही थी तथा उसे उर्वरा कर रही थी। जमींदारों के छोटे बच्चे लन्डन के शिक्षकों के पास शिष्य होकर नगर-प्रमुखों के रूप में आगे आए।

रोसेज़ के युद्ध-काल में केवल लन्डन ही नहीं बल्कि अन्य नगर भी तटस्थ रह कर तथा राजा और अन्य राष्ट्रीय और स्थानीय राजनीतिज्ञों तथा न्यायाधीशों को उपहार आदि देकर शान्ति से रह रहे थे। कैम्ब्रिज के नगराध्यक्ष ने १४८४-८५ में इस प्रकार से विवरण दिया है :

महाराजा को मछलियों के रूप में ६.५ पौंड भेंट किया, महाराजा के प्रमुख न्यायाधीश को मदिरा, मसाला, मछली तथा रोटी के रूप में ५ शिलिंग भेंट किया, यॉर्क के बिशप को ८ शिलिंग ८ पेंस भेंट दी, नार्फोक के ड्यूक को ६ शिलिंग ८ पेंस भेंट दी, विलियम कॉयले को उसकी मैत्री प्राप्त करने के लिये ६ शिलिंग ८ पेंस दिया, नार्फोक के ड्यूक को मदिरा के रूप में २ शिलिंग ८ पेंस दिया।

कैम्ब्रिज नगर भी पार्लियामेंट में अपने प्रतिनिधियों को सत्र के दिनों में प्रतिदिन १२ पेंस देता था और कुल मिलाकर ३३ शिलिंग देता था, यद्यपि दो में से एक ही प्रतिनिधि अपना कार्य-संपादन करता था। नये नगराध्यक्ष को अपने भव्य वस्त्र खरीदने के लिये प्रतिवर्ष २० शिलिंग मिलते थे, और "वैतालिकों" तथा उनकी पोशाकों के लिये भी बहुत पैसा दिया जाता था। ये पैसे आज के पैसों के क्रय मूल्य की दृष्टि से बहुत बड़ी रकम थी। एक ग्राम-पुरोहित, जिसे वर्ष भर में सब साधनों से १० पौंड तक आय हो जाती थी, उसके लिये समझा जाता था कि उसे अच्छी आय हो रही है।

चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के बाद से लेकर कपड़े का उत्पादन तथा निर्यात कच्ची ऊन के निर्यात को हानि पहुँचा कर बढ़ रहे थे। दूसरे शब्दों में, साहासी व्यापारी लोग ऊन के उत्पादकों के ह्रास पर पोषित और संवर्द्धित हो रहे थे। वस्त्र-व्यापार कोल्चेस्टर जैसे अन्तर्देशीय नगरों को, जहाँकि वस्त्र एकत्र होता था, तथा बन्दरगाहों को, विशेषतः लन्डन को, जहाँ से यह निर्यातित होता था, समृद्ध कर दिया था। किन्तु कपड़े का उत्पादन मुख्यतः ग्राम-क्षेत्रों में ही हो रहा था, और बहुत से गाँवों में जीवन अब अधिक समृद्ध और वैविध्यपूर्ण हो गया था, और यह अब अंशतः औद्योगिक भी था। खुले बाजार के लिये कुशल वस्त्र-निर्माता तेरहवीं शताब्दी से ही नगरों को छोड़कर ग्रामों में जा रहे थे। वह दिन अभी भी बहुत दूर था जबकि १८ वीं तथा १९ वीं शताब्दियों के आविष्कारों ने इस गति-दिशा को उलट दिया और इंगलैंड के कारीगरों को वापिस नगरों की ओर उन्मुख कर दिया। १५वीं शताब्दी में लण्डन के अतिरिक्त इंगलैंड के अधिकांश नगरों में या तो कोई गति नहीं थी अथवा वे वैभव तथा जनसंख्या की दृष्टि से ह्रास की ओर जा रहे थे।[1]

---

[1] द्रष्टव्य—प्रोफेसर पास्टन (हिस्ट्री रिव्यू, मई १९३९, पृ० १६४-६५)। उसके अनुसार वस्त्र-उद्योग में महत् वृद्धि चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हो चुकी थी

यह स्वाभाविक ही था कि नगर के शिल्पी संघ वस्त्र-उद्योग के ग्राम की ओर प्रवास को नापसंद करते, और उन्होंने नगरों के व्यापारियों पर ग्रामीण वस्त्र-उत्पादकों से व्यापार करने पर रोक लगा कर उत्पादन में स्पर्धा को रोकने का प्रयत्न किया। किन्तु ये निरोधक प्रयत्न अव्यवस्थित और असफल ही रहे। क्योंकि इस प्रश्न पर नगर के व्यापारियों के स्वार्थ नगर के शिल्पियों से उलटे थे और नगरपालिका के नीतिनिर्धारण में उनका प्रभाव अधिक था इसलिये बड़े व्यापारियों ने ग्राम और नगर दोनों ही क्षेत्रों में पूँजीवादी प्रणाली के अनुसार निरन्तर बढ़ते दर पर वस्त्र उद्योग जारी रखा। उन्होंने उन ग्राम-शिल्पियों को, जिनके पास अपने करघे थे, कच्चा माल मुहैया किया। उसके पश्चात् वे बुना वस्त्र उनसे ले लेते, फिर अन्य शिल्पियों को अन्तिस रूप देने के लिये दे देते और अन्त में बाजार भेज देते।

सम्पूर्ण एस्सेक्स प्रदेश में ऐसे गाँव फैले हुए थे जो वस्त्र-उत्पादन के लिये विख्यात थे, जैसे:—गोग्गेशाल और ब्रैंट्री, बॉकिंग तथा हाल्स्टैड, शैल्फोर्ड तथा डैढम, और कोल्चैस्टर। ये गांव उद्योगों के कारण समृद्ध हो रहे थे और शायद ही कोई घर हो जो चरखे से गुंजरित नहीं हो, और शायद ही कोई बाजार हो जिसमें आप बुनने वालों की दुकाने नहीं गिनते हों, और शायद ही कोई रसोई हो जिसमें खाली समय कार्य के लिये दीवार के साथ करघा लगा नहीं खड़ा हो। शायद ही कोई सप्ताह बीतता होगा जब सामान लादने वाले घोड़ों की टापें बाजारों में नहीं सुनाई पड़ती थीं जोकि गाँव में कच्ची ऊन लाते थे और तैयार कपड़े आस-पास के गावों के अथवा कोल्चैस्टर के वस्त्र व्यापारियों के लिये ले जाते थे। सम्पूर्ण पन्द्रहवीं शताब्दी में गोग्गेशाल एक महत्वपूर्ण केन्द्र था जोकि नॉर्विच, कोल्चैस्टर तथा सडबरी के बृहत् केन्द्रों के बाद सबसे बड़ा केन्द्र कहा जा सकता है। आज तक इसकी दो सरायों के नाम वूलपैक (जहाँ ऊन बांधी जाती है) तथा फ्लीस (उनी रेशे) हैं। (ईलिन पावर, मैडीवल पीपल, पृ० १४९)।

गोग्गेशाल में थोमस पेकांक नाम का एक विख्यात वस्त्र-व्यापारी रहता है, वहाँ उसने अपना एक सुन्दर घर बनाया जिसके दरवाजों आदि में उसने उत्कृष्ट पच्चीकारी का काम कराया था। अब यह घर राष्ट्रीय ट्रस्ट के अधिकार में है। ग्राम-बाजारों

और ट्यूडर के काल में १५वीं शताब्दी के अन्तिम वीस वर्षों में यह पुनः प्रारम्भ हुई थी। १५वीं शताब्दी के अधिकांश भाग में कपड़े का कुल उत्पादन लगभग स्थिर रहा—यह ईस्ट एंग्लिया, यार्कशायर तथा पश्चिम के गाँवों और नगरों में बढ़ रहा था किन्तु पुराने वस्त्र-उत्पादक नगरों में घट रहा था। किन्तु कच्ची ऊन के उत्पादकों का निर्यात-व्यापार और भी तीव्र गति से गिर रहा था, यहाँ तक कि पन्द्रहवीं शताब्दी के उच्चतम स्तर पर भी, वस्त्र-निर्यात इतना नहीं था कि उसे ऊन के उत्पादन में ह्रास का एकमात्र कारण कहा जा सकता।

में ऐसे सौधों का होना तथा चर्चों में पीतल पर पच्चीकारी के काम नये ग्रामीण वर्ग के उद्‌भव के सूचक थे, जो कि उतना ही सम्पन्न था जितने जागीरदार लोग, जिनके साथ कि उनके विवाह-सम्बन्ध अनतिदूर भविष्य में स्थापित होने वाले थे और जिसके विशिष्ट क्षेत्र में वे उनकी भूमि आदि खरीद कर शीघ्र ही प्रवेश करने वाले थे।

यही हालत पश्चिम में भी थी; दो शताब्दियों के बाद डिफो ने लिखा था कि "पश्चिम मंडल में अनेक ऐसे परिवार, जो अब कुलीन जमींदार समझे जाते हैं, वे वास्तव में श्रेष्ठ वस्त्र-उत्पादकों में से ही उठे थे। पन्द्रहवीं शताब्दी में कोट्सवोल्ड इंगलैंड में, और परिणामतः यूरोप में भी, सर्वोत्कृष्ट समझा जाता था। उस सुन्दर प्रदेश की समृद्धि इस पर ही प्रतिष्ठित थी। इसकी गवाही उस युग के पत्थरों के बने भव्य क्षेत्र-गृह तथा घाटियों में बहते झरनों के किनारों पर बनी पनचक्कियाँ अब देती हैं।

इस युग के एक अंग्रेज़ी व्यापारी का चरित्र थामस बैट्सन के जीवन तथा पत्रों द्वारा बहुत सुचारू रूप से प्रकाश में आता है (ईलिन पावर, मेडीवल पीपल, अ. ५)। वह एक स्टैपल ऊन का व्यापारी था और अपने व्यापार के सिलसिले में केलैस में रहता था। ये व्यापार-सम्बन्ध प्रायः ही वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा पक्के किये जाते थे। बैट्सन ने कैथेराइन रइचे से, जोकि स्टोनर-कुल का सम्बन्धी और संरक्षक था, विवाह कर लिया था। उसने वास्तव में उससे तब तक विवाह नहीं किया जब तक कि उसकी आयु पन्द्रह वर्ष की नहीं हुई, और विवाह बहुत सफल रहा, किन्तु उनकी सगाई कुछ वर्ष पूर्व हो गयी थी, और हमें थॉमस का एक पत्र भी मिलता है जो उसने अपनी कैथेराइन को, जिसकी आयु उस समय बारह या तेरह वर्ष की थी, लिखा था; उसने यह पत्र कैलैस के अपने व्यापार प्रतिष्ठान से १४७४ में उसे लिखा था और वह उस समय आक्सफर्ड के अन्तर्गत स्टोनर में रह रही थी। यदि किसी की सगाइ बारह वर्ष की लड़की से हो ही जाय तो उसे पत्र लिखने का यह अच्छा ढंग है। वह बच्ची को प्रेरित करते हुए लिखता है :

"भोजन खूब अच्छा खाया करो जिससे कि तुम जल्दी बड़ी हो जाओ और स्त्री बनो, और मेरे घोड़े से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना किया करो कि वह तुम्हें अपनी आयु में से चार वर्ष दे दे जिससे तुम जल्दी बड़ी हो सको। और उसे कहना कि मैं घर आने पर उसे अपने हिस्से के चार वर्ष दे दूंगा और साथ बढ़िया खाना दूंगा। उसे कहना कि यह प्रार्थना मैंने उसे की है—और सर्वशक्तिमान ईश्वर भी तुम्हें एक अच्छी स्त्री बनाए और तुम्हें सदैव अनेक सुखद वर्ष निरन्तर भेजता रहे तथा तुम्हें सुख-स्वास्थ्यपूर्ण दीर्घायु प्रदान करे। यह पत्र मैं तुम्हें कैलैस से एक जून को लिख रहा हूं जबकि प्रत्येक व्यक्ति भोजन के लिये गया हुआ है तथा घड़ी दोपहर होने की सूचना दे रही है

तथा घर के सब लोग मुझे खाने के लिये पुकार रहे हैं "खाने के लिये तुरन्त चले आओ।" मैंने उन्हें क्या उत्तर दिया, यह तुम अच्छी तरह से जानती ही हो।"

घड़ी द्वारा यह 'दोपहर होने' की सूचना दिये साढ़े चार सौ वर्ष से अधिक समय बीत चुका है किन्तु थामस बैट्सन के एक इंगलिश व्यक्ति होने से, हम आज भी अपनी कल्पनाओं में यह देख सकते हैं कि किस प्रकार वह अपने लिखने के मेज़ से मुस्कराते हुए पत्र की तह लगाते-लगाते उठा होगा।[१]

खेत तथा दुकान या फैक्ट्री आदि पर कार्य-घंटे आज की तुलना में बहुत अधिक थे। किन्तु लोग रविवारों को तथा महान् सन्तों के स्मारक दिनों की छुट्टियों में आराम करते थे। परम्परा इस सुन्दर नियम का पालन करने को बाध्य करती थी तथा चर्च के न्यायालय इन दिनों कार्य करने पर जुर्माना करते थे अथवा कोई अन्य दंड लगाते थे। किन्तु पुराने इंगलैंड में, जो कि सब युगों में "प्रफुल्ल इंगलैंड" तथा "पीड़ित इंगलैंड" दोनों ही रहा है, बहुतसा अन्य कार्य चलता रहता था। शिकार करना तथा बाज उड़ाना, जाल बिछाना तथा मछली पकड़ना आदि मनोरंजन ग्राम्य-जीवन के वातावरण को एक सुखद पृष्ठभूमि प्रदान करते थे। सामन्त तथा जमींदार लोग ये मनोरंजन तड़क-भड़क से करते थे और सामान्य लोग यह सब सीधे-सादे शान्त ढंग से करते थे। अनेक प्रकार के खेलों और मनोरंजनों पर बहुत पैसा खर्च किया जाता था तथा निशाना लगाना, मल्ल युद्ध, दौड़ों तथा गोला आदि फेंकने पर बड़ी शर्तें लगती थीं।

इस काल में ही ताश के खेल का भी आविष्कार हुआ; इसका रूप तब भी बहुत कुछ वैसा ही था जैसा आज है। हमारे कार्डों पर राजा-रानी आदि की पोशाक अब भी उसी युग के अनुसार है। ताश शतरंज के समान ही सामन्तों और उनकी स्त्रियों की उबाने वाली संध्याओं को गुजारने की साधन थी और जुआरियों को मुहरे खेलने का एक विकल्प देती थी।

मनोरंजन के स्पर्धी अखाड़ों द्वारा चांदमारी करवाने को विशेष घोषणा तथा संविधि द्वारा उसी प्रकार से प्रोत्साहित किया जाता था जैसे 'हैंडवाल, फुटवाल तथा

---

[१] स्टोनर लैटर्स, भाग २, पृ० ६-८। बैट्सन जैसे ऊन के अंग्रेज़ व्यापारी पश्चिमी शायर में प्रमुख व्यापारी थे, किन्तु उन्हें इतालवी व्यापारियों की स्पर्धा का निरन्तर मुकाबला करना पड़ता था, जो इसी कार्य से कोट्सवोल्ड्स में आते थे। ऊन के व्यापारी कैलैस को जहाज़ों के द्वारा अंग्रेजी ऊन भेजते थे और वहां से वह निम्न-तलीय प्रदेशों तथा उत्तरी यूरोप को भेजी जाती थी, किन्तु ये भूमध्य के प्रदेशों में व्यापार नहीं करते थे। इटली के व्यापारियों के पास अंग्रेजी ऊन सीधे जिब्राल्टर के रास्ते इटली भेजने के लाइसेंस थे।

हाकी को' जिससे कि लम्बे धनुषों के प्रयोग में इंगलैंड की सेना की अद्वितीयता अक्षुरण रखी जा सकती। सो, यह अद्वितीयता बनी रही भीं, क्योंकि यह एक ऐसी कला थी जिसे सीख पाना कोई सहज कार्य नहीं था। हफ लैटीमर ने वर्णन किया है कि किस प्रकार से उसके कृपक पिता ने हेनरी सप्तम् के राज्य में "मुझे धनुष की डोरी खींचना, तथा धनुष में अपना शरीर न्यस्त करना सिखाया था। मेरे पास मेरे खरीदे हुए धनुष थे जो मेरी आयु के अनुसार आकार के थे। जैसे-जैसे मैं आयु में बढ़ा वैसे-वैसे मेरे धनुषों का आकार भी बढ़ता गया। क्योंकि आरम्भ ही से ठीक प्रशिक्षण के बिना कोई कुशल धन्धा नहीं हो सकता।" (द्रष्टव्य, टिप्पणी, पृ० १८)।

धनुर्कौशल की प्रतियोगिता में नेता लोग 'रोबिन हुड' तथा 'लिटिल जोह्न' की भूमिका में सज्जित होकर ग्राम के जलूस को चांदमारी के स्थान की ओर ले जाते थे।

नगरों तथा समृद्धतर गाँवों में अनेक संघ—केवल शिल्पी संघ ही नहीं—उत्सव के संगठन में सहायता करते थे। सभी अवसरों पर, स्थानीय हों या राष्ट्रीय, पुरुष आनन्दोत्सव मनाते थे। इनमें से जो कुछ थोड़े से बचे हैं उनमें से लार्ड मेयर का प्रदर्शन तथा राजा द्वारा संसद (पार्लियामेंट) का उद्घाटन भी हैं। उन दिनों तड़क-भड़क पर बहुत पैसा व्यय होता था और इससे बचा पैसा ही व्यापार आदि में लग पाता था। धनी लोग सबसे अधिक महंगे और भव्य वस्त्र पहनते थे तथा अपनी समृद्धि का प्रदर्शन अपने कंधों के दोनों ओर लगी हुई प्लेटों से करते थे। व्यावसायिक संघ, जिनसे पुजारी लोग प्राय: ही बहिष्कृत रहते थे, लौकिकों की बुद्धिमत्ता तथा उपक्रम को प्रदर्शित करते हैं। किन्तु वे भी, जीवन के अन्य सब पक्षों के समान, धार्मिक विचारों और विश्वासों से प्रभावित थे। उस युग में धर्म तथा दैनिक जीवन के बीच वैसा स्पष्ट अन्तर नहीं था जैसा आज है। संघ में किसी शुभ, उपयोगी अथवा किसी मनोरंजनात्मक उद्देश्य से भी एकत्र होने पर वे उस उत्सव को एक धार्मिक रूप देते थे तथा संघ के लिये किसी संत से आशीर्वाद मांगते थे। यद्यपि वे पादरी-विरोधी थे किन्तु तब भी वे अधार्मिक नहीं थे।

व्यवसायी संघ का कार्य पूजा-गृह, स्कूल, धर्मशाला तथा पुल बनाने और उनके संचालन के अतिरिक्त चमत्कारपूर्ण नाटक संगठित करना भी था। पन्द्रहवीं शताब्दी में ऐसे नाटक बहुत जन-प्रिय थे और ये बाइबल की कहानियों तथा अन्य पौराणिक कहानियों को सामान्य लोगों के लिये उस युग में प्रस्तुत कर रहे थे जबकि बाइबल पुस्तक रूप में बहुत थोड़े लोगों को ज्ञात थी।

'अभिनेता अपनी घोषणा इस प्रकार से करते थे, जैसे—मैं अब्राहम हूं, अथवा, मैं हेरोद हूं। उनकी वेशभूषा तत्कालीन प्रथा के अनुसार ही होती थी और यह वेशभूषा स्तर से निर्धारित होती थी। सर्वशक्तिमान ईश्वर दाढ़ी युक्त होता था और

अलंकृत मुकुट, चोगा तथा दस्ताने पहनता था। दुष्ट राजा लोग पगड़ी धारण करते थे और महौंड की शपथ खाते थे। बड़े पुजारी धर्माध्यक्ष की भूमिका में प्रस्तुत किये जाते थे और समारोहपूर्वक बैठाये जाते थे। कानून के पंडित गोल टोपी तथा रोयेंदार चोगे पहनते थे। किसान तथा मज़दूर अपने समय की वेशभूषा पहनते थे। देवता लोग सीढ़ियों के द्वारा स्वर्गारोहण और अवरोहण करते थे, तथा एक भद्दा दरवाजा, जिसको नरक का द्वार कहा जाता था, इस प्रकार से बनाया जाता था कि वह बारी-बारी से खुलता और बंद होता रहे। काले, नीले तथा लाल रंगों के पिशाचर अभिशप्त व्यक्ति को लेने आते थे, जबकि पर्दे के पीछे रखे बर्तनों और घंटियों आदि की आवाजें भीतर की अव्यवस्था की सूचना देती थीं।[1]

शैक्सपीयर से एक सौ या अधिक वर्ष पूर्व नाटक की ऐसी स्थिति थी।

इसी प्रकार से रिफार्मेशन (ईसाई धर्मान्दोलन) के दिन क्रिसमस के भक्तिगीत भी लौकिकों की धार्मिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते थे।

पादरी के संरक्षण में अधिक प्रत्यक्ष रूप से 'चर्च के मदिरालय' थे जोकि धार्मिक चाय-गृह तथा परोपकारी बाज़ार के पुरोगामी थे। स्त्री और पुरुष वस्त्र एकत्र करने के लिये अथवा किसी अन्य उपकारी कार्य के लिये चर्च के प्रांगण में अथवा स्वयं चर्च में ही सुरा बेचते और पीते थे। चर्च-मदिराओं का पन्द्रहवीं शताब्दी में बहुत प्रचलन था यद्यपि उससे पूर्व समयों में विरक्त साधुजन इसका विरोध करते थे। चर्च का केन्द्र-स्थान अधिकांश सार्वजनिक कार्यों के लिये ग्राम के हाल का काम करता था।

शिशु बिशप का समारोह, जो कि आज के युग को बड़ा विचित्र लगेगा, नीरस और रूढ़िवादी पादरियों द्वारा उतना ही समर्थित था जितना सुधारक डीन कोलेट द्वारा। सन्त निकोलास के दिन, जोकि शिशुओं का संरक्षक सन्त था, अथवा पवित्र निश्छलों के दिन, एक बच्चे को स्कूल अथवा प्रधान गिरजों में बिशप के रूप में सज्जित किया जाता था और उसे समारोह में ले जाया जाता था। तब वह उपदेश देता था जिसे न केवल उसके स्कूल के साथी ही सुनते थे बल्कि जिसे गिरजे के सम्मानित पादरियों के लिये भी सम्मानपूर्वक सुनना आवश्यक था। कभी-कभी तो इस समारोह की, जिसमें कि गिरजे का अध्यक्ष शिशु से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये घुटनों के बल झुक जाता था, साज सज्जा के व्यय को पूरा करने के लिये नियमित धर्मस्व भी लगा दिया जाता था।

---

[1] कैनन मेनार्ड स्मिथ—प्रि-रिफार्मिशन इंगलैंड (१९३८), पृ० १४६१। यह पुस्तक अवश्य पठनीय है।

अध्याय ४

ट्यूडर का इंगलैंड-प्रवेश

मध्य युग का अन्त

हेनरी सप्तम्, १४८५। हेनरी अष्टम्, १५०९। मठों का विलय, १५३६-३९। एडवर्ड षष्ठ, १५४७। मेरी १५५३। एलिजाबेथ, १५५८-१६०३।

इतिहास के अध्ययन तथा विमर्श के लिये तारीखों तथा कालों का निर्धारण आवश्यक है, क्योंकि सम्पूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं और स्थितियां समय से निर्धारित होती हैं तथा घटनाओं के अनुक्रम से निर्मित होती हैं। इसलिये तारीखें किसी भी ऐतिहासिक कथन की परीक्षा में आवश्यक होती हैं और प्रायः ही ये अबाध साधरणीकरणों के रास्ते में बाधक होती हैं तथा कल्पनाओं को हवा में उड़ने से रोकती हैं। तारीख के निर्णय के बाद और कोई सुनवाई नहीं होती।

किन्तु तारीखों के विपरीत, "युगों" को तथ्य नहीं कहा जा सकता। ये अतीतोन्मुख अवधारणाएं हैं जो हम विगत घटनाओं के सम्बन्ध में बनाते हैं। ये विमर्श को एक दृक्केन्द्र देने की दृष्टि से उपयोगी होते हैं किन्तु प्रायः ही ये ऐतिहासिक विचार को भटका देते हैं। इस प्रकार से, जबकि 'मध्ययुग' तथा 'विक्टोरियन युग' शब्दों का प्रयोग निश्चय ही उपयोगी है, इन दो अमूर्त कल्पनाओं ने कितने ही विद्वानों तथा लाखों समाचारपत्र-पाठकों को इस भ्रम में डाला है कि कुछ शताब्दियों में, जिन्हें 'मध्य युग' कहा जाता है, तथा अन्य कुछ दशाब्दियों में, जिन्हें 'विक्टोरिया युग' कहा जाता है, सभी लोग लगभग एक ही प्रकार से विचार और कार्य करते थे — जबतक कि अन्ततः विक्टोरिया का देहान्त नहीं हुआ, अथवा 'मध्य युगों का अन्त नहीं हुआ। किन्तु वास्तव में ऐसी कोई एकरूपता विद्यमान नहीं थी। विक्टोरियन युग के इंगलैंड में व्यक्ति-वैचित्र्य, वैविध्य तथा परिवर्तन की आकांक्षा की प्रवृत्तियां बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, और उस युग के अन्तिम वर्ष आरंभिक वर्षों से बहुत भिन्न थे। इसी प्रकार से, मध्ययुगीन समाज का अध्ययन भी उसी अवस्था में उपयोगी हो सकता है यदि हम उसे एक स्थिर व्यवस्था के रूप में न देख कर एक ऐसी निरन्तर परिवर्तमान प्रक्रिया के रूप में देखें जिसका आदि-अन्त तारीखों से निर्धारित नहीं किया जा सकता।

अतीत को निर्धारित "कालों" की पदावली में समझने की आदत आर्थिक तथा सामाजिक इतिहास के संदर्भ में सबसे भयानक है। क्योंकि सामान्यतः काल-विभाजन, जैसाकि उनके नामों से भी स्पष्ट है, विशुद्ध रूप से राजनैतिक दृष्टिकोण से किया गया है—'ट्यूडर का युग' 'ल्यूइस १४ का युग' आदि। किन्तु आर्थिक तथा सामाजिक जीवन राजाओं की मृत्यु की ओर अथवा नये राज्य-कुलों के पदासीन होने की ओर कोई ध्यान नहीं देता। अपने दैनिक जीवन में व्यस्त यह अन्तःसलिला के समान निरन्तर प्रवहमान रहता है। यह केवल यदाकदा ही राजनीति के दिवा-प्रकाश में प्रस्फुटित होता है, यद्यपि यह सदैव इनका परोक्ष और अन्तर्हित नियामक होता है।

और सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास 'कालों' में विभाजन सबसे अधिक कठिन कार्य है, क्योंकि इस क्षेत्र में पुरातन और नवीन सदैव परस्परातिच्छादी रहते हैं—एक ही देश में पीढ़ियों तक, कभी कभी शताब्दियों तक, साथ साथ जारी। इंगलैंड में उत्पादन की विभिन्न व्यवस्थाएं—शिल्प, गृह तथा पूंजी सम्बन्धी सभी—उत्तर मध्य युग तथा आधुनिक युग में साथ साथ जारी रहीं। इसी प्रकार से कृषि के क्षेत्र में भी, खुले क्षेत्र तथा वलयित क्षेत्र, आंग्ल-सेक्सन तथा आधुनिक विधियां, मध्य युगों से १६वीं शताब्दी तक साथ-साथ जारी रही हैं। और सामाजिक क्षेत्र में भी, सामन्तवादी तथा प्रजातांत्रिक भावनाओं ने हमारे सहिष्णु स्वभाव के द्वीप में एक साथ रह सकने की आश्चर्यजनक योग्यता प्रदर्शित की है।

अब यदि हमें 'मध्य युगों के अन्त' की तारिख, अथवा काल भी, बताने को कहा जाय तो हम निश्शंक रूप से क्या उत्तर दे सकते हैं? निश्चित रूप से '१४८५' नहीं, जबकि ट्यूडर का राज्य आरम्भ हुआ। यद्यपि अध्यापकों तथा परीक्षकों को मध्य युगों की परिसमाप्ति बताने के लिये यह एक बड़ी सुविधाजनक तारीख मालूम देती है किन्तु १४८५ के वर्ष में, जब हमारे सरल पूर्वजों ने हेनरी ट्यूडर तथा उसके सहायक वेल्सवासियों के द्वारा बोस्वर्थ में रिचर्ड तृतीय से सत्तापहरण का समाचार दुःख मिश्रित क्रोध के साथ सुना तब उन्होंने यह सोचा तक भी नहीं था कि एक नये युग का आरंभ हो रहा है। उन्होंने केवल यही समझा था कि रोसेस के अनन्त और थकाने वाले युद्धों में लंकाशायरवासी यॉर्कशायरवासियों पर एक बार पुनः बाजी मार ले गये हैं। यह सही है कि अगले बीस वर्षों की घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया था कि रोसेस के युद्ध बोस्वर्थ के क्षेत्र में लगभग समाप्त ही हो गये थे। किन्तु रोसेस के युद्धों का अन्त और मध्य युगों का अन्त एक ही बात नहीं है—फिर चाहे मध्य युगों को कैसे भी परिभाषित करें।

वेल्स-वासी हेनरी की विजय से जो परिवर्तन संभव हुए वे हेस्टिंग्स में नार्मन के विलियम की विजय के महत्व की तुलना में बहुत नगण्य थे। १४८५ के बाद आधी शताब्दी तक, जबतक कि हेनरी के पुत्र ने पोप-पद के अधिकार तथा मठीय संपत्ति को

अपने अधीन नहीं कर लिया, इंगलैंड के समाज की बहुत कुछ वैसी ही स्थिति रही जैसी स्थिति का विवरण मैंने पिछले अध्याय में दिया है। कृषि-क्षेत्र में परिवर्तन अब भी थोड़ी तीव्र गति से जारी रहे। चर्च की स्थिति भी पूर्ववत् ही रही; यद्यपि उसकी अप्रतिष्ठा तथा निन्दा पुनः एक नये वेग से बढ़ी। इसका रूप बहुत कुछ उसी प्रकार का था जैसा लैंगलैंड, चासर तथा वाइक्लिफ के दिनों में पादरी-विरोधी आन्दोलन का था। किन्तु यह स्पष्ट नहीं था कि ऐसी निन्दा आदि के व्यावहारिक परिणाम पिछले आन्दोलनों से अधिक महत्व के होंगे। हेनरी सप्तम् तथा युवक हेनरी अष्टम् दोनों में धार्मिक रूढ़िवादिता बहुत अधिक थी। वे विधर्मियों को जलाने में बराबर कर्तव्य-परायण थे; उन्होंने मध्ययुगीन प्रथा के अनुसार प्रायः ही अपनी मंत्रि-परिषद् में बिशपों को नियुक्त किया था। इस प्रथा का अन्त कार्डिनल वोल्से की महत् समृद्धि-सम्पत्ति के भव्य प्रदर्शन के साथ हुआ जिसने कि मध्ययुगीन चर्च के गर्व तथा ऐश्वर्य का अत्यन्त उत्कट प्रदर्शन किया था। पोप की शक्ति और अधिकार का वाहक होने के नाते उसने इंगलैंड के चर्च पर अपना नियंत्रण बहुत बढ़ा लिया। उसने कुलीन तथा प्रतिष्ठित लौकिकों के साथ अपने पैर के नीचे पड़ी धूल का सा व्यवहार किया और इस प्रकार उस पादरी-विरोधी क्रान्ति को प्रोत्साहित किया जो उसके पतन के साथ आई। संपत्ति के अन्य अनेक स्रोतों के अतिरिक्त उसने राजस्व भी एकत्रित किया और उन कर्तव्यों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जो यॉर्क के बड़े पादरी, डर्हम के बिशप तथा अल्बांस के मठाधीश के रूप में उसके थे। वोल्से तथा हेनरी अष्टम् के जीवनी-लेखक का यह अनुमान था कि वोल्से लगभग उतना ही धनी था जितना कि राजा (पोल्लार्ड वोल्से, पृ० ३२०-३२)। उसने अपने अवैध पुत्र के लिये चार आर्कडीकन-पद, एक डीन पद, पांच याजक-वृत्ति पद तथा दो रैक्टर पद प्राप्त कर लिये थे, केवल वह उसे डर्हम के महत् संपत्ति-सागर में प्रवेश कराने में सफल नहीं हो सका। वोल्से में गर्व, ऐश्वर्य तथा लोभ अनुपात में उदारता भी थी जिसकी अभिव्यक्ति भव्य, और पीछे अद्वितीय, स्कूलों कालेजों की स्थापना में हुई। वास्तव में वह यूरोप की सार्वभौमिक पोप परम्परा का राजकुमार था, जिस परम्परा के सम्मुख लोग शताब्दियों तक नतमस्तक होते रहे किन्तु जिसके सम्मुख इंगलैंड में लोग कभी पुनः नतमस्तक नहीं होंगे। हमारे इतिहास में इन सब में वोल्से 'मध्य युग' के महानतम और सर्वाधिक विशिष्ट व्यक्तियों में से एक था और उसकी शक्ति वोस्वर्थ फील्ड के चालीस वर्ष बाद अपने उत्कर्ष के शिखर पर पहुंच गई थी।

तूफान से पहले की शान्ति के उन पचास वर्षों का एक दूसरा पक्ष था निर्देश में शास्त्रीय विद्वत्ता तथा बाइबल-भाष्य की प्रथा का पुनरुद्भव। उनका कार्य, वोल्से के सम्पूर्ण गर्व से अधिक, भविष्य का निर्माण कर रहा था, किन्तु वर्तमान के परिवर्तन में यह कोई विशेष योगदान नहीं कर पा रहा था। उस मित्र-मंडली में से किसी को यह कल्पना नहीं थी कि प्राचीन शास्त्रों तथा धर्म-नियमों का नवीन ज्ञान उस मध्ययुगीन

चर्च का नाशक सिद्ध होगा जिसे वे सुधारना और उदार बनाना चाहते थे। इनसे भी अधिक क्रांतिकारी लक्ष्य विलियम टिंडेल के थे, क्योंकि उसने दारिद्र्य और खतरे की परिस्थितियों में बाइबल का अनुवाद शक्ति और सौंदर्य की भाषा में किया जो भविष्य में लाखों के जप-पाठ का विषय बनी, और जिसकी उन्होंने अतीत के लिये अनेक घातक प्रकार से व्याख्या की।

धर्मेतर क्षेत्र में हेनरी सप्तम् ने ग्राम-प्रदेश में पुनः व्यवस्था स्थापित की तथा भत्यों (रिटेनर्स) का दमन किया। यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन था, किन्तु यह 'मध्य युगों का अन्त' नहीं था; इसके विपरीत इसे मध्य युगीन इंगलैंड-निवासी की एक आशा की विलंबित पूर्ति ही कहना चाहिए। हेनरी सप्तम् तथा वोल्से के शासन के नीचे कम से कम एक मध्ययुगीन संस्था, अर्थात् संसद्, के अप्रयोग के कारण नष्ट हो जाने का भय वास्तव में ही उत्पन्न हो गया था; किन्तु इंगलैंड में, फ्रांस तथा स्पेन से भिन्न, मध्ययुगीन संसद् का हेनरी अष्टम् के द्वारा आधुनिक उद्देश्यों से पुनरुज्जीवन तथा पुष्टीकरण होना अवश्यंभावी था। इसी प्रकार से इंगलैंड की एक अन्य मध्ययुगीन संस्था, आंग्ल अलिखित कानून (इंगलिश कॉमन लॉ), भी ट्यूडर-काल के उपरान्त भी बच रही और आधुनिक आंग्ल जीवन तथा स्वतन्त्रता का आधार बनी।

सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में अंग्रेजी व्यापार, जोकि यद्यपि सापेक्षिक अवरोध के बाद अब बढ़ रहा था, और भी उन्हीं पुरानी मध्य युगीन सरणियों में उत्तरी यूरोप के तटों के साथ साथ होकर चल रहा था, और कपड़े की बिक्री के लिये भूमध्यसागर में एक नवीन प्रेरणा के साथ अग्रसर हो रहा था। हेनरी सप्तम् के राज्यकाल में कैबट की ब्रिस्टल से लेकर "नवोपलब्ध भूमि" (न्यू फाउंडलैंड) तक की यात्राओं के बावजूद एटलांटिक के परे के एक व्यापक दृष्टिकोण ने इंगलैंड के लोगों को प्रभावित नहीं किया था। इसका प्रभाव उन पर एलिजाबेथ के राज्याभिषेक के बाद से ही दिखाई देता है। उसकी बहन मेरी के राज्यकाल तक अंग्रेज लोग फ्रांस के लोगों से अभी भी घृणा करते थे, किन्तु स्पेनवासियों से घृणा नहीं करते थे, क्योंकि अभी नयी भूमियों की खोज तथा अधिकार के लिये कलह का अवसर उपस्थित नहीं हुआ था।

इंगलैंड में मध्य-युगों की समाप्ति कब हुई, इसके लिये किसी तारीख अथवा किसी काल विशेष को खोजने का प्रयत्न व्यर्थ है। अधिक से अधिक जो कहा जा सकता है वह यह कि तेरहवीं शताब्दी में अंग्रेजी विचार तथा समाज मध्ययुगीन थे और उन्नीसवीं शताब्दी में ये नहीं थे। किन्तु तब भी हम आज तक कुछ मध्ययुगीय संस्थाओं, जैसे राजतन्त्र, लार्ड पद, संसद में एकत्र जन-साधारण, अलिखित कानून, कानून के शासन की न्यायालयों द्वारा व्याख्या, प्रतिष्ठित चर्च में पद की वंशपरंपरागतता, पादरी-प्रदेश-प्रथा, विश्वविद्यालय, पब्लिक स्कूल तथा व्याकरण स्कूल (ग्रामर स्कूल्स) इन सबको इंगलैंड में प्राप्त कर सकते हैं। और जब तक हम सर्वाधिकारवादी

राज्यतंत्र को अपना लेते और अंग्रेजी संस्कारों को नहीं भुला देते तब तक हम अपने चिन्तन में कुछ न कुछ तो मध्य युगीय रहेंगे ही, विशेषत: अपनी इस मान्यता में कि जनता तथा नगरपालिकाओं के कुछ अधिकार और स्वतन्त्रताएं ऐसी हैं जिनका राज्य को कुछ सीमा तक ध्यान रखना ही चाहिए, चाहे संसद् की वैधानिक सर्वशक्तिमत्ता स्वीकार कर ही ली जाय। रूढ़िवाद तथा उदारतावाद, और इसी प्रकार से श्रमिक संघ भी, मूलत: मध्ययुगीय ही हैं। जिन लोगों ने सत्रहवीं शताब्दी में हमारी नागरिक स्वतन्त्रताओं की स्थापना की उन्होंने 'आधुनिकीकरण' करने वाले स्टुअर्ट राजकुल के विरुद्ध मध्ययुगीय आदर्शों का ही बखान किया। वास्तव में इतिहास का संस्थान एक अत्यन्त उलझे हुए जाले जैसा है। इसकी असीम जटिलता को किसी सरल चित्र के द्वारा नहीं समझा जा सकता।

जहां तक नगर तथा ग्राम के आर्थिक पक्ष का प्रश्न है, उसके लिये सोलहवीं शताब्दी के सामाजिक इतिहास का एक लेखक श्री टॉने ट्यूडर युग को एक विभाजक रेखा मानता है जहां से इतिहास की गति १८वीं, १९वीं शताब्दी की बड़ी जमींदारियों और बड़े फार्मों तथा बीसवीं शती के औद्योगिक पूंजीवाद की दिशा में निरन्तर तीव्र होती चली गयी। यह बात सही हो सकती है। किन्तु यह एक प्रश्न रह जाता है कि 'मध्य युगों का अन्त' ज्यॉर्ज तृतीय के राज्य में होने वाले आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनों की निष्पत्ति में देखना उतना ही उपयुक्त है जितना ट्यूडर काल के आरम्भ में। और वास्तव में, न यही कहा जा सकता है कि इन प्रवृत्तियों का आरंभ ट्यूडर के शासन-काल में ही पहले-पहल हुआ। जैसाकि इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में उल्लेख हुआ है, कुछ उद्योगों में पूंजीवादी तत्वों का समावेश बहुत पहले हो चुका था। इसी प्रकार से कमिया कृषकों का विमोचन तथा परिणाम स्वरूप मध्ययुगीन सामन्त क्षेत्र की प्रथा का अन्त बोस्वर्थ फील्ड के युद्ध से बहुत पहले हो चुका था।

तब फिर हम मध्ययुगीन समाज तथा अर्थ-व्यवस्था की समाप्ति कब से मानें—चौदहवीं शताब्दी से, सोलहवीं शताब्दी से या कि अट्ठारहवीं शताब्दी से? संभवत: इस बात का कोई विशेष महत्व नहीं है : महत्व इस बात का है कि हम वस्तुस्थिति को ठीक से समझें। संभावना यह है कि शीघ्र ही अतीत के काल-विभाजन का एक नया परिप्रेक्ष्य पुराने को स्थानान्तरित कर देगा। जीवन के यंत्रीकरण के कारण मनुष्य पिछले एक सौ वर्षों में उससे कहीं अधिक प्रभावित हुआ है जितना वह उससे पूर्व एक हजार वर्षों में हुआ था। इसलिये बहुत संभव है कि 'आधुनिक कालों' का वास्तविक आरंभ—यदि 'आधुनिक काल' में हमारे अब के काल का समावेश भी करना हो तो, पुनरुत्थान आन्दोलन तथा सुधार आन्दोलन-काल से माना जाय। और विचार तथा धर्म के क्षेत्र में भी यह संभव है कि विज्ञान तथा डार्विन का प्रभाव उतना ही महत्वपूर्ण माना जाय जितना इरास्मस तथा लूथर का प्रभाव माना जाता है।

इन सब स्थितियों को पूर्ण अभिव्यक्ति शैक्सपीयर के नाटकों में मिली। इन नाटकों में हम विचार और अनुभूति के क्षेत्र में बहुत बड़ा कदम आगे उठा हुआ देखते हैं। कम-से-कम हैमलेट नाटक एक आधुनिक नाटक है। इसी प्रकार से, हम कह सकते हैं कि इंगलैंड की चर्च-सेवा में तथा घरों में चलने वाले बाइबल के पाठ में इंगलैंडवासियों का मन तथा कल्पना मध्ययुगीनता से मुक्त हो गयी थी। किन्तु समाज, राजनीति तथा अर्थशास्त्र अब भी बीसवीं शताब्दी के बजाय चौदहवीं शताब्दी के अधिक निकट पड़ते थे। "रिचर्ड द्वितीय" तथा "हेनरी चतुर्थ" के लेखक को उस अनतिदूर के विश्व को समझाना तथा चित्रित करना सरल प्रतीत हुआ।

यदि हम जीवन के पक्षों को ध्यान में रखें तो हम शायद हेनरी अष्टम् के शासन के इतिहास-लेखक ए. एफ. पोल्लार्ड वोल्से से सहमत हो सकेंगे कि इतिहास को समझाने के लिये जितनी विचार-योजनाएँ रचित की गयी हैं उनमें सबसे अधिक अनुपयुक्त वे हैं जो मध्ययुगीन तथा आधुनिक इतिहास के बीच एक गहरी खाई देखती हैं।"[१]

किन्तु इस अल्प-स्थायी स्वर्णिम युग से पूर्व, (१५६४-१६१६) जोकि शेक्सपीयर का समकालीन था, ट्यूडर का इंगलैंड एक अन्धकार काल में से होकर गुजरा था। यह ठीक है कि वह उस प्रकार के धार्मिक युद्धों से प्रताड़ित नहीं हुआ जैसे युद्धों ने फ्रांस को प्रताड़ित किया था, क्योंकि इंगलैंड का राजतन्त्र पर्याप्त सशक्त था और धार्मिक उन्माद अपेक्षाकृत कम था। किन्तु तब भी ट्यूडर के सुधार उत्पीड़न और हिंसा के बिना भी सम्पन्न नहीं हुए थे। और हेनरी अष्टम्, एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी द्वारा धार्मिक-नीति में तीव्र गति से किये गये परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप होने वाली अव्यवस्था और उत्पात के काल में ही व्यापार तथा कृषि में आर्थिक संकट भी आया, जिसका कारण मुख्यतः मूल्य-वृद्धि था। इस वृद्धि का अंशतः कारण तो विश्व की घटनाएं थीं और अंशतः हेनरी द्वारा अनियोजित रूप से सिक्कों का ढालना इसका कारण था। आगे के अध्यायों में मैं बहुत सी अन्य बातों के अतिरिक्त इन पर भी विचार करूँगा।

मध्य युगों का अन्त जब सोलहवीं शताब्दी कहा जाता है तब मुख्यतः ध्यान पुनरुत्थान तथा सुधार आन्दोलनों पर केन्द्रित होता है।[२] विचार तथा धर्म के

---

[१] दूसरा कथित कारण 'राष्ट्रीय राजतन्त्रों के उदय' को भी कहा जाता है। किन्तु इंगलैंड में, फ्रांस तथा स्पेन के विपरीत, 'राष्ट्रीय राजतंत्र' क्रेसी तथा एगिंकोर्ट के काल से ही विद्यमान था, यद्यपि यह निस्सन्देह ठीक है कि हेनरी अष्टम् द्वारा धार्मिक अधिकार अपने हाथ में कर लेने से राष्ट्रवाद को और भी प्रोत्साहन मिला था।

[२] ए० एफ० पोल्लार्ड, वोस्ले, पृ० ८।

क्षेत्रों में यह युग उस जाति के एक सहज आनन्द का द्योतक था जो जाति मध्ययुगीय मानसिक ग्रन्थियों तथा भयों से मुक्त हुई थी और शुद्धाचारवादी ग्रन्थियों तथा भयों से ग्रस्त नहीं हुई थी; जो प्रकृति तथा ग्राम-प्रान्त के सौन्दर्य का रस-पान कर रही थी, जिसकी गोदी में उसे जीवन के सुख-भोग उपलब्ध होते थे, जो अधिक फलद कृषि तथा सामुद्रिक व्यापार की समृद्धि की दिशा में अग्रसर हो रही थी तथा जो औद्योगिक भौतिकवाद के बोझ के नीचे नहीं आयी थी।

अध्याय ५

पादरी-विरोधी क्रान्ति के काल का इंगलैंड



प्रथम अंग्रेज़ पुरातत्व शास्त्री जोह्न लेलैंड के उद्भव को भी इस बात के संकेत के रूप में देखा जा सकता है कि मध्य युग समाप्त हो रहे थे। लेलैंड ने लगभग दस वर्षों तक (१५३४-१५४३) हेनरी अष्टम् के राज्य की यात्रा की और उसमें बड़े ध्यान से प्राचीन और नवीन का अध्ययन किया।[1] उसने बहुत कुछ देखा जो नयी जन्म लेती हुई समृद्धि का द्योतक था, किन्तु उसकी रुचि अतीत को देखने में भी थी और उसे देखने के लिए उसके पास शिक्षित दृष्टि भी थी। उसने अनेक 'गौरवोन्नत स्तंभों' को 'भूमिशायी' देखा, विशेषतः तीन प्रकार के ध्वंसावशेषों को—ध्वस्त किलों और नगरों की गिरती परिखाओं को, तथा चर्चों की गिरती हुई छतों को।

वास्तव में लेलैंड ने अनेक ऐसे किले देखे जिन्हें बाद के काल की आवश्यकताओं के अनुसार घरों के रूप में उपयोग करने के लिये तोड़ा-बनाया गया था। किन्तु अन्य अनेक (जैसे राजकीय बर्खम्स्टैड, जिसमें ब्लैक राजकुमार की कचहरी थी) रोसेज के युद्ध के बाद हेनरी सप्तम् की मितव्ययिता की नीति के कारण त्याग दिये गये थे; जबकि व्यक्तिगत स्वामी प्रायः ही उत्तराधिकार में प्राप्त अपने किलों को इसलिए कोसते थे कि वे न तो पड़ौस की ऊंची दीवार पर खड़ी तोप के प्रहार को सहन करने योग्य थे और न उनमें ऐसी "आधुनिक" सुविधाएं ही थीं कि उनमें उच्चवर्ग के धनिक रह सकते। इसलिए, लेलैंड ने ऐसे अनेक सामन्तयुगीन किलों आदि का विवरण दिया है जो ध्वंसोन्मुख थे, कुछ की छतें ढह गयी थीं, उनकी दीवारें गांव वालों अथवा नवीन जमींदार-प्रासादों के लिए कुतुहल का विषय थीं, और ढहते हुए अवशेष पशु-पालकों तथा उनके इज्जड़ों को आश्रय देते थे।

मध्य युगों में प्रत्येक नगर के सम्मान तथा सुरक्षा की प्रतीक उसकी परिखा होती थी, किन्तु अब सैनिक, राजनैतिक तथा आर्थिक कारण सम्मिलित रूप से उनके ध्वंस के कारण हो रहे थे। पत्थर का बारीक पर्दा, जैसाकि न्यू कालेज आक्सफर्ड के मैदान में अब भी देखा जा सकता है, ट्यूडर काल की तोपों से सुरक्षा नहीं कर सकता था। एक सौ वर्ष बाद, चार्ल्स तथा क्रामवैल के युद्धों में लंडन, आक्सफर्ड तथा ब्रिसल

---

[1] दि इटीनरेरी ऑफ़ जोन लेलैंड, ल्यूसी टूल्मीन स्मिथ द्वारा सम्पादित, १६०६-१६१०।

जैसे स्थानों की रक्षा मिट्टी के निर्माणों से की जाती थी जो सैनिक इंजीनियरिंग के नवीन सिद्धान्तों के अनुसार बनाये जाते थे। ये मध्ययुगीन परिखा के अत्यन्त सँकरे आलवाल से काफी आगे बनाये जाते थे। वास्तव में ऐसे समृद्ध नगर लेलैंड के काल में पहले से ही इस प्राचीन प्रस्तरपरिखाओं को पार कर विकसित हो चुके थे और इनकी ओर आने वाले मार्गों के दोनों ओर बस्तियां विकसित हो चुकी थीं। अन्य, कम भाग्यशाली नगर, आर्थिक परिवर्तन के कारण सिकुड़ गये थे तथा निर्धन हो गये थे, और परिणामतः ट्यूडर युग द्वारा निरर्थक बना दी गयी इन परिखाओं की मुरम्मत आदि पर पैसा खर्च करने की स्थिति में नहीं थे। सब मिलाकर, परिखाओं का क्षय उस मध्ययुगीन नगर-भक्ति के ह्रास का सूचक था जिसने मध्ययुगीन नगर-जनों को इतना प्रेरित किया था। राष्ट्रीय नियंत्रण तथा व्यक्तिगत उपक्रम अब नगर तथा व्यवसाय-संघों का स्थान न केवल शासन तथा सैनिक सुरक्षा के मामलों में ही ले रहे थे बल्कि व्यापार तथा उद्योग के क्षेत्र में भी ले रहे थे, जैसाकि इस तथ्य से देखा जा सकता है कि वस्त्र-उत्पादक व्यवसाय-संघ नगरपालिका के नियमों से बचने के लिये निरन्तर नगरों से गांवों की ओर प्रयाण कर रहे थे।

किन्तु लेलैंड ने एक जो तीसरे प्रकार का ध्वंसावशेष देखा वह बहुत निकट अतीत का था। मठीय भवनों का ध्वंस, जिनके ध्वस्त होने की गूंज देश में दूर-दूर तक सुनायी दी, 'कल्पना-शून्य काल का कार्य' नहीं था (कम से कम भौतिक अर्थ में तो कदापि नहीं) बल्कि एक राजा के आदेश का प्रभाव था, जिससे एक ही झटके में गत दो शताब्दियों से घनीभूत हो रही एक सामाजिक समस्या समाप्त हो गयी।

जिस दशाब्द में लेलैंड यात्रा कर रहा था और सूचना-संग्रह कर रहा था उसी में हेनरी अष्टम् ने संसद की सहायता से पादरी-विरोधी क्रान्ति की थी जिसे कि इंगलैंड में मध्ययुगीन क्रान्ति को समाप्त करने वाली एक सबसे महत्वपूर्ण घटना कहा जा सकता है। चर्च को पोप के प्रभुत्व से निकाल कर उसकी राष्ट्रीय स्वतंत्रता स्थापित कर देने पर पादरियों पर लौकिकों का शासन तथा मठों की विशाल भूमियों का लौकिकों में विभाजन भी संभव हो सके। सम्मिलित रूप से इनको सामाजिक क्रान्ति कहा जा सकता है। इस क्रान्ति के साथ धार्मिक परिवर्तन केवल उस मात्रा तक ही हुआ जितना नव चेतना के शिशु हेनरी अष्टम् को उचित जँचा—यानि, अंग्रेजी भाषा में लिखित बाइबल का सब वर्गों में प्रसार, स्थूल प्रकार की मूर्ति-पूजा तथा अवशेष-पूजा का निषेध, आक्सफर्ड तथा केम्ब्रिज में परंपरावादी दर्शन तथा ईसाई विधान के स्थान पर नवोत्थान युग की विद्वत्ता की स्थापना। हेनरी की दृष्टि में, ये सुधार परंपरावादी और कैथोलिक मतानुकूल थे। यह सब करने के बावजूद उसने प्रोटेस्टेंटों से घृणा तथा उनका उत्पीड़न नहीं छोड़ा, और यदि उसने ऐसा नहीं किया होता तो, जैसी परिस्थितियां इस समय थीं, उनमें वह अपना राज्य खो बैठता। इसके बावजूद, उसने एक

नवीन सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्था को जन्म दे दिया था जो, समय के बीतने के साथ, केवल प्रोटेस्टेंट ढंग की परिस्थितियों में ही चल सकती थीं।

इंगलैंड में सुधार-आन्दोलन का रूप एकसाथ राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक था। इसके ये तीनों पक्ष परस्पर घनिष्ट रूप से संयुक्त थे, किन्तु जहां तक इनमें भेद का प्रश्न है, इस पुस्तक में इस आन्दोलन के केवल सामाजिक पक्ष पर ही विचार किया जा रहा है। पादरी विरोधवाद एक सामाजिक आन्दोलन था जो अनेक धर्म सम्बन्धी विश्वासों के साथ संगत बैठता था। पादरी विरोधवाद वैचारिक आन्दोलन का मूलस्वर था जिसका प्रभाव शिक्षित और अशिक्षित दोनों में बराबर दृष्टिगोचर हो रहा था, और इसी से पोप के प्रभाव से मुक्ति तथा मठों का विलय भी संभव हुआ; यह सब ऐसे समय में संभव हुआ जबकि इंगलैंड के प्रोटेस्टेंट अभी भी एक उत्पीड़ित अल्पमत के रूप में थे।

हेनरी अष्टम् स्वयं भी इरासमस तथा उसके आक्सफर्ड के मित्रों की विद्वत्तापूर्ण पादरी विरोधवादी परंपरा में शिक्षित हुआ था—आक्सफर्ड के ये लोग सच्चे धार्मिक थे और मुख्यतः परंपरावादी थे, किन्तु वे धूर्त पादरियों की अशिक्षित तथा अन्धविश्वासी लोगों से पैसा लूटने वाली चालों से क्षुब्ध और क्रुद्ध थे। वे साधुओं तथा परिव्राजकों के विशेष रूप से विरुद्ध थे क्योंकि वे सुधार-विरोधी तथा अन्धश्रद्धामूलक दर्शन के समर्थक थे और बाइबल की ग्रीक संहिता के अध्ययन के विरोधी थे, जिसे इरासमस तथा कोलैट मतावलंबी धार्मिक सत्य की कसौटी मानते थे।

इरासमस के कम से कम कुछ लेखों में पादरी विरोधवाद की भावना बहुत तीव्र थी। "मूर्खता की प्रशंसा में" (इन दि प्रेज़ ऑफ़ फॉली) लेख में वह साधुओं की निन्दा करते हुए कहता है कि वे "मूर्खतापूर्ण धार्मिक औपचारिकताओं तथा परंपरागत नियमों का बड़े ध्यान से और अत्यन्त पूर्ण सम्यक्ता से पालन करते थे," जिनकी ईसा जरा भी परवाह नहीं करते थे, और साथ ही वे एक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन भी विताते थे।

"पेट इतना भरते कि वह फटने को आता था।"

'जघन्य परिव्राजक' तथा उनके उपदेशों की आलोचना में भी उसने कम कटु शब्दों का प्रयोग नहीं किया :

"उनके उपदेश का सारा ढंग ऐसा है कि आप यह कसम खाकर कह सकते हैं कि उन्होंने यह घूमते फिरते छद्म चिकित्सकों से सीखा है, यद्यपि यह ठीक है कि ये छद्म चिकित्सक सब प्रकार से उनसे श्रेष्ठतर होते हैं", आदि आदि।

यदि यूरोप का सर्वोत्कृष्ट विद्वान और सुसंस्कृत व्यक्ति लातीनी भाषा में साधुओं और परिव्राजकों के सम्बन्ध में इस प्रकार से लिख सकता था तो इससे सहज में ही अनुमान किया जा सकता है कि उस काल के प्रचलित इंगलिश में लिखने वाले लोक-

प्रिय पादरी-विरोधी लेखकों का स्वर कैसा रहा होगा। प्रेस ऐसी आलोचनाओं को खूब मुस्तैदी से प्रचारित करता था और चर्च की विशाल भू-संपत्ति के प्रति लोगों के लोभ को उकसाता था, जिसे केवल इसीलिए अब तक नहीं लूटा गया था क्योंकि अभी तक इसका एक नैतिक प्रभाव और धार्मिक भय बना हुआ था।

उदाहरण के लिए, मठों की समाप्ति के कुछ वर्ष पूर्व हेनरी अष्टम् ने साइमनाफिश का "भिक्षुओं की याचना" नामक पैम्फलेट बिना किसी आपत्ति के पढ़ा था और लंडन-वासियों ने इसका बहुत हर्ष और आनन्द के साथ स्वागत किया था। यह राजा को संबोधित कर लिखा गया था :

"आपके श्रेष्ठ पूर्वजों के कालों में आपके राज्य में एक अन्य प्रकार के सशक्त, शूर तथा छद्मवेशी, धार्मिक तथा निष्कर्मण्य भिखारी तथा आवारा लोग बिशप, अब्बोट, प्रिअर, डीकन, आर्कडीकन, सफरैंग, प्रीस्ट, मॉन्क, कैनन, फ्रेअर, पार्डनर तथा समनर बड़ी कुशलता से आ बैठे हैं। इन निष्कर्मण्य तथा घातक लोगों को कौन गिन सकता है जिन्होंने कि (सब प्रकार के श्रम को छोड़ कर) भिक्षावृत्ति इतनी कुशलता से आरम्भ की है कि आपके राज्य का एक तिहाई भाग अब इनके हाथ में है। उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर पद, जागीरें तथा प्रदेश उनके हाथ में हैं। इसके अतिरिक्त, वे सम्पूर्ण अनाज, उद्यान, चरागाहों, घास, ऊन, भेड़ों, गायों, सूअर, बतखों तथा मुर्गियों सबका दशमांश प्राप्त करते हैं। और वे अपने लाभों का इतना ध्यान रखते हैं कि बेचारी स्त्रियों को प्रत्येक दसवां अंडा आवश्यक रूप से उनके लिए रखना पड़ता है, अन्यथा ईस्टर पर उन्हें अपना अधिकार नहीं मिलता और उन्हें धर्मद्रोही समझा जाता है। ये लोग सोम्मनर लोगों को कम्मिस्सरों (सामग्री अधिकारियों) की कचहरी में पेश करके और फिर वहां से रिश्वत पर छुड़वा कर कितना धन एकत्र करते हैं ? इसी प्रकार से, स्त्रियाँ तीन पेंस प्रतिदिन के हिसाब से कार्य प्राप्त करती हैं और पीछे साधु, या परिव्राजक अथवा पुजारी के साथ एक घंटा बिस्तर पर सोकर २० पेंस प्रतिदिन प्राप्त कर लेती हैं।"

इस पैम्फलेट का लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इन पुजारियों से, विशेष रूप से साधुओं और परिव्राजकों से, उनकी सम्पत्ति छीन कर राज्य को दे देनी चाहिए और इन्हें अन्य लोगों के समान कार्य में नियुक्त करना चाहिए; उन्हें भी विवाह करने की अनुमति मिलनी चाहिए जिससे दूसरों की पत्नियों की उनसे रक्षा हो सके।

शताब्दियों से चल रहे इस व्यभिचार के विरुद्ध लौकिक जन को उत्तेजित करने के ऐसे प्रयत्न वोल्से के राज्य-काल में लंडन में बहुत प्रचलित थे, और उसके पतन के बाद दरबार में भी ऐसी बातें प्रचलित हो गई। उन दिनों, राजधानी तथा दरबार यदि किसी बात पर एकमत हो जाते थे तो संघर्ष में आधी विजय तो पहले ही मिल जाती थी। और जिस तत्परता से सुधार संसत् (रिफार्मेशन पार्लियामेंट) ने हेनरी

के नेतृत्व को स्वीकार कर उसका अनुसरण किया उससे अनुमान किया ही जा सकता है कि देश में अन्यत्र भी वैसी ही भावनाएँ रही होंगी, किन्तु उत्तरीय जनपदों में यह बात नहीं थी जहाँ कि चर्च के प्रति सामन्तीय और धार्मिक भक्ति काफी मात्रा में शेष थी।

विचारों के इस बवंडर के सामने, जिसे कि राजा ने अब व्यावहारिक लक्ष्यों की ओर उन्मुख कर दिया था, इस प्रकार से संकटापन्न और आतंकग्रस्त पादरियों का क्या रवैया रहा होगा ? भावी आंग्ल समाज के विकास पर उनके आत्मसमर्पण अथवा प्रतिरोध के अत्यन्त महत्वपूर्ण परिणाम होते। यदि सम्पूर्ण पादरी-वर्ग—बिशप, पुजारी, साधु और परिव्राजक—मध्ययुगीन चर्च के उच्च विशेषाधिकारों तथा स्वतंत्रताओं के लिए संयुक्त रूप से उठ खड़ा होता और पोप के नेतृत्व में संगठित हो जाता, तो उनको दबा सकना बहुत कठिन होता; कम से कम, इसके लिए अत्यन्त कठिन संघर्ष तो करना पड़ता ही, और वह संघर्ष इंगलैंड को मटियामेट कर देता। किन्तु ये पादरी लोग न केवल राजा तथा उसकी प्रजा के बड़े भाग के संगठन से ही बहुत आतंकित थे बल्कि उनके अपने आप में भी वास्तव मतभेद थे। बहुत से पादरियों का लौकिकों के साथ घनिष्ट दैनिक सम्पर्क था और वे उनके दृष्टिकोण को समझते थे। इंगलैंड का पुजारी वर्ग एक जाति का सा पार्थक्य और अनुशासन नहीं प्राप्त कर सका था, जैसा कि आजकल के रोमन कैथोलिक पादरियों में है।

उदाहरण के लिए, बिशप सर्वप्रमुख राजकीय तथा नागरिक अधिकारी थे। इसी प्रकार से, पादरी तथा चैपलेन प्रायः ही सामन्तों तथा धनिकों के व्यापारिक प्रतिनिधि तथा विश्वासपात्र सहायकों के रूप में कार्य करते थे। महन्त तक भी अपनी सम्पत्ति के प्रबन्ध के लिए लौकिकों पर निर्भर करते थे और बहुत सी बातों में अपने अभिभावकों तथा संरक्षकों के सम्बन्धियों की, जोकि बहुत बार मठों में ही रहते थे, इच्छाओं के सम्मुख झुक जाते थे।

इसलिए पादरी वर्ग के लिए आत्मरक्षा के लिए संगठित होना सहज नहीं था। बिशपों तथा पादरियों (पैरिश प्रीस्ट्स) की साधुओं तथा परिव्राजकों के प्रति शताब्दियों से शत्रुता थी, और इसमें जरा भी कमी नहीं आई थी। इसी प्रकार से पोप के अधिकार के विरुद्ध भी, जिसने कि इंगलैंड के चर्च का शोषण किया था, बहुत विद्रोह था और इधर के वर्षों में वोल्से ने पोप के प्रतिनिधि के रूप में पोप के अधिकार तथा पादरीपद की स्वतंत्रता का आश्रय लेकर इंगलैंड के पादरी वर्ग को रुद्ध कर लिया था। परिणामतः उसके पतन के समय उनमें यह एक सामान्य भावना थी कि 'पोप से तो राजा ही अच्छा है।' पादरी-सभा के सम्मुख उस समय कोई तीसरा विकल्प नहीं था। वोल्से के जीवनी-लेखक का कहना है कि वह "एक निर्मम और

महत्वाकांक्षी व्यक्ति था और उसने पीछे के अधिकार का ऐसा दुरुपयोग किया कि उसके साथ ही उसका भी अन्त हो गया।"[1]

इसके अतिरिक्त, पादरियों में बहुत से इरासमस तथा/अथवा लूथर के सुधारवादी सिद्धान्तों के गुप्त समर्थक अथवा प्रकट प्रचारक थे; अन्यथा इंगलैंड में कभी भी क्रान्ति नहीं होती, केवल पादरियों के प्रभुत्व के विरुद्ध पादरी-विरोधियों का निर्मम संघर्ष होता, जैसाकि फिश के "सप्लीकेशन आफ़ दि बैगर्ज़" में पूर्वाभासित हुआ और जैसाकि सुधार का अस्वीकार करने वाले देशों में बाद में हुआ।

इंगलैंड के पादरी-वर्ग में अनेक भिन्न-भिन्न विचार-प्रवाह चल रहे थे। जिस प्रकार से हेनरी सप्तम् के राज्य में आक्सफर्ड का सुधार आन्दोलन इरासमस के विचारों से प्रभावित हुआ उसी प्रकार से उसके पुत्र के राज्य में कैम्ब्रिज सुधार-आन्दोलन, और साथ ही क्रानमर, लेटिमर, टिंडेल तथा कवरडेल के सुधार-आन्दोलन सागर-पार से लूथर के विचारों से प्रभावित हुए थे। और स्पष्ट रूप से लूथरवादी हुए बिना ही बहुत से पारिदयों की अपने व्यवसाय में सुधार करने की हार्दिक इच्छा थी और वे अपने व्यवसाय के सब विशेषाधिकारों को पसन्द नहीं करते थे। एड्वर्ड षष्ठ के काल में बहुत से साधु-सन्त लोग प्रोटेस्टेंट पादरी हो गये, और यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि वे प्रवंचक थे।

इंगलैंड का लोकमत, पादरी और अपादरी सभी, अब एक परिवर्तमान चित्रपट था। यह अभी स्पष्ट रेखांकित दलों, अर्थात् एक सुधारवादी और दूसरा प्रतिक्रिया-वादी—में वर्गीकृत नहीं हुआ था। और इस घपले में राजा की इच्छा ही चली। उसकी पोप तथा पादरी-विरोधी नीति को जिस वर्ष (१५३६) उत्तरी विद्रोहियों द्वारा, जो पिल्ग्रिमेज आफ़ ग्रेस (भगवत्कृपा की तीर्थयात्रा) के नाम से प्रसिद्ध थे, चुनौती मिली तब उसकी रक्षा नॉर्फोक तथा श्रूसबरी के समान प्रतिक्रियावादियों तथा गार्डिनर

---

[1] पोल्लार्ड आगे कहता है कि (द्रष्टव्य वोल्से, पृ० ३६९-७०) : वोल्से तथा हेनरी अष्टम् में मूलभूत अन्तर यह था कि कार्डिनल चर्च की सत्ता का समर्थक था और राजा राज्य-सत्ता का; रोमवादी चर्च तथा इंगलैंड के चर्च में यही मुख्य भेद था। एक पादरी-शासित संस्था थी और दूसरी राजा शासित। वोल्से ने चर्च को एक त्रासक का रूप दे दिया था, जिसकी स्वतंत्रताएं लौकिकों पर प्रशासन के संदर्भ में तो थीं किन्तु स्वयं भीतरी प्रशासन में नहीं थीं। हेनरी की विजय ने इंगलैंड के चर्च को वोल्से की कल्पना के चर्च के रूप में, जिसमें केवल एकतंत्रता होती, जोकि उस काल की स्वशासन की भावना के साथ संगत नहीं थी, विघटित होने से बचाया, और इससे चर्च के शासन के भीतर विवाद तथा मतभेद के तत्वों का समावेश हो गया जोकि सार्वजनिक रुचि तथा बौद्धिक जीवन के चिह्न हैं।

और बोनर के समान बिशपों के सहयोग के कारण हुई; ये सब लूथरवादियों को जला डालने को उतने ही इच्छुक थे जितना स्वयं हेनरी था। दूसरी ओर, अकादमिक पुनर्जागरण तथा सुधार के दो प्रमुख नेताओं मोर तथा फिशर ने, जोकि इरासमस के मित्र थे, पोप के प्रभुत्व तथा चर्च की स्वाधीनता को राज्य के अधीन होने देने के बजाय मरना अच्छा समझा।

साधुओं तथा परिव्राजकों की समाप्ति धर्म-जीवन तथा समाज के प्रति उस दृष्टिकोण का स्वाभाविक परिणाम थी जिसको इरासमस तथा उसके आंग्ल मित्रों ने प्रतिष्ठित करने का भरकस प्रयत्न किया था। शास्त्रीय तथा बाइबल विषयक अध्ययन के क्षेत्र में नवीन शिक्षा सम्पन्न लोग, जोकि उस समय राज्य तथा विश्व-विद्यालय दोनों में प्रमुख थे, साधुओं तथा परिव्राजकों को नवीन आन्दोलन के ज्ञान-विरोधवादी शत्रु मानते थे, तथा प्राचीन युगों में विहारों ने जो एक वैराग्य का आदर्श स्थापित किया था उसकी न तो लोक में कोई प्रतिष्ठा थी और न साधु लोग उसका व्यवहार में पालन करते थे। तब फिर इन मठ-विहारों को इतना धन व्यय करके क्यों रखा जाय ?

यह प्रश्न सामान्य बाज़ारू-लोगों ने उठाया, विशेषतः लंडन के लोगों ने; और इनके विरोधियों ने इसे और तूल दिया। इनमें सबसे अधिक दुर्बल लैटिमर जैसे सुधारवादी पादरी थे, जिन्हें आशा थी कि मठों की सम्पत्ति शिक्षा तथा धर्म की उन्नति की दिशा में प्रयुक्त होगी; वे सबसे अधिक ठगे गये। पुनः मठों के लौकिक पड़ौसी तथा संरक्षक इन मठों की सम्पत्तियों को सस्ते मूल्यों पर हथियाना चाहते थे और उन्हें प्रायः ही सफलता मिलती थी। इसके अतिरिक्त, स्वयं राजा, जिसकी अपव्यय-पूर्ण नीति तथा फ्रांस में लड़े गये मूर्खतापूर्ण युद्धों के कारण कोश खाली हो गये थे, इनकी सम्पत्तियों को जब्त कर के उन कोशों को पुनः भरना चाहता था। और अन्त में, लोकसभा के सदस्य अपने मतदाताओं पर अप्रिय कर लगाने से बचना चाहते थे, इसलिए उन्होंने मठों के अनुदान बन्द करने के विधेयकों का सहर्ष समर्थन किया।

इस काल में इंगलैंड में कर देने से निषेध की प्रवृत्ति बहुत सामान्य थी। नया कर, चाहे वह कितना भी अल्प क्यों न होता, और चाहे संसद द्वारा वह पारित भी होता, तो भी उससे देश के किसी न किसी भाग में विद्रोह अवश्य खड़ा हो जाता था, और ट्यूडर राजाओं के पास कोई स्थायी सेना नहीं थी। इसलिए हेनरी ने अपने राज्य के अन्तिम काल में दो स्रोतों से अपनी आर्थिक कठिनाइयों से मुक्ति खोजी, प्रथम मठों की सम्पत्ति से और, उसके बाद, सिक्के का अवमूल्यन करके। जैसाकि हम आगे देखेंगे, इन दोनों के परिणाम सामाजिक दृष्टि से बड़े महत्वपूर्ण हुए।

कुछ समय के लिए मठों की भूमियों के विक्रय ने राजा के रिक्त कोश को पूर्ण किया। यदि हेनरी दिवालिया नहीं होता तो उसने मठों को कभी भी समाप्त नहीं

किया होता; अथवा उसने मठों की सम्पूर्ण भूमि तथा धन को राज्य-कोश के लिए सुरक्षित रख कर अपने उत्तराधिकारियों को इंगलैंड में पूर्ण राजाशाही स्थापित करने का अवसर दिया होता, अथवा उसने अपना धन शिक्षा तथा निर्धनों की सहायता के लिए और अधिक मात्रा में दिया होता, जैसाकि आरम्भ में उसकी इच्छा भी थी। किन्तु ऐसी स्थिति होने पर भी उसने "ट्रिनिटी" को कालेज के रूप में स्थापित किया, जो केम्ब्रिज के किसी भी कालेज से बृहत्तर था। संभवतः उसे उत्तम कार्य के लिए वोल्से द्वारा आक्सफर्ड में स्थापित कार्डिनल कालेज के उदाहरण से प्रेरणा मिली थी। यह कालेज भी मठों से छीने गये धन के द्वारा ही बनाया गया था; क्योंकि मठों की भूमियों तथा भेंटों को अन्य कार्यों के लिए लगाने की परम्परा हेनरी अथवा सुधारवाद ने आविष्कृत नहीं की थी। किन्तु राजा की महत् सामर्थ्य के अनुपात में उसने जनता के लिए उपयोगी संस्थाओं को बहुत कम दान दिया। वास्तव में उसने मठों से छीने गये धन का कुछ भाग निश्चित रूप से राज्य की बन्दरगाहों तथा रॉयल नौ सेना के आयुधागारों पर व्यय किया था।

कुछ लोगों का कहना है कि हेनरी ने मठों की भूमियां और धन बड़ी मात्रा में अपने दरबारियों में इनाम के रूप में बाँट दिए थे, किन्तु यह बात ठीक नहीं है। वास्तव में उसने उनका अधिकांश भाग बेचा था।[1] वह अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के कारण उन्हें बेचने को बाध्य हो गया था, अन्यथा उसने ये सम्पत्तियाँ राज्य-कोश के लिये रखना अधिक पसन्द किया होता। उन जागीरों का भावी मूल्य, जिसका लाभ इनके क्रेता साधारण लोगों ने, अथवा उनके उत्तराधिकारियों ने उठाया, उससे बहुत अधिक था जितना कि उन्होंने अभावापन्न (ज़रूरतमंद) हेनरी अथवा उन व्यापारियों को दिया था जिन्होंने येहेनरी से आगे बेचने के लिए खरीदी थीं। इसलिए विलयन से वास्तविक लाभ धर्म को नहीं पहुँचा, शिक्षा को भी नहीं, न निर्धनों को ही इससे कुछ लाभ हुआ, अन्ततः राजकोश को भी नहीं हुआ, बल्कि सम्पन्न जमींदारों को ही हुआ, जिनके सम्बन्ध में और अधिक हम आगे चलकर कहेंगे जब हम सामाजिक तथा कृषिगत जीवन में होने वाले परिवर्तनों पर विचार करेंगे।

मठों, पूजा-गृहों तथा अन्य धर्म-संस्थाओं की भूमियों और दशमांश करों का काफी बड़ा भाग कई सन्ततियों तक राज्याधिकार में ही रहा। किन्तु आर्थिक अभावों ने एलिजाबेथ, जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम को ये सम्पत्तियाँ व्यक्तिगत क्रेताओं को बेचने के लिए बाध्य कर दिया था।

कोयले की खानें, विशेषतः डर्हम तथा नार्थम्बरलैंड की, अधिकांशतः धर्म-संघों के

---

[1] ए० एल० फिशर की पुस्तक दि पुलिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ इंगलैंड, परिशिष्ट २, पृ० ४६७-४६६।

ही स्वामित्व में थीं। किन्तु हेनरी अष्टम् के कार्यों के कारण भावी सम्पत्ति का यह स्रोत, जोकि भविष्य में स्टूअर्ट के काल से बहुत बड़े स्तर पर विकसित होने वाला था, व्यक्तिगत जमींदारों के हाथों में चला गया और इनके उत्तराधिकारियों ने इस कोयले से कुछ अत्यन्त शक्ति-सम्पन्न तथा उच्च घरानों की स्थापना की। तब भी, चर्च के पास जो थोड़ा शेष भी बच रहा था, उससे चर्च सम्बन्धी कमीशन को कुछ वर्ष पूर्व तक प्रति वर्ष ४०००,००० पौंड की आय हो रही थी, जोकि कोयले से मिलने वाली सम्पूर्ण रायल्टियों का सातवाँ भाग था।[१]

जमींदारों के अतिरिक्त, मठों के विलय से लाभ उठाने वाला दूसरा वर्ग सन्त अल्बांस तथा बरी संत एडमंड्स जैसे नगरों के नागरिकों का था, जोकि अब मठीय प्रभुत्व के पंजे से मुक्त हो गये थे, जिसके विरुद्ध कि वे शताब्दियों से भीषण विद्रोह कर रहे थे। दूसरी ओर, बड़े मठों के ध्वंस तथा तीर्थयात्रा के प्रमुख केन्द्रों के दमन से ऐसे कुछ नगरों तथा कुछ ग्रामीण जिलों की समृद्धि और महत्व कम हो गये जो स्वतंत्र रूप से व्यापार तथा उद्योग के केन्द्रों के रूप में इस क्षति की पूर्ति नहीं कर सकते थे। अनेक मठों के पुस्तकालय भी ध्वस्त कर दिये गये, जिनमें अत्यन्त मूल्यवान पांडुलिपियाँ संगृहीत थीं। इससे साहित्य को महत् हानि हुई।

महन्तों और पुजारियों को व्यक्तिगत रूप से उससे कहीं कम क्षति पहुंची जितना कि नवीन ऐतिहासिक अनुसंधानों से पूर्व समझा जाता था।[२] उन्हें उपयुक्त पेंशनें दी गयीं, उनमें से अनेक को रोजगार भी मिला, कुछ को पादरी नियुक्त किया गया और कुछ को बिशप भी बनाया गया। हेनरी, एड्वर्ड, मेरी तथा एलिजाबेथ के क्रमशः कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेंट शासनों में चर्च में पुराने ही महन्त तथा साधु नियुक्त थे जोकि समय के परिवर्तनों के साथ परिवर्तित होने में उतने ही कुशल थे जितने कि अन्य पादरी लोग। ध्वस्त मठों के जिन कुछ अध्यक्षों तथा अन्य निवासियों ने नवीन व्यवस्था का प्रतिरोध किया उन्हें राजा ने बुरी तरह से कुचल दिया था। किन्तु अधिकांश महन्तों तथा साधुओं ने परिवर्तनों को स्वीकार कर लिया जो उनमें से बहुतों के लिए वास्तव में हानिकारक भी नहीं थे, क्योंकि वे उनके लिये व्यक्तिगत रूप से अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र जीवन तथा अधिक अवसरों का द्वार खोलते थे। उन्होंने हेनरी के नवीन विचारों के विरुद्ध संगठित होने के कोई प्रयत्न नहीं किये, सिवाय उत्तरी भाग के जहां कि सामाजिक परिस्थितियां विगत सामन्त युग के अब भी अनुरूप थीं।

महन्तों के साथ साथ वे उपदेशक साधु भी समाप्त हो गये जो कि अब तक चर्च

---

[१] नैफ-राइज़ ऑफ़ दि ब्रिटिश कोल इंडस्ट्री १, पृ० १३४-१३५।

[२] द्रष्टव्य: जी. वास्करविलो, दि इंगलिश मांक्स एंड दि सप्रेशन ऑफ़ दि मोनास्ट्रीज, १६३८, रउसे की ट्यूडर कोखाल भी द्रष्टव्य, अ. ७-६।

के पादरियों के स्पर्धी थे। फ्रांसिस तथा डोमिन सम्प्रदायों के क्रमशः सलेटी और काले रंगों के चोगों वाले साधु, जोकि घरों के दरवाजों पर जाकर भीख मांगते अथवा अशिक्षितों को उपदेश देते थे, अब प्रायः इंगलैंड की सड़कों पर दिखाई नहीं देते थे। उनका स्थान अब धर्मोपदेशकों अथवा प्रोटेस्टेंट परिव्राजकों ने ले लिया था, जिनमें से कुछ चर्च के अधिकारियों के पक्ष में और कुछ विपक्ष में कार्य कर रहे थे। वर्नार्ड गिल्पिन ने, जो कि 'उत्तर का देवदूत' माना जाता था, मेरी तथा एलिजाबेथ के काल में जो सीमान्तीय चर्च प्रदेशों की धर्म-यात्रा की वह एक ओर प्राचीनतर परिव्राजकों का स्मरण दिलाती है और दूसरी ओर उसमें आगे आने वाले वूसले की झलक मिलती है।

सब मिलाकर, लगभग ५००० साधुओं, १६०० परिव्राजकों तथा २००० साधुनियों को पेंशनें देकर सांसारिक जीवन की ओर भेजा गया। साध्वी विहारों की समाप्ति का समाज पर लगभग कोई प्रभाव नहीं हुआ। उनके पास धन, सम्पत्ति साधुओं की तुलना में नगण्य थी, और न इनकी तुलना में इनके सार्वजनिक कार्य ही विशेष थे। उस काल की साध्वियां प्रायः अच्छे परिवारों की स्त्रियां थीं जिन्हें उनके सम्बन्धी उपयुक्त वर नहीं मिल पाने के कारण धार्मिक कार्यों के लिये दे देते थे। ये साध्वी-विहार इंगलैंड के जीवन में विशेष महत्वपूर्ण नहीं थे।[१]

किन्तु मठों के विघटन के सामाजिक परिणामों पर और अधिक विचार करने की आवश्यकता है, अर्थात् कि इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप इन मठों की रैयत इनके नौकर-चाकरों तथा निर्धन लोगों को क्या कष्ट भोगने पड़े।

जहां तक संपत्ति के प्रवन्ध का प्रश्न है, यह समझने का कोई भी कारण नहीं है कि संसारी अथवा नियमित पादरी विघटन से पूर्व अन्य सामान्य लोगों से अधिक सम्पन्न जमींदार थे। १५१७ में जमींदारियों के विघटन की विवरणिका से ज्ञात होता है कि मठों की संपत्तियों से वेदखलियों की संख्या साधारण लोगों की संपत्तियों से वेदखलियों की संख्या की तुलना में कम नहीं थी, और "जबकि धार्मिक सम्पत्तियों के स्वामियों की भूमियों का किराये की दृष्टि से औसत मूल्य साधारण लोगों की सम्पत्तियों की अपेक्षा वहुत कम है, धार्मिक स्वामियों द्वारा किराये पर दी हुई भूमियों के किराये वहुत अधिक हैं।" सर थॉमस मोर ने मठों पर यह दोषारोपण किया था कि उन्होंने कृषियोग्य भूमियों को चरागाहों में परिवर्तित कर दिया था, और जनकवियों के अनुसार ये वहुत अधिक किराये लेते थे :

मठ अपना भुगतान कैसे लेते हैं ?
उन्होंने एक नये ढंग का आविष्कार किया है,

---

[१] पन्द्रहवीं शताब्दी की साध्वियों के लिये द्रष्टव्य : ईलन पॉवर की मैडीवल इंगलिश नन्नरीज़, पृ० ७२-७३।

कि वे एक दर्जन खेत एक ही को किराये पर दे देते हैं,
जिन्हें कि एक या दो धनी जमींदार
अकेले अपने ही अधिकार में ले लेते हैं।

× × ×

जहां कि बीस पाऊंड के लिये एक खेत बना था
वे अब उसे तीस में भी नहीं देते हैं।

वास्तव में, मठ-स्वामियों ने अधिकांशतः अपनी संपत्तियों का प्रबन्ध साधारण लोगों को सौंप दिया था। प्रायः ही छोटे सामन्त अथवा बड़े और छोटे जमींदार मठों की भूमियों का प्रबन्ध करते थे और उनका संचालन अन्य जमींदारियों के समान ही करते थे, अर्थात् जहां बाड़ा करने से लाभ होता वहां बाड़ा करते थे और कापी होल्डरों को यथेच्छ काश्तकारों या किरायेदारों के रूप में परिणत कर देते थे तथा कीमतें बढ़ जाने पर किराये बढ़ा देते थे। जब विघटन के समय मठों की संपत्ति सामान्य लोगों के हाथों में चली गयी तब तत्कालीन साधारण भूस्वामियों का रवैया किरायेदारों की ओर पहले के समान ही बना रहा। किन्तु क्योंकि हेनरी अष्टम् द्वारा सिक्के के अवमूल्यन के कारण उसके पुत्र के राज्यकाल में बहुत अधिक मूल्य-वृद्धि हुई इसलिए जब भी कभी नये या पुराने भूस्वामियों को नवीन पट्टेदारी अधिकार या कापी अधिकार मिले तब उन्हें आत्म-सुरक्षा की दृष्टि से भी किराये बढ़ाने पड़े। परिणामतः 'नये लोगों' की निन्दा की गयी (और यह निन्दा अधिकांशतः अनुचित रूप से की गयी थी) यद्यपि महन्त और साधु लोग भी मूल्यवृद्धि की वैसी स्थिति में वैसा ही करने को बाध्य होते। समय बीतने के साथ अतीत एक स्वर्णिम आभा में आवेष्टित हो गया और एक ऐसी परम्परा बन गयी जिसमें साधु लोग विशेष रूप से सरल जमींदारों के रूप में आगे आये, यद्यपि इस परम्परा के होने की पुष्टि आधुनिक अनुसन्धान से नहीं होती है।[1]

मठों की जागीरों के किरायेदारों के अतिरिक्त, जिन्हें कि मठों की समाप्ति से न तो पूरी तरह से लाभ हुआ कहा जा सकता है और न हानि, एक विशाल वर्ग कर्मचारियों का भी था जिनकी संख्या स्वयं साधुओं से भी अधिक थी। उनके सम्बन्ध में यह एक सामान्य धारणा ही हो गयी थी कि वे "निठल्ले एब्वेलुब्बर" हैं, जो कुछ करते धरते नहीं हैं और केवल खाने-पीने में कुशल हैं (स्टार्के का इंगलैंड, टेम्प. एच. ८, इ. इ. टी. एफ. पृ० १३०१) सम्भवतः वे कर्मचारियों के उन बड़े कुलों से न अच्छे थे और न बुरे ही जिन्हें कि उच्च कुलीन नागरिक और बड़े जमींदार हेनरी अष्टम् द्वारा उनके

---

[1] इस अध्याय में मैंने मठों के सम्बन्ध में जो कहा है उसके लिए द्रष्टव्य : बास्कविले, इंगलिश मॉंक्स एंड दि सप्रेशन ऑफ़ मोनास्ट्रीज़; सेवाईन, इंगलिश मोनास्ट्रीज़ ऑन दि ईव ऑफ़ दि डिस्सोल्यूशन (आक्सफर्ड स्टडीज, एडिटिड बाई विनोग्रैडोफ, १९०९) स्नेप, इंगलिश मोनास्टिक फाईनेंसिज, १९२६।

सैनिक रक्षकों को निःशस्त्र कर देने के बाद बनाये रखना चाहते थे। ये कर्मचारी (सर्विंगमैन) शैक्सपीयर के दिनों में भी पसन्द नहीं किये जाते थे। मठों के इन आश्रितों में से बहुत से नये स्वामियों ने, विशेषतः जिन्होंने मठों को जागीरगृहों (मेनर हॉउसिस) में रूपान्तरित कर दिया था, अपना लिया था। किन्तु कुछ निस्सन्देह अपने आश्रय खो बैठे और 'पुष्ट भिखारियों' के वर्ग में जा सम्मिलित हुए। स्वयं महन्तों और साधुओं को ऐसी कठिनाई में नहीं पड़ना पड़ा, क्योंकि उन्हें पेंशन मिलती थी।

मठों के बहुत से कर्मचारी मठों से सम्बद्ध भूमिपतिवर्ग के भले युवक थे जो "मठों की पोशाक पहनते, इनकी संपत्तियों की व्यवस्था करते, इनकी पंचायतों की अध्यक्षता करते, तथा इनके व्यवस्थापक, बैलिफ और प्रमुख कृषकों के रूप में कार्य करते थे। इन उच्च वंशज कर्मचारियों के अतिरिक्त, जो कि महन्तों से वेतन पाते थे, धनी अतिथि और पेंशनभोजी लोग भी मठों में रहते थे। इसी प्रकार से, नोबल लोग तथा भूमिपति भी, जोकि या तो संरक्षक होते थे अथवा संस्थापक के संबंधी, मठ के प्रबन्ध पर बहुत प्रभाव डालते थे। उच्च वर्ग के लोगों का दखल मठों के प्रबन्ध में इनके विलय से बहुत पहले से था। कुछ पक्षों में मठों की भूमियों के लौकिकों के हाथों में जाने की प्रक्रिया काफी धीमी थी और उनका विलय इस प्रक्रिया का केवल परिणाम मात्र था।[१]

किन्तु भिखारी दरवाजों पर सदा से रहते थे। उन्हें भिक्षा में भोजन अथवा पैसा दिया जाता था। यह प्रथा ईसाई कर्त्तव्य की एक बहुत उपयोगी प्राचीन परम्परा तथा सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करती थी। किन्तु हमारे "भिखारी कानून" के एक इतिहास-लेखक के अनुसार, मठों की इस भिक्षा-दान प्रथा ने, अनियोजित और पात्र-अपात्र विवेक से शून्य होने के कारण, जितना योगदान निर्धनों की सहायता करने में किया उतना ही उनको बढ़ाने में भी किया।

स्वभावतः मठों के द्वार पर भिक्षा मिलनी बन्द हो जाने से अन्यत्र भिखारियों की संख्या में वृद्धि हो गयी, किन्तु इसके लिये कोई प्रमाण नहीं है कि भिक्षु-प्रथा ने जो समस्या उत्पन्न की वह विलय के बाद उससे अधिक गंभीर हो गयी जितनी उससे पहले थी। एलिजाबेथ के राज्य के अन्त में तो यह निश्चित रूप से अपेक्षाकृत कम थी।

जब नये प्रकार की व्यवस्था अच्छी तरह से जम गयी तब मठों की भूमियों के नये स्वामी कहां तक दान की प्रथा को जारी रख सके? क्या एलिजाबेथ के युग में जागीर-गृह के स्वामी पहले के महन्तों की अपेक्षा कम दान देते थे या कि अधिक दान देते थे? यह कहना असंभव है; संभवतः कुछ अधिक देते थे और कुछ कम देते

---

[१] बास्करविले, अ. २ तथा पैस्सिम, सेविने, इंगलिश मोनास्ट्रीज़, पृ० २४९-४५।

थे।[१] पहले स्टूअर्ट के युग में बहुत से अभिजात जमींदारों की स्त्रियां गांव की देख-रेख करना अपना कर्तव्य समझती थीं, कभी कभी तो पीयर (लार्ड आदि) की स्त्रियां भी—जैसे लेटिस, लेडी फाकलैंड—इसे अपना कर्तव्य समझती थीं और बीमारों को देखने, उन्हें दवाई देने तथा उन्हें कुछ पढ़कर सुनाने के लिये आती थीं। जमींदार-गृह (मेनर हाउस) की 'लेडी बाउंटीफुल' तथा उसका पति निर्धनों के लिये उतना ही कार्य करते थे जितना कि पीछे के मठों ने उनके लिये किया। मठों के विलय से निर्धनों को वास्तव में कितनी हानि हुई यह स्पष्ट नहीं है, किन्तु यह पूर्णतः स्पष्ट है कि निर्धनों को दान देने का तथा शिक्षा और संस्कृति का एक बड़ा अवसर खो दिया गया था। इस बात को उस समय बहुतों ने अनुभव कर लिया था, विशेषतः लेटीमर और क्रोले जैसे पादरियों ने। १५५० के आसपास क्रोले ने लिखा था :

"अकेले घूमते हुए जब मैं उन कार्यों पर विचार कर रहा था जो कि मेरे काल में महान् राजाओं ने सम्पादित किये थे, तब मुझे उन मठों-मन्दिरों के भवनों का ध्यान आया जोकि कभी मैंने देखे थे और जिसका कि अब कानून द्वारा दमन कर दिया गया था। हे मेरे ईश्वर, (मैंने तब सोचा) यहाँ भी महान् अवसर प्रस्तुत था, ज्ञान की प्राप्ति और दीन का दुःख हरने का ! वह धन और भू-सम्पत्ति, जो यहां छीनी गई थी, वह उन दिव्य ज्ञान-गुरुओं को लाती थी जो पथ-भूलों को राह दिखाते थे और उनको भोजन देते थे जो अब भूखों मरते हैं।

उसके बजाय, एक ऐसी प्रवृत्ति को और अधिक बढ़ावा मिला जो कि पहले से ही काफी सशक्त थी, वह थी ऐसे बड़े जमींदारों के वर्ग का प्रभुत्व में आना जिन्होंने कि बड़े सामन्तों को स्थानान्तरित किया और शताब्दियों तक जिनकी इच्छा ही कानून बनी।"

---

[१] १५३६ में, जबकि मठों के विलय की प्रक्रिया अभी चल रही थी, तब रॉबर्ट पे ने थॉमस क्रामवैल को एक पत्र में राजा द्वारा धार्मिक संस्थाओं में किये गये परिवर्तनों पर लोकमत की चर्चा करते हुए लिखा था : "मैंने उनसे पूछा कि मठों के विलय के बाद उन्हें क्या लाभ है, तो उन्होंने बताया कि इस बात को छोड़ कर कि भूस्वामी बहुत बड़ी संख्या में कुत्ते रखते हैं और अपने असामियों को रखने के लिये बाध्य करते हैं, वे बहुत अच्छी हालत में हैं। ये कुत्ते बचा हुआ भोजन तथा रोटी आदि खा जाते हैं, जोकि निर्धनों के काम आ सकती है। (ठीक यही शिकायत महन्तों और साधुओं के विरुद्ध की गयी थी)। वे कहते हैं कि उन्हें कुत्ते अवश्य रखने चाहियें, नहीं तो लोमड़ियां उनके मेमनों को खा जांयगी। किन्तु मनुष्यों की संख्या इतनी है कि यदि उन्हें जाल दे दिये जांय तो वे एक लोमड़ी को नहीं छोड़ें। किन्तु वास्तव में जमींदार उन्हें हमेशा लोमड़ियां पकड़ने से रोकते हैं, जिससे उनके शिकार का शौक पूरा होता रहे।

'हृष्ट-पुष्ट भिखारियों' के समूह, जिन्होंने कि ट्यूडर काल के आरम्भ में समाज को त्रस्त कर दिया था, अनेक स्रोतों से आये थे—जैसे सामान्य वेकार लोग, वे लोग जो किसी कार्य पर नियुक्त किये हीं नहीं जा सकते, वे सैनिक जो फ्रांस के युद्धों के वाद अथवा रोसेज़ के युद्धों के वाद सेवा-मुक्त कर दिये गये थे, वे अंगरक्षक दल जिन्हें हेनरी अष्टम् के आदेश से भंग कर दिया गया था, ऐसे नौकर जो धनहीन सामन्तों अथवा जमींदारों द्वारा निकाल दिये गये थे, डाकुओं के समूह, जो कि जंगलों के कट जाने से या राजा द्वारा शान्ति व्यवस्था सुदृढ़ कर देने से अपनी कंदराओं से निकलने को वाध्य हो गये थे, ऐसे कृषक जोकि चरागाहों के लिये भूमियाँ ले लिए जाने के कारण वेकार हो गये थे, तथा अन्य आवारा लोग जोकि दया के पात्र होने का अभिनय करते थे। ट्यूडर के सम्पूर्ण राज्य-काल में नगरों की ओर आने वाले भिखारी अलग-अलग खेतों में रहने वाले लोगों को डरा-धमका कर उन्हें लूट लेते थे और उनके कारण दण्डनायक (मजिस्ट्रेट), राज्य मंत्री (प्रिवी काउंसलर) तथा संसत्सदस्य चिन्ता में पड़े हुए थे। धीरे-धीरे निर्धनों की सहायता की एक सम्यक् योजना की गयी जिसके अनुसार इसके लिये एक अनिवार्य कर लगाया गया तथा निर्धनों को उसकी आवश्यकतानुसार विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया। इंगलैंड की यह योजना यूरोप भर में सर्वप्रथम थी। यह जल्दी ही अनुभव कर लिया गया कि 'पुष्ट भिखारियों' को पीटना मात्र समस्या का सुलझाव नहीं है। ट्यूडर काल के इंगलैंड ने यह अनुभव कर लिया था कि वेकारों को वृत्ति देना और पंगुओं को दान देना यह दुहरा उत्तरदायित्व न केवल चर्च और दान देने वाली संस्थाओं का ही है वल्कि सम्पूर्ण समाज का यह उत्तरदायित्व है। हेनरी अष्टम् के राज्यकाल में लंडन तथा इप्सविच के समान कुछ वड़े नगरों ने अपने यहाँ के निर्धनों के लिए शासकीय सहायता योजनाओं का संगठन किया। एलिजावेथ के राज्य के अन्तिम काल में तथा स्टूअर्ट राजाओं के युग के आरम्भ में एक राष्ट्रीय कानून द्वारा स्थानीय दंडनायकों का यह एक उत्तरदायित्व निर्धारित कर दिया गया था और प्रिवी काउंसिल इसका पूरा ध्यान रखती थी तथा इसके लिये एक अनिवार्य निर्धन-कर था।[1]

---

[1] १५५० के लगभग रॉबर्ट क्रौले ने अपनी एक कविता में लिखा था—झाड़ी के नीचे वैठे दो भिखारियों को मैंने वातें करते सुना जो कि अपनी अपनी हालत पर लम्वी चर्चा कर रहे थे, उन दोनों की टांगों में घाव थे और वे वड़ी खराव दीखती थीं। पैरों से लेकर घुटनों तक वे वुरी तरह से मवाद से भरी थीं। एक ने कहा, 'मेरी टांगों के लिए मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूं।' दूसरे ने कहा, वही वात मेरी है, ठंडी हवा में यह वड़ी खराव दीखती है, और ऐसी लाल दीखती है जैसे मानो लोहू हो, मैं तो इसका इलाज संसार की अच्छी से अच्छी वस्तु के वदले भी नहीं कराऊँगा। यदि मेरी यह टाँग खराव नहीं होती तो कोई मुझ पर दया नहीं

मठों के बाद प्रार्थना-मन्दिर ! हेनरी अष्टम् पहले से ही उन पर आक्रमण की तैयारी कर रहा था जबकि एकाएक उसे मृत्यु ने आ ग्रसा। एड्वर्ड षष्ठ के राज्यारोहण के अवसर पर (१५४७) प्रोटेस्टेंटवाद को प्रोत्साहन मिला तथा मृतों के लिये प्रार्थना की प्रथा को अन्धविश्वास घोषित कर दिया गया। क्योंकि प्रार्थना-मन्दिरों का यही एक प्रमुख कार्य था इसलिये इनको धार्मिक उत्साह की ओट में किया जा रहा था। लोभी राजनीतिज्ञों, उनके परोपजीवी अधिकारियों और प्रार्थनागृहों के आस-पास रहने वाले जमींदारों द्वारा यह 'लूट', जैसाकि अब हम उनके इस कार्य को कहना चाहेंगे, बालक राजा के राज्य में उसके वृद्ध तथा प्रभावशाली पिता के राज्यकाल की अपेक्षा कहीं अधिक निर्लज्जतापूर्ण हो गयी थी। हेनरी ने कम से कम राज्य के स्वार्थों का तो ध्यान रखा ही था—जहाँ तक उसकी वित्तीय अयोग्यता के रहते यह सम्भव था।

ये प्रार्थना-मन्दिर विशुद्ध रूप से धार्मिक प्रतिष्ठान ही नहीं थे। इनमें से बहुत से संसारियों के संघों की संपत्तियाँ थे और इनके कोशों से केवल मृतों की ओर से प्रार्थना पर ही व्यय नहीं होता था बल्कि पुलों, बन्दरगाहों और स्कूलों की संभाल पर भी व्यय होता था।[1] इसलिए जब इनके "अन्ध विश्वासपूर्ण उपभोग" को दबाना लक्ष्य था तब धर्मेतर लक्ष्यों को पृथक् रखना तथा उन्हें सुरक्षित रखना चाहिए था। कुछ अवस्थाओं में यह किया भी गया : लिन नगर के संसत्सदस्यों ने अपने ट्रिनिटी संघ के प्रार्थना-मन्दिर के स्तम्भों और सागर को रोकने वाली दीवारों की सम्भाल के लिए धन एकत्र किया था। किन्तु इस संघर्ष में अनेक लोक-सेवा कार्यों को हानि पहुँची अपेक्षाकृत कम सम्पन्न तथा प्रभावशाली संघों और स्कूलों के कोशों को तो विशेष रूप से बहुत हानि पहुँची।

एड्वर्ड षष्ठ की, उसकी मृत्यु के बाद की तीन शताब्दियों तक, इस बात के कारण प्रतिष्ठा रही कि उस बालक ने अनेक स्कूलों की स्थापना की थी। किन्तु वास्तव में 'एड्वर्ड षष्ठ व्याकरण विद्यालय' वे पुराने स्कूल थे जिन्हें उसके अधिकारियों ने नष्ट किया था और जिनके साथ उसे प्रसन्न करने के लिए उसका नाम जोड़ दिया गया था। प्रार्थना-मन्दिरों तथा संघों के अधिकांश स्कूलों को इस काल के विधान से हानि हुई, कुछ को अधिक हुई, कुछ को कम। भविष्य में बहुत महंगी होने वाली भूमियाँ उनसे छीन ली गयीं और इसके बदले में उनके लिए तीव्रता से अवमूल्यनोन्मुख मुद्रा में एक निर्धारित वृत्ति बाँध दी गयी।[1]

करता, यदि मैं ठीक होऊं तो मुझे कोई भीख न दे। तब तो मुझे श्रम करने तथा पसीने से लथपथ होने को बाध्य होना पड़े, और शायद कभी कोड़े भी खाने पड़ें।

[1] ग्रे फ्रेयर्स मोनास्ट्री की भूमि पर क्राइस्ट अस्पताल वास्तव में एड्वर्ड षष्ठ ने ही स्थापित किया था जोकि मूलतः अनाथ बच्चों की सँभाल के लिये स्थापित किया

एक और बड़ा अवसर खो दिया गया था। यदि मृतकों के निमित्त प्रर्थनाओं के लिए निर्धारित सम्पूर्ण, अथवा आधे भी, कोष स्कूलों पर व्यय किये जाते, और यदि इन स्कूलों की भू-सम्पत्ति उनके पास ही रहती, तो शीघ्र ही इंगलैंड माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में संसार भर में सर्वोत्कृष्ट हो जाता और संसार भर पर इसका प्रभाव अच्छा पड़ता। लैटीमर ने इस सुयोग को खोने की निन्दा की और नवीन प्रकार के कोशों के निर्माण के लिए अपील की, जोकि उस युग की धार्मिक आवश्यकताओं के लिए अधिक उपयुक्त होते :

"यहाँ मैं आप लोगों से अभ्यर्थना करना चाहता हूं कि आप लोग पुजारी-पद संभालने के लिए निर्धनों के बुद्धिमान बच्चों को पढ़ाने पर तथा विद्वानों की सहायता करने पर उसी उदारता से व्यय करेंगे जिस प्रकार ले आप तीर्थयात्राओं पर, टेंटलो मृत पूजाओं पर, (तीस अखंड मृत पूजाओं) पाप-शान्ति-कृत्यों पर तथा 'गति करवाने' पर व्यय करते हैं।

ऐसी अपीलों का उन संसत्सदस्यों तथा अन्य राज्याधिकारियों की नीतियों पर कोई प्रभाव नहीं होता था जोकि एड्वर्ड षष्ठ के अल्पमत में होने का बहुत लोलुपता के साथ लाभ उठा रहे थे। किन्तु इनका व्यक्तियों पर प्रभाव अवश्य पड़ता था। ट्यूडर काल के इंगलैंडवासी सब एक ही प्रकार के नहीं थे। उदीयमान जमींदार वर्ग के सदस्य व्यक्तिगत वकील, व्यापारी तथा बड़े किसान शिक्षा की अवस्था को सुधारने में काफी योगदान कर रहे थे। काम्डन ने एलिजाबेथ के राज्यकाल में उपिंघम, ओक्खाम तथा अन्य नगरों में नव प्रतिष्ठापित स्कूलों की चर्चा की है; एक जमींदार जोन ल्योन ने हैरों में लड़कों के लिये एक स्वतंत्र व्याकरण स्कूल की स्थापना की थी जहाँकि बड़ी कक्षाओं में ग्रीक (प्राचीन यूनानी भाषा) पढ़ाने की व्यवस्था की गयी थी। राजा जेम्स के शासन के प्रथम वर्ष में यॉर्कशायर में डेंट की घाटी के सुदूर समृद्ध प्रदेश में वहाँ के जमींदार 'राजनीतिज्ञों' से दान लेकर एक व्याकरण स्कूल स्थापित किया गया था और उसने शताब्दियों बाद तक कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने तथा उत्तर के लोगों ने अनेक उत्कृष्ट व्यक्तियों को प्रोफेसर एडाम सिजविक के काल तक आकृष्ट किया था। हॉक्सहैड का व्याकरण-विद्यालय, जहाँकि वड्स्वर्थ ने शिक्षा

गया था, यद्यपि जल्दी ही यह 'ब्लू कोट स्कूल' में रूपांतरित हो गया था। कुछ प्रार्थना-मन्दिरों के अस्पताल हेनरी अष्टम् ने नष्ट कर दिये थे, किन्तु सेंट थामस का 'बार्ट्स' तथा बेडलाम सुरक्षित रह गये थे तथा साधारण लोगों ने उन्हें पुनः प्रतिष्ठित किया था। अस्पताल के कोशों की समाप्ति निर्धनों के लिए प्रार्थना-मन्दिरों के कोषों की समाप्ति की अपेक्षा अधिक हानिकारक थी। क्योंकि अस्पताल निर्धनों की सहायता के लिये ही स्थापित किये गये थे और वहां ही बनवाये गये थे जहाँ उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

पाई थी, आर्क विशप सैंडी द्वारा एलिजावेथ के राज्यकाल में स्थापित किया गया था।

ट्यूडर युग का एक प्रतिनिधि 'नवमानव' निकोलास बेकन था जोकि फ्रांसिस बेकन का पिता तथा बरी सेंट एडमंड्स मठ के एक बड़े अधिकारी का पुत्र था। निकोलास बेकन कानून तथा राजनीति के सहारे उन अनेक फार्मों का स्वामी बन बैठा जिनपर उसके पिता ने महन्तों के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया था। उसने उन भूमियों पर एक निश्शुल्क व्याकरण-विद्यालय की स्थापना की और वहाँ से निकलने वाले विद्यार्थियों को कैंब्रिज में पढ़ने के लिए छात्रवृत्तियाँ दीं तथा कॉपर्स क्राइस्ट नामक अपने पुराने कालेज को बहुत से दान दिये। पहली बार कैंम्ब्रिज में वह अपने आजीवन मित्रों मैट्थ्यू पार्कर तथा विलियम सेसिल से मिला था जोकि आगे चलकर एलिजावेथ के राज्य में चर्च तथा राज्य के नेता बने। यह अपेक्षाकृत नया, तथा तब तक अभी अल्पविकसित, विद्यालय तीव्रता से प्रमुखता प्राप्त कर रहा था और इसके स्नातक उस काल के परिवर्तन में प्रमुख योगदान कर रहे थे।

नयी शिक्षा के प्रभाव में उत्पन्न नये लोगों ने जिस शिक्षा-पद्धति और आदर्शों को जन्म दिया उससे स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों की शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ गया। सेंट जोन् विद्यालय के ग्रीक भाषा पंडित जोन् चेके तथा रोजर अस्चाम का कैंब्रिज पर बहुत गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। शैक्सपीयर ने स्ट्रैटफोर्ड व्याकरण स्कूल में नयी प्रणाली के अनुसार प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया था। सौभाग्यवश यह शिक्षा उसे निश्शुल्क प्राप्त हो गयी, अन्यथा उसके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इसके लिये हम लोग स्ट्रैटफोर्ड स्कूल के मध्ययुगीन संस्थापकों के प्रति तथा इंगलैंड के नवोत्थान युग के सुधारकों के प्रति हृदय से आभारी हैं।

यदि हेनरी अष्टम् तथा एड्वर्ड षष्ठ द्वारा चर्च से छीनी गयी संपत्तियों को कैथोलिक परिवार खरीदने से इन्कार कर देते तो सम्भवतः उनके पुत्र-पौत्र उतनी अधिक संख्या में प्रोटेस्टेंट नहीं बनते। एलिजावेथ के युग में, जबकि विदेश से तीव्र कैथोलिक प्रतिक्रिया का इंगलैंड पर आक्रमण हुआ, तब मठों तथा प्रार्थना-मन्दिरों के स्वामियों ने अनुभव किया कि नवोत्थान आन्दोलन में स्वयं उनके स्वार्थ भी निहित हैं।[1]

शताब्दियों से चली आती प्रथा के अनुरूप ही ट्यूडर के सम्पूर्ण राज्य-काल में भी भूमि को स्थायी आलवालों के घेरने की प्रथा विभिन्न रूपों में जारी रही : यथा, खाली

---

[1] एड्वर्ड षष्ठ के काल में प्रार्थना-मन्दिरों की स्थिति के लिये द्रष्टव्य : पोल्लार्ड लांगमैन की—पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ इंगलैंड, जिल्द ६, १५४७ से १६०३, पृ० १५-२०; तथा लीच इंग्लिश स्कूल्स एट दि रिफार्मेशन।

पड़ी भूमि तथा जंगलों का खेती के लिये आवलयन, अच्छी व्यक्तिगत खेती के लिए खुले भू-खंडों में झाड़ियों की बाड़ लगा कर छोटे खेत बनाना, गांव की सांझी भूमि को आवलयित करना, तथा कृषि-योग्य भूमि को चरागाह के लिये आवलयित करना। आवलयन के इन सब प्रकारों से सम्पत्ति की वृद्धि होने में सहायता मिली, केवल कुछेक में ही निर्धनों से छल हुआ, अथवा जनसंख्या में कमी हुई। कुछ तो स्वयं कृषकों के सक्रिय सहयोग से ही आवलयित किये गये थे। कुछ का, विशेषत: सांझी भूमियों के आवलयन का, प्रतिरोध किया गया और विद्रोह तथा उत्पात भी हुए।

हेनरी सप्तम् के शासन में छोटे कृषकों के खेतों को चरागाहों के रूप में एकत्र कर देने के विरुद्ध बहुत हाहाकार मचा, क्योंकि यह वहां के निवासियों के लिये हानिकारक था तथा इसके कारण बहुत से गांवों को गिराना पड़ा। १४८९ तथा १५१५ में इस प्रथा को रोकने के लिये कानून बनाये गये और स्पष्टत: इनके कुछ परिणाम नहीं हुए। इसके बाद हेनरी अष्टम् के शासन के मध्य तथा अन्तिम वर्षों में जारी किये गये घोषणा-पत्रों आदि से यह स्पष्ट है कि कृषि-योग्य भूमियों को चरागाहों में रूपान्तरित करने तथा परिणामस्वरूप गांवों की जनसंख्या में ह्रास के कारण बहुत चिन्ता उत्पन्न हो गयी थी। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आलवाल बहुत विशाल स्तर पर नहीं लगाये गये, सिवाय कुछ मध्यप्रदेशीय जिलों में जहांकि अनुसूचना के लिये राजकीय प्रतिनिधियों को भेजा गया था। और मध्य प्रदेश में भी आलवाल, चाहे वे कृषि के लिये बनाये गये हों अथवा चरागाहों के लिये, बहुत कम बनाये गये होंगे, क्योंकि इन्हीं जिलों में अट्ठारहवीं शताब्दी में मध्ययुगीन सामन्तों के खुले क्षेत्र तथा सांझी भूमियां, कुछ अपवादों को छोड़कर, बिना आलवालों के ही पड़ी थीं और हेनरी-काल में संसद् के अधिनियमों द्वारा आवलयित किये जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। (कोन्नर : लैंड एंड एन्क्लोयर)।

किसी आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हाहाकार की मात्रा का निर्धारण कभी परिवर्तन की मात्रा और महत्व से निर्धारित नहीं होता बल्कि उस समस्या के प्रति तात्कालिक जनमत से होता है। उदाहरण के लिये, हम जनसंख्या-ह्रास का कोलाहल ट्यूडर के काल में बहुत पाते हैं, क्योंकि उस काल में यह एक बहुत अनिष्टकर समझा जा रहा था। इसलिये चरागाहों के लिये आलवालों की मोर, लैटीमर तथा अन्य सैंकड़ों लेखकों व कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों सम्प्रदायों के नेताओं ने निन्दा की। "पहले जितने में चालीस आदमियों की जीविका चलती थी उसे अब केवल एक आदमी और उसका चरवाहा सँभाले बैठा है"—ऐसा था उस काल में इसके विरुद्ध हाहाकार। उस समय ऐसे कुछ उदाहरण निश्चय ही थे, और यदि इनके विरुद्ध प्रतिक्रिया नहीं होती और परिणामस्वरूप राज्य कोई प्रतिकार नहीं करता तो ऐसे आलवाल और अधिक बनते। किन्तु ट्यूडर के काल में "ग्राम-जनसंख्या-ह्रास" बहुत कादाचित्क तथा स्थानीय था और इसकी क्षतिपूर्ति दूसरी जगह हो जाती थी।

अमरीकन खाद्य-सामग्री के आयात के कारण जब १८८० में "ग्रामीण-जन-ह्रास" राष्ट्रीय स्तर पर आरम्भ हुआ तब विक्टोरिया काल के लोगों को यह महत् सामाजिक विपत्ति एकदम स्वाभाविक और अतएव स्वीकार्य प्रतीत हुई और परिणामत: इसके प्रति वे अत्यधिक उदासीन रहे और इसके प्रतिकार के लिये उन्होंने कोई प्रयत्न नहीं किये। केवल हमारे काल में युद्ध के समय इस द्वीप के भूखे मरने के भय ने ग्रामीण जन-ह्रास की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जोकि इस समय उससे बीस गुणा अधिक है जितनी यह आज से चार शताब्दियां पूर्व थी, यद्यपि उस समय इस समस्या ने हमारे पूर्वजों का मन उतना ही व्यग्र कर रखा था जितना कि शायद सुधार आन्दोलन ने किया था।

सामाजिक तथा धार्मिक कारणों से उत्पन्न आक्रोश ने नॉर्फोक में (१५४९) कैट्ट को जन्म दिया, जबकि विद्रोही किसानों ने माउस होल्ड हीथ पर खेमे गाड़ लिये और उन जमींदारों की बीस हजार भेड़ें मार दीं जिन्होंने कि सांझी भूमि पर अनुचित रूप से बड़ी संख्या में अपनी भेड़ें रख दी थीं। किन्तु नार्फोक के लोगों में कृषियोग्य भूमि को चरागाहों में परिवर्तित करने के विरुद्ध कोई शिकायत नहीं थी, जहांकि एक ही पीढ़ी के बाद काम्डन ने लिखा था कि 'यह जिला खुले क्षेत्रों को आवलयित करने के लिये लगभग उत्सुक था', यद्यपि वह 'यहां के भेड़ों की बड़े झुंडों' की चर्चा भी करता है।

मठों के विलय ने किसान-विद्रोह की समस्या को कठिन बनाने में कोई बड़ा योगदान नहीं किया। किन्तु जैसाकि हम अभी देखेंगे, यह समस्या हेनरी के अपनी आर्थिक विपत्ति से बचने के लिए उठाये गये एक दूसरे कदम के परिणामस्वरूप बिगड़ गयी, यह कदम था मुद्रा का अवमूल्यन। इस विपत्ति का मूल वास्तव में अधिक गहरा था—यह निहित था ऐतिहासिक परिवर्तन की बढ़ती हुई प्रसूति-पीड़ा में। समाज अब किसानों में थोड़े किरायों पर वितरित विस्तृत खेतों की प्रणाली से, जो कि चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दियों में प्रचलित थी जबकि श्रम की अल्पता थी, चकों के क्रमश: बड़े तथा अधिक किराये वाले फार्मों में विलयन की ओर बढ़ रहा था। परिणामस्वरूप, कृषि का 'जीवन-निर्वाह मात्र के लिये पर्याप्त' रूप समाप्त हो गया और बाजार के लिये उत्पादन इसका कार्य हो गया। यह श्रेष्ठतर जीवन-विधि से अश्रेष्ठ जीवन-विधि की ओर संक्रमण रहा हो या नहीं रहा हो किन्तु यह ग्राम-प्रदेश का अपेक्षाकृत निर्धन स्तर से सम्पन्न स्तर की ओर संक्रमण अवश्य प्रमाणित हुआ। और द्वीप की बढ़ती जनसंख्या को भोजन देने के लिये, राष्ट्र की संपत्ति बढ़ाने के लिये तथा जीवन-स्तर उन्नत करने के लिये ऐसा कोई परिवर्तन आवश्यक था, और इस परिवर्तन को आधुनिक परिस्थितियां अन्तत: पुरातन जीवन-विधि को समाप्त करके लायीं।

सोलहवीं शताब्दी का इंगलैंड लघु किसानों को दासत्व के स्तर से उबारने की दृष्टि से जर्मनी और फ्रांस से बहुत आगे था जिसके बहुत थोड़े चिह्न हेनरी सप्तम् के काल में शेष रहे थे और एलिजाबेथ के राज्यकाल में बिल्कुल समाप्त हो गये थे। किन्तु

उस युग के कृषि-संबंधी परिवर्तन एक अन्य विकास-क्रम को आरंभ कर रहे थे जोकि स्वयं लघु कृषकों के लिये कम लाभकर था, क्योंकि ये लोग सत्रहवीं-अट्ठारहवीं शताब्दियों के क्रम में धीरे धीरे इस स्थिति से ऊपर उठ रहे थे और या तो बड़े कृषक हो रहे थे अथवा सामन्तों के घरों में पदाधिकारी अथवा बड़े फार्मों पर भूमिहीन श्रमिक, अथवा भूमि से पृथक्कृत नगर-श्रमिक बन रहे थे। ट्यूडर के काल में कृषि-जनों में असन्तोष इस दीर्घ प्रक्रिया की आरंभिक स्थितियों के विरुद्ध असन्तोष था। जिन परिस्थितियों में यह आरंभ हुआ उन पर यहां विचार करना आवश्यक है।

बहुत समय पहले, तेरहवीं शताब्दी में, लोगों में एक 'भूमि की भूख' थी—बहुत जनसंख्या थी और कृषि के लिये बहुत कम भूमि थी—और इसका भूमिपतियों को बहुत लाभ था। किन्तु, जैसाकि पहले कहा जा चुका है, अगली दो शताब्दियों में मुख्यतः प्लेग के कारण भूमि का आधिक्य हो गया और उस पर कृषि करने वालों की कमी हो गयी—और इसका लघुकृषकों को लाभ पहुंचा, जिन्होंने कि इन अनुकूल परिस्थितियों में अपने आपको दासता के स्तर से उबार लिया। और अब सोलहवीं शताब्दी में पुनः भूमि की भूख उत्पन्न हुई। मृत्यु दर के अनुपात में उत्पत्ति दर की मन्द प्रगति ने अन्ततः प्लेग के विनाशक प्रभाव की कुछ क्षतिपूर्ति की थी, यद्यपि इसके स्थानीय प्रकोप लंदन तथा अन्य नगरों को आक्रान्त करते रहते थे। केवल धनियों को कुछ काम की चिकित्सा मिल पाती थी, किन्तु उनके बच्चे भी जिस दर से मरते थे वह आज के माता-पिता को त्रासित कर देगी। किन्तु उस समय यह एक स्वाभाविक बात समझी जाती थी। किन्तु इस 'काल-तांडव' के बावजूद, जोकि उस काल के कलाकारों का एक प्रिय विषय था, जनसंख्या निरन्तर बढ़ रही थी, सम्भवतः सम्पूर्ण इंगलैंड में यह चालीस लाख तक पहुंच गई थी। परिणामतः ट्यूडर काल में पुनः उपलब्ध भूमि की तुलना में श्रमिकों का आधिक्य हो गया था, और तबतक अतिरिक्त व्यक्तियों को कार्य देने के लिये न तो अभी उपनिवेश ही बने थे और न उद्योगों का ही पर्याप्त विकास हुआ था। इसीलिये 'पुष्ट भिखारी' अस्तित्व में आए; इसीलिये वनों की बड़े स्तर पर कटाई की गई और परती भूमियों को, जोकि पन्द्रहवीं शताब्दी में जोतने से रोक ली गयी थीं, हल के नीचे लाया गया, इसीलिये जमींदारों को अधिक आर्थिक अवसर मिला कि वे भूमि का, जिसकी कि इतनी मांग थी, जैसा चाहे लाभ उठाते, और अपने पट्टेदारों से, पट्टे की सीमा में रहते हुए, अधिक लगान लेते।

जबकि भूमि की भूख ने जमींदारों को लगान तथा कृषि की विधि में परिवर्तन करने का अवसर दिया, मूल्यों में वृद्धि ने उसे इसके लिये बाध्य भी किया—यदि वह मरना नहीं चाहता था तो। १५०० तथा १५६० के बीच उन वस्तुओं के मूल्य, जो जमींदार की अपनी तथा अपने घर की आवश्यकताओं के लिये अनिवार्य थीं, दुगने से भी अधिक हो गये थे, खाद्य सामग्री का मूल्य तिगुने से भी अधिक हो गया था। इसलिये

विनाश से बचने के लिये जमींदार के लिये यह आवश्यक था कि वह लगान बढ़ाता, और उसका अन्य सब प्रकार से अधिक से अधिक लाभ लेने का प्रयत्न करता—कुछ अवस्थाओं में उस पर कृषि करने के बजाय चरागाह के रूप में उपयोग करता।[1]

किन्तु व्यापक क्रोध तथा धार्मिक भावुकता ने इस युक्ति को कोई महत्व नहीं दिया। कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेंट दोनों समान रूप से तब भी आर्थिक क्रियाओं को मध्ययुगीन कसौटियों पर कस रहे थे। उदाहरणतः व्यापारियों द्वारा उधार दिये जाने वाले पैसे पर ब्याज लगाने की दीर्घ-स्थायी परम्परा होने के बावजूद कानून तथा जनमत दोनों इसे अनुचित मानते थे। विधान वस्तुस्थिति से इतना पिछड़ा हुआ था कि १५५२ तक में भी संसत् ने कानून द्वारा ब्याज को "एक घृणीय पाप" के रूप में अवैध घोषित किया। अन्ततः, १५७१ में इस कानून को हटा दिया गया और १० प्रतिशत तक ब्याज को अपराध नहीं रखा गया।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि धर्मोपदेशकों, प्रचार-साहित्य-लेखकों तथा कवियों ने आलवालों को अनैतिक तथा अधिक लगानों को लूट और शोषण बताया। निस्संदेह, इनमें से कुछ अनुचित थे भी, किन्तु सामान्यतः जमींदार परिस्थितियों के दबाव में ही यह सब कर रहे थे। 'आर्थिक अनिवार्यता' ने अत्याचारी को और अधिक दमन के लिये वास्तव में एक बहाना ही दे दिया, और इस बहाने का पीछे की शताब्दियों में, जबकि "राजनैतिक अर्थनीति" नामक एक अप-विज्ञान (डिस्मल साईस) ने लोगों का मन अपने कठोर शासन के नीचे दबा रखा था, बहुत ही अनुचित लाभ उठाया गया। किन्तु इन प्रश्नों पर ट्यूडर के लेखन का अधिकांश भाग इसके विपरीत दोष से दूषित था और वह पर्याप्त आर्थिक नहीं था। उसने केवल व्यक्तियों की कलुष प्रवृत्ति को ही इसके लिये दोषी ठहराया और रोग के मूल कारण और उसके निदान पर कोई विचार नहीं किया।

---

[1] ट्यूडरों के शासन में मूल्य-वृद्धि तीन चरणों में हुई: (१) १५१०-१५४०: जर्मनी में चांदी के उत्पादन के कारण तथा हेनरी अष्टम् द्वारा हेनरी सप्तम् के संचित कोष मुक्त कर देने के कारण खाद्य पदार्थों की ३० प्रतिशत मूल्य-वृद्धि हुई, अन्य पदार्थों के मूल्यों में कम वृद्धि हुई। (२) १५४१-१५६१: हेनरी अष्टम् द्वारा मुद्रा का अवमूल्यन कर देने के कारण (और कुछ काल बाद अमरीका की चांदी की कानों के उत्पादन आरम्भ कर देने के कारण) सब प्रकार की वस्तुओं के मूल्यों में १०० प्रतिशत, अथवा अधिक भी वृद्धि हो गयी। (३) १५६१-१५८२: मेरी की अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत अच्छी होने के कारण तथा एलिजाबेथ द्वारा मुद्रा का मूल्य पुनः निर्धारित करने के कारण मूल्य स्थिर हुए, और इनकी वृद्धि की गति बहुत मन्द हो गयी। उसके बाद स्टुअर्ट के राज्य-काल के आरंभिक वर्षों में चांदी की अमरीकन कानों ने मूल्य पुनः बहुत ऊंचे कर दिये। १६४३-१६५२: उसके बाद मूल्यों में ह्रास हुआ।

किन्तु इसके अपवाद भी थे। एड्वर्ड षष्ठ के राज्यकाल में, जबकि सामाजिक अव्यवस्था पराकाष्ठा पर पहुँची हुई थी, लिखा हुआ "ए डिस्कोर्स आफ दि कामन वील" नामक एक सम्वाद उपलब्ध होता है। यह संवाद सब पक्षों के साथ उचित न्याय करते हुए सही वस्तुस्थिति का उद्घाटन कर सका और देख सका कि लगान पर मूल्य-वृद्धि का अनिवार्य प्रभाव क्या हो सकता था, और यह भी देख सका कि मूल्य-वृद्धि का कारण हेनरी द्वारा मुद्रा का अवमूल्यन करना था। एलिजावेथ के राज्यकाल के आरम्भ में थॉमस टस्सर वहुनिन्दित आलवालों की प्रशंसा में गीतात्मक हो उठा था :

"विभिन्न आमिषों की तथा उत्तम प्रकार के धान्य, मक्खन और पनीर की अतिशयता, और (संक्षेप में कहें तो) वह समृद्धि, और उतने समृद्ध तथा सुन्दर जन, जितने कि आप आवलयित भूमियों के क्षेत्र में प्राप्त कर सकते हैं, अन्यत्र कहाँ प्राप्त कर सकते हैं ? (फिर चाहे आप कहीं भी क्यों न घूम आएँ!)।

किन्तु उस समय हमें आवलयन की प्रथा का विरोध ही अधिक मिलता है, जो कि उचित रूप से उस वास्तव अन्याय के विरुद्ध लोगों को प्रकट करना चाहिए था जोकि सामन्त लोग निर्धनों पर उनकी सांझी भूमियों को अपने आलवालों में मिलाकर कर रहे थे। इसी प्रकार से जमींदारों पर भी व्यापक रोष था और उसमें कोई विवेक नहीं था। वे लोग उन्हें "गीधें और लोभी वगुले" कहते थे। किन्तु मूल्य-वृद्धि के कारण छोटे तथा बड़े कृषक अपनी उपज को पुरानी मुद्रा के हिसाव से दुगुने या तिगुने मूल्य पर वेचते थे जबकि उनके भूस्वामी को अपनी सब क्रीत वस्तुओं के लिये अपेक्षाकृत अधिक मूल्य देना पड़ता था।[1] तब यह कैसे सम्भव होता कि लगान न बढ़ते ? किन्तु वह समाज, जोकि अपने दृष्टिकोण में अभी मध्ययुगीन ही था, समझता था कि सामाजिक अर्थ-व्यवस्था का आधार प्रतियोगिता नहीं है वल्कि अनादि काल से चली आती प्रथाएँ हैं, यद्यपि मुद्रा के मूल्य में ह्रास और मूल्यों की तीव्र गति से वृद्धि प्रतिदिन पुरानी प्रथाओं को असंभव ही नहीं अनुचित भी बना रहे थे।

सामाजिक असन्तोष का कारण विभिन्न वर्गों पर मूल्य-वृद्धि के आपात की अनियमितता और आकस्मिकता थी। छोटे किसानों के एक वर्ग ने, जोकि सौभाग्यवश दीर्घकालिक पट्टेदारी की शर्तों पर अथवा कापीधारी शर्तों पर थे, और जिन्हें कानून से निकाला नहीं जा सकता था, अपनी उपज के इस तीव्रगति से वढ़ते मूल्यों का पूरा लाभ उठाया, क्योंकि उनके लगान नहीं बढ़ाये जा सकते थे। क्योंकि भूस्वामी सबके लगानों को उचित स्तर पर नहीं वढ़ा सकते थे इसलिये वे पट्टों के पुनर्नवीकरण के समय उन छोटे तथा बड़े किसानों के लगान अनुचित रूप से वढ़ा कर तथा उन पर भारी

[1] यद्यपि इस तथ्य का उल्लेख **दि डिस्कोर्स ऑफ़ दि कामन वील** में मिलता है, किन्तु उस काल में अन्य लेखकों ने इससे आँख ही मूँद रखी थीं।

जुर्माने लगा कर इसकी क्षतिपूर्ति करते थे, जो या तो वार्षिक पट्टे पर थे, अथवा जिनके पट्टे मृत्यु के कारण समाप्त हो जाते थे, अथवा कुछ वर्षों में समाप्त हो जाते थे। परिणाम यह हुआ कि किसानों का एक वर्ग तो लगान में एक पैसा भी अधिक दिये बिना धनार्जन कर रहा था, जबकि एक दूसरा वर्ग, जोकि इस बात के अतिरिक्त कि उसकी पट्टे खरीदने की तारीखें भिन्न थीं, अथवा उसके खेती करने के अधिकार का कानूनी रूप कुछ भिन्न था, इसलिए और भी अधिक दबाया जा रहा था कि कुछ अन्य किसानों से, उन्हें कानून का संरक्षण प्राप्त होने के कारण, अधिक लगान नहीं लिया जा सकता था। इस बीच में बड़े किसान, जोकि या तो कुछ लगान नहीं देते थे अथवा नहीं के बराबर लगान देते थे, अपने अनाज तथा पशुओं को उससे तीन गुणा मूल्य पर बेच रहे थे जितने में कि उनके पितामहों ने ये बेचे थे।

इस प्रकार से एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के राज्यकालों में जबकि कुछ लोगों ने बहुत उन्नति की, अन्य, *जिनमें अनेक सामन्त तथा अन्य कुलीन लोग भी थे, वास्तव* कठिनाई में थे, जिसका मुख्य कारण उनके पिता राजा का मुद्रा के साथ खिलवाड़ करना था। उसी कारण से भूमिहीन श्रमिकों को भी बढ़ते मूल्यों और वेतन के बीच की बढ़ती खाई का शिकार होना पड़ा।[1] किन्तु उस समय भूमि-हीन श्रमिक आज की अपेक्षा श्रमिक वर्ग का बहुत छोटा भाग थे, और क्योंकि एक सीमा तक उसको परिश्रमिक सामग्री के रूप में मिलता था इसलिये मुद्रा का मूल्य गिर जाने का उस पर उतना प्रभाव नहीं पड़ा। दूसरी ओर, शिल्पी, उत्पादनकर्त्ता तथा व्यापारी को मूल्य-वृद्धि से उतना ही लाभ हुआ जितना कि उस कृषक को जिसका लगान नहीं बढ़ाया जा सका था। अधिक सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि, मूल्य-वृद्धि से, जिसके कारण कि कुछ निर्धन हो गये और अन्य समृद्ध, नगरों तथा ग्रामों दोनों में व्यापार, उत्पादन तथा उद्यम को प्रोत्साहन मिला। रूढ़ि तथा स्थिर सम्बन्धों में जकड़े इंगलैंड को हटाकर एक साहस तथा स्पर्धा से आपूरित नवीन इंगलैंड को जन्म देने में इस मूल्य-वृद्धि का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

शताब्दी के समाप्त होने से पहले कुछ समय के लिये संतुलन स्थापित हो चुका था। एड्वर्ड षष्ठ के राज्य के अन्तिम वर्षों में एक वास्तव आर्थिक सुधार आरम्भ कर दिया गया था, जिसे कि मेरी ने भी जारी रखा, और एलिजाबेथ ने उसे चरमता तक पहुँचाया। यह महान रानी अपने राज्य के दूसरे वर्ष में ही (१५६०-१५६१) मुद्रा की शुद्धता को पुनस्स्थापित करने में सफल हो सकी। कुछ समय के लिये मूल्यों में स्थिरता लायी जा सकी। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे पट्टों के समय समाप्त होते गये,

---

[1] १५०१ तथा १५६० के बीच खाद्य वस्तुओं के मूल्य १००-से २९०-तक बढ़ चुके थे, जबकि स्थापत्य व्यापार में वेतन १००-से १६९-तक ही बढ़े थे। कृषि के वेतन नहीं बताए जा सकते।

लगान समंजस रूप से स्थिर होते गये। परिणामतः शैक्सपीयर के युग में कृषि-क्षेत्र में एक शान्ति का वातावरण था तथा समृद्धि और सन्तोष का सामान्य रूप से एक ऊँचा स्तर था, सिवाय ऐसे अवसरों के जबकि उपज अच्छी नहीं हुई होती थी।

जबतक यह नया सन्तुलन स्थिर हुआ तबतक कठिन परिस्थितियों के दबाव के कारण कुछ बड़े महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके थे। किसान, जिन्हें कि आधुनिक अर्थ में किसान कहा जा सकता है, अर्थात् जिनके पास अस्थायी पट्टों पर काफी एकड़ भूमियाँ थीं, पहले से अधिक संख्या में थे, और मध्य युगों के वे टिपिकल छोटे किसान अब कम संख्या में थे। तो भी छोटे किसानों की संख्या काफी थी और मध्य-भूमियों में बढ़िया कृषि-योग्य-भूमि के अधिकांश भाग पर अब भी खुले क्षेत्र की विधि से ही खेती हो रही थी

ट्यूडर राजाओं के कानून और आयोगों तथा न्यायालयों की सहायता से निरन्तर प्रयत्नों के कारण आवलयन के दुरुपयोगों पर कुछ रोक रही तथा परम्परागत छोटे किसानों के स्वार्थ उनके विरुद्ध सुरक्षित रह सके। किन्तु ये अनिवार्य परिवर्तन की मन्द प्रक्रिया को नहीं रोक सके।

इन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप "योमैन" नामक वर्ग पहले की अपेक्षा अधिक बृहत्, अधिक समृद्ध तथा अधिक महत्वपूर्ण था। योमैन नाम के अन्तर्गत कम से कम तीन भिन्न भिन्न वर्गों का समावेश होता था, और अब ये सभी समृद्ध थे : जो अपनी निजी भूमि पर, जिसपर इनका पूर्ण स्वामित्व था, कृषि करते थे; पूंजीपति किसान, जो कि स्वेच्छा से लगान पर कृषि करते थे, तथा वे किसान जिनके पास सौभाग्यवश अपरिवर्तनीय लगान पर पट्टेदारी अधिकार थे। इन तीनों प्रकार के योमैन संभवतः या तो झाड़ियों से आवलयित भूमियों पर खेती कर रहे थे या खुले क्षेत्रों के खंडों पर। इनमें से बहुतों की संपत्तियां पूर्णतः या अंशतः उनकी भेड़ों की ऊन से अर्जित की हुई थीं। योमैन की सर्वोत्तम प्रकार के अंग्रेज (इंगलिशमैन) के रूप में प्रशंसा तथा उसके ऐसे गुणों का आख्यान जैसेकि, "वह न तो सबलों के सामने झुकता है और न अपने दीन पड़ौसियों से घृणा करता है, कि वह प्रसन्न चित्त, अतिथि-सत्कार करने वाला तथा निर्भय है"—ट्यूडरों तथा स्टुअर्टों के काल के साहित्य का एक स्थायी विषय रहा है।

ये योमैन लोग राष्ट्र के वास्तव बल तथा रक्षा-स्रोत माने जाते थे। प्राचीन समयों में उन्होंने एगिंकोर्ट को जीता था और हाल ही में फ्लोड्डन को जीता था, और वे अब भी राष्ट्र की ढाल और कवच थे। "यदि इंगलैंड के योमैन लोग नहीं होते तो युद्ध-काल में हम आततायियों के अधीन होते। क्योंकि उन्हीं के सहारे इंगलैंड की सुरक्षा संभव हो सकी।" इंगलैंड के लोग गर्व से कहते थे कि अन्य देशों में ऐसा मध्य-वर्ग नहीं है, बल्कि उनके यहां केवल दमित कृषक वर्ग, सामन्त तथा उन्हें लूटने वाले सैनिक ही हैं।

अंग्रेज लोगों में व्यावसायिक सैनिकों के प्रति पहले से ही एक घृणा की भावना थी जिसका मुख्य कारण सामन्तों के आरक्षकों द्वारा शान्त किसानों पर अत्याचार की स्मृति थी। ट्यूडर राजाओं ने उस सब का दमन कर दिया था और उनकी अपनी कोई नियमित सेना नहीं थी : इसी कारण से वे इतने जनप्रिय थे। इंगलैंड के लोग अपनी स्वाधीनता के प्रति सजग थे और उसके लिये गर्व का अनुभव करते थे। यह स्वाधीनता अभी इस रूप में नहीं समझी जा रही थी कि उनका राजा लोकसभा के द्वारा शासन करता था, अथवा कि वे चर्च या राज्य किसी के भी विरुद्ध अपने विचार व्यक्त करने में स्वतन्त्र थे, वल्कि केवल यह कि वे सामन्तों अथवा राजा के दमन से निर्बाध अपना स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करते थे। एड्वर्ड षष्ठ के राज्यकाल में लिखी "दि डिस्कोर्स ऑफ़ दि कॉमन वील" पुस्तक में "गृहस्थी" तथा "व्यापारी" विचार-विमर्श कर रहे हैं कि क्या इंगलैंड में उपद्रवादि के दमन के लिये कोई नियमित सेना होनी चाहिए ?" गृहस्थ : ईश्वर की कृपा है कि हम में कोई ऐसे आततायी नहीं हैं, क्योंकि, जैसाकि लोग कहते हैं, ये लोग फ्रांस देश में शान्त-सरल लोगों की मुर्गियां, मुर्गियों के बच्चे, सूअर तथा अन्य वस्तुएं उठा ले जाते हैं और इनका कोई मूल्य नहीं देते, अन्यथा इससे भी अधिक अत्याचार हो सकता है क्योंकि वे उनकी स्त्रियों तथा बहनों का ही सतीत्व हरण करने पर उतर आते हैं।

व्यापारी : मेरी ! मैं समझता हूं कि यह तो विद्रोह की आग भड़क उठने का कारण होना चाहिए, न कि लोगों को इससे दब जाना चाहिए, क्योंकि इंगलैंड के लोग तो इस प्रकार के अपमान को कभी नहीं पचा सकते थे।

इंगलैंड का योमैन इस प्रकार की स्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता था।

नवीन युग न केवल योमैन को प्रमुखता की स्थिति में ही ला रहा था वल्कि छोटे भूस्वामियों (स्क्वायर्स) को भी प्रमुखता की स्थिति में ला रहा था। ये लोग मूल्य-वृद्धि के युग में अपने पारिवारिक आय-व्यय की कठिनाइयों के बावजूद समाप्त नहीं हुए और एलिजाबेथ के काल में ग्राम्य-जीवन में ये बड़े महत्वपूर्ण हो गये। गांवों के जमींदारों की सम्पत्ति और शक्ति दोनों ही काफी मात्रा में बढ़ गयी थीं, जिसका कारण अंशतः तो यह था कि उन्हें मठों की भूमियां सस्ते में मिल गयी थीं और अंशतः इस कारण से कि उनकी जागीरों की कृषिपरक अर्थ-व्यवस्था में परिवर्तन आ गये थे। ये परिवर्तन वे एक ओर भूमि की मांग बढ़ जाने के कारण से ला सके और दूसरी ओर मूल्य-वृद्धि के कारण लाने को बाध्य हुए। बहुत से अन्य लोगों के भूमियों के अतिरिक्त भी कुछ स्वार्थ थे, जैसे वस्त्र-व्यापार में। इसके अतिरिक्त कि इनकी सम्पत्ति में अत्यधिक वृद्धि हुई, इनसे उच्चतर वर्गों, जैसे सामन्तों, महन्तों और अन्य बड़े मठाधिकारियों के समाप्त हो जाने से इनके सामाजिक महत्व में भी अपेक्षाकृत वृद्धि हुई। जो भू-स्वामी ज़िलों पर राजा की ओर शान्ति-पालों के रूप में शासन कर रहे थे उन्हें अब

अपने कार्यों में "अत्यधिक महिमाशाली प्रजाओं" अथवा उनके सैनिकों के हस्तक्षेप से डरने की आवश्यकता नहीं रही थी। पुराने सामन्त कुल, जिन्होंने कि इंगलैंड के राजाओं को विक्षुब्ध और त्रस्त कर रखा था, रोसेस के युद्धों में राज्य द्वारा भूमियां जब्त हो जाने के कारण शक्ति और प्रभाव खो चुके थे, और ट्यूडर राजाओं की उनके वर्ग का निरन्तर दमन करने की नीति रही। पुराने ढंग के अन्तिम बचे सामंतों का प्रभाव स्कॉटलैंड की सीमा के पास बना रहा जहांकि यह प्रसिद्ध था कि "यहां कोई राजा नहीं है बल्कि केवल पर्सी है।" उन्हें भी एलिजाबेथ ने उत्तरी सामन्तों के १५७० विद्रोह के समय समाप्त कर दिया। इंगलैंड के अन्य भागों में ऐसे अर्ध-प्रभुत्व-सम्पन्न सामन्त बहुत पहले समाप्त हो चुके थे।

जिन कुलों को ट्यूडरों ने इनके स्थान पर ऊपर उठाया, जैसे रसल, केवेंडिश, सेमूर, बेकन, डुड्ले, सेसिल तथा हर्बर्ट वे इस कारण से महत्व में नहीं आये कि वे बड़े सामन्त थे बल्कि इसलिये कि ये राजा के उपयोगी सेवक थे। उनका सामाजिक भ्रातृत्व भूस्वामियों के उदीयमान वर्ग के साथ था, जिनमें से कि उनका उद्भव हुआ था और वास्तव में अब भी जिनके वे एक भाग ही थे, चाहे अब वे राज्य के पीअर (लार्ड) भी बना दिये गये थे।

पुराने सामन्तों को राजनैतिक ही नहीं आर्थिक कारण भी कष्ट दे रहे थे। मुद्रा के अवमूल्यन से उन्हें भूस्वामियों से भी अधिक हानि हुई क्योंकि वे अपनी सुदूर विस्तृत सम्पत्तियों की व्यक्तिगत रूप से संभाल कर सकने में असमर्थ थे और वे अपनी भूमियों से असामियों को निकालने में, पट्टों को समाप्त करने में, जुर्माने लगाने में तथा लगान बढ़ाने में छोटे भूस्वामियों की अपेक्षा मन्द थे। ट्यूडर काल में, उसे समग्र रूप में लेते हुए, छोटे भूस्वामियों ने उन्नति की जबकि सामन्तों का ह्रास हुआ।

इंगलैंड के भूस्वामियों का एक विशिष्ट गुण, जिसने विदेशी यात्रियों को बहुत प्राचीन काल में ही (अर्थात् हेनरी सप्तम् के युग में) आश्चर्यान्वित किया था वह था उनका अपने छोटे पुत्रों को अपनी आजीविका खोजने के लिये अपने जागीरगृह से बाहर नगर में या तो बड़े व्यापारियों के पास अथवा शिल्पियों के पास शागिर्दी के लिये भेज देना। विदेशी लोग इस प्रथा का कारण इंगलैंड के लोगों में पारिवारिक स्नेह का अभाव समझते थे। सारी भूमि तथा अधिकांश धन बड़े पुत्र को दे देने की प्रथा के कारण इंगलैंड में बड़ी संपत्तियों का निर्माण हुआ, जोकि क्रमशः संचित होती हुई हेनरी-युग तक इंगलैंड की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता बन गयीं।

ट्यूडर-काल के जमींदारों के छोटे बेटों को भू-संपत्ति में बेकार घूमने की आज्ञा नहीं दी जाती थी और इस प्रकार संपत्ति पर बोझ नहीं बनने दिया जाता था, जैसाकि यूरोप के अन्य देशों के सामन्तों में था, जोकि कुलाभिमान के कारण कार्य नहीं कर सकते थे और इस प्रकार निरन्तर निर्धन होते चले जा रहे थे। इंगलैंड के भूस्वामियों

के लड़के व्यापार या कानून में धनार्जन करते थे। वे प्रायः ही अपने उन बड़े भाइयों की अपेक्षा, जोकि अपने पिता की संपत्ति के उत्तराधिकारी होते थे, अधिक सम्पन्न तथा अधिक प्रभावशाली हो पाते थे। इन लोगों ने अपनी स्वयं की भूमियां खरीदीं और अपने घरानों की स्थापना की, क्योंकि उनका लालन-पालन गांवों में ही हुआ था और इसलिये वे गांवों को ही लौटना चाहते थे।

विदेशी लोग अंग्रेज भूस्वामियों के ग्राम-जीवन से प्यार पर भी चकित थे। वे कहते थे कि, "प्रत्येक कुलीन अंग्रेज गांव की ओर ही भागता है। बहुत कम ही नगरों या कस्बों में रहते हैं, और बहुत कम ऐसे हैं जिन्हें इनके प्रति कोई आकर्षण है।"[१] लंडन चाहे उस समय यूरोप का सबसे बड़ा नगर ही रहा हो, किन्तु इंगलैंड अपने व्यवहार तथा अनुभूति दोनों में मूलतः एक ग्रामीण समाज ही था, जबकि फ्रांस तथा इटली में उनकी नगर-संस्कृति को रोम की संस्कृति ने गंभीर रूप से प्रभावित किया था। और यह आसपास के प्रदेश के जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही थी। इंगलैंड के भूस्वामी ब्राउनिंग द्वारा वर्णित इटली के 'संस्कृत भूस्वामियों' के समान अपने ग्राम-निवास में बाध्यतावश पड़े व्यथित लोग नहीं थे—

"यदि वहीं मेरे पास पर्याप्त धन होता, इतना कि कुछ बचा कर भी रखा जा सकता, तब तो मैं अपना घर किसी नगर के महत्वपूर्ण भाग में बनाता।" इंगलैंड के भूस्वामी का स्थान, चाहे वह निर्धन था या धनी, अपने गांव की भू-संपत्ति में ही था, और वह इस बात को जानता तथा इससे प्रसन्न था।

भूस्वामियों में अपने छोटे लड़कों को शागिर्दी के लिये भेजने की प्रथा के कारण हमारा देश सामन्तों तथा विशेषाधिकार-रहित अन्य धनिकों के बीच कठोर जाति-भेद की बुराई से बच गया, जिसने कि फ्रांस के प्राचीन राजतन्त्र को १७८९ में ध्वस्त कर दिया। फ्रांस से भिन्न इंगलैंड के भूस्वामी अपने आपको 'नोबल' (कुलीन) नहीं कहते थे, सिवाय हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स (राज्य सभा) में बैठने वाले थोड़े से लोगों के। भू-स्वामी परिवार, जिसका आतिथ्य अनेक विभिन्न वर्गों के पड़ोसियों और मित्रों को सहज उपलब्ध होता था, यह स्वीकार करने में लज्जित अनुभव नहीं करता था कि उनका एक पुत्र व्यापार में है, दूसरा न्यायालय में वकील है, और तीसरा शायद पारिवारिक जीवन में है। यह संभव है कि 'भूस्वामी' तथा 'पूंजीपति' परस्पर स्पर्धियों के समान बात करते रहे हों, किन्तु वास्तव में वे रक्त तथा स्वार्थों में परस्पर सम्बद्ध थे। भूस्वामी वर्ग के लोग निरन्तर नगर-जीवन में प्रवेश कर रहे थे जबकि नगर से धन तथा जन ग्राम-जीवन को समृद्ध बनाने के लिये निरन्तर उस ओर लौट रहे थे।

ट्यूडरों, स्टुअर्टों तथा हेनरियों के सम्पूर्ण राज्य-काल में जो 'नवीन' लोग भूमियां

---

[१] **स्टार्केज इंगलैंड**, टेम्प. एच. ८, इ. इ. टी. एस., पृ० ९३।

खरीद कर और भूसंपत्ति-गृह-निर्माण कर गांवों में प्रवेश कर रहे थे उनमें बहुत बड़ा भाग उन वकीलों का था जो अपने व्यवसाय में पर्याप्त सफल रहे थे। इंगलैंड के कुलीन वंशों की स्थापना वकीलों ने वस्त्र-व्यापारियों से भी अधिक संख्या में की। यह प्रक्रिया मध्य युगों में आरम्भ हुई थी : नार्फोक के पास्टनों की संपत्तियां हेनरी षष्ठ के जजों ने स्थापित की थीं। और हेनरी अष्टम् तथा उसके उत्तराधिकारियों के अव्यवस्था, मुकदमेबाजी तथा लोलुपता से पूर्ण युग में कानूनी पेशे के लोगों के लिये सम्पन्नता का पथ और अधिक प्रशस्त हो गया जबकि साहसिक स्वभाव के वकीलों को राज्य की सेवा करने के तथा उसका पूरा लाभ उठाने के अद्वितीय अवसर प्राप्त हो सके; विशेषतः जबकि, जैसे बेकनों तथा सेसिलों के युग में, कानून राजनीति तथा दरबारीपन से घुला मिला था। ट्यूडर युगीन सुन्दर घरों में से बहुत से घर, छोटे और बड़े दोनों, जोकि अब भी इंगलैंड के प्राकृतिक सौन्दर्य को अलंकृत कर रहे हैं, कचहरियों में कमाए धन से ही बनाये गये थे।

बड़े भूस्वामियों, मध्यम श्रेणी के भूस्वामियों, वकीलों तथा व्यापारियों में बहुत कुछ समानता थी। वे सब नये युग के लोग थे, और अतएव वे बीते हुए सामन्तयुगीन आदर्शों के पीछे नहीं भटकते थे। रुचि और विश्वास दोनों ही दृष्टियों से उनका झुकाव प्रोटेस्टेंटवाद की ओर था। उन्होंने एक प्रकार से गृह्य धर्म का विकास किया जोकि स्वरूपतः एक 'मध्यवर्गीय' धर्म था और मध्ययुगीनता से बहुत भिन्न था।

प्रोटेस्टेंट सिद्धान्त मध्ययुगीन 'धर्म' के ब्रह्मचर्य तथा संसार-त्याग के आदर्शों की प्रतिक्रिया में गृहस्थ-जीवन तथा व्यापारिक जीवन को महत्व देता था। एड्वर्ड षष्ठ तथा एलिजाबेथ के काल में पादरियों को विवाह करने के लिये दी गई स्वीकृति इस परिवर्तन का चिह्न थी। प्रोटेस्टेंटों का आदर्श धार्मिक गृह था जिसमें चर्च के सत्संग-आदि के अतिरिक्त पारिवारिक प्रार्थना तथा व्यक्तिगत बाइबल-पाठ को प्रोत्साहन दिया गया था। ये विचार तथा कर्म-कांड केवल विद्रोही शुद्धाचारवादियों तक ही सीमित नहीं थे : ट्यूडर काल के अन्त में तथा स्टूअर्ट काल में ये इंगलैंड के चर्च के उन अनुगामी युगों के परिवारों के कार्य भी थे जोकि प्रार्थना-पुस्तक को प्यार करते थे और जो इसके लिये लड़े भी थे। घर तथा बाइबल का धर्म इंगलैंड के सब प्रोटेस्टेंटों की एक सामान्य सामाजिक परम्परा बन गया। इसका अधिकांश प्रचार सम्भवतः बड़े और छोटे भूस्वामियों तथा व्यापारियों में था किन्तु यह निर्धनों की झोंपड़ियों में भी काफी मात्रा में था।

नये प्रकार के आंग्ल धर्म ने कार्य के आदर्शों की प्रतिष्ठा की तथा व्यापार और कृषि को ईश्वर को समर्पित किया। जैसाकि जार्ज हर्बर्ट ने सुचारु तथा उत्तम ढंग से लिखा था :

जो तेरा विधान मान कर कमरा साफ करता है

वह उसे तथा अपने कर्म दोनों को उत्कृष्ट बनाता है।

दुकानदारों तथा किसानों के राष्ट्र के लिये यह एक बहुत उपयोगी धर्म था।

इन विचारों का, जिनका प्रचार अनुगामी शताब्दी में बहुत व्यापक रूप से हो गया था, बीजारोपण हेनरी षष्ठ तथा उसकी बड़ी बहिन के राज्यकाल में हुआ जिस समय कि क्रान्मर बाइबल की सहगामिनी होने वाली प्रार्थना-पुस्तक का निर्माण कर रहा था तथा महारानी मेरी इंगलैंड के प्रोटेस्टेंटवाद को बलिदान का इतिहास दे रही थी। हेनरी अष्टम् की पादर-विरोधी क्रान्ति, जिसमें कि चर्च की सम्पत्तियों का निरन्तर अपहरण हुआ, किसी नैतिक औचित्य से रहित थी, किन्तु फॉक्स की पुस्तक में वर्णित बलिदानकारियों ने अव्यवस्था में से उठते हुए नवीन जातीय धर्म को यह आधार प्रदान किया था। जब एलिजाबेथ ने राज्यारोहण किया तब नवीन सामाजिक व्यवस्था को बौद्धिकता तथा आध्यात्मिक आधार बाइबल और प्रार्थना-पुस्तक से प्राप्त हुआ।

किसी देश की संस्थाएँ उसकी सैनिक व्यवस्था में भी प्रतिबिम्बित होती हैं। शतवर्षीय युद्ध-काल में इंगलैंड में दो सैनिक व्यवस्थाएं थीं। भीतरी विद्रोह तथा स्काटलैंड के आक्रमण के प्रतिरोध के लिये स्थानीय सैन्य-दल होते थे जो कि अनिवार्य भर्ती के द्वारा संगठित किये जाते थे। फ्रांस के कठिनतर युद्ध के लिये, जिसके लिये अधिक व्यावसायिक सैनिकों की आवश्यकता थी, सामन्तों तथा भूस्वामियों द्वारा संगठित युद्ध-दल थे जिन्हें वही वेतन देते थे। राजा इनके वेतन-दाताओं से इकरार-नामे पर आवश्यकतानुसार सैनिक लेता था और पैसा देता था। यह द्वैध व्यवस्था हेनरी सप्तम् तथा अष्टम् के काल तक जारी रही, सिवाय इस अन्तर के कि पुराने सामन्त वर्ग की भूसंपत्ति तथा सैनिक शक्ति के रोसेज के युद्धों में जब्त कर लिये जाने के बाद इस इकरारनामे का वास्तव मूल्य समाप्त हो गया था। वास्तव में स्वतन्त्र व्यक्तियों से विदेशी युद्धों के लिये सेना लेने के सम्बन्ध में संधि करने की नीति ट्यूडरों की शक्तिशाली व्यक्तियों की सेनाएं तथा अन्य शक्ति-स्रोत समाप्त करने की नीति के उलट थी। किन्तु क्योंकि राजा लोग अपनी स्वयं की एक स्थायी सेना रखने की स्थिति में नहीं थे इसलिये विदेशी युद्धों के लिये तत्काल अनिवार्य भर्ती से बनाई गयी सेनाएं अनुशासन-रहित, विद्रोही और प्रायः ही अनुपयोगी होती थीं, जैसाकि ट्यूडर काल के यूरोप के युद्धों ने पीछे अनेक बार प्रमाणित किया था। स्थायी तथा वफादार सैन्यदल, जोकि क्रेसी तथा एगिंकोर्ट के युद्धों में महान् सामन्त-सेनापतियों के नेतृत्व में लड़े थे, अब नहीं बचे थे, और अभी तक कोई राजकीय सेना थी नहीं।

इंगलैंड की धनुर्-सेना अभी तक इतनी अच्छी थी कि अब तक आग्नेयास्त्र उसे विस्थापित नहीं कर सके। फ्लोड्डन को धनुर्-सेना ने ही विजित किया था। पदाति सेना के लिये धनुष और एक प्रकार के गंडासे, तथा अश्व-सेना के लिये भाले, यह अब

भी एकमात्र प्रचलन था। तोप सेना, जिस पर कि राजा का अपने शासित प्रदेश में एकमात्र अधिकार था, अब एक महत्वपूर्ण सैन्य थी जोकि केवल घेरा डालने के लिये ही प्रयुक्त नहीं होती थी बल्कि विद्रोहियों और स्कॉटलैंडवासियों के विरुद्ध भी प्रयुक्त होती थी, उदाहरणतः लूसकोट फील्ड तथा पिंकी क्लयूफ में। इन परिस्थितियों में प्रजातांत्रिक अनिवार्य भर्ती से संगठित सैन्य राजा को आन्तरिक दृष्टि से सुरक्षित बनाने के लिये पर्याप्त थी, जब तक कि उसकी नीति बहुत अधिक लोक-अप्रिय हुई। किन्तु वह यूरोप में विजयों के लिए अपर्याप्त थी।

जबकि राजकीय स्थल-सेना अस्तित्व में नहीं थी, राजकीय नौ-सेना निरन्तर सशक्त हो रही थी। अब युद्ध के दिनों में अनिवार्य भर्ती के व्यापारिक जहाज़ों से कार्य नहीं चल सकता था। हेनरी अष्टम् को 'इंगलैंड की नौ-सेना का पिता' कहा जाता है, यद्यपि सम्भवतः हेनरी सप्तम् भी इस श्रेय के लिये दावा करे। नौ-सेना को अब पृथक् सरकारी विभाग के अधीन कर दिया गया था और राजकीय वेतन पर इसे एक स्थायी सेना बना दिया गया था। हेनरी अष्टम् ने इस योजना पर बड़ी मात्रा में राजकीय तथा मठीय धनराशि व्यय की। उसने न केवल राजकीय जहाज़ों का निर्माण किया बल्कि वूलविच में जहाज़ों के ठहरने के लिये स्थान बनवाए, जहाँकि थेम्स के सागर-संगम के कारण बनी खाड़ी होने से अकस्मात् आक्रमण कठिन था। उसने पोटर्स मौथ को नौ-सेना के अड्डे के रूप में विकसित किया और फाल्मौथ रोड्स के समान बहुत सी बन्दरगाहों को सुरक्षित बनाया।

केवल युद्ध के लिये एक स्थायी नौ-सेना का निर्माण विशेष रूप से महत्वपूर्ण कार्य था, क्योंकि अब २००० वर्ष बाद नौ-युद्ध कौशल एक नवीन युग में प्रवेश कर रहा था। जहाज़ पर तोप रखना आरम्भ हो जाने के कारण अब नौ-युद्ध का स्वरूप मूलतः ही बदल गया क्योंकि अब केवल जहाज़ों की परस्पर मुठभेड़ का स्थान तोप-सेनाओं की पैंतरबाज़ी ने ले लिया, जिन्होंने कि अपना प्रथम शक्ति-परिचय १५८८ के स्पेन के नौ-सेना आक्रमण के विरुद्ध दिया। इस नवीन कौशल में योग्यता प्राप्त कर लेने के कारण इंगलैंड निकट भविष्य में सागर-शक्ति तथा साम्राज्य प्राप्त करने वाला था, और हेनरी अष्टम् की नौ-नीति ने सर्व-प्रथम इसे इस विजय के पथ पर अग्रसर किया।

बहुत आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद ट्यूडर काल के आरम्भ से मध्य युगों तक जीवन-स्तर धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। एलिजाबेथ के राज्य में अधिक स्पष्ट प्रगति की एक व्यापक चेतना का प्रसार लोगों में हो गया था। पार्सन विलियम हैरिसन ने १५७७ में घर के सामान्य रहन-सहन का स्तर ऊँचा होने की सूचना दी है, जोकि उसके पिता के काल से ही हो चुका था, और यह "केवल सामन्तों और जमींदारों में ही नहीं हुआ था बल्कि हमारे दक्षिण के ग्राम-प्रदेश के निम्नतम स्तर के लोगों में भी हुआ था।" उसने लिखा :

"हमारे पिताओ, तुम और स्वयं हम भी प्रायः सदा से फूस की छतों के नीचे फूस के बिस्तर पर सोते रहे हैं, और केवल ओढ़ने के लिये एक चादर हमारे पास होती थी और सिर के नीचे सिरहाने के स्थान पर मोटी-गोल लकड़ी होती थी। यदि कभी घर के किसी बड़े आदमी के पास नीचे बिछाने के लिये टाट होता या बुरादे से भरा सिरहाना होता तो वह अपने आपको अच्छे भू-स्वामी के बराबर समझता था। सिरहाने तो केवल छोटी लड़कियों के लिये ही होते थे। जहाँ तक नौकर का प्रश्न है, यदि उनके ऊपर कोई चादर होती तो यही गनीमत समझा जाता, क्योंकि धारण करने के लिये तो प्रायः ही किसी के पास वस्त्र नहीं होता था जो उन्हें फूस की चुभन से बचा सकता, जो कि उनकी फूस की झोंपड़ियों में बिखर जाती थी और उनके सूखे शरीर में चुभती थी।"

फूस ही फर्श पर होता था और फूस ही बिस्तर पर, जहाँ खटमल आदि को पलने और पनपने का उत्कृष्ट अवसर मिलता था। कुछ खटमल प्लेग के कीटाणुओं के वाहक भी होते थे।

हैरिसन ने यह भी उल्लेख किया है कि "झोंपड़ियों में भी चिमनियों की काफी बहुतायत हो गयी है जबकि उस गांव में, जहाँ मैं रहता हूं, बूढ़े लोग याद किया करते थे कि 'उनकी जवानी के दिनों में' दोनों हेनरी राजाओं के काल में गांव में दो या तीन से अधिक चिमनियाँ कभी नहीं होती थीं। यदि इतनी भी कभी होती थीं तो धार्मिक मन्दिर तथा भूस्वामियों के घरों में तो चिमनी बिल्कुल ही नहीं होती थीं। सभी लोग आग हाल कमरे में बनी अंगीठी में जलाते थे जहाँकि वे खाना खाते थे। अंगीठी में लकड़ी के स्थान पर कोयले का प्रयोग बढ़ जाने के कारण चिमनी न लगाना और अधिक कठिन हो गया था, और ईंटें सुलभ हो जाने से चिमनियाँ बनाना आसान भी हो गया था, चाहे दीवारें किसी और चीज की भी बनी होतीं।"

सामान्य घर और झोंपड़ियां अब भी लकड़ी के ही बने होते थे, अथवा आधी लकड़ी के बने होते थे, जिनमें लकड़ी के पट्टों और शतीरों के बीच गारा भर दिया जाता था। अच्छे घर, विशेषतः पथरीले भागों में, पत्थर ही के थे। किन्तु ईंट अब धीरे-धीरे पहुँच रही थी यह सर्वप्रथम उन प्रदेशों में पहुँच रही थी जहाँ पत्थर स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं था और वन कट जाने के कारण इमारती लकड़ी की कमी थी—यह अवस्था मुख्यतः पूर्वीय जिलों में थी।

हैरिसन अपने स्वयं के जीवन-काल में भी परिवर्तन का उल्लेख करता है "लकड़ी की थालियों के बजाय जिस्त की प्लेटें तथा लकड़ी के चमचों के स्थान पर चाँदी या टीन के चमचे।"

छुरी कांटों का युग अभी नहीं आया था; जहां चाकू और चम्मच से काम नहीं चलता था वहां महारानी एलिजाबेथ को भी मुर्गे की हड्डी हाथ में जोर से पकड़ कर

चबानी पड़ती थी। उसके राज्यारोहण तक "एक किसान के घर में जिस्त के चार बर्तन मिलना भी कठिन कार्य था। चीनी के बर्तनों का तो तब तक कोई प्रश्न ही नहीं था।

ट्यूडरों के आरम्भिक काल में घर के सामान आदि की इतनी पिछड़ी हालत थी। पिछले सम्पूर्ण युगों में वे ऐसी ही, या इससे भी बुरी अवस्था में, रह रहे थे। किन्तु अब वस्तुस्थिति में एक स्पष्ट उन्नति दिखाई दे रही थी, जैसाकि एलिजावेथ काल के एक पादरी के विवरण से स्पष्ट है। हमें अतीत को, विशेषतः सुदूर अतीत को चित्रित करते हुए उन सुख-सुविधाओं के अभाव का उल्लेख करना कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्हें हम आज स्वाभाविक समझते हैं। किन्तु ये सुविधाएं परिवर्तन की मंद प्रक्रिया द्वारा सर्व-साधारण बन जाती हैं, जिसमें से कुछ को, जैसे नवीन कृषि-व्यवस्था को, हम अनुचित समझते हैं—इस दृष्टि से कि ये कुछ दृष्टियों से निर्धनों के प्रति अन्यायपूर्ण थीं।

यह कहा जा सकता है कि, हेनरी अष्टम् के राज्य में गोथिक वास्तुकला क्राइस्ट चर्च, आक्सफर्ड के वोल्से हाल के निर्माण में तथा केम्ब्रिज के किंग्स कालेज के चैपल की गुम्वदाकार छत के निर्माण में अपनी भव्यता के शिखर पर पहुँच कर ह्रास की ओर उन्मुख हो गयी थी। तव नये युग का प्रादुर्भाव हुआ। इटली के कलाकारों ने हैम्प्टन कोर्ट के नवीन वर्गाकार हाल को रोम के सम्राटों की टैराकोटा शैली में बनी आवक्ष प्रतिमाओं (बस्ट्स) से अलंकृत कर दिया।

ट्यूडर काल चर्च-निर्माण का काल नहीं था वल्कि भिक्षु-विहारों के चर्चों के पत्थर और कांच 'बड़े भूस्वामियों के आसन-मंचों' के लिये अथवा मध्ययुगीय भूस्वामियों के नव युगीन फर्मों के लिये उपयोग में ले लिये गये थे। जमींदार-प्रासादों में, जोकि अब सभी जगह या तो नये बनाये जा रहे थे अथवा वड़े किये जा रहे थे, वड़े-बड़े कमरे, प्रकाश के उत्कृष्ट प्रबन्ध से युक्त गलियारे, तथा छोटे गवाक्षों के स्थान पर जालीदार बड़ी खिड़कियाँ ट्यूडर के युग की शान्ति तथा समृद्धि की घोषणा कर रहे थे। अधिकांश बृहत् जमींदार-प्रासादों का रूप अब इस प्रकार से था—एक घिरा हुआ आंगन, जिसमें जाने का रास्ता प्रायः ईंट के बने अत्यन्त बृहदाकार स्तूप में से होता था। एक सन्तति के बाद, एलिजावेथ के राज्यकाल में, जवकि घरों की सुरक्षा का प्रबन्ध करने की आवश्यकता लोगों के मन से और भी अधिक अच्छी तरह से मिट गयी थी, केवल तीन ओर घिरा हुआ खुला आंगन वनाने अथवा ईंट के आकार का वनाने का प्रचलन अधिक हो गया था।

कुछ थोड़ा भी इस स्तर का दावा करने वाले जमींदार-प्रासाद में हिरणों का एक वन होता था जिसमें स्थान-स्थान पर सुन्दर वृक्ष लगे होते थे और जो सभी ओर से लकड़ी के आलवाल से घिरा रहता था। कुछ में दो वन होते थे, एक भूरे रंग के

हिरणों के लिए और दूसरा लाल रंग के हिरणों के लिये, और परिणामतः कृषि-योग्य भूमि कम रह जाती थी, अथवा, कुछ अवस्थाओं में, सांझी भूमि में अपहरण की स्थिति भी आ जाती थी। शिकार की सुबहों को घंटियां बंधे हुए कुत्ते आलवाल के चौगिर्द चक्कर लगाते हिरणों का पीछा करते थे जबकि महल के भूस्वामी और स्त्रियाँ तथा उनके अतिथि घोड़ों की पीठ पर उनका आराम से पीछा करते थे—और वृद्धा माता घर पर ठहरती तथा प्लेटो की पुस्तक पढ़ती थी। लाल हिरणों के बड़े-बड़े झुण्ड पेन्नाइन, केविग्रट तथा उत्तरी झाड़ीदार प्रदेशों में मिलते थे। दक्षिण में भूरे हिरण जंगलों में खुले घूमते थे और फसलें खराब कर जाते थे। आलवाल का एक लाभ यह भी था कि रात के समय इनके आक्रमण से खेतों की रक्षा हो सकती थी।

सामान्यतः लोमड़ी का शिकार नहीं किया जाता था : अधिकांशतः किसान लोग लाल चोर को जितना चाहे मारने के लिये स्वतन्त्र थे।[1] जमींदार लोग हिरणों का शिकार करते थे और सभी लोग, घोड़े पर या पैदल, खरगोशों का शिकार करते थे। घुड़सवार और शिकारी कुत्ते तीव्रगामी युवा हिरणों का दूर दूर तक पीछा करते थे। दूसरे के क्षेत्र में हिरण का शिकार करना उस समय के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष था, आक्सफर्ड के विद्यार्थी रैड्ले के पार्क में खुले आम शिकार करते थे जबतक कि स्वामी सब आशाएं छोड़कर अपने आलवालों को गिराने को बाध्य नहीं हो जाता था। जहांतक पक्षियों के शिकार का प्रश्न है, यद्यपि बाज और तीतर आदि अब भी इसके मुख्य साधन थे, किन्तु कभी कभी छर्रों की बन्दूक का प्रयोग भी किया जाता था।[2] पशु-पक्षियों के विविध ढंग से शिकार न केवल उपभोग के लिये किये जाते थे बल्कि केवल मनोरंजन के लिये भी किये जाते थे।

इंगलैंड के लोग अनेक प्रकार के, और बड़ी संख्याओं में, घोड़े तथा कुत्ते रखने के लिये यूरोप भर में बदनाम थे। किन्तु घोड़ा तबतक अभी एक भारी पशु था। पूर्वी जाति का पतला, तेज दौड़ने वाला और शिकार के लिये उपयोगी घोड़ा अभी इंगलैंड में नहीं आया था, और जमींदार का घोड़ा सशस्त्र सैनिक के वाहक के रूप में ही उपयोगी था। यह शिकारी को लेकर पूरी तेजी से दौड़ने काम नहीं आता था। खेती के काम में अब घोड़े के साथ बैल का उपयोग भी होने लगा था।

अब भी यह क्रीड़ा-प्रतियोगिताओं का युग था, जिसमें समृद्ध लोग सहानुभूतिपूर्ण स्त्रियों तथा आलोचनापूर्ण जनता के सम्मुख खेलते थे। जैसाकि हेनरी अष्टम् के दरबारी

---

[1] हेरिसन के अनुसार एलिजाबेथ के युग में कुछ प्रदेशों में तो लोमड़ियां और बिज्जू शिकार करने तथा समय गुजारने के लिये सुरक्षित रखे जाते थे, अन्यथा वे समाप्त ही हो जाते। पुस्तक ३, अ० ४)।

[2] मैरि वाइव्ज़, IV २, पृ० ५८।

कवि सर्री ने वर्णन किया है,

वे कँकरीली पृथिवी पर, फेन उगलते अश्वों पर आरोही
लिये लगाम करों में, अरु संग लिये असि और हृदय अनुरागी।

उसने दरबार में खेली जाने वाली एक अन्य क्रीड़ा का भी अपनी कविता में इस प्रकार से वर्णन किया है :

लघु नृत्य, कथाएं लंबी उल्लासों की,
कटु शब्द, दृष्टि कटु ऐसी जिस पर चीता भी शरमाये,
करते जब थे स्वत्वों की हम चर्चा।
कोर्टयार्ड टेनिस क्रीड़ा होती जब,
प्रेम भरी आंखों से रमणी तकते, कि मिले एक चितवन—
हमको भी उसकी, जो स्फूर्तिदायिनी, जय से भूषित करती।

दरबार की इस उल्लासपूर्णता का श्रेय क्रीड़ा-कुशल हेनरी को था जो कि अपने राज्य का सर्वोत्तम धन्वा था, और जो अभी उस समय तक उग्र अत्याचारी के रूप में नहीं आया था, बल्कि जो स्वयं फैशन में अग्रणी और प्रसाधन में कुशल था। शासन की देख-रेख का दायित्व तबतक अभी अपने विश्वासपात्र वूल्से पर छोड़कर वह अपने विवेकी पिता द्वारा प्रजा की आवश्यकताओं के लिये सुरक्षित कोष को आमोद-प्रमोद और राग-रंग पर व्यय कर रहा था। टच स्टोन के शब्दों में, उस समय दरबार में न रहे होने का अर्थ था, अवसीदित होना। दरबार में इंगलैंड के ये उच्चवर्गीय लोग न केवल प्रेम तथा राजनीति की चालें ही सीखते थे, बल्कि संगीत तथा कविता और साहित्य तथा कला का भी ज्ञान प्राप्त करते थे और इनके बीज वे वापिस गांवों में लौट कर रोपित करते थे। पुनरुत्थान युग के इटली के दरबारों की संस्कृति, कला तथा विद्वत्ता का रोसेज़ के युद्धों तथा एलिजाबेथ के समय से इंगलैंड के दरबारियों और सामन्तों पर बड़ा गंभीर प्रभाव था। विद्वान पादरी तथा असंस्कृत योद्धा सामन्त (बैरोन) का मध्ययुगीन भेद अब क्रमशः समाप्त हो रहा था और सर्वगुण-सम्पन्न 'भद्रजन' (जेंटलमैन=जमींदार=शिष्टजन) का आदर्श उसका स्थान ले रहा था। पीछे सर फिलिप सिडनी में निष्पन्न "दरबारी की, सैनिक की, विद्वान की दृष्टि तथा तलवार और गिरा" का एलिजाबेथ कालीन आदर्श दो सन्तति पूर्व (१५०३-१५४२) सर थोमस व्याट् में पूर्वाभासित हो चुका था। यह व्यक्ति निर्दय तथा अविश्वासी दरबार में एक सदस्य तथा विश्वासी जनसेवक था। वह अपनी भू-संपत्ति के एकान्त-निवास में समान रूप से प्रसन्न था :

यह मुझे शिकार की सुविधा और सुख देता है
और दुर्दिन में अध्ययन का अवसर देता है,
कुहरे और हिम में मैं अपने तीर और धनुष के साथ
घोड़े पर चढ़कर किधर जाता हूं, यह कोई नहीं जान पाता।

यहां मैकैंट और क्रिस्टेंडम में बहुत कुछ व्याद् ही जैसे "संस्कृत ग्रामीण भद्र भू-स्वामी जन" पहले से ही विद्यमान थे।

दरबार में, होल्बीन और उसका कला-भवन हेनरी तथा उसके प्रमुख दरबारियों के चित्र बना रहा था। वहां से गांवों के सामन्तों और भूस्वामियों में भी यह प्रथा पहुंची और परिणामतः दीवारों को अलंकृत करने वाली महीन पच्चीकारी के साथ परिवार के चित्रों ने भी स्थान ग्रहण किया। इनमें से कुछ दरबारी चित्रकारों द्वारा बनाये सुन्दर चित्र भी थे, किन्तु अधिकांशतः स्थानीय कलाकारों की कृतियां थीं—श्वेत मुखाकृतियों वाले योद्धा और महिलाएं चित्रित पटों पर से भावी संततियों की ओर ताकते हुए। यह एक ऐसे फैशन का श्रीगणेश था जो आगे चलकर गेंस बोरोफ तथा रेनोल्ड्स में परिपक्व हुआ।

चैपल रॉयल का संगीत संभवतः यूरोप में सर्वोत्कृष्ट था। और उस दरबार में नीचे से राजा तक यह एक प्रथा ही हो गयी थी कि वे धुन और उसमें गायी जाने वाली कविता की रचना करते थे। ट्यूडर-काल इंगलैंड में संगीत तथा गीतिकाव्य का एक महान युग था, और इसकी प्रेरणा का उत्स अंशतः युवक हेनरी अष्टम् के दरबार को भी कहा जा सकता है। किन्तु सारा देश गीत गाते हुए, धुनों की रचना करते हुए तथा काव्य लिखते हुए स्त्री-पुरुषों से भरा था। यह पुनरुत्थान की स्वच्छन्द और उल्लासपूर्ण भावना थी जो इस रूप में इंगलैंड में प्रकट हुई थी। किन्तु अभी यह भावना असंस्कारित थी जोकि हरित-वनों में पक्षियों के गीतों के साथ मिलकर शेक्सपीयर के पूर्ण विकसित संगीत के युग की ओर बढ़ रही थी।

जब ट्यूडर-युग आरम्भ हुआ तब पूर्व अभी तक वेनिस के अधिकार में ही था। इंडीज़ की कीमती वस्तुएं, जोकि अभी तक ऊंटों की पीठों पर लद कर आती थीं, लेवेंट में पहुंच रही थीं। वहां से वेनिस के जहाज़ इंगलैंड को मिर्चे ले जाते थे और वहां से एड्रियाटिक के लिये ऊन लाते थे। इसलिये वेनिस का व्यापारी हमारे द्वीप में काफी परिचित व्यक्ति था। १४९७ में इनमें से ही एक व्यापारी ने अपने देश के एक व्यक्ति जोन कैबोट द्वारा न्यूफौंडलैंड (नवोपलब्ध प्रदेश) की खोज की सूचना दी थी, जोकि कोलंबस की महानतर खोज के ५ वर्ष पीछे हुई थी :

"वेनिसवासी, हमारे देश का एक आदमी, जोकि ब्रिसल से अपने जहाज़ (पोत) के साथ नये द्वीपों की खोज में निकला था, लौट आया है, और वह कह रहा है कि यहां से ७०० लीग दूर उसे एक प्रदेश मिला है। वह तीन सौ लीग दूर किनारे-किनारे गया और तब भूमि पर उतरा; उसे कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया किन्तु कुछ गिरे हुए पेड़ मिले जिनसे उसने अनुमान किया कि यहां कोई रहता भी होगा। अब वह अपनी पत्नी के साथ ब्रिसल में रहता है। उसे बहुत सम्मान दिया गया है; वह सिल्क पहनता है और अंग्रेज लोग उसके पीछे पागलों की तरह दौड़ते हैं,.........इन स्थलों के इस नवोपलब्ध-प्रदेश में एक बड़ा क्रॉस इंगलैंड तथा सन्त मार्क की ध्वजाओं सहित गाड़ दिया है, और इस प्रकार से हमारा ध्वज दूर-दूर प्रदेशों में लहरा रहा है।"

किन्तु भविष्य के लिये यह एक बड़ी महत्वपूर्ण बात थी कि सन्त मार्क का ध्वज एक वेनीस के पोत में 'सुदूर प्रदेशों' में लहराया था।

इस अन्वेषण के बाद, जिसमें कि वेनिस के महत्व की समाप्ति तथा इंगलैंड के महत्व की वृद्धि के बीज गर्भित थे, दो पीढ़ियों तक इसका कुछ विशेष परिणाम नहीं हुआ, इस बात के सिवाय कि इंगलैंड, फ्रांस तथा पुर्तगाल के मछुए इस नवोपलब्ध प्रदेश के किनारों के साथ कॉड मछली का शिकार करते थे।[1] ट्यूडर युग के आरंभिक तथा मध्यकालों में, पहले के समान ही, हमारा व्यापार यूरोप के सागर-तीरों के साथ साथ बालिटक से स्पेन होते हुए पुर्तगाल तक होता था; सर्वाधिक व्यापार नीदरलैंड के साथ, और उसमें भी मुख्यतः एंटवर्प के साथ, जोकि इस समय यूरोपीय व्यापार तथा वित्त का केन्द्र था, होता था। साहसिक व्यापारियों द्वारा वस्त्र का निर्यात-व्यापार कच्ची ऊन के निर्यात-व्यापार से अब पन्द्रहवीं शताब्दी की अपेक्षा तीव्रता से बढ़ने लगा तथा लंडन के विदेशी व्यापार की मात्रा निरन्तर बढ़ती रही। हेनरी सप्तम् तथा अष्टम् के राज्यों में इंगलैंड के पोत भूमध्य सागर में क्रेटे के सूदूरवर्ती प्रदेशों तक व्यापार करते थे। १४८६ में पिसा में इंगलैंड को व्यापार-दूतावास स्थापित किया गया था जहां पर कि इंगलैंड के व्यापारी वेनिस के एकाधिकार के विरुद्ध फ्लोरेंस की स्पर्धा का लाभ उठा रहे थे। किन्तु इटली में हमारी व्यापारिक वस्तुएं मुख्यतः इटली के पोतों में ही पहुंच रही थीं।

इस बीच पुर्तगाली लोग केप ऑफ़ गुडहोप के चक्कर लगा रहे थे और पूर्वी व्यापार के लिये रास्ते बना रहे थे, जोकि वेनीस के लिये घातक बात थी। धीरे धीरे अंग्रेजों ने अफ्रीका के पश्चिमी किनारे के साथ-साथ पुर्तगाल के एकाधिकार के दावे की उपेक्षा करते हुए, उनका अनुसरण किया। विलियम हॉकिंस ने, जो नाविकों की एक महत् परंपरा का पिता था, १५२८ में ही गायना के नीग्रो लोगों से हाथी दांत के लिये मैत्री पूर्ण व्यापार आरंभ कर दिया था। यह उसका पिता जोन था जिसने कि एलिजाबेथ के राज्यकाल में स्वयं नीग्रो लोगों को ही एक निर्यात सामग्री बना लिया और इससे स्थानीय निवासियों के साथ व्यापार की संभावनाएं समाप्त कर दीं, क्योंकि

---

[1] सागर में गहरे में जाकर मछली का शिकार करने का प्रचलन ट्यूडर युग के आरंभिक काल में बढ़ गया था और परिणामतः देश के मछूओं की संख्या में भारी वृद्धि हो गयी। हैरिंग मछलियां अभी हाल ही में बाल्टिक से उत्तर सागर में आई थीं, और परिणामतः हमारा हैरिंग मछली का शिकार महत्वपूर्ण हो गया। कैम्डन ने लिखा है कि ये "हैरिंग मछलियां, जो कि हमारे पितामहों के काल में केवल नार्वे के आसपास ही एकत्र रहती थीं, अब ईश्वर की कृपा से प्रतिवर्ष हमारे अपने किनारों पर बड़े झुंडों में आ जाती हैं।"

उन्होंने श्वेत लोगों को अपना घातक शत्रु मानना आरंभ कर दिया। एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के राज्यकालों में पश्चिमी अफ्रीका के साथ व्यापार अभी उचित रूप से विकसित किया जा रहा था और इसके साथ ही आर्केंजल नामक केनारी द्वीप-समूह की यात्राएं भी की जा रही थीं, यहां तक कि वे मास्को तक जा पहुँचते थे। किन्तु नवोपलब्ध भूमि के आसपास कॉड मछली का शिकार करने के अतिरिक्त इंगलैंड के लोगों ने एटलांटिक के पार कभी कुछ नहीं किया था।

यद्यपि वस्त्र-व्यापार अभी तक पुराने ही रास्तों से और पुराने ही यूरोपीय बाजारों में हो रहा था किन्तु यह निरन्तर बढ़ रहा था, जिसके लिये वस्त्र इंगलैंड के नगरों से, और उससे भी अधिक गावों से आ रहा था। पन्द्रहवीं शताब्दी के परिवर्तन-रहित युग के बाद वस्त्र-व्यापार पुनः बड़ी तीव्रता से बढ़ने लगा। 'चारागाहों के लिये आलवाल' इसका एक परिणाम था। ऐसे आलवालों के विरुद्ध विशेष चर्चा आरम्भ होने के पहले भी विदेशी लोग इंगलैंड में भेड़ों की इतनी अधिक संख्या से विस्मत थे।

ऊन से कपड़ा तैयार करने की प्रक्रिया के बहुत से चरण हैं जोकि सभी के सभी एक ही लोगों द्वारा अथवा एक ही स्थान पर सम्पादित नहीं किये जा सकते। पूंजी-पति व्यापारी कच्चा माल देता, उससे आधा तैयार माल अन्यत्र देता और वहाँ से पूरा तैयार माल कहीं और देता और इस प्रकार से इस प्रक्रिया में अनेक प्रकार के श्रमिकों को नियुक्त करता और अनेक प्रकार के स्वामियों से माल खरीदता था।

बुनाई का अधिकांश कार्य अपने-अपने घर ही पर करने की प्रथा थी; करघा, जिसका स्वामी स्वयं बुनने वाला होता था, छत के कमरे अथवा रसोई में रखा जाता था। किन्तु पश्चिमी जलप्रपातों पर लगी कपड़े की मशीनें संभवतः फैक्टरियों के अधिक अनुरूप होंगी, और कुछ बुनाई पहले से ही फैक्टरी व्यवस्था के अनुसार हो रही होगी। वस्त्र-उत्पादक जोन् विश्कोंब इतना धनी तथा इतना शाही ठाठ से रहने वाला था कि १५२० में उसकी मृत्यु के पश्चात् वह "जैक आफ न्यूवरी" के रूप में आल्हा का एक महत्वपूर्ण नायक बन गया। उसकी कीर्ति स्वयं डिक व्हिटिंग्टन की कीर्ति से स्पर्धा करती थी। उसके बारे में यह दन्तकथा थी कि वह अपने सैंकड़ों शिक्षार्थियों को फ्लोडुनफील्ड में ले गया और राजा हैरी को उसने अपने घर पर भोज दिया। एलिजाबेथ काल का एक आल्हा उसकी फैक्टरी का वर्णन निम्न प्रकार से करता है :

एक कमरे में, जोकि अति विशाल,
खड़े रहे थे दो सौ, बृहदाकार करघे,
दो सौ व्यक्ति करते कार्य, सत्य यह निस्संदेह।

बैठता प्रत्येक संग एक सुन्दर लड़का
सीता रजाई-पाट मन में सानन्द।
अन्यत्र एक स्थान में, निकट ही पर्याप्त,
एक सौ कामिनियाँ हर्षित और सोल्लास
कातती थीं सूत, गाती एक स्वर,
एक लय, एक ताल, मधुर रूप।

सम्भवत: प्रसन्नभाव तथा बड़ी संख्या का वर्णन कवि ने अपने अतीत-प्रेम के कारण अतिशयोक्ति पूर्ण किया है (इ. पावर, मैडीवल पीपल, पृ० १५८) न्यूबरी के जैक ने निश्चय ही एक प्रमुख घराने को जन्म दिया था। उसके पुत्र ने ग्रेस की तीर्थ-यात्रा के विरुद्ध राजा का समर्थन किया था, मठ की भूमि हथिया ली थी और संसद् में बैठा था।

आन्तरिक व्यापार की मात्रा बाहरी व्यापार की अपेक्षा कहीं अधिक थी। इंगलैंड अब भी बाहर से केवल धनियों के विलास की वस्तुओं का आयात ही करता था। यहां के सामान्य लोग खाने, पहनने आदि में केवल देशी वस्तुओं का ही उपयोग करते थे।

संचार के लिये, विशेषत: बहुत भारी वस्तुओं के संचार के लिये, नदियाँ बहुत महत्वपूर्ण साधन थीं। यॉर्क, ग्लौसेस्टर, नॉर्विच, आक्सफर्ड, केम्ब्रिज जैसे भीतरी भागों में नगर भी, एक सीमा तक, नदियों पर बनी बन्दरगाहें थे।

किन्तु सड़कें आज के समान ही उस समय भी सब प्रकार के स्थानीय संचार और वितरण के लिये प्रयुक्त होती थीं। सड़कें यद्यपि हमारे आज के स्तर से बहुत ही बुरी हालत में थीं, किन्तु तब भी कामचलाऊ थीं। सूखे मौसम में ये गाड़ियों के लिये उपयोग में लायी जाती थीं और लद्दू घोड़े सभी मौसमों में इन पर चलते थे। जहां तक सम्भव होता, व्यापारिक यातायात के लिये काम में आने वाली सड़कें चाक या अन्य किसी सख्त पत्थर की बनाई जाती थीं, जिससे कि इंगलैंड का अधिकांश भाग बना है। जहां कहीं उन्हें दलदली या चिकनी मिट्टी वाले प्रदेशों में से लांघना पड़ता था वहां पुल आदि का सहारा लिया जाता था। सड़कों के लिये कोई उपयुक्त विभाग नहीं होने के कारण कुछ पुल आदि उन व्यापारियों द्वारा बनाए गये थे जिनकी उन्हें आवश्यकता थी। लेलैंड ने वैंडोवर तथा ऐलस्बरी के बीच एक सेतु-पथ का उल्लेख किया है "अन्यथा वर्षाकाल में इन रास्तों को पार करना बड़ा कठिन होता।"

सूदूर प्रदेशों में भी भारी वस्तुओं के व्यापार के लिये स्थल पर जल की प्रमुखता पूर्ण नहीं थी। उदाहरण के लिये, साउथेंप्टन लण्डन की पोषक बन्दरगाह के रूप में फल-फूल रही थी। कुछ प्रकार की वस्तुएं नियमित रूप से साउथेंप्टन पर पोतों से उतारी जाती थीं और राजधानी को सड़क द्वारा पहुँचाई जाती थीं, नहीं तो पोतों को कैंट का चक्कर काट कर आना पड़ता था।

आगे अध्ययन के लिये पुस्तकें :

Darby's *Historical Geography of England* (1936), Chap. IX; Miss Toulmin Smith's edition of Leland's England, Lord Ernle, English Farming, Chap. III; Tawney, Agrarian Problem in the Sixteenth Century; and Religion and the Rise of Capitalism; Social England, ed. Traill, Vols. II and III; Baskerville, English Monks and the Suppression of the Monasteries: Lipson, Ec. Hist. England, II. इस अध्ययन पर कार्य करते हुए मुझे किंग्स कॉलेज, कैम्ब्रिज के श्री जोन् साल्टमार्श के परामर्श तथा लेखों से वहुत संहायता मिली है।

अध्याय ६

शैक्सपीयर का इंगलैंड (१५६४-१६१६)

(महारानी एलिजाबेथ १५५८-१६०३ आर्माडा)

ट्यूडर युग की मध्यकालवर्ती आर्थिक तथा धार्मिक अशान्ति के बाद इंगलैंड में स्वर्ण युग का आगमन हुआ। स्वर्णयुग कभी पूर्णतः "स्वर्ण" के नहीं होते और न वे दीर्घस्थायी ही होते हैं। किन्तु शैक्सपीयर को मानव के उन्नततम गुणों के प्रदर्शन के लिये काल तथा देश दोनों दृष्टियों से अत्यन्त सुन्दर संयोग मिला। वन, खेत और नगर तीनों उस समय पूर्णता की स्थिति में थे और इन तीनों की ही कवि की पूर्णता के लिये अपेक्षा होती है। उसके देशवासी, जोकि अभी यंत्र की सेवा में पशुवत् नियोजित नहीं किये गये थे, स्वेच्छानुसारी शिल्पी और सर्जक थे। उनके मन, जोकि मध्ययुगीन बंधनों से मुक्त हो गये थे, अभी शुद्धाचारवाद अथवा अन्य आधुनिक मतांधताओं के जाल में नहीं पड़े थे। एलिजाबेथ-काल के इंगलैंडवासी जीवन से प्यार करते थे, जीवन की किसी सैद्धान्तिक परछाईं से प्यार नहीं करते थे। बड़ी संख्या में सामान्यजन निर्धनता से अभूतपूर्व मुक्ति पाकर चेतना का उत्साह अनुभव कर रहे थे और इसे दर्शन, संगीत और काव्य में व्यक्त कर रहे थे। अन्ततः देश में शान्ति तथा व्यवस्था की स्थापना हुई और इसे स्पेन के साथ सागर-युद्ध भी स्खलित नहीं कर सका। राजनीति, जोकि अभी तक भय तथा दमन का क्षेत्र थी और जो पुनः शीघ्र अन्य प्रकार के भय तथा दमन के रूपों में प्रकट होने वाली थी, कुछ दशाब्दियों के लिये उस स्त्री के प्रति वफादारी के सरल रूप में परिणत हो गयी थी जोकि अपनी प्रजाओं के लिये उनकी एकता, समृद्धि तथा स्वतंत्रता की प्रतीक थी।

नवजागरण, जोकि बहुत पहले अपने मूल स्थान इटली में वसन्त देख चुका था, और जहांकि अब तीव्र तुषारापात ने उसे कली में ही निर्जीव कर दिया था, बाद में इस उत्तरी द्वीप में उसे भास्वर ग्रीष्म का वरदान मिला। इरास्मस के काल में इंगलैंड में नवजागरण का प्रकाश केवल विद्वानों तथा राजा के दरबार तक ही सीमित था। शैक्सपीयर के काल में यह एक सीमा तक सामान्य जन तक पहुंचा। बाइबल तथा प्राचीन साहित्य का संपर्क अब केवल कुछ पढ़े-लिखे लोगों तक ही सीमित नहीं था। व्याकरण विद्यालयों के माध्यम से प्राचीन साहित्य और विचार शिक्षा से नाटक और वहां से बाज़ार में, तथा पुस्तक से लोकगीत में छन छनकर पहुंच रहा था और साधारण-

तम श्रोता यूनान तथा रोम की 'न्यायाधीश एप्पियस का अत्याचार', 'राजा मीदास की दयनीय स्थिति' तथा अन्य कथाओं से परिचित हो रहे थे। हिब्रू तथा यूनान और रोम की प्राचीन जीवन-विधियां, जोकि सुदूर अतीत की कब्रों में से अनुसन्धान और विद्वत्ता के जादू द्वारा निकाल ली गयी थीं, एक साधारण अंग्रेज की जानकारी के लिये प्रस्तुत कर दी गयी थीं, जिन्होंने कि उन्हें पुरालेख की मृत सामग्री के रूप में ग्रहण नहीं किया बल्कि कल्पना तथा चेतना के व्यापार के ऐसे नये क्षेत्रों के रूप में ग्रहण किया जिन्हें कि निर्बाध रूप से आधुनिक उपयोग में लाया जा सकता था। जबकि शैक्सपीयर ने प्लूटार्च के जीवन को अपने "जूलियस सीजर" तथा "एंटोनी" में रूपान्तरित कर दिया था, अन्यों ने बाइबल को लिया और इससे एक नवीन जीवन-विधि का निर्माण किया और धार्मिक इंगलैंड के लिये नयी विचार-व्यवस्था दी।

एलिजाबेथ के इन सृजन-प्राण वर्षों में संकुचित सिन्धु, जिनके तूफानों में इंगलैंड के नाविक शताब्दियों से अभ्यस्त थे, विश्वव्यापी सागरों के रूप में विस्तारित हो गये और इनमें साहसिक युवकों ने नये नये देशों में व्यापार और भ्रमण करते हुए रोमांच और संपत्तियों का अर्जन किया। युवक तथा उत्फुल्ल मन इंगलैंड, जोकि फ्रांस को विजित करने की प्लांटाजेनेट उत्कंठा से अभी ऊबरा ही था, अपने उस द्वीप रूप के प्रति चेतन हो उठा जिसकी कि नियति सागर से बँधी थी, और जो १५८८ में स्पेन के विरुद्ध पोत-अभियान की सफलता से तथा सुरिक्षत सागर द्वारा प्रदत्त सुरक्षा से हर्षित था और जिस के कंधों पर अभी सुदूर साम्राज्यों का उत्तरदायित्व नहीं पड़ा था।

निश्चय ही इस का एक दूसरा पक्ष भी है, जैसेकि मानव-सुख तथा मानवीय सुकर्म के सभी रूपों का है। शताब्दियों से जमे हुए निर्दयता के अभ्यास सहज में तथा शीघ्र समाप्त नहीं हो सकते थे। एलिजाबेथ काल के लोगों की सागरपारीय कार्यवाहियों में नीग्रो लोगों के संबंध में, जिनका कि वे दास-व्यापार के लिये निर्यात करते थे, तनिक भी यह चेतना दिखाई नहीं देती कि मानव होने के नाते उनके भी कुछ अधिकार थे, न ही आयरलैंड-वासियों के प्रति ऐसी कोई चेतना दिखाई पड़ती है जिन्हें कि वे लूटते और वध करते थे, यहां तक कि गोल्डकोस्ट में जोन हॉकिंस तथा आयरलैंड में एड्मंड-स्पेंसर जैसे कुछ अत्यन्त उत्तम व्यक्ति भी यह नहीं देख पाए कि वे किन भयानक दैत्यों के दांत रोपने में योगदान कर रहे हैं। स्वयं इंगलैंड के भीतर, पड़ौसियों द्वारा जादूगरनी कह कर और पकड़ कर मारी जाती हुई स्त्री, तख्ते पर चढ़ा कर जीवित ही टुकड़े-टुकड़े किया जाता हुआ जीसस पादरी, लकड़ियों के ढ़ेर पर जीवित जलाया जाता हुआ एकतावादी, फांसी पर लटकाया जाता हुआ अथवा जघन्य प्रकार से लोहे की छड़ें खुभोकर मारा जाता हुआ मतविरोधी शुद्धाचारवादी, इन सब का इस महान् युग के आनन्द में कोई भाग नहीं था। किन्तु एलिजाबेथ के इंगलैंड में ऐसे प्रपीड़ितों की संख्या यूरोप के अन्य भागों के समान बहुत अधिक नहीं थी। हम उस आपद् के गर्त्त से बचे

रहे जिसमें कि अन्य जातियां ढकेली जा रही थीं—जैसे स्पेन के धार्मिक अत्याचार तथा नीदरलैंड और फ्रांस की धर्म के नाम पर हुई मारकाट। चैनल के उस पार इन चीज़ों के देखते हुए इंगलैंड के लोग बहुत प्रसन्न थे कि वे द्वीपवासी हैं और सुमति एलिजाबेथ उनकी साम्राज्ञी है।

जिस प्रकार से हेनरी अष्टम् के काल के इंगलैंड की यात्रा पुरातत्वविद् लेलैंड ने की थी और उसका विवरण लिखा था, उसी प्रकार से एलिजाबेथ के सुख-समृद्धिपूर्ण राज्य की यात्रा हमारे महानतम् पुरातत्वविद् विलियम गेम्डन ने की थी और उसका विवरण अपने ब्रिटानिया ग्रंथ में प्रस्तुत किया था। उसके कुछ ही पहले विलियम हैरिसन ने, जोकि एक पार्सन था, और उसके कुछ ही बाद फाइनेस मोरिसन ने, जोकि एक यात्री था, अपने अपने काल के आंग्ल जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है, जिनका शैक्सपीयर के अधिक स्पष्ट विवरण से मिलान करने में बहुत आनन्द मिलता है।

संभवतः साम्राज्ञी के राज्य के अन्त तक इंगलैंड तथा वेल्स की जनसंख्या ४० लाख से अधिक हो गयी थी, जोकि आज की जनसंख्या से दस गुणा कम है। पांच चौथाई से अधिक संख्या ग्रामीण भाग में रहती थी, किन्तु इनका काफी बड़ा भाग उद्योगों में लगा हुआ था और गांव की आवश्यकता की लगभग सभी वस्तुओं का उत्पादन करता था और वस्त्र-निर्माता, धातु-खनिक तथा प्रस्तर-खनिक के रूप में अधिक व्यापक बाज़ार के लिये भी कार्य कर रहा था। जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग कृषि और भेड़-पालन में लगा हुआ था।

नगर में रहने वाली अल्प संख्या में से बहुत से लोग, कम से कम अंश-काल के लिये, कृषि-कार्य करते थे। साधारण आकार के एक छोटे नगर की जनसंख्या साधारणतः ५००० होती थी। नगर बहुत जनाकुल नहीं होते थे और दुकानों की पंक्तियों के साथ साथ बाग, बगीचियां और छोटे खेत भी रहते थे। कुछ छोटे नगरों तथा बन्दरगाहों का धीरे धीरे ह्रास हो रहा था। सागर का हटना अथवा नदियों में काई हो जाना (जिसने कि डी मे चेसर को बंदरगाह के रूप में धीरे धीरे अनुपयोगी बना दिया था), पोतों का आकार बढ़ जाने से बड़े आकार के पोत-संश्रय-स्थानों की आवश्यकता होना, तथा वस्त्र और अन्य उत्पादित माल का निरन्तर ग्रामों की ओर प्रवास, ये सब उद्योग तथा व्यापार के कुछ प्राचीन केन्द्रों के ह्रास के कारण थे।

तो भी, द्वीप को समग्रतः लेते हुए, जनसंख्या बढ़ रही थी। यॉर्क, जोकि उत्तर की राजधानी था; नॉर्विच, जोकि वस्त्र-व्यापार का एक बड़ा केन्द्र था और जहां आल्वा के नीदरलैंड से कारीगर शरणार्थी आते रहते थे; ब्रिसल, जोकि भीतरी तथा विदेशी व्यापार के लिये लंडन से पूर्णतः स्वतंत्र विकास कर रहा था—ये तीनों अपनी उपमा आप ही थे, जिनमें कि प्रत्येक में संभवतः २०,००० तक लोग रहते थे। और व्यापार की नवीन सागरीय परिस्थितियों ने बाइडफोर्ड के समान कुछ पश्चिमी बन्दरगाहों वाले नगरों को प्रोत्साहित किया।

किन्तु लंडन देश तथा विदेश के व्यापार को निरन्तर अधिकाधिक आत्मसात् कर रहा था और इस प्रकार उसका आकार न केवल इंगलैंड के नगरों की तुलना में ही, बल्कि यूरोप भर के नगरों की तुलना में निरन्तर बढ़ रहा था। जब ट्यूडर की मृत्यु हुई तब लंडन की जनसंख्या एक लाख के लगभग थी; जब एलिजाबेथ की मृत्यु हुई तब संभवत: यह संख्या बढ़ कर दो लाख तक हो गयी थी। यह अपनी पुरानी दीवारों के बाहर बहुत तेजी से फैल रहा था; नगर के मध्य भाग में छोटे-छोटे खुले स्थान थे और घरों के साथ बगीचियां, खेलने के स्थान तथा अश्वशालाएं थीं। प्लेग का बार-बार प्रकोप होते रहने के बावजूद, तथा 'स्वेद-ज्वर' के नये आविर्भाव के बावजूद ट्यूडर-काल का लंडन अपेक्षाकृत स्वस्थ था तथा मृत्यु-दर उत्पत्ति-दर से कम थी। यह अभी उतना जनसंकुल नहीं था जितना कि यह अट्ठारहवीं शताब्दी के आरंभ में हो गया था जबकि इसकी और भी घनी जनसंख्या गंदे कूचों में अधिक ठूंस कर भरी हुई थी, ग्राम प्रदेश से और अधिक दूर पड़ गयी थी तथा और अधिक अवस्थ थी, यद्यपि अब प्लेग का रोग विलुप्त हो गया था और उसका स्थान छोटी माता तथा टाइफाईड ने ले लिया था।

राज्ञी एलिजाबेथ का लंडन अपने आकार, समृद्धि तथा शक्ति के कारण राज्य का सबसे प्रभावशाली ऐकिक था। सामाजिक, बौद्धिक तथा राजनैतिक दृष्टि से इसने जो प्रभाव डाला उसे बहुत सीमा तक सोलहवीं शताब्दी की प्रोटेस्टेंट क्रान्ति तथा सत्रहवीं शताब्दी की प्रजातांत्रिक क्रान्ति के लिये उत्तरदायी कहा जा सकता है। नगर का क्षेत्र अब पूर्ण रूप से नागरिक तथा व्यापारिक जन-समुदायों का एक किला था जिन्हें कि अपनी सीमाओं के भीतर किसी भी स्पर्धी प्रभाव का खतरा नहीं था। मध्ययुगीन लंडन के विशाल मठ तथा विहार अब समाप्त हो गये थे; लौकिक-जन अब सर्वोपरि थे और अपने धर्म को अपने ही घरों में प्रोटेस्टेंट अथवा अपनी व्यक्तिगत पसन्द के ढांचों में ढाल रहे थे। नगर की सीमा में न तो राजा का ही कोई विशेप प्रभाव था और न अभिजाततंत्र का। राजकीय शक्ति नगर की सीमा के बाहर एक ओर व्हाइट हाल तथा वेस्टमिंस्टर में प्रतिष्ठित थी और दूसरी ओर टावर में प्रतिष्ठित थी। बड़े सामन्त तक नगर के भीतर के अपने मध्ययुगीन निवासों को छोड़ रहे थे और या तो स्ट्रैंड में बनी कोठियों में अथवा वेस्टमिंस्टर में न्यायालय तथा सदन के पास जाकर बस रहे थे। नगर-प्रमुखों तथा नागरिकों की शक्ति और अधिकार सर्वोपरि थे और उनके पास एक विशाल तथा सशक्त उपसैन्य (मिलिशिया) थी जिसके कारण लंडन वास्तव में राष्ट्र के भीतर एक राष्ट्र था—यह एक ऐसा समाज था जो विशुद्धत: बुर्जुआ था, यद्यपि इंगलैंड का रूप अभी तक मुख्यत: राजतंत्रीय तथा सामंतीय ही था। और लंडन का प्रभाव सारे देश पर पड़ता था।

ट्यूडर कालीन लण्डन की भोजन सम्बन्धी आवश्यकताएं लंडन के पड़ौसी प्रदेशों की कृषि-नीति का निर्धारण करती थीं और वही प्रभाव आगे दूर-दूर तक पड़ता था।

आवलयित क्षेत्रों वाला कैंट प्रदेश, जैसाकि इंगलैंड का बाग कहा जाता था, विशेष रूप से लंडन का ही फलों का बगीचा था, जिसमें कि अपार सेव और चैरी उत्पन्न होती थीं। पूर्व एंग्लिका का जौ, जोकि रोएस्टन जैसे सुरा-उत्पादक नगरों के रास्ते आता था, लण्डनवासियों की दैनिक प्यास शान्त करता था; जबकि कैंट तथा एस्सेक्स अपनी बीअर को बढ़िया स्वाद देने के लिये हॉप फलों का उत्पादन कर रहे थे। गेहूं तथा राई, जिनसे कि लण्डन वालों की रोटी बनती थी, सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्वीय प्रदेशों में उत्पन्न की जा रही थी।

इस प्रकार से राजधानी का विशाल बाज़ार विभिन्न जिलों को वही खाद्य उत्पन्न करने के लिये प्रेरित करके, जिसके लिये कि वे सर्वोपयुक्त थे, कृषि-विधि में परिवर्तन लाने में योगदान कर रहा था। मानचित्रकार नोर्डन ने लिखा है कि लण्डन के पास एक अन्य प्रकार का पशु-पालक, अथवा कहें योमैन, उत्पन्न हुआ जिसके पास पशुओं के लिये वृहत् खाद्य-भंडार होता था; वह अपने पुष्ट पशु स्मिथफील्ड में बेच देता था और दुर्बल पशुओं को रख लेता था। "बहुत से लोग दूसरों के लिये सवारी गाड़ी रखकर जीविकोपार्जन करते हैं और लण्डन के लिये दूध, खाद्य-सामग्री तथा अन्य सामान लाते हैं।" इस प्रकार से सौभाग्यशाली प्रदेशों में भूमि को वलयित करने के लिये बहुत प्रबल दबाव था।

कृषि उत्पादनों के लिये लंडन के अतिरिक्त अन्य बाज़ार भी थे। शायद ही कोई ऐसा नगर रहा होगा जो अपनी आवश्यकता की सारी खाद्य सामग्री अपने ही खेतों में उत्पन्न कर पाता होगा। ग्राम-प्रदेश में भी, यदि एक ज़िले में ऋतु के विपरीत रही होने से फसल खराब हो जाती तो वह दूसरे ज़िले से खरीद लेता, जब तक कि सारे इंगलैंड में ही मौसम खराब नहीं होता। दशाब्द में एक-एक बार में ऐसा भी अवसर आता था जब कि देश में उत्पादन की कमी के कारण विदेश में बहुत मात्रा में खाद्य-सामग्री का आयात करना पड़ता था। सामान्य वर्षों में इंगलैंड कुछ अनाज का निर्यात भी करता था। हंटिंग्डन शायर, कैम्ब्रिजशायर तथा औसे घाटी के अन्य प्रदेश लिन्न तथा वैश के रास्ते स्काटलैंड, नार्वे तथा नीदरलैंड को बड़ी मात्रा में गेहूं भेजते थे। केन्द्रीय इंगलैंड के धान्य भंडार, दक्षिण पूर्वी वारविकशायर के खुले क्षेत्रों में तथा 'फैल्डन' से, जो कि एवन तथा एजहिल के बीच में पड़ता था, विशाल मात्रा में गेहूं ब्रिसल तथा अन्य पश्चिमी नगरों में पहुँचते थे। किन्तु लेलैंड तथा माम्डन के अनुसार वारविकशायर का शेषार्ध, जो कि एवन के उत्तर-पश्चिम में पड़ता था, एक घना वन्य प्रदेश था और कहीं कहीं उसमें चरागाहें थीं; यह आर्डन का जंगल था। इस प्रकार से वर्तुल एवन, जिस पर कि स्ट्रैटफोर्ड का पत्थर के चौदह स्तम्भों वाला पुल बना था, एकान्त वन को घने बसे धान्य-उत्पादन प्रदेश से पृथक् करता था। इसके किनारों पर बसे नगर में रहने वाला व्यक्ति अपने बचपन की मटरगश्तों में इस

नदी के एक ओर वन्य सुषमा का उत्कर्ष देखता था और दूसरी ओर मानव की लीला।

अट्ठारहवीं शताब्दी की अत्यन्त पूंजीकृत कृषि से पूर्व यह सम्भव नहीं था कि सारे देश की जनता को खिलाने के लिये पर्याप्त गेहूं का उत्पादन किया जा सकता। भूमि के अनुसार जई, गेहूं, रे तथा जौ सभी कुछ उगाया जाता था। उत्तर में जई अधिक वोयी जाती थी; गेहूं तथा रे इंगलैंड के अधिकांश भाग में उगाये जाते थे सिवाय दक्षिण-पश्चिम प्रदेश के, जहाँकि रे बहुत कम वोई जाती थी। जौ सभी प्रदेशों में बहुत मात्रा में बोया जाता था और इसका अधिकांश बीयर बनाने के काम में आता था। पश्चिम प्रदेश में जहाँ कि सेवों के बाग अधिक होते थे, साइडर शराब अधिक उपयोग में लायी जाती थी तथा वोर्सेस्टरशायर के पीअर फल पैरी शराब बनाने के काम आते थे, जिसे कि मार्म्डन में "नकली शराब कहा जाता है, जोकि ठंडी और वायुविकार उत्पन्न करती है।" इंगलैंड के सभी भागों में गाँव अपने उपयोग के लिये विभिन्न फसलें उत्पन्न करते थे और इनकी रोटी में विभिन्न प्रकार के अनाजों का आटा मिला रहता था। फिनेस मौरिसन ने, जोकि यूरोप के प्रमुख नगरों को अच्छी तरह से जानता था, राज्ञी एलिजाबेथ की मृत्यु के शीघ्र बाद लिखा था :

"इंगलैंड के कृषक जौ और लाल जाति की राई का आटा मिला कर खाते थे और इसे सफेद राई से अधिक पसंद करते थे; उनके अनुसार, लाल राई की रोटी से भूख जल्दी नहीं लगती थी इसलिए यह उनके परिश्रमी जीवन के लिये अधिक उपयोगी होती थी; किन्तु नगरवासी तथा भूस्वामी शुद्ध श्वेत रोटी ही खाते थे और इंगलैंड में सभी प्रकार का अनाज बड़ी मात्रा में उत्पन्न होता था।"[1]

इंगलैंड में सफेद गेहूं, मुर्गे और मछली तथा अन्य सब प्रकार का मांस पर्याप्त मात्रा में मिलता है। ये लोग बारहसिंगे का मांस बारह महीने खाते हैं, गर्मियों में बकहरिण तथा सर्दियों में डीअर हरिण खाते हैं, जिसे कि वे पेस्टियों में पकाते हैं, और यह पेस्टी बहुत स्वाद होती है तथा अन्य किसी भी देश में बहुत दुर्लभ है। इंगलैंड तुम शायद संसार में एक देश हो जिसमें कि इतने बारहसिंगे हरिण हैं कि सारे यूरोप में और कहीं इतने नहीं हैं। संसार में इतने कबूतरों के पिंजरे और कहीं भी नहीं

---

[1] एक संतति पूर्व ही (१५७७ के आसपास) हैरिसन ने लिखा था कि : "सारे इंगलैंड में उसी अनाज की रोटी बनाई जाती है जो उसकी भूमि उत्पन्न करती है, किन्तु तब भी भूस्वामी वर्ग और महाजन वर्ग अपने खाने के लिये पर्याप्त गेहूं का प्रबन्ध कर लेता है, जबकि उनके घरों के नौकर चाकर और निर्धन पड़ोसी राई गेहूं और जौ खाते हैं, और कमी के दिनों में सेम, जई आदि कुछ गेहूं के साथ मिलाकर खाते हैं।"

होंगे जितने तुम्हारे यहाँ ! इंगलैंड के याचक अन्य देशों की तुलना में भुना हुआ मांस बनाने में सर्वोत्कृष्ट माने जाते हैं ।"

इस अनुभवी पर्यटक के अनुसार, हमारा गाय-मांस तथा भेड़-मांस यूरोप में सर्वोत्तम था और हमारा सूअर-मांस वेस्टेफेलिया के अतिरिक्त अन्य सबसे उत्तम था ।

वह आगे कहता है कि "इंगलैंडवासी मुर्गे से घटकर प्रायः अन्य कोई मांस नहीं खाते हैं, और जहाँतक बत्तखों का प्रश्न है, वे इनका मांस केवल दो ऋतुओं में ही खाते हैं, एक तो जब वे खेती की कटाई के बाद अनाज के भूसे को खाकर मोटे होते हैं और दूसरे मई के आस पास, जब वे हरे रंग के होते हैं; और खरहों को चाहे कितना ही अनुपयोगी माना जाय किन्तु तब भी वे शिकार किये जीव के रूप में भून कर और उबाल कर दोनों रूपों में ही खाये जाते हैं । इंगलैंड के खरहों की अनेक जातियाँ हैं जिनका मांस खूब मोटा, कोमल तथा उन सब आमिषों से स्वाद होता है जो मैंने कहीं भी अन्यत्र खाए हैं । जर्मनी के खरहों का स्वाद इंगलैंड के खरहों की अपेक्षा भूनी बिल्ली के स्वाद के अधिक निकट होता है ।"

मांस तथा रोटी मुख्य भोजन थे । सब्जियाँ मांस के साथ लगभग बिल्कुल नहीं खाई जाती थीं, साग पॉटेज नामक (एक सूप) बनाने में प्रयुक्त होता था । आलू कुछ बागों में अभी उगाये जाने आरम्भ हुए थे किन्तु अभी खेतों में फसल के रूप में नहीं उगाये जाते थे ।

पडिंग तथा उबले हुए फल अभी भोजन के रूप में उतने महत्वपूर्ण नहीं हुए थे जितने बाद के समय में, यद्यपि चीनी भूमध्य स्थित प्रदेशों से आती थी । मध्याह्न भोजन का समय, जोकि मुख्य भोजन होता था, ग्यारह या बारह बजे होता था, सायं भोजन इसके लगभग पांच घंटे बाद होता था ।

क्योंकि इंगलैंड का गांव, चाहे वह पुरातन आलवालों वाले पश्चिमी प्रदेश का हो और चाहे खुले क्षेत्र वाले उत्कृष्ट क्षेत्रों का, अभी भी अपने खाने की सामग्री स्वयं उत्पन्न करता था, इसलिये आत्मनिर्भर कृषि आंग्ल जीवन का आधार थी । किन्तु, जैसाकि हमने देखा है, अपने लिये उत्पादन करने वाला गांव देश अथवा विदेश के विशिष्ट बाज़ारों के लिये भी ऊन और खाद्य सामग्री उत्पन्न करता था । "औद्योगिक फसलें" भी अब निरन्तर बढ़ रही थीं : लिंकशाय के कुछ भागों में सन खूब उत्पन्न किया जा रहा था, एस्सेक्स में वस्त्रों की रँगाई के लिये मजीठ तथा केशर आदि भी बहुत मात्रा में उत्पन्न किये जा रहे थे । उससे पहले इनके लिये विदेशों से आयात पर निर्भर करना पड़ता था ।

बाज़ार के निमित्त इस प्रकार के विशेषीकरण के लिये आवलयित और व्यक्तिगत कृषि अपेक्षित थी । जंगलों, दलदलों और खाली पड़ी भूमियों से बनाए गये खेत सभी

झाड़ियों से आवलयित किये जाते थे और व्यक्तिगत रूप से उन पर कृषि होती थी। कृषिगत भूमि के क्षेत्र के विस्तार के साथ खुले खेत और सार्वजनिक चरागाहों के क्षेत्र का विस्तार नहीं बढ़ा। खुले खेत यद्यपि एकड़ों में बहुत छोटे नहीं हुए किन्तु अब उनका क्षेत्र पहले की अपेक्षा इंगलैंड की कुल कृषि-भूमि के अनुपात में बहुत थोड़ा था।

इंगलैंड तथा विदेशी बाजारों के लिये अतिरिक्त अनाज केवल महीन मिट्टी वाले निम्नतल प्रदेश ही उत्पन्न कर रहे थे। भेड़ें, जोकि ऊन तथा वस्त्र-व्यापार के लिये उत्पादन करती थीं, अल्पोत्पादक उन्नततल भूमियों में चरती थीं। पथरीले प्रदेश—जैसे चिल्टर्न प्रदेश, डोर्सेट की पहाड़ियाँ, वाईट द्वीप, कोट्‌सवोल्ड्स, लिकल्न तथा नार्फोक के पठार—सदैव उत्कृष्टतम ऊन उत्पादन करते रहे। देश तथा विदेश के यात्री ट्यूडर काल में इन पार्वत्य प्रदेशों में इतने बड़े भेड़ों के इज्जड़ देखकर चकित होते थे। इतने बड़े इज्जड़ यूरोप में अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकते थे। कम उपजाऊ भूमियों में भेड़ें प्रायः ही आधी भूखी रहती थीं, किन्तु उनकी ऊन के रेशे, भूमि की किसी विशेषता के कारण, संसार में सर्वोत्तम थे।

ट्यूडर काल में भेड़ों तथा अन्य पालतू पशुओं की बढ़ती हुई मांग के कारण उपजाऊ क्षेत्रों में भी आवलयित चरागाहें बनीं, जिनके विरुद्ध लोगों में बड़ा रोष उत्पन्न हुआ, जैसाकि हम पहले लिख चुके हैं। घाटियों की ये भेड़ें मोटी थीं किन्तु उनकी ऊन ऊँची भूमियों की उनकी दुबली बहनों की अपेक्षा कम अच्छी थी। तब भी ये निम्नतलीय भूमियों की चरागाहें हानिकर नहीं थीं: यद्यपि इन भेड़ों के रेशे कम अच्छे थे किन्तु मोटी ऊन की मांग निरन्तर बढ़ रही थी और भेड़ तथा गाय के मांस की खपत भी निरन्तर बढ़ रही थी। अपने भोजन में अधिक धान्य का उपयोग करने वाले विदेशी लोग इस काल के इंगलैंडवासियों के इतनी मात्रा में मांस-भक्षण पर हैरान थे। इस प्रकार से, मध्यप्रदेश एलिजाबेथ के काल में गेहूं के साथ मांस भी देते रहे। रगबी "कसाइयों से भरा पड़ा है।" लीसेस्टरशायर तथा नार्थेम्पटनशायर के पशु-मेले बहुत प्रसिद्ध थे। द्वीप में पशुओं की बड़ी संख्या होने से चमड़े के उद्योग को प्रोत्साहन मिला। दक्षिणी इंगलैंड के लोग चमड़े के जूते पहनते थे और विदेशियों द्वारा पहने जाने वाले जूतों से घृणा करते थे। तो भी क्लॉग (एक भारी जूता, जिसका तला लकड़ी का होता था) अल्पव्यायी उत्तर में प्रायः ही पहने जाते थे और स्कॉटलैंड के लड़के-लड़कियां नंगे पैर चलते थे।

अश्वपालन के लिये निरन्तर बढ़ती हुई माँग के साथ कदम रखना आवश्यक था। अश्व धीरे-धीरे तांगे और हल दोनों में बैल को स्थानान्तरित कर रहा था, और देश की सामान्य समृद्धि के कारण सवारी के लिये घोड़ों की मांग निरन्तर बढ़ रही थी, जैसे समृद्धिपूर्ण वर्षों में हम अधिक मोटरकारों की माँग करते हैं। यॉर्कशायर के अनेक भागों में और उपद्रवपूर्ण सीमा-प्रदेश के ऊँचे घासों वाले भागों में घोड़ों और

ढोरों का पालन भेड़पालन की अपेक्षा अधिक प्रचलित था। मोसट्र पर रात के समय के धावों में भेड़ें नहीं ले जाते थे बल्कि ढोरों को ले जाते थे।

यद्यपि इस समय इंगलैंड में भेड़ें तथा ढोर इतनी बड़ी संख्या में पाले जा रहे थे, किन्तु हमारे आज के पैमाने से ये दुबले और छोटे थे। इनकी स्थिति में सुधार १८वीं शताब्दी में हुआ, क्योंकि उस समय तक, सर्दियों के महीनों को छोड़कर, उन्हें खिलाने के साधन बड़े अपर्याप्त थे। एलिजाबेथ काल के एक कृषि के कवि थॉमस टस्सर ने लिखा था :

"क्रिसमिस (दिसम्बर २५) से मई तक,
दुबले ढोरों का क्षय होता है।"

और खुले क्षेत्र की प्रणाली, जोकि अभी तक आधे देश में प्रचलित थी, पशुओं के लिये न तो उचित आवास दे सकती थी और न पर्याप्त चारा ही दे सकती थी।

इंगलैंड का एक भाग अभी तक अपने आप में एक पूरा संसार था, यह वह विशाल पंकिल भूभाग था जो एक ओर लिंकल्न से कैम्ब्रिज तक फैला था और दूसरी ओर किंग्सलिन से पीटरबोरोफ तक। एलिजाबेथ के राज्य के अन्तिम वर्षों में इंगलैंड की संसद् में पंक-प्रदेश से पानी निकालने के नाले बनाने की योजना पर विचार हो रहा था, जैसे नाले डचों ने हालैंड में बनाए थे, जिससे कि इसकी पंकिल और रीड घास वाली भूमियों को कृषि और चरागाहों के योग्य बनाया जा सकता। किन्तु यह महत् योजना तब तक क्रियान्वित नहीं की जा सकी जब तक कि इस प्रकार के कार्य के लिये पर्याप्त पूंजी उपलब्ध नहीं हो सकी। स्टुअर्ट के काल तक इसके दक्षिणार्ध तक और हेनरी के काल तक उत्तरार्ध तक। इस बीच पंक-प्रदेश के निवासी इसके किनारों पर और इसके असंख्य द्वीपों में रहते रहे—द्विरूप जीवन जीते हुए, और बदलती हुई ऋतुओं के साथ अपने व्यवसायों को बदलते हुए। काम्डन लिखता है : "कैम्ब्रिज शायर का सम्पूर्ण ऊपरी तथा उत्तरी भाग नदी के द्वीपों में बंटा हुआ है जिनमें सारी ग्रीष्म ऋतु में बहुत सुन्दर दृश्य होता है, किन्तु शीत ऋतु में लगभग सभी पानी में डूबे रहते हैं और एक प्रकार से सागर का सा दृश्य उपस्थित होता है। इस, तथा शेष पंक-प्रदेश के निवासी (जोकि सफ्फोक से लिंकलनशायर में वेनफील्ड तक ६४ मील तक फैला हुआ है) अपने प्रदेश के समान ही हिंस्र तथा असभ्य स्वभाव के हैं और ऊपरी प्रदेश-वासियों के प्रति बड़े ईर्ष्यालु हैं, और सब लम्बी लाठियों पर, जोकि वे पशु चराने के लिये रखते हैं, ऊँचे चलते हैं। यह सम्पूर्ण प्रदेश शीत ऋतु में, और कभी-कभी वर्ष के अधिकांश भाग में, निकासी के नालों के अभाव में औस, ग्रांट, नैन, वेल्लैंड, ग्लेने तथा विदम नदियों के जलों में डूबा रहता है। किन्तु जब ये नदियां अपने किनारों में सीमित रहती हैं तब यह इतने अद्भुत रूप से समृद्ध घास तथा उत्कृष्ट भूसे से (जिसे कि वे लिड कहते हैं) भर जाता है कि वे लोग अपने उपयोग के लिये पर्याप्त

काट कर शेष को नवम्बर में जला देते हैं जिससे कि दोबारा यह और घना उगे। इस समय कोई इस सम्पूर्ण मूर घास से भरी भूमि को हल्की आग से भरी देखकर आश्चर्यचकित हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रदेश जलाने के लिये विभिन्न प्रकार के घास तथा छत बनाने के लिये फूस आदि उत्पन्न करता है। यहाँ अन्य पानी की झाड़ियां, विशेष रूप से वैंत की, जो या तो स्वतंत्र रूप से उत्पन्न होती हैं अथवा नदियों के किनारे उनकी बाढ़ को रोकने के लिये स्वयं लगाई जाती हैं, भी उत्पन्न होती हैं। इनकी प्रायः ही कटाई होते रहने से ये और अधिक सघनतर होती रहती हैं। इन वैंतों के ही टोकरे बनते हैं।[१] इस प्रदेश में रहने वाले बेचने के लिये जंगली पक्षियों का शिकार बड़े पैमाने पर करते थे। जंगली बत्तखें लोभ देकर अथवा घेरकर जाल के बने विशाल पिंजरों में सैंकड़ों की संख्या में पकड़ी जाती थीं। ईल मछली हजारों की संख्या में एकसाथ पकड़ी जाती थीं।

सम्भवतः यह सन्देहास्पद बात हो सकती है कि क्या पंक-प्रदेश का वासी वास्तव में ही उतना हिंसक और असभ्य था जितना कि 'ऊपर के प्रदेशों' के लोगों ने काम्डन को बताया था। जो भी हो, यह स्वीकार करना नितान्त भ्रामक होगा, जैसाकि बहुत से लेखक करते रहे हैं, कि क्योंकि उनका जीवन द्विरूप (पृथ्वी और जल में बीतने वाला) था, क्योंकि वे दोनों ओर भेड़ें चराते थे, क्योंकि वे नावों पर मछलियाँ पकड़ते, पक्षियों का शिकार करते और रीड घास काटते घूमते थे इसलिये वे सूखी भूमियों के उस कृषक से अधिक "कानून भंग करने वाले थे।" अभी हाल के अनुसन्धान से (एच. एस. डरबी, दि मैडीविअल इंगलैंड, १९४०) पता चलता है कि सम्पूर्ण मध्य युगों में, डूम्स डे बुक के काल से लेकर, मेनर प्रथा के कानून तथा प्रथाओं का सम्पूर्ण पंक-भूमि में अनुसरण होता था; बड़े मठों को, और उनकी समाप्ति के बाद उनके उत्तराधिकारियों को, शुल्क तथा सेवाएं नियमित रूप से भेंट की जाती थीं; और कि मछली पकड़ने के अधिकार तथा स्वामित्व के अत्यधिक जटिल कानूनों का भी पालन होता था, तथा बांध लगाने और नहरें बनाने की समुचित व्यवस्था थी, जिनके बिना जल-मार्ग नावें चलाने के कार्य में नहीं लाया जा सकता था और परिणामतः लिंकन, लिन, बोस्टन, विस्त्रैच, कैम्ब्रिज, सेंट ईव्स, पीटरबोरफ तथा इस प्रदेश के अन्य छोटे नगर अपना व्यापार तथा संचार-सम्बन्ध खो बैठे थे। डरबी के अनुसार, फैन्लैंड (पंक-भूमि) के लगभग प्रत्येक स्रोत और कूल का कोई न कोई निर्माता अवश्य था। संक्षेप में, इसके स्टुअर्ट तथा हेनरी के कालों में कृषि-योग्य बनाए जाने से पूर्व यह प्रदेश वास्तव में ही उभयवास (जल-स्थल) वाला था, किन्तु इसकी अत्यन्त विशिष्ट आर्थिक व्यवस्था थी।

वन्य प्रकृति के इन दृश्यों के बीच इली कैथेड्रल शताब्दियों तक पानी के ऊपर

---

[१] काम्डन : ब्रिटानिया, पृ० ४०८, गिब्सन संस्करण।

पालों वाली नाव के समान तैरता रहा, इसके दो स्तंभ और दो लम्बी चमकती छतें दूर से क्षितिजों पर दिखाई पड़ती थीं। इसकी छाया में एक महल था जहां पर बिशप अपनी कचहरी लगाता था। अभी तक वह अपने मध्ययुगीन पूर्वजों के अधिकारों के अवशेषों का उपभोग कर रहा था। किन्तु वास्तव में सुधार आन्दोलन ने पादरियों की स्वतंत्र शक्ति को कम कर दिया था। राज्य अब चर्च को नियंत्रण में रख रहा था; कभी कभी तो यह इसमें धार्मिक स्वार्थों के प्रति बहुत उद्यततापूर्ण उपेक्षा भी दिखाता था। रानी एलिजाबेथ ने बिशप कोक्स को बाध्य कर दिया था कि वह होल्बोर्न में अपना इली महल तथा विख्यात फलों के बाग अपने एक इष्ट जन क्रिस्टोफर हटन को समर्पित करदे। और जब कोक्स का देहान्त हो गया तब उसने राज्य के लाभ के लिये अट्ठारह वर्षों तक सागर को खाली रखा। किन्तु तब भी कभी इली में बिशप को रहने का अवसर दिया गया, वही फैनलैंड का प्रमुख शासक होता था जबतक कि पहले तो ओलिवर क्रॉमवैल ने और पीछे बैडफोर्ड के ड्यूक ने पोप से अधिक प्रभाव प्राप्त नहीं कर लिया।

फैनलैंड के अतिरिक्त दो अन्य क्षेत्र, एक तो वेल्स का अधिराज्य क्षेत्र और दूसरा उत्तरी सीमांत क्षेत्र एलिजाबेथ के इंगलैंड से आर्थिक तथा सामाजिक संरचना में भिन्न थे। किन्तु अब वे साधारण ढांचे के निरन्तर निकट आ रहे थे, और इन दोनों में भी, वेल्स आधुनिक जीवन की ओर अधिक आगे बढ़ आया था।

सम्पूर्ण मध्य युगों में वेल्स पहाड़ियों पर आदिम जीवन व्यतीत करने वाले वेल्सवासियों तथा आंग्ल सामंतवाद के पोषक 'सेनानी सरदारों' के बीच सैनिक तथा सामाजिक संघर्ष का क्षेत्र रहा। रोसेस के युद्धों के युग में सेनानी सरदार इंगलैंड के उत्तराधिकार के लिये लड़े जाने वाले युद्धों में निर्णायक भाग लेने के लिये पूर्व की ओर मुड़े, जिसका सुपरिणाम यह हुआ कि उनकी स्वतंत्र शक्ति समाप्त हो गयी। पन्द्रहवीं शताब्दी समाप्त होते होते उनके प्रमुख दुर्ग तथा सम्पत्तियां राजा के अधिकार में जा चुकी थीं।

ऐसी अवस्था में राजा के अधीन इंगलैंड तथा वेल्स के संयुक्त हो जाने का अवसर था, यदि यह कार्य वेल्सवासियों की राष्ट्रीय भावनाओं तथा परंपराओं को हानि पहुंचाए बिना किया जा सकता, क्योंकि आयरलैंड वालों की भावनाएं ट्यूडर की नीति के कारण बहुत घातक रूप से उभाड़ी जा चुकी थीं। सौभाग्यवश वेल्स में परिस्थितियां अधिक अनुकूल थीं। पुराने मूलनिवासियों को इंगलैंड वालों से पृथक् करने वाले न तो कोई धार्मिक मतभेद ही उत्पन्न हुए और न उनकी भूमि छीनकर उनके राज्य के अधीन करने का ही कोई प्रश्न था। सुयोगवश, बोस्वर्थ फील्ड ने इंगलैंड की राज्यगद्दी पर एक वेल्स के कुल को प्रतिष्ठित कर दिया था और इस प्रकार से ट्यूडरों के प्रति वफादारी वेल्स के निवासियों के लिये एक राष्ट्रीय गर्व का विषय थी।

इन सुखद परिस्थितियों में हेनरी अष्टम् ने दोनों देशों को वैधानिक, संसदीय तथा शासनिक रूप से एक में मिला दिया। इंगलैंड की मांडलिक व्यवस्था (काउंटी सिस्टम), शान्ति के न्याय का नियम (रूल ऑफ़ दि जस्टिस ऑफ़ दि पीस) तथा अंग्रेजी कानून सम्पूर्ण राज्य क्षेत्र पर लागू कर दिये गये। वेल्स के प्रमुख लोग अपने मंडलों का इंगलैंड की संसद में प्रतिनिधित्व करके गर्वित अनुभव करते थे। वेल्स की परिषद्, स्टार चैम्बर के अनुरूप राजकीय मंत्रालय, तथा उत्तर की एक परिषद् इन तीनों ने पुरातन से नूतन की ओर संक्रमण के दीर्घ काल में व्यवस्था बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। घाटियों में सामंतवाद सेनानी सरदारों के साथ ही समाप्त हो गया था और पहाड़ों पर से आदिमता की भी समाप्ति हो गयी थी, और यह सब वैसे किसी भी संघर्ष के बिना हुआ जैसे संघर्ष दो शताब्दियों बाद स्कॉटलैंड के पार्वत्य प्रदेशों में इनकी समाप्ति के समय हुए थे। सरकारी ढांचा, और बहुत सीमा तक समाज का रूप भी, अंग्रेजी आदर्श पर ढाले जा चुके थे। किन्तु वेल्स ने अपनी देशी भाषा, कविता तथा संगीत को नहीं छोड़ा, उसकी आत्मा अभी तक उसकी अपनी ही थी।

वेल्स का भूस्वामी वर्ग, जोकि पहले के आदि-जातीय नेताओं, पुराने सेनानी सामंत सरदारों तथा उस वर्ग के 'नये लोगों' का सम्मिश्रण था, ट्यूडर-शासन से बहुत सन्तुष्ट था। ट्यूडर शासक वेल्स के भूस्वामियों के साथ वही व्यवहार करते थे जो वे इंगलैंड के भूस्वामियों के साथ करते थे। उनमें से कुछ अभी हाल ही में लागू हुए अंग्रेजी कानून के अधीन बड़ी बड़ी संपत्तियां संचित कर रहे थे और आगामी वर्षों में ये संपत्तियां बहुत बड़ी हो गयी थीं। किन्तु एलिजाबेथ के काल में और उसके कुछ काल बाद तक वेल्स के भूस्वामियों का एक बहुत बड़ा ऐसा वर्ग भी था जो अल्प संपत्ति तथा अल्प आडंबर से युक्त था। जनरल बैरी ने ओलिवर क्रामवैल को वेल्स में स्थित अपने सैन्य शिविर से लिखा था : "यहां एक सौ पाऊंड वार्षिक आय के पचास व्यक्ति मिलने आसान हैं किन्तु पांच सौ पाऊंड की वार्षिक आय वाले पांच व्यक्ति नहीं मिल सकते हैं। इनमें से अधिकांश, जैसेकि इंगलैंड के सामन्त जमींदार (स्क्वायर) ट्यूडर तथा आरंभिक स्टुअर्ट कालों में समृद्ध हो रहे थे, किन्तु अट्ठारहवीं शताब्दी में वे धीरे धीरे समाप्त हो गये और वेल्स में बड़ी भू-संपत्तियां ही अधिक रह गयीं।

किन्तु वेल्स के लोगों का मुख्य भाग भूस्वामी वर्ग न होकर छोटे खेतीहर किसान थे। वेल्स में बड़े बड़े व्यापारिक प्रकार के उतने फार्म नहीं थे जितने इंगलैंड में थे। न ही ये दुर्भाग्यपूर्ण आयरलैंड के किसानों के खेतों की तरह अनावश्यक रूप से छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटे हुए थे। वेल्स के आधुनिक समाज का पुष्ट आधार कृषक-कोचित तथा पारिवारिक प्रकार के छोटे खेतों पर टिका था, किन्तु ये खेत इतने छोटे भी नहीं थे कि किसान के लिये आत्मसम्मानपूर्वक जीवन बिताना भी संभव नहीं होता। भूस्वामियों से उनके संबंध इंगलैंड के कृषक-भूस्वामी के संबंधों जैसे थे, आयरलैंड तथा

स्कॉटलैंड के पहाड़ी प्रदेशों जैसे नहीं थे जहांकि किसान भूस्वामियों के शोषण के कारण निर्धन थे।

वेल्स में मठों का विलय उसी प्रकार से हुआ और उसके सामाजिक परिणाम उसी प्रकार के हुए जैसे इंगलैंड में हुए। इसके विरुद्ध उत्तर की "धार्मिक तीर्थ-यात्रा" के समान विद्रोह नहीं हुआ। वेल्स के उच्च वर्ग को सुधार से लाभ हुआ था और किसान अपने अज्ञान के कारण इसके प्रति तटस्थ रहे। यदि वे इंगलैंड की विदेशी भाषा में लिखे प्रार्थना-ग्रन्थ तथा बाईबल को नहीं समझते थे तो वे लातीनी भाषा में लिखे मास को भी नहीं समझते थे। अब तक उन्हें धर्म ने स्पर्श नहीं किया था। इससे पूर्व एलिजाबेथ के काल में वेल्स का कृषक-वर्ग एक बौद्धिक जड़ता तथा शैक्षणिक उपेक्षितता की स्थिति में था जोकि वास्तव में ग्रामीण जीवन में उपलब्ध अच्छाई तथा उसकी पुरातन परंपरा के सर्वथा अनुकूल था किन्तु जिसकी यह स्थिरता शीघ्र ही किसी बाहरी प्रभाव से क्षुब्ध होने वाली थी। यह कौन सा प्रभाव होने वाला था? यह प्रभाव था जीस्यूट मिशनरी लोग जिन्होंनेकि कुंवारी (अकृषित) धरती को क्षत किया होता किन्तु जिन्होंने वेल्स को अक्षत ही छोड़ दिया। आखिरकार, एलिजाबेथ के राज्य के अन्तिम दस वर्षों में चर्च ने 'अपना कर्तव्य करना आरंभ किया और बाइबल तथा प्रार्थना-पुस्तक का वेल्टन भाषानुवाद तैयार किया। इससे वेल्स में प्रोटेस्टेंटवाद तथा अट्ठारहवीं शताब्दी के महान धार्मिक तथा शैक्षणिक आन्दोलनों की नींव पड़ी।'

ट्यूडर राजाओं के काल में ट्रैंट के उत्तरी भाग के इंगलैंड का जीवन अपनी तरह का एक विलक्षण जीवन था। स्कॉटलैंड की सीमाओं पर होने वाला निरन्तर उत्पात, वस्त्रोत्पादक घाटियों तथा कानों वाले जिलों को छोड़ कर सम्पूर्ण प्रदेश की निर्धनता, पुरानी सामन्तीय धारणाओं की दृढ़ता तथा मठों और पुराने धर्म के प्रति अधिक आस्था ये सब हेनरी अष्टम् के युग में इस प्रदेश को शेष इंगलैंड से पृथक् करते थे और यह अवस्था एक सीमा तक एलिजाबेथ के काल में भी रही।

हेनरी युग के आरंभिक वर्षों में भी सीमा-प्रवेश अभी इस प्रदेश के योद्धा-परिवारों द्वारा ही शासित था, विशेषतः पर्सियों और नेवेल्लियों द्वारा जिनके कि नोर्थम्बरलैंड तथा वेस्टमोलैंड के अर्ल नेता थे। इन भेड़ों वाले प्रदेशों के इन सशस्त्र कृषकों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तीव्र उत्कंठा के साथ परंपरागत मुखियाओं के प्रति वफादारी की भावना भी विद्यमान थी, जो मुखिया न केवल स्कॉटलैंड के आकस्मिक आक्रमणों में ही इनका नेतृत्व करते थे बल्कि स्वयं ट्यूडर सरकार के विरुद्ध लड़े गये युद्धों में भी नेतृत्व करते थे। १५३६ की "धार्मिक तीर्थयात्रा" मठों की रक्षा के लिये तथा सीमा के सरदारों की अर्ध-सामंतीय शक्ति के विरुद्ध आयोजित की गई थी। हेनरी ने उस विद्रोह के दमन के अवसर का उपयोग सामंतवाद के दमन के लिये किया और राजकीय अधिकार का विस्तार सीमान्त के जिलों तक किया। इसके लिये उसने परंपरागत सरदारों के

प्रभाव को हटा कर मार्चेस (एक प्रदेश का नाम) के नेताओं को राज्य की ओर से नियुक्त किया। हेनरी का किया अधिकांश कार्य कभी पीछे भी नहीं मिटा, विशेषत: यॉर्कशायर में। किन्तु नार्थम्बरलैंड तथा कम्बलैंड शायद ही कभी वास्तव शांति में रह पाये होंगे। हेनरी अष्टम् तथा एड्वर्ड षष्ठ की नीति स्काटलैंड के प्रति बहुत मूर्खतापूर्ण रूप से शत्रुता की थी, और दो जातियों के बीच यदाकदा चलने वाले संघर्षों तथा निरन्तर शत्रुभाव ने सीमान्तीय मंडलों की अशांति को बहुत लंबा कर दिया था। मेरी के राज्यकाल में रोमन कैथोलिकों का प्रभाव पुनरुज्जीवित हो गया था और इसके साथ ही पर्सी परिवार का प्रभाव भी, जिसेकि हेनरी अष्टम् ने ध्वस्त किया था।

इस प्रकार से, जब एलिजाबेथ ने राज्यारोहण किया तब नवीन तथा प्राचीन धर्मों के बीच, तथा राज्य और सामंतवाद की शक्तियों के बीच संघर्ष सुदूर उत्तर के प्रदेशों में अभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ था। इस प्रकार से उस समय सीमा पर के अधिक सभ्य प्रदेशों में, पूर्व में नॉर्थम्बलैंड के सागर की ओर के प्रदेशों में तथा पश्चिम में कंबरलैंड के प्रदेशों में ऐसी वस्तुस्थिति थी। इन प्रदेशों के मध्य में थे मध्य मार्चेस तथा चेविअट ज़िले के पंक्ति तथा पहाड़ी प्रदेश जहांकि रेडेस्डेल तथा उत्तरी टाइने के प्रदेशों में अभी पर्याप्त अव्यवस्था तथा आदिमावस्था थी। इन डाकुओं की घाटियों में, जोकि पथहीन तथा जंगली घास से आकीर्ण वीरान् भूमियों के द्वारा सभ्य संसार से कटी हुई थीं, वे आदिम जातियां बसी थीं जो राजा के आदेश अथवा पर्सियों, नेविलों तथा डेकरों की सामंतीय शक्ति की परवाह नहीं करती थीं। वास्तव में, इन वन्य प्रदेशों के योद्धाओं की एकमात्र वफादारी अपने कबीलों के प्रति ही थी। परिवार-प्रेम अपराधियों को बचाने तथा कानून तोड़ने में सर्वाधिक सहायक था। चोरों की इन घाटियों में चुरायी गयी सम्पत्ति का अनुसरण और इसको वापिस प्राप्त कर लेना संभव नहीं था, क्योंकि प्रत्येक योद्धा हिंस्र कबीले की प्रतिशोधपूर्ण स्पर्धा द्वारा सुरक्षित था। छोटे परिवारों को चार्लटनों के शासन में सुरक्षा मिली। हाल, रीड, हेड्ले, रेड्सडेल के फ्लैचर, चार्लटन, हॉड, रोब्सन तथा उत्तर टाइने डेल के मैलबोर्न ऐसी असली राजनैतिक इकाइयां थे जो अन्य किसी प्रकार के राजनैतिक संगठन के प्रति अनभिज्ञ थीं। जब राज्य ने कर बढ़ाए तब वह कबीलों के मुखियाओं के द्वारा ही इन करों का संग्रह करता था।

राजकीय आयुक्तों (कमिश्नरों) ने १५४२ तथा १५५० में इस सीमा की स्थिति का विवरण देते हुए लिखा था कि इन कानून-रहित घाटियों में १५०० व्यक्ति सशस्त्र तथा स्वस्थ शरीर के हैं। अनुपजाऊ भूमि उनके परिवारों से लिये पर्याप्त खाद्य उत्पन्न नहीं कर सकती, इसलिये स्कॉटलैंड के पार्वत्य प्रदेशवासियों के समान ये अपने पूर्वी तथा पश्चिमी प्रदेश के सम्पन्न पड़ोसियों के पशु आदि चुराकर अपनी जीविका चलाते हैं। वे स्कॉटलैंड के लिडेस्डेल प्रदेश के लुटेरों के निकट संपर्क में थे, जहांकि वैसी ही सामाजिक स्थिति थी। इन दोनों ही देशों के पंक-स्थिति सैनिकों पर जब कभी उनसे

त्रासित लोग आक्रमण करते तब वे दूसरी सीमा के पार भाग सकते थे और तबतक वहां सुरक्षित रह सकते थे जबतक कि खतरा टल नहीं जाता था। किन्तु सामान्य रूप से कोई अंग्रेज अधिकारी इनका पीछा उत्तरी टेने अथवा रेडे तक करने का साहस भी नहीं करता था, लेडिस्डेल की तो बात ही क्या। डाकुओं के ये मजबूत गढ़, जोकि शाहबलूत वृक्षों के तनों से निर्मित होते थे, अत्यन्त दुर्गम और भयानक पंक-भूमियों में घने जंगलों में बने होते थे जिनके बीच से किसी व्यक्ति को रास्ता मिलना असंभव होता था। हेनरी अष्टम् के आयुक्तों ने अपने राजा को यह बताने का साहस नहीं किया कि उत्तरी टेने तथा रेडे को जीतने और अधिकार में रखने पर कितना व्यय होगा, बल्कि केवल आक्रमणों को रोकने के लिये चौकसी रखने और व्यवस्था रखने तथा अप्रशासित प्रदेशों की सीमाओं पर स्थित हार्बोटल तथा चिप्चेस किलों में सैनिक रखने विषयक सुझाव ही इसके लिये दिये जिससे कि निम्नस्थ भूमियों के निरन्तर आक्रमणों पर नियंत्रण रखा जा सकता।

सीमा के दोनों ओर इस प्रकार का समाज था जो उस समय वहां के लोकगीतों की सृष्टि कर रहा था, जो कि एक से दूसरी संतति को श्रुति से प्राप्त होते थे। बहुत से गीत, जो हमें आज उपलब्ध हैं, एलिजाबेथ तथा स्कॉटलैंड की रानी मेरी के काल में लिखे गये थे। ये लोकगीत, जोकि प्रायः सदैव अत्यन्त करुणापूर्ण होते थे, जीवन तथा मृत्यु संबंधी ऐसी घटनाओं का वर्णन करते थे जो उन दिनों उस प्रदेश में प्रतिदिन घटती थीं। इस उत्तरी प्रदेश की ये असंस्कृत सहज अभिव्यक्तियां शैक्सपीयर के शिष्ट संस्कृत इंगलैंड के काव्य से नितान्त भिन्न थीं। दक्षिणी इंगलैंड के गीतों में एक प्रेमी-युगल के लिये 'मरणोत्तर अमरता' की काफी संभावनाएं होती थीं। किन्तु सीमा-प्रदेश के आल्हा में प्रेमी की भूमिका में आना एक बड़ी खतरनाक बात थी। उस पर कोई पिता, माता, भाई या प्रतिस्पर्धी दया नहीं करता था। होमर-काल के यूनानियों के समान सीमा-प्रदेश के लोग क्रूर और हिंस्र थे जोकि वन्य पशुओं के समान एक-दूसरे को मारते थे, किन्तु ये गर्व, आत्मसम्मान तथा असंस्कृत वफादारी में बहुत दृढ़ थे; वे बिना सीखे ही एक प्रकृत कवि होते थे (जोकि आजकल लोग नहीं होते हैं) और पुरुष या स्त्री की अवार्य नियति को अत्यन्त सशक्त भाषा में व्यक्त कर सकते थे, और उन क्रूरताओं से प्रपीड़ितों पर के दया व्यक्त करते थे जो क्रूरताएं कि वे निरन्तर एक-दूसरे पर करते थे।

एलिजाबेथ के राज्य में स्कॉटलैंड के साथ राजनैतिक संबंध बहुत अधिक और स्थायी रूप से अच्छे हो गये थे क्योंकि अब दोनों देशों की सरकारों का एक सांझा स्वार्थ हो गया था, और वह था भीतरी और बाहरी शत्रुओं से सुधारवाद की रक्षा करना। स्कॉटलैंड तथा इंगलैंड की सेनाओं के बीच सीमा-संघर्ष समाप्त हो गये और ढोरों के लिये आक्रमण भी कम तो हो ही गये। किन्तु रैड्स्डेल तथा उत्तरी टाइने के अंगरेज लुटेरों द्वारा अपने अधिक सभ्य देशवासियों के फार्मों को लूटना जारी रहा। एलिजाबेथ के राज्य

के मध्यवर्ती काल में कामडन "रोम की दीवार" पर स्थित हाउस्टैंड्स में अपनी पुरातत्व सम्वन्धी यात्राओं के लिये पंक-क्षेत्रीय सेनाओं के डर के कारण नहीं जा पाया था जोकि उस प्रदेश को बलात् अपने अधिकार में किए हुए थीं। नीथरवी के ग्राहक लोग, जोकि एस्क और सोल्वे के संगम पर वसा हुआ एक कवीला था, अपने कम्बरी पड़ौसियों की भूमियों पर निरन्तर धावे करते रहते थे। लूट-खसोट की, और स्त्री-पुरुषों का अपहरण कर धन लेने के लिये उनको कैद रखने की घटनाएं राज्ञी एलिजावेथ के राज्य के अन्त तक एक बहुत सामान्य बात थी।

यद्यपि निम्न भूमियों (पंक प्रदेशों) में लूट की ये घटनाएं जारी रहीं किन्तु १५७० के विद्रोह के दमन से पर्सियों, डेकरों तथा नेविल्लों की सामन्तीय शक्ति पूर्णतः नष्ट हो गयी। उस संघर्ष के वाद नार्थम्बरलैंड तथा कंवरलैंड पर केवल राजा के वफादार सामन्तों का शासन रहा।

अभी एलिजाबेथ के आरंभिक काल में इस सीमा से तीस मील तक की दूरी पर कैथोलिक सामन्तों और जमींदारों के संरक्षण में चर्चों में प्रार्थना (मास) होती थी। किन्तु धीरे-धीरे इस प्रदेश में वर्नार्ड गिल्पिन जैसे धर्म नेताओं के प्रयत्न से इस प्रदेश में प्रोटेस्टेंटवाद का प्रचार बढ़ा। किन्तु साम्राज्ञी के शासन के दृढ़ होने के साथ कार्लिस्ले के बिशप लोग क्रमशः एकरूपता लाने के लिये वहुत उत्सुक हो उठे थे। किन्तु 'अश्वारोही' ज़िलों के योद्धा किसानों से बलात् किसी धर्म अथवा अन्य किसी बात को स्वीकार करवा लेना उतना सहज नहीं था। इसलिये उस प्रदेश में परिवर्तन बहुत धीरे धीरे हुआ।

एलिजाबेथ के राज्य के अन्त तक कम्बरलैंड तथा नार्थम्बरलैंड के अनेक किसानों ने अपनी भूमियों पर अधिकार मार्चेस के अधिकारियों को आवश्यकता होने पर अपनी सेवाएं अर्पित करके रखा था। उत्तर के ये तीव्र अश्वारोही, चाहे ये राजकीय सेवा में होते और चाहे लूटने वाले कवीलों के साथ, चमड़े के कोट तथा इस्पात की टोपी पहनते थे, भाले या धनुष पिस्तौल से सज्जित होते थे और एक स्थानीय नस्ल के तेज दौड़ने वाले घोड़ों पर, जोकि उस पंकिल प्रदेश में अपना रास्ता खूब अच्छी तरह से पहचानते थे, वे चढ़ते थे।

१६०३ में जेम्स प्रथम की हत्या के साथ होने वाले इंगलैंड और स्काटलैंड के एकीकरण के वाद सीमा के दोनों ओर के अधिकारियों में सहयोग सम्भव हो गया, और वे अन्ततः पंक-प्रदेश की सेनाओं को दवाने में सफल हो गये और राजा का नियंत्रण चोर-घाटियों के भीतर तक स्थापित कर सके। नेवर्थ के 'बेल्टेड विल होवर्ड' ने, जो कि यद्यपि एक कैथोलिक धर्म-विरोधी था, पश्चिमी सीमांतों पर राजा जेम्स की उसके अंग-रक्षक के रूप में सेवा की थी। उसने ग्राहमों तथा अन्य पंक-सैनिक कवीलों को उनका पीछा करके मारा और शिकारी कुत्तों के साथ उनके घरों तक उनका पीछा

किया। उत्तरी टेने तथा रेडेस्डेल धीरे-धीरे कानून के अनुशासन में लाए गये। सत्रहवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में नार्थम्बरलैंड के भूस्वामी लोगों ने सर्वप्रथम छोटे किलों अथवा सुरक्षा-स्तंभों के बजाय मेनर हाऊस बनाए। यह एक आश्चर्य की बात है कि सीमा का क्रूर असभ्य जीवन, जोकि इसका रूप एलिजाबेथ तक के युग में था, अत्यन्त प्रगतिशील उद्योगों वाले प्रदेश तथा कोयलों की खानों वाले निम्न टाईने तथा पूर्वी डर्हम के प्रदेशों के बहुत समीपवर्ती प्रदेशों में अपने पुराने ही ढर्रे पर चल रहा था। ऊपरी सतह के कोयले की प्राप्ति तो रोम द्वारा विजय के समय से भी पहले हो गयी थी, किन्तु अब कानें अधिक गहरी होने लगी थीं और कान के कार्यकर्त्ता के कार्य का रूप कान के आधुनिक कार्यकर्त्ता के पूर्वजों के बहुत निकट आ गया था। न्यू कैसल, जोकि लण्डन के कोयले के सागर-व्यापारी का बड़ा केन्द्र था, इस रूप में विलक्षण था कि यहाँ पर्सियों का सामंतीय विश्व, पंक-सैनिकों का आदिम विश्व तथा कोयला व्यापार, जोकि आधुनिक युग से बहुत भिन्न नहीं था, सब एकत्र स्थित थे।[1]

सुरक्षा स्तम्भों तथा दृढ़ किलों से युक्त सीमा-प्रदेश के, जोकि अभी भी एक अस्थिर हालत में था, दक्षिण में एलिजाबेथ युग का इंगलैंड सर्वत्र जमींदार प्रासादों (मेनर हाऊसों) का इंगलैंड बन रहा था जोकि आकार, सामग्री, और वास्तुकला की शैली सभी में परस्पर बहुत भिन्न थे, किन्तु सभी उस युग की शान्ति और आर्थिक समृद्धि, प्रदर्शन, सौन्दर्य तथा पृथ्वी पर मानव-जीवन की महिमा में रुचि के प्रतीक थे।

सम्पत्ति और शक्ति, तथा इनके साथ वास्तुकला के क्षेत्र का नेतृत्व अब चर्च के राजाओं के हाथ से जमींदारों के हाथ में चले गये थे। धार्मिक भवनों का महान् युग, जो शताब्दियों तक जीवित रहा, अब अन्ततः समाप्त हो गया था। नया धर्म पवित्र मठ-भवनों के बजाय "पुस्तक" (बाइबल), दिव्य सन्देश तथा धर्म-गीतों का पोषक था : प्रोटेस्टेंट इंगलैंड की धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पहले से ही काफी संख्या में उत्कृष्ट चर्च विद्यमान थे।

एलिजाबेथ काल की वास्तुकला में गोथिक तथा क्लासिकी, दूसरे शब्दों में प्राचीन अंग्रेजी और नवीन इतालवी, दोनों प्रकार के तत्वों का समावेश था। राज्य के आरंभिक काल में अपेक्षाकृत अधिक असमंजस और चित्रात्मक वास्तुकला का प्रयोग होता था, विशेषतः पुराने दुर्ग-मंडित भूस्वामी-गृहों को अधिक शांत और भव्य घरों में परिवर्तित करने में, जैसेकि पैनशर्स्ट और हैडुन हाल थे। किन्तु उनके साथ-साथ, और जैसे-जैसे समय बीता, नये व्यक्तिगत महलों की इतालवी अथवा क्लासिकी शैली में एक व्यवस्थित योजना होने लगी, जैसेकि लांग लीट, ऑड्ले इंड, कैनिलवर्थ में लीसेस्टर का

---

[1] ट्यूडरों के काल के सीमा-प्रदेशों के लिये द्रष्टव्य : विक्टोरिया काउंटी हिस्ट्री, कंबरलैंड, होजसंस् हिस्ट्री आफ़ नार्थवरलैंड तथा डा० रेशल रीड की नोर्थ पार्ट्स अंडर दि ट्यूडर्स (ट्यूडर स्टडीज, सं० सेटन वाट्सन, १९२६)।

भवन तथा भव्य मॉन्सेक्यूट—जो कि सोमर्सेट के सुदूर जिले में केवल एक ग्रामीण भू-स्वामी का स्थानीय पत्थरों से बना हुआ घर था किन्तु तब भी निश्चित रूप से संसार भर के सर्वाधिक भव्य और सुन्दर घरों में से एक था।

ऑड्ले इंड के समान नयी शैली में बने ग्राम-घरों में तथा ग्रेशाम के "रॉयल एक्स्चेंज" जैसे सार्वजनिक भवनों में एक जटिल पुनरुत्थान कालीन अलंकार बाहरी भाग के पत्थर के काम को और भीतरी भाग के लकड़ी के काम को एक नया सौंदर्य दे रहा था। इसका एक उत्कृष्ट तथा विशुद्ध नमूना गायस कालेज कैंब्रिज में १५७५ में निर्मित "सम्मान-द्वार" (गेट ऑफ़ ऑनर) है। एलिजाबेथ युगीन बड़े भवनों और प्रासादों की शैली तथा अलंकरण की योजना अधिकांशतः जर्मन कलाकार, जोकि इसी उद्देश्य से बुलाए जाते थे, निर्माण करते थे। क्योंकि उनकी रुचि तथा परम्परा किसी भी प्रकार से बहुत उत्कृष्ट नहीं थी इसलिये यह सौभाग्य ही समझना चाहिए कि कुछ योग्य स्वदेशी निर्माता तथा कलाकार भी थे।

अधिक भव्य ग्रामीण प्रासादों के साथ साथ असंख्य छोटे भूस्वामी-गृह भी थे जो अनेक प्रकार की शैलियों में और अनेक प्रकार की सामग्री से बने थे, कुछ पत्थर के, कुछ चेशायर के मोरेटन ओल्डहाल के समान काली और सफेद अर्ध लकड़ी (हाफ टिंबर=भवन निर्माण की एक शैली) के, और कुछ लाल इंट के, जहां न पत्थर ही पर्याप्त था और न लकड़ी ही पर्याप्त थी।[1] यद्यपि खिड़कियां कांच की फट्टियों की बनी होती थीं, बल्कि जालियों की बनी होती थीं, तब भी वे पहले की अपेक्षा बहुत बड़ी होती थीं और उनसे सुन्दर कमरों और एलिजाबेथीय गलियारों में खूब प्रकाश और वायु आती थी। अब सादा-साफ कांच जालियों में प्रयुक्त होता था, जबकि ट्यूडर युग के आरंभिक काल में जैतून वृक्ष की बढ़िया छड़ें इनमें चौरस लगा दी जाती थीं, अब केवल बहुत साफ कांच ही लगाया जाता था।

पहले तो बढ़िया कांच विदेशों से आता था, किन्तु आरंभिक एलिजाबेथ युग में इंगलैंड के उद्योग नॉर्मंडी तथा लोरइन के कारीगरों के कारण पहले से उन्नततर हो गये थे। वील्ड, हैम्पशायर, स्टैफर्डशायर तथा लंडन के उद्योग अब न केवल खिड़कियों के कांच ही मुहय्या कर रहे थे बल्कि बोतलों तथा पीने के गिलासों के लिये भी कांच दे रहे

---

[1] १५७७ में हैरिसन ने लिखा था :

हमारे ज़मींदारों के प्राचीन प्रासाद और घर अधिकांशतः मजबूत लकड़ी के बने हैं, और हमारे वास्तुकलाकार अन्य देशों के वास्तुकलाकारों से किसी भी दृष्टि से पर्याप्त उत्कृष्ट हैं। ये प्रासाद ईंट के, या पत्थर के, अथवा दोनों के बने होते थे, इनके कमरे बड़े तथा सुरम्य होते थे, और कार्यालयों के भवन निवास-स्थानों से काफी दूर होते थे।

थे। ये गिलास वीनस के मुरानो प्रदेश से आने वाले उन कीमती वर्तनों की नकल पर वनाए जा रहे थे जिन्हें केवल धनी लोग ही खरीद सकते थे।

उत्कृष्टतर प्रकार के कमरों में सफेद चूने से रंगी छतों पर प्लास्टर का काम अत्यन्त चटकीला होता था, और इसके मोड़ बहुत बार रंग अथवा स्वर्ण से मंडित होते थे। दीवारें पच्चीकारी के काम से अथवा चित्रित कपड़ों से सजी होती थीं जिन पर या तो विभिन्न ऐतिहासिक कथाएं चित्रित होती थीं अथवा फूल-पत्तियां वनी होती थीं; अथवा ये हमारे देश के जैतून की लकड़ी से अथवा पूर्वी देशों से (अर्थात् वाल्टिक प्रदेशों से) लायी गयी विशेष लकड़ी (वेन्स्कोट) से सजी होती थीं। (हैरिसन)

दीवारों को सजाने का एक अपेक्षाकृत कम खर्चीला ढंग था उन पर ही चित्र वना देने का। फ्रेम किये हुए चित्र, सिवाय पारिवारिक चित्रों के, जमींदारों तक के घरों में बहुत कम होते थे। किन्तु अधिक सम्पन्न प्रासादों में अवश्य वेनीस की शैली के चित्र लगे होते थे।

ग्राम या नगर के सामान्य लोगों के घरों में धनियों की अट्टालिकाओं या महलों की अपेक्षा कम परिवर्तन हुए थे। अभी भी वे फूस की छतों वाली लकड़ी की कुटियायें थीं जिनमें इधर-उधर खाली स्थान चिकनी मिट्टी, भूसा मिली मिट्टी तथा पत्थर के कंकरों से भरे जाते थे।

हैरिसन ने लिखा है : "राज्ञी मेरी के काल में इस प्रकार की भोंडी झोंपड़ियां देख कर स्पेन के लोग हैरान होते थे, विशेषतः इस वात पर कि उन अत्यन्त पारिवारिक माधुर्य से पूर्ण घरों में खान-पान कितना समृद्ध था। यह जीवन इतना समृद्ध था कि ये लोग इस वात के लिये वहुत प्रसिद्ध थे कि "यद्यपि इनके घर मिट्टी और भूसे के वने होते हैं किन्तु रहते ये राजा के समान हैं।"

एलिजावेथ युग का काव्य, संगीत और नाटक जिस उच्चस्तर तक पहुंचे थे उतना उच्चस्तर चित्रकला ने संस्था के रूप में प्राप्त नहीं किया था, यद्यपि कुछ योग्य कलाकारों ने व्यक्तिगत रूप से राज्ञी तथा उसके दरवारियों के उत्कृष्ट चित्र वनाये थे। निकोलास हिल्लिआर्ड ने, जोकि एक्सेटर के एक नागरिक का पुत्र था, अंग्रेज़ी लघु-चित्र-निकाय (स्कूल ऑफ़ मिनिएचर्स) का प्रवर्तन किया था। यह सूक्ष्म-कोमल तथा सुन्दर कला उस समय बहुत मांग में थी—न केवल दरवारियों में, जोकि राज्ञी के लघु-चित्रों के लिये परस्पर स्पर्धा कर रहे थे और एक चित्र के लिये चालीस, पचास और यहां तक कि एक सौ तक ड्यूकैक (एक सोने का सिक्का) देने को तैयार थे, वल्कि सामान्य लोगों में भी अपने परिवार अथवा मित्रों के स्मारकों के लिये इन चित्रों की वहुत मांग थी। लघु-चित्रकला का प्रचलन इंगलैंड में कोस्वे के युग तक (ज्योर्ज तृतीय के राज्य के अन्तिम वर्षों तक) रहा, वास्तव में इस कला की हत्या केवल फोटोग्राफी ने की, जैसेकि विज्ञान ने अन्य भी अनेक कलाओं की हत्या की थी।

पुरुषों की पोशाक का खर्चीलापन तथा वैचित्र्य निरन्तर व्यंग्य के विषय थे। 'गर्वीले इटली' के तथा फ्रांस के फैशनों की अनवरत नकल की जा रही थी। और परिणामतः, इस युग के जमींदारों और धनिकों के जीवन में दर्जी का भाग बहुत महत्वपूर्ण था। हीरे और सोने की लड़ियां तथा अन्य अनेक प्रकार के कीमती अलंकार पुरुष उतने ही धारण करते थे जितने कि स्त्रियां करती थीं। स्त्रियां और पुरुष दोनों अपने कंठों में अनेक आकारों और रूपों के कंठाभरण धारण करते थे। ऐसे फैशन धनिकों तक ही सीमित थे, किन्तु दाढ़ी सभी वर्गों के लोग रखते थे। 'उस समय हाल में बड़ा उत्सव होता था जबकि सबकी दाढ़ियां लहराती थीं।'

जमींदारों-भूस्वामियों को अपने नागरिक जीवन में अपनी पोशाक के रूप में तलवार धारण करने का अधिकार था। द्वन्द्व के कानून, जोकि शिष्टाचार-संहिता (कोड ऑफ़ ऑनर) द्वारा स्वीकृत थे, एक अधिक असभ्य रीति, 'हंगामाईहत्या', भू-स्वामी या सामन्त के रक्षकों या भृत्यों द्वारा शत्रु की हत्या की रीति, को स्थानान्तरित कर रहे थे।

व्यापार, कृषि तथा व्यापक समृद्धि के निरन्तर बढ़ने के कारण मार्गों पर पहले की अपेक्षा कहीं अधिक आवागमन था। तीर्थयात्रा की मध्ययुगीन परंपरा ने लोगों में यात्रा तथा भ्रमण के लिये एक रुचि उत्पन्न कर दी थी जोकि धार्मिक प्रयोजन के लिये तीर्थ-दर्शन की परंपरा समाप्त हो जाने पर भी बनी रही। औषधोपयोगी वन्य निर्झरों का महत्व अब पवित्र कूओं का स्थान ले रहा था। जैसाकि काम्डन ने लिखा है, सुदूर डर्बीशायर के बक्स्टर प्रदेश में बहुत बड़ी संख्या में धनी और जमींदार लोग भ्रमण के लिये तथा यहां के झरने का पानी पीने के लिये आते थे। धनी यात्रियों के ठहरने के लिये श्रुस्बरी के अर्ल ने सुन्दर निवास-स्थान बनवा रखे थे। स्नान का अभी बहुत प्रचलन नहीं हुआ था, क्योंकि, यद्यपि इसका जल बहुत विख्यात था किन्तु यह स्नान के लिये स्थान बहुत अनुपयुक्त था। एलिजाबेथ युग की सरायों का एक वैशिष्ट्य इस बात में था कि इनमें यात्रियों की सुविधाओं की ओर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था। फिनेस मॉरिसन ने, जिसने कि आधे यूरोप की सरायों की योजनाएं बनाई थीं, अपने अनुभव के प्रकाश में लिखा था :

"संसार में अन्यत्र कहीं वैसी सरायें बनवाने की सामर्थ्य नहीं है जैसी इंगलैंड में, चाहे इसे अतिथि की अपनी व्यक्तिगत रुचि के अनुसार भोजन तथा अन्य सस्ते मनोरंजन के प्रवन्ध की दृष्टि से देखा जाय, चाहे उनकी सुविधाओं का ध्यान रखने की दृष्टि से देखा जाय; और यह बात निर्धन गांवों की सरायों में भी है। क्योंकि, जैसे ही कोई यात्री किसी सराय में आता है सेवक दौड़ कर उसके पास पहुँचते हैं और एक उसके घोड़े को ले लेता है और चलाता है जबतक कि वह शीतल नहीं हो जाता, और तब उसकी मालिश करता है और चारा देता है। किन्तु यह मैं अवश्य कहूंगा कि इस अन्तिम

बात में उन सेवकों पर बहुत विश्वास नहीं किया जाता और स्वामी को अथवा उनका ध्यान रखने वाले कर्मचारी को उन पर आंख रखनी पड़ती है। दूसरा सेवक यात्री को कमरा देता है और उसकी आग जलाता है, और तीसरा उसके जूते उतारता है और उन्हें साफ करता है। तब सराय का स्त्री या पुरुष स्वामी आता है; यदि अतिथि सराय के स्वामी के साथ या अन्यों के साथ सार्वजनिक मेज़ पर खाना खाता है तब खाने पर छः पेंस पैसा लिया जाता है, कहीं कहीं चार पेंस भी; किन्तु यह कम सम्मानजनक माना जाता है और धनी लोग अकेले ही खाना खाते हैं। अलग कमरे में खाने वाले को उसके आदेश के अनुसार खाना मिलता है, उसके लिये रसोईघर खुला रहता है और वह अपनी रुचि के अनुसार भोजन परोसने के लिये आदेश दे सकता है। जब वह खाने के लिये बैठता है तब स्त्री या पुरुष सराय-स्वामी उसके साथ रहता है, यदि अतिथि अधिक होते हैं तो वह कम से कम एक बार अवश्य उसके पास आता है और बैठने के लिये अनुरोध करता है। जब वह खाना खाता है, विशेषतः यदि उसके साथ कुछ साथी हों तो, उसे संगीत की सुविधा दी जाती है, जिसे लेने या न लेने के लिये वह स्वतंत्र होता है। और यदि वह अकेला हो तो गायक उसे प्रभात में दिन के लिये शुभकामनाएं देते हैं। कोई व्यक्ति अपने घर में उससे अधिक अपनी इच्छा के अनुसार सुविधाएं नहीं प्राप्त कर सकता जितनी सराय में। और विदा होते समय यदि वह सेवक तथा घोड़े को संभालने वाले को पुरस्कार के रूप में थोड़े से पेंस दे दे तो वे उसकी यात्रा के लिये उसे शुभकामनाएं भी देते हैं।"

सम्भवतः, दुर्भाग्यवश इस सम्पूर्ण हार्दिक स्वागत के पीछे एक छल निहित था। शैक्सपीयर ने इन सरायों के दूसरे पक्ष का भी भेद, जैसाकि उसने देखा था, अपने एक पात्र द्वारा हमारे सम्मुख उद्घाटित किया है। रोचेस्टर की सराय के आंगन में पूर्वप्रभात वेला (प्रत्यूष) में यह पात्र अकेले में गुनगुनाते हुए कहता है: "जबकि चार्ल का तांगा अभी नयी चिमनी तक ही पहुँचा था और हमारे घोड़े पर अभी ठीक तरह से सामान भी नहीं लदा था" तब यात्रियों को पता चलता कि वे ईमानदार चाकर आखिर उतने ईमानदार नहीं थे और न उन्होंने उतनी पूरी नींद ही ली थी जितनी फिनेस मॉरिसन के भूस्वामी ने। और उन्हें पता चलता कि वह सेवक एक बदमाश आदमी था जो यात्रियों को अपने से अधिक साहसी चोरों को सौंप कर पैसा कमाता था।

विलियम हैरिसन ने उस समय की सरायों का जो विवरण दिया है उससे शैक्स-पीयर के चित्रण की पुष्टि होती है। उसने उनके भोजन, शराब, बीअर, विस्तर तथा मेज़ पर बिछे पूर्णतः स्वच्छ वस्त्र, दीवारों की पच्चीकारी, प्रत्येक अतिथि को उसके कमरे की चाभी देने की व्यवस्था और वहाँ उसे जो स्वतंत्रता रहती थी उसकी प्रशंसा की है और यूरोप के अन्य भागों में जो सरायों में अतिथियों के साथ दुर्व्यव्यवहार होता था उसकी तुलना में इन सरायों को बहुत उत्तम बताया है। किन्तु, (वह कहता है

कि) "खेद की बात यह है कि ये विनीत सेवक और हँसमुख सराय-स्वामी प्रायः ही लुटेरों के साथ मिले होते हैं। अतिथियों पर नियुक्त ये विनम्र सेवक मन में यह जानने को उत्सुक होते हैं कि अगले दिन वह अतिथि किस रास्ते से जाएगा और क्या उसके पास पैसा है ?" बैंकों की व्यवस्था से पहले सोने और चांदी की विशाल मात्रा व्यापार के लिये इन रास्तों पर से ले जायी जाती थी। सराय के नौकर यात्री के सामान के प्रत्येक नग को बड़ी सावधानी से पकड़ कर रखते थे जिससे कि उसके भार से अनुमान कर सकते कि उसमें सिक्के हैं या नहीं। तब वे अपने अनुसंधानों के निष्कर्ष बाहर के अपने साथी लुटेरों को बता देते। सरायें अपना अच्छा नाम बनाए रखती थीं क्योंकि इसकी सीमाओं में कोई डाका नहीं पड़ता था; डाकू कुछ ही मील दूर जंगल में से आ झपटते थे।

हैरिसन लिखता है कि, इस चीज़ ने अनेक ईमानदार भूस्वामियों को उनकी यात्रा के बीच समाप्त कर दिया। इसी प्रकार से रोचेस्टर सराय के नौकर ने "एक छोटे भूस्वामी को, जोकि अपने साथ सोने की सौ गिन्नियाँ लाया था, कैंट के जंगल में फाल्स्टाफ के लुटेरों के गिरोह के हवाले कर दिया था।"

किन्तु सरायें केवल यात्रियों के ठहरने के ही उपयोग में नहीं आती थीं। प्रायः ही जमींदार-प्रासाद के लोग तथा उनके अतिथि घर पर खाना खा चुकने के बाद पास की सराय में जा पहुँचते थे और मुख्य कमरे में शराब पीते और घंटों बैठे रहते थे, क्योंकि विदेशी शराब के कुछ कठिन मुआमले में भूस्वामी अपने घर से सराय के स्वामी के शराब के कमरे को अधिक विश्वसनीय समझते थे। यह प्रथा भूस्वामियों में एलिजाबेथ की मृत्यु के बाद भी कई संततियों तक जारी रही। ये शराबघर सभी युगों में नगरों तथा गावों के मध्य तथा निम्न गर्वों के लिये सामाजिक समागम के स्थान होते थे।

एलिजाबेथकालीन इंगलैंड के इतिहास तथा साहित्य से ऐसा प्रतीत होता है कि उस युग में विभिन्न वर्गों में पहले और पीछे दोनों ही कालों की अपेक्षा अधिक समंजसता और समरसता थी। यह किसानों के विद्रोहों का, समानतावादी सिद्धान्तों का, जेकोबा-विरोधी शंकाओं का तथा उन्नत वर्ग के दर्प और ऐकांतिकता का—जैसाकि पीछे जेन ऑस्टेन ने चित्रित किया—काल नहीं था। शैक्सपीयर के काल में वर्ग-भेद एक स्वाभाविक वस्तुस्थिति के रूप में देखे जाते थे, निम्न वर्ग में इसके लिये कोई ईर्ष्या नहीं थी और उन्नत तथा मध्य वर्गों में निम्न वर्ग को 'अधीनता का दिव्य कानून' सिखाने के लिये कोई बहुत व्यग्रता नहीं थी, जैसीकि हम अट्ठारहवीं शताब्दी में और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में देखते हैं; उदाहरणतः, दान से चलने वाले स्कूलों की शिक्षा में। एलिजाबेथकालीन युग की शिक्षा की टिपिकल इकाई व्याकरण स्कूल (ग्रामर स्कूल) था, जिसमें कि सब वर्गों के कुशलतम विद्यार्थी एकत्र पढ़ाए जाते थे : अट्ठारहवीं

तथा उन्नीसवीं शताब्दी की शिक्षा की टिपिकल इकाइयाँ ये दान से चलने वाले स्कूल, ग्राम स्कूल तथा 'महान् पब्लिक स्कूल' थे, जिनमें कि वर्ग-भेद बहुत कड़ा था। एलिजाबेथ कालीन लोग समाज को उसी प्रकार से सहज भाव से लेते थे जैसे अन्य सब कुछ को, और ये सब चीज़ में, उस सम्बन्ध में सचेत हुए बिना, एक समन्वय स्थापित कर देते थे।

वर्ग-भेद, जिसेकि सब बिना विशेष क्षोभ के स्वीकार किए हुए थे, कठोर नहीं थे और न पूरी तरह से वंशपरम्परागत ही थे। व्यक्तियों तथा परिवारों दोनों का संपत्ति की प्राप्ति अथवा हानि के साथ, अथवा केवल जीविका में परिवर्तन के साथ भी, एक वर्ग से दूसरे वर्ग में संक्रमण होता रहता था। अब इनमें कोई ऐसी अलंघ्य दीवार नहीं थी जैसी मध्य युगीन इंगलैंड में भूस्वामी तथा उसके कारिंदों में थी, अथवा जैसी फ्रांस में १७८९ तक सामन्तों को जन्मना तथा सबसे पृथक् करती थी। ट्यूडर-काल के इंगलैंड में बीच के वर्गों तथा जीविकाओं में बड़ी संख्या में तथा अनेक प्रकार के लोगों के होने के कारण, जोकि अन्य वर्गों के लोगों से व्यापार तथा दैनिक जीवन के मनोरंजनों में निकट रूप से सम्बधित होते थे, यह कठोरता सम्भव नहीं थी। इंगलैंड का समाज समानता पर आधारित न होकर स्वतंत्रता पर आधारित था—अवसर की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत आदान-प्रदान की स्वतंत्रता। ऐसा था उस काल का इंगलैंड जिससे कि शैक्सपीयर परिचित था और जिसे उसने स्वीकारा था। सब वर्गों के लोगों ने उसे बराबर आकर्षित किया, किन्तु उसने मानव-हित के लिये वर्ग चिह्न को आवश्यक आधार माना।

राजा के प्रमुख दरबारियों में भूस्वामियों का एक छोटा वर्ग था जिसे कि महत् व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तथा कुछ विशिष्ट कानूनी विशेषाधिकार प्राप्त थे, किन्तु ये लोग कर से मुक्त नहीं थे। इन लोगों के लिये घर का आडंबर रखना तथा आश्रितों को उदारतापूर्वक दानादि देना एक सामाजिक अनिवार्यता थी और यह वे अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर करते थे। सामन्त वर्ग अब अपनी वह सैनिक तथा राजनैतिक शक्ति खो बैठा था जोकि उसे रोसेज़ के युद्धों तक प्राप्त थी। एलिजाबेथ के युग में हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स के सदस्यों के पास प्रति-व्यक्ति भूमि उसकी अपेक्षा कहीं कम थी जितनी उसके पास प्लेंटाजेनेटों के अथवा हेनरियों के काल में थी। उस समय कीमतों में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए उसका उन पर अन्य भूस्वामियों की अपेक्षा अधिक बुरा प्रभाव पड़ा था, और वह प्रक्रिया अभी आरम्भ नहीं हुई थी जिसमें कि इन पीअर लोगों ने, उदाहरणत: बैडफोर्ड के ड्यूकों ने, पीछे छोटे जमींदारों की सम्पत्तियाँ खरीद ली थीं, और न अभी कृषकों के पूर्ण स्थायित्व की प्रथा ही आरम्भ हुई थी। इन सब कारणों से हाऊस ऑफ़ लॉर्ड्स ट्यूडर युग में, विशेषत: टोपी धारी बिशपों के समाप्त हो जाने के बाद, उसकी अपेक्षा कम महत्वपूर्ण हो गया था जितना कि अतीत में यह था और

भविष्य में दोबारा होने वाला था। पुराना अभिजाततंत्र अब दुर्बल पड़ गया था और नया अभिजाततंत्र इसका स्थान लेने के लिये अभी पूरी तरह से तैयार नहीं हुआ था।

किन्तु एलिजाबेथ का यह युग जबकि लार्डों के लिये अनुकूल नहीं था, जमींदारों के लिये यह बहुत अनुकूल था। पुराने सामन्त-वर्ग का ह्रास हो जाने से, मठों की भूमियों के वितरण से तथा व्यापार की उन्नति और भूमि-सुधार हो जाने से इन जमींदारों की संख्या, सम्पत्ति तथा महत्व बढ़ गया था। ट्यूडर तथा स्टुअर्टों के काल के अभिजात वर्ग का जीवन समाज से उतना विच्छिन्न और ग्रामीण नहीं था जितना कि कुछ इतिहासकार समझते हैं। वह एक सक्रिय समाज के व्यापक आन्दोलन का एक-मात्र भाग था। छोटे जमींदार, व्यापारी तथा वकील, जिन्होंने कि बड़ी-बड़ी संपत्तियां बना ली थीं, निरन्तर जमींदारों के वर्ग में सम्मिलित हो रहे थे, जबकि जमींदार वर्ग के छोटे पुत्र उद्योग तथा व्यापार में सम्मिलित हो रहे थे। इन विभिन्न विधियों से पुराने परिवार नये युग के साथ वैयक्तिक सम्पर्क स्थापित किए हुए थे और गांव नगर से सम्पर्क रख रहा था। इसमें संदेह नहीं कि उत्तर तथा पश्चिम में देहात उन ज़िलों के देहात की अपेक्षा अधिक पृथक् था जो लंडन के व्यापार से सम्बन्ति थे। किन्तु यह भेद केवल मात्रा-भेद ही था।

अभिजात कुलों द्वारा अपने छोटे पुत्रों को व्यापारिक शिक्षा के लिये भेजने की उपयोगी प्रथा हेनरी के काल में कम हो गयी, जिसका एक कारण था छोटे जमींदारों की संख्या बहुत कम हो जाना। अट्ठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दियों में कुछ जमींदारों का 'व्यापार में हाथ गंदे करने' के प्रति घृणापूर्ण रवैया विशेष रूप से मूर्खतापूर्ण था क्योंकि लगभग ये सभी परिवार पूर्णतः या अंशतः व्यापार के सहारे ही आगे बढ़े थे और बहुत से अब भी इसमें लगे थे, चाहे इन परिवारों की सुन्दर युवतियों को इस सम्बन्ध में अधिक ज्ञान नहीं रहता है। किन्तु एलिजाबेथ के समय में इस प्रकार का मूर्खतापूर्ण गर्व काफी कम हो गया था। लंडन के व्यापारियों के शागिर्द अधिकांशतः जमींदारों के ही बच्चे थे। ये अपने अभिभावक से अत्यन्त विनम्र व्यवहार करते थे कि वह उन्हें अपने व्यापार में सहभागी बना ले, किन्तु अपने विश्राम के समय वे "कीमती कपड़े पहनते, शस्त्र धारण करते तथा संगीत, नृत्य और तलवार चलाने के स्कूलों में मनोविनोद के लिये जाते थे।"

"चर्चों में पाये जाने वाले एलिजाबेथ तथा जेकोबकालीन स्मारकों में अनेक जमींदारों के सम्पत्तिशाली होने का विवरण दिया गया है, और इनका जिस प्रकार से "नागरिक तथा वस्त्र-व्यापारी", "नागरिक तथा पौशाक आदि का विक्रेता" आदि के रूप में उल्लेख किया गया है उसकी तुलना पीछे के स्मारकों में मिलना कठिन है।"

जबकि जमींदार वर्ग इस प्रकार से व्यापारिक वर्ग के साथ निकट संपर्क में था, "जैंटल मैन" का सम्मानसूचक विशेषण केवल भूस्वामियों (जमींदारों) को ही नहीं

दिया जाता था। हैरिसन ने लिखा है कि शैक्सपीयर के शैशवकाल में इस सम्बन्ध में वड़ी शिथिलता और उदारता थी :

'जो भी कानून का अध्ययन करता था, जो विश्वविद्यालय में अध्ययनरत रहता था, अथवा भौतिक विज्ञान तथा अन्य विज्ञान पढ़ाता था, अथवा युद्धों में कैप्टन अथवा उसके सहायक के रूप में कार्य करता था, अथवा अपने देश में उपयोगी परामर्श देता था जिससे कि उसके देश को लाभ होता, जिसे आजीविका के लिये शारीरिक श्रम नहीं करना पड़ता था, उन सबको 'मास्टर' कहा जाता था, जो विशेषण कि वास्तव में जमींदारों और सामन्तों का था। और इसमें कुछ ऐसी बात भी नहीं थी कि इसका प्रयोग निषिद्ध किया जाता।'

उससे (जमींदारों से) अपेक्षा की जाती थी कि वह सेवकों आदि को उदारता से पारितोषिक (टिप) देगा, विल की बहुत ध्यान से जाँच नहीं करेगा। आदान-प्रदान में हानि उठाना, उदारतापूर्वक दान देना और प्रतिदान की परवाह न करना, उसकी प्रतिष्ठा का एक आवश्यक अंग था। इन शर्तों पर ही उसे उसके आरामपसंद तथा विनम्र ग्राम-जन अपनी टोपी उठा कर उसका सम्मान करते थे और उसे "स्वामी" (मास्टर) कहते थे—यद्यपि उसकी पीठ पीछे वे कहते थे कि "इसका पिता बड़ा ईमानदार आदमी था और स्वयं अपना धान्य लेकर बाजार जाता था।" इस प्रकार से सब प्रसन्न रहते थे। जैसा कि प्रोफेसर टॉने का कहना है, जमींदारों की प्रतिष्ठा किसी कानूनी भेद के कारण नहीं थी बल्कि लोगों में साधारण सम्मान के कारण थी। केवल जाति (कास्ट) के कारण लगभग कोई सम्मान नहीं करता था—सत्रहवीं शताब्दी के योद्धा जमीदारों में जाति का सम्मान करने वाले उससे भी कम थे जितने कि अट्ठारहवीं शताब्दी के विजेता जमींदारों में। लोक-बुद्धि ने इस उक्ति का समर्थन किया कि "महाजनता (जैंटेलिटी) पुरानी संपत्ति का दूसरा नाम है।"

हैरिसन जमींदारों के इस विवरण के बाद नागरिकों की ओर आता है और उनके व्यापार के क्षेत्र-विस्तार का वर्णन करता है :

और जबकि अतीत में उनका व्यापार केवल स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस, डैन्मार्क, नार्वे, स्कॉटलैंड तथा आइलैंड तक ही था, अब इन दिनों में उन्होंने ईस्ट तथा वैस्ट इंडीज को खोज निकाला है, और न केवल केनारी तथा नव-स्पेन की यात्राएं की हैं बल्कि कैथेडुआ, मॉस्कोविया, टार्टारिआ तथा इनके आसपास के प्रदेशों की यात्राएं भी की हैं, जहां से कि, जैसाकि वे कहते हैं, वे विशाल सामग्री लाते हैं।

व्यापारी वर्ग के बढ़ते हुए महत्व की सूचना हमें चर्चों तथा उनके स्मारकों पर बनी मूर्तियों से मिलती है जिनकी भव्यता की तुलना सामन्तों के स्मारकों से की जा सकती है। इनके साथ इनके पुत्रों, पुत्रियों की ससम्मान झुकी हुई मूर्तियाँ पंक्ति में

बनी होती हैं और आलेख्यों में औषधालय, अनाथालय तथा विद्यालय स्थापित किये होने के विवरण रहते हैं। समाज इतना मिश्रित हो रहा है कि यदि कोई नाटक-घर का प्रबन्धक भी धनार्जन कर अपने जन्मस्थान में प्रमुख नागरिक के रूप में आकर बस जाता है तब उसकी भी अर्ध-मूर्ति (बस्ट) चर्च में स्थान पा जाती है।

हैरिसन व्यापारियों के बाद छोटे जमींदारों (योमैन) को रखता है। इनमें से कुछ 'चालीस-शिलिंग भूमिधारी' थे, ये अपनी भूमियों पर स्वयं कृषि करते थे और पार्लियामेंट के लिये इन्हें मताधिकार प्राप्त था।

किन्तु अधिकांशतः योमन (छोटे जमींदार) बड़े भूस्वामियों के लिये कृषक थे, और ये पशुचारण, नित्य बाजार-गमन तथा नौकर रखने के द्वारा (बड़े जमींदारों के समान बेकार नौकर रखकर नहीं बल्कि ऐसे नौकर जो अपने खाने से अधिक कार्य करते थे) समृद्ध हो जाते थे। कुछ तो इतने सम्पन्न हो जाते थे कि अपव्ययी जमींदारों से उनकी भूमि खरीद लेते थे। ये प्रायः ही अपने पुत्रों को विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में तथा न्यायालयों में शिक्षणार्थ भेजते थे, अथवा उनके लिये पर्याप्त भूमि छोड़ जाते थे जिससे कि वे बिना श्रम के रह सकते और इन विभिन्न प्रकार के उपायों से उन्हें 'प्रतिष्ठित जन' (जेंटलमैन) के स्तर पर उठाने का प्रयत्न करते थे।

आजकल इंगलैंड के प्रायः प्रत्येक भाग में देहात न केवल एलिजाबेथ कालीन अट्टालिकाओं से भरा पड़ा है, बल्कि उसमें ट्यूडर तथा आरंभिक स्टुअर्ट कालीन वास्तु-कला के अनुसार निर्मित अपेक्षाकृत छोटे घर भी बहुत विद्यमान हैं जिनमें कि अब असामी किसान रहते हैं। किन्तु ये पहले या तो छोटे जमीदारों के प्रासाद थे अथवा भूमिधारी बड़े किसानों की अट्टालिकाएं। ऐसे भवन इस बात के स्मारक हैं कि एलिजाबेथ के काल से लेकर १६६० में राजतंत्र की पुनस्स्थापना तक जमींदारों तथा योमन जमींदारों की संख्या निरन्तर बढ़ रही थी और सामन्तों की विशाल सम्पत्तियां समाप्त हो रही थीं। यह युग ग्रामीण मध्य वर्ग के लिये एक महान युग था।

व्यापारियों तथा योमन जमींदारों के बाद 'चतुर्थ तथा अन्तिम प्रकार का वर्ग' आया, यह था नगर तथा ग्राम का दैनिक मजदूरी पर कार्य करने का वर्ग।

'दास हमारे यहां कोई नहीं है', हैरिसन गर्व के साथ कहता है, और गर्वोक्ति करता है कि हमारे द्वीप की यह विशेषता है कि इस पर जो भी आता है वह अपना स्वामी स्वयं हो जाता है। जब लार्ड मैंस्फील्ड ने एक भागे हुए नीग्रो-दास सोम्मरसैट के अभियोग में अपना प्रसिद्ध निर्णय दिया तब इंगलैंड-प्रदेश पर स्वतःस्वतंत्रता के वरदान का सिद्धान्त दो शताब्दी बाद नीग्रो लोगों पर भी लागू हो गया।

किन्तु, जैसाकि हैरिसन ने लिखा है, रोजी कमाने वाले वर्ग को, जोकि अब यद्यपि दासता की छाया तक से भी दूर था, प्रजातंत्र में न कोई अधिकार था और

न उसकी कोई आवाज़ थी, किन्तु तब भी वह पूरी तरह से उपेक्षित भी नहीं था, क्योंकि बड़े नगरों तथा नगरपालिका वाले छोटे नगरों में वह योमन जमींदारों के अत्याचार के विरुद्ध शिकायत कर सकता था। और गांवों में तो वे प्रायः ही चर्च के अधिष्ठाता, उपाधिष्ठाता, नगरनिरीक्षक, पोलीस अधिकारी आदि तक बन जाते थे, कभी कभी तो वे नगरपालिकाध्यक्ष तक हो जाते थे। प्रजातांत्रिक स्वशासन का यह सिद्धान्त मध्ययुगीन दास-कृषकों तक में विद्यमान था। यह पंचायती कचहरी, अथवा स्वशासन व्यवस्था जमींदारी न्यायालय में पर्याप्त पुष्ट थी जहांकि छोटे-छोटे निर्णय किये जाते थे। पंचायती कचहरी में, खुले क्षेत्रों में तथा सार्वजनिक चरागाहों में अनुसरण की जाने वाली कृषि-नीति पर भी सब लोग सम्मिलित रूप से विचार करते थे। इंगलैंड के ग्रामीण को न केवल उस समाज में अधिकार ही प्राप्त थे जिसका कि वह सदस्य था बल्कि उसके कुछ कर्त्तव्य भी थे। इनमें से अनेक बहुत निर्धन होते थे, किन्तु भूमि-लगान की पुरानी व्यवस्था के अन्तर्गत सब वर्गों में एक स्वतंत्रता की भावना विद्यमान थी और यह तब तक रही जबतक कि अट्ठारहवीं शताब्दी में आलवालों ने ग्रामों में सामुदायिकता को भंग नहीं कर दिया।

इंगलैंड के ग्रामीण जनसाधारण के आत्माश्रय तथा आत्मसम्मान का दूसरा चिह्न था सैनिक सेवा के लिये प्रशिक्षण। केवल वाटरलू के युद्ध के बाद की दीर्घ-कालीन शान्ति के दिनों में ही इंगलैंड में यह भावना उत्पन्न हुई कि सैनिक शिक्षा न लेना उनकी स्वतंत्रता का अंग है। पहले सब युगों में इसके विपरीत और अधिक युक्तियुक्त विचार ही प्रतिष्ठित था। उत्तर मध्य काल में धनुष्कौशल तथा ग्राम और नगर के रक्षक दल (मिलिशिया) में अनिवार्य सेवा की प्रथा ने एक स्वतंत्रता की भावना को जन्म दिया था जोकि, जैसाकि फ्रोएस्सर्ट, फोर्टेस्क्यू तथा अन्य लेखकों ने लिखा है, इंगलैंड का एक विलक्षण गुण था। और यह स्थिति एलिजावेथ काल में भी यथावत् बनी थी, यद्यपि लम्बे धनुष का स्थान अब छोटी बन्दूक ने ले लिया था।

हैरिसन ने लिखा है : "इंगलैंड में शायद कोई गांव इतना निर्धन नहीं होगा जिसके पास कम से कम तीन-चार सैनिकों के लिये पर्याप्त सैन्य सामग्री नहीं हो, जैसे एक धनुर्धारी, एक बन्दूकधारी, एक भाले वाला और एक बर्छाधारी। उपयुक्त सैन्य-सामग्री सर्वसम्मति से एक नियत स्थान पर रखी जाती है जहां से कि तुरत उपलब्ध हो सके और एक घंटे की सूचना के साथ सज्जित की जा सके।"

१५५७ में ज़िला अधिकारी के पद पर शैरिफ के स्थान पर लार्ड ल्यूटीनेंट की नियुक्ति प्रत्येक जिला-रक्षा-दल के सेनापति के रूप में हुई। वह तथा उसके छोटे अधिकारी लोग सैनिकों, सैन्य सामग्री तथा शस्त्रागारों का नियमित रूप से निरीक्षण करते थे। एलिजावेथ की सुयोजित वित्त-नीति ने स्थानीय तथा स्वैच्छिक अर्थ-स्रोतों पर अधिकाधिक उत्तरदायित्व डाल दिया, किन्तु यह व्यवस्था सफल रही। उत्तर के

सामन्तों (अर्ल्स) का विद्रोह बिना युद्ध के ही दबा दिया गया था, क्योंकि २०,००० रक्षक दलों ने, जोकि शिक्षित और शस्त्र-सज्जित थे, पहले ही संकेत पर राज्ञी तथा प्रोटेस्टेंट धर्म की रक्षा के लिये रणक्षेत्र सँभाल लिया था। जब हमारे युद्ध-पोत किनारों से चले उस समय उनसे दोगुणे वहां एकत्र थे और निरन्तर एकत्र हो रहे थे, जबकि तूफान हवा से पहले ही गुज़र गया। इंगलैंड के पास कोई नियमित सेना नहीं थी, किन्तु तब भी वह असुरक्षित नहीं था। प्रत्येक मुहल्ले को रक्षा-दल के लिये बहुत संख्या में शिक्षित और शस्त्र-सज्जित सैनिक देने होते थे; प्रत्येक धनी व्यक्ति को एक या अधिक व्यक्तियों का प्रबन्ध करना होता था। अंशतः तो स्वेच्छा से और अंशतः बाध्यता से राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन हो रहा था।

दूसरे देश पर चढ़ाई के लिये यह व्यवस्था बहुत दोषपूर्ण थी; वास्तव में शत-वर्षीय युद्धों में तथा क्रामवेल काल में यूरोप महाद्वीप में कुछ भी महत्व की विजय प्राप्त करने वाली एकमात्र सेनाएं वे थीं जोकि डचों या अन्य दूसरे देशों की सेवा में थीं।

यह भी संयोग की बात ही थी कि स्पेन के कुशल सैनिकों ने इंगलैंड में प्रवेश नहीं किया। क्योंकि अब इंगलैंड की रक्षा-सेना पहले के समान दूसरों से उत्कृष्ट नहीं थी, जो उत्कृष्टता कि उन्हें पहले लंबे धनुष के कारण प्राप्त थी। राज्ञी के सम्पूर्ण राज्य-काल में लंबे धनुष को छोटी हथ-बन्दूक उसी अनुपात में स्थानान्तरित कर रही थी जिस अनुपात में यह मार की दूरी, त्वरा तथा कवच को छेदने में धनुष से उत्कृष्टतर हो रही थी। राज्ञी के राज्यकाल के आरंभ में अच्छा वेतन पाने वाले लंडन-रक्षक सैनिकों का भी अधिकांश भाग अभी धनुर्धारी ही था, किन्तु सर्वोच्च सैन्य-दल उस समय भी बन्दूक और भालों से सज्जित था। एक सन्तति बाद जब स्पेन पर नौ-आक्रमण किया गया उस समय लंडन के ६००० शिक्षित रक्षा-सैनिकों में से एक भी धनुर्धारी नहीं था, यही अवस्था अन्य दक्षिणी ज़िलों में थी। एक दशाब्द बाद शैक्सपीयर ने एक नाटक के दृश्य में फ़ालस्टाफ को शान्ति कानूनों के अधिकार के बल पर कॉट्स्वोल्ड के ग्रामीणों पर दबाव डालते हुए चित्रित किया है; उसमें वह धनुर्धारियों की मांग नहीं करता है बल्कि केवल बन्दूकधारियों की मांग ही करता है। १५९५ में प्रिवी काउंसिल (इंगलैंड की सर्वोच्च न्याय-सभा) ने घोषित किया कि आगे से युद्धास्त्रों के रूप में धनुष कभी नहीं दिये जाय, और इस प्रकार इंगलैंड के इतिहास में एक महान् अध्याय का अन्त हुआ। क्रीड़ा में बन्दूक ने धनुष को अपेक्षाकृत मन्द गति से स्थानांतरित किया। १६२१ तक में कैंटर्बरी के आर्च बिशप ने एक हिरण पर तीर चलाया जो दुर्भाग्यवश वन-रक्षक के लगा और वह मर गया। किन्तु उस समय तक बहुत से शिकारियों ने जंगली पक्षियों को छिप कर मारने के लिये लंबी गन का प्रयोग आरंभ कर दिया था, यद्यपि 'उड़ती चिड़िया' मारना अभी तक एक अत्यन्त कठिन कार्य माना जाता था।

एलिजाबेथ के राज्य में धार्मिक मतभेद तथा विदेशी भय के बावजूद जो सुव्यवस्था रही उसका कारण था प्रिवी काउंसिल (जोकि ट्यूडर युगीन इंगलैंड की वास्तविक

शासन-सभा थी) तथा काउंसिल के न्यायिक अधिकारों के प्रतिनिधि विशेष न्यायालयों के माध्यम से राजा का नियंत्रण होना। ये न्यायालय—दि स्टार चैम्बर, वेल्स तथा उत्तर की न्यायसमितियां, दि चांसरी न्यायालय, उच्च आयोग का धार्मिक न्यायालय—पीछे स्टुअर्ट-काल की संसदीय क्रान्ति (पार्लियामेंटरी रेवोल्यूशन) द्वारा समाप्त कर दिये गये थे क्योंकि ये साधारण कानून के न्यायालयों के प्रतिद्वंदी थे और क्योंकि ये अपनी दोषपूर्ण जांचविधि के कारण तथा राज्य के प्रति झुकाव के कारण व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिये घातक थे। किन्तु ट्यूडर युग में इन्हीं परमाधिकार न्यायालयों (प्रीरोगेटिव कोर्ट्स) ने कानून के सम्मान के लिये बाध्य करके इंगलैंड के लोगों की स्वतंत्रताओं की रक्षा की, तथा अधिकारियों को बिना किसी भय और रयायत के कानून लागू करने के लिये प्रोत्साहित तथा बाध्य करके साधारण अंग्रेज़ी कानून को बचाया। प्रिवी काउंसिल तथा परमाधिकार न्यायालयों ने स्थानीय समूहों तथा स्थानीय शक्ति-सम्पन्न लोगों द्वारा न्यायाधीशों तथा ज्यूरियों को आतंकित करने से रोका : ज्यूरी को आतंक-रहित कार्य कर सकने का अवसर मिलने से जो लाभ समाज को हुआ वह उसकी तुलना में कहीं महत् था जो प्रिवी काउंसिल के राजनैतिक महत्व के अभियोगों में इतस्ततः हस्त-क्षेप से होता था। इस प्रकार से साधारण कानून तथा इसके न्यायाधिकरणों को स्वयं उन न्यायालयों से ही संरक्षण प्राप्त हो गया जो इसके प्रतिद्वंदी थे। इसके अतिरिक्त, परमाधिकार न्यायालयों ने आधुनिक युगानुकूल अनेक नये कानून-सिद्धान्तों का समावेश किया जो पीछे देश की कानून-व्यवस्था में समाविष्ट कर लिये गये।

दूसरे देशों में सामंतयुगीन कानून उतना अच्छा नहीं था जितना कि मध्ययुगीन इंगलैंड का साधारण कानून था, और उसे आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं बनाया जा सकता था। इस कारण से यूरोप का सामन्तयुगीय कानून और इसके साथ ही यूरोप की मध्य युगीन स्वतंत्रताएं भी इस युग में रोम के कानून की स्वीकृति की आंधी में, जोकि एक निरंकुशतावादी कानून था, वह गयीं। किन्तु इंगलैंड में मध्ययुगीय कानून, जो मूलतः स्वतंत्रता तथा व्यक्तिगत अधिकारों की स्वीकृति पर प्रतिष्ठित था, सुरक्षित रहा, उसका आधुनिकीकरण हुआ, उसका संशोधन संवर्धन हुआ, और सबसे बढ़कर वह, 'ट्यूडर निरंकुशता' के न्यायालयों तथा काउंसिल द्वारा लागू किया गया जिससे कानून की पुरानी व्यवस्था तथा पुरानी पार्लियामेंट नये युग में एक नयी सप्राणता के साथ अतिजीवित रहे।

इसी प्रकार से, प्रशासन के क्षेत्र में भी, ट्यूडर युग की प्रिवी काउंसिल ने पुराने और नये का तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राष्ट्रीय अधिकार का सामंजस्य किया। इसी प्रकार से, केन्द्रीय अधिकार को स्थानीय शक्ति पर आरोपित किया गया, किन्तु यह फ्रांस के समान स्थानीय जमींदारों या छोटे सामन्तों को दवा कर उनके स्थान पर बड़े सामंतों या उनके प्रतिनिधियों को भेज कर नहीं किया गया वल्कि स्थानीय जमींदारों

को ही राज्ञी के न्याय तथा शांति के प्रतिनिधियों के रूप में नियुक्त करने का अधिक प्रभावशाली साधन उपयोग में लाया गया। ये लोग राज्ञी के सभी कार्यों का सम्पादन करते थे। उनके लिये न केवल उनकी राजनैतिक तथा धार्मिक नीतियों को क्रियान्वित करना ही आवश्यक था बल्कि न्यायालयों के छोटे निर्णयों को लागू करना तथा स्थानीय शासन के सभी कर्त्तव्यों का निर्वाह करना भी था, जिनमें नया निर्धन-कानून (पूअर लॉ) तथा दैनिक मज़दूरी और कीमतों का नियंत्रण भी शामिल हैं। ये मुआमले न तो अहस्तक्षेप के सिद्धान्त के अनुसार स्वतः व्यवस्थित होने के लिये छोड़ दिये जाते थे और न स्थानीय अधिकारियों की मनमानी पर ही छोड़े जाते थे। ये राष्ट्रव्यापी संसदीय अधिनियम द्वारा निर्धारित होते थे और इन्हें प्रत्येक जिले में लागू करना 'शान्ति पालकों' का कार्य था। यदि वे अपने कठिन कर्त्तव्यों के पालन में शिथिल होते तो प्रिवी काउंसिल की सतर्क दृष्टि उन पर आ पड़ती और उसकी लंबी भुजा शीघ्र उन तक पहुंचती। 'शान्ति रक्षक' अभी तक आत्मपूर्ण कानून नहीं थे जैसेकि वे हेनरी-कालों में हो गये थे। सामंतीय शक्ति तथा स्थानीय स्वार्थ ऐसी शक्ति के नियंत्रण में थे जिनके लिये सम्पूर्ण राष्ट्र के हित समान थे। एलिजाबेथीय तथा आरंभिक स्टुअर्ट युगों के इस पक्ष की प्रमुखतम विशेषता निर्धनों तथा बेरोज़गारों की व्यवस्था थी। सब मिलाकर, उस समय (१५५६-१६४०) स्थिति आरंभिक ट्यूडर युगों की तुलना में अच्छी थी, किन्तु तब भी अनेक बार कठिन समय इन युगों में भी आए। यद्यपि कृषि-क्षेत्र में उपद्रव तथा आलवालों के प्रदेशों में जनसंख्या की कमी की शिकायतें अब अपेक्षाकृत कम थीं किन्तु ग्रामीण प्रदेशों में बढ़ते हुए उद्योगों में नियमित बेकारी-चक्र चलता था, यह स्थिति विशेष रूप से गृह-उद्योगों में थी। फैक्टरी व्यवस्था में, जोकि उस समय तक अभी शैशव में थी, एक पूंजीवादी नियोक्ता अपने कार्य को यथासंभव लंबे समय तक जारी रखने में समर्थ भी था और उत्सुक भी, उस अवस्था में भी, यदि समय प्रतिकूल होता; वह माल संग्रह कर रख सकता था और ऐसे समय की प्रतीक्षा कर सकता था जबकि वह बेचा जा सकता। किन्तु गृह-उद्योगपति अपने माल की मांग कम हो जाने पर अपना उत्पादन जारी करने में उतना समर्थ नहीं था। एलिजाबेथ-काल में जब कभी दुष्काल आये (जैसे नीदरलैंड के स्पेन देशीय शासकों के साथ संघर्ष होने पर हुआ जबकि उन्होंने इंगलैंड के माल के लिये एंटवर्प को बन्द कर दिया था) तब वस्त्र-गृह-उद्योग के मजदूरों ने व्यापारियों से मांग खतम होते ही अपने करघे खाली छोड़ दिये। चक्रिक बेरोज़गारी वस्त्र-व्यापार का एक अंग थी जो उस समय भी उसमें रही जबकि यह बहुत उन्नति कर रहा था।

ऐसे आपत्कालों का मुकाबला करने के लिये निर्धन-कानून ने प्रयोगों की एक दीर्घ शृंखला के बाद निश्चित रूप लिया। स्थानीय रूप से ये प्रिवी काउंसिल के कठोर आदेश के रूप में शान्ति न्यायाधिकारियों द्वारा लागू किये जाते थे। काउंसिल निर्धनों के स्वार्थों के प्रति सच्चा सौहार्द रखती थी, जिसके साथ कि जनजीवन की

व्यवस्था भी निर्भर करती थी। अब वैसे 'पुष्ट भिखारियों' के दल दोबारा नहीं होने वाले थे जिन्होंने कि हेनरी अष्टम् के दिनों में ईमान्दार नागरिकों को त्रस्त कर रखा था। अब एक अनिवार्य निर्धन-कर लगा दिया गया था जोकि क्रमशः अधिकाधिक कठोरता से लिया जा रहा था। इस कोश में से न केवल निर्धनों को ही सहायता दी जाती थी वल्कि प्रत्येक प्रदेश में निर्धनों के ओवरसीयरों को आवश्यक माल खरीदने के लिये भी वाध्य किया जाता था जिससे वेकारों को कार्य मिल सकते—सन, ऊन, सूत, लोहा तथा अन्य ऐसी वस्तुओं की इतनी मात्रा जितनी निर्धनों को कार्य पर लगाए रखने के लिये पर्याप्त होती। (१६०१ का अधिनियम)।

इसी प्रकार से अभाव के समय, जैसे १५९४ तथा १५९७ की फसलें खराब होने पर, प्रिवी काउंसिल सदैव के समान शान्ति-न्यायाधीशों के माध्यम से अनाज के भावों पर नियंत्रण रखती थी और आवश्यक अनाज विदेशों से मंगवाकर अकालग्रस्त क्षेत्रों में उसका वितरण करती थी। इसमें सन्देह नहीं कि निर्धन-कानून तथा खाद्य सामग्री का वितरण अभाव के कालों में अपर्याप्त होते थे, किन्तु सिद्धान्त तथा व्यवहार दोनों में एक अनिवार्य राष्ट्रीय व्यवस्था विद्यमान थी, और निर्धनों के लिये जो व्यवस्था थी वह पुराने इंगलैंड के किसी भी काल से उत्कृष्टतर थी और फ्रांस तथा यूरोप के अन्य देशों में उसकी तुलना में भविष्य में अनेक सन्ततियों तक कोई व्यवस्था नहीं हुई। (इ. एम. लिओनार्ड, इंगलिश पूअर रिलीफ, डब्लू. जे. एश्ले, इकनोमिक आर्गेनाइज़ेशन ऑफ़ इंगलैंड)।

शान्ति के न्यायाधीशों के न्यायिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा प्रशासनिक अधिकार इतने विविध तथा इतने महत्वपूर्ण थे कि ये लोग इंगलैंड के सबसे अधिक शक्ति-सम्पन्न लोग हो गये। ये प्रायः ही संसद के लिये निर्वाचित हो जाते थे, जहां पर ये उन कानूनों तथा नीतियों की, जिनको ये स्वयं लागू कर चुके होते थे साधिकार आलोचना करते थे। ये राज्ञी के कर्मचारी होते थे, किन्तु ये न तो उससे वेतन पाते थे और न उस पर आश्रित थे। ये ग्रामों के जमींदार थे जो कि अपनी निजी संपत्तियों के सहारे ही रह रहे थे। ये सबसे अधिक मूल्य अपने पड़ोसियों तथा अपने प्रदेश के जमींदारों और सामान्य लोगों की अपने प्रति सम्मति को देते थे। इसलिये जब अपने प्रदेश के जमींदार राजा की राजनैतिक या धार्मिक नीतियों की तीव्र आलोचना करते, जैसाकि स्टुअर्ट के काल में हुआ, तव राजा के पास ग्राम-प्रदेश पर शासन करने के लिये कोई व्यवस्था नहीं रह जाती थी। उदाहरण के लिये, यह १६८८ में प्रमाणित हुआ, किन्तु ऐसा १५८८ में नहीं था। कुछ जमींदार लोग, विशेषतः उत्तर तथा पश्चिम में, एलिजावेथ की 'सुधार-नीति' के कड़े विरोधी थे, किन्तु उनके वर्ग में से निरन्तर अधिक से अधिक

संख्या में लोगों ने नये धर्म का समर्थन किया, और परिणामतः सरकार इस मत के शान्ति-न्यायाधीशों का, उनके अधिक विद्रोही पड़ोसियों को रोकने, और आवश्यकता होने पर कैद भी करने में उपयोग कर सकी। ऐसा बल-प्रयोग यदि लंडन से भेजे गये वेतन-भोजी अधिकारी करते तब गांवों का जनमत उनका कहीं अधिक विरोध करता और यह राज्ञी के कोश पर अधिक बोझ भी होता।

अध्याय ७

शैक्सपीयर का इंगलैंड (१५६४-१६१६)

धर्म और विश्वविद्यालय । एलिजाबेथ के राज्य की समाज-नीति । उद्योग तथा सागर-जीवन । शैक्सपीयर । रानी एलिजाबेथ, १५५८-१६०३ । स्पेन पर पोत आक्रमण १५५८ ।

सागर-यात्रा में तथा खोज में, संगीत, नाटक, कविता तथा सामाजिक जीवन के अनेक पक्षों में हम शैक्सपीयर के इंगलैंड को विना किसी झिझक के एक स्वर्णिम युग कह सकते हैं—एक सामंजस्य तथा सृजन-शक्ति का युग । किन्तु इस काल का धार्मिक जीवन स्पष्ट: अधिक धुँधला, कम आकर्षक, और निश्चित रूप से कम सामंजस्यपूर्ण दिखाई देता है । 'विवेकी हूकर' के अतिरिक्त एलिजावेथ कालीन धार्मिक जगत् का ऐसा एक भी नाम नहीं है जो ध्यान में आता हो । तो भी, यदि उस काल के स्पेन, फ्रांस, इटली और नीदरलैंड के दुर्भाग्य पर विचार करें, जो धर्म के कारण उनका हुआ, तो हमें अपना भाग्य सराहना होगा कि महारानी की नीति तथा उसकी प्रजाओं की समझदारी के कारण धार्मिक कलहें वहुत नियंत्रण में रहीं और इन्होंने एलिजावेथ के इंगलैंड के जनजीवन को अस्तव्यस्त नहीं किया । इसके अतिरिक्त, शैक्सपीयर-युग के धार्मिक जीवन का यह केवल एक निषेधात्मक गुण ही नहीं है । स्वयं शैक्सपीयर तथा एड्मंड स्पेंसर भी अपने युग की ही सन्तान थे और उन्होंने इस युग के धार्मिक वातावरण को अपने सांस के साथ आत्मसात् किया था, जैसाकि अन्य युगों के लैंगलैंड, मिल्टन, वड्सवर्थ तथा ब्राउनिंग अपने-अपने युगों की धार्मिक चेतना के उच्चतम सृजन थे । शैक्सपीयर के समकालीनों में वहुत से अत्यन्त अनुदार शुद्धाचारवादी, रोमन चर्चवादी तथा वहुत से संकुचित आंग्ल चर्च के अनुयायी भी थे । किन्तु कुछ और भी था जो एलिजावेथ युग की विशेपता थी; यह ऐसी धार्मिक भावना थी जो न प्रमुखत: कैथोलिक थी और न प्रोटेस्टेंट, किन्तु जो रूढ़ि और अंधविश्वास से विमुख थी और मुख्य रूप से आध्यात्मिक थी ।

एलिजावेथ के राज्य के प्रथम वर्ष में ही प्रत्येक पादरी-प्रदेश में उपद्रव आरम्भ हो गये । अनुगामी सन्तानों के लिये क्रानमर की अंग्रेज़ी-प्रार्थना पुस्तक को लेटिन भापा में लिखे मास के स्थान पर पढ़ने का पुन: विधान किया । किन्तु धर्म में इस परिवर्तन के साथ चर्चों में पुजारियों का परिवर्तन नहीं हुआ । लगभग ८००० पादरियों

में से २०० से अधिक को पदच्युत नहीं किया गया। जिलाधीश लोग कानून-पालन परंपरा से ही करते थे और उनके नागरिक, जोकि स्वयं भी समान रूप से कानून का पालन करने वाले थे, कानून को कार्यान्वित करने के लिये उसका बुरा नहीं मानते थे। यदि कोई अधेड़ आयु का व्यक्ति होता तो वह इस बात के लिये अभ्यस्त होता था कि जो शक्ति में है उसके अनुसार अपने धार्मिक व्यवहार को बदल ले। कुछ जिलाधीश तो पुजारी या पादरी भी रहे होते थे जिन्हें कि अनेक प्रकार के धार्मिक अनुभवों का परिचय होता था। जब रानी मेरी के बाद उसकी बहन राजगद्दी पर बैठी उस समय कोई ही जिलाधीश एक श्रद्धालु प्रोटेस्टेंट होता था, किन्तु तब भी वह पोप की आज्ञा का कोई आदर नहीं करता था; उसके लिये अपने 'व्यक्तिगति निर्णय' के बारे में दूसरे का परामर्श लेने का विचार उसके स्वभाव के अत्यन्त विपरीत था; और यदि वह ईमानदारी से चाहता कि वह चर्च का आज्ञापालक रहे तो वह उस आज्ञा को किस प्रकार सुन सकता था ? उसे यह विश्वास करना सिखाया गया था कि यह आज्ञा राजा के मुँह के माध्यम से ही प्राप्त होती है, और १५५९ में यह आज्ञा और किसी स्रोत से आती भी नहीं थी। धार्मिक सेवाओं तथा सिद्धान्तों को इसलिये स्वीकार करना कि ये राजा, पार्लियामेंट (संसद) अथवा प्रिवी काउंसिल (सर्वोच्य न्याय सभा) द्वारा आदिष्ट हैं, उस समय पादरियों को न केवल लाभकर ही प्रतीत हुआ बल्कि पूर्णतः उचित भी लगा।

धर्म के प्रति इस प्रकार का रवैया था उन इरास्मस मतावलंबियों का जिन्होंने कि इंगलैंड के लोगों को परिवर्तनों की उस आपद्पूर्ण शताब्दी में से पार लगाया। हमारे आज के व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आदर्श के लिये यह एक अत्यन्त जघन्य विचार है, किन्तु उस समय इस धार्मिक सिद्धान्त को अधिकांश ईमानदार लोग स्वीकार करते थे। बिशप ज्यूएल ने, जोकि एलिजाबेथ युग के आरम्भिक वर्षों के विचारों का सर्वोत्कृष्ट व्याख्याकार था, कहा कि : "यह हमारा सिद्धान्त है कि, कोई भी व्यक्ति, किसी भी वर्ग का चाहे वह हो—चाहे वह साधु हो, चाहे उपदेशक हो, नेता हो अथवा धर्म-दूत हो—उसे राजा तथा उसके दंड-नायकों के शासन के अधीन होना चाहिये।"

राजा तथा दंड-नायकों के अधिकार-क्षेत्र में धर्म का भी समावेश था। सब इस बात में सहमत थे कि राज्य में केवल एक ही धर्म हो सकता है, और रोमनवासियों तथा कठोर शुद्धाचारवादियों के अतिरिक्त सब इस बात में सहमत थे कि राज्य को यह निर्णय करने का अधिकार है कि कौन सा धर्म हो।

यह सिद्धान्त, जोकि मध्ययुगीन धारणा के उतना ही प्रतिकूल था जितना आधुनिक धारणा के, एलिजाबेथ युगीन इंगलैंड के अनुकूल था। यह राज्ञी के पिता के काल में पादरियों के विरुद्ध लौकिकों के सामाजिक विद्रोह का स्वाभाविक राजनैतिक परिणाम था। ट्यूडर-काल के इंगलैंडवासी अधार्मिक नहीं थे किन्तु वे पादरी-विरोधी थे और

इसलिये वे इरास्मस मत के थे। इस मनोवृत्ति ने स्वयं पादरियों को भी प्रभावित किया था, जोकि धार्मिक शिक्षा-केन्द्रों में पुजारी के रूप में शिक्षित नहीं हुए थे बल्कि अंग्रेज़ी समाज ही के एक भाग थे।

इसलिये एलिजाबेथ-काल के आरंभिक वर्षों में पादरी लोग सामान्य रूप से आज्ञानुसारी और विनम्र थे। किन्तु उसमें कुछ ऐसे उत्साही प्रोटेस्टेंट भी थे जो धर्म-परिवर्तन कराने में सक्रिय रूप से संलग्न थे। इनमें से कुछ वे थे जो राज्ञी मेरी की आकस्मिक मृत्यु के कारण स्मिथफील्ड की आग से बच रहे थे, अथवा वे थे जो प्रवास काट कर लौटे थे और जिनेवा के जल-प्रपातों वाले प्रदेश से अर्जित काल्वेनवादी धर्मान्धता से परिपूर्ण थे। ये लोग मन से इरास्मसवादी नहीं थे। उन्होंने पोप राजकुमार के आदेशों की उपेक्षा कर दी होती, किन्तु उन्हें ज्ञात था कि एलिजाबेथ ही वास्तव में इंगलैंड तथा पोप के अधिकार-विस्तार के बीच में बाधक है, इसलिये उन्होंने उसकी चर्च सम्बन्धी सन्धि को इस विचार से स्वीकार कर लिया कि जब उचित अवसर उपस्थित होगा उसमें संशोधन करवा लेंगे। रोम तथा स्पेन के विपरीत, वे नवीन संधि के बलवत्तम रक्षक थे, किन्तु एक दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाय तो, वे इसके भयानकतम शत्रु थे।

१६५५ के पुजारियों में से अधिकांश, जोकि अपना धर्म पार्लियामेंट-अधिनियमों से बना बनाया स्वीकार करने को तत्पर थे, किसी ऐसी परम्परा से रहित थे जो उनके मंत्रीत्व को उत्साह तथा समर्थन प्रदान कर सकती। किन्तु अतिवादी प्रोटेस्टेंटों में एक सजीव श्रद्धा थी जिसके कारण वे कुछ दशाब्दों तक पादरियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ग रहा। यह ऐसा काल था जबकि साधारण लोग शिक्षा और उत्साह दोनों में पिछड़े हुए थे।

राजा हेनरी के काल से चल रही पादरी-विरोधी क्रान्ति के बाद से पुजारी अब स्वर्धा या घृणा के विषय नहीं रहे थे, किन्तु प्रायः ही उनको तिरस्कृत और निरादृत किया जाता था। स्वयं एलिजाबेथ भी चर्च की भूमियों तथा सम्पत्तियों का अपहरण करती रही और कभी-कभी वह बिशप-पदों को इसलिये रिक्त रखती थी कि मठों के किराये आदि राजा को मिल जाँय। उसके प्रमुख विशप निरन्तर उसके मंत्री विलियम सिसिल से विशुद्ध रूप से धार्मिक मुआमलों में भी परामर्श लेते थे और शक्ति-सम्पन्न लौकिकों द्वारा दमन या शोषण की अत्यन्त क्षुद्र घटनाओं की भी उससे शिकायत करते थे।" चर्च के साथ नागरिक सेवा के एक भाग के रूप में व्यवहार किया जाता था, जो समादृत तो था किन्तु जो निर्धन राजा तथा शोषक दरबार का एक असहाय शिकार था। चर्च प्रदेश के छोटे क्षेत्र की राजनीति में राज्याधिकारी धार्मिक अधिकारी को दबाता था। "लव्ज़ लेबर इज़ लास्ट" के युवक लेखक ने पुजारियों के प्रति लौकिकों के दया तथा आक्रोश-मिश्रित व्यवहार को देखा था।

इस सब का अर्थ है कि हेनरी के काल में पादरी-विरोधी आन्दोलन द्वारा उत्पन्न भू-उभार धीरे-धीरे ही कम हो रहा था। तो भी, यह कम हो रहा था। रानी के राज्य के अन्त तक आंग्ल चर्च के पादरी अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में हो गये थे। अब वे अपने पड़ौसियों द्वारा अधिक समादृत तथा अधिक आत्मविश्वास-पूर्ण थे। जब स्टुअर्ट राजाओं ने चर्च का अधिक सम्मानपूर्ण सहयोग के लिये हाथ पकड़ा तब लौकिक लोग एकबार पुनः पादरियों के अभिमान के विरुद्ध शिकायत करने लगे। राज्य-सम्मान ने धर्माधिकारी को राज्याधिकारी के बराबर सिर उठाने को प्रोत्साहित किया।

एलिजाबेथ के राज्य में सामाजिक जीवन में यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ कि पादरियों को एकबार पुनः, और इस बार अन्तिम रूप से, अपने साथ पत्नियाँ रखने का अधिकार मिल गया। बहुत से धर्माधिकारी, जोकि १५५३ में रोमन कैथोलिक-वाद की पुनःस्थापना को स्वीकार करने को तत्पर थे, मेरी के काल में आजीविका से इस कारण से वंचित कर दिये गये थे कि उन्होंने एड्वर्ड षष्ठ के कानूनों के अनुसार विधिवत् विवाह किया था। एलिजाबेथ के काल में उनकी स्वतंत्रता उन्हें लौटा दी गयी। बड़ी चतुराई से यह कहा गया कि "क्योंकि मठीय सम्पत्तियों के वितरण ने 'सुधार' के भविष्य को लेकर निहित स्वार्थों को जन्म दे दिया है इसलिये पादरियों पर से वैवाहिक प्रतिबन्ध उठा लेने से अल्प-संस्कृत पादरियों ने इसकी प्रगति की छाया में पारिवारिक स्वार्थों का पोषण आरम्भ कर दिया है, जो स्वार्थ कि इसकी अन्तिम सफलता को असंदिग्ध बनाने के लिये महत्व-रहित नहीं हैं। (कुमारी हिल्डा ग्रीव की स्टडी आफ़ दि पार्सन फार्चून्स् आफ़ दि क्लर्जी इन एस्सेक्स, डिप्राइव्ड अण्डर मेरी, आर. एच. एम. १६४०)।

विवाह करने की स्वतंत्रता से बहुत से ईमान्दार व्यक्तियों को बहुत सुविधा का अनुभव हुआ होगा, और इस प्रकार से बच्चों की एक उत्कृष्ट जाति का पोषण हुआ। अनेक पीढ़ियों तक इंगलैंड को उत्कृष्ट व्यक्तियों की एक परम्परा मिली। इस परंपरा में से इंगलैंड की विभिन्न सेवाओं के लिये, जिनमें चर्च-सेवा भी शामिल है, अनेक उत्कृष्ट तथा ईमान्दार व्यक्ति आए। किन्तु आरम्भ में पादरी-विवाह ने कुछ कठिनाइयाँ उत्पन्न कीं : इनकी स्त्रियों को एलिजाबेथ तथा उसके अनेक प्रजाजन पिछली बद्धमूल धारणाओं के कारण तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते थे। धार्मिक-अधिकारियों की पत्नियों को समाज में समादृत तथा महत्वपूर्ण स्थान मिलने के लिये समय की ज़रूरत थी, और आगे जाकर वह उन्हें मिला।

पत्नी तथा बच्चों के पालन की आवश्यकताओं ने धार्मिक अधिकारियों की निर्धनता को और भी अधिक दुस्सह्य बना दिया। क्योंकि वे निर्धन थे इसलिये उनके विवाह सामान्य रूप से जमीन्दारों की लड़कियों से नहीं होते थे। स्वयं क्लेरेंडन ने भी, जोकि आंग्ल चर्च के प्रति श्रद्धालु था, इस बात को "महान् विद्रोह" द्वारा उत्पन्न

सामाजिक तथा नैतिक अव्यवस्था की प्रतीक माना कि उच्च कुलों और परिवारों की लड़कियां पादरियों अथवा "अन्य निम्न तथा असमान" व्यक्तियों का वरण कर रही हैं।" पादरियों के आर्थिक तथा सामाजिक स्तर में विशेष उन्नति केवल हेनरी के काल में आकर ही हुई। जेन आस्टिन के उपन्यासों में राज्याधिकारी तथा धर्माधिकारी एक ही सामाजिक वर्ग में रखे गये हैं, किन्तु ट्यूडर तथा स्टुअर्ट कालों में ऐसी स्थिति नहीं थी।

पादरियों की निर्धनता कृपा-विक्रय तथा चर्च में एक से अधिक पद-ग्रहण की प्रथा को देर तक बनाए रखने में सहायक हुई। ये व्यवहार पोप का अधिकार समाप्त हो जाने के साथ समाप्त नहीं हुए, यद्यपि फ्रांस तथा इटली आदि में रहने वाले विदेशियों द्वारा इंगलैंड में लाभ का पद रखने की प्रथा सदा के लिये समाप्त हो गयी।

एलिजावेथ-युग के बीच के वर्षों में जो संकट आन्तरिक तथा बाह्य दोनों ओर से चल रहा था, वह आगे चलकर स्पेन पर पोत-आक्रमण तथा स्काटलैंड की राज्ञी मेरी को प्राणदंड में जाकर परिणत हुआ। इंगलैंड का समाज धार्मिक कलहों से बुरी तरह से अशान्त था, जेस्यूट मिशन को उन प्राचीन धर्मावलम्बी दुर्भाग्यपूर्ण ग्रामीणों के घरों में सेवा कार्य में वड़ी कठिनाई हो रही थी जोकि दो स्पर्धी अवस्थाओं में विभक्त थे। देश भर में आतंक व्याप्त था। लोग प्रतीक्षा कर रहे थे और प्रतिदिन स्पेन के आक्रमण, कैथोलिक विद्रोह तथा राज्ञी की हत्या के समाचार आने की दुराशा उन्हें घेरे रहती थी। जीस्यूट लोग वेश बदल कर इधर-उधर भाग रहे थे और मठों की वड़ी-वड़ी दीवारों के भीतर 'पुजारी-विलों' में अपने आप को छिपा रहे थे, जबकि शान्ति के न्यायरक्षक उनका पीछा कर रहे थे और कभी-कभी, जब वे पकड़े जाते तब, इनको प्राणदंड दे रहे थे।

इस वीच शुद्धाचारवादी, जोकि अभी 'विरोधी' नहीं हुए थे वल्कि चर्च प्रदेश के पादरी और शक्ति न्यायरक्षकों का कार्य कर रहे थे, जिन पर कि राजा इस संकट-काल में अपने अस्तित्व के लिये निर्भर कर रहा था, चर्च-प्रतिष्ठानों को भीतर से वदलने और उसे नया रूप देने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने विशपों की उन्हें 'ईसाविरोधी' कह कर निन्दा की। वे अधिकारियों द्वारा वर्जित व्याख्यानों तथा प्रार्थना-सभाओं में भाग लेते थे। एलिजावेथ ने शिकायत की थी कि लंडन के प्रत्येक व्यापारी ने "अपना एक स्कूल मास्टर रखा हुआ है तथा वह अवैध रात्रि-धर्मसभा करता है, वह अपने नौकरी तथा नौकरानियों को धर्म-ग्रंथ पढ़ाता और उनकी परीक्षा लेता है।" अनेक काउंटियों में शुद्धाचारवादी पादरियों ने मंत्रियों की सभाएं कीं, जोकि शीघ्र विशपों से पार्लियामेंट की सहायता से उनका अधिकार छीनने वाले थे।

शुद्धाचारवादियों में चुनाव-प्रचार की और संसत्सदस्यों को प्रभावित करने तथा आन्दोलन आयोजित करने की योग्यता उसी समय स्पष्ट थी, जिसने कि अनुगामी

शताब्दी में इंगलैंड के विधान को नया रूप दिया। १५८४ में उन्होंने पार्लियामेंट में पादरियों, नगर-परिषदों, शान्ति-न्यायाधिकारियों तथा सभी काउंटियों के प्रमुख जमींदारों की याचिकाओं की बाढ़ ला दी। लोक-सभा में, और प्रिवी काउंसिल में भी, आधा मत-परिवर्तन कर दिया गया था। किन्तु एलिजावेथ दृढ़ रही। उसका दृढ़ होना अच्छी ही बात थी, क्योंकि अन्यथा चर्च की शुद्धाचारवादी क्रान्ति निश्चित रूप से कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों में धार्मिक गृह-युद्ध का रूप ले लेती जिसमें स्पेन की विजय कोई असंभव बात नहीं थी। १६४० में इंगलैंड इतना सशक्त तथा प्रोटेस्टेंट हो चुका था कि उसे धार्मिक क्रान्ति तथा प्रतिक्रांति कोई हानि नहीं पहुंचा सकती थी, जबकि आधी शताब्दी पूर्व यह उसके लिये अत्यन्त घातक होता।

राज्ञी एलिजावेथ तथा उसके कठोर आर्कबिशप ह्विटगिफ्ट ने तूफान को टाल दिया, और एंग्लिकन चर्च का पोत रोमन कैथोलिक मत तथा शुद्धाचारवादी चर्च की टकराती हुई शिलाओं के बीच सुरक्षित रूप से चलता रहा। एलिजावेथ काल के अन्त तक इसकी कुछ प्रतिक्रिया हुई। कुछ समय के लिये शुद्धाचारवादियों को चर्च की मर्यादा के भीतर नम्रता से व्यवहार करने के लिये बाध्य होना पड़ा। 'ब्राउनवादियों' के समाज, जो कुछ थोड़े से चर्च के बाहर थे, उनसे घृणा की जाती थी। उनसे काफी कठोर व्यवहार किया गया, कुछ अधिक कट्टर शुद्धाचारवादियों को फांसी दी गयी और बहुतों को कैद किया गया। किन्तु तब भी शुद्धाचारवादी पादरियों की बहुत बड़ी संख्या, तथा जमींदार और व्यापारी लोग, राज्ञी के प्रति वफादार थे। वह अद्भुत स्त्री तब भी 'उनका प्रेम जीतती हुई राज्य कर रही थी।' किन्तु यदि कोई और अधिक दूरदर्शी और बुद्धिमान व्यक्ति एलिजावेथ के स्थान पर होता तो उसे अवश्य इस बात में सन्देह होता कि आखिर कितनी देर तक और राज्य-शक्ति इस हठवादी और विभक्त अंगरेज जाति पर एक धर्म का आरोपण कर पाएगी, जहांकि नौकरानियां तक 'विद्वान उपदेशकों का नियंत्रण स्वीकार करने को तैयार नहीं थीं।' इस प्रसंग में अन्तिम स्थिति 'समझौते का अस्वीकार' होने वाली थी और हमारा द्वीप 'सौ धर्मों' के लिये प्रसिद्ध होने वाला था। इंगलैंड में धर्म के इस स्वरूप ने वाल्तेर को, जब वह इंगलैंड के भ्रमण के लिये आया था, बहुत विस्मित किया।

किन्तु एलिजावेथ को तब भी आशा थी कि उसके सब प्रजा-जन एक मध्यममार्गीय धर्म को स्वीकार कर लेंगे, जिसमें कि, जैसाकि हूकर ने अपने अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों द्वारा बताने का प्रयत्न किया था, शास्त्र तथा चर्च के आदेशों के अतिरिक्त विचार तथा लोकानुभव को भी स्थान मिलेगा। निश्चय ही इंगलैंड के लोगों को इस प्रकार का धर्म अधिक सहज रूप से स्वीकार्य था बजाय शुद्धाचारवादियों की शास्त्रनिष्ठा वाले धर्म के, जोकि दैनिक जीवन के प्रत्येक कार्य को उचित सिद्ध करने के लिये कोई शास्त्र-प्रमाण खोजते थे या दमनकारी चर्च के आदेश की ओर देखते थे। तो भी संपूर्ण

इंगलैंड पर किसी भी प्रकार का एक ही धर्म आरोपित करने का विचार अत्यन्त दर्प-पूर्ण था और परिणामस्वरूप सौ वर्ष और घृणा तथा संघर्षों, जेलों और जुर्मानों तथा हत्याओं का दौर रहा। और इस सब कष्ट और उत्पीड़न में से नियति हमें नागरिक स्वतंत्रता तथा संसदीय विधान देने वाली थी। सचमुच मानव-इतिहास के ढंग विचित्र हैं और जातियों के भाग्य मानवीय पहुँच से परे हैं। क्योंकि हम अब भी "प्रार्थना पुस्तक" का उपयोग करते हैं इसलिये हमारे लिये एलिजाबेथ युग की प्रार्थना-सभा की कल्पना करना बहुत कठिन नहीं है। किन्तु इसके लिये हमें वेदी के स्थान पर लकड़ी के मेज़ की कल्पना करनी चाहिये। इसी प्रकार से, प्रार्थना साधारण रूप से बोली जाती थी और भक्तिगीत गाये जाते थे। प्रार्थना-सभा में सम्मिलित गान प्रोटेस्टेंट-पूजा का बहुत बड़ा आकर्षण था किन्तु आजकल चर्च में गाये जाने वाले आधुनिक गीतों के स्थान पर उस समय निश्चित दिन के लिये निश्चित भजन स्टर्नहोल्ड तथा होप्किस छन्दों में गाये जाते थे। वह पुरानी भजनों की पुस्तक, जोकि इंगलैंड की अनेक संत-तियों को अतीव प्रिय थी, अब पूरी तरह से भुला दी गयी है, केवल 'पुराना सौवां' भजन एक आधुनिक भजन के रूप में अभी तक हमें ज्ञात है :

पृथिवी पर रहने वाले सब लोग
ईश्वर के प्रति साह्लाद स्वर से गाते हैं,
सभय करो उसकी सेवा, गाओ उसका यश-गान,
आओ नमो उसके सम्मुख और बनो सानंद।

एलिजाबेथ-युगीन भजन-पुस्तकें, जिनके भजन संगीत-बद्ध होते थे, प्रायः चार भागों में स्वर-बद्ध की गयी होती थीं : कैंटस, आल्टस, टेनर तथा बासुस, जिससे कि अशिक्षित भी सरलता से अपनी आवाज़ के अनुकूल भाग को सरलता से सीख सकते थे। इन भजनों को गाते समय इनके साथ तार-वाद्य या वायुवाद्य आवश्यक रूप से नहीं बजाये जाते थे।

धर्मोपदेश पार्सन (धर्माधिकारी) के लिये एक बहुत बड़ा सुअवसर था, विशेषतः यदि वह शुद्धाचारवादी होता। एक घंटे की अवधि तक तो उसे सहन किया जाता था, स्वागत भी किया जाता, कभी कभी दो घंटे भी चल जाता। किन्तु अल्पशिक्षित अथवा अधिक आत्मविश्वासी पादरी, विशेषतः बूढ़े लोग, चर्च द्वारा दिये गये भजन गाने तक सीमित रहते थे। धर्मोपदेश तथा भजन दोनों, आध्यात्मिक शान्ति देने के अतिरिक्त, धार्मिक और राजनैतिक विश्वास बनाने में भी सहायक होते थे।

चर्च में साप्ताहिक उपस्थिति का नियम राज्य द्वारा आरोपित था, अनुपस्थित रहने वालों पर अधिनियम द्वारा जुर्माना लगाने का आदेश था, किन्तु व्यवहार में इसमें कठोरता नहीं थी, सिवाय ऐसे व्यक्तियों के जिनका प्रोटेस्टेंट धर्म से विरोध विदित होता था। यह बात के बिना संदेह के कही जा सकती है कि उस अत्यन्त

व्यक्तिवादी समाज में प्रत्येक व्यक्ति को प्रति रविवार चर्च में आने की बाध्यता नहीं होगी।

कोर्नवाल का एक जोन ट्रेविलियन नामक कैथोलिक भद्र पुरुष, जोकि जुर्माने से बचने के लिये चर्च जाता था, धर्म शिक्षा पढ़ने तथा स्टर्नहोल्ड और हॉप्किन्स के भजनों को गाने का कष्ट सहन करता था, किन्तु सदैव उपदेश से पहले पीठिका पर बैठे धर्माधिकारी को ऊंची आवाज में कहता जाता था "जब अपना यह भाषण पूरा कर लो, तब मेरे यहां आकर खाना खाना।" वह बूढ़ी प्रोटेस्टेंट स्त्रियों को डराया करता था कि उससे कहीं बुरे दिन आने वाले हैं जैसे कि राज्ञी मेरी के काल में उन्होंने देखे थे। वह एक हंसमुख बूढ़ा भद्र व्यक्ति था जिसके बारे में अनेक विचित्र बातें प्रचलित थीं।

एलिजाबेथ के राज्य की दीर्घ कालावधि में नयी संतति के लोग, जिन्होंने बाईबल तथा प्रार्थना-पुस्तक की परंपरा में शिक्षा पाई थी, तथा जिसने स्पेन, पोप और जेस्यूटों के विरुद्ध राष्ट्रीय अस्तित्व के लिये संघर्ष में भाग लिया था, अत्यन्त उत्साही प्रोटेस्टेंट लोग थे। बाइबल का अध्ययन तथा पारिवारिक प्रार्थना अंगरेजी-समाज के अंग बन रहे थे। उसके राज्य के प्रथम दशाब्द में ही रोजन एश्चाम ने अपनी पुस्तक 'स्कूल मास्टर' में लिखा था: "हमारे लंडन नगर पर ईसा की कृपा रहे, ईश्वर के आदेशों की अधिक सुचारु शिक्षा होनी चाहिये तथा ईश्वर का सेवा-कार्य अधिक आदरपूर्वक होना चाहिये तथा उन्हें इटली के चर्चों में साप्ताहिक उपस्थिति देने के बजाय सामान्य घरों में प्रतिदिन जाना चाहिये।" निस्संदेह ऐसी पारिवारिक पूजा लंडन के नागरिकों में इस समय अधिक प्रचलित थी, सारे देश में नहीं थी, किन्तु इसका प्रचलन तेज़ी से व्यापक हो रहा था।

जिस वर्ष राज्ञी अपनी बहन मेरी के बाद राज्य गद्दी पर बैठी, उस समय शुद्धाचारवाद जिनेवा तथा र्‌हाइनलैंड से आयात किया गया एक विदेशी सिद्धान्त था, किन्तु जब उसका देहांत हुआ यह मूलतः और स्वरूपतः इंगलैंड के जातीय रंग में रंग गया था और इसमें कुछ ऐसी विशेषताएं आ गयी थीं जो यूरोप के शेष भाग में प्रचलित कैल्विनवाद के लिये एकदम अपरिचित थीं। राज्ञी के राज्य में आंग्ल-चर्च-धर्म भी बद्धमूल हो गया था। १५५९ में अभी आंग्लवाद ठीक तरह से धर्म का रूप नहीं ले पाया था बल्कि चर्चों के विवाद में एक समझौते का ढंग था जोकि एक चतुर, विद्वान तथा संयत स्वभाव वाली युवती द्वारा दोनों सदनों की अनुमति से प्रचारित किया गया था। किन्तु उसके राज्यकाल के अन्त तक यह एक वास्तव धर्म बन गया था, चालीस वर्षों से भी अधिक समय तक इस देश के प्राचीन चर्चों में प्रयुक्त हो चुकने के बाद इसकी सेवाएं अनेकों को प्रिय हो गयी थीं तथा इसका दर्शन और भावना हूकर की "एक्लेसिआस्टिकल पोलिटी" नामक पुस्तक में अत्यन्त उत्कृष्ट ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा था। ज्यार्ज हर्बर्ट (१५५३-१६३३) आंग्लवादी धर्म का एक कवि हुआ, जोकि इस धर्म के पक्ष में मात्र राज्य की सुविधा की अपेक्षा से अधिक महत्वपूर्ण बात थी।

एलिजाबेथ के राज्य के अन्त तक पादरियों के आचरण में उन्नति तथा इनके और लौकिकों के शिक्षा-स्तर में उन्नति का मुख्य कारण व्याकरण-विद्यालय (ग्रामर स्कूल) तथा विश्वविद्यालय थे। सामन्य लोग या तो पूरी तरह से अपढ़ थे अथवा ग्राम-विद्यालय की अध्यापिकाओं द्वारा थोड़ा अक्षर-ज्ञान प्राप्त किये हुए थे। किन्तु समाज के अत्यन्त भिन्न भिन्न वर्गो के कुशल लड़के व्याकरण-विद्यालयों में एक साथ लातीनी (लेटिन) भाषा की शिक्षा पाते थे। कक्षाओं में वर्ग-भेद नहीं किया जाता था, जैसाकि पीछे किया जाने लगा था।

अन्य अनेक संस्थाओं के समान विश्वविद्यालय को भी १५३०-१५६० की धार्मिक तथा आर्थिक अव्यवस्था का शिकार होना पड़ा। श्रमणों के विहार समाप्त हो जाने से इन विद्यालयों में विद्यार्थी-संख्या तथा इनकी सम्पत्तियां कम हो गयी थीं। वास्तव में मध्ययुगीन केम्ब्रिज तथा ऑक्सफर्ड में ये श्रमण ही मुख्यरूप से अध्ययन करते थे। इसके साथ ही संसद ने एक अधिनियम द्वारा अधेड़ आयु के उन पादरियों को उनके अपने चर्च-प्रदेशों में भेजा जोकि अभीतक, शताब्दियों की परंपरा के अनुरूप, विश्वविद्यालय में ही निठल्ले पड़े रहना चाहते थे। वहां उनके आचरण भी शोभनीय नहीं थे। इंगलैंड की इन दो विद्यापीठों का मध्ययुगीन स्वरूप परिवर्तन तथा निर्धनता के इन दुःखपूर्ण वर्षों में समाप्त हो गया था।

एलिजाबेथ के युग में ऑक्सफर्ड तथा केम्ब्रिज अपेक्षाकृत अधिक धर्मनिरपेक्ष रूप में पुनरुज्जीवित हुए और गृह-युद्ध आरंभ होने तक इन्होंने बहुत विकास किया। बड़ी संख्या में अवर-स्नातक धर्मेतर कार्यों को आजीविका के रूप में स्वीकार करना चाहते थे। एलिजाबेथ युग के महत्वपूर्ण लोगों की काफी बड़ी संख्या का केम्ब्रिज तथा आक्सफर्ड विश्वविद्यालयों से आये होना इस बात का द्योतक है कि शासक वर्ग का रवैया अब शिक्षा के प्रति बहुत बदल चुका था। अब एक भद्र पुरुष के लिये किसी अच्छे विश्वविद्यालय का स्नातक होना आवश्यक था, विशेषतः यदि वह राज्याधिकारी होना चाहता था। इन विश्वविद्यालयों से वह लातीनी भाषा, प्राचीन पुराण, यूनानी भाषा, तथा अल्पाधिक मात्रा में गणित और दर्शन से परिचित होकर निकलता था। सिडनी तथा रलीघ, काम्डन तथा हैक्लिट आक्सफर्ड में थे, तथा सेसिल लोग, बेकन लोग तथा वाल्सिंघम और स्पेंसर तथा मार्लोवे कैम्ब्रिज में थे।

विश्वविद्यालयों तथा शासक-वर्ग के बीच सम्बन्ध का एक कारण शैक्षणिक जीवन की स्थिति में सुधार था। मध्ययुगीन छात्रावासों तथा आवासालयों को तीव्र गति से स्थानान्तरित करती हुई कालेज-व्यवस्था सतर्क माता-पिताओं को अपने बच्चों के सम्बन्ध में कुछ आश्वस्त करती थी। यूरोप में केवल आक्सफर्ड तथा कैंब्रिज विश्वविद्यालय ही ऐसे थे जहां अनुशासन तथा अध्यापन का उत्तरदायित्व कालेज संभाल रहे रहे थे, अन्यथा तो ये दोनों पहले बहुत बुरी तरह से उपेक्षित हो रहे थे। अभी तक कालेज संरक्षक (कालेज-ट्यूटर) जैसा कोई अधिकारी नहीं था, किन्तु विद्यार्थी अथवा

उसके माता-पिता व्यक्तिगत रूप से कालेज के किसी अध्यापक से सम्पर्क स्थापित करते थे और उसे एक अध्यापक तथा संरक्षक होने की प्रार्थना करते थे। इन व्यक्तिगत संरक्षकों के पास ६ विद्यार्थी होते थे जिन्हें ये पढ़ाते और संभालते थे। कभी कभी ये विद्यार्थी संरक्षक के कमरे में ही सोते थे। इनमें सम्बन्ध बहुत कुछ उस्ताद-शागिर्द (मास्टर-एप्रेंटिस) के समान थे।

सब मिला कर, व्यक्तिगत अध्यापक-संरक्षक की यह व्यवस्था अच्छी चल रही थी। किन्तु संरक्षकों में यह एक सामान्य प्रवृत्ति थी कि वे अपने उन शिष्यों की उपेक्षा करते थे जो उन्हें शुल्क नहीं दे पाते थे, और उनके साथ बहुत मैत्रीपूर्ण होते थे जो उन्हें अच्छा शुल्क दे सकते थे। उसके धनी शिष्य अधिक भड़कीले तथा कीमती सिल्क आदि के वस्त्र पहनना तथा तलवार अथवा बर्च्छी धारण करना पसंद करते थे जोकि कालेज-नियमों के विरुद्ध था, और इसी प्रकार से सरायों में ताश, शतरंज तथा कुक्कुट-लड़ाई और रीछ-कुत्तों की लड़ाई जैसी अविहित खेलों में अपना समय बर्बाद करते थे। १५८७ में विलियम सिसिल लार्डबर्लीफ को, जिसकी कि पित-तुल्य आंख राज्य के सब कोनों में घूमती थी, सूचना दी गयी कि :

संरक्षकों के शुल्क बहुत अधिक होने से न केवल निर्धन माताएं अपने बच्चों को विश्वविद्यालयों में पढ़ाने में असमर्थ हैं बल्कि इसका परिणाम यह भी हो रहा है कि धनी विद्यार्थियों को ये संरक्षक नाराज करने से घबराते हैं, कि कहीं उनका शुल्क नहीं मारा जाय।

उन दिनों में विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भी, अन्य सब के समान ही, धनी लोगों का ही पक्षपात करते थे। एलिजाबेथ युग के आरंभ में ही धर्माध्यक्ष (पार्सन) हैरिसन ने लिखा था :

"ज़मींदारों अथवा धनियों के लड़के प्रायः ही विश्वविद्यालय को बहुत दूषित करते हैं, क्योंकि ये लोग अपनी प्रतिष्ठा तथा स्वतंत्रता के कारण विश्वविद्यालय में अव्यवस्था तथा अनुशासनहीनता उत्पन्न करते हैं। ये लोग महंगे कपड़े पहनते हैं और हुल्लड़बाज़ी करते हैं, जिसका परिणाम होता है कि ये अपने अध्ययन में रुचि नहीं ले पाते। और जब कभी उन्हें अनुशासन-भंग के लिये दोषी ठहराया जाता है तो वे इतना कहना पर्याप्त समझते हैं कि वे ज़मींदार हैं, और बहुतों को इस पर कोई क्रोध नहीं होता।"

यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि यदि अधिकारियों की ओर से कुछ भी आक्रोश इस पर व्यक्त नहीं किया जाता तो ऐसे विद्यार्थी, जो ज़मींदारियों के बाहरी जीवन में तथा दरबार के विलासितापूर्ण जीवन में अभ्यस्त थे उस युग के कालेज के कठोर जीवन में कभी नहीं रह पाते जोकि वास्तव में स्कूल की आयु के लड़कों के अधिक उपयुक्त थे, बजाय अवरस्नातकों के। १५७१ में उप कुलपति ने विश्वविद्यालय

के सब लोगों के लिये कैम्ब्रिजशायर के नदी या तालावों में तैरने तक की मनाही कर दी थी, जोकि एक बहुत ही निर्दोष मनोरंजन है। संभवतः इसके विरुद्ध आपत्ति यह थी कि यह एक खतरनाक व्यायाम है, जैसेकि हमारे अपने अधिक साहसिक युग में चैपल की छत पर चढ़ने का खेल था। संगठित खेलों और दौड़ों आदि का उस समय प्रचलन नहीं हुआ था और क्रीड़ा-प्रतियोगिताओं को या तो निरुत्साहित किया जाता था अथवा वर्जित कर दिया जाता था; किन्तु क्योंकि आखिर युवकों के सन्तोष का ध्यान रखना भी आवश्यक होता था इसलिये नियमों का काफी उल्लंघन भी होता था। किन्तु भंग करने के लिये नियम अवश्य थे : मध्ययुगीन विश्वविद्यालय में इस सम्बन्ध में कोई कुछ कहने वाला नहीं था।

संरक्षणता के युग में पक्षपात स्वाभाविक था, और धनियों तथा प्रभावशाली लोगों के, अथवा उन वकीलों के जोकि कालेज के लिये कार्य या छलछद्म करते थे, लड़कों को बेझिझक शिक्षावृत्तियां दी जाती थीं। कालेज धनी हो रहे थे जबकि विश्वविद्यालय निर्धन रहे। एलिजाबेथ के राज्य-काल में ट्रिनिटी में उसके पिता के प्रतिष्ठान का "ग्रेट कोर्ट" कालेज क्राइस्ट-चर्च के टोम स्क्वैड के प्रतिद्वंद्वी के रूप में अग्रसर हो रहा था।

एक सन्तति बाद, जेम्स प्रथम के राज्य-काल में, जब सिमन डी यूस सन्त जोंस कालेज कैम्ब्रिज में पढ़ रहा था, तब अवरस्नातकों के मनोरंजन के मुख्य स्रोत भ्रमण, तैरना (निषिद्ध होने के बावजूद) घंटी खींचना, फुटबाल खेलना (जोकि मुख्यतः दो कालेजों के बीच लड़ाई के लिये एक बहाना मात्र होता) थे।

अधिकांश विद्यार्थी एक कमरे में चार या अधिक के हिसाब से रहते थे। निर्धन विद्यार्थी सामान्य रूप से चर्च में जाते थे और धनी दुनियां में। पढ़ाने वाले प्रमुख आचार्य अभी तक चर्च के आदेश स्वीकार करने को बाध्य थे; यहाँ तक कि जबकि अन्य पादरियों के लिये विवाह वैध हो गया था तब भी वे चर्च के आदेश पर विवाह करने से रोक दिये जाते थे। इस सीमा तक कैम्ब्रिज और आक्सफर्ड में पादरियों का प्राधान्य रहा, बहुत कुछ ये धर्म-संस्थानों जैसे ही थे, जब तक कि अन्ततः उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में गोल्डस्टोन ने नया विधान लागू नहीं किया। सब के लिये कालेज के मन्दिर में प्रतिदिन जाना अनिवार्य था।

अवरस्नातकों में से बहुतों की, जिनमें कोपर्स, कैम्ब्रिज में किटमार्लो तथा क्राइस्ट चर्च आक्सफर्ड में फिलिप सिडनी भी थे, काव्य तथा नाटकों में रुचि भी थी। वास्तव में काव्य तथा नाटक उस युग के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भाग ले रहे थे। नाटकों तथा विष्कंभकों (बीच में खेले जाने वाले छोटे नाटक) में, जिनमें कुछ लातीनी भाषा में होते थे, मुख्यतः विद्यार्थी ही अभिनय करते थे। फुलर ने अपने "कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय

के इतिहास" में स्नातकों द्वारा नगर के सम्बन्ध में एक अत्यन्त उपहास-व्यंग्यात्मक नाटक खेले होने का उल्लेख किया है।

"विद्यार्थियों ने, यह अनुभव करते हुए कि नगरवासियों ने उनके प्रति अन्याय किया है, उनसे बदला लेने के लिये इंगलिश में एक अपमानपूर्ण हास्यनाटक बनाया (जिसका नाम उन्होंने क्लब लॉ रखा)। इसका अभिनय क्लेयरहाल में किया गया और इसे देखने के लिये मेयर, उसके भाइयों तथा उनकी पत्नियों को आमंत्रित किया गया; इसमें स्वयं उनका भी उपहास उड़ाया गया था। नगरवासियों ने बैठने के लिये एक ऐसा स्थान रखा गया जिसके चारों ओर विद्यार्थी इस प्रकार से बैठे थे कि वे उन्हें देख सकते और उन्हें दिखाई दे सकते। यहाँ नगरवासियों ने अपने ही कपड़ों में (जोकि विद्यार्थियों ने उनसे उधार लिये थे) अपने को प्रस्तुत पाया। वह अभिनय उनके आचार-व्यवहार, आकार-इंगितों का इतना सजीव चित्रण था कि वे चकित अनुभव कर रहे थे कि सही नागरिक वास्तव में किसे कहा जाय—उन्हें जो बैठे देख रहे हैं या उन्हें जो अभिनय कर रहे हैं? वे घिरे होने के कारण बाहर भी नहीं जा सकते थे, और परिणामतः वे क्रुद्ध और क्षुब्ध भाव से तब तक चुपचाप बैठे रहे जबतक कि प्रहसन के अन्त में उन्हें छोड़ा नहीं गया।"

ट्यूडर काल में इंगलैंड के अन्य सब लोगों के समान कार्पोरेशन (नगर-निगम) को भी प्रिवी काउंसिल के पास शिकायत करनी पड़ती थी। राज्ञी के सज्जन परामर्श-दाता 'कुछ प्रमुख अभिनेताओं पर कुछ व्यक्तिगत नियंत्रण अवश्य रखते थे' किन्तु जब कभी नगर उन्हें और दंड देने के लिये व्याकुल हो जाता था तब वे उस विवाद को समाप्त करने के लिये उन्हें स्वयं कैम्ब्रिज आकर देखने का प्रस्ताव करते थे, जिससे कि वे स्वयं वहीं आकर अपना निर्णय दे सकते।

यह विचित्र घटना न केवल विश्वविद्यालय तथा नगर में परम्परागत ईर्ष्या को ही प्रकट करती है बल्कि इनमें निकटता भी प्रकट करती है। एलिजाबेथ युगीन कैंब्रिज छोटा समुदाय था जिसमें कि सभी प्रमुख लोग परस्पर तथा बहुत से नागरिकों और अवर-स्नातकों से परिचित थे। १५८६ में कैंब्रिज की जनसंख्या ६५०० थी जिनमें से १५०० विश्वविद्यालय में रहने वाले थे।

काफी बड़ी संख्या में व्यापारी लोग कैम्ब्रिज के बाहर भूमि जोतते थे और उनके अतिरिक्त बहुत से किसान भी थे। दुकानें तथा अन्य भवन लकड़ी के फ्रेम तथा मिट्टी के बने होते थे। इनके अवशेष अब भी कहीं-कहीं ईंट के बने आधुनिक बाज़ारों के अग्रभागों के पीछे छिपे हैं। ऐसा था वह नगर जिसमें कि १५६८ में हाब्सन नामक टांगा-चालक ने अपने पिता से उत्तराधिकार में एक टांगा और आठ घोड़े प्राप्त किये थे और उस विनम्र आरम्भ से उसने घोड़ों तथा गाड़ियों द्वारा यातायात की एक वृहत् परिवहन-सेवा का निर्माण किया जोकि पूर्वी एंग्लिका भर में प्रसिद्ध थी और जिसके

नाम से इंगलिश में "हाब्सन चायस" एक पद ही प्रचलित हो गया और कैम्ब्रिज में उसके नाम पर एक पानी की पाईप का नाम पड़ा, और अन्ततः क्राइस्ट के युवक मिल्टन ने अपनी दो कविताओं द्वारा (जोकि बहुत अच्छी नहीं हैं) उसे अमरता प्रदान की।

कैंब्रिज जितना अपने विश्वविद्यालय के कारण प्रसिद्ध था उतना ही मेले के कारण भी प्रसिद्ध था, जोकि नया बाज़ार की सड़क तथा नदी के बीच नगर के खेतों में कटाई के बाद सितंबर मास में तीन सप्ताह तक चलता था। इस मेले में उत्तरी तथा दक्षिणी इंगलैंड जल और पृथ्वी भागों से लायी गयी वस्तुओं का विनियम करते थे। अस्थायी दुकानों के बाज़ार बनाये जाते थे जिनमें उत्तरी इंगलैंड अपनी ऊन तथा कपड़ा बेचता तथा हॉप नामक फल खरीदता था। नीदरलैंड तथा बाल्टिक के व्यापारी तथा लंडन के बड़े व्यापारी कपड़े, मछली तथा अनाज का व्यापार करते थे। व्यापारिक यात्रियों से पहले के दिनों में इस प्रकार के मेले व्यापार के लिये आवश्यक थे, और इस प्रकार के मेलों में स्टोब्रिज मेला इंगलैंड का सबसे बड़ा मेला था जिसमें कि सब प्रकार की वस्तुओं का छोटा और थोक दोनों तरह का व्यापार होता था। कृपण तथा उदार दोनों प्रकार की गृहणियाँ दूर-दूर से अपने घरों के लिये विविध वस्तुजा़त के क्रय और मेले की रौनक देखने के लिये आती थीं। पूर्वी एंग्लिका के किसान तथा राज्याधिकारी भी बहुत बड़ी संख्या में वहां आते थे। इसमें जो बात हमारी आधुनिक धारणाओं के अनुसार बहुत विचित्र थी वह यह कि व्यापार का यह विशाल वार्षिक मेला कैंब्रिज विश्वविद्यालय के अधीन आयोजित होता था। स्टूरब्रिज मेला तब तक आरंभ नहीं होता था जब तक कि विश्वविद्यालय का उप कुलपति भव्य विश्वविद्यालीय आडंबर के साथ आकर उसका उद्घाटन नहीं करता था।

एलिजाबेथ के अधीन राष्ट्रीय समृद्धि का पुनरुद्धार होने में एक अनिवार्य कारण विश्वसनीय मुद्रा का होना था। जैसाकि पहले कहा जा चुका है, उसका पिता अवमूल्यन कर अपने पीछे कठिन विपत्ति की परम्परा छोड़ गया था और परिणाम-स्वरूप एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के काल में मूल्यों में भारी वृद्धि हुई, जिसके बराबर न मजदूरी चल सकी और न किराये ही चल सके। १५५९ में 'धर्म में स्थिरता' स्थापित करने के बाद एलिजाबेथ का अगला महत्वपूर्ण कार्य था वित्तीय कठिनाई पर वीरतापूर्ण आक्रमण। सितंबर १५६० में उसने अवमूल्यीकृत मुद्राओं को वापिस लेने की घोषणा की और उनके स्थान पर नयी मुद्रा उनके वास्तव मूल्य से कुछ कम पर दी। यह खतरनाक कार्य जिस कुशलता और सफलता के साथ सम्पादित किया गया उससे स्पष्ट था कि नयी राज्ञी तथा उसकी मंत्री परिषद् राज्य के आर्थिक पक्ष को पूर्ण सम्यग्ता के साथ समझती थी जिसमें कि, अन्यथा महान् शासक भी, पथभ्रष्ट हो गये थे। उस समय के बाद से मूल्यों में स्थिरता आगयी। उसके सम्पूर्ण शासन-काल में वे धीरे-धीरे बढ़ते रहे, जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के काल में इनमें अधिक तीव्रता से वृद्धि हुई।

इसका कारण था स्पेनीय अमरीका से नये सोने तथा चांदी का बढ़ता हुआ प्रभाव। किन्तु अब वेतन मूल्य-वृद्धि के साथ बढ़ने में समर्थ थे। मूल्यों में क्रमिक वृद्धि, जोकि अब बहुत भयानक गति से नहीं हो रही थी, व्यापार तथा उद्योग की समृद्धि में सहायक हुई। और इस समृद्धि के परिणामस्वरूप इन्होंने नवीन प्रकार के उत्पादन आरम्भ किये तथा नवीन बाज़ारों की खोज की।

एलिजाबेथ के राज्य में सब प्रकार की कानों—सिक्का, तांबा, टीन, लोहा तथा कोयला—में प्रगति हुई। जर्मन खनिकों ने तांबे तथा अन्य खनिजों के झीलों वाले सुदूर प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर खुदाई की। मैंडिप पहाड़ियों से ब्रिसल के व्यापारियों को अधिकाधिक मात्रा में सिक्का प्राप्त होने लगा। कोर्नवाल तथा डेवाने की टीन की छोटी असंख्य कानें समृद्ध हो गयीं। नमक का उत्पादन बढ़ गया। हमारा लोहा संसार भर में सर्वोत्तम माना जाता था। १६०१ में एक उत्साही व्यक्ति ने लोकसभा को बताया था "ऐसा लगता है कि ईश्वर ने इंगलैंड की रक्षा के लिये उसे लोहे के रूप में एक अद्वितीय वरदान दिया है; क्योंकि यद्यपि अधिकांश देशों के पास उनका अपना लोहा है किन्तु किसी के भी पास उतना कठोर और पक्का लोहा नहीं है जिससे हमारे शस्त्रों की तुलना में बढ़िया शस्त्र बन सकें। किन्तु नौ-सेना को केवल तोपों की ही आवश्यकता नहीं थी बल्कि बारूद की भी आवश्यकता थी, जिसको बनाने में प्रयुक्त होने वाली चीजें तब तक इंगलैंड में ही प्राप्त की जाती थीं जब तक ये स्टूअर्ट के काल में ईस्ट इंडिया कंपनी ने पूर्व के देशों से विशाल मात्रा में लानी आरम्भ नहीं कीं।

ये औद्योगिक कार्य देश की ईमारती लकड़ी के लिये अपकारक हो रहे थे। लोहे, सिक्के तथा कांच की वस्तुओं के निर्माण में लकड़ी अथवा कोयले की विशाल मात्रा काम में आ रही थी। वोर्सेस्टर के एक निवासी ने एलिजाबेथ के काल के अन्तिम वर्षों में कहा था कि 'जैसे-जैसे लकड़ी का ह्रास होता जाता है वैसे-वैसे लकड़ी को कांच, सस्तेपन के कारण, स्थानान्तरित करता जाता है। काम्डन ने लिखा है कि नमक के कारखानों ने अभी हाल ही में वोर्सेस्टरशायर में फैक्कनहैम जंगल समाप्त कर दिया। सस्सेक्स, सर्रे तथा कैंट में वील्ड के जंगल तक अब कम पड़ रहे थे, जिन्होंने हजारों वर्षों से लोहे की भट्टियों के लिये लोहा तथा कोयला मुहैया किया था, क्योंकि अब लोहे की भट्टियों के लिये भी कोयले की मांग बढ़ गयी थी और कैंट के कृषि-उद्योग के लिये शतीरों और खंभों की आवश्यकता थी।

घर को गर्म रखने तथा खाना पकाने में अधिकांशतः लकड़ी का ही उपयोग होता था। पोतों की संख्या में निरन्तर वृद्धि ने, तथा इस बात के स्पष्ट ज्ञान ने कि इंगलैंड का भविष्य सागर पर निर्भर करता है, इमारती लकड़ी उगाने को आवश्यक कर दिया था; किन्तु बंदरगाहों की पहुँच में उसकी बढ़ती आवश्यकताओं के अनुसार यह कर सकना निरंतर कठिन रहता था। पहले से ही यह अनुभव किया जा रहा था कि

सागर के पास की भूमियों में, यहां तक कि पैम्ब्रोकशायर के सुदूर प्रदेशों तक में, जंगल समाप्त हो गये थे और खाली भूमियों में खेती होने लगी थी या चरागाहें बन गयी थीं। इसमें सन्देह नहीं कि द्वीप में अभी भी कुछ समय तक भट्टियों तथा पोत-यार्डों की आवश्यकताओं के लिये काफी वृक्ष थे। किन्तु उस समय अश्व-यातायात के कारण तथा सड़कें कमज़ोर होने के कारण इमारती लकड़ी का भारी बोझ वहन कर थोड़ी दूर भी चलना असंभव था। केवल जल-मार्ग ही से यह सम्भव था। इसलिये अनेक उन्नत भू-प्रदेशों में, विशेषत: पश्चिम में, इन पैंसरेसों का "यूवा कवि" अभी भी अक्षत और कँवारी वन-भूमियों को देख सका था :

सफेदा-देवदारू के भीम वृक्ष हैं जहाँ,
सुना नहीं गया जहां क्रूर परशु-प्रहार
भीत हो छोड़तीं जिससे वनदेवियां,
वृक्षों में अपने सुखद प्रकोटों को।

जबकि दूसरे ज़िलों में इन्धन की लकड़ी के समाप्त हो जाने से कुटीरवासी की अंगीठियां ठंडी रहने लगीं और औद्योगिक उत्पादन बुरी तरह से घट गया। वास्तव में, अधिकांशत: उद्योगों को ऐसे स्थानों पर ले जाना पड़ा जहां लकड़ी अभी बच रही थी। लौह उद्योग द्वारा आर्डन का वन शीघ्र ही आक्रान्त और उपभुक्त होने वाला था।

लकड़ी की बढ़ती हुई कमी की इन परिस्थितियों में एलिजाबेथ-काल में गृह तथा उद्योग दोनों में कोयले का उपयोग निरन्तर बढ़ने लगा। किन्तु वाहन की कठिनाइयों के कारण कोयले की पहुँच या तो कानों के समीपस्थ स्थानों तक अथवा नौपरिवहन के निकटस्थ स्थानों तक सीमित थी। 'सागर का कोयला', जैसाकि परिवहन के कारण इसका नाम पड़ गया था, सामान्य रूप से लंडन और थेम्स-घाटी के निकटस्थ स्थानों में सामान्य रूप से प्रयुक्त हो रहा था। मूलत: लकड़ी के इन्धन के लिये बनाई गयी चिमनियाँ तथा अंगीठियां दोबारा बनानी पड़ीं, और जबतक यह नहीं कर लिया गया तब तक कोयलों का सल्फर गैस वाला धूआं एक निरन्तर मुसीबत बना रहा। एलिजा-बेथ के काल में चिमनियों की अत्यधिक वृद्धि मुख्यत: कोयले के बढ़े हुए उपायों के कारण थी। परिणामत: कोयले की आग के लिये क्रान्ति-लोहे (कास्ट आयरन) की अग्नि-प्लेटों का निर्माण सस्सेक्स की भट्टियों का एक मुख्य कार्य हो गया था। इस काल में कोयले से लोहा पिघलाने का प्रयत्न किया गया था, किन्तु यह तब सफल नहीं हुआ। अनेक अन्य उद्योग उन प्रदेशों में, जहां कोयला सस्ता था, पहले से ही कोयले का उपयोग कर रहे थे। १५७८ में यह कहा जा रहा था कि "शराब बनाने वालों, रंग साज़ों, हैट बनाने वालों, तथा अन्यों ने अपनी भट्टियों तथा अंगीठियों को देर से बदल लिया है और उन्हें कोयला जलाने के योग्य बना लिया है।"

केवल लंडन ही नहीं बल्कि नीदरलैंड्स तथा अन्य विदेशी प्रदेशों को भी टाइने-साइड तथा डरहम से कोयला मुहैया किया जा रहा था। बहुत मात्रा में कोयला विदेशी जहाजों में विदेश को जाता था। किन्तु टाइने के कोयला-वाहक उससे भी बड़ी मात्रा में व्यापार लंडन से करते थे। सड़कों की अपर्याप्तता के कारण सब लोग सब प्रकार का भारी सामान यथासंभव जल-मार्ग से भेजने को बाध्य करते थे। एलिजाबेथ के राज्यकाल के अन्त तक भी इंगलैंड का जल-परिवहन से होने वाला व्यापार बढ़ते हुए निर्यात व्यापार से चार गुणा अधिक था।

इंगलैंड के नाविकों की दो मुख्य देनें थीं : वे थीं उत्तरी बन्दरगाहों तथा लंडन के बीच कोयला-वाहों का बेड़ा, तथा कार्नवाल और डेवन के मछुए, जिनमें से बहुत से तो साहसपूर्वक नवोपलब्ध भूमि (न्यू फाउंडलैंड) तक कॉड मछली के लिये भारी कोहरे से आच्छादित सागर में भी चले जाते थे। ट्यूडर-काल में पूर्वी किनारे पर हैरिंग मछली पकड़ने के लिये नौ-बेड़े का विकास भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। काम्डन ने नार्विच की छोटी बन्दरगाह यारमौथ का उल्लेख किया है जोकि उस समय अपनी प्रतिस्पर्धी बन्दरगाह लिन्न के ह्रास का कारण हो रही थी, "क्योंकि यहाँ अब बहुत मेला रहने लगा था और हैरिंग तथा अन्य मछलियां बहुत अधिक थीं।"

मछुए लोग सरकार को प्रिय थे क्योंकि वाणिज्य तथा राजकीय नौ-सेना के लिये आदमी अधिकांशतः इन्हीं लोगों में से आते थे। "मछली-दिन" मनाने के लिये कानून बनाये गये थे, राज्ञी की प्रजा का कोई व्यक्ति लैंट के दिन अथवा वृहस्पतिवारों को मछली नहीं खा सकता था—कभी कभी बुद्धवार भी इस सूची में जोड़ दिये जाते थे। यह अत्यन्त स्पष्ट रूप से कहा जाता था कि इसका उद्देश्य धार्मिक न होकर राजनैतिक है—अर्थात् हमारे सागर पर रहने वाले लोगों की सहायता करना, सागरतीर के ह्रास-मान नगरों को पुनरुज्जीवित करना तथा गाय और भेड़ के मांस का अत्यधिक उपयोग न होने देना। ये मछली-नियम दंड द्वारा बलात् लागू किये जा रहे थे। हम १५६३ में एक लंडन की स्त्री को लैंट के दिनों में अपने घर पर मछली रखने के अपराध में दंडित किये जाने का उल्लेख पाते हैं। १५७१ में हम प्रिवी काउंसिल को विभिन्न जिलों में शान्ति तथा न्यायाधिकारी द्वारा इस कानून को लागू करने के विवरणों में व्यस्त पाते हैं। क्योंकि लोग शताब्दियों से चर्च द्वारा आदिष्ट उपवासों को करने के लिये अभ्यस्त थे इसलिये मछली खाने की आदत को नये युग में राज्य के प्रयोजन से संयत करना अपेक्षाकृत सरल था। ऊँचे प्रदेशों में "मछली दिन" शायद सदैव नहीं मनाये जाते रहे होंगे, क्योंकि वहाँ सागर से ताजी मछली प्राप्त करना कठिन था; किन्तु तब भी नमक में सुरक्षित मछली दूर-दूर तक भेजी जाती थी, नॉर्थेट्स तथा बक्स तक में न्यायाधिकारी १५७१ में कानून को लागू कर रहे थे। यह चीज़ मछलियों के तालावों के, जोकि मध्य युगों में बहुत प्रचलित थे, उपयोग को देर तक जारी रखने में

सहायक हुई। इनके सूखे जल अभी तक पुराने जागीरप्रासादों के पास देखे जा सकते हैं।

इस तथा अन्य सब प्रकार से सचिव ऐलिस ने मछुओं आदि को संरक्षण और प्रोत्साहन दिया। उसने इन लोगों को भूमि पर सैन्य-सेवा से मुक्त कर दिया और विदेशी पोतों के विरुद्ध नौ-चालन विषयक कानून लागू किये, विशेषत: किनारे के व्यापार के लिये। इंगलैंड के पोत अभी इंगलैंड के सम्पूर्ण निर्यात को सँभालने में समर्थ नहीं किन्तु नौ-चालन विषयक इन कानूनों का यही उद्देश्य था।

एलिजाबेथ के राज्यकाल में ऐलिल तथा प्रिवी काउंसिल के समर्थ नेतृत्व में पार्लियामेंट के समर्थन के साथ देश की औद्योगिक, व्यापारिक तथा सामाजिक व्यवस्था नगरपालिकाओं के नियंत्रण से राष्ट्रीय नियंत्रण में आ गयी।

मध्ययुगों में प्रत्येक मुहल्ला अपनी निजी समिति अथवा दस्तकारी संघ के द्वारा मजदूरी तथा कीमतों का, स्वामी तथा शागिर्द के सम्बन्धों का, किसी स्थान पर व्यापार करने के अधिकार का, तथा वहां व्यापार करने की शर्तों का निर्धारण करता था। चौदहवीं शताब्दी में राष्ट्रीय नियंत्रण ने नगरपालिकाओं के नियंत्रण में हस्तक्षेप आरंभ कर दिया था जबकि एड्वर्ड तृतीय की फ्रांस तथा नीदरलैंड में विदेशी नीति ने आंग्ल-व्यापार की सम्पूर्ण दशा को ही बदल दिया था और जबकि "श्रमिक अधिनियमों" द्वारा सम्पूर्ण देश में अधिकतम वेतन-निर्धारण के कानून असमर्थ प्रमाणित हो रहे थे।

एलिजाबेथ के राज्य में शान्ति-न्यायाधिकारों द्वारा मजदूरी तथा कीमतों पर राष्ट्रीय नियंत्रण अधिक बुद्धिमत्ता के साथ रखा जा रहा था और इसके लिये एक नियत अधिकतम-वेतन आरोपित करने का प्रयत्न नहीं किया जा रहा था। साथ ही साथ, व्यापार तथा उद्योग पर से नगर-पालिकाओं का नियंत्रण हटा कर उन्हें राज्य के नियंत्रण में लाया जा रहा था। इस महत् परिवर्तन के अनेक कारण थे: अनेक नगरों का ह्रास तथा उद्योगों का ग्रामीण प्रदेशों में प्रसार, जोकि नगरपालिकाओं के अधिकार क्षेत्र से बाहर थे, व्यापार-संघों का क्रमिक क्षय, जिन्हेंकि एड्वर्ड षष्ठ के इन संघों की संपत्ति जब्त करने के लिये बनाये कानून के कारण भारी धक्का लगा, राज्य की शक्ति में वृद्धि, तथा राष्ट्रीयता की उल्लासपूर्ण अनुभूति, जोकि एलिजाबेथ युग के इंगलैंड को व्याप्त कर रही थी। अब इंगलैंड का व्यक्ति अपनी पहली वफादारी अपने नगर के प्रति, अपने संघ के प्रति, अथवा अपने स्वामी के प्रति अनुभव नहीं करता था बल्कि राज्ञी तथा देश के प्रति अनुभव करता था।

इन परिस्थितियों में एलिजाबेथ के शासन ने न केवल मजदूरी और कीमतों को ही अपने नियंत्रण में ले लिया बल्कि शागिर्दगी (एप्रेंटेसशिप) तथा व्यापार आरम्भ

करने और उसको चलाने की शर्तों को भी अपने नियंत्रण में ले लिया। इन मुआमलों में नगर तथा संघों के निजी स्वार्थों का स्थान राष्ट्रीय नीति ने ले लिया और परिणाम स्वरूप व्यक्तिगत प्रयत्न को निर्बाध अवसर मिला।

विदेशी आवासियों को निवास का अधिकार देने में एलिजाबेथ-शासन नगरों तथा संघों की अपेक्षा अधिक उदार था : ये आवासी अधिकांशत: प्रोटेस्टेंट शरणार्थी होते थे और ये प्रायः ही अपने साथ एक नया कला-कौशल तथा उत्पादन की नवीन विधि भी लाते थे। ट्यूडरों के आर्थिक राष्ट्रीयतावाद ने व्यक्ति को नगरपालिकाओं की पारस्परिक स्पर्धा से मुक्ति दिला कर स्वतंत्रता का अवसर दिया।

किन्तु यह आर्थिक स्वतंत्रता हस्क्षेप के पूर्ण अभाव की स्थिति नहीं थी। जो राज्य आंग्ल-व्यक्ति को निर्माण तथा व्यापार का अधिकार देता था उसने ऐसे नियम भी बनाए जिनका पालन व्यक्ति के लिये सार्वजनिक हित की दृष्टि से आवश्यक था। और कारीगर को, जिसेकि वह नियुक्त करता था, शागर्दगी (एप्रेंटिसशीप) की राष्ट्रीय व्यवस्था के अधीन रखा गया था।

कारीगरों सम्बन्धी अधिनियम (१५६३) द्वारा यह विधान किया गया कि नगर अथवा गांव के प्रत्येक कारीगर को एक शिक्षक के अधीन दस्तकारी की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। इसका उद्देश्य जितना सामाजिक तथा शैक्षणिक था उतना ही आर्थिक भी था। यह कहा गया कि 'जबतक कोई व्यक्ति २३ वर्ष का नहीं होता तबतक वह अधिकांशत: असंयत, विवेक-रहित तथा अल्पानुभवी होता है, और अपना स्वामी आप नहीं हो सकता।' २५ वर्ष की आयु के बाद, अपनी शागिर्दगी की अवधि समाप्त कर चुकने पर, वह विवाह करने तथा यथेच्छया अपना निजी व्यापार करने अथवा किसी सहायक के रूप में कार्य करने में स्वतंत्र था।

शागिर्दगी की उत्कृष्टता-निकृष्टता बहुत सीमा तक शिक्षक के ऊपर निर्भर करती थी। अवश्य ही बहुत से ऐसे अवांछनीय लोग भी रहे होंगे जिनमें कुछ पर शान्ति के न्यायाधिकारियों को कार्यवाही करनी पड़ी होगी, जैसाकि "ओलिवर ट्विस्ट" के तीसरे अध्याय में उल्लेख मिलता है। किन्तु सब मिला कर, शिक्षक तथा शागिर्द के सम्बन्ध—जोकि एक साथ घरेलू, शैक्षणिक तथा आर्थिक थे—समाज का प्रयोजन सम्यक् रूप से सिद्ध कर रहे थे। शताब्दियों से यह शागिर्दगी-व्यवस्था इंगलैंड के लिये स्कूल का प्रयोजन सिद्ध कर रही थी। यह व्यवस्था हमारे पूर्वजों द्वारा तकनीकी शिक्षा तथा 'स्कूलोत्तर आयु' सम्बन्धी कठिन समस्याओं का एक अत्यन्त व्यावहारिक समाधान था। यह शागिर्दगी व्यवस्था उन्नीसवीं शताब्दी तक जारी रही। आखिर उन्नीसवीं शताब्दी में आकर औद्योगिक क्रान्ति ने इसे ध्वस्त कर दिया और इसका स्थान आरंभ में निर्बाध अव्यवस्था ने लिया, जोकि इंगलैंड के शिक्षण तथा अनुशासन से वंचित बच्चों

तथा युवकों के लिये बहुत हानिकारक हुई। इस स्थिति से उत्पन्न समस्याओं को अभी तक पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सका।

किन्तु एलिजाबेथ के इंगलैंड में प्रमुखतम सामाजिक परिवर्तन विदेशी व्यापार का विस्तार था। उसके राज्य में हमारे व्यापारियों ने नवीन तथा अधिक सुदूर बाज़ारों की खोज की, जिनमें से कुछ तो पृथ्वी के दूसरी ओर थे। इससे पूर्व इंगलैंड का व्यापार युगों से फ्रांस तथा नीदरलैंड तक सीमित था। बाज़ारों में परिवर्तन के साथ दृष्टिकोण में भी परिवर्तन हुआ। दरबार में और नगर में, पार्लियामेंट में और जमींदार-प्रासाद में, वर्कशाप में और खेत में सर्वत्र सागर और उसके पार की भूमियों के सम्बन्ध में चर्चा चलती थी। इंगलैंड के लोग अब नये क्षितिजों की ओर झांक रहे थे। शैक्सपीयर के युग में सबसे अधिक प्रभावशाली लेखक, बलिदान के इतिहास-लेखक फोक्स के अतिरिक्त, हैक्लूइट था जिसने "नौचालनः इंगलैंड की यात्राएं तथा खोजें" पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक स्पेन पर पोत-आक्रमण के एक वर्ष बाद लिखी गयी थी, और दस वर्ष बाद इसका तीन बृहत् जिल्दों में संवर्धित संस्करण प्रकाशित हुआ। हैक्लुइट ने हमारे खोजियों और नौचालकों के साहसिक कार्यों के वर्णन द्वारा हमारे साहसिक युवकों, विद्वानों, राजनीतिज्ञों तथा व्यापारियों तथा पूंजीपतियों का ध्यान सागर-पार की ओर आकर्षित किया। यहांतक कि उन्नत प्रदेशों के ज़मींदार तथा किसान भी अनन्त विस्तृत भूमियों के सपने लेने लगे, जो भूमियां कि सृष्टि के प्रभात से इंगलैंड के हल से क्षत होने की प्रतीक्षा में पड़ी थीं।

एलिजाबेथ के जीवन-काल में कोई उपनिवेश सफलता के साथ बोया नहीं गया था, यद्यपि सर हम्फ्रे गिल्बर्ट ने नवोपलब्ध भूमि तथा वर्जिनिया के रिलीफ प्रदेश में प्रयत्न किया था। किन्तु राज्य उत्तरी अमरिका के शीतोष्ण प्रदेशों पर अधिकार करने को उत्सुक था। १५८४ तक में हैक्लुइट अपनी पुस्तक "पाश्चात्य कृषि की व्याख्या" में इस बात का समर्थन करके राज्ञी की कृपा प्राप्त कर चुका था। इस बीच एट्लांटिक पर प्रभुत्व की प्राप्ति ने अगली पीढ़ी में इंगलैंड के लोगों के लिये ये यात्राएं सहज कर दीं।

स्पेन के साथ लड़े जाने वाले युद्ध का स्वरूप तथा स्पेन पर पोत-आक्रमण में हमारी विजय का विचित्र और सीमित उपयोग आंग्ल-भाषी देशों के विकास के लिये आधारभूत प्रमाणित हुए और स्वयं इंगलैंड को एक विशिष्ट रूप दिया। स्पेन वालों के ऊपर एलिजाबेथ के इंगलैंड की विजय सिकन्दर, पिजारो अथवा नेपोलियन के द्वारा आयोजित एक सैनिक विजय जैसी नहीं थी। एलिजाबेथ में इन वीर नायकों जैसी, अथवा उसके पूर्वज हेनरी पंचम जैसी भी, कोई बात नहीं थी : यद्यपि एगिंकोर्ट की कथा साधारण रंगमंचों को झंकृत कर रही थी और इंगलैंड के लोगों को अपने अतीत के प्रति गर्व की भावना से भर रही थी, किन्तु अब कोई भी महाद्वीप पर विजयों को दुहराना

नहीं चाहता था, यहां तक कि अमरीका के स्पेन-शासित प्रदेश में नये क्षेत्रों की खोज के लिये हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था। स्पेन पर हमारी विजय केवल स्पेन के पोतों पर हमारे पोतों की उत्कृष्टता की स्थापना थी। यह उत्कृष्टता व्यक्तिगत उद्यम और साहस तथा राज्य की सतर्क और बुद्धिमत्तापूर्ण अर्थ-नीति के संयोग से प्राप्त की गयी थी। ड्रेक की कीर्ति की अवधारणा सीज़र से भिन्न थी। वह स्पेन की भूमि का एक इंच भाग भी छीनना नहीं चाहता था। उसके उद्देश्य केवल लूट, व्यापार, समुद्र में पोत-संचालन की स्वतंत्रता तथा ईश्वर की पूजा का निर्बाध अधिकार, और अन्ततः ऐसे खाली प्रदेशों को अधीन करना जिनमें केवल रैड इंडियन लोग ही रहते थे, ही था। यदि एलिजाबेथ के प्रजा-जन कर देने के प्रति उतने अनिच्छुक नहीं होते और युद्ध के प्रति उनका थोड़ा और आकर्षण होता तब वह शक्ति, जो उत्तरी अमरीका में बसने के रूप में व्यक्त हुई, स्पेन के भूमध्य स्थित उपनिवेशों को जीतने और उन्हें विकसित करने में अपव्यय होती। किन्तु सागर-विजय का इस प्रकार से दुरुपयोग नहीं हुआ।

यदि स्पेन के ऊपर हमारी उत्कृष्टता पोतों द्वारा ले जाई गयी विशाल सेनाओं द्वारा स्थापित की गयी होती और यदि स्पेन के उपनिवेश बलात् अंग्रेजी शासन के अधीन लाये जाते, तो जिस रूप में हम आज अमरीका, कैनेडा तथा ऑस्ट्रेलिया को पाते हैं उस रूप में वे कभी अस्तित्व में ही नहीं आये होते। और इस बात की पूरी संभावना है कि इस प्रकार का सैनिक प्रयत्न आंग्ल समाज तथा राजनीति को सैनिकवाद तथा राजतंत्र की दिशा में ले जाता।[1]

एलिजाबेथ कालीन सागर-युद्ध का विपरीत प्रभाव हुआ, इसने स्वतंत्रता की ओर झुकाव को प्रोत्साहित किया। राजकीय जल-सेना राजा को अपनी प्रजा का दमन करने की शक्ति नहीं देती जिस प्रकार से कि राजकीय स्थल सेना दे सकती है। और चार्ल्स प्रथम के गृहयुद्ध में राजकीय जल-सेना ने वास्तव में पार्लियामेंट का पक्ष ही लिया। नवीन आंग्ल सागर-शक्ति का एक दूसरा पक्ष था व्यक्तिगत साहसिकता का अवसर—अमरीका के सागर में ड्रेक, हॉकिंस तथा उनके समान लोगों के कार्य तथा लंडन में बनाई गयी व्यापारिक कंपनियों के विश्व के सुदूर स्थानों में व्यापार प्रसारित करने के प्रयत्न इस प्रसंग में उल्लेखनीय हैं। इन कार्यों ने आत्म-निर्भरता तथा स्वशासन की भावना को प्रोत्साहित किया।

आंग्ल समाज में इन विलक्षण तत्वों ने—अर्थात् नवीन नगर-कंपनियों तथा

---

[1] यह ठीक है कि १७५९ में कैनेडा का फ्रांस-शासित प्रदेश जीता तथा हथियाया गया था, किन्तु तबतक गृह तथा विदेश में आंग्ल राजनीति का स्वतंत्र रूप निश्चित हो चुका था। एलिजाबेथ तथा स्टुअर्ट के कालों में अभी हमारा राजनैतिक तथा सामाजिक विधान कुछ लचीला था और वह स्वतंत्रता की ओर अथवा उसके विमुख किसी भी दिशा में जा सकता था।

युद्धरत नाविकों ने—देश को बहुत गंभीरता से प्रभावित किया। ड्रेक तथा उसके स्पर्धी और सहयोगी राष्ट्रीय नायक हो गये। ये लोग तथा पूंजीपति व्यापारी, जिन्होंने कि इनका समर्थन किया था, बहुत पक्के प्रोटेस्टेंट थे, और वास्तव में उतने ही पक्के जितने उनके शत्रु स्पेन-निवासी थे; और पकड़े जाने का एक साधारण परिणाम उत्पीड़न पूर्वक मृत्यु था। उनके मित्र फ्रांस के रोचेले प्रदेश के ह्यूगनोट लोग तथा हालैंड के सागर-भिक्षुक (सी-बैगर्ज़) थे, जोकि आल्वा तथा गाइस की करुण-कथाएं सुनाते थे। असंस्कृतों की यह सागर-मैत्री, जिसने फिलिप तथा विधर्मियों को जीवित जलाने की विभीषिका से संसार की रक्षा की, प्रोटेस्टेंटवाद के आक्रामक धर्म द्वारा प्रेरित थी जिसने कि आंग्ल ज़मींदारों पर तीव्र प्रतिक्रिया की। जिन नाविकों ने स्पेन को पराजित किया था वे असंस्कृत ग्राम्य लोग थे, जिनका चर्च तथा शासक लोगों के प्रति कोई आदर भाव नहीं था, किन्तु जो अपने परीक्षित नेताओं के प्रति पूर्ण वफादार थे, जिनमें सबसे बड़ी नेता राज्ञी थीं। वे अपने प्राण हथेली पर रखते थे, और उनमें से बहुत कम ही युद्ध, पोत-ध्वंस तथा सागर-दुर्घटना से, और उन भयानक संक्रामक रोगों से जो पोतों पर चिकित्सा के अभाव, गंदे भोजन तथा स्वास्थ्य-नियमों से अनभिज्ञता के कारण फैल जाते थे, बच पाते थे।

ट्यूडरों के काल में इंगलैंड ने अपना राष्ट्रीय शस्त्र बदल दिया। उसने अपना लंबा धनुष छोड़ कर तोपखाने (ब्रॉड साईड) को अपना लिया था। लंबे धनुष ने, जिसके कारण इंगलैंड यूरोप के अन्य देशों से अधिक शक्तिशाली था, इसे फ्रांस में शत-वर्षीय युद्ध के लिये आकर्षित किया था। तोपखाने ने उसे और उत्कृष्ट रास्ता दिखाया, यह वह रास्ता था जो सागर के बीच से सुदूर देशों को ले गया। तोपखाने से सागर-युद्ध का स्वरूप बिल्कुल परिवर्तित हो गया था। १५७१ तक में इंगलैंड ने लेपैंटो में तुर्कों को उसी प्रकार की सागर-युद्ध प्रणाली से हराया था जैसी प्रणाली से यूनानियों ने ईरानियों को सालामिस में हराया था। इन प्राचीन तथा प्रतिष्ठित परंपराओं ने स्पेन की नौ-शक्ति के विकास को रोका, और यह उसके बाद भी हुआ जब कि फिलिप ने इंगलैंड को एट्लांटिक तथा चैनल में जीतने के लिये जल-सेना का निर्माण कर लिया था। वास्तव में उसका जहाजी बेड़ा पोतारूढ़ स्थल-सेना ही थी, सैनिकों ने संख्या में अधिक होने से नाविकों पर प्रमुखता प्राप्त करली और उन्हें तुच्छ कारीगर कह कर तिरस्कारा और उनका कार्य केवल शत्रुओं से लड़ने के लिये स्थल सैनिकों को ढोना मात्र निर्धारित किया।

किन्तु इंगलैंड के बेड़े में—जिसका नेतृत्व होवर्ड, फ्रोबिशर, हॉकिंस तथा ड्रेक आदि ने किया—एड्मिरल तथा उसके सहायक सेनापति नाविक थे और पोत पर उनका पूर्ण शासन था। स्थल सैनिक थोड़े से ही होते थे और वे सागर में अपनी स्थिति से अवगत थे। १५७७-१५८० में ड्रेक ने भूगोल के चारों ओर अपनी यात्राओं के क्रम में यह नियम बना दिया था कि नागरिक स्वयंसेवकों को भी नाविकों के साथ

रस्सों को खींचना चाहिये। इंगलैंड के लोग सागर पर पोत-चालकों की बराबरी को और अनुशासन को स्वीकार करते थे, जबकि स्पेन के लोग अपने सैनिक और अभिजात वंश के होने के अभिमान को उस समय भी नहीं छोड़ सकते थे जबकि पोत की रक्षा खतरे में होती।

आर्मांडा के आने से पूर्व के बीस वर्षों में इंगलैंड के नाविक सागर-यात्रा तथा तोप की युद्ध-प्रणाली को अधिक उत्कृष्ट मानते थे। उन्होंने अनेक स्थितियों में अपना कार्य सीखा था—राजकीय पोतों में सेवा करते हुए, व्यापारियों के रूप में, और अन्वेषकों के रूप में। ये कार्य-क्षेत्र आसानी से मिलाये जा सकते थे अथवा एक-दूसरे से बदले जा सकते थे। आक्रामक व्यापारिकवाद ने, जोकि अपनी रक्षा में तथा संसार के सब सागरों में बलात् अपना व्यापार फैलाने में अभ्यस्त था, आर्मांडा के विरुद्ध युद्ध में प्रमुख भाग लिया। किन्तु राज्ञी के निजी नियमित सैनिक-पोतों में भाग लिये बिना विजय संभव नहीं थी।

हेनरी अष्टम् ने राजकीय जल-सेना की स्थापना की थी। एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के युगों में इसका ह्रास हो गया। एलिजाबेथ के राज्य में इसका पुनरुज्जीवन हुआ। तब भी उसके राज्य के आरंभिक बीस वर्षों में राजकीय गोदी-बाड़ों में सुधार की प्रक्रिया बहुत मन्द थी। एलिजाबेथ को उत्तराधिकार में एक दिवालिया राज्य-शासन मिला और उसे साहस नहीं हुआ कि वह अपनी क्षुब्ध और हठी प्रजाओं पर और कर लगा सकती। उसकी प्रसिद्ध मितव्ययिता, जो यद्यपि कभी कभी अनुपयुक्त रूप से भी व्यवहृत होती थी, सामान्यतः उसकी सरकार के जीवित रहने मात्र के लिये भी आवश्यक थी। इसके अतिरिक्त, वह नौ-सना के लिये जो भी कुछ पैसा लोगों से निचोड़ पाती थी उसमें से अधिकांश बुरी तरह से अपव्यय होता था। सेसिल तथा सतर्क प्रिवी काऊंसिल (सर्वोच्च न्याय-परिषद्) में गोदी-बाड़ों में व्याप्त पारंपरिक भ्रष्टाचार को दूर करने के लिये संकल्प का अभाव नहीं था बल्कि उसे पकड़ने और दूर करने के लिये उपयुक्त विधि के ज्ञान का अभाव था। ऐसी अवस्था में एक सुभग अवसर पर (१५७८) एलिजाबेथ ने जोन हाकिंस् को अपने पोतों के निर्माण तथा संभाल के लिये नियुक्त किया। खुले युद्ध के पूर्व के दशाब्द में, जिसेकि राज्ञी ने इतनी देर तक तथा इतनी बुद्धिमत्ता के साथ स्थगित रखा था, हॉकिंस ने उतना ही महत्वपूर्ण कार्य किया जितना कि ड्रेक ने प्रशांतमहासागर तथा एट्लांटिक में किया था।

आखिरकार राज्ञी की संपत्ति ईमानदारी के साथ खर्च होने लगी और उसकी पूरी कीमत वापिस मिलने लगी। किन्तु हॉकिंस ने भ्रष्टाचार दूर करने मात्र से अधिक कार्य किया। इस महान् जन-सेवक ने अपने अफ्रीका तथा स्पेन-अधिकृत अमरीका के बीच व्यापार और शत्रु-पोतों के साथ युद्धों के दिनों में जो अनुभव प्राप्त किये वे ड्रेक के अतिरिक्त अन्य किसी से भी अधिक थे। इन अनुभवों के आधार पर वह सम्यग्रूप से

जानता था कि नवीन प्रकार के युद्ध के लिये किस प्रकार के पोत उपयोगी हो सकते हैं। उसके आलोचक, जोकि पुराने सम्प्रदाय के थे, आकार में ऊँचे पातों के समर्थक थे, जो आक्रान्ता के लिये तो अवश्य ही अभेद्य थे किन्तु सैनिक पैंतरेवाजी के लिये उपयुक्त नहीं थे। इनमें वड़ी संख्या में सैनिक रखे जा सकते थे जो उपयोगी होने के वजाय भंडार पर वोझ होते थे। हॉकिंस ऐसे किलों को अव दोवारा नहीं वनने दे सकता था। विरोध के वावजूद उसने राज्ञी के पोत ऐसे वनाए जो ऊंचाई में कम, अपने तलों के अनुपात में लम्वे, प्रयोग में सहज तथा शस्त्रों से सुसज्जित थे। "रिवेंज" एक ऐसा ही पोत था जिसने पीछे स्पेन की जल-सेना के साथ एक दिन और एक रात के युद्ध में अपने निर्माताओं को सही सिद्ध कर दिया।

इंगलैंड के व्यापारी अधिक दूर के वाज़ारों की खोज करते हुए नाविक-जीवन की नयी सम्भावनाओं से तथा उस युग के साहसपूर्ण परिवेश से प्रोत्साहित हुए थे। किन्तु वे नये प्रदेश खोजने के लिये इस लिये भी वाध्य हुए थे क्योंकि घर के पास के वाजार उनके लिये वन्द हो गये थे। केलेइस, जहांकि पिछली अनेक पीढ़ियों से ऊन के सूत ने कार्य किया था, एलिजावेथ के राज्यारोहण के कुछ मास पूर्व ही हाथ से निकला था। यह इंगलैंड के उन निर्यातकर्त्ताओं पर ऐसी भीषण चोट थी जिससे कि वे अभी भी पूरी तरह से उवर नहीं पाए थे, क्योंकि अव परिस्थितियों का सामान्य झुकाव उनके विरुद्ध था और उनके स्पर्धियों, अर्थात् वस्त्र-उत्पादकों और वस्त्र-व्यापारियों के पक्ष में था।

कैलेइस का वाजार वंद हो जाने के वाद भी नीदरलैंड में व्रजिस तथा एंटवर्प के पुराने व्यापार-केन्द्र वच रहे थे जोकि इंगलैंड के वस्त्र तथा ऊन के ग्राहक थे। किन्तु अगले कुछ वर्षों में वे भी इनके लिये वंद हो गये। युवती एलिजावेथ तथा उसकी उच्चतम न्याय-सभा की नीदरलैंड पर स्पेन के फिलिप द्वारा नियुक्त शासक ग्रेनवेले के साथ कलह धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक उद्देश्यों में विरोध के कारण उत्पन्न हुई। चैनल में अंगरेज़ों द्वारा डाके डालने की घटनाएं, अंग्रेज़ों की व्यापार के केन्द्र-नगरों में प्रोटेस्टेंटों के साथ मित्रता, जिसेकि एंटवर्प के दंडाधिकारी तथा लोग प्रोत्साहित करते थे, तथा स्पेन की विधर्मी-विदेशियों के प्रति घृणा-भावना ये सव इस कलह में कारण वने। किन्तु ग्रैनवेले तथा एलिजावेथ की विरोधी व्यापारिक नीतियों के परिणाम-स्वरूप आर्थिक कलह भी कम महत्वपूर्ण कारण नहीं थी। दोनों पक्षों का विश्वास था कि दूसरा पक्ष उसकी दया पर निर्भर करता है। ग्रेनवेले निश्चित था कि यदि अंगरेज़ों को नीदरलैंड्स में कपड़ा वेचने से रोक दिया जाय तव ये अन्यत्र कहीं भी उसे वेच नहीं पाएंगे और परिणामतः वे अपनी कच्ची ऊन नीदरलैंड्स के करघों पर कताई-वुनाई के लिये लाने को वाध्य होंगे। अंगरेज लोग निश्चित थे कि नीदरलैंड आंग्ल-व्यापार के विना समृद्ध नहीं हो सकता। यह कलह एलिजावेथ के राज्य के प्रथम

दशाब्द में, अर्थात् इंगलैंड और यूरोप के बीच वास्तव युद्ध आरम्भ होने के बीस वर्ष पूर्व, उभर कर आई। इंगलैंड के वस्त्र-व्यापारी नीदरलैंड्स से निकाले जाने पर १५६७ में हम्बर्ग बन्दरगाह में प्रविष्ट हुए, जोकि उनके लिये यूरोप में प्रवेश का द्वार थी। किन्तु वहां से भी वे दस वर्ष बाद हांस नगरों की व्यापारिक ईर्ष्या के कारण निकाल दिये गये।

बाज़ारों के इन परिवर्तनों के कारण इंगलैंड में वस्त्र-उद्योग ने बहुत निराशा और बेकारी को जन्म दिया, किन्तु धीरे-धीरे दूर देशों में नये बाज़ार खोज निकाले गये। लंडन में नवीन व्यापारिक कंपनियां बनाई गयीं जिन्होंने रूस, प्रशा, बाल्टिका, तुर्की तथा लेवेंट में सफलता के साथ व्यापार का प्रसार किया। ईरान पहले पहल रूसी नदियों के रास्ते पहुँचा गया था और अन्त में भारत केप आफ गुड्होप के रास्ते। १६०० ईस्वी में बूढ़ी राज्ञी ने ईस्ट इंडिया कंपनी को एक चार्टर दिया, जिसकी नियति एक ऐसा आर्थिक और राजनैतिक भविष्य उसे देने वाली थी जो ऊँची से ऊँची कल्पना के लिये भी अगम्य था। इन नवीन विश्वव्यापी साहसिक कार्यों ने इंगलैंड के व्यापार को उन अनिवार्य परिणामों से बचा लिया जो अन्यथा उसे किनारों के पास के देशों में बाज़ारों के हाथ से निकलने के कारण भुगतने पड़ते। यह परिवर्तन लंडन-नगर के पूंजीवादियों, तथा जल-सैनिकों की साहसिकता के कारण और इंगलैंड के साहसी खोजियों और अन्वेषकों के कारण सम्भव हुआ।

हेक्लुइट ने १५८९ में ही अपनी पुस्तक वायेजिस् (यात्राएं) का प्रथम संस्करण वैल्सिंघम को समर्पित करते हुए लिखा था कि :

"महामहिम साम्राज्ञी से पूर्व इंगलैंड के अन्य किस राजा ने इस देश का झंडा कैस्पियन सागर में लहराते हुए देखा था? इनमें से किस ने ईरान के सम्राट् के साथ कभी कोई व्यवहार किया था जिस प्रकार से कि साम्राज्ञी ने किया है और अपने व्यापारियों के लिये महत् और सुन्दर विशेषाधिकार प्राप्त किये हैं? इस सरकार से पहले अन्य किस सरकार ने अपने अधिकारियों को कांस्टेंटीनोपल में राजकीय भव्यता के साथ देखा था? किसने पहले कभी अंगरेज़ राजदूतों तथा प्रतिनिधियों को सीरिया के ट्रिपोली नगर में, एलेप्पो में, बेबीलोन में, बुखारा में, देखा था, और सबसे बढ़कर, इससे पहले किसने कभी किसी अंगरेज के गोआ में पहुँचे होने की बात सुनी होगी? अब से पहले कब कभी इंगलैंड के किसी पोत ने विशाल नदी प्लेट में लंगर डाला था? अब से पहले अगम्य समझे जाने वाले मेगेसन के दुर्गम जलमार्ग को हम अब पार करते हैं और फिर-फिर पार करते हैं और चिली, पेरू और नोवाहिस्पानिया के सम्पूर्ण पृष्ठभाग के सागर-तटों की यात्राएं करते हैं—जहाँकि पहले कभी कोई ईसाई नहीं पहुँचा था। इसी प्रकार से हम दक्षिण सागर की शक्तिशाली लहरों वाली चौड़ाई को पार करते हैं और शत्रु-बाधाओं के बावजूद ल्यूजोनेस की भूमि पर उतरते हैं और मालुकस तथा जावाद्वीप

के राजाओं से संधि, मित्रता और व्यापार-संबंध स्थापित करते हैं, बोनास्पेरांजा के प्रसिद्ध अन्तरीप को पार करते हैं, संट हैलेना द्वीप पर पहुँचते हैं, और अन्त में चीन के माल से लदे हुए वापिस पहुँचते हैं।" एलिजाबेथ के राज्य के अन्तिम चरण में न केवल इंगलैंड का व्यापार तथा वित्त ही आधुनिक आधारों पर पुनरुज्जीवित और विकसित हो रहा था बल्कि इसके पुराने स्पर्धी भी तेजी से ह्रास की ओर जा रहे थे।

इंगलैंड के व्यापार का स्पेनीय नीदरलैंड्स से हटना मात्र उसके लिये घातक नहीं बना होता, किन्तु वहां जघन्य धार्मिक हत्याएं और उत्पीड़न तथा आल्वा शासन के युद्ध आरंभ हो गये। इन विभिन्न घटनाओं ने यूरोप के व्यापार और अर्थ-व्यवस्था में एंटवर्प की प्रमुखता समाप्त कर दी। इनके स्थान पर एम्स्टर्डम तथा विद्रोही डच प्रजातंत्र के अन्य नगर प्रमुखता में आए। शीघ्र ही हालैंड के नाविक संसार के सब सागरों में इंगलैंड के प्रमुख स्पर्धी होने वाले थे, किन्तु एलिजाबेथ काल के इंगलैंड को हालैंड के नाविक युद्ध में मित्र के रूप में परिचित थे न कि प्रतिस्पर्धी व्यापारी के रूप में।

इस बीच इटली के व्यापारिक नगरों का पूर्व की ओर जाने वाले मार्गों की बढ़ती हुई कठिनाइयों के कारण और अन्तरीप के रास्ते की प्रतिस्पर्धाओं के कारण, जोकि उनसे डचों, अंग्रेजों और पुर्तगालियों ने छीन लिये थे, निरन्तर ह्रास हो रहा था। इटली के व्यापारियों ने विश्व-प्रतियोगिता का विशाल क्षेत्र छोड़ दिया था। वेनिस के व्यापारी अब कॉट्सवोल्ड ऊन की खोज में इंगलैंड नहीं आते थे। १५८७ में वेनिस द्वारा साउथेम्टन को भेजा गया अन्तिम बड़ा व्यापारिक पोत नीडल्स के पास ध्वस्त हो गया था और उसके साथ ही डूब गयी थी मध्ययुगीन व्यापार की व्यवस्था तथा वह सब जो इसके परिणामस्वरूप इंगलैंड और इटली में विद्यमान था। साउथेम्टन का, जोकि इटली का एक वस्तु-भंडार था, ह्रास हो गया था और भूमध्य तथा सुदूरपूर्व प्रदेशों का माल अंग्रेज़ी पोतों द्वारा थेम्स के रास्ते पहुँचने के साथ लंडन और अधिक समृद्ध हो गया था।

अगली शताब्दी में इंगलैंड के औपनिवेशिक तथा व्यापारिक विस्तार में तंबाकू का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा। तबतक अभी इंगलैंड के पास कोई उपनिवेश नहीं थे, किन्तु १५९७ में नया अमरीकन तंबाकू फ्रांस, फ्लैंडर्स तथा कार्नवाल के पोतों में कार्नवाल की दरारों में से बृहत् मात्रा में चोरी से अथवा बलात् स्मगल किया जा रहा था। राज्ञी की मृत्यु के समय चिकनी मिट्टी की लंबी नालियों में तंबाकू ले जाने का बहुत प्रचलन हो गया था।

सागर-पार साहसिक यात्रियों आदि का विस्तार व्यापारिक पूंजीवाद के साथ हुआ, जोकि पुरानी नगरपालिका-व्यवस्था तथा व्यावसायिक संघ-व्यवस्था का अत्यन्त विरोधी था।

श्री फ़े ने लिखा है "व्यवसायी संघ-व्यवस्था पूंजी-संग्रह के लिये अनुकूल नहीं थी।

अपने कौशल में तथा अपने जीवन के व्यवस्थापन में मध्ययुगीन व्यापारी तथा शिल्पी संभवतः अनुगामी शताब्दियों से उत्कृष्टतर थे। किन्तु व्यवसायी संघ का दृष्टिकोण नगरपालिका परक था और इसका ढांचा कठोर था, परिणामतः इसे एक ऐसी व्यवस्था के लिये स्थान रिक्त करना पड़ा जिसमें विस्तार तथा परिवर्तन की सामर्थ्य थी। इसे हम व्यापारिक पूंजीवाद कहते हैं जिसेकि पूरक गृह-उद्योग का सहयोग प्राप्त था। व्यापारिक पूंजीपति ने सब पुरानी दीवारों को ध्वस्त कर दिया। उसने नगरपालिका-शासित नगरों की उपेक्षा कर ग्रामों में कार्य किया, और बड़ी कंपनियों के एकाधिकार को बिना लाईसेंस व्यापार करके अपना रास्ता निकाला। उसने बहुत सी ज्यादतियां कीं, किन्तु वह आर्थिक वृद्धि का जीवनद रक्त था।"

व्यापारिक पूंजीवाद का नगरपालिका तथा व्यवसायी संघ के आर-पार यह विस्तार ऊन के व्यापार में चासर तक के युग में स्पष्ट था। एलिजाबेथ के राज्य में इसने नये प्रकार की सागर-पारीण व्यापार की कंपनियों के उदय के रूप में एक और बड़ा कदम आगे की ओर रखा। ये दो प्रकार की थीं। एक "विनियमित पूंजी कंपनी", जिसमें कि प्रत्येक सदस्य कंपनी के साधारण नियमों के अन्तर्गत अपनी निजी पूंजी से व्यापार करता था : ऐसी कंपनियां मर्चेंट एड्वेंचररस्, ईस्ट लैंड अथवा बाल्टिक, दि रशिया तथा लेवेंट, थीं। दूसरा वर्ग मिश्रित पूंजी कंपनियों का था—ईस्ट इंडिया कंपनी, दि अफ्रीकन कंपनी, तथा दो संतति के बाद, दि हड्स बे कंपनी थी। इस दूसरे वर्ग में, कम्पनी संयुक्त रूप से व्यापार करती थी और इसके लाभ और हानियां इसके साझीदारों में विभक्त कर ली जाती थीं।

इनमें से प्रत्येक कंपनी को, चाहे वह विनियमित पूंजी-कंपनी हो या मिश्रित पूंजी-कंपनी, अपने व्यापार के लिये भौगोलिक क्षेत्र राजकीय चार्टर (प्रपत्र) द्वारा नियत करना होता था और उसमें इंगलैंड से कोई उसमें अतिक्रमण नहीं कर सकता था। ऐसा उचित और आवश्यक दोनों था, क्योंकि कंपनियों को किलों और बस्तियों के बनवाने और शस्त्रास्त्र रखने पर बहुत व्यय करना पड़ता था, और ये उनके लिये अनिवार्य थे, क्योंकि राजकीय नौ-सेना उन्हें सुदूर प्रदेशों में सुरक्षा नहीं दे सकती थीं। ये एलिजाबेथ-युगीन कंपनियां अनेक दृष्टियों से विशेषाधिकारों तथा कार्यों में उन "चार्टर्ड कंपनियों" से मिलती जुलती थीं जिन्होंने विक्टोरिया युग के पिछले वर्षों में अफ्रीका के भीतरी भाग को विकसित और विक्षुब्ध किया। संभवतः वह युग राज्ञी की प्रजा के स्वतंत्र समुदायों को सैनिक शक्ति देने की दृष्टि से अनुपयुक्त था—जैसाकि जेम्सन के आक्रमणों ने प्रदर्शित किया। किन्तु एलिजाबेथ-काल में सुदूर व्यापार को बढ़ाने का और कोई ढंग नहीं था, और यदि कोई कंपनी सुदूर प्रदेशों में अपनी नीति का ठीक व्यवहार नहीं करती थी तब इसके सदस्यों की ही इससे हानि होती थी, राज्य पर इसका कोई फल नहीं होता था।

लंडन की ये महान कंपनिया, जोकि राज्य पर बहुत कम निर्भर करती थीं, जिन परिस्थियों में कार्य करती थीं उनसे स्वतंत्र साहसिकता, स्वशासन तथा आत्मनिर्भरता की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिला। जैसेकि भारत तथा उत्तरी अमरीका के इतिहास में इन कंपनियों का महत्व सर्वोच्च और निर्णायक था उसी प्रकार से अपने देश में भी आंग्ल चरित्र तथा राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों पर बहुत गहरा था, जैसाकि भविष्य में स्टुअर्ट तथा हेनरी काल के इतिहास इस बात को प्रमाणित करने वाले थे। एलिजाबेथ की मृत्यु के एक पीढ़ी बाद यात्री पीटर मंडी ने यातायात तथा खोजों को, अर्थात् विदेश व्यापार के लिये व्यापारियों की उन कंपनियों को, "जोकि अपने व्यापार की वृद्धि के लिये अपने विशाल साधनों तथा विवेक का उपयोग करती हैं तथा अपने माल और पोतों को विश्व के अधिकांश ज्ञात भागों में भेजती हैं" ऐसी सात चीज़ों में से एक बताया था जिनमें कि इंगलैंड श्रेष्ठतम था।[1]

सुदूर भविष्य की सन्तानों के लिये एलिजाबेथकालीन इंगलैंड के संबंध में स्मरणीय तथ्य यह होगा कि इन्होंने शैक्सपीयर के नाटकों की सृष्टि की। केवल इतना ही नहीं कि मानव-जाति का सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति उस काल में उत्पन्न हुआ, उसकी कृतियां उत्तर एलिजाबेथीय और आरंभिक जेकोबीय कालों में लिखी जा सकती थीं जिस काल में कि सौभाग्यवश वह रहा। वह अपनी कृतियों का सृजन कभी नहीं कर पाया होता यदि वे स्त्री-पुरुष आचार-विचार में उनसे भिन्न होते जिनके बीच कि वह रहा था, अथवा यदि लंडन का रंगमंच आर्माडा के बाद विकास के एक ऐसे स्तर तक नहीं पहुंच गया होता जिसमें कि उसके हाथ के आखिरी स्पर्श भर की अपेक्षा थी।

यह कोई आकस्मिक बात नहीं है कि शैक्सपीयर के नाटक गद्य की अपेक्षा पद्यात्मक हैं, क्योंकि जिस दर्शक-समाज के लिये वह लिख रहा था, अर्थात् इंगलैंड के ग्राम और नगर दोनों के लोग, वे समान रूप से कथा, मनोरंजन, इतिहास तथा समकालीन घटनाओं के समाचार सब को पद्य के माध्यम से सुनने के अभ्यस्त थे। गांवों तथा नगरों में सामान्य लोगों की त्रिषा शांत करने के लिये समाचार-पत्र या उपन्यास नहीं होते थे बल्कि मंडलियों द्वारा गाये जाने वाली गाथाएं और गीत ही इस आवश्यकता थी पूर्ति करते थे। गाथाओं में निरन्तर वृद्धि होती रहती थी और ये हज़ारों की संख्या में बेची जाती थीं। इनके कथानक या तो किसी बाइबल की कहानी से लिये गये होते, अथवा प्राचीन पुराण या इतिहास से, अथवा किसी मध्ययुगीन आख्यान अथवा समकालीन वृत्त से—जैसे आर्माडा (पोत आक्रमण), दस्यु षड्यंत्र, नवीनतम हत्या अथवा भागे हुए प्रेमी। और लिरिक तथा प्रेम-गीत, जोकि हमारे आज के

---

[1] मंडीज़ ट्रैवल्स (हैक्लुइट सोस. १९१४) ४, पृ० ४७-४८, एन एकाउंट ऑफ़ दि ऑरिजस।

साहित्यिक संकलनों में उत्कृष्ट काव्य-रचनाओं के रूप में संकलित हैं, उस युग में साधारण लोकगीतों के रूप में पाये जाते थे।

इन परिस्थितियों में, शैक्सपीयर ने नाटकों का अभिनय होने के पहले के बीस वर्षों में एक नवीन नाटक-आन्दोलन एकाएक उदित हुआ, जिसमें नाटककारों के एक नये संप्रदाय का उद्‌भव हुआ जिनमें मार्लोवे प्रमुख था, और नाटक कंपनियां बनीं जिनके अभिनेता अपने व्यवसाय को उचित महत्व की दृष्टि से देखते थे। मध्ययुगीन विदूषक तथा वार्न स्टोर्मर (एक ग्राम्य-पात्र जो ऊंचे ऊंचे गाता या बोलता था) के साथ सूक्ष्म कला-प्रवीण पात्र भी जोड़ दिये गये थे जिनमें वर्बेज शीघ्र ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो गया इन लोगों ने व्याख्यात्मक अभिनय की कला को इसके उत्कर्ष पर पहुँचा दिया। इनके साथ शागिर्द लड़के भी होते थे जोकि बचपन से स्त्रियों का उचित शालीनता और शिष्टता के साथ अभिनय करने के लिये शिक्षित किये जाते थे।

एलिजाबेथ-काल के बीच के वर्षों में अभिनेता तथा नाटककार के लिये वैभव तथा सम्मान पूर्ण रास्ता खुल गया था। चलती-फिरती नाटक-कंपनियों को साहित्यिक सामंतों और जमींदारों का संरक्षण मिलता था, और ये लोग सम्मानित अतिथियों के रूप में इन के किलों या प्रासादों में अभिनय के लिये जाते थे और हालों तथा गैलरियों में नाटक करते थे। किन्तु "धन तथा सम्मान दोनों दृष्टियों से" अधिक लाभकर थीं वे रंगशालाएं जोकि राजधानी के जन-साधारण के लिये थेम्स नदी के दक्षिणी तट पर घास के मैदानों में बनाई गयी थीं, जिनमें कि नागरिक अपनी पत्नियों के साथ तथा शिक्षार्थी (शागिर्द) अपनी प्रेमिकाओं के साथ पुल लांघ कर और उच्च पदाधिकारी तथा धनिक लोग नौकाओं में नाटक देखने आते थे।

अभिनय दिन के समय होता था और न तो यवनिका आदि होते थे और न नीचे से दिया जाने वाला प्रकाश। रंगमंच का अग्र भाग बिना छत का होता था। दर्शकों में उच्च वर्ग के लोग स्टूलों पर अभिनेता के पास बैठते थे। साधारण दर्शक नीचे बैठे होते और उन पर कोई छत नहीं होती थी। लकड़ी के वृत्त के चारों ओर छत वाले गलियारे भी साधारण दर्शकों से भरे रहते थे। यहां समाज के विभिन्न वर्ग, जोकि शिक्षा और रुचि में परस्पर भिन्न होते थे, एकत्र बैठते थे। यह शैक्सपीयर का कार्य था कि वह सब को प्रसन्न करता।

जब पहले पहल उसका इस कठिन दर्शक-वृन्द से साम्मुख्य हुआ उस समय उसकी रुचि षड्‌यंत्र और चमत्कार, कोलाहल और युद्ध, असंस्कृत विदूषकता तथा दरबारी और भद्र हास्य-व्यंग्य तथा उत्कृष्ट प्रकार के संगीत में थी, क्योंकि उस समय का इंगलैंड संगीत तथा गीत में यूरोप में सर्वाग्रणी था, और उन लोगों की आधुनिक सामान्य दर्शकों से भिन्न, पद्य में—प्रमोद और वासना वाहन के रूप में—रुचि भी थी। ये सब चीजें मार्लो

तथा उसके साथियों ने प्रस्तुत की थीं:, और इस प्रकार उन्होंने कुछ ही वर्षों में एक नये नाटक को जन्म दिया जो शैक्सपीयर के लिये आधार बना। उसने परंपरा को स्वीकार किया और आगे बीस वर्षों में उसे इतना विशाल बना दिया कि जो लोक-मनोरंजन की विस्तृततम सीमा का भी अतिक्रमण कर बहुत आगे बढ़ गयी थी।

उसका काव्य मार्लो के "माइटी लाईन" से कहीं उन्नततर स्तर का था और उनसे जो गद्य-वार्तालाप रचा वह उतना ही विदग्ध, सशक्त और कभी-कभी उतना ही मधुर और लयपूर्ण है जितना कि उसका काव्य। उसने गद्य और पद्य दोनों को न केवल सौन्दर्य, भय, विदग्धता और उच्च दर्शन का ही वाहक बनाया बल्कि एक अन्य चीज़ का भी वाहक बनाया जोकि नाटक के लिये नवीन थी, और वह थी प्रतिरूपों (टाईप्स) और व्यक्तिकृत वासनाओं और आवेशों के स्थान पर वैयक्तिक चरित्रों का चित्रण। जैसाकि हैमलेट में हम देखते हैं, कथावस्तु तथा घटनाएं तक भी चरित्र की तुलना में गौण हो जाती हैं और तब भी नाटक अच्छा लगता है। उसके स्त्री और पुरुष पात्र इतने वास्तव हैं कि हम उनके सम्बन्ध में दृश्य के बाद भी निरन्तर बात करते रहते हैं, मानो वे कोई स्वतंत्र जीवित व्यक्ति हों। वास्तव में, पिछले दो सौ वर्षों से उसके नाटक अध्ययन-कक्ष में अधिक रहे हैं बजाय रंगमंच के। किन्तु तब भी वे नाटक ही हैं, चाहे उनका अभिनय मन के चित्रपट पर ही होता रहा हो, और केवल रंगमंच ही उन्हें पूर्ण सप्राणता के साथ व्यक्त कर सकता है, चाहे बहुधा यह उनके लिये अपकारक ही होता है। शैक्सपीयर के नाटकों तथा उसकी अन्य सब कृतियों का श्रेय एलिजा-बेथीय रंगमंच को ही है। इसके लिये प्रशंसा का पात्र रंगमंच है और हैं एलिजाबेथ के युग के लोग।

आज का सामाजिक इतिहासकार पिछले युगों के लोगों का यथोचित वर्णन नहीं कर सकता, अधिकतम वह जो कर सकता है वह यह कि वह उन परिस्थितियों की ओर संकेत कर दे जिनमें कि वे लोग रहे। किन्तु यदि वह यह दिखाने में असमर्थ है कि उसके पूर्वज किस प्रकार का जीवन जीते थे, तो शैक्सपीयर इसमें समर्थ है। उसकी कृतियों में हम उन दिनों के स्त्री-पुरुषों को पढ़ सकते हैं। उदाहरण के लिये, उसके नाटकों में वास्तव स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को तथा एलिजाबेथ-काल की स्त्री के चरित्र को अधिक सम्यक् रूप में देखा जा सकता है जितना कि एक सामाजिक इतिहास-लेखक दिखा सकता है।

जैसे-जैसे अंगरेज़ी जीवन का हमारा अध्ययन मध्ययुगों से आधुनिकता की ओर आगे बढ़ता है उसी अनुपात में हमें प्रभूत मात्रा में वह सहायक सामग्री प्राप्त होती है जिसका पूर्वाभास हमें चॉसर में मिलता है, अर्थात् काव्य और कहानी जोकि लेखक के युग के लोगों के जीवन को और उनके आचार-विचार तथा भाषा को चित्रित करते हैं। समकालीनों के ये चित्रण समय बीतने के साथ अमूल्य महत्व के हो गये हैं। साथ ही

साथ सत्रहवीं शताब्दी में डायरियों तथा स्मृति-लेखों का भी प्रचलन बढ़ा जैसेकि एवेलीन, पेपी, और पीछे बोस्वेल जोन्सन के स्मृति-लेख। ये तथा अंगरेज़ी नाटक, फील्डिंग, जेन ऑस्टिन, ट्रोपोल्लो तथा अन्य असंख्यों के उपन्यास सामाजिक इतिहास को ठीक उस क्षेत्र में सहायता देते हैं जिसमें कि कानून और अर्थ विषयक लेख अनुपयोगी रहते हैं।

जो लोग अपने पूर्वजों के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं कि वे कैसे थे, वे सब साहित्य में आनन्द तथा ज्ञान का वह अजस्र स्रोत पाएंगे जिसेकि समय ने एक ऐतिहासिक महत्व भी दे दिया है, जिसका कि उनके लेखकों को सपने में भी ध्यान नहीं था। ये सब अतीत के सामाजिक अध्ययन की पुस्तकें और काव्यकृतियां है और इनमें सबसे महत्व की हैं शैक्सपीयर की कृतियां।

अध्याय ८

चार्ल्स तथा क्रॉमवेल का इंगलैंड

औपनिवेशिक विस्तार का आरम्भ। ईस्ट इण्डिया कम्पनी। फैन ड्रेनिंग। महान् विद्रोह के परिणाम तथा सामाजिक परिस्थितियाँ, गार्हस्थ्य जीवन।

आर्थिक तथा सामाजिक इतिहास के क्षेत्र में महान् विद्रोह के आरम्भ होने तक इंगलैंड में स्टुअर्टों के राज्य-काल को एलिजावेथीय युग का ही एक घटना-रहित प्रस्तार कहा जा सकता है। यह युग भीतर से भय तथा वाहर से आक्रमण के स्थान पर एक शान्ति तथा सुरक्षा का युग रहा। कृषि, उद्योग तथा व्यापार अधिकांशत: उसी प्रणाली पर जारी रहे जिसका विवरण पिछले दो अध्यायों में दिया जा चुका है। एक ग्राम-समाज, जिसमें भू-स्वामित्व, अवसर तथा अल्प-सम्पत्ति का व्यापक वितरण था, छोटी तथा वड़ी सम्पत्तियों वाले जमींदारों को तथा पूर्ण अधिकार और पट्टेदारी के अधिकार वाले योमैन किसानों को पर्याप्त अवसर तथा महत्व देता था। किन्तु वहुतों को कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ रहा था, जोकि अंशत: मूल्य-वृद्धि के कारण था। उद्योग तथा व्यापार ट्यूडर-काल के अनुरूप ही प्रगति कर रहे थे। एलिजावेथ-काल में दूर देशों में व्यापार के लिये स्थापित कंपनियां वैभव तथा प्रभाव में निरन्तर वृद्धि कर रही थीं, और उनके साथ ही लंडन भी वढ़ा—अन्य सव नगरों को जनसंख्या, वैभव तथा शक्ति के अन्य सव साधनों में उससे कहीं अधिक पीछे छोड़ता हुआ जितना कि पहले कभी भी वह उन्हें पिछाड़ पाया था। देश में अन्यत्र शागिर्दगी व्यवस्था, निर्धन कानून, मजदूरी तथा मूल्यों के निर्धारण के नियम, सर्वोच्च न्याय परिषद् के अधीन शान्ति के न्यायाधिकारियों के आर्थिक तथा प्रशासनिक कार्य ये सव दीर्घ संसद् (लांग पार्लियामेंट) के अधिवेशन के समय लगभग उसी प्रकार के थे जैसेकि वे राज्ञी की मृत्यु के समय थे। जिस समय इंगलैंड के प्रकटत: स्थिर और निर्द्वन्द्व समाज की सतह के नीचे संसदीय तथा शुद्धाचारवादी क्रान्ति जन्म ले रही थी उस समय कोई महत्वपूर्ण औद्योगिक, कृषीय अथवा सामाजिक परिवर्तन नहीं हुए।

नयी शताव्दी के पहले ४० वर्षो में इंगलैंड के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन की परिवर्तन-गति की मन्दता में एलिजावेथ के उत्तराधिकारी के अधीन इंगलैंड तथा

स्कॉटलैंड के राजत्व के विलय से भी कोई तेज़ी नहीं आई। दोनों के लोग, संसदें, कानून, चर्च तथा व्यापारिक व्यवस्थाएं एक और शताब्दी के लिये पहले के समान अलग और भिन्न रहीं। न राजा-पद के विलय से ही लोग एक से दूसरे देश में जाकर बसे। स्कॉटलैंड इंगलैंड के लोगों को निर्धनता के कारण आकर्षित नहीं कर पाता था, और उसमें ईर्ष्या-भाव भी इतना था कि वहां आगन्तुकों को पसन्द भी नहीं किया जाता था। जब १६०३ में स्कॉटलैंड के षष्ठ तथा इंगलैंड के प्रथम जेम्स ने होलीरुड से व्हाईट हाल में प्रस्थान किया तब उसके साथ या पीछे आने वाले दरबारी या साहसिक निर्धन लोग जो आए वे स्कॉट लोगों की विशाल धारा की पहली बूंदें थे जोकि तब से सम्पत्ति की खोज में सीमा पार कर निरन्तर आते रहे हैं। किन्तु अभी वह समय दूर था जब यह धारा इतनी मोटी हो गयी कि इसने कुछ राष्ट्रीय महत्व ग्रहण किया। अभी वह समय आने में कई पीढ़ियों का व्यवधान बाकी था जबकि स्कॉटलैंड के किसान, व्यापारी, माली, प्रशासक, डाक्टर तथा दार्शनिक इतनी पर्याप्त मात्रा में अपने कौशल, उद्योग तथा ज्ञान के साथ आए और इंगलैंड के जीवन को प्रभावित किया और उसकी सम्पत्ति को बढ़ाने में सहायक हुए। सम्पूर्ण सत्रहवीं शताब्दी में इंगलैंड के लोग धर्म, राजनीति, कृषि, सिंचाई, व्यापार, नौ-परिवहन, दर्शन, विज्ञान तथा कला के क्षेत्रों में नये विचारों के लिये स्कॉटलैंड के बजाय हॉलैंड की ओर देखते थे।

न ही स्टुअर्ट राजाओं के काल में इंगलैंड के विचार और व्यवहार ने स्कॉटलैंड के लोगों को ही प्रभावित किया, जिनका गर्व अपने बलवत्तर पड़ौसी के यहाँ से आने वाले विचारों के प्रति एकदम सतर्क हो उठता था। स्कॉटीय धर्म ने अपने आपको स्वदेशी सूत के मज़बूत बुने कपड़े में लपेट रखा था, और यह प्रार्थना-पुस्तक वाले आंग्लवाद तथा प्रगतिशील सम्प्रदायों वाले शुद्धाचारवाद के भी बहुत विरुद्ध था। इसी प्रकार से, स्कॉटीय समाज का विचित्र रूप भी, जिसमें कि एक ओर वास्सल की अपने स्वामी के प्रति सामन्तवादी वफादारी थी और दूसरी ओर विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक विनिमय में साम्य था, इंगलैंड के लोगों के लिये एक पहेली था, जबतक कि सर वाल्टर स्कॉट के उपन्यासों ने पीछे इसका भेद नहीं दिया।

विदेशी व्यापार में दोनों देशों के व्यापारी अभी तक प्रतिस्पर्धा में ही थे। धन-गर्वित अंग्रेज़ सब जगह स्कॉटों से ऊपर ही रहता था और उन्हें विदेशी या औपनिवेशिक सभी बज़ारों से खदेड़ रहा था। अपने देश में भी दोनों भागों के लोग शान्त सीमाओं के आरपार से एक-दूसरे पर भवें चढ़ाते थे। तीन सौ वर्षों से चल रहे सीमा-युद्धों का अन्त भले ही राजा-पदों के विलय से हो गया था, किन्तु पारस्परिक घात और प्रतिशोध की परम्परा ने जो शत्रु-भाव रोप दिया था उसका अन्त होने में काफी समय लगा। स्टुअर्ट काल की नागरिक तथा धार्मिक कलहों में इंगलैंड

तथा स्कॉटलैंड के राजनैतिक दल, चर्च और सैनिक प्राय: मिलकर संसद् तथा राजा की ओर से कार्य करते थे, किन्तु जितना ही वे एक-दूसरे के निकट आते थे उतने ही कम वे परस्पर सहमत होते थे, क्योंकि दो जातियों के ये लोग अभी तक विचार तथा अनुभूति की दो पृथक् भूमियों पर रह रहे थे।

सत्रहवीं शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों में स्वयं इंगलैंड में जबकि कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुए, और जबकि स्कॉटलैंड के साथ राजा-पद की एकता ने उस समय के सामाजिक जीवन को ज़रा भी प्रभावित नहीं किया, इन शान्त वर्षों में एक सबसे बड़ा परिवर्तन घटित हुआ, और वह था आंग्ल जाति का सागरों के पार सदा के लिये प्रसार। वर्जिनिया, न्यू इंगलैंड, तथा बार्बाडोज़ के समान पश्चिमी इंडियन उपनिवेशों की सफल स्थापना तथा हिन्दोस्तान के तट पर व्यापार के पड़ाव का निर्णय जेम्स प्रथम के राज्य तथा चार्ल्स के राज्य के आरम्भिक वर्षों की महत्वपूर्ण घटनाएं थीं।

अंग्रेज जाति ने एक बार फिर अपने द्वीप की सीमाओं के बाहर निकलना आरम्भ किया, और इस बार ठीक दिशा में। शतवर्षीय युद्ध के दिनों में फ्रांस और इंगलैंड का एक प्रान्त बनाने का प्रयत्न उदीयमान राष्ट्रीय चेतना की पहली सहज अभिव्यक्ति था। इसके असफल हो जाने के बाद, अंग्रेज़ लोग डेढ़ शताब्दी तक इंगलैंड में बंद रहे—अपने को सम्पत्ति, वुद्धि तथा नौ-शक्ति में समृद्धतर करते हुए; इसके बाद उन्होंने एक बार फिर विस्तार का प्रयत्न किया, इस बार बहुत भिन्न विधि से और उन दिनों के बहुत भिन्न प्रकार के नेतृत्व में, जबकि :

हमारा राजा नार्मेंडी को शौर्य-पूर्ण शालीनता और शक्ति के साथ जाता था।

इस बार 'वह अच्छा योमैन, जिसकी भुजाएं इंगलैंड में बनी थीं' दोबारा आगे बढ़ा, किन्तु इस बार शौर्य के साथ नहीं और राजा के नेतृत्व में नहीं बल्कि हल और कुल्हाड़ी के साथ—जंगलों और असभ्य प्रदेशों में नयी सभ्यता की स्थापना के लिये।

इस नव-निर्माण के लिये पहली आवश्यकता शान्ति थी। जब तक स्पेन के साथ युद्ध जारी रहा, इंगलैंड का धन और शक्ति का सीमित कोष सागर में, आयरलैंड तथा नीदरलैंड में लड़ने में ही व्यय होता रहा। युद्ध की परिस्थितियों में एलिजाबेथ युग के लोगों के वर्जिनिया की स्थापना के प्रयत्न असफल ही रहे। नये शासन के प्रथम वर्ष में जेम्स प्रथम ने उत अच्छी शर्तों पर, जोकि सफल युद्ध द्वारा प्राप्त की गयी थीं, शान्ति स्थापित करने की योग्यता दिखाई। बहुत सी बातों में उसकी पीछे की विदेशी नीति निर्बल और अयोग्य थी : उसने स्पेन को प्रसन्न करने के लिये नौ-सेना की शक्ति का निरादर किया और रिसीफ का सिर काट दिया। जो भी हो, उसकी शान्ति-प्रियता ने इंगलैंड को शान्ति का अवसर दिया और उसके प्रजाजनों ने उस थोड़े से समय का उपयोग आंग्ल साम्राज्य के बीज रोपने तथा अमरीका की स्थापना करने में

किया। चार्ल्स प्रथम द्वारा एक उत्कृष्ट नौ-सेना की पुनः स्थापना तथा अनुगामी शासकों द्वारा उसको बनाए रखने के कारण इस गति को सुरक्षित रूप से अग्रसर होने का अवसर मिला। राज्य ने ऐसी परिस्थितियों का पोषण किया जिनमें कि उपनिवेश-प्रसार सम्भव था, किन्तु व्यक्तिगत प्रयत्न तथा पुरुषार्थ ने धन, जन तथा स्फूर्ति दी। लंडन की कंपनियों, जैसे वर्जिनिया कंपनी तथा मैसेचुसेट्स बे कंपनी ने प्रवास के लिये वित्त दिया तथा उसे संगठित किया। इस सहायता के बिना इसका विकास सम्भव नहीं था। इसके लिये पैसा देने वाले व्यापारियों, कुलीनों तथा ज़मींदारों का उद्देश्य अंशतः तो अपनी तात्कालिक लागत पर अच्छा सूद कमाना होता था, किन्तु उससे भी अधिक उनका उद्देश्य होता था एट्लांटिक के पार इंगलैंड की वस्तुओं के लिये स्थायी बाज़ार प्राप्त करना और विनिमय में इस नये संसार के उत्पादनों को, जैसे तम्बाकू को, प्राप्त करना, जोकि वर्जिनिया में शीघ्र ही विशाल मात्रा में उत्पन्न किया जाने लगा था। इन साहसिक अभियानों के लिये तथा व्यापारी के लिये धन तथा अन्य सामग्री देने वालों में बहुत से लोग देश-प्रेम तथा धर्म-सम्बन्धी लक्ष्यों से प्रेरित थे। १६३० तथा १६४३ के बीच २० हज़ार पुरुष, स्त्री और बच्चों को २०० पोतों से भेजने पर दो लाख पौंड व्यय किया गया था और इसी काल में चालीस हज़ार व्यक्ति वर्जिनिया तथा अन्य बस्तियों को भेजे गये थे।

इस आन्दोलन के अत्यन्त योग्य पोषकों में कुछ अत्युन्नत कुलीन और प्रमुखतम धनाढ्य लोग भी थे; किन्तु स्वयं उपनिवेशों में बसने वाले लोग ग्राम तथा नगरों के मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय लोग ही थे। उनके भी मन में इस उपनिवेश-विस्तार के उद्देश्य अंशतः स्वार्थपरक ही थे, किन्तु अंशतः आदर्शमूलक और धार्मिक थे। अधिकांश प्रवासी धार्मिक भावना से प्रेरित नहीं थे, किन्तु नये इंगलैंड (न्यू इंगलैंड) में तीर्थयात्री पादरियों (१६२०) के समान कुछ नेताओं को इन आदर्शों ने प्रेरणा दी थी और उनके बाद जोन् विन्थ्रोप तथा उसके साथियों को प्रेरित किया था। उनके उत्साह ने उत्तरी उपनिवेशों को शुद्धाचावादी स्वरूप दिया जिसने आगे चलकर अमरीका के सामाजिक विकास को प्रभावित किया।

एट्लांटिक को धार्मिक कारणों से पार करने वालों का उद्देश्य, एंड्र्यू मार्लो के के शब्दों में, "पुजारी के अत्याचार" से बचना था। जेम्स, चार्ल्स और लार्ड के काल में इंगलैंड में केवल एक ही धर्म सहन किया जाता था, और यह शुद्धाचारवादी धर्म नहीं था। नवीन इंगलैंड में इन धार्मिक शरणार्थियों में से कुछ लोग इस वीरान् प्रदेश में जिनेवा के आदर्श पर ईश्वर का राज्य बसाना चाहते थे, और वे इसका शासन उन सब पर आरोपित करना चाहते थे जो इस ईश्वरवादी जनतन्त्र के नागरिक बनना चाहते थे। मेसाचुसेट्स वास्तव में ऐसा ही एक नगर था। किन्तु शुद्धाचारवादियों की एक अन्य प्रकार की प्रवासी बस्ती, जैसे र्होडे द्वीप-समूह के संस्थापक रोज़र विलियम्स

की वस्ती, तथा न्यू हैम्पशायर और कोनैक्टीकट में वसने वाले प्रवासियों की अनेक वस्तियां न केवल स्वयं ही धार्मिक स्वतंत्रता का उपभोग करना चाहती थीं वल्कि दूसरों को भी वह देना चाहती थीं। मेसाचुसेट्स से विलियम्स को इसलिए निकाल दिया गया था कि उसका आग्रह था कि राज्य का लोगों की नैतिक भावनाओं पर कोई नियंत्रण नहीं हो सकता। इस प्रकार से दो शुद्धाचारवादी आदर्शों—अनुदार और उदार—के वीच विरोध नव-इंगलैंड में १६३५ में ही स्पष्ट प्रकट हो गया था। आंग्ल वर्जिनिया तथा रोमन कैथोलिकों द्वारा संस्थापित "लॉर्ड वाल्टिमोर" में विभिन्न धर्मो के प्रति एक सहिष्णुता की भावना व्याप्त थी।

वर्जिनिया, पश्चिमी इण्डियन द्वीप-समूह तथा वड़ी संख्या में नव इंगलैंड में वसने वाले लोगों ने किसी धार्मिक उद्देश्य से प्रवास नहीं किया था। साधारण प्रवासी अंग्रेज़ आंग्ल-स्वभाव के अनुसार "आत्म-संग्रह" की प्रेरणा से सागर-पार गये थे, जिसका उन दिनों अर्थ था भूमि प्राप्त करना। प्रवास को विकसित करने वाली कंपनियां वेमोल भूमियों का आकर्पण दे रही थीं, स्वतन्त्र धर्म का आकर्पण नहीं दे रही थीं। वहुत से ज़मींदार लोग न केवल भूमि की संभावना से ही आर्कापित हुए थे वल्कि अज्ञात और उद्भुत् से, तथा अमरीका में अपार वैभव की कहानियों से भी, आर्कापित हुए थे जिनसे लाभान्वित वास्तव में उनके सुदूर उत्तराधिकारी ही होने वाले थे। शुरू शुरू में नव इंगलैंड महत् संपत्तियों का प्रदेश नहीं था, और न ही सम्पत्ति की महत् विपमताओं का प्रदेश था।

प्रवासियों के ये सव वर्ग स्वतंत्र रूप से व्यक्तिगत उपक्रम तथा प्रोत्साहन से गये। सरकार ने केवल अपराधियों को ही, और वाद में गृह-युद्धों के वन्दियों को भी, प्रवास में भेजा था। इन अभागे लोगों तथा व्यक्तिगत उपक्रमियों द्वारा वर्जिनिया तथा वार्वाडोज़ में दासों के रूप में वेचने के लिये अपहृत युवकों ने उन वस्तियों में अधिकांशत: अपने कार्यो द्वारा स्वतन्त्रता का अर्जन किया और समृद्ध परिवारों की स्थापना की, क्योंकि शीघ्र ही इस संवंध में एक मूक संधि हो गयी थी कि केवल अफ्रीका के नीग्रो लोगों को ही स्थायी दासता में रखा जाय। दास-व्यापार, जोकि हॉकिन लोगों ने स्पेन के उपनिवेशों के साथ आरंभ किया था, अव वर्जिनिया तथा पश्चिमी इंडियन द्वीपों में भी होने लगा।

चार्ल्स तथा क्रॉमवेल के गृह-युद्धों के दिनों में स्वेच्छा से प्रवास-गमन करने वालों की धारा क्षीण पड़ गयी। वर्जिनिया तथा मेरीलैंड राजा के उदासीन समर्थक थे; और नव इंगलैंड के उपनिवेश भी, जोकि यद्यपि शुद्धाचारवादियों के समर्थक थे, व्यवहार में तटस्थ ही रहे, क्योंकि अमरीका में यूरोप के मुआमलों में तटस्थता की भावना काफी वल पकड़ती जा रही थी। तीन हज़ार मील का व्यवधान वहुत वड़ा व्यवधान था—कई महीनों की कष्ट-भरी यात्रा, जिसमें कि दुर्भाग्यग्रस्त पोतों में मृत्यु अपनी वलि लेती

थी। और इस प्रकार से, कुछ आरंभिक वर्षों के बाद, अमरीका का सामाजिक इतिहास सदा के लिये इंगलैंड के सामाजिक इतिहास से पृथक् हो गया। नये समाज ने अपनी निजी विशेषताओं को जीवन की मार्ग-सर्जनात्मक परिस्थितियों में क्रियान्वित करना आरंभ किया। ये परिस्थितियां उनसे बहुत भिन्न थीं जोकि इंगलैंड के उद्यान में शैक्सपीयर तथा मिल्टन के दिनों में विद्यमान थीं।

इसके बावजूद बस्तियां सत्रहवीं शताब्दी के इंगलैंड के जीवन की ही स्फुलिंग थीं और उससे ही उन्होंने वे विचार और प्रेरणाएं ग्रहण की थीं जिन्होंने कि उन्हें अपने लक्ष्य की ओर दूर तक आगे बढ़ाया।

उस काल में, तथा दो सौ वर्ष बाद भी, इंगलैंड ठीक प्रकार से प्रवासी देने के लिये अद्भुत रूप से उपयुक्त था। यही कारण है कि इंगलिश भाषा आज उत्तरी अमरीका तथा आस्ट्रेलिया में बोली जाती है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में पूर्वी इंगलैंड में कृषीय जीवन तथा परम्परा प्रमुखता थी। साधारण अंग्रेज़ अभी नागरिक प्रकार का नहीं बना था, जोकि प्रकृति से पूर्णतः विच्छिन्न रहता है; वह अभी केवल एक ही व्यवसाय में दक्ष क्लर्क अथवा विशेषज्ञ कारीगर भी नहीं बना था कि वह मार्गान्वेषी की जीवनचर्या के अनुकूल अपने आपको न ढाल पाता और घर पर उच्च स्तर के जीवन के लाभों को छोड़ कर अज्ञात देश में कठिन परिश्रम नहीं कर सकता। इंगलैंड तथा हेनरी के काल का अंग्रेज अपने उत्तराधिकारियों की अपेक्षा अधिक सरलता से परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढाल सकता था और उसके लिये प्रवास के लिये अधिक बड़ी प्रेरणाएं विद्यमान थीं। अपने देश में उसे समाज या राज्य की ओर से जीवन-स्तर अथवा बुढ़ापे में पेंशन के लिये कोई आश्वासन नहीं था; जो वह अपने प्रयत्न से प्राप्त कर सकता था वही उसका भाग्य था। निर्धन-कानून उसे भूख से मरने से बचा सकता था, उससे अधिक कुछ उससे नहीं मिल सकता था। इसके अतिरिक्त, सत्रहवीं शताब्दी के इंगलैंड का नगरवासी अभी भी कृषि से कुछ परिचय रखता था और इंगलैंड का ग्रामवासी भी अभी तक हस्तशिल्प से न्यूनाधिक परिचय रखता था। नगरवासी अपने खेतों पर स्वयं खेती करते थे। ग्राम में न केवल कृषक लोग ही रहते थे बल्कि झोंपड़ियां और खलियान बनाने वाले, जुलाहे और दर्जी, बढ़ई तथा लुहार भी रहते थे। ग्राम-नारियां खाना बनाना, दूध दुहना, खेत की कटाई करने में सहायता देना, कातना, बुनना, फटे कपड़े संवारना तथा बच्चों की संभाल करना ये सब कार्य करती थीं। ऐसे लोग पर्याप्त संख्या में जब प्रवास करते थे तब उजाड़ में भी वे गांव बसा सकते थे, चाहे वहां आवश्यक वस्तुएं मुहय्या करने के लिये कोई नगर भी नहीं होता हो।

आरंभिक अमरीकन बस्तियां बसाने वाले लोग अत्यन्त प्रशंसनीय कौशल, सहन-शक्ति, कठोर परिश्रम तथा साहस युक्त लोग थे। प्रथम प्रवासियों का अधिकांश भाग—तीन चौथाई से अधिक—अकाल-मृत्यु मरा, इनमें से बहुत से तो यात्रा के कष्टों से ही

मरे और बहुत से अन्य रोग, दुष्काल, सर्दी या गर्मी से, अथवा आदिवासियों के साथ संघर्षों में मरे। इन आरंभिक वर्षों में से बच कर निकले लोगों ने ही जंगलों में उन गांवों को बसाया था। अनेक दृष्टियों से यह एंग्लो सेक्सन ब्रिटेन की ही पुनःस्थापना थी : वही दुर्गम वनों तथा दलदलों के साथ संघर्ष तथा आदिवासियों के साथ युद्ध। अमरीका में बसने वाले लोग संस्कृत और सभ्य थे और उनमें में कुछ तो सुशिक्षित भी थे। मेसेचुसेट्स में उनका एक प्रथम कार्य विश्वविद्यालय की स्थापना करना था—नये प्रदेश में एक "कैम्ब्रिज" का निर्माण, क्योंकि सभ्य लोगों को आदिम जीवन की कठोरताओं को सहन करने के लिये उन्नत गुणों की अपेक्षा होती है, जोकि उस युग का इंगलैंड प्रदान करने में सम्यक् रूप से समर्थन था।

नयी स्थापित बस्तियों ने, चाहे वे मुख्य भूमि में हों और चाहे द्वीपों में, चाहे लंडन की कंपनियों के अधीन हों और चाहे सीधे राजा के अधीन, एकदम से पर्याप्त स्वतंत्रता ग्रहण कर ली थी। उन्होंने सम्पूर्ण बस्ती के लिये संसदों का निर्वाचन किया और प्रत्येक नगर को एक स्वशासित इकाई बनाया। नव-इंगलैंड में चर्च-सभा नगर को सुगठित रखती थी और उसकी नीतियों को प्रभावित करती थी। स्वदेश के सत्ताधिकार को, चाहे वह राजा द्वारा प्रयुक्त हो चाहे कंपनी द्वारा, हटाने की प्रवृत्ति इन बस्तियों के पूर्वतन वासियों में भी विद्यमान थी, विशेषतः मेसाचुसेट्स में, यद्यपि यह संपूर्ण महाद्वीप में केवल जार्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में ही व्याप्त हुई।

इंगलैंड के प्रथम प्रवासियों की स्वशासन की आकांक्षा का कारण केवल यूरोप से बहुत दूर होने को ही नहीं कहा जा सकता। स्पेन, हालैंड तथा फ्रांस की बस्तियां भी कोई कम दूर नहीं थीं, किन्तु तब भी वे शासन-तन्त्र में अप्रजातांत्रिक रहीं और अपने देश के सत्ताधिकार को भी मानती रहीं। इंगलैंड की बस्तियों में आत्मनिर्भरता की प्रवृत्ति अंशतः उनके उद्गम की परिस्थितियों के कारण थी : वे राज्य के किसी अधिनियम के द्वारा स्थापित नहीं की गयी थीं बल्कि स्वतन्त्र उपक्रम द्वारा स्थापित की गयी थीं। बहुत से प्रवासी तो इंगलैंड की चर्च-शासित सरकार से बचने के लिये विद्रोह भरे हृदय से आए थे। दूसरी ओर, फ्रांस का राजा फ्रांस के किसी प्रोटेस्टेंट को कैनेडा में रहने की आज्ञा नहीं देता था।

इसके अतिरिक्त, पुराने आंग्ल-समाज में स्वशासन की आदतें भी थीं, जोकि सागर-पार आसानी से रोपी जा सकती थीं। इस प्रकार से स्वदेश की अभिजात-तंत्रीय परम्परा तथा शान्ति अधिकारियों द्वारा, जोकि स्थानीय जमींदार होते थे, मंडलों के स्वशासन ने वर्जिनिया में अनतिदूर भविष्य में बड़े ज़मींदारों की अश्वारोही आभिजात्यता को जन्म दिया, जिनका जीवन इंगलैंड के ग्रामीण ज़मींदारों से मुख्यतः इस बात में भिन्न था कि ये नीग्रो-दास रखते थे। यह आभिजात्य व्यवस्था तंबाकू के बागों के साथ सहज रूप में ही उद्भूत हो गयी, जोकि शीघ्र ही उन बस्तियों की मुख्य उपज हो गयी।

नव इंगलैंड में किसानों तथा व्यापारियों का शुद्धाचारवादी प्रजातंत्र अस्तित्व में आया, इसकी भी जड़ें स्वदेश से आयी आदतों में ही निहित थीं। सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में अंग्रेज़ी ज़िलों तथा गांवों में अभी तक आभिजात्यों तथा शान्ति-अधिकारियों के व्यापकतर शासन की तह के नीचे स्थानीय स्वशासन के तत्व विद्यमान थे। स्थानीय शासन-सभा में पूर्ण स्वामित्व वाले किसानों का भी प्रतिनिधित्व होता था। ज़मींदार के अधिकारान्तर्गत प्रदेश की शासन-सभा में अभी तक किसान भी भाग लेते थे जोकि, नाम मात्र के लिये, और कभी कभी वास्तव रूप से भी, उस कार्यक्रम के न्यायाधीश भी होते थे। और, इंगलैंड के प्रत्येक गांव में अनेक छोटे-छोटे अधिकार-पद थे — जैसे सिपाही, निर्धन-निरीक्षक, ग्राम-पंचायत का अध्यक्ष, सड़कों की मरम्मत आदि का निरीक्षक, चर्च का अधिष्ठाता तथा अन्य छोटे पदाधिकारी—जोकि साधारण लोगों में से या तो निर्वाचन द्वारा बनाये जाते थे अथवा बारी से। स्वदेश में स्वशासन की इस परम्परा ने नव इंगलैंड में नागरिक शासन तथा नगर परिषदों के निर्माण को प्रेरणा दी।

प्रवासी लोग अपने साथ जूरी व्यवस्था तथा आंग्ल लोक-कानून को भी, जोकि एक मुक्ति का कानून था, साथ लाए। सबसे महत्वपूर्ण था लोक-प्रतिनिधि के रूप में संसद् (पार्लियामेंट) का कर लगाने अथवा हटाने का अधिकार, जोकि जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के कालों में इंगलैंड में, विशेषतः विरोधी दलों के नेताओं में, बहुमान्य हो चुका था। इन लोगों ने, जैसे एड्विन् शेंडी ने, वर्जिनिया के बाग लगाने में तथा पूर्वी एंग्लीका के जमींदारों तथा योमैन लोगों में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया तथा नव इंगलैंड को बसाने में प्रमुख भाग लिया।

स्वतन्त्रता की भावना को बाइबल-धर्म ने, जोकि प्रवासी लोग स्वदेश से अपने साथ लाए थे, और भी अधिक प्रेरणा दी। मेसाचुसेट्स तक में, जहांकि मंत्री तथा बड़े अधिकारी साधारण लोगों पर अत्याचार करते थे और उन्हें भयभीत करते थे, उन्हें कोई धार्मिक या सामाजिक अधिकार नहीं प्राप्त थे। नव इंगलैंड के पादरी लॉड के एंग्लिकन पादरियों के समान अधिकार का दावा भी नहीं कर सकते थे। उससे भी कम वे उस प्रकार के धार्मिक अधिकार का प्रयोग करने में समर्थ थे जैसे अधिकार का प्रयोग फ्रांस अधिकृत कैनेडा में पादरी लोग करते थे। नव इंगलैंड अथवा वर्जिनिया में चर्च की शक्ति का एकमात्र आधार लोकमत था। परिणामतः अंग्रेज़ी भाषी अमरीका का धर्म चर्च-रूप होने के बजाय सभा-रूप था और इसने एट्लांटिक-पारीण प्रजातांत्रिक भावना को आगे बढ़ाने में सहायता दी।

इस प्रकार से इंगलैंड की अमरीकन बस्तियाँ स्वतंत्र आर्थिक, व्यापारिक, कृषीय, राजनैतिक तथा धार्मिक उपक्रम से संस्थापित की गयी थीं। साम्राज्य के विकास के प्रसंग में राज्य-नीति तथा सैनिक-शक्ति का प्रथम प्रयोग क्रामवेल द्वारा स्पेन से जनेवा

की विजय (१६५५) के रूप में हुआ था, और उसका अनुसरण किया चार्ल्स द्वितीय ने, जिसने कि डचों से १६६७ में वे प्रदेश छीने जोकि पीछे जाकर न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी तथा पैन्सिल्वेनिया बने। उस समय तक इंगलैंड के औपनिवेशिक समाज के आत्मनिर्भर रूप को बदलना इंगलैंड के राज्य की शक्ति से बाहर की बात हो गया था। किन्तु एट्लांटिक में औपनिवेशिक व्यापार को विदेशी शत्रुओं से बचाने के लिये इंगलैंड के नौ-सेना के बेड़े की सहायता की आवश्यकता बढ़ जाने से उस व्यापार में राज्य का हस्तक्षेप भी सम्भव हो गया। यह हस्तक्षेप नौ-परिवहन कानूनों के अन्तर्गत किया जाता था। क्रामवेल के समय से लेकर ये कानून कम से कम आंशिक रूप से व्यवहार में लाये जाते थे। उनका उद्देश्य इंगलैंड के पोतों द्वारा इंगलैंड का व्यापार बढ़ाना और आंग्ल उपनिवेशों का व्यापार इंगलैंड के हितों के अनुसार रखना होता था, और इसमें उन्हें कुछ सफलता भी मिलती रही।

इस बीच, भूगोल की दूसरी ओर, लंडन की एक अन्य व्यापारिक कंपनी के पोत इंगलैंड की नियति के एक नवीन अध्याय का आरम्भ कर रहे थे। एलिजाबेथ के सन् १६०० के चार्टर द्वारा स्थापित ईस्ट इण्डिया कम्पनी को इंगलैंड के प्रजाजनों में 'ईस्ट इंडीज़' में व्यापार के लिये एकाधिकार प्राप्त था तथा सागरपार के अपने कर्मचारियों के लिये कानून बनाने और न्याय करने के, और परिणामतः केप आफ गुडहोप के परे शान्ति और युद्ध सम्बन्धी, सब अधिकार प्राप्त थे। अनुगामी अनेक पीढ़ियों तक राज्य की नौ-सेना के किसी पोत ने केप (अन्तरीप) का चक्कर नहीं लगाया। राज्य जिस प्रकार से एट्लांटिक में अमरीकन बस्तियों के व्यापार की रक्षा कर रहा था उस प्रकार से इसने सुदूर पूर्व में देश के व्यापार की रक्षा कर सकने का कोई दंभ नहीं किया। इसलिये कंपनी को अपने ही वेतन से सिपाही नियुक्त कर अपने कारखानों आदि की रक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता था, और सागर में हमारे महान् ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लोग युद्ध और व्यापार दोनों के लिये सज्जित होते थे, तथा अपनी तोपों के साथ डचों, पुर्तगालियों और अन्य विदेशी दस्युओं के आक्रमणों का सामना करते थे। किन्तु कम्पनी भारतीय राजाओं के साथ संघर्ष को बड़ी बुद्धिमत्ता से टाल रही थी और उस समय उसकी भूमि हथियाने की या कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा नहीं थी।

प्रथम आंग्ल-भारतीय राजनीतिज्ञ सर थॉमस रो ने, जोकि मुगल सम्राट् के दरबार में जेम्स प्रथम का राजदूत तथा कम्पनी का एजेन्ट था, पूर्व में अपने देश के लोगों के लिये जो नीति निर्धारित की उसने पीछे एक शताब्दी तक उनके कार्य-व्यवहार का निर्धारण किया। इसके अनुसार :

"युद्ध और व्यापार परस्पर विरोधी चीज़ें हैं। इस बात को हमें विधान के रूप में स्वीकार करना चाहिए कि यदि कोई लाभ प्राप्त करना है तो इसके लिये सागर में

इसकी खोज करो और वह शान्तिपूर्ण व्यापार के माध्यम से करो; क्योंकि यह निर्विवाद रूप से सही है कि हमें भारत में मोर्चे-बन्दी और भूमि-युद्धों में नहीं पड़ना चाहिए।

जबतक मुगल साम्राज्य की अधिकार-सत्ता बनी रही, और स्टुअर्ट काल में उनकी सत्ता रही, कंपनी रो के इस बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श का अनुसरण करती रही। केवल जब इस महान् प्रायद्वीप में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी तब अंग्रेज़ व्यापारी क्लाईव के काल में भारतीय तथा फ्रांसीसी आक्रमणों से अपने व्यापार की रक्षा के लिये अनिच्छापूर्वक युद्धों और विजयों में प्रवृत्त हुए।

स्टुअर्ट युग के आरंभिक दिनों में कंपनी ने मद्रास, सूरत,[१] तथा १६४० में बंगाल में छोटे-छोटे व्यापार-केन्द्र खोले थे। इन लोगों को नगरों तथा कारखानों की सीमाओं में जो अधिकार तथा सुविधाएं प्राप्त थीं वे उन्हें स्थानीय राजाओं से सन्धि के द्वारा प्राप्त हुई थीं। उनके शत्रु एक तो पुर्तगाली थे, जोकि शीघ्र ही उतने शक्ति-सम्पन्न नहीं रहे, और दूसरे डचों की बढ़ती हुई शक्ति थी, जिन्होंने कि उन्हें काली मिर्चों के द्वीपों के अत्यन्त लाभप्रद व्यापार-क्षेत्र से पूर्व की ओर आगे धकेल दिया था (१६२३), और उन्हें अपनी स्थिति प्रायद्वीप पर विकसित करने को बाध्य कर दिया था। मद्रास तथा बम्बई में अपने कारखानों से अंग्रेज़ों ने कैंटन के साथ व्यापार करना सीखा; पूर्व में और आगे की वस्तुस्थितियों से अपरिचित होने के कारण लंडन के व्यापारियों ने चीन के साथ कोई सीधा व्यापार आरम्भ नहीं किया किन्तु भारत में कंपनी के व्यापारी स्थानीय वस्तुस्थिति से काफी परिचित थे और चीन के साथ व्यापार के विशाल स्रोतों का उपयोग कर सकते थे। लंडन-कंपनी ईरान की खाड़ी में सीधे अपने पोत भी भेजती थी (पहला पोत उन्होंने १६२८ में भेजा था) और यह लेवेंट कंपनी को पसन्द नहीं था, क्योंकि वह भूमि-मार्गों से शाह के प्रदेश से व्यापार करना चाहती थी।

भारत के साथ व्यापार ने, जिसका अर्थ था की एक वर्ष का समय लेने वाली दस हज़ार मील दीर्घ यात्रा, जल-यातायात तथा पोत-निर्माण को अमरीकी व्यापार से भी अधिक प्रोत्साहित किया। पहले ही ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जेम्स प्रथम के राज्य में इतने विशाल व्यापारिक पोत बनाए थे कि उससे पूर्व कभी वैसे पोत नहीं बनाए गये थे। जबकि भूमध्य प्रदेशों में व्यापार के लिये लेवेंट कम्पनी के पोत १०० से ३५० टन तक के होते थे, भारत की ओर प्रथम यात्रा ६०० टन के पोत में की गयी थी और छटी यात्रा (१६१० में) ११०० टन के पोत में की गयी थी।

नियमित व्यापार के लिये भारत की दीर्घ यात्राएं कभी सम्भव नहीं होतीं यदि

---

[१] पीछे पुर्तगाल की राजकुमारी के साथ चार्ल्स द्वितीय के विवाह में स्वयं बम्बई नगर भी दहेज के रूप में रानी को प्राप्त हो गया था।

यात्री और संचालक स्कर्वी रोग (जिसमें हरे साग नहीं मिलने और परिणामतः विटामिनों की कमी हो जाने से मसूढ़ों में लहू आने लगता है) से और अधिक ग्रस्त होते। किन्तु आरम्भ से ही (१६००) ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने पोत-चालकों को निम्बू-पानी तथा संगतरे देती थी। स्टुअर्ट तथा हेनरी के काल की राजकीय नौ-सेना को यह उपाय ज्ञात नहीं था, और राजा के जल-यात्री भयानक रूप से रोगग्रस्त होते थे जबतक कि कप्तान कुक ने, जोकि उतना ही महान सागर का चिकित्सक था जितना वि वह नये प्रदेशों का अन्वेषक था, पोत के पेयों तथा भोजन में बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। स्टुअर्ट के काल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पास अन्तरीप के पार यात्रा के लिये तीस बड़े पोत थे और अनेक छोटे पोत थे जो पूर्वी सागरों में ही रहते थे। इनमें बहुत से या तो नष्ट हो गये थे या फिर दस्युओं अथवा डचों द्वारा छीन लिये गये थे। किन्तु वे बृहत् पोत, जो बच रहे, इंगलैंड की सागवान की लकड़ी से इतने पक्के बने थे कि वे तीस से साठ वर्षों तक सागर की उत्तान तरंगों का सामना कर सकते थे। जेम्स प्रथम के काल में ही कम्पनी ने एक ही समय तीन लाख पाउंड पोत-निर्माण में लगाए थे, जोकि उससे भी बड़ी राशि थी जितनी राजा जेम्स ने नौ-सेना में लगा रखी थी। इस प्रकार से भारतीय व्यापार ने देश को विशाल पोतों तथा कुशल सागर-यात्रियों से समृद्ध कर दिया था।

इस स्वतंत्र नौ सेना ने, जोकि वह शस्त्रसज्जित थी, इंगलैंड को बहुत शक्ति-संपन्न बना दिया। जल यातायात के अत्यन्त कठिन भागों का ज्ञान तथा सुदूर प्रदेशों में समुद्री-उपक्रमों का अभ्यास इंगलैंड में अब बहुत व्यापक हो गये थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मुख्य केन्द्र के रूप में लंडन ने पूर्व के साथ इंगलैंड के व्यापार को अपनी ओर आकर्षित किया। एट्लांटिक के पार तंबाकू तथा दास-व्यापार में ब्रिसल इसमें सहभागी था, और शीघ्र ही लिवरपूल भी इस क्षेत्र में आ गया; किन्तु भारतीय तथा अमरीकी व्यापारों के साधारण प्रभाव तथा व्यापारिक पोतों के आकार में वृद्धि के परिणामस्वरूप लंडन की प्रमुखता में और वृद्धि हुई तथा अन्य बन्दरगाहों का, जोकि पुराने समय के छोटे पोतों के ही उपयुक्त थीं, क्रमशः ह्रास हो गया।

भारतीय व्यापार ने न केवल इंगलैंड के पोतों में ही वृद्धि को प्रेरित किया बल्कि उसकी सम्पत्ति को भी बहुत बढ़ाया। वास्तव में पूर्व के गर्म देशों में इंगलैंड का कपड़ा एक सीमित मात्रा से अधिक बिकना असंभव हो रहा था, और कम्पनी के शत्रु कम्पनी पर दोषारोपण के लिये सदैव इसका ही आश्रय लेते थे। किन्तु रानी एलिजाबेथ ने बड़ी बुद्धिमत्ता से कुछ मात्रा में देश की मुद्रा के निर्यात की अनुमति कम्पनी को दे दी और उस पर यह शर्त लगा दी कि प्रत्येक यात्रा के बाद उतने मूल्य का सोना या चांदी राज्य को लौटाया जायगा। १६२१ में सराफे के रूप में निर्यातित एक लाख पौंड के बदले में पूर्व से उससे पांच गुणा मूल्य के बर्तन आदि आये, जिनमें से इंगलैंड में केवल

एक चौथाई ही खप पाये और शेष को बहुत बड़े मूल्यों पर बाहर बेच दिये गये, और इस प्रकार से सराफा वालों की आलोचना को समाप्त करने के लिये राज्य के कोष को सम्पन्न किया गया।

गृह-युद्ध से पहले कम्पनी के विशाल पोतों में थेम्ज़ को भेजी जाने वाली वस्तुओं में शोरा (जोकि युद्धरत यूरोप की तोपों के बारूद में काम आता था), कच्चा सिल्क, और मुख्यतः मिर्चें, विशेष रूप से काली मिर्चें, प्रमुख थीं। हमारे पूर्वजों द्वारा मिर्चों को इतना पसन्द करने का कारण था सर्दियों में ताज़ा मांस की कमी हो जाना, और उन दिनों अभी साग-सब्ज़ियों का प्रचलन हुआ नहीं था। ये मांस को (आचार आदि के रूप में) सँभाल कर रखने में भी सहायक होती थीं और उसको बासी होने पर जब इसमें कोई गुण नहीं रह जाता था तब इसे स्वाद बनाने के काम में भी आती थीं। शान्ति-स्थापना के बाद चाय और कॉफी, तथा यूरोप के बाज़ारों के लिये पूर्व में बना सिल्क, और चीन का पोर्सलेन इस क्षेत्र में आए। रानी एन्ने के समय तक पूर्व के व्यापार ने पेयों को, सामाजिक विनिमय की आदतों को, पहरावे को तथा धनिक वर्गों की कलात्मक रुचियों को, गम्भीर रूप में बदल दिया था।

ये दूर देशों में व्यापार करने वाली कम्पनियाँ, जिनकी हानियां बृहद् थीं और लाभ उनसे भी बृहत्तर थे, स्टुअर्ट के काल के सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन की महत्वपूर्ण अंग थीं। इनकी संपत्तियां तथा प्रभाव गृह-युद्ध में साधारण रूप से राजा के विरुद्ध प्रयुक्त हुए। इसका कुछ कारण तो धार्मिक था, क्योंकि लंडन में पार्लिया-मेन्ट-समर्थकों अथवा शुद्धाचारवादी दल वालों का प्रभाव अधिक था, और अंशतः इसका कारण व्यापारियों का जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के व्यवहार से असन्तुष्ट होना था। इंगलैंड में अनेक सामान्य उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन के लिये दरबारियों तथा कुछ विशिष्ट धूर्त लोगों को एकाधिकार दे दिया गया था। इस नीति पर, जोकि चार्ल्स प्रथम ने अपने विशेषाधिकार से पार्लियामेन्ट के अधिकार-क्षेत्र से बाहर राजस्व एकत्र करने के लिये अपनाई थी, साधारण वकील तथा पार्लियामेन्ट के लोग रुष्ट थे, और उपभोक्ता भी इससे बहुत अप्रसन्न थे क्योंकि इससे उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें बढ़ गयी थीं। इसी प्रकार से व्यापारी भी इस पर क्षुब्ध थे क्योंकि उनके व्यापार में इससे बाधा पड़ी और वह अस्त-व्यस्त हो गया।

किन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारी इससे और भी अधिक असन्तुष्ट हुए क्योंकि राजा ने जबकि देश के बाज़ार में इस प्रकार के अनावश्यक एकाधिकार दिये, पूर्वी बाज़ार में उसने उनके व्यापार के अत्यावश्यक एकाधिकार में हस्तक्षेप किया, यद्यपि भूगोल के उस पार के सम्पूर्ण सैनिक तथा राजनैतिक कार्य के व्यय का बोझ पूर्णतः कम्पनी पर ही था, राजा पर ज़रा भी नहीं था। चार्ल्स प्रथम ने भारतीय व्यापार के लिये एक दूसरी "कोटीन एसोसियेशन" नाम की कम्पनी बनाई, जिसने कि अपनी

प्रतिस्पर्धा तथा कुप्रवन्ध के कारण सुदूर पूर्व में इंगलैंड का लगभग संपूर्ण व्यापार नष्ट कर दिया था। यह उस समय की वात है जवकि "पार्लियामेंट का दीर्घ अधिवेशन" हुआ था। इंगलैंड में व्यापारिक एकाधिकारवाद को समाप्त करने की तथा सागर पार इसे वनाये रखने की पार्लियामेंट की नीति लंडन में वहुत अधिक पसन्द की गयी थी। लंडन के गृहयुद्ध में पार्लियामेंट-समर्थक सेनाओं की विजय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम देश में एकाधिकार की समाप्ति था। उसके बाद से, यद्यपि विदेशी तथा भारतीय व्यापार पर नियंत्रण थे, किन्तु इंगलैंड का उद्योग इनसे स्वतन्त्र था, विशेषतः यूरोप के अन्य देशों की तुलना में, जहांकि मध्ययुगीन नियंत्रण अभी तक इसके विकास में वाधक हो रहे थे। अट्ठारहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति में इंगलैंड के सवसे आगे रहने का एक कारण यह भी था।

आरंभ में स्टुअर्ट राजाओं ने डचों द्वारा पूर्व की व्यापारिक कंपनी के पोतों तथा कारखानों के ध्वंस को रोकने के लिये कोई उपाय नहीं किये। "एम्वोयना का हत्या-कांड" (१६२३), जवकि डचों ने अंग्रेज-व्यापारियों को मसालों के द्वीपों से निकाल दिया था, एक ऐसी घटना थी जिसकी याद वहुत गहरी मन में पैठ गई थी। तीस वर्ष वाद क्रामवेल ने इस पुरानी हानि तथा अपमान का वदला यूरोप में युद्ध तथा राजनैतिक दांवपेच से लिया। इस "रक्षक" ने वास्तव में संसार में आंग्ल व्यापार तथा स्वार्थों की रक्षा के लिये वहुत कुछ किया, किन्तु उसकी नौ तथा स्थल-सेना का व्यय इतना भारी पड़ रहा था कि उसकी मृत्यु से पूर्व व्यापार के लिये इसका वोझ असह्य हो रहा था। शान्ति-स्थापना (रेस्टोरेशन) एक आर्थिक विश्रब्धता के समान हुई। मरणोपरान्त क्रामवेल की महान "साम्राज्य संस्थापक" के रूप में ख्याति किसी भी प्रकार से अनुपयुक्त नहीं थी। अपनी जमैका की विजय से उसने सव भावी संस्कारों के लिये एक आदर्श स्थापित कर दिया, जोकि एलिजावेथ ने कभी नहीं किया, और वह था यूरोप की शक्तियों से सुदूरपूर्व के उपनिवेशों को छीन लेना, जिसके लिये युद्धों ने वहुत सुअवसर दिया।

कोर्टीन एसोसियेशन की प्रतिस्पर्धा ने, जिसका अनुसरण इंगलैंड के गृहयुद्ध ने किया, ईस्ट इण्डिया कम्पनी को प्रायः नष्ट ही कर दिया और भारत के साथ इंगलैंड का सम्पर्क समाप्त हो गया। किन्तु "संरक्षण काल" में पुरानी कंपनी ने क्रामवेल की सहायता से अपनी खोई हुई समृद्धि को पुनः प्राप्त कर लिया और स्थायी रूप से एक-मात्र मिश्र पूंजी वाली व्यापारिक संस्था का रूप ले लिया। अवतक, प्रत्येक पृथक् यात्रा के लिये धन एकत्र किया जाता था (अधिकांशतः मिश्र पूंजी सिद्धान्तों के अनुसार)। वहुत आरंभ की यात्राओं में वीस से तीस प्रतिशत तक, कभी कभी ५ प्रतिशत ही, वापिस मिल पाता था, किन्तु कभी कभी तो युद्ध या पोत-नाश के कारण सारा ही धन डूव जाता था। किन्तु १६५७ में 'दि न्यू जनरल स्टाक' नाम से एक स्थायी फंड की स्थापना की गयी थी। शान्ति स्थापना के तीस वर्ष वाद तक मूल

स्टाक पर औसत बचत आरंभ में २० प्रतिशत से बाद में ४० प्रतिशत तक हुई। १६८५ में १०० पौंड के (स्टाक) का बाजार भाव ५०० पौंड तक हो गया था। अब मूल स्टाक की मात्रा बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं रही थी, क्योंकि कंपनी अब इतनी पुष्ट स्थिति में थी कि इसे बहुत थोड़े व्याज पर ऋण मिल सकता था, कभी कभी तो तीन प्रतिशत पर ही, और वह इन अस्थायी ऋणों से अपार लाभ कमा लेती थी।

इस प्रकार से पूर्व के व्यापार से अर्जित विशाल धन-राशि बहुत थोड़े से हाथों में रही, मुख्यत: बहुत धनी लोगों के हाथों में। अन्तिम स्टुअर्ट राजाओं के राज्य में सर-जोसिआ चाइल्ड कम्पनी के एकाधिकार को बनाये रखने के लिये १६८८ से पूर्व राज-दरबार को घूस देने के लिये अपूर्व धन-राशि अलग रखता था, और बाद में पार्लियामेंट को घूस देने के लिये भी। साधारण लोगों को या तो स्टाक में भाग मिलता ही नहीं था या फिर बहुत अधिक मूल्य पर मिलता था, जिसके परिणामस्वरूप इनमें निरन्तर असन्तोष बढ़ने लगा, क्योंकि अन्तरीप के पार थोड़े से साझीदारों को छोड़कर अन्य किसी को व्यापार करने की आज्ञा नहीं दी जाती थी। ब्रिसल तथा अन्य स्थानों से अनधिकृत लोग 'स्वतन्त्र व्यापार' के लिये अपने पोत भेजते थे। किन्तु कंपनी का एकाधिकार, चाहे वह कितना ही जन-अप्रिय था, किन्तु वैध था और इसके एजेन्ट ऐसे प्रदेशों में भी कानून को बलात् आरोपित करते थे जो वेस्टमिंस्टर से एक वर्ष की यात्रा की दूरी पर थे। इन सुदूर सागरों पर स्पर्धी अंग्रेजों के परस्पर भयानक संघर्ष होते थे।

× × ×

चार्ल्स जेम्स, जेम्स द्वितीय तथा विलियम के कालों में कम्पनी तथा अनधिकृत व्यापारियों में बड़े स्तर पर होने वाला संघर्ष केवल जेम्स प्रथम, चार्ल्स प्रथम तथा क्राम-वेल के कालों में होने वाले छोटे संघर्षों की आवृत्ति मात्र थे। सम्पूर्ण स्टुअर्ट युग में भारतीय व्यापार के लाभों में हिस्से के लिये बड़े आक्रोशपूर्ण राजनैतिक तथा आर्थिक संघर्ष होते रहे; इनका मुख्य कारण यह था कि पैसा लगाने के लिये अन्य कोई सरल तथा सामान्य मार्ग नहीं खुला था, यद्यपि बचतें तेजी से जमा हो रही थीं। ऐसा कोई नियमित स्टॉक बाज़ार नहीं था जहां अनेक प्रकार के हिस्से विकाऊ होते और कोई व्यक्ति बिना किसी भय के उनमें से अपनी इच्छा से चुनाव कर सकता। पैसा लगाने के लिये अधिक प्रचलित रास्ता उस समय भूमि खरीदना अथवा गहने पर लेना था। किन्तु भूमि बहुत कम थी, और इसके अतिरिक्त, इसके स्वामी आर्थिक के अतिरिक्त अन्य अनेक कारणों से यह भी बेचने को अनिच्छुक होते थे; भू-संपत्ति का सामाजिक तथा आर्थिक मूल्य इतना था कि उसे खरीदना कठिन होता था। इस प्रकार से यह कठि-नाई सदैव रहती थी कि पैसे का क्या किया जाय, सिवाय इसके कि घर में किसी पक्की मंजूषा में रखा जाय, और इस स्थिति से बड़े सामन्तों से लेकर अल्पव्ययी योमैन और कारीगर तक चिन्तित और क्षुब्ध थे।

जनसंख्या का पांच चौथाई भाग भूमि जोत रहा था, किन्तु धीरे धीरे व्यापार तथा उद्योग में अनुपात निरन्तर अधिकाधिक बढ़ रहा था, विशेषतः ग्राम-प्रदेश में। यह छोटे उद्योगों की उन्नति का युग था और ये उद्योग संख्या में निरन्तर बढ़ रहे थे। उन दिनों, एक योमैन अथवा क्राफ्ट्समैन, जोकि थोड़ा भी पैसा बचा पाता था, एकीकृत वार्षिकी, अथवा रेल्वे या शराब-उत्पादन में हिस्से नहीं खरीद सकता था। वह इसका कुछ भाग अपनी लड़की के विवाह पर खर्च कर सकता था जिससे कि उसे जीवन भर के लिये आश्रय मिल सकता। अपनी शेष बचत को वह अधिकांशतः अपने किसी निजी व्यापार में लगाता था: या तो वह कुछ थोड़े से स्थायी कर्मचारी और कुछ दैनिक श्रमिक नियुक्त करके कोई छोटा उद्योग अथवा दुकान आरंभ कर देता या फिर घोड़े, इक्के तथा सामान ढोने की गाड़ियां खरीद कर इस पैसे का उपयोग करता था।

ऐसे छोटे उद्योगपतियों तथा व्यापारियों की संख्या निरन्तर बढ़ रही थी और वे, ईस्ट इण्डिया कंपनी के समान, अधिकांशतः अपने व्यापार के लिये पैसा ऋण लेते थे। इसी प्रकार से भू-स्वामी भी करते थे—ये केवल ऐसे अभिजात जमींदार ही नहीं होते थे जो अपव्यय के कारण कठिनाई में पड़ जाते थे, वल्कि ऐसे ज़मींदार भी होते थे जो अपनी भूमि में सिंचाई का प्रवन्ध करने, तथा उसे सुधारने को उत्सुक होते थे और जंगलों को काट कर कृषि-योग्य भूमि बढ़ाने का प्रयत्न करते थे। इन नये साधन खोजने वालों के विभिन्न वर्ग अपने कार्य के लिये किस प्रकार से ऋण लेते थे? किस प्रकार से वे उन लोगों से संपर्क स्थापित करते थे जो उधार देना चाहते थे अथवा अपना पैसा लगाना चाहते थे?

ट्यूडरों के युग में समाज ने अन्ततः धीरे धीरे इस मध्ययुगीन सिद्धान्त को छोड़ दिया कि पैसा ऋण पर देना अनुचित है। अब उचित व्याज पर पैसा ऋण देने को पार्लियामेंट ने वैध कर दिया था, इसलिये अब व्याज उतना अधिक नहीं होता था। आरंभिक स्टुअर्ट युगों में विचारक नेताओं ने स्पष्ट रूप से मुद्रा-वाज़ार का उपयोग अनुभव किया था। सेल्डन ने अपने मित्रों से कहा था "यह कहना ग़लत है कि पैसा पैसे को आकर्षित नहीं करता है, क्योंकि यह स्पष्टतः ऐसा करता है।" और अत्यन्त व्यावहारिक व्यापारिक-दार्शनिक थॉमस मन ने लिखा था कि "किस प्रकार से मुद्रा-व्यापारियों तथा दुकानदारों ने अपने पास कोई पैसा हुए विना आरंभ किया, और तव भी वे केवल दूसरों के पैसे से ही व्यापार करके समृद्ध हो गये?"

अभी तक इंगलैंड में कोई वैंक नहीं थे। किन्तु कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो आधुनिक महाजनों (वैंकर्स) के कार्य संपादित करते थे, जोकि व्याज पर पैसा लेते और देते थे। दलालों तथा मुनीमों को अपने साधारण व्यापार के सिलसिले में अपने असामियों को इन चीज़ों में सहायता करने के विशेष अवसर होते थे।

"शान्ति-स्थापना" के वाद कामनवैल्थ-काल में (१६४९ से १६६० के वीच पार्लियामेंट का शासन) पैसा ऋण पर देने की व्यवस्था लंडन में अधिकाधिक मात्रा में

सुनारों के हाथ में चली गयी थी। लण्डन के व्यापारी लोग अपना बचा पैसा टावर टकसाल में रखना पसन्द करते थे, किन्तु चार्ल्स प्रथम के उसे वहां जब्त कर लेने पर उन्होंने सुनारों पर विश्वास करना अधिक उचित समझा। नागरिक संघर्ष के आरम्भ हो जाने पर, जब दोनों पक्षों के धनिकों ने अपनी तिजोरियाँ छुरों और भालों में तथा गुंडों की जेबों में खाली करनी आरंभ कर दीं तब सुनार का सोने-चांदी के बर्तन वेचने का कार्य उस काल के लिये स्थगित हो गया और वे अब उसके स्थान पर व्यापारियों की नकदी सँभालने वाले होने में प्रसन्न थे, जबकि कोई भी इससे होने वाले लाभ को देख या उसका अनुमान नहीं कर सकता था। लाभ वास्तव में इतना होता था कि सुनारों ने व्याज देकर इस प्रकार से पैसा जमा करने को लाभप्रद पाया। चार्ल्स द्वितीय के काल में वे ६ प्रतिशत तक व्याज देते थे क्योंकि वे इस राशि को दूसरों को व्याज देने में लगाते थे और उन्हें इससे प्रभूत लाभ होता था। इस प्रकार का व्यापार करने वाले सुनारों में लोबार्ट स्ट्रीट के सुनार प्रमुख थे।[1]

सुनारों का आरंभिक वैंकों के रूप में यह व्यापार किसी प्रकार से भी नगर के व्यापारियों तक सीमित नहीं था। बहुत से ज़मींदार सीधे सुनारों को ही अपने किराये दिलवाते थे, जबकि अन्य, सम्पूर्ण देश भर से, लोम्बार्ट स्ट्रीट में ऋण लेने आते थे। इन नयी सुविधाओं का मूल्य उन व्यावहारिक विधियों के द्वारा देखा जा सकता है जिनके द्वारा एक अभिजात परिवार चार्ल्स प्रथम के काल में अपना विस्तृत कार्य-व्यवहार संचालित करता था।

१६४१ में, जिस वर्ष कि स्टेफ्फोर्ड को फांसी का दण्ड हुआ, वैडफोर्ड के चतुर्थ अर्ल फ्रांसिस रसल का देहान्त हुआ।[2] ऐसा कोई बैंक नहीं था जिसमें रसल पैसा रख सकता; उस समय ऐसे चैक नहीं थे जिनसे उसके उत्तराधिकारी जमा किया धन निकलवा सकते। किन्तु स्ट्रैंड के बैडफोर्ड हाउस में एक बड़ी मंजूषा रखी थी जहांकि उसकी चालू नकदी परिवार के नौकरों के पास सुरक्षित पड़ी थी। किशोर अर्ल विलियम ने जब इस मंजूषा को इसके स्वामी के रूप में पहली बार खोला, तब उसने उसमें १५५७.१४.१ पाऊंड पड़ा पाया। उसमें से उसने अपने पिता के अन्त्येष्टि संस्कार के

---

[1] चैकों का मूल, या एक मूल, सुनारों अथवा अन्यों को भेजे गये रुक्के थे जिनमें अमुक व्यक्ति को विशेष मात्रा में लिखने वाले के हिसाब से पैसा दिया जाने का आदेश लिखा होता था। सबसे पहले छपे हुए चैक "इंगलैंड के बैंक" ने अट्ठारहवीं शताब्दी के आरंभ में जारी किये थे।

[2] यहां इस संबंध में नीचे जो लिखा जा रहा है उस प्रसंग में द्रष्टव्य मिस स्कोट थॉमसन द्वारा लिखित—
यह पुस्तक सामाजिक इतिहास के विभिन्न पक्षों पर एक उत्कृष्ट कृति है।

लिये तथा अन्य ऋण चुकाने के लिये पैसा दिया। किन्तु उस मंजूषा में बहुत शीघ्र उतना धन पुन: डाल दिया गया : गृह-युद्ध से एकदम पहले के अगले बारह महीनों में इस मंजूषा में ८५०० पाउंड डाला गया, जोकि मुद्रा के आज के मूल्य की दृष्टि से बहुत बड़ी राशि थी। यह धन किरायों से तथा पट्टे नये करने से प्राप्त हुआ था, जबकि एक हज़ार पाउंड लकड़ी, यवरस, चरबी का तेल, भेड़ों का चमड़ा, भूसा तथा रसल के फार्मों की अन्य उपजों के विक्रय से प्राप्त हुआ था।

अर्ल रसल का मुख्य अभिभावक बैडफोर्ड हाऊस में रहता था, सब महत्वपूर्ण सन्दूकों और मंजूषाओं की कुंजियां उसके पास थीं, और वह वास्तव में एक पारिवारिक कोषाध्यक्ष था और स्थायी रूप से लंडन में रहता था। अर्ल को दी जाने वाली सब चीज़ें इस अभिभावक के पास ही आती थीं और वह उन्हें सन्दूकों में रखता और आवश्यकता होने पर वहाँ से निकालता था। १६४१ में सबसे बड़ा एक मद्द डेवोन तथा कार्नवेल की जागीरों से प्राप्त हुआ था, इनसे उस वर्ष २५०० पाउंड की आय हुई थी। इन पश्चिमी जागीरों के लिये—और केवल इन्हीं के लिये—लंडन को पैसा भेजने की एक आधुनिक तथा सरल विधि अपनायी गयी थी। पूर्वी एंग्लिका की जागीरों तथा अन्य भागों ने नकदी के रूप में आय भिजवाई जो डाकुओं और बटमारों से रक्षा के लिये अर्ल के सशस्त्र सेवकों के संरक्षण में लाई गयी। किन्तु एक्सेटर में 'पश्चिम का अभिभावक' नियुक्त था। उसका कार्यालय पश्चिमी राजधानी में रसल घराने का एक पुराना निवास था जहां कि डेवोव तथा कॉर्नवेल की विभिन्न जागीरों से नकदी लेकर आते थे और लेडी डे तथा माइखेलमास लेखाधिकारी को हिसाब देते थे। पश्चिम का अभिभावक एक्सेटर में इस प्रकार से प्राप्त राशि की हुंडी लंडन के लोम्बार्ट स्ट्रीट के थामस वीनर नामक एक सुनार के नाम लेता था। जब वीनर को हुंडी मिलती तब वह बैडफोर्ड हाऊस के अभिभावक को सूचना देता और वह थैलों और वाहकों के साथ पैसा लेने लोम्बार्ट स्ट्रीट जाता और वहां से पैसा लाकर सन्दूकों में रख देता।

किन्तु बैडफोर्ड के अर्ल लोग किसी भी तरह से किरायों के निष्क्रिय संग्रहकर्ता मात्र नहीं थे। अर्ल फ्रांसिस, जिसकी मृत्यु १६४१ में हुई, और उसके पुत्र प्रथम ड्यूक विलियम ने, जिसकी मृत्यु १७०० में हुई, रसल कुल की सम्पत्ति पर एक सौ वर्ष तक स्वामित्व किया और इस रूप में उन्होंने इंगलैंड के लिये अधिक महत्वपूर्ण कार्य किया, बजाय 'पुराने शुभ लक्ष्य' को सतर्क राजनैतिक संरक्षण देने के। उनके जीवन का लक्ष्य लंडन, बैडफोर्ड शायर, दक्षिण-पश्चिम तथा फैन प्रदेश में सुविस्तृत रूप से बिखरी हुई सम्पत्तियों का विकास करना था। उनका अत्यन्त सच्चा और शिष्ट शुद्धाचारवादी धर्म इंगलैंड के एक ग्रामवासी सामन्त के कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर संपादित करने में सहायक ही हुआ, बाधक नहीं हुआ।

फैनलैंड से जलनिकास की व्यवस्था करने का सर्वाधिक श्रेय किसी भी अन्य से

अधिक इन दो को ही मिलना चाहिए। इनके पूर्वजों में से एक ने निम्न प्रदेशों में एलिजावेथ सरकार की सेवा करते हुए आश्चर्य प्रकट किया था कि फैन्लैंड किस प्रकार से पानियों के बीच बना लिया गया, और वह अपने साथ हालैंड से एक इंजिनीयर को फैन्स-स्थित रसलों की जागीरों का निरीक्षण करने के लिये लाया था। यह स्थान पहले थॉर्नी साधुओं के पास था। इस परिवार के मन में इस प्रकार से चालीस वर्ष पूर्व उत्पन्न विचार को पीछे अर्ल फ्रांसिस ने कार्य रूप में परिणत किया। १६३० में उसने एली द्वीप के पास दक्षिणी फैन्लैंड के एक बड़े भाग में जल-निकास के नाले बनाने के लिये 'साहसी लोगों' की एक कम्पनी का निर्माण किया था। अर्ल ने अन्यों से कहीं अधिक बड़ी राशि कम, से कम १००,००० पाउंड, इसमें लगाई। प्रत्येक साझीदार को निकास-मार्ग बनाने के लिये उसके लगाये धन के अनुसार भूभाग दिया गया।

एक अन्य डच इंजिनीयर वर्मूइडन के परामर्श पर यह निर्णय किया गया कि केवल घुमावदार नदियों के पुराने मार्गों को गहरा करना ही पर्याप्त नहीं होगा, इसलिये ७० फुट चौड़ी तथा २१ मील लम्बी एक सीधी नहर ईरिथ से डैन्वर स्लूइस तक बनायी गयी। बीस वर्ष बाद जब एक नवीन बैडफोर्ड नदी इसके सामानान्तर इसकी सहायता के लिये बनवाई गयी तब इसका नाम "ओल्ड बैडफोर्ड रिवर" (पुरानी बैडफोर्ड नदी) रखा गया। औज़ के विभिन्न सुदूर स्थित जलागम स्थानों से निरन्तर एकत्र होते हुए जल अन्ततः इन नयी नहरों में आकर बह जाते, बजाय फैन्लैंड में ही बिखर जाने के, जैसेकि ये अनादिकाल से बिखरते आ रहे थे। मछली पकड़ने, जलपक्षी मारने तथा सरकंडे उगाने में काम आने वाले ये प्रदेश कृषि या चरागाह-योग्य भूमियों में रूपान्तरित हो गये। इस परिवर्तन का फैन प्रदेश के लोगों ने, जिनके पूर्वज अनन्तकाल से एक स्थिर अर्थव्यवस्था में स्थल-जलचरों का द्वैध जीवन जीने के लिये अभ्यस्त थे, विरोध किया। अब, एक ही धक्के के साथ, उनके व्यवसाय समाप्त हो गये। इस व्यवसाय-हानि के लिये उन्हें उचित क्षति-पूर्ति भी मिली या नहीं, इसका निर्णय करने के लिये हमें पर्याप्त साक्ष्य नहीं मिलता। जो भी हो, उन्होंने नहरों के उठान तोड़ने के लिये रात्रि-आक्रमण आरम्भ किये और इस प्रकार से उस कार्य की प्रगति को बहुत हानि पहुँचाई।

गृह-युद्ध के काल में जल-निकास का कार्य रुक गया, अथवा कहना चाहिए, उसको क्षति हुई, क्योंकि शत्रुओं द्वारा किनारों को तोड़ने की क्रिया उस काल की अव्यवस्था के अनुसार और भी तीव्र हो गयी। किन्तु क्रामवेलों के काल में एक महत्वपूर्ण स्थिति तक कार्य पूरा हो गया, जिसमें कुछ योगदान हालैंड तथा स्कॉटलैंड के युद्ध-बन्दियों के श्रम का भी था। इस संरक्षक (क्रॉविल) के राज्य में, जिसने कि इस उपक्रम को प्रोत्साहित किया था, उस प्रदेश की हज़ारों एकड़ भूमियों पर हल चलने

लगे और पशु चरने लगे, जहां कि पहले युगों से सरकंडे पैदा होते थे और जंगली भेड़ें तथा डक पक्षी रहा करते थे। अर्ल ने अपने तथा अपने पिता के महान् उपक्रम का पूरा लाभ उठाया। १६६० के पूर्व उसने रसल जागीर के सम्पूर्ण ऋण चुका कर सम्पत्तियों को बंधक से मुक्त करा लिया, जिनमें से बहुत से ऋण तो इस जल-निकास बनाने के लिए ही लिए गए थे।

शान्ति-स्थापना के समय फैन की जल-निकास व्यवस्था, जिस भी सीमा तक यह पूर्ण हुई थी, एक शैल्पिक तथा आर्थिक सफलता प्रतीत हो रही थी। किन्तु शताब्दी के समाप्त होने से पहले ही कुछ अत्यन्त भयानक कठिनाइयां उत्पन्न हो गयी थीं, जिनका कारण मनुष्य न होकर प्रकृति थी। "आरम्भ में नयी नहरों से आने वाले पानी तेज़ी से बहते थे और औस तथा नेने नदियों के मुहानों को खुला रखते थे, किन्तु समय बीतने के साथ-साथ सागर के लिये ये निकास-मार्ग बन्द हो गये। इसके अतिरिक्त, नयी व्यवस्था के द्वारा सुखायी गयी धरती की सतह अप्रत्याशित रूप से गिरने लगी, काली और पोली भूमि सूखने पर सिकुड़ने लगी, जैसे निचोड़ देने पर स्पंज सिकुड़ जाता है। परिणाम यह हुआ कि बैडफोर्ड नदी तथा अन्य नहरें इसी प्रकार की हालैंड नहरों के समान आसपास के प्रदेश से ऊपर निकल आईं। इस प्रकार से नीची भूमियों पर से पानी खींच कर ऊँचे तालों में और फिर वहां से और भी ऊँची नहरों में पानी डालने की विधि खोजनी पड़ी जहां से पानी सागर में पहुँचाया जाता। सम्पूर्ण अट्ठारहवीं शताब्दी में यह एक समस्या रही जिसका आंशिक समाधान पानी उठाने के लिये सैंकड़ों पवन-इंजन लगा कर किया गया, किन्तु उससे समस्या का पूर्ण समाधान नहीं हुआ। इसका समाधान उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ जबकि पवन-इंजनों के स्थान पर भाप के इंजन लगे।

अट्ठारहवीं शताब्दी में भी, जबकि जल-निकास की कठिनाइयां सर्वाधिक थीं, दक्षिणी फैनलैंड में औस तथा नेने की घाटियों में भूमि को जोताई के नीचे लाने के कार्य की सफलता इतनी अधिक हुई कि उसी प्रकार की योजनाएं उत्तरी फैनलैंड में क्रियान्वित की गयीं और वैल्लैंड, विदम, स्पाल्डिंग, बोस्टन तथा टैट्टरशैल द्वारा उनकी सिंचाई की गयी। जहां-जहां जल-निकास हुआ वहां-वहां पीट के सिकुड़ने से नीचे की उपजाऊ मिट्टी ऊपर की सतह के पास आ गयी। अट्ठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दियों में भूमि को खाद देने के लिये इस मिट्टी की बार-बार खुदायी की गयी, अथवा पीट के समाप्त हो जाने से यह पूरी तरह से भूमि की सतह पर ही आ गयी। आज यह फैनलैंड इंगलैंड की सर्वोत्तम कृषि-योग्य भूमि है।

इस प्रकार से, प्राकृतिक कठिनाइयों के बावजूद, जोकि अभी तक पूरी तरह से हटाई नहीं जा सकी है, एक महान् कार्य सम्पन्न किया गया था और एक नवीन उपजाऊ प्रदेश, जोकि ८० मील लम्बा तथा १० से ३० मील चौड़ा था, देश की कृषि-योग्य भूमि

में जोड़ा गया। यह प्रदेश इंगलैंड की पुरानी भूमियों के समान असंख्य किसानों और जमींदारों द्वारा युगों से वीरान भूमियों में से चप्पा-चप्पा अपना क्षेत्र बढ़ाने की प्रक्रिया से नहीं प्राप्त किया गया था। फैन्लैंड में प्रकृति के ऊपर विजय पूंजी के संचय तथा उसको बृहत् स्तर के और दीर्घ-सूत्री उपक्रमों में लगाने के साहस और विवेक के द्वारा प्राप्त की गयी थी, जिनके कि प्रतिफल के लिये बीस या उससे भी अधिक वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी और जिनमें महत् हानियां होने की भी संभावनाएं पूरी रहती थीं। फैन्लैंड की जल-निकास व्यवस्था एक पुरानी कहानी है किन्तु यह आधुनिक आर्थिक विधियों का एक आरम्भिक उदाहरण है, और इस दृष्टि से इंगलैंड के सामाजिक इतिहास में इसकी विशेष चर्चा उचित ही है।[1]

स्टुअर्ट युग के आरंभिक कालों की ओर लौटने से पूर्व हम रसल घराने के आर्थिक इतिहास की—फैन्लैंड में उनकी इतनी अच्छी सफलता के बाद के चरणों की—कुछ और चर्चा करेंगे। इस घराने की समृद्धि की नींव बहुत पहले चासर के काल में वीमाउथ क्वे से मारकोनी को होने वाले व्यापार के द्वारा रखी गयी थी। तीन सौ वर्ष बाद, विलियम तृतीय के दिनों में, रसल लोग ईस्ट इण्डिया कंपनी के व्यवस्थापक परिवार के साथ विवाह-सम्बन्ध हो जाने के कारण सागर पार के देशों के साथ व्यापार में प्रवृत्त हुए। बैडफोर्ड का प्रथम ड्यूक, जिसने कि १६४१ में अपने पिता से अर्ल पद तथा सम्पत्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त किया था और जिसने कि फैन्लैंड की जल-निकास-व्यवस्था को सफलता से कार्यान्वित होते देखा था, शताब्दी के अन्त में एक सम्मानपूर्ण और सम्पन्न वार्धक्य का जीवन बिता रहा था, किन्तु वह अपने प्रिय पुत्र विलियम का देहान्त हो जाने से बहुत ही विषादपूर्ण जीवन बिता रहा था। विलियम राजनैतिक विचारों में अपने पिता तथा पितामह से अधिक उग्र था, परिणामतः वह एक 'उत्तम शुभ आदर्श' के लिये संघर्ष करते हुए कुल्हाड़े से बलि हो गया था। इसके बारह वर्ष बाद वृद्ध ड्यूक ने अपने पौत्र तथा उत्तराधिकारी का विवाह ईस्ट इण्डिया कंपनी के प्रशासक जोसिआह चाइल्ड की पौत्री तथा स्ट्रीथम के जोन् हाउलैंड की पुत्री एलिजाबेथ से किया। दूल्हे की आयु तब चौदह वर्ष की तथा दुलहिन की आयु तेरह वर्ष की थी। यह एक बहुत ही भव्य-विवाह-समारोह था जिसमें अनेक रथ भी लाये गये थे। विवाह संस्कार बिशप बर्नेट ने करवाया। किन्तु भोज के बाद एक कोहराम मच गया—"दूल्हा और दूलहिन गायब थे। वे भोज के बाद एक साथ खेलने के लिये खिसक गये थे, और खेल-खेल में उस किशोरी की पोशाक में लगा कीमती झालर बुरी तरह से फट गया था। वह एक खलिहान में छिपी मिली, और उसका

---

[1] एच. सी. डर्बी, हिस्टोरिकल ज्योग्रोफी आफ इंगलैंड, अ. XII तथा उसकी पुस्तक दि ड्रेनिंग ऑफ़ फैंस्, १८७०, ग्लेडी की स्कॉट थाम्सन, लाइफ ऑफ़ ए नोबल हाउस होल्ड।

नया पति विवाह-मंडप की ओर ऐसे लौटता हुआ मिला, मानो उसे कुछ पता ही नहीं हो।"

और इस प्रकार से, इस बाल-विवाह के द्वारा, जोकि समय वीतने के साथ एक सफल विवाह प्रमाणित हुआ, रसल लोग ईस्ट इण्डिया कंपनी के भीतर प्रविष्ट हो गये। वहां से वे खाली हाथ नहीं लौटे। जिस प्रकार उन्होंने पहले अपना पैसा फैन की जल-निकास योजना में लगाया था उसी प्रकार से उन्होंने रोदरहिथे में नये गोदी बाड़े (पोत-स्थान) बनवाने में तथा अन्तरीप की यात्रा के लिये बड़े पोत बनवाने में लगाया। एक पोत का नाम टेविस्टोक रखा गया था। दूसरा पोत, जिसका नाम स्ट्रीथम रखा गया और जिसे वृद्ध ड्यूक ने अपनी मृत्यु के वर्ष—१७०० ई० में—बनवाया था, इतने दीर्घ काल तक यात्राओं में काम आया कि १७५५ तक में वह क्लाईव को भारत वापिस लाया था।

यदि अट्ठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड के शासन में बड़े घरानों का भाग बहुत अधिक था तो वह उचित ही था, यह उन्होंने अपने कार्यों से अर्जित किया था। राजनीति तथा प्रशासन के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी अपने बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यो से उन्होंने जल और स्थल में अपने देश के विकास के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये। उनके मनों में व्यापार के विकास के लिये उतनी ही लगन थी जितनी कि कृषि के विकास की, और उनकी धमनियों में व्यापारियों तथा वकीलों का रक्त उतना ही प्रवाहित हो रहा था जितना सैनिकों और ग्रामीण जमींदारों का। इसके विपरीत, फ्रांस के अभिजात वंशीय लोग, जिन्हें कि अधिक विशेषाधिकार प्राप्त थे, जिनमें एक कर-मुक्ति था, एक ऐसी जाति के लोग थे, जिनका परिवेश संकुचित था और परिणामतः जिनके कार्य सीमित और दृष्टिकोण संकुचित थे।

× × ×

अब हमें उस पीढ़ी की ओर लौटना चाहिये जो राज्ञी एलिजाबेथ की मृत्यु के एकदम पश्चात् आई। मूल्यों में हो रही वृद्धि ने, जोकि मन्द गति से किन्तु निरन्तर हो रही थी, जिसका मुख्य कारण यूरोप में स्पेन-अधिकृत अमरीकी कानों से चांदी का निरन्तर आगमन था, जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के लिये केवल मात्र अपने राजस्व के सहारे रह सकना असंभव कर दिया और उनकी पार्लियामेंट उनकी कमी-पूर्ति केवल कुछ राजनैतिक तथा धार्मिक शर्तो पर ही करने को तैयार थी और उन शर्तों को स्टुअर्ट राजा लोग स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। और मूल्यों की वही वृद्धि, जोकि नियत आय वाले अथवा दैनिक मज़दूरी पाने वाले लोगों के लिये विशेष रूप से कष्टकर थी, किन्तु उद्यमी जमींदारों तथा योमैनों, विशेष रूप से व्यापारियों के लिये यह बहुत लाभकर थी—और ये ही वे वर्ग थे जोकि धार्मिक तथा राजनैतिक कारणों से राजतन्त्र के विरुद्ध हो रहे थे। इन आर्थिक कार्यों का गृह-युद्ध लाने तथा इसका निर्णय करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा।

राजा की आर्थिक कठिनाइयों का राज्य की आर्थिक नीति पर बुरा प्रभाव पड़ा। हमने पीछे भी देखा है कि किस प्रकार से उत्पादन तथा वितरण के एकाधिकार प्रदान करने के द्वारा व्यापार पर नियंत्रण करने की राजा की शक्ति का प्रयोग जनता के लाभ के लिये न होकर उसकी अपनी आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने के लिये हुआ। ऐसी नीतियां व्यापार के लिये घातक थीं तथा राजनैतिक दृष्टि से राजतन्त्र की जनप्रियता के लिये हानिकारक थीं।

किन्तु सामाजिक तथा आर्थिक नीति की एक परंपरा को—और वह थी निर्धन कानून—जोकि एलिजाबेथ के काल में आरंभ की गयी थी, जारी रखना तथा उसे व्यापकतर बनाना ऐसा कार्य था जिसके लिये राजा को श्रेय मिलना उचित था। इसी प्रकार से प्रशंसास्पद था प्रिवी काउंसिल-प्रशासन-व्यवस्था का होना, जिसके साथ कि स्ट्राफोर्ड तथा लॉड के नाम संयुक्त हैं। आंग्ल निर्धन कानून के इतिहासकार ने लिखा है कि यूरोप में केवल इंगलैंड में ही निर्धनों को सहायता देने की एक उपयुक्त व्यवस्था की अतिजीविता का कारण :

"मुख्यत: यह था कि इंगलैंड में एक ओर जबकि प्रिवी काउंसिल थी, जोकि निर्धनों सम्बन्धी मुआमलों में सक्रिय रहती थी, तो दूसरी ओर ज़िला प्रशासन तथा नगरपालिकाओं के अधिकारी थे, जोकि सदैव प्रिवी काउंसिल के आदेश-पालन के लिये तत्पर रहते थे। एलिजाबेथ के राज्य में भी प्रिवी काउंसिल कभी कभी निर्धनों को सुविधाएं देने के लिये हस्तक्षेप करती थी, किन्तु ये केवल वर्षों दीर्घ अभाव और कष्ट के अत्यन्त अस्थायी निदान मात्र होते थे। किन्तु १६२९ से १६४० तक उन्होंने इस दिशा में निरन्तर प्रयत्न किये और ये प्रयत्न आदेशों की पुस्तक (दि बुक ऑफ़ आर्डर्स) के द्वारा कम से कम बच्चों तथा पंगु निर्धनों सम्बन्धी कानून को उचित रूप से कार्यान्वित भी करवा सके। प्रिवी काउंसिल पुष्ट शरीर वाले निर्धनों को पूर्वी ज़िलों के अनेक भागों में तथा कुछ अन्य ज़िलों के अनेक भागों में कार्य देने के लिये शान्ति-न्यायाधिकारियों को प्रेरित कर सकी। कार्य का यह अवसर या तो सुधार-शालाओं में होता था या फिर पादरी-प्रदेशों में होता था। ऐसा प्रतीत होता है कि आदेशों ने विरोध को जन्म नहीं दिया। दोनों पक्षों के लोग प्रिवी-काउंसिल को अपना कार्य-विवरण भिजवाते थे, किन्तु निर्धन कानून को लागू करने के लिये शुद्धाचारवादी ज़िलों में इंगलैंड के अन्य किसी भी भाग से अधिक स्फूर्ति और प्रेरणा के साथ कार्य हुआ।

आगे के अध्यायों में हमें अट्ठारहवीं शताब्दी में निर्धन-कानून प्रशासन के गंभीर दोषों को देखने का अवसर भी मिलेगा। इनमें से कुछ तो प्रिवी काउंसिल द्वारा स्थानीय दंडाधिकारियों तथा पादरी-प्रदेशों के अधिकारियों पर लागू किये गये नियंत्रणों में शिथिलता आ जाने के कारण भी उत्पन्न हुए। यह एक अत्यन्त आवश्यक केन्द्रीय अधिकार-सत्ता का ह्रास था जिसे कि लोकतन्त्रीय सरकार तथा वैधानिक स्वतंत्रता को

प्राप्त करने के लिये एक बड़ी कीमत के रूप में समर्पित किया गया। किन्तु निर्धन कानून ने राजकीय उच्चतम स्वत्वों के दिनों में ही इंगलैंड में इतनी गहरी जड़ें पकड़ ली थीं कि यह पार्लियामेंट काल में भी देश की एक राष्ट्रीय विशेषता के रूप में बचा रहा।

इंगलैंड में पहले पुलिस का कोई व्यवस्थित संगठन नहीं था; इसे व्यवस्थित रूप १८३० में सर रोबर्ट पील ने दिया। स्थिति बड़ी विचित्र और खेदपूर्ण थी और इसके बड़े अवांछनीय परिणाम होते थे। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि समाज किसी ऐसी सबल नागरिक संस्था के संरक्षण के बिना भी, जोकि भीड़ के नियंत्रण तथा चोरी और अपराधों को पकड़ने के लिये सुशिक्षित होता, बना कैसे रहा। युगों तक बिना किसी पुलिस आदि के समाज का बना रहना इस बात का प्रमाण है कि हमारे पूर्वज औसत रूप से ईमानदार थे और कि, दोषों के होते हुए भी, निर्धन-कानून बहुत अच्छा था।

निर्धनों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। राज्य का यह लोक-हितार्थ कार्य ऐसे किसी विचार से प्रभावित नहीं होता था। निर्धन-कानून-व्यवस्था के अनुसार निकम्मों (कार्य-अयोग्यों) को सुधार-शाला में भेजा जाता था और शराब पीने वालों को पकड़ कर बन्द कर दिया जाता था। शुद्धाचारवादियों द्वारा अपने साथी नागरिकों की जीवन-विधि में कुछ हस्तक्षेप, जोकि क्रॉमवेल के शासन में बहुत ही असह्य हो गये थे, सब धार्मिक संप्रदायों तथा सब राजनैतिक मतों के लिये एक प्रकार के ही थे।

आज के युग में अपराधों (राज्य द्वारा दंडनीय कृत्यों) तथा पापों (राज्य-न्याय की सीमा में नहीं आने वाले कृत्यों) के बीच किया जाने वाला स्पष्ट विवेक उस समय अभी लोगों को पर्याप्त स्पष्ट नहीं था। उस समय अभी मध्य युगीन धारणाएं अति-जीवित थीं और 'पापों' के दंड देने के लिये चर्च के न्यायालय विद्यमान थे, यद्यपि उनके अधिकार काफी कम कर दिये गये थे। वास्तव में स्कॉटलैंड में प्रेस्बिटेरियन चर्च यौन अपराधों के लिये इतने कठोर प्रायश्चित्तों का विधान करता था कि रोमन चर्च भी पहले कभी इतने कठोर दंड नहीं दे सका था। लॉड के युग के इंगलैंड में भी चर्च के न्याया-लयों ने भी वैसा ही कुछ करने का प्रयत्न किया था, किन्तु स्कॉटलैंड के न्यायालयों से कहीं अधिक सतर्कता के साथ; और इस सतर्कता के बावजूद इसके परिणाम भयानक हुए। 'उन्मुक्ततावादी' लोग शुद्धाचारवादियों के साथ बिशप-न्यायालयों के विरोध में सम्मिलित हो गये, यद्यपि इन दोनों के उद्देश्य भिन्न भिन्न थे। 'उन्मुक्ततावादी' तो जार-कर्म अथवा कुमारी-गमन के दंड के लिये सफेद चादर के साथ सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किये जाने के विरुद्ध थे, इसके विपरीत शुद्धाचारवादी लोग बिशपों से भी अधिक 'पापों' के दंड देने के पक्षपाति थे; किन्तु वे चाहते थे कि यह दंड देने का अधिकार बिशप को नहीं उन्हें हो। परिणाम यह हुआ कि इंगलैंड ने पहले तो बिशपों का जुआ उतारा

और उसके याद शुद्धाचारवादियों का, और 'पापो' का दंड पुनस्स्थापना के बाद दड-विधान में से समाप्त हो गया और सीमा के दक्षिण मे उसके वाद कभी दोबारा यह व्यवहार में नही आया।

आंग्ल शुद्धाचारवादी शासन के अधीन पापो के दंड देने का अधिकार चर्च के न्यायालयों को नही था बल्कि साधारण न्यायालयो को ही था। १६५० मे एक अधिनियम पारित किया गया था जिसके अनुसार जार-कर्म का दंड मृत्यु नियत किया गया, और यह अत्यन्त क्रूर दंड दो-तीन अभियोगो मे वास्तव मे दिया भी गया था। इसके बाद शुद्धाचारवादी ज्यूरियो ने भी यह दड देने से इन्कार कर दिया, और परिणामतः व्यवहार में यह अधिनियम समाप्त हो गया। किन्तु इस काल मे जनमत ने द्वन्द्व-युद्ध की प्रथा को समाप्त करने के लिये कानून बनाने का समर्थन किया, और इन कानूनो को अधिक सफलता मिली, किन्तु पीछे 'पुनस्स्थापना' ने वीरतापूर्ण हत्या (ब्रेवो) की स्वतन्त्रता पुनः प्रदान कर दी। ऐसे सैनिकों की नियुक्ति की गई थी जोकि लंडन के घरो मे जाकर यह देख सकते थे कि विश्राम-दिवस (सब्बाथ) का सही पालन हो रहा या नही, तथा कि पार्लियामेट द्वारा आदिष्ट उपवास किये जा रहे है या नही, और ये सैनिक रसोई घर मे पडे मासादि को उठा ले जाते थे। इसके विरुद्ध बहुत तीव्र रोष फैला। इसी प्रकार से, अनेक स्थानों पर मई दिवस पर नाचने के लिये गाड़े गये स्तम्भ काट दिये गये तथा रविवार के दिन शाम के खेल बन्द कर दिये गये। किन्तु सब्बाथ के दिन खेलो पर प्रतिबन्ध पुनस्स्थापना के अनेक दिन बाद तक बना रहा। १६६० की आग्ल चर्च (एंग्लिकन चर्च) तथा उदार आन्दोलन की प्रतिक्रिया के बावजूद शुद्धाचारवादियों ने इंगलैंड के रविवारों पर अपना वेदना-चिह्न स्थायी रूप से छोड़ दिया।

जादूगरनियो की हत्या का राक्षसीय उन्माद, जोकि धार्मिक युद्धो के दिनो मे कैथोलिकों और प्रोटेस्टेटो दोनो मे समान रूप से विद्यमान था, दूसरे देशो की अपेक्षा इंगलैंड में कम भयानक था। किन्तु सत्रहवी शताब्दी के प्रथमार्ध मे यह उन्माद घोरतम स्थिति में था। इसका कारण था सब लोगो का, शिक्षितों समेत, जादू-टोने मे विश्वास होना। यह उन्माद केवल उस समय कम हुआ जबकि शासक-वर्ग मे सत्रहवी शताब्दी के अन्तिम भाग मे तथा अट्ठारहवी शताब्दी के आरम्भ मे इसमे सन्देह उत्पन्न हुआ और उन्होने जादूगरनियो की हत्या को रोका; यद्यपि सामान्य लोगों का विश्वास उसमे बना रहा। इंगलैंड मे दो निकृष्टतम काल थे, एक तो अन्ध विश्वासी जेम्स प्रथम का काल, और दूसरा दीर्घ पार्लियामेट का काल (१६४५-१६४७) जबकि पूर्वी जिलो में दो सौ जादूगरनियो को मारा गया था, विशेषत. मैट्थ्यू हॉप्किंस धार्मिक अभियानो मे। इस मूर्खतापूर्ण क्रूरता को रोकने का श्रेय चार्ल्स प्रथम की सरकार को है।

शान्ति-स्थापना से पूर्व बहुत कम ही लोग ऐसे मिल सकते थे जो ईसाई धर्म की चामत्कारिक बातों में किसी न किसी रूप मे विश्वास नही करते थे। किन्तु ऐसे लोग

बहुत थे जो पादरियों के दंभ से, चाहे वे आंग्ल चर्च के हों या शुद्धाचारवादी हों, बहुत घृणा करते थे, स्वयं किसी धर्म में उनकी कोई आस्था नहीं थी। हेनरी अष्टम् के राज्य में मध्य युगीन चर्च के ध्वंस में पादरी-विरोधवाद एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति था। उसकी लड़की के दीर्घ राज्य-काल में इस विरोध ने स्पेन के धार्मिक-दमन के विरुद्ध राष्ट्रीय निश्चय को दृढ़ किया जबकि देश में उन लोगों का एलिजाबेथ के चर्च के नम्र तथा शान्त पादरियों से कोई झगड़ा नहीं था। किन्तु जब चार्ल्स प्रथम के संरक्षण में बिशपों तथा पादरियों ने सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन में पुनः अपना सिर उठाया और मध्य युगों के समान एक बार फिर राज्य के पदों पर अधिकार किया तो लौकिक जन इसके विरुद्ध सतर्क हो उठे। बड़े अभिजात लोग, जोकि शासन-सभाभवन तथा राज्य दरबार में पादरियों की उपस्थिति से क्रुद्ध थे, तथा लंडन की आक्रोशपूर्ण भीड़, जोकि पैलेस यार्ड (महल के आंगन) में बिशपों की उपस्थिति से क्रुद्ध थी, दोनों के पादरी-विरोधवाद ने शुद्धाचारवादियों से समझौता कर लिया (१६४०-४१) और इस समर्थन के कारण दीर्घ पार्लियामेंट लॉड चर्च को तोड़ सकी।

पार्लियामेंट की सेनाओं की विजय के बाद 'साधुओं का राज्य' आया। ये लोग विचित्र प्रकार की साम्प्रदायिक भाषा का प्रयोग करते थे, साधारण लोगों के जीवन में हस्तक्षेप करते थे और उन्होंने नाटक-घर और खेल बन्द कर दिये थे। इन कारणों से उद्दीप्त पादरी-विरोधी भावना की इतनी भयानक प्रतिक्रिया हुई कि यह १६६० की पुनस्स्थापना का एक मुख्य कारण कही जा सकती है। एक पीढ़ी बाद, १८८८ में, इसी के कारण रोमन-विरोधी क्रान्ति हुई। अनुगामी अनेक पीढ़ियों तक रोमन-विरोधी घृणा के साथ-साथ शुद्धाचारवादियों के विरुद्ध घृणा भी बहुत उग्र रही और इसने बिहार-ध्वंसक जनसाधारण तथा उच्च वर्ग में भी बहुतों को अभिभूत किया।

क्रामवेल-क्रान्ति के कारण तथा उद्देश्य सामाजिक तथा राजनैतिक नहीं थे; यह उन लोगों के धार्मिक तथा राजनैतिक विचारों और आकांक्षाओं का परिणाम थी जिनकी समाज को बदलने अथवा सम्पत्ति के पुनर्वितरण में कोई रुचि नहीं थी। इसमें सन्देह नहीं कि लोग राजनीति अथवा धर्म में जो एक या दूसरे पक्ष का अवलंबन करते थे वह कुछ अवस्थाओं में एक सीमा तक सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों से भी निर्धारित होता था; किन्तु इस सम्बन्ध में स्वयं वे लोग पूरी तरह से सचेत नहीं होते थे। राजा के समर्थकों में सामन्तों तथा ज़मींदारों की संख्या अधिक थी और पार्लियामेंट के समर्थकों में छोटे योमैन किसानों तथा नगरवासियों की। किन्तु नगरों तथा ग्रामों में भी प्रत्येक वर्ग अपने आप में विभाजित था।

इंगलैंड में १६६० में जो आर्थिक तथा सामाजिक विकास की स्थिति प्राप्त हो चुकी थी वह उन राजनैतिक तथा धार्मिक आन्दोलनों की कारण नहीं थी जोकि एक स्फोट के साथ भास्वर प्रकाश के रूप में दीप्त हो उठे थे, बल्कि उनके आविर्भाव के

लिये एक आवश्यक प्रागपेक्षा थी। पिम, हेम्पडन तथा अन्य संसत्समर्थक नेताओं (पार्लियामेंटरी लीडर्स) का राजतन्त्र से सत्ता छीन लेने का आश्चर्यजनक प्रयत्न तथा सैंकड़ों सदस्यों की विवादरत संसत् के माध्यम से राज्य करने की योजना, और वह सफलता जो इस साहसपूर्ण क्रान्तिकारी विचार को राजनीति तथा युद्ध में प्राप्त हुई, यह न केवल इसलिये ही हुई कि इसके पीछे पुरानी संसदीय परम्परा विद्यमान थी बल्कि इसलिये भी कि एक ऐसा शक्तिशाली बुर्जुआ वर्ग—जमींदारों और योमैन किसानों का—विद्यमान था जो धार्मिक तथा सामन्तीय नियंत्रण से बहुत देर से मुक्ति पा चुका था और राज्य-संचालन में राजतंत्र के साथ भाग ले रहा था। इसी प्रकार से बैप्टिस्ट और कांग्रेगेशनिस्ट (दो धार्मिक सम्प्रदाय) जैसे अनेक सम्प्रदायों का तीव्र गति से राष्ट्रीय महत्व प्राप्त करना केवल ऐसे देश तथा समाज में ही सम्भव था जिसमें कृषक तथा शिल्पी वर्गों में पर्याप्त व्यक्तिगत तथा आर्थिक स्वतन्त्रता विद्यमान थी तथा जिसमें लगभग एक शताब्दी से बाईबल का व्यक्तिगत अध्ययन धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग हो चुका था और जन-साधारण की कल्पना और विचार को उद्दीप्त कर रहा था। यदि कहीं उस समय जमींदार-प्रासादों में बाईबल की प्रतियोगिता के लिये समाचार-पत्र, पत्रिकाएं तथा उपन्यास आदि होते तब इंगलैंड में कोई शुद्धाचारवादी क्रान्ति नहीं हुई होती—और जोन् बुन्यान ने कभी पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस (तीर्थ-यात्रियों की प्रगति) पुस्तक नहीं लिखी होती।

वास्तव में स्वयं शुद्धाचारवादी क्रान्ति भी, अपनी मूल प्रेरणा में, 'तीर्थ यात्रियों की प्रगति' ही थी। बुन्यन ने लिखा था, "मैंने एक सपना देखा कि एक मनुष्य एक स्थान पर गूदड़ी पहने और अपने घर के दूसरी ओर मुँह किये, हाथ में एक पुस्तक लिये तथा पीठ पर बहुत बोझा उठाए खड़ा है। मैंने उसकी ओर देखा और पाया कि वह उस पुस्तक को खोल कर पढ़ने लगा, पढ़ते हुए वह रोने और कांपने लगा, और देर तक अपने को इस स्थिति में नहीं सँभाल पाकर वह करुण क्रंदन कर उठा : "मुझे क्या करना चाहिए !"

हाथ में बाईबल तथा पीठ पर पापों का बोझ उठाए हुए यह एकान्त व्यक्ति केवल जोन् बुन्यन ही नहीं था, यह इंगलैंड के शुद्धाचारवादी युग का प्रतिनिधि एक शुद्धाचार-वादी व्यक्ति था। जब नेस्बाई के पीछे के वर्षों में बुन्यन अभी युवक था उस समय शुद्धाचारवाद शक्ति तथा उत्साह के चरम उत्कर्ष पर था और यह युद्ध, राजनीति, साहित्य तथा सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन सभी को व्याप्त कर रहा था। किन्तु इस यंत्र की भीतरी धमनी, जोकि इस सम्पूर्ण अद्भुत शक्ति का राष्ट्रीय जीवन के आर-पार वहन कर रही थी,

पुराने राजतंत्रों को
नये सांचे में ढालने के लिये,

वह वही एक एकान्त प्रतिभा थी जिसका चित्र "तीर्थ यात्री की प्रगति" के पहले अनुच्छेद में हमें मिलता है—आंखों में आँसु भरे मुक्ति का अन्वेषक एक दीन व्यक्ति, जिसके पथ-प्रदर्शन के लिये बाईबल के सिवाय और कोई सहारा नहीं था। यह व्यक्ति अनेक होकर, संगठित होकर, सैन्यरूप धारण कर एक अद्‌भुत शक्ति बन गया था—ध्वंस के लिये भी और निर्माण के लिये भी।

किन्तु यह समझना भूल होगी कि व्यक्तिगत तथा पारिवारिक धर्म का यह उत्साह केवल शुद्धाचारवादियों तक ही सीमित था। वर्ने घराने के स्मृति-लेखों तथा उस काल के अन्य अनेक अभिलेखों से पता चलता है कि एक सैनिक का परिवार उतना ही धार्मिक था जितना कि शुद्धाचारवादी का, यद्यपि इसमें जीवन की प्रत्येक क्रिया के लिये किसी दुरूह शास्त्र-मत की अनुमति खोजने की वैसी प्रवृत्ति नहीं थी जैसी शुद्धाचार-वादियों में। बहुत से छोटे ज़मींदार और किसान, विशेषत: इंगलैंड के उत्तरी तथा पश्चिमी भागों में, जोकि अत्यन्त नम्र तथा शालीन थे, (जैसेकि एलिसथोर्वटन) ऐसा अनुभव करते थे मानों इंगलैंड का उस समय स्थापित किया गया चर्च इतना उत्तम, शुद्ध तथा महिमामय था कि मानो श्रद्धा तथा सिद्धान्त की उत्तमता में धर्मदूतों के काल से अन्य कोई इसके समतुल नहीं था। जैसाकि ऐलिस के जीवनी-लेखक ने लिखा था :

"उसके अपने परिवार के धार्मिक जीवन के विवरण से यह स्पष्ट है कि इंगलैंड का चर्च होने का अर्थ किसी भी प्रकार से धर्म को उपेक्षा से देखना नहीं था। सारा परिवार एक छोटी घंटी से तीन वार प्रार्थना पर बुलाया जाता था—प्रातः छः बजे, मध्याह्नोत्तर दो बजे तथा रात्रि को नौ बजे। (वैल्लेस नोटेस्टीन, इंगलिश फोक पृ० १८६)।

अनेक परिवारों में, जोकि समाज के सब स्तरों से आए थे और जिन्होंने चर्च तथा प्रार्थना-पुस्तक के लिये संघर्ष किया था तथा कष्ट उठाए थे, इन संघर्षों के कारण इंगलैंड के चर्च के प्रति ऐसी श्रद्धा का संचार हुआ जो गृह-युद्ध के पूर्व कभी अनुभव नहीं किया गया था। चर्च के प्रति यह श्रद्धा, जिसेकि लॉड ने एक नया रूप दिया था, उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक जारी रही। उन्नीसवीं शताब्दी में आकर यह पारिवारिक तथा वैयक्तिक पवित्रता के साथ तथा बाईबल के अध्ययन के साथी जोकि सभी श्रद्धालु प्रोटेस्टेंट करते थे, सम्मिलित हो गया।

किन्तु "तीर्थयात्री की प्रगति" में प्रोटेस्टेंट धर्म की सर्वोत्तम व्याख्या के अतिरिक्त भी बहुत कुछ है :—तीर्थ-यात्रियों की जीवन-चर्या, प्रार्थना-पुस्तक पढ़ने वालों का उन गीतों से भाव-विभोर होना, ग्राम-प्रदेश का विवरण, तथा लोगों के मधुर तथा हास्य-विनोदपूर्ण वार्तालाप। यह इज़ाक वाल्टर के एंग्लर का इंगलैंड था। अभी भी यह

बहुत हद तक शैक्सपीयर का इंगलैंड था, यद्यपि यह काल मानसिक संघर्ष का काल था, जिससे शैक्सपीयर काल का इंगलैंड उससे कहीं कम सन्तप्त था जितना कि बुन्यन काल का इंगलैंड। किन्तु मानवीय पृष्ठभूमि में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। हमें इस बात में कोई विसंगति नहीं देखनी चाहिए कि ऑटोलाइक्स ने पगडंडी के एक ओर तीर्थ-यात्रियों को प्रदर्शनार्थ बर्तन रखे, अथवा फाल्स्टाफ ने बर्डोल्फ को भेजा कि वह तीर्थ-यात्रियों को रास्ते के एक ओर हटाने को तथा विशेष सार्वजनिक स्थान पर उसके साथ मिलने को कहे।

जिस प्रदेश में से होकर तीर्थ-यात्री निकलते थे, और वे मार्ग जिन पर वे चलते थे, ग्राम प्रान्त में थे—इंगलैंड के मध्य-प्रदेशों के मार्ग, जिनके साथ कि बुन्यन अपने यौवन-काल में परिचित था। दलदलें, लुटेरे, तथा मार्गों की अन्य दुर्घटनाएं तथा खतरे सत्रहवीं शताब्दी के इंगलैंड की यात्राओं में बहुत सहज थे। दैत्योपम सरीसृपों (ड्रैगंस) तथा विशालकाय राक्षसों आदि का प्रश्न अवश्य ही उपस्थित नहीं होता, किन्तु बुन्यन को इनके वृत्तांत भी साउथेम्पटन के सर बीविस से तथा अन्य पुरानी अंग्रेजी ग्राम-गाथाओं तथा पुराण-कथाओं आदि से प्राप्त हुए, थे बजाय समाचार-पत्रों के ठीक-ठीक समाचारों की बाढ़ से, जिसने कि आधुनिक युग की कल्पनाशीलता को भारी आघात पहुँचाया है।

उन युगों में मनुष्य को निज, प्रकृति तथा ईश्वर के उपसंग में निर्बाध रहने का पर्याप्त अवसर था। जैसाकि ब्लैक ने लिखा है :

जब मानव और पर्वत मिलते हैं तब अनेक महत् कार्य होते हैं,
ये बाज़ारों में कंधे से कंधा भिड़ाती भीड़ में सम्पन्न नहीं होते।

प्रकृति के साथ मानव के प्रशान्त सम्पर्क के परिणामस्वरूप होने वाली उपलब्धियों और गुणों का यह काव्यमय आख्यान न केवल पर्वतों के सम्बन्ध में ही सत्य है, जिन्होंने कि वर्ड्स्वर्थ के काव्य को अनुप्राणित किया था, बल्कि फेनलैंड तथा कैम्ब्रिजशायर के विस्तृत क्षितिजों के सम्बन्ध में भी सत्य है जिनके ऊपर कि उदय और अस्त होते सूर्य की छवि तथा मेघाच्छादित आकाश की भव्यता को लोग रहस में देखते थे—जैसे ज़मींदार क्रामवेल तथा उसके योमैन कृषक। पूर्वी एंग्लिया के विस्तृत प्रदेशों में इनमें से प्रत्येक व्यक्ति ने, सैन्य-दल में प्रवेश करने से पूर्व, अपने आपको एकान्त ईश्वर के साथ अनुभव किया था। यही बात चरागाहों, निकुंजों तथा बैडफोर्ड शायर के वनों के लिये भी सत्य है, जिनकी गोदी में कि बुन्यन बड़ा हुआ और जिनमें उसने अपने यौवन के आदर्शों और स्वप्नों को प्राप्त किया।

सौभाग्यवश, अधिकांश सामान्य लोग, जो शैक्स्पीयर ग्राम-प्रान्त में भेड़ें पाल रहे थे, अथवा जो इज़ाक वाल्टन के झरनों के आसपास मछली पकड़ने के कांटे लिये घूमते

थे, वे स्वर्ग और नरक की उन कल्पनाओं से अछूते थे जोकि बुन्यन तथा क्रॉमवेल को विकल कर रही थीं। किन्तु साधु और पापी, सहर्ष मछुए तथा आत्म-पीड़क तपस्वी वे सब उस काल के समग्रतापूर्ण प्रभाव तथा प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित थे। उनकी भाषा पटु तथा शुद्ध अंग्रेज़ी थी जिससे कि उस काल के बाईबल के अनुवादकों ने अपनी शैली प्राप्त की, जोकि इस समय अलभ्य है। जहां तक साधारण लोगों के गीतों का प्रश्न है, उनका वर्णन इज़ाक वाल्टन ने अपने संवाद में बहुत ही सुचारु रूप से किया है :

"पिस्काटर—मेरा अनुरोध हैकि हमारे पर आप एक अनुग्रह करें जिसमें कि आपको तथा आपकी पुत्री को कोई भी कठिनाई नहीं होगी किन्तु जिसके लिये हम अपने आपको आपके ऋणी मानेंगे। यह और कुछ नहीं केवल वह गीत गाने का अनुरोध है जो गीत कि आपकी पुत्री ने आठ-नौ दिन पूर्व उस समय गाया था जबकि मैं आपकी चरागाह के पास से निकल रहा था। मिल्क-वोमन—वह कौनसा गीत था ? क्या यह 'आओ गडरियो, अपने इज्जड़ को संभालो' था याकि 'जबकि दोपहरी में डल्किना विश्राम कर रही थी' था, याकि 'फिलिलडा मेरी उपेक्षा करती है' था अथवा 'चिवी चेस,' 'जोन् आर्मस्ट्रोंग' था, अथवा 'ट्रॉय टाऊन' था ?

पिस्काटर : नहीं, वह इनमें से कोई नहीं था, उस गीत का पहला भाग आपकी पुत्री ने गाया था और उसका उत्तर आपने।

मिल्क वोमन : आओ माड्लिन, तुम प्रसन्न चित्त से इनके लिये गीत का पहला भाग गाओ, और तुम्हारे गा चुकने पर मैं दूसरा भाग गाऊंगी।"

तब फिर गीत गाया गया : यह था "आओ, मेरे साथ रहो, और मेरी प्रेमिका बनो।" जब यह समाप्त हुआ तब वेनेटर ने कहा :

"सच जानो, गुँसाई, यह एक बहुत सुन्दर गीत है, और माड्लिन ने इसे बहुत मधुर गाया है। अब मुझे समझ पड़ा कि हमारी अच्छी राज्ञी एलिजाबेथ मई मास में प्रायः ही ग्वालिन क्यों होना चाहती हैं !"

ऐसे थे सामान्य ग्रामीण लोग शुद्धाचारवादी संसद् के राज्यकाल में, इनमें से अधिकांश इसके हस्तक्षेपों तथा क्रूरतापूर्ण महत्वाकांक्षाओं से अप्रभावित थे।

नीचे हम जून १६५३ में एक सुन्दर लड़की डोरोथी ओस्वर्न द्वारा लिखित एक पत्र को उद्धृत करेंगे जिसमें उसने एक गांव के 'खुले क्षेत्र' के पास एक सुबह जो सुना और देखा उसका विवरण अपने प्रेमी को दिया है :

"तुम पूछते हो कि मैं यहां अपना समय कैसे बिताती हूं............दिन का गर्मी का समय मैं घर पर पढ़ते हुए या कोई कार्य करते हुए बिताती हूं, और लगभग

छः या सात बजे सायं समय एक पास के सार्वजनिक मैदान में चली जाती हूं जहांकि बहुत सी युवक लड़कियां अपनी भेड़ें या गायें लेकर आती हैं और गीत गाती हैं। मैं उनसे बात करती हूं और पाती हूं कि वे संसार में सर्वाधिक आनंदित हैं और उन्हें अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है सिवाय इस बात के कि वे यह जान पाएं कि वे संसार में सबसे अधिक सुखी हैं। अधिकांशतः जब हम बात कर रहे होते हैं तब उनमें से कोई आसपास दृष्टि डालती है और पाती है कि उसकी गायें किसी खेत में घुस रही हैं, और तब वे सब ऐसे उनके पीछे भाग जाती हैं मानो उनकी एडियों में पंख लगे हों।

इज्जड़ चराने वाली ये लड़कियां सारा वर्ष ही इस प्रकार से छाया में बैठी गाथा-गीत नहीं गा सकती थीं, और राज्ञी एलिजाबेथ केवल मई मास में ही ग्वालिन होना चाहती थी। उन सुन्दर-सुखद गांवों और खेतों में काफी विपत्तियां तथा निर्धनता थी और सर्दी पड़ती थी; किन्तु प्रकृति के संपर्क में जीवन की सरलता तथा सुन्दरता एक ऐतिहासिक सत्य था, केवल एक कवि का सपना मात्र नहीं था।

उन लोगों की एक महान सन्तति ने, जिसने कि प्रोटेस्टेंटों तथा वीर सैनिकों के उच्च कोटि के दुःखान्त नाटकों का सृजन किया, बाईबल के वातावरण में बड़े नहीं हुए थे और न केवल ग्रामीण प्रभाव में ही पले थे—यद्यपि बुन्यन के लिये ऐसा कहना उचित ही होगा। मिल्टन, मार्वल तथा हैरिक के युग में कविता तथा विद्वत्ता का काफी निकट सम्बन्ध था। न केवल सरल और सुन्दर गीत लिखे और संगीतबद्ध ही किये जा रहे थे और सब वर्गों द्वारा गाये जा रहे थे बल्कि सुसंस्कृत घरों में विद्वत्तापूर्ण और अलंकारमय काव्य भी, मुद्रित होने या नष्ट होने से पूर्व, हस्तलिखित रूप में प्रचारित होते थे। जब लावेस का संगीत मिल्टन के अमर काव्य "कोमस" के साथ संयुक्त होकर ब्रिजवाटर परिवार की व्यक्तिगत रंगशाला के लिये प्रस्तुत हुआ उस समय इंगलैंड की गृह-संस्कृति अपने उच्चतम उत्कर्ष पर थी, और उस काल की शिक्षा का भी, वह ईसाई धर्म-संबंधी हो या प्रतिष्ठित ग्रंथों संबंधी, बहुत प्रचार था।

राजनैतिक तथा धार्मिक वादविवाद आज की दृष्टि से बहुत ही दुरूह पांडित्यपूर्ण ग्रन्थों अथवा पैम्फलेटों द्वारा किया जाता था; किन्तु इस दुरूह पांडित्य-प्रदर्शन के बावजूद उन्हें पाठक उत्सुकता से पढ़ते थे और इनसे प्रभावित होते थे। अत्याचारी शासक की हत्या का समर्थक वह प्रसिद्ध पेम्फलेट भी, जिसका लेखक एक रिपब्लिकन था और जिसे पीछे राजतंत्र के समर्थकों ने क्रॉमवेल की हत्या के लिये उकसाने के निमित्त पुनः प्रचारित किया था, प्रतिष्ठित प्राचीन ग्रन्थों तथा बाईबल से लिये गये उद्धरणों से खचित था। शुद्धाचारवादियों के राज्य में भी यूनानियों और रोम वालों द्वारा अत्याचारी शासक की हत्या के समर्थन में लिखे विचार सामान्य पाठक के लिये उतने ही मान्य थे जितने हिब्रू न्यायाधीशों तथा धर्मनेताओं के वचन।

वास्तव में उच्च तथा मध्य वर्गों में नगरों तथा गांवों में बहुत से विद्यार्थी थे। वास्तव में, प्रत्येक पाठक के लिये किसी न किसी प्रकार से विद्यार्थी रहा होना आवश्यक था, क्योंकि कविता तथा नाटक को छोड़कर ऐसा साहित्य दुर्लभ था जो पर्याप्त दुरूह नहीं होता था। गाथा काव्य तथा 'ग्रोड सिरिस' जैसे फ्रांसीसी रोमांस के वृहत् 'गुंवदों' के सिवाय कथा-साहित्य दुर्लभ था; किन्तु उन दिनों ये फ्रांसीसी रोमांस-ग्रन्थ संस्कृत युवतियों, जैसे डोरीथी ओस्वर्न, को ही रोचक लगते थे।

हमारे युग में प्रोफेसर नोटस्टीन ने ऐडम ईर नामक यार्कशायर के एक योमैन की दैनंदिनियों (डायरीज़) का अनुसन्धान किया है। ऐडम ईर एक समय पार्लियामेंट की सेना में नियुक्त था, किन्तु १६४७ तक वह डेल्स स्थित अपने घर के खेतों पर लौट आया था। इसमें सन्देह नहीं कि उसका अध्ययन और मनन अपने वर्ग के अधिकांश लोगों से अधिक था, किन्तु उसके अध्ययन का विस्तार और स्वरूप उस काल के बौद्धिक स्वभाव का अच्छा परिचय देता है और उससे पता चलता है क्योंकि योमैन लोग राजनीति तथा धर्म में अपने लिये उचित पक्ष का चुनाव कर सकने में समर्थ थे, जोकि प्रायः ही पड़ौस के ज़मींदारों द्वारा निर्वाचित पक्ष से भिन्न होता था।

ऐडम ने अपने अध्ययन-कक्ष में अलमारियां आदि बनाने के लिये एक बढ़ई रखा हुआ था और उसके मित्र (उसके वर्ग के योमैन) सदैव उससे पुस्तकें ऋण लेते रहते थे। शायद ही कभी ऐसा होता होगा कि वह किसी बड़े नगर में जाने पर विना वहां से कोई पुस्तक लाये लौटा हो। कभी कभी उसके साथ पुस्तकों का पूरा बंडल ही आता और वह बड़े ध्यान से उनका अध्ययन करता। "उस दिन मैं सारा दिन घर पर ही रहा और अधिकांश समय अध्ययन में ही विताया" ऐसा प्रायः ही उसकी दैनंदिनी में लिखा मिलता है। उसने 'दि स्टेट आफ यूरोप' नामक एक पुस्तक की सारणी बनानी आरंभ की। उसने 'ए डिस्कोर्स आफ दि काउंसिल ऑफ बेसिल्स' नामक पुस्तक पढ़ी "जिसमें कि, मनुष्यों के अन्य सव कार्यों के समान, भ्रष्टाचार के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।" यह टिप्पणी हमें ऐडम के इतिहास-दर्शन का कुछ आभास देती है। उसने ली की लिखी भविष्यवाणियों की एक विचित्र पुस्तक पढ़ी तथा वाल्टर रिलीफ की "विश्व का इतिहास" पुस्तक पढ़ी, जोकि उस समय इंगलैंड में वहुत पढ़ी जा रही थी। वह इरासमस की 'मूर्खता की प्रशंसा' (प्रेज़ आफ फोल्ली) तथा जेम्स होवेल्स की डेंड्रोलोशिया (जोकि १६०३ में १६४० तक की राजनैतिक घटनाओं का रूपकात्मक प्रस्तुतीकरण था) में निमज्जित रहा। उसके पास डाल्टन की कंट्री जस्टिस पुस्तक भी थी, जिसमें कि न्यायाधिकारियों तथा अन्य स्थानीय अधिकारियों के कर्त्तव्यों का विवरण था।

उसका अधिक अध्ययन धार्मिक ग्रन्थों का था। उसके पुस्तकालय में इतनी बड़ी संख्या में धार्मिक ग्रन्थों को देखकर आश्चर्य होता है। "आज मैं सारा दिन घर पर

ही रहा और अनेक प्रकार के लोगों के मत पढ़ने के कारण अनेक प्रकार के विचार मन में आए।" निश्चय ही यह विभिन्न मतों के ऊपर बौद्धिक मनन का आरंभ था। ऐडम बहुत आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं था; वह उन पुस्तकों को इसलिये पढ़ता था क्योंकि उस समय धर्म वातावरण में व्याप्त था। धर्म उन दिनों के समाचार-पत्रों तथा पैम्फ्लेटों को आच्छादित किये था, जैसेकि हमारे आज के समाचार पत्र खेलों और हड़तालों के समाचारों से भरे रहते हैं। वैस्ट राइडिंग में धर्म गांवों की कलहों में लिपटा था और वैस्टमिंस्टर में राजनैतिक दलबंदियों में (नोटेस्टीन, इंगलिश फोक, पृ० २५०--२५१)।

ऐसा था उस क्रामवेल युगीन योमैन का अध्ययन। ज़मींदारों के प्रासादों में काव्य तथा शास्त्रीय ग्रन्थ या तो एक से दूसरे हाथ में घूमते थे अथवा धर्मोपदेशों तथा पेम्फ्लेटों के साथ उनके पुस्तकालयों की अल्मारियों में टिक जाते थे। इसमें सन्देह नहीं कि अधिकांश योमैन, अधिकांश ज़मींदार तथा अधिकांश व्यापारी बहुत कम पढ़ते थे, किन्तु उनमें से अधिकांश बहुत अधिक पढ़ते थे।[1] गृह-युद्ध वास्तव में विचारों का युद्ध था, और ये विचार मुद्रित अथवा हस्तलिखित रूप, में तथा उपदेशकों और प्रचारकों के उपदेशों तथा व्याख्यानों के रूप में, प्रसारित किये जाते थे।

चार्ल्स तथा क्रॉमवेल के गृहयुद्ध रोसेस के युद्धों के समान दो अभिजात परिवारों में सत्ता हथियाने के लिये लड़े गये युद्ध नहीं थे, जिन्हें कि अधिकांश लोग, विशेषतः नागरिक, एक निराशापूर्ण तटस्था से देखते थे। १६३२ में नगर तथा ग्राम दोनों ने समान रूप से शस्त्र धारण किये थे। तो भी यह नगर का ग्राम के विरुद्ध युद्ध नहीं था। यद्यपि एक सीमा तक यह ग्रामीण उत्तर तथा पश्चिम के विरुद्ध लंडन तथा उसके संलग्न प्रदेशों के लिये युद्ध ही हो गया था।

लोग अपने पक्ष अधिकांशतः निस्वार्थ उद्देश्यों से तथा बिना किसी बाध्यता से चुन रहे थे। उनके निर्णयों के आधार उनके धार्मिक तथा राजनैतिक विचार थे, और उनमें से अधिकांश सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टियों से ऐसी परिस्थिति में थे कि वे इस संबंध में स्वतन्त्रता से अपना निर्णय कर सकते थे। ग्रामीण प्रदेशों में सामंतीय प्रकार की निर्भरता एक अतीत की चीज़ थी और विशाल समूहीकृत भूमियां अभी भविष्य की बात थीं। यह छोटे जमींदारों तथा योमैनों के लिये एक स्वर्णिम युग था जिन्हें कि अपनी राजनैतिक स्वाधीनता पर गर्व था, जबकि एक-दो शताब्दी पूर्व बड़ी

---

[1] १६४० से १६६० के बीच मुद्रित पैम्फ्लेटों की बाढ़ सी आ गयी थी; किन्तु मुद्रित दैनिक समाचार पत्र आरंभ नहीं हुए थे। समाचार लंडन में लिखी समाचार चिट्ठियों द्वारा प्रसारित किये जाते थे, जोकि हस्तलिखित रूप में इनके ग्राहकों को गांवों में भेजी जाती थीं और वे अपने पड़ोसियों में इन्हें प्रचारित करते थे। शताब्दी के अन्त तक मुख्यतः इसी प्रकार से समाचार प्रसारित किये जाते थे।

जागीरों पर काश्तकार किसान व्हिग अथवा टोरी पक्षों के लिये मतदान करने के लिये अपने ज़मींदार का अनुसरण करने में गर्व अनुभव करते थे। किन्तु १६४२ में अनेक योमैन किसानों ने अपने पड़ौसी किसानों के विरुद्ध तलवारें खींच ली थीं।

नगरों में भी यह एक स्वतन्त्रता तथा व्यक्तिवाद का युग था। सामुदायिकता का अब ह्रास हो रहा था। व्यक्ति की अपने नगर के प्रति नगरपालिका-परक वफादारी राजनैतिक दल के प्रति उसकी राष्ट्रीय वफादारी की तुलना में (चयन वह स्वयं करता था) पहले ही घट चुकी थी। छोटे स्वामियों तथा उसके कर्मचारियों से निर्मित समाज में व्यक्तिगत विचारों के प्रति बहुत आग्रह था। इस प्रकार से नगरवासी अपने देश के वाद-विवाद में स्वतंत्रता तथा विचारपूर्वक रुचि लेते थे।

किन्तु गृह-युद्ध आरंभ होने पर बहुमत के लिये अल्प-मत से सत्ता छीनना और उसका दमन करना नगरों में अधिक सहज था, बजाय विशाल ग्राम-प्रदेश के। इस प्रकार से प्रोटेस्टेंट लोग राजतंत्र के समर्थकों का लंडन, बन्दरगाहों तथा औद्योगिक नगरों में तुरन्त दमन करने में समर्थ हो सके। किन्तु इंगलैंड के अनेक ज़िलों में स्थानीय गृह युद्ध अनेक वर्षों तक चलता रहा। यह युद्ध मुख्य सेवाओं के संग्रामों से पृथक् था, यद्यपि ये सेनाएं भी कभी कभी इन स्थानीय संघर्षों में सम्मिलित हो जाती थीं।

जबकि स्थानीय युद्ध ऐसे जमींदारों के नेतृत्व में चला रहे थे जोकि पहले एक-दूसरे से पड़ौसी के रूप में, और कभी कभी तो मित्रों के रूप में भी, परिचित थे, (यद्यपि तब नीतियों को लेकर उनमें मतभेद हो गये थे) इसलिये उनमें कटुता कम थी और परस्पर सम्मान का भाव भी था, विशेषतः प्रथम एक या दो वर्षों में। किन्तु कुछ स्थानीय युद्ध अधिक हिंस्र थे, जहां कि समाज के दो अत्यन्त विरोधी वर्ग एक-दूसरे के गलों पर झपट रहे थे। उदाहरणतः, लंकाशायर में अधिकांश ज़मींदार लोग रोमन कैथोलिक थे जोकि "भगवत् कृपा के लिये तीर्थ" की अर्ध सामंतीय संस्कृति के प्रतिनिधि थे। इसलिये नये औद्योगिक नगरों में इनमें तथा इनके शुद्धाचारवादी पड़ौसियों में दुर्भावना की खाई चौड़ी ही होती गयी।

किन्तु इंगलैंड के बहुत से ज़िलों में राजा के समर्थक एंग्लिकन थे और इस प्रकार से निश्चित रूप से प्रोटेस्टेंट थे; इनमें से बहुत से लॉड के विरोधी थे। इनमें से एक सर एड्मंड वर्ने था जोकि राजा का प्रमुख प्रतिनिधि था और जो अपने स्वामी के लिये एजहिल में बलिदान हुआ किन्तु जिसने घोषणा की कि "मेरे मन में बिशपों के प्रति कोई सम्मान नहीं है, जिनके लिये कि यह संघर्ष चल रहा है।"

सामान्य रूप से, जहां पिछली एक शताब्दी के आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव अल्पतम थे वहां राजतन्त्र सर्वाधिक सशक्त था। ग्रामों तथा राजधानी से सुदूरवर्ती मंडियों में, जिनका सागरपारीय व्यापार से कोई संबंध नहीं था, राजा तथा

चर्च के प्रति पर्याप्त श्रद्धा शेष थी। इसके विपरीत, ऐसे प्रदेशों में, जहां नवीन आर्थिक परिवर्तन काफी प्रगति कर चुके थे, पार्लियामेंट तथा प्रोटेस्टेंट धर्म का बहुत प्रभाव था उदाहरणत: जैसे एलिजाबेथ कालीन महान् व्यापार-कंपनियों से प्रभावित लंडन में, बन्दर-गाहों में (स्वयं राजा के अपने गोदीबाड़ों में भी) तथा नये औद्योगिक नगरों में, जैसे टाउंटन, और पैन्नाइनों के दोनों ओर की वस्त्र-उत्पादक घाटियों में। ऐसे बड़े जमींदार लोग, जिनके कि लंडन के साथ, अथवा अन्य भी किसी औद्योगिक केन्द्र के साथ निकट व्यापार-संबंध थे, धर्म तथा राजनीति दोनों में प्रोटेस्टेंटों की ओर अधिक झुके हुए थे। लंडन का क्षेत्र, केन्ट, सरे तथा एस्सेक्स समेत, एकदम से पार्लियामेंट के लिये जीत लिया गया था और यहां फिर कभी भी राजा-समर्थक अल्पमत अपना सिर ऊंचा नहीं कर सका। यही पूर्वी एंग्लिका के जिलों में भी हुआ, जोकि 'पूर्वी संघ' के रूप में संगठित किये गये थे और ओलीवर क्रामवेल के पुष्ट पंजे में थे। इस प्रदेश से एक ही संतति पूर्व अधिकांश शुद्धाचारवादी प्रवासी निकल कर नये इंगलैंड में जा बसे थे, जहांकि अब बाईबल पढ़ने वाले योमैनों में क्रामवेल के समर्थक उत्पन्न हुए थे।

क्रामवेल स्वयं एक अच्छे परिवार का था और लोकसभा के बहुत से अत्यन्त महत्वपूर्ण सदस्यों से सम्बन्धित था। वह एक जमींदार किसान था और हुंटिंग्टन के निकट उसकी एक छोटी सी सम्पत्ति थी जिस पर कि वह स्वयं ही कार्य करता था। १६३१ में उसने अपनी भूमि बेच कर सेंट ईव्स के पास नदी के समृद्ध चरागाह ठेके पर ले लिये। अपनी पैतृक सम्पत्ति का यह विक्रय प्रदर्शित करता है कि वह भूमि को केवल आजीविकोपार्जन का साधन ही समझता था बजाय एक ऐसे पैतृक उत्तरा-धिकार के जो समाज तथा परिवार में सम्मान का सूचक है। वह केवल एक अभिजात जमींदार होने के बजाय एक कर्मठ किसान तथा व्यापारी होना, तथा जन-साधारण के बीच मिलना-जुलना अधिक पसन्द करता था। और वास्तव में विभिन्न प्रकार के स्थानीय झगड़ों में वह इन साधारण लोगों का नेता बना। यह दृष्टिकोण उस व्यापारी कृषक वर्ग की विशिष्टता थी जोकि आगे जाकर शुद्धाचारवादी होने वाला था, जबकि पुराने ढर्रे के पश्चिमी जिलों के जमींदार लोग जिनका जीवन तथा समाज के प्रति दृष्टिकोण अपेक्षाकृत सामन्तवादी था, राज-भक्त थे। यहां तक कि शुद्धाचारवादी दल के बड़े जमींदार भी, जैसे बैडफोर्ड तथा मैंचेस्टर के अर्ल, अपनी संपत्तियों को आधुनिक पूंजीवादी ढंग से बढ़ाना चाहते थे। शुद्धाचारवादियों को, चाहे वे उच्च वर्ग के, होते, व्यापार तथा कर्मठता को आदर्श मानना सिखाया जाता था। राज-भक्त लोग सामान्यत: अपेक्षाकृत आराम-पसन्द तथा आमोद-प्रमोद में रुचि लेने वाले थे।

इसलिये गृह-युद्ध एक सामाजिक युद्ध नहीं था बल्कि एक ऐसा संघर्ष था जिसमें दल-विभाजन राजनैतिक तथा धार्मिक विवादों को लेकर उत्पन्न हुआ था, यद्यपि इनकी विभाजक-रेखा सामाजिक विभाजनों के अनुसार थी। गृह-युद्ध के बाद के वर्षों में,

प्रोटेस्टेंटों की पार्लियामेंट के काल में (१६४६-१६६०), वर्ग-संघर्ष और भी अधिक स्पष्ट हो गया। जमींदार वर्ग प्रोटेस्टेंटवाद तथा उसके नेताओं के विरुद्ध हो गया। इस बीच, पद और सम्पत्ति से निरपेक्ष, मानव की समता के प्रजातांत्रिक विचारों ने उस युग की राजनैतिक घटनाओं को प्रभावित किया। किन्तु ये 'समतात्मक' विचार राजनैतिक अधिक थे, सामाजिक कम। "नव्य आदर्श सेना" के नेताओं में सिद्धान्त-प्रतिपादकों ने पार्लियामेंट (संसत्) के लिये मतदान का अधिकार बालिग मात्र को देने का समर्थन किया था किन्तु सम्पत्ति के समान वितरण का सिद्धान्त प्रतिपादित नहीं किया। केवल विंस्टेंले के नेतृत्व में खनिक मज़दूरों के एक सम्प्रदाय ने यह दावा किया कि इंगलैंड की धरती इंगलैंड की जनता की है और ज़मीदार केवल उसके अपहर्ता हैं। इन लोगों को सैनिक नेताओं ने तुरन्त दबा दिया। खनिकों ने राजा की हत्या करने वाली सरकार को चेतावनी दी थी कि राजनैतिक क्रान्ति तबतक स्थायी नहीं होगी जबतक कि इसे सामाजिक क्रान्ति का आधार नहीं मिलेगा। और उनका यह कथन ठीक ही था, जैसाकि शीघ्र ही बाद पुनःस्थापना ने यह सिद्ध कर दिया।

यहां तक कि राजनैतिक प्रजातन्त्र का विचार तक विजयी सेना के आमूल परिवर्तनवादियों तक ही सीमित था। सामान्य जनता में इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई। यदि उस समय व्यापक स्तर पर निर्वाचन किया जाता तो उसमें राजा-समर्थकों की विजय होती।

यद्यपि यह ठीक है कि बड़ी ज़मींदारियां प्रजातांत्रिक आधारों पर छोटे खेतों के रूप में खंडित नहीं हुई, किन्तु कुछ समय के लिये कुछ भूमि राजा के समर्थकों के हाथों से शुद्धाचारवादियों के हाथ में अवश्य गयी। ये भूमियां मुख्यतः चर्च तथा राजा की थीं जिनका विक्रय "क्रान्तिकारी सरकार" ने अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किया था, जैसेकि एक शताब्दी पूर्व विहारों की भूमियां राज्य द्वारा बेची गयी थीं। अधिकांशतः इनके क्रेता प्रगतिशील रिपब्लिकन दल के लोग थे। किन्तु पुनःस्थापना के समय ये सब संपत्तियां राजा तथा चर्च के पास लौट आईं और इस प्रकार से इन भूमियों से किसी नये अभिजात कुलों की स्थापना नहीं हुई। और वास्तव में, सैनिकों तथा व्यापारियों ने, जिन्होंने कि इन भूमियों को एक दशाब्द तक अपने असुरक्षित अधिकार में रखा था, इन ग्रामीण ज़मींदारों के रूप में बसने का कोई प्रयत्न ही नहीं किया। ये भूमियां उन्होंने मुख्यतः व्यापारिक दृष्टि से खरीदी थीं।

और फिर, बहुत कम भूमियां एक से दूसरे हाथों में गई थीं। राजा-समर्थक लोगों से ज़िलों का शासन छिन गया था और उन्हें अपनी इस वफादारी के लिये दंड भुगतना पड़ा। किन्तु ये जुर्माने काफी कठोर होने पर भी इनकी अदायगी लकड़ी काट कर, ऋण लेकर, खर्च घटा कर तथा परिवार और मित्रों के साथ अन्य अनेक प्रकार

से प्रबन्ध कर, कर दी गयी थी,[1] क्योंकि सामन्त-ज़मींदार लोग अपनी भू-संपत्तियाँ बनाए रखने के लिये बहुत बड़े बलिदान करने को तैयार थे। सत्रहवीं शताब्दी में अनेक मध्यप्रदेशीय ज़िलों में पूर्ण स्वामित्व वाली भूमियों विषयक विस्तृत अनुसन्धान से पता चलता है कि पार्लियामेंट के शासन में भूमि के स्वामित्व में बहुत कम परिवर्तन हुए। वास्तव में पुनःस्थापना के बाद उस काल की आर्थिक परिस्थितियों के कारण छोटी ज़मींदारियों का अधिक क्रय-विक्रय हुआ था। किन्तु यह भी पूरी तरह से संभव है कि पार्लियामेंट-शासन के जुर्मानों ने कुछ छोटे ज़मींदारों को स्थायी रूप से कठिनाई में डाला हो और अगली पीढ़ी में उनके विक्रय में ये कारण बने हों।

जो भी हो, यह सही प्रतीत नहीं होता, जैसाकि बहुत बार समझा गया है, कि चार्ल्स द्वितीय के राज्य-काल के व्हिग लोग एक नये प्रकार के ज़मींदार थे जिनका अभ्युदय पार्लियामेंट के शासन-काल में हुआ था। पुरानी ज़मींदारी की व्यवस्था को काफी अपमान तथा विपत्तियों का सामना करना पड़ा था, किन्तु उसका उन्मूलन नहीं हुआ था। जब १६५४ की पतझड़ में राजा-समर्थक दैनंदिनी-लेखक (डायरिस्ट) जोन ईवलिंग ने मध्य प्रदेश स्थित अपने ग्राम-वासी मित्रों के घरों का दौरा किया तब उसने बहुत से अभिजात ज़मींदारों की संपत्तियों को फलते-फूलते पाया। उसने उनके स्वामियों के नाश अथवा अनुपस्थिति की कोई चर्चा नहीं की है, न स्वामित्व-परिवर्तन का ही कोई उल्लेख किया है।

वास्तव में, सामन्त वर्ग ज़मींदारों की अपेक्षा अधिक ह्रासोन्मुख था, क्योंकि शुद्धाचारवादियों द्वारा राजा की हत्या के काल के बाद उनका शायद ही कोई घराना पुनः प्रतिष्ठित हुआ होगा। साधुओं तथा सैनिकों के शासन के नीचे इंगलैंड के लार्डो (सामन्तों) का कोई महत्व नहीं रहा। डोरोथी ओस्बर्न ने, जोकि बहुत समझदार और प्रसन्न स्वभाव की थी, अपने भतीजे के एक लड़की के साथ, उसके एक अर्ल की लड़की होने के कारण, विवाह करने पर टिप्पणी की थी कि वह उसकी मूर्खता थी, जो कि "मेरे ख्याल में एक बहुत सुन्दर भ्रम है किन्तु जिसमें कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि उसका अर्ल की लड़की होना उसके व्यक्तित्व में कुछ वृद्धि नहीं करता और, यदि कुछ यह ऐसा करता हो भी तो भी आज इसका कोई मूल्य नहीं है।" निस्संदेह पुनः

---

[1] चार्ल्स प्रथम के अत्यन्त सम्पन्न और वफादार समर्थकों में से एक साउथेम्प्टन के अर्ल को (जोकि ब्लूम्सबरी की सम्पत्तियों का स्वामी था, जो संपत्तियां कि पीछे उसकी पुत्री वेशल का विवाह रसल परिवार में हो जाने से इस परिवार के पास चली गयीं) ६४६६ पाउंड जुर्माना हुआ था, जो कि उसकी सम्पत्ति का दसवां भाग था। उसने यह दे दिया और कुछ समय के लिये वह अपनी ग्राम-स्थित संपत्तियों में चला गया; और पुनःस्थापना के समय उसका एक अत्यन्त वैभवशाली सामन्त के रूप में पुनः अभ्युदय हुआ।

स्थापना के 'अच्छे युग' ने अर्लों का खोया सम्मान पुनः प्रतिष्ठित किया और उनकी लड़कियों के साथ विवाह करने की अधिक व्यापक महत्वाकांक्षा को भी दोबारा जन्म दिया।

दूसरी ओर पार्लियामेंट की सेनाओं की विजय के बहुत से महत्वपूर्ण परिणाम पुनःस्थापना के बावजूद समाप्त नहीं हुए। इनमें से एक था, ऊँची राजनीति में व्यापारियों तथा लंडन की शक्ति की वृद्धि। दूसरा था, प्रतिस्पर्धियों पर आंग्ल साधारण कानून की विजय।

ट्यूडरों के काल में राजकीय सर्वोच्चाधिकार को पुष्ट करने के लिये तथा उस युग की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये स्वतंत्र-न्यायालयों की शक्ति तथा संख्या में बहुत वृद्धि हुई, और ये न्यायालय साधारण कानून की तनिक भी परवाह न करके अपनी ही कानून-व्यवस्था को लागू करते थे। किन्तु जिस पार्लियामेंट ने महान् अंग्रेज वकील एड्वर्ड कोक के परामर्श से जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम का विरोध किया था उसने साधारण कानून की प्रमुखता को स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न किया, और वह १६४१ में विधान द्वारा इसे लागू करने में सफल भी हुई। उस समय स्टार-चैम्बर, एक्लेसियास्टिकल कोर्ट आफ हाई कमीशन तथा वेल्स और उत्तर की न्याय-सभाओं के अधिकार समाप्त कर दिये गये। एड्मिरेल्टी न्यायालय को पहले ही महत्वपूर्ण व्यापारिक कानून के विकास के रूप में साधारण कानून का नियंत्रण स्वीकार करने को बाध्य कर दिया गया था।

इस प्रकार से इंगलैंड की न्याय-व्यवस्था खंड-खंड होने से बच गयी। एकमात्र जो द्वैत बचा था वह था चांसरी न्यायालय की स्वतंत्रता। किन्तु वह भी अब राजकीय सर्वोच्चाधिकार का साधन नहीं रहा और न्यायाधीश द्वारा निर्मित कानून का पूरक मात्र बन गया—सामान्य न्यायालयों में कार्य में लाये जाने वाले सिद्धान्तों में अत्यन्त बुद्धिमत्ता से जुड़ा हुआ।

साधारण कानून की विजय ने इंगलैंड में अन्य देशों से बहुत पहले उत्पीड़न को समाप्त कर दिया और अभियोग के बाद सरकार के राजनैतिक शत्रुओं के साथ अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार करने की प्रथा के लिये इसने पथ प्रशस्त किया। मुख्य बात यह है कि परमाधिकार न्यायालयों के ऊपर साधारण कानून की विजय ने सर्वोच्चता की मध्ययुगीन अवधारणा के उस रूप की रक्षा की जिसके अनुसार कानून को सरकार की सुविधानुसार एक ओर नहीं रखा जा सकता, और जिसके अनुसार केवल पूरी पार्लियामेंट ही उसमें परिवर्तन कर सकती है, राजा अकेले ही उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता। वास्तव में यह महान् सिद्धान्त, कि कानून प्रशासन से ऊपर है, कामनवेल्थ (पार्लियामेंट के शासन) तथा प्रोटेक्टोरेट काल में भंग हुआ था। किन्तु पुनःस्थापना के समय इसका पुनरुज्जीवन हुआ और १६८८ की क्रान्ति ने इसे और पुष्ट किया।

वास्तव में यह क्रान्ति जेम्स द्वितीय के विरुद्ध हुई थी और केवल यह स्थापित करने के लिये ही हुई थी कि कानून राजा से ऊपर है। कानून की सर्वोच्चता का यह मध्य-युगीन सिद्धान्त, जोकि कानून को प्रशासन की इच्छा से स्वतंत्र कुछ मानता है, यूरोप के अन्य देशों में लुप्त हो गया था किन्तु इंगलैंड में यह हमारी स्वतंत्रताओं का संहारक बन गया और इसका आंग्ल समाज तथा उसके विचार पर गम्भीर प्रभाव पड़ा।

कामनवैल्थ तथा प्रोटेक्टोरेट के काल में वैधानिक कानून क्रान्ति के पैरों तले कुचला जा रहा था, किन्तु उस काल में भी साधारण कानून तथा वकील बहुत शक्ति-सम्पन्न थे, दुर्भाग्यवश इतने शक्ति-सम्पन्न कि वे कानून में सुधार की जनता की उत्कट मांग को भी पूरा होने से रोक सके। क्रामवेल ने इस आवश्यक सामाजिक मांग को पूरा करने का भरसक प्रयत्न किया, किन्तु वह इसमें सफल नहीं हो सका। वकील इतनी संख्या में थे कि वह उनका शासन करने में असमर्थ था। वह भी पूरी तरह से तानाशाह (डिक्टेटर) नहीं था : सैनिक एक ओर और वकील दूसरी ओर उसका समर्थन और नियंत्रण दोनों करते थे। जब पुनस्स्थापना के समय सेना को भंग कर दिया गया तब वकील एकमात्र प्रभावशाली वर्ग हो गया।

यह अनुमान करना उचित ही होगा कि १६४० और १६६० के बीच ज़मींदार-प्रासादों की रचना बहुत अल्प मात्रा में हुई। किन्तु गृह-युद्ध से पूर्व के दो शान्त दशाब्दों का वातावरण, सब मिला कर, बड़े और छोटे सब प्रकार के ज़मींदारों के लिये एक सम्पन्नता का समय था। इन लोगों ने इंगलैंड के ग्राम-प्रदेश को निरन्तर अधिकाधिक सुन्दर और विशाल भवनों और प्रासादों से समृद्ध करने की एलिजाबेथीय परम्परा को निरन्तर जारी रखा।

नव-निर्मित घरों के रूपाकारों में कुछ परिवर्तन हो रहे थे। विशाल, तथा बालों की छतों वाले हाल कमरे, जोकि सेक्सनों से एलिजाबेथ के युग तक ग्राम-प्रासादों के एक अनिवार्य भाग थे, अब अप्रचलित हो गये। अब एक-मंज़िले 'खाने के कमरे' तथा 'बैठने के कमरे' बनने लगे थे, क्योंकि अब पुराने हाल के विभिन्न प्रयोजन साधारण आकार के विभिन्न कमरों में विभक्त कर दिये गये थे। पुराने ढंग के ज़मींदार-गृह (प्रासाद) के केन्द्रों में बने आंगन, जहाँकि गृह-जीवन का अधिकांश भाग बीतता था, जैकोबीय योजनानुसार बने निवासों में या तो छोटे हो गये थे अथवा लुप्त ही हो गये थे। आंगन अब घर के बीच में न बनाये जाकर पीछे की ओर बनाये जाते थे।

पुराने ढंग के कंगूरे तथा भित्ति-स्तंभ बाह्य भाग को अलंकृत करते थे। अन्दर सीढ़ियां चौड़ी होती थीं तथा कटहरे की छड़ पर खुदाई का काम किया रहता था। दीवारों पर जैकोबीय ढंग के दिलहे पच्चीकारी तथा भित्ति-चित्रों का स्थान ले रहे थे, यद्यपि अत्यन्त उत्कृष्ट प्रकार की पच्चीकारी का काम अब भी होता था और उसका सम्मान भी था। कला-प्रिय चार्ल्स प्रथम तथा उसके महान् सेवक अरुंडल के अर्ल के

अनुकरण पर फ्रेम किये हुए चित्र तथा संगमरमर की मूर्तियों का प्रचलन बहुत बढ़ रहा था। रयू-वंश और वान्डाइक ने, तथा डच चित्रकारों ने, अपने आंग्ल संरक्षकों के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये।

छतों पर प्लास्टर का कार्य अत्यधिक अलंकारपूर्ण था। फर्शों पर रशों (विशेष घास) का स्थान गलीचे और दरियां ले रहीं थीं, जिसका अर्थ था खटमलों का कम होना और परिणामतः इनके साथ आने वाले प्लेग के कीटाणुओं का कम होना। अच्छे गलीचे अब या तो इंगलैंड ही में बनते थे या फिर कुछ तुर्की तथा ईरान से भी मँगाए जाते थे। किन्तु १६४५ में वर्ने ने क्लाइडन में खाने तथा बैठने के कमरों के लिये चमड़े के गलीचे बनाए, हरे रंग के मखमली गद्दों वाला फर्नीचर, तथा पीले पत्तरे से मढ़ी टांगों के अग्र भाग वाले स्टूल तैयार करवाए : अधिकांश घर के लोग स्टूलों पर ही बैठते थे, कुर्सियां बड़ों तथा सम्मानित अतिथियों के लिये रखी जाती थीं। तिरछी टांगों वाले मेज़ का स्थान चित्रकारी की हुई सीधी टांगों वाले मेज़ ले रहे थे। उस काल में बचे हुए भव्य खुदाई के काम वाले देवदारु की लकड़ी के बहुत से पलंग तथा अन्य फर्नीचर आज भी उपलब्ध होते हैं।

दरवाज़े से बाहर, इंगलैंड के लिये उद्यानों की दृष्टि से यह एक महान् युग था, और उसके बाद से यह सदैव वैसा रहा है। बेकन ने कहा था कि "सर्व शक्तिमान ईश्वर ने सबसे पहले एक बाग लगाया था।" एलिजाबेथ-युग के अन्तिम भागों में तथा स्टुअर्ट युग के आरंभिक भाग में फूलों के बाग सब्ज़ियों के बागों से स्वतंत्र रूप लेने लगे (जिसमें कि अब अमरीका से आयातित आलू और जुड़ गया था)। और पुनः, हरियाली से घिरे भागों वाले सेबों के बाग थे, और सघन निकुंज थे :

जिनमें सूर्य से पके हनीस फल,
सूर्य को भीतर नहीं आने देते।

फूलों का बाग सीधा और चौकोर बनाया जाता था और इसमें मार्ग चौड़े रखे जाते थे। यह बाग घर से अच्छी तरह से दिखाई देता था। बाक्स तथा लेवेंडर पौधों की कटाई-छँटाई कर उनसे सजावट के लिये आकृतियां बनाई जाती थीं।

इस समय इंगलैंड में बहुत से नये वृक्ष, पौधे तथा फूल लाये गये जिनमें से कुछ हैं—क्राउन इंपीरियल, ट्यूलिप, लेवर्नम, नेस्टुर्टियम, सदाबहार (एवर लास्टिंग) लव-इन-ए-मिस्ट, आनेस्टी ट्यूलिप वृक्ष, रेड मेपल। बाग़बानी तथा फूलों का शौक, जोकि अब इंगलैंड की एक मुख्य विशेषता हो गया था, एक सीमा तक ह्यूग्नॉट शरणार्थियों के कारण इंगलैंड में आया था। ये शरणार्थी निम्न प्रदेशों से आये थे और नॉर्विच तथा लंडन में आकर बस गये थे। स्टिलफील्ड के ह्यूग्नॉट जुलाहों ने इंगलैंड में प्रथम उद्यान-संस्थाओं का आरम्भ किया। चार्ल्स प्रथम के राज्यकाल में "पैराडिसस" जैसी

पुस्तकों ने, जिनमें फूलों की प्रशंसा तथा वर्णन किया गया था, बाग़ लगाने की कला सिखाई तथा उसे जन-प्रिय बनाया। (इलीनर रोह्डे, स्टोरी आफ दि गार्डन, १६३२)।

इस काल के फूलों के अतिरिक्त, जोकि अब भी हम उगाते हैं, हमारे पूर्वजों में बूटियां लगाने का शौक भी था, जोकि अब उस सीमा तक नहीं बचा है। बूटियों का प्रयोग औषधियों तथा आग आदि बनाने में बहुत होता था। फूलों तथा बूटियों से केलि-कुंज तथा घड़ियां भी बनाई जाती थीं।

उस काल के, जिसका अन्त शुद्धाचारवादियों तथा राजा के समर्थकों के बीच क्रूर राजनैतिक संघर्ष के साथ हुआ, "आदर्श पारिवारिक जीवन का" विवरण हमें "वर्ने परिवार के स्मृति-लेखों" में मिलता है। बक्स प्रदेश के क्लेडन नगर में उनका घर शुद्धाचारवादियों तथा राजा-समर्थकों की जीवन-विधि में जो भी सर्वोत्तम था उस सब का प्रतिनिधित्व करता था, जिसे कि सम्मिलित रूप से सर एड्मंड वर्ने तथा उसका पुत्र राल्फ अपने आचरण में लग रहे थे, जबतक कि राजा की हठवादिता तथा उसके शत्रुओं की हिंसा ने इन दो मिताचारी व्यक्तियों को भी गृह-युद्ध में विरोधी पक्षों में सम्मिलित होने को बाध्य नहीं कर दिया। किन्तु तब भी उनमें न तो परस्पर के लिये प्यार ही कम हुआ था और न उस भयानक समय में अपने परिवार तथा घर को बनाए रखने तथा उसकी संपत्तियों को अक्षुराण रखने की प्रवृत्ति ही कम हुई थी।

चार्ल्स प्रथम के राज्य में हमें क्लेडन के वर्ने कुल का जो चित्र मिलता है उससे ज्ञात होता है कि इंगलैंड के ग्रामीण घराने न केवल जागीरों की व्यवस्था के ही केन्द्र थे बल्कि गृह-उद्योग के भी केन्द्र थे, जिसमें कि परिवार के सदस्यों के साथ-साथ भृत्यों की बड़ी संख्या तथा परिवार के स्त्री और पुरुष के आश्रित भी भाग लेते थे।

वर्ने कुल का इतिहास-लेखक लिखता है : 'यह एक महान घराना अपनी आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति अधिकांशतः स्वयं ही करता था। ये लोग स्वयं ही शराब बनाते थे और भोजन पकाते थे, स्वयं ही बिलोते तथा आटा पीसते थे, वे अपनी भेड़ों तथा गायों को स्वयं ही पालते तथा मांस के लिये उन्हें काटते थे और स्वयं ही अपने कबूतरों तथा मुर्गियों को पालते थे। घर पर ही वे अपने घोड़ों के खुरियां लगाते थे, शहतीरों को चीरते थे तथा लोहे के अनगढ़ औज़ार बनाते थे। इस प्रकार से चक्की, कसाई-घर, लौहार, बढ़ई तथा रंग-साज की दुकानें, शराब आदि बनाने के स्थान, बड़ी-छोटी सब प्रकार की इमारती लकड़ियों से भरे लकड़ी-घर, अनेक प्रकार से कटे-गढ़े पत्थर, लोहे तथा लकड़ी के टुकड़े, धोबी-घर, दूध मथने की अश्व-चालित बड़ी मशीन वाली डायरी, सब प्रकार के ढोरों और सूअरों के लिये शालाएं, सेबों तथा अन्य जड़ियों-बूटियों के रखने के स्थान, इन सबसे पता चलता है कि आत्मनिर्भरता उस समय कितनी पूर्ण थी।

कबूतरों के बैठने के स्थान तथा मछलियों से भरे तालाब, तथा जल-पक्षियों के तालाब भी कम महत्वपूर्ण नहीं थे तथा बाज अथवा लम्बी बन्दूक द्वारा मारे गये पक्षी सर्दियों में तो बहुत ही मूल्यवान थे, क्योंकि अन्यथा उन दिनों एकमात्र उपलब्ध मांस वही होता था जो पतझड़ के दिनों में अचार के रूप में सुरक्षित रखा जाता था। चमड़ी के रोग ऐसे नमकीन भोजन के अधिक प्रयोग के परिणामस्वरूप ही होते थे। क्योंकि सर्दियों की साग-सब्जियाँ कम थीं, आलू तथा सलाद अभी केवल आरम्भिक अवस्था में थे।

"सुई तथा चर्खे के कार्य स्त्री की शिक्षा के बहुत आवश्यक अंग थे, और क्योंकि परिवार के कुछ अपेक्षाकृत निर्धन सम्बन्धी बड़े घरों में स्त्री-सहायक के रूप में रहते थे, इसलिये वे घर के इन कार्यों के सम्पादन में उपयोगी होते थे। वर्ने-परिवार से सम्बद्ध ऐसी पांच-छः स्त्रियों के पत्र मिलते हैं जो अच्छे परिवारों की थीं, उनका अच्छा पालन-पोषण हुआ था और उतनी ही सुचारु रूप से शिक्षित थीं जितनी उनकी पड़ौसी स्त्रियां। ऐसा प्रतीत होता है कि ये अत्यन्त सम्मान के साथ भी रह रही हैं।

क्लेडन में घर की स्त्रियों के कार्य थे ऊन तथा सन को कातना, सुई का कार्य, कढ़ाई, उत्तम भोजन बनाना, अचार डालना, डाक्टर के आदेश अथवा परिवार की परम्परा के अनुसार बूटियों से औषधियां बनाना और फलों के शर्बत तैयार करना—जोकि पुन:स्थापना काल में, चाय तथा काफी के आने से पहले, जीवन के महत्वपूर्ण अंग थे।

श्रीमती वर्ने के दस बच्चे बड़े हुए। यह बड़ा तथा स्निग्ध परिवार, जिसमें कि कोई भी निष्कर्मण्य नहीं था, अनुपस्थित सदस्यों के साथ लम्बे पत्र-व्यवहार के लिये समय निकालता था। वर्ने परिवार के पुरालेखागार में एक ही वर्ष में लिखे चार सौ पत्र उपलब्ध हैं। सर एड्मंड तथा उसके बच्चे प्रायः राजा अथवा पार्लियामेंट के कार्यों से अथवा व्यक्तिगत या पारिवारिक कार्यों से बाहर यात्राओं पर जाते रहते थे। वे घोड़ों की पीठों पर अच्छी गति से कच्चे मार्गों पर भी जाने के अभ्यस्त थे। १६३६ में सर एड्मंड ने राजा के साथ र्विक से लंडन तक की २६० मील की यात्रा चार दिनों में तय की थी। पारिवारिक सवारी की चाल बहुत धीमी थी। यह एक स्प्रिंगों से रहित, चमड़े के पर्दो वाली अत्यन्त असुविधाजनक सवारी थी, जिसका उपयोग केवल ऐसे पंगु पुरुष तथा सुकोमल स्त्रियां ही करती थीं जो घुड़सवारी के अयोग्य थीं।

कामनवेल्थ काल में (पार्लियामेंट के शासन में) सार्वजनिक सवारियों का प्रचलन बढ़ रहा था। किन्तु ये अभी तक बहुत महंगे और मंद चलने वाली थी। १६५८ में ज्यॉर्ज इन, एल्डर्सगेट तथा लंडन से विभिन्न नगरों को निम्नलिखित किरायों पर जाती थीं—

"सालिसबरी को, दो दिन में, बीस शिलिंग में।
एक्सीटर को चार दिन में, बीस शिलिंग में।
प्लाईमौथ को पच्चास शिलिंग में,
और डर्हम को ५५ शिलिंग में (पहुँचने के समय की कोई गारंटी नहीं),
और प्रत्येक शुक्रवार को वेकफील्ड की ओर,
चार दिन में, चालीस शिलिंग में।"

सब प्रकार के घोड़ों का पालन तथा क्रय क्लेडन केवर्न लोगों की जीवन-विधि का एक आवश्यक अंग था। इंगलैंड के उस भाग में सवारी तथा हल दोनों में घोड़े बैलों का स्थान ले रहे थे। सर एड्मंड वर्न के सवारी के घोड़े फैनलैंड स्थित अपनी जागीर में 'सस्ते भाव में मांस लाने के लिये' भेजे जाते थे।

जब हम चार्ल्स प्रथम के राज्य में वर्न परिवार की जीवन-विधि तथा पत्रों की तुलना हेनरी षष्ठ के काल के पास्टनों से करते हैं तब हम इनमें एक सामान्य अनुरूपता देखते हैं, किन्तु हम उच्चत्तर नैतिक प्रवृत्तियों तथा परम्पराओं को, पारिवारिक सम्बन्धों में अधिक कोमलता तथा कम कठोर दृष्टिकोण को, तथा पड़ोसियों के प्रति कर्तव्य भावना को भी इनमें पाते हैं। ग्राम-जीवन में शान्ति तथा व्यवस्था को, और संभवतः अन्य परिवर्तनों को भी, दीर्घ परंपरा ने जीवन को बहुत शिष्टता-पूर्ण तथा न्याय-प्रिय बना दिया था। सर टोबी मैट्थ्यू ने, जोकि चार्ल्स प्रथम का एक दरबारी था और जो अन्य बहुत से देशों को उतना ही सम्यक् रूप से जानता था जितना कि अपने देश को, और रोमन कैथोलिक धर्म को स्वीकार किये होने के नाते जो अपने देश के लोगों को आलोचनात्मक और निष्पक्ष दृष्टि से देख सकता था, अपने पत्र-संग्रह की भूमिका में लिखा है कि "इंगलैंड के लोगों के पास 'सत्स्वभाव नामक चीज़ का एकाधिकार सा था' और कि इंगलैंड एकमात्र ऐसा इंडीज है जहां कि इस शुद्ध स्वर्ण की अथाह खान विद्यमान है। कोई भी जाति एक दीर्घ-स्थायी प्रतिशोध की नीच भावना से उतनी दूर नहीं मिलेगी जितनी अंग्रेज जाति।" इन उत्तम गुणों को उस समय एक कठोर परीक्षा का सामना करना पड़ा जबकि गृह-युद्ध प्रत्येक व्यक्ति के अपने द्वार पर आ उपस्थित हुआ—एक ऐसा युद्ध जोकि अपने क्षेत्र तथा प्रभाव में रोज़ेज़ के युद्धों से भी अधिक भयानक था, किन्तु जो कम स्वार्थपूर्ण तथा आर्थिक उद्देश्यों से लड़ा गया था।

अध्याय ९

पुनर्जागरण कालीन इंगलैंड

चार्ल्स द्वितीय, १६६०-१६८५; जेम्स द्वितीय, १६८५-१६८८ (क्रान्ति, १६८८-१६८९); विलियम तृतीय, १६८९-१७०२।

राजनैतिक दृष्टि से १६६० की पुनःस्थापना से सैनिक अधिनायकवाद की 'आरोपित शक्ति' के स्थान पर राजा, संसद और कानून की पुनःस्थापना हो गई। धार्मिक दृष्टि से इससे शुद्धिवाद (प्यूरिटैनिज़्म) के स्थान पर पादरियों, प्रार्थना-पुस्तक और धर्म के प्रति अंग्रेज़ी दृष्टिकोण की भी पुनः स्थापना हो गई। परन्तु सामाजिक दृष्टि से—और प्रस्तुत पुस्तक में हमारे लिए इसके सामाजिक पहलू का सर्वाधिक महत्व है—पुनःस्थापना ने संभ्रान्तवंशजों और जमींदारों को स्थानीय और राष्ट्रीय जीवन के प्रतिष्ठित नेताओं के रूप में उनकी वंशानुगत स्थिति में पुनः स्थापित कर दिया। अंग्रेज नागरिक का जनविश्रुत 'स्वामी के प्रति प्रेम', तथा 'जागीरदार और उसके सम्बन्धियों' में उसकी समादरपूर्ण और प्रशंसात्मक रुचि को पुनः पूर्ण रूप से व्यक्त होने का अवसर मिलने लगा। वस्तुतः, जैसा कि भविष्य में सिद्ध होने वाला था, सामन्तों, जागीरदारों और जमींदारों तथा उनकी पत्नियों की सामाजिक महत्ता राजा की शक्ति की अपेक्षा अधिक पूर्ण रूप से पुनःस्थापित हुई थी। आधरतः अंग्रेज़ लोग स्वभाव से दर्पपूर्ण थे, किन्तु दरबारी कार्य उनके स्वभाव के अनुकूल नहीं थे।

संसदीय शासन के युग में, जिसके अपने लोकतांत्रिक आदर्श और सैनिक यथार्थतायें थीं, वंशानुगत 'उच्चवर्ग' का बहुमत, जो अश्वारोही थे, निहित हो गया जिसका हमारे सामाजिक इतिहास में कोई पूर्व उदाहरण नहीं है। एक वर्ग के रूप में उनका विनाश नहीं हुआ था प्रत्युत् उन्हें दबा दिया गया था। न तो उनकी भूमि छीनी गई थी और न अर्थदंडों द्वारा उनकी संपदा का एक अंश से अधिक लिया गया था। किन्तु राष्ट्रीय और स्थानीय शासन के उनके स्थान और सामाजिक महत्ता को सफल सैनिकों अथवा राजनीतिज्ञों ने कुछ समय के लिये छीन लिया था जो क्रान्ति-युग के तीव्र परिवर्तनों के अनुरूप अपने आपको ढाल चुके थे। उनमें से कुछ, जैसे अल्ग्रेनॉन सिडनी और ऐशले कूपर, अच्छे कुटुम्बों के व्यक्ति थे। कर्नल प्राइड और बर्क जैसे दूसरे लोग ऐसी चुस्त पोशाक वाले कप्तान थे जिन्हें क्रामवेल चाहता था और जिन्हें उसने अपने साथ देश का

शासन-सूत्र संभालने के लिये ऊँचा उठा दिया था। पुनःस्थापना होते ही बहुत से शुद्धिवादी नेता या तो प्रभावहीन हो गए अथवा देश छोड़कर भाग गए। मॉन्क, ऐशले कूपर, कर्नल बर्क और ऐन्ड्रयू मारवेल जैसे दूसरे लोग संसदीय अथवा शासकीय पदों पर बने रहे। जब एक बार राजा की हत्या कर दी गयी तो भूतपूर्व शुद्धि-वादियों को निषिद्ध करना (गैर कानूनी घोषित करना) आवश्यक नहीं था। उनमें से केवल उन लोगों को निषिद्ध किया जाता था जो जिद्द करके शुद्धिवादी केन्द्रों में जाते रहते थे।

चार्ल्स द्वितीय के पूर्ण शासनकाल में धार्मिक विद्रोहियों का "क्लैरेण्डॉन कोड" के कानूनों के अधीन रुक-रुक कर गंभीरता से दमन हुआ। मुख्यतया नगर के रहने वाले मध्यम और निम्न वर्ग के लोग ही इस दमन के शिकार थे। उनमें से बहुत धनिक व्यापारी और उससे भी अधिक परिश्रमी दस्तकार थे। शीघ्र ही राजनयिकों ने यह शिकायत करना शुरू कर दी थी कि इस धार्मिक प्रपीड़न में व्यापार ने गंभीरता से हस्तक्षेप किया है। प्रपीड़ित लोगों में बहुत कम लोग भूस्वामी संभ्रान्त जन थे। धनी भूस्वामियों में शुद्धिवादी भावना उदारतावादी आन्दोलन में (व्हिग दल में) परिवर्तित हो गई थी जो शुद्धिवादी धर्म के बहुत अधिक कठोर अनुसरण में अपनी सांसारिक महत्वाकांक्षाओं को प्रतिबिम्बत करने से इनकार करते थे। व्हिग का एक साधारण प्रकार वह था जो शंकालु शैफ्ट्सबरी अथवा कुख्यात व्हार्टन में प्रकट होता था यद्यपि अश्वारोही दरबारियों और संसद के टॉरी नेताओं में भी ये मनोवृत्तियां कम प्रचलित नहीं थीं। फिर भी अनेक ऐसे व्हिग थे जो अच्छे ईसाई थे यद्यपि वे गिरजा-घरों में कभी भी वे उच्चाधिकारी नहीं थे। रसेल और अन्य व्हिग परिवार ऐंग्लिकन प्रार्थना में निष्ठायुक्त धार्मिकता से सम्मिलित होते थे। दूसरी ओर वे अपने निजी कार्यो के लिए पूजाकरों तथा बच्चों के लिए शिक्षकों के रूप में शान्त शुद्धिवादी पादरियों को नियुक्त करते थे। सभी लोगों के लिए दोनों प्रोटेस्टैंट धर्मों में कभी-कभी पूर्ण भेद करना कठिन था।

पुनःस्थापना के पश्चात् भूस्वामियों के वर्ग के सदस्यों की, जो शुद्धिवादी धार्मिक स्थलों पर जाते थे और उल्लंघनकारियों के रूप में प्रपीड़न सहते थे, संख्या बहुत थोड़ी थी। ऐंग्लिकनवाद् स्पष्टतः उच्च वर्ग का धर्म अधिक पूर्णता से बन गया था। यह स्थिति एलिजाबेथ अथवा लॉड के समय में नहीं थी। निश्चय ही अब भी कुछ रोमन कैथोलिक ग्रामीण संभ्रान्तजन थे, विशेषकर लंकाशायर और नार्थम्बरलैण्ड में। स्थानीय अथवा राष्ट्रीय शासन में उनके हर प्रकार के भाग लेने पर कानूनी प्रतिबन्ध था, जिसे राजा कभी कभी उनके लाभ के लिए तोड़ सकने में समर्थ हो जाता था। वैसे तो इंगलैंड के संभ्रान्तवर्ग तथा उच्च वर्ग ऐंग्लिकन पूजा के प्रति सामान्य अनु-रूपता से सामाजिक दृष्टि से संगठित थे। इस समय के पश्चात पादरी-प्रदेश के

गिरजाघर की सेवाएं गिरजाघर में सुरक्षित स्थान पर बैठने वाले पुरुषों और स्त्रियों के विशेष संरक्षण में थीं। गिरजे की पूजा में सम्मिलित होने वाले जनसमूह में अधिकांशत: उनके आश्रित और गांव के किसान और मजदूर रहते थे। आगे की कई पीढ़ियों तक रहने वाली ग्रामीण पूजा के सामाजिक पहलू का एक सुन्दर उदाहरण गिरजा में सर रोगर डि कावर्ली सम्बन्धित कृति में एडिसन ने निम्नलिखित शब्दों में दिया है—

"गिरजाघर जाने वाले एक अच्छे व्यक्ति के रूप में मेरे मित्र सर रोगर ने अपने गिरजा के भीतरी भाग की सुन्दरता अपनी पसन्द की कई पुस्तकों से बढ़ाई है। इसी प्रकार उन्होंने अपने खर्चे से प्रार्थना-मंच को एक सुन्दर कपड़े तथा सत्संग-मेज़ को घेर से अलंकृत किया था। बहुधा वे बताया करते थे कि अपनी संपदा का भार संभालने के समय बहुत से निवासी गिरजा में कभी कभी आया करते थे। उन्हें घुटने टेकने और अनुक्रियाओं में शामिल होने के लिये सर रोगर ने उन सबको एक पीठ (स्टूल) तथा एक सामान्य प्रार्थना-पुस्तक दी थी। साथ ही उन्होंने एक भ्रमणकारी गायक को नियुक्त कर लिया जो गांव-गांव में घूमकर लोगों को धार्मिक भजनों को सही ढंग से गाने की शिक्षा देता था। चूंकि गिरजा में जाने वाले जन समूह के रोगर भूस्वामी थे अत: वे उन्हें सदैव सुव्यवस्थित रखते थे और स्वयं के अतिरिक्त किसी को सोने की आज्ञा नहीं देते थे। क्योंकि यदि उपदेश के समय वे अचानक ऊंघ जाते तो जागते ही खड़े होकर चारों ओर देखते और यदि कोई दूसरा ऊंघता होता तो या तो स्वयं अथवा अपने नौकर को भेजकर उसे जगा देते।"

दूसरी ओर, सहिष्णुता और प्रपीड़न के समय में समान रूप से, प्रार्थना सभाओं में विरोध प्रकट करने वाले जनसमूहों में ऐसे लोग सम्मिलित थे जिन्हें अपनी स्वतंत्रता पर गर्व था और जिन्हें यह महसूस करना रुचिकर लगता था कि गिरजा और उसका पादरी उनके हैं। कम से कम सामाजिक दृष्टि से वे जिऑन में सुरक्षित थे; वे भद्र-महिला और उसके मार्गरक्षक की अत्यन्त शंकालु नजर से बच सकते थे। वेस्लेयान आन्दोलन तक विरोध प्रकट करने वाले प्रार्थना-समूह और सभाएं बहुधा नगरों, विपण-कस्बों और औद्योगिक केन्द्रों तक सीमित थीं यद्यपि बहुत से गावों में क्वेकरों और बैप्टिस्टों के कुछ छितपुट परिवार रहते थे। जॉन बून्यान जैसे कुछ विरोध प्रकट करने वाले गरीब दस्तकार थे; दूसरे विशेषकर लंदन और ब्रिस्टल में धनिक व्यापारी थे जो प्रपीड़न करने वाले भद्र भूपतियों को खरीद सकते थे। और ऐसे व्यापारी वस्तुत: बहुधा ज़रूरतमन्द भद्रजनों को खरीद भी लेते थे जैसे ही उनकी भूमि पर बंधक बढ़ जाते थे। अगली पीढ़ी में विरोध प्रकट करने वाले व्यापारी का बेटा स्वयं ही भद्र भूपति और गिरजा का स्वामी हो जाता था। और फिर इससे अगली पीढ़ी में तो इस कुटुम्ब की महिलाएं सभागृहों में उपस्थित होने वालों अथवा व्यापार करने वालों के बारे में निरादर से बातें करती थीं।

इस प्रकार पुनःस्थापना के समय अंग्रेज़ों की धार्मिक श्रेणियों का सामाजिक स्वरूप रूढ़िबद्ध था और विक्टोरिया के काल तक वस्तुतः अपरिवर्तित रहा।

धार्मिक आचरण में यद्यपि उच्चवर्ग अधिकांशतः एक सा था, राजनैतिक दृष्टि से यह व्हिगों और टोरियों में विभक्त हो गया था। टोरियों की संख्या बहुत अधिक थी; वे धार्मिक विरोध (असहमति) को समाप्त कर राष्ट्र और ऐंग्लिकन चर्च को समानरूपी बना देना चाहते थे। किन्तु व्हिगों के पियर और भद्रजन, जो एक योग्य और धनी अल्पसंख्यक वर्ग था, कम से कम सभी प्रोटेस्टैंटों के लिए सहिष्णुता के सिद्धान्त का उद्घोष करते थे। वे अपनी राजनैतिक शक्ति की पुष्टि औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्रों के शुद्धिवादियों से सांठगांठ करके करते थे। ये शुद्धिवादी अनेक ज़िला खण्डों (बारोज़) में स्थानीय निकायों तथा संसद् के चुनावों को नियंत्रित करने में सक्षम थे। अपने पूर्वगामी कैवेलियरों की भांति टॉरी ऐसे समाज के खंड थे जो ग्रामीण इंगलैंड के पुराने ढंगों का अनुसरण अत्यधिक तन्मयता से करते थे। अपने राउंडहेड पूर्वजों की ही भांति व्हिग अधिकतर भूस्वामी वर्ग के ऐसे सदस्य होते थे जिनका व्यापारिक लोगों और हितों से निकट का सम्पर्क था। इसलिए दीर्घकाल में टॉरी नीतियों की अपेक्षा व्हिगों की नीतियां आर्थिक परिवर्तन की अनवरत प्रक्रिया से सफल होती थीं क्योंकि यह प्रक्रिया धीरे धीरे एक ऐसी कृषि और औद्योगिक क्रान्ति की गति को बढ़ाती थीं जिससे पुरातन ढंगों का न्यूनतम शेष रह जाये।

पुनःस्थापना का संसार, क्रामवेल के समय के इंगलैंड में धार्मिक मामलों में जो अधिक दिलचस्पी थी, उससे कहीं आगे निकल गया था। जन-प्रतिक्रिया, जिससे शुद्धिवादियों को उखाड़ फेंका, धार्मिक कम और ऐहिक अधिक थी। 'हुडिब्रास' ऐंग्लिकन दया का परिणाम नहीं था। वास्तव में, अंग्रेजों ने पुराने धर्म की स्थापना को अधिक सन्तोप से देखा, इसका प्रधान कारण यह था कि यह जीवन के साधारण अवसरों पर धार्मिक उत्साह से पूर्ण व्यवहार की कम स्थिर और प्रकट मांग करता था। शुद्धिवादियों ने लोगों के लिए धर्म और भोजन में कोई भेद न छोड़ा था जिससे उन्हें धर्म से वितृष्णा सी हो गई थी।

१६६० के पश्चात् एक शताब्दी तक शुद्धिवादियों का बहुधा बहुत क्रूर प्रपीड़न हुआ जिसका कारण शुद्ध धार्मिक न होकर अधिकतर राजनैतिक और सामाजिक था। 'क्लैरेंडन कोड' का उद्देश्य राउंडहेड पार्टी को पुनर्जीवित होने से रोकना और ऐंग्लिकन और कैवेलियर्स के साथ हुए अन्यायों का प्रतिशोध लेना था। किन्तु प्रपीड़न की भावना न तो धार्मिक थी और न धर्म विरोधियों को कुचलना। भूस्वामियों के कठोर कर्मचारी पड़ोसी कस्बे के प्रेसबिटेरियनों से घृणा इसलिए नहीं रखते थे कि वे काल्विन के सिद्धान्तों के अनुयायी थे बल्कि इसलिए कि वे नाक से बात करते थे और ईमानदारी से शपथ खाने के स्थान पर धर्म ग्रन्थों के उद्धरण देते थे और टोरियों की अपेक्षा व्हिगों के पक्ष में मतदान करते थे।

१६६७ में 'डि हेरेटिकों कंबूरेंडो' नामक याचिका समाप्त कर दी गई और धर्म संबंधी दोषारोपण के लिये मृत्युदंड भी कानूनी तौर पर समाप्त कर दिया गया; किन्तु यथार्थ में इंगलैंड में एकतावादियों (यूनिटैरियनों) के बाद किसी भी धर्म-विरोधी को मृत्युदंड नहीं दिया गया था जिनको शेक्सपीयर के जीवनकाल में जीवित जला दिया गया था। शुद्धिवाद अपनी प्रभुता के समय में धार्मिक कट्टरता का पोषक नहीं था। क्रामवेल के काल में इंगलैंड में अनेक सिद्धान्त और सम्प्रदाय प्रचलित थे और पुनःस्थापन के राजाओं के काल में भी सैकड़ों धर्म विद्यमान थे। जहां धर्मों की अनेकता और विभिन्नता हो तो वहां अधार्मिकता के लिए प्रपीड़न की कम संभावना होती है। किन्तु प्रेस्बिटेरियनों के काल के स्काटलैंड में, जहां जनसाधारण में मतों का कम प्रभाव था और सिद्धान्तों में कट्टरता की भावना अधिक लोकप्रिय थी, सन् १६६७ में धर्मग्रन्थों की अधिकारिता का विरोध करने पर एक १८ वर्षीय युवक को फांसी दे दी गई थी; जबकि गृह युद्ध के बाद किसी भी समय इंगलैंड में 'नास्तिकता' के लिये प्रसिद्ध किसी भी व्यक्ति के जीवन अथवा स्वतन्त्रता को कोई खतरा नहीं था यद्यपि उसे सामाजिक हानि उठानी पड़ सकती थी। इस शताब्दी की समाप्ति पर, एकतावादी (यूनिटैरियन) सिद्धान्त, जिनके लिए एक शताब्दी पहले लोग फांसी पर लटका दिए जाते थे, सर्वोच्च भूपति सम्मान प्राप्त अंग्रेज प्रेस्बीटेरियन धार्मिक सभाओं में प्रचलित मिलते थे। फिर भी बहुत से अग्रगण्य राजनीतिज्ञ अधिक हर्ष के मनोभावों में, स्वयं राजा चार्ल्स भी, शंकालु थे और उन सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ाते थे।

यह तथ्य अधिक गंभीर महत्व का था कि इंगलैंड में प्रयोगात्मक विज्ञान का तेज़ी से विस्तार हो रहा था। संसत्-शासन के अन्तर्गत लंडन तथा विश्वविद्यालयों में रहने वाले वैज्ञानिकों का एक समूह था जिनका कार्य पुनस्स्थापन के समय के राज-दरबार में विश्रुत और अनुमोदित था। राजा चार्ल्स और उसके चचेरे भाई राजकुमार रुपर्ट के संरक्षकत्व में रॉयल सोसाइटी की स्थापना हुई थी; राजकुमार रुपर्ट स्वयं रासायनिक प्रयोग करता था।

अंग्रेजों के व्यावहारिक मस्तिष्क को कृषि, उद्योग, सागर-यात्रा, चिकित्सा और इंजिनियरिंग जैसी चीज़ों में विज्ञान का उपयोग आकर्षित करता था। विज्ञान के उत्पादन के नियोजन के परिणामस्वरूप होने वाली औद्योगिक क्रान्ति के पूरे बल के साथ आने में अभी एक शताब्दी का समय शेष था। किन्तु चार्ल्स द्वितीय के शासन काल में पहले ही दैनिक महत्व के बहुत से विषयों का वैज्ञानिक भावना से अध्ययन किया जाता था और इस नई भावना का इंगलैंड के शिक्षित वर्ग पर पहले ही बड़ा प्रभाव हो चुका था। राबर्ट बायल, आइज़क न्यूटन और रॉयल सोसाइटी के प्रारंभिक सदस्य धार्मिक व्यक्ति थे जो हाब्स के सन्देहास्पद सिद्धान्तों का खण्डन करते थे। किन्तु उन्होंने ब्रह्माण्ड में एक नियम के विचार तथा सत्य की खोज के लिये जांच-पड़ताल की वैज्ञानिक विधि से स्वदेशवासियों को परिचित करा दिया था। यह विश्वास किया जाता था

कि इन रीतियों से बाइबिल के इतिहास और करिश्मायुक्त धर्म के विपरीत कोई निष्कर्ष नहीं निकलेंगे। न्यूटन का जीवन मृत्युपर्यन्त इसी आस्था पर टिका रहा। किन्तु उसके सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण के नियम और कलनगणित (कैल्कुलस) से सत्य के अन्वेषण की ऐसी विधियां विकसित हुई थीं जिनका अर्थशास्त्र से कोई संबंध न था। वैज्ञानिक अन्वेषण के प्रसार से धार्मिक आस्था का स्वभाव प्रभावित हुआ यद्यपि उस समय तक उसका कलेवर अप्रभावित रहा। १६८८ की क्रान्ति के अनन्तर जो उदारतावादी-दया का युग आया उसकी तैयारी पुनःस्थापना के इन बौद्धिक आन्दोलनों ने की थी।

चार्ल्स द्वितीय के शासन के प्रारंभ में स्प्रैट ने 'रॉयल सोसाइटी का प्रथम इतिहास' तथा उसके स्वरूप और उसके उद्देश्यों के संबंध में लिखा। कुछ वर्ष पश्चात् स्प्रैट रोकेस्टर का बिशप हो गया। इस व्यक्ति में नये युग की उच्च प्रकार की विशेषता थी क्योंकि उसका मस्तिष्क बड़ा विलक्षण था और उसकी राय में राजनैतिक लोच थी। हाई चर्च का देवता जिस 'विद्वतापूर्ण और जिज्ञासु युग' में रहता है उसकी सराहना करता है। वह रॉयल सोसाइटी के सदस्यों के व्यावहारिक ध्येयों की प्रशंसा करता है क्योंकि वे 'सम्पूर्ण मानवता की शक्तियों में वृद्धि करने और त्रुटियों की दासता से मुक्त करने' की ओर उन्मुख हैं। वह देवता इन नये दार्शनिकों के लिये अन्वेषण का विस्तृततम आयाम घोषित करता है, 'केवल ईश्वर और आत्मा के दो विषय उनके विचार क्षेत्र से बाहर थे।' शेष सभी विषयों पर स्वेच्छा से विचार कर सकते थे। ईश्वर की प्रशंसा उसकी सृष्टि की योजना का अध्ययन कर की जा सकती थी। किन्तु विज्ञान के निष्कर्षों को धर्मशास्त्र में पच्ची करने का कोई प्रयास नहीं किया जा सकता था। विद्यालयों के अध्यापकों ने बहुत लम्बी अवधि तक और बड़े कष्ट से इस परम्परा को बनाये रखा था। 'ईश्वर और आत्मा' को निश्चित मान लिया जाता था और उनके विषय में सोचना निरर्थक माना जाता था। यद्यपि यह स्थिति बड़ी रूढ़िवादी थी किन्तु मूलतः धार्मिक नहीं थी। ईश्वर अब सब कुछ नहीं रह गया था। ऐसे (वैज्ञानिक) अध्ययनों से शासित संसार में मिथ्या विश्वासों का निर्मूल सिद्ध होना स्वभाविक था। और जो सम्मानपूर्ण स्थान अभी तक कविता को मिलता था, उसके स्थान पर गद्य को प्रस्थापित होना था। और यह भी संदिग्ध हो चला था कि क्या धर्म अपने पूर्व के गौरव को कभी बनाए रख सकेगा ?

स्प्रैट पुनःस्थापन युग के उन श्रेष्ठ लेखकों में था जिन्होंने सुप्रभ गद्य का निर्माण किया किन्तु वह एक मौलिक विचारक नहीं था और इस कारण से रॉयल सोसाइटी पर उसकी पुस्तक (१६६७) नये युग के मस्तिष्क की लाक्षणिक प्रतिनिधि थी। कुछ वर्षों पश्चात् लॉक और न्यूटन की भांति बिशप ने बाइबिल के समय के "प्राचीन करिश्मों" को विशेषाधिकारपूर्ण घटनाएं माना जिनमें ईश्वर अपनी सृष्टि में असामान्य हस्तक्षेप करता था। किन्तु प्रोटेस्टैंट, ऐंग्लिकन वातावरण में आधुनिक करिश्मों की अपेक्षा

नहीं की जा सकती थी। स्प्रैट ने घोषणा की कि 'वस्तुओं का व्यापार शान्तिपूर्वक प्राकृतिक कारणों और प्रभावों के अपने स्वयं के सत्य मार्ग पर चलता है।' अब यह शैक्सपीयर के समय का संसार नहीं था। इस दार्शनिक विशप के लिए राजा ओवरेन और परियों की उसकी सेवा केवल असत्य मिथ्या कल्पना थीं। जब क्रान्ति युग के अंग्रेज 'पोप के करिश्मों' पर हंसते थे तो इसलिए नहीं कि वे पोप से संबंधित थे किन्तु इसलिये कि वे करिश्मे थे। स्प्रैट ने अपने अति सहजविश्वासी देशवासियों को सचेत किया कि वे ताउनों, आगों अथवा बाढ़ों के कारणों को पाप के लिए ईश्वर के निर्णय न मानें। अन्ततः भौतिक विज्ञानों का 'नया दर्शन' मनुष्य के लिए उपयोगी आविष्कारों की मां होगी जिससे उसका जीवन अधिक समृद्ध और सुविधापूर्ण बनेगा। 'जबकि प्राचीन दर्शन में हमें केवल कुछ वन्ध्य पद और विचार मिल सकते हैं, तो नये दर्शन से हमें सभी प्राणियों के उपयोग की शिक्षा मिलेगी और उससे फलकारिता और बहुलता के सभी लाभों से हम सम्पन्न होंगे।'

यद्यपि विज्ञान की प्रश्नमूलक भावना को विशप का उत्साहपूर्वक आशीर्वाद मिला, फिर भी यह आश्चर्यजनक नहीं है कि शताब्दी के बाद वाले वर्षों में जादू-टोना के दोपारोपणों के प्रति शिक्षित लोगों की प्रतिक्रिया उससे बहुत भिन्न थी जो कुछ समय पहले होती थी। न्यायाधीशों द्वारा ऐसी विचित्र कहानियों के साक्ष्य की बहुत सूक्ष्म और कभी कभी घृणापूर्ण ढंग से समीक्षा की जाती थी। जनसाधारण में इस विषय पर अब भी घोर मिथ्या-विश्वास फैला था किन्तु संभ्रान्त लोगों में इसके प्रति बड़ी शंकालु दृष्टि थी।

जादू-टोना करने वाली अभियुक्त स्त्रियों को अब दो लाभ उपलब्ध थे। इंगलैंड अब एक ऐसा देश था जहां सामान्य कानून के अन्तर्गत अपराध स्वीकार करने के लिए प्रताड़ना वर्जित थी। मुकदमों के संचालन और न्याय देने में न्यायाधीशों को लगभग उतना ही नियंत्रण प्राप्त था जितना कि पंचों को। अधिक साधारण रूप से, जादू-टोना करने की दोषी स्त्रियों का यह सौभाग्य ही था कि इंगलैंड पर अब भी कुलीन-तंत्रीय शासन था। बहुत से ग्रामीण क्षेत्रों की जनता को यदि संभ्रान्त जन नहीं रोकते थे तो वे उन्नीसवीं शताब्दी तक जादूगरनियों को या तो डुबा देते थे अथवा जला डालते थे। किन्तु १७३६ में, बहुत से सरल लोगों के रोप प्रकट करने के बावजूद संसद् ने पहले से उस प्रभावहीन कानून को समाप्त कर दिया जिसमें जादूगरनियों को मृत्युदंड देने का प्रावधान था।

लोगों की राय में जो क्रमशः परिवर्तन हुआ, जिससे पहले शिक्षित वर्ग प्रभावित हुआ, उसका संबंध हम यार्क के न्यायालय में १६६७ में हुए जादूगरनी के उस मुकदमें की सुनवाई से कर सकते हैं जिसका विवरण सर जॉन रेरेस्बी ने दिया था क्योंकि वे स्वयं वहां उपस्थित थे।

"एक अभागी बूढ़ी स्त्री को डायन घोषित कर दिया गया था। मेरी अपेक्षा कुछ लोग, जो ऐसी चीज़ों पर अधिक विश्वास करते थे, उस स्त्री के विरुद्ध मिले साक्ष्य को प्रबल मानते थे। वह लड़का, जो कहता था कि उस डायन ने उस पर जादू कर दिया था, न्यायालय में ही उसे देखकर मूर्छित हो गया। किन्तु इस सब काण्ड में यह देखा गया कि लड़के में कोई विकृति नहीं आई और न उसके मुंह से झाग गिरा और न उसका मूर्छा धीरे धीरे उतरा वरन् वह एकदम दूर हो गया था। इस पर न्यायाधीश ने उस बूढ़ी स्त्री को दोषमुक्त घोषित कर दिया।

फिर भी इस विचित्र कहानी को सुनाना उपयुक्त है। मेरा एक सिपाही क्लिफोर्ड टॉवर के द्वार पर रात्रि के ग्यारह बजे पहरे पर था जिस रात को डायन को दोषी ठहराया गया था। किले में बहुत शोर सुनकर वह दालान में आया। वहां पर उसे दरवाजे के नीचे से एक लपेटा हुआ कागज खिसकते हुए दिखा। चन्द्रमा के प्रकाश में उसकी कल्पना ने पहले तो उसे एक बन्दर की शक्ल में बदलते देखा, और फिर एक मुर्गा जो इधर-उधर चलने लगा। इस पर वह सिपाही जेल पर गया और उपजेलाधिकारी को पुकारा। उसने भी आने पर लपेटे हुए कागज को दरवाजे के नीचे से खिसकते हुए और नाचते हुए देखा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि दरवाजे के नीचे बहुत ही संकरी सांक थी। मुझे यह बात सिपाही और जेलर दोनों ने स्वयं बतलाई।"

यहां यह द्रष्टव्य है कि सर जॉन रेरेस्वी और न्यायाधीश दोनों पढ़े लिखे व्यक्ति थे फिर भी वे पंचों, सिपाही और उपजेलाधिकारी की अपेक्षा अधिक संदेहशील थे।

विज्ञान को संरक्षण प्रदान करने के लिए चार्ल्स द्वितीय और उसके दरबारी भरपूर प्रशंसा के पात्र थे। इसी प्रकार शुद्धिवादियों की मूर्खतापूर्ण कट्टरता से जिस रंगमंच को दबा दिया गया था, और जो पुनर्जीवन के लिए संघर्षरत था, उसे संरक्षण प्रदान कर चार्ल्स शासन ने राष्ट्र की एक सामयिक सेवा की किन्तु संरक्षण के ढंग की उतनी ही भरपूर प्रशंसा नहीं की जा सकती।

पुनर्जीवित नाट्यशालाएं उन नाट्यशालाओं से, जिनमें पहले शैक्सपीयर के नाटक अभिनीत हुए थे, कई महत्वपूर्ण पहलूओं में भिन्न थीं। आज सम्पूर्ण नाट्यशाला पर छत होती थी। और मंच को मोमबत्ती के कृत्रिम प्रकाश से दीप्त किया जाता था। उसमें पाद-प्रकाश, पटाक्षेप और चित्रांकित दृश्य रहते थे। इसके अतिरिक्त गृह युद्ध के पूर्व की भांति स्त्रियों की भूमिका सुप्रशिक्षित लड़के नहीं करते थे वरन् स्त्री अभिनेत्रियां ही। दर्शक अभिनेत्रियों को देखने में उतनी ही उत्सुकता दिखाते थे जितनी नाटक को देखने में। उस समय की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री नेलगिन्ने थी जिसकी वैयक्तिक सजीवता और आकर्षण शायद उसकी व्यावसायिक पटुता से अधिक प्रभावी सिद्ध होते थे। एक विस्तृत सीमा में यह एक नयी नाट्यशाला थी, और एक नयी नाटकीय कला भी, जिसमें कई नई संभावनाएं और खतरे निहित थे।

बहुत वर्षों तक लंडन में केवल एक बिना छत वाली नाट्यशाला थी जो ड्ररी लेन में स्थित थी और जिसका नाम था थियेटर रॉयल। कभी कभी एक या दो अन्य नाट्यशालाएं भी खुल जाती थीं। किन्तु प्रान्तों में कहीं भी स्थिर नाट्यशालाएं न थी और भ्रमणकारी कंपनियां बहुत कम और बड़ी बुरी हालत में थीं। पुर्सेल के काल में संगीत एक राष्ट्रीय मनोरंजन था किन्तु अभिनय नहीं। इस कला का अभ्यास बहुत से शौकिया लोग अपने घर पर ही करते थे। नाटक केवल लंडन तक सीमित था और वहां भी इसमें जनसाधारण की रुचि नहीं थी वरन् केवल राजघराना और नगर के संभ्रान्त लोग इसमें रुचि लेते थे। पुनःस्थापना के प्रारंभिक वर्षों में नाटक से केवल उपरोक्त वर्ग की विकृत रुचि का संतोष होता था।

उस समय सम्पूर्ण इंगलैंड की अपेक्षा व्हाइट हाल और वेस्टमिंस्टर में एक कठोर-हृदयी और उदासीन छुद्रता व्याप्त थी। चार्ल्स द्वितीय के राज दरबार में आने-जाने वाले लोग, जो पोप के षड्यन्त्र और पृथकतावादी अधिनियम के समय के प्रथम व्हिग और टोरी नेता थे, सभी प्रकार के गुणों को आडम्बर कहकर उनका उपहास उड़ाते थे और यह मानते थे कि किसी भी व्यक्ति को खरीदा जा सकता था।

"हर सिद्धान्त के बारे में इतना स्पष्ट और निर्भ्रान्त है कि उसका वार्षिक मूल्य केवल दो सौ पौंड है। और यदि कोई सिद्धान्त पहले से सत्य सिद्ध हो गया है तो उसे पुनः असत्य सिद्ध करने के लिए दो सौ पौंड अतिरिक्त चाहिए।" (हुडिब्रास)

इसलिये वे अपने को बिक्री योग्य समझते थे। फिर भी दो हजार शुद्धिवादी पादरियों ने अपनी जीविका को छोड़कर अन्तरात्मा के लिए प्रपीड़न सहने का निर्णय किया। इस कार्य में उनके समक्ष उनके शत्रुओं, ऐंग्लिकन पादरियों, का उदाहरण था जिन्होंने बीस वर्ष पूर्व अपने धर्म का चरम रूप में परित्याग करने की अपेक्षा अनेक यातनाएं सही थीं। शुद्धिवादी और ऐंग्लिकन पादरी, जिन्होंने अपने पूर्व धर्म का त्याग कर जीविका की रक्षा करना अस्वीकार कर दिया था, कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट पादरियों की तुलना में दस गुनी संख्या में थे जिन्होंने ट्यूडरों द्वारा बार बार धर्म परिवर्तन की अवधि में इसी प्रकार की यातनाएं सही थीं। अन्तरात्मा का अर्थ पुरातन की अपेक्षा अधिक था, कम नहीं। इंगलैंड पर्याप्त सुदृढ़ था। किन्तु उसके राज-दरबारी और राजनीतिज्ञ सड़ गये थे। क्योंकि स्वयं राजा और कुलीनवर्ग की युवा पीढ़ी अपनी शिक्षा और पारिवारिक जीवन के विघटन के कारण नैतिकता-हीन हो गए थे। उनकी इस स्थिति में अन्य कारक भी सहायक थे, जैसे देशनिकाले और सम्पत्ति की जब्ती से उत्पन्न अपमानजनक निर्धनता, धर्म के नाम पर उनके साथ किए गए अन्याय की एक लंबी अवधि, अनुबंधों और शपथों को गैरजिम्मेदारी से बनाने और बिगाड़ने का निरन्तर दृश्य, और क्रान्ति तथा प्रतिक्रांति के सभी निकम्मे पहलू जिनके वे शिकार थे।

इन्हीं कारणों से राजनीति और फैशन के पुन:स्थापित नेताओं में किसी भी प्रकार के सद्गुण में कठोर अविश्वास की भावना विद्यमान थी। प्रारंभिक पुन:स्थापन के नाटक में, जो उपरोक्त नेताओं के संरक्षण पर आश्रित था, उपरोक्त भावना परिलक्षित होती थी। एक सबसे अधिक सफल नाटक वाइकरले का 'देहाती पत्नी' (कण्ट्री वाइफ) था। इसके प्रमुख पात्र ने हिजड़ा होने का बहाना करके स्त्रियों के अन्तरंग स्थानों में प्रवेश पा लिया था जिससे वह स्त्रियों को फुसलाने में सफल हो गया था। एक ऐसे पात्र का चरित्र और उसकी कार्यवाही की प्रशंसा की जाती थी। किसी भी दूसरे युग में, भूत अथवा भविष्य में, अंग्रेजी श्रोताओं को ऐसे कथानक में कोई रुचि हो सकती थी।

फिर भी रंगमंच की पुन:स्थापना हो चुकी थी और उसका बहुत सा कार्य अच्छा था। इसने शैक्सपीयर और वेल जॉन्सन के नाटकों को पुनर्जीवित किया। इसकी शोभा को ड्राइडेन के नाटकों की कवित्वपूर्ण प्रतिभा और पुरसेल की आकस्मिक धुनों की गीतमय प्रतिभा तथा ओपरा में खेले जाने वाले नाटकों ने बढ़ाई। अगली पीढ़ी के वाइकरले की क्रूरताएं कतई प्रचलन से बाहर हो गई। उनका स्थान कान्ग्रेव और फरकुहर की नई अंग्रेजी हर्षप्रधान नाटिकाओं ने ले लिया। साधारणतया इन महान् लेखकों को वाइकरले के साथ ही 'पुन:स्थापना' कहा जाता है किन्तु सही कालक्रम की दृष्टि से कान्ग्रेव और फरकुहर को 'क्रांति युग का नाटककार' कहना अधिक समीचीन होगा क्योंकि उन्होंने विलियम और ऐन्नी के शासनकाल में लिखा था।

इस प्रकार अंग्रेजी रंगमंच का वाइकरले युग अल्पजीवी रहा। किन्तु इसने स्थायी क्षति कर डाली थी क्योंकि इसने बहुत से पवित्र और सद्विचारी परिवारों, और उच्च और निम्न वर्ग के धर्म में नाटक के प्रति एक विरोधी दृष्टिकोण उत्पन्न कर दिया था वैसा ही जैसाकि शैक्सपीयर के समय में शुद्धिवादियों में था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक संभ्रान्त परिवारों में पले थोड़े भी नवयुवकों को नाटक देखने की अनुमति नहीं थी। और यदि ऐसी कठोरता नियम होने की अपेक्षा अपवाद मात्र होती तो यह कहना सत्य था कि राष्ट्र का गंभीर विचारक भाग कभी भी नाटक के प्रति गंभीरता से विचार नहीं करेगा। इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति के लिए शुद्धिवादी धर्मान्धता और उसके परिणामस्वरूप प्रारंभिक पुन:स्थापन युग के नाटक (रंगमंच) की अनर्गलता बहुत हद तक उत्तरदायी थे। ये दु:खद दशाएं विशेषत: इंगलैंड में व्याप्त थीं। यहां वाइकरले का युग था और फ्रांस में मोलियर, कार्नील और रेसिन का युग था। वहां 'दोनों' हर्षप्रद और दुखद नाटक सुप्रवृत्त और गंभीर थे। एलिजाबेथ युग के अंग्रेजों ने उन्हें इस उद्देश्य से अपनाया कि उनका सभ्यता में वृद्धिकारक प्रभाव और जीवन की एक आलोचना होगा।

जिस युग ने न्यूटन की 'प्रिंसिपिया', मिल्टन की 'पैराडाइज लास्ट', ड्राइडन की

'ऐब्सेलम और ऐकीटेफेल' जैसी कृतियों, पुसल के संगीत और रेन के गिरजाओं को जन्म दिया और दैनिक जीवन की अन्य अनेक विविध रुचियों और उत्सुकताओं को भी, जिनका उल्लेख एवीलियन और पेपीज़ ने किया है, ऐसा युग अंग्रेजों की प्रतिभा और सभ्यता के लिए एक सबसे महान युग था। इसका इतना गौरव मुद्रण यंत्रों के बिना नहीं हो सकता था किन्तु यह ध्यान देने की है कि इस काल में बहुत कम मुद्रण कार्य हुआ।

इसका प्रथम कारण था कठोर संचार-नियंत्रण। अधिकारियों की बिना आज्ञा प्राप्त किए कोई भी पुस्तक, पत्रिका अथवा सम्वाद-पत्र कानून नहीं छापा जा सकता था। धर्म अथवा राज्य में विद्यमान संस्थान के विरोधी (शत्रु) गुप्त मुद्रणालयों में ही अपने विचार छपा सकते थे। ऐसे छापेखाने हताश व्यक्तियों द्वारा लंदन की अट्टालिकाओं में चलाये जाते थे। इनके पीछे रोगर लेस्ट्रेंज की खुफिया पड़ी रहती थी और पकड़े जाने पर उन्हें बर्बरतापूर्ण दंडित किया जाता था।

किन्तु वादविवाद को कुचलने वाले इस संवाद-नियंत्रण का राजकीय विशेषाधिकारों से सम्मोदन न होकर संसद के एक नये अधिनियम द्वारा हुआ। सर्वप्रथम १६६३ में कैवेलियर संसद ने प्रथम अनुज्ञप्ति-अधिनियम पारित किया था। उसका उद्देश्य राजद्रोह तथा धर्मोल्लंघन सम्बन्धी प्रकाशनों को रोकना था। उस समय ऐसे प्रकाशन राउन्डहेड तथा शुद्धिवादी रचनाएं थीं। व्हिग नियंत्रिण 'हाउस आफ कामन्स' के युग में, तथा १६७९ से १६८५ के बाद उन वर्षों में, जब संसद विघटित कर दी गई थी, उपरोक्त अधिनियम का समय-समय पर पुनरीक्षण किया गया। जेम्स द्वितीय की संसद द्वारा अनुज्ञप्ति-अधिनियम का पुनरीक्षण किए जाने के बाद क्रान्ति द्वारा उद्घाटित एक अधिक उदारवादी युग में इस अधिनियम को समाप्त हो जाने दिया। १६९६ के पश्चात् किसी भी अंग्रेज़ नागरिक को स्वेच्छानुसार गिरजा अथवा राज्य के किसी भी अधिकारी की अनुमति के बिना छापने और प्रकाशित करने की अनुमति मिल गई थी किन्तु यदि उसमें किसी प्रकार की मानहानि अथवा राजद्रोह का प्रयास पाया जाता तो उसे अपने देशवासियों के पंचों के समक्ष उत्तर देना पड़ता था। इस प्रकार मिल्टन का 'अनुज्ञप्ति रहित मुद्रण की स्वतंत्रता' का स्वप्न उसकी मृत्यु के एक शताब्दी पश्चात् साकार हो गया।

संवाद-नियंत्रण के प्रतिरोधों के चालू रहते हुए राजनैतिज्ञों की अपेक्षा साहित्यकारों और वैज्ञानिकों को मुद्रणालयों का प्रयोग करने की अधिक स्वतंत्रता थी। यद्यपि धार्मिक अनुज्ञापक[1] विमतिसूचक विशेष सिद्धान्तों की अनुमति देते थे फिर भी उन्होंने

---

[1] १६६३ के अनुज्ञप्ति अधिनियम में राजनैतिक संधियों को सेक्रेटरी आफ स्टेट, विधि की पुस्तकों को लार्ड चांसलर, हेराल्ड्री की पुस्तकों को अर्ल मार्शल अथवा किंग्स आफ आर्म्स, और अन्य सभी प्रकाशनों को कैंटरबरी के आर्क बिशप और लन्दन के

'पैराडाइज लॉस्ट' और 'पिल्ग्रिम्स प्रॉग्रेस' के प्रकाशन को न रोक कर सुधारों को न दबाने की अपनी प्रवृत्ति का परिचय दिया। न्यूटन की 'प्रिंसिपिया' के प्रकाशन में १६८६ में रॉयल सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में सैमुअल पेपीज़ की भावना का प्रादुर्भाव था।

इतने पर भी प्रकाशित पुस्तकों और पत्रिकाओं की संख्या बहुत अधिक नहीं थी। अनुज्ञप्ति अधिनियम के प्रावधानों के कारण राज्य भर में उत्कृष्ट मुद्रकों की संख्या केवल बीस थी और उनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले मुद्रणालयों की संख्या कठोरता से सीमित थी। दो विश्वविद्यालय-मुद्रणालयों के अतिरिक्त, सभी उत्कृष्ट मुद्रक लंडन में ही थे। जिसका परिणाम देश में बौद्धिक जीवन के लिए बाधक था। अगली शताब्दी में, जब अनुज्ञप्ति अधिनियम लागू नहीं था, मुद्रण का व्यापक विस्तार हुआ जिससे प्रान्तों के वैज्ञानिक और साहित्यिक जीवन को बड़ा लाभ हुआ। किन्तु स्टुअर्ट के काल में लंदन और दो अन्य विश्वविद्यालयों के मुद्रणालयों का मुद्रण और प्रकाशन पर एकाधिकार था। जब ओरेंज के विलियम ने टोरबे से अपनी प्रसिद्ध यात्रा पर इक्ज़टर को अपने अधिकार में लिया तो पश्चिम की राजधानी में न तो कोई मुद्रक था और न उसके घोषणा-पत्र की प्रतियां छापने के लिये कोई यंत्र ही था। चार्ल्स द्वितीय के शासन काल के कुछ वर्षों के अतिरिक्त, जब संवाद-नियंत्रण लागू नहीं था, कोई भी समाचार-पत्र नहीं थे क्योंकि साधनहीन "शासकीय गज़ट" को समाचार-पत्र नहीं कहा जा सकता था। लंदन में प्रकाशित हस्तलिखित 'समाचार-पत्रों' को दूरस्थ नगरों और गांवों के संवाददाताओं के पास भेजा जाता था। इन पत्रों के प्राप्तकर्ता अपनी इच्छानुसार अपने पड़ोसियों को या तो इन्हें दे दिया करते थे अथवा उन्हें पढ़ कर सुना दिए करते थे। मोटे तौर पर इसी साधन से व्हिग और टोरी दलों का निर्माण हुआ था और चुनाव क्षेत्रों में उनका संगठन चलता था। प्रत्येक प्रकार के समाचार—खेल-कूद, साहित्यिक और साधारण—इसी तरह प्रसारित किये जाते थे। इन समाचार-पत्रों की रचना और संख्या वृद्धिमें लंदन के लेखकों की एक सेना लगी रहती थी जो पत्रकारों और कालान्तर के समाचार पत्र-मुद्रकों की आवश्यकता पूर्ति करती थी।

निजी पुस्तकालयों की वृद्धि अधिक सामान्य होती जा रही थी। इन पुस्तकालयों की प्रकृति और आकार सैमुअल पेपीज़ और काटन परिवार के समृद्ध संग्रहों से लेकर भूमिपति के घर के साधारण पुस्तकालय तक भिन्न भिन्न थे। यह विचार शीघ्रता से फैलता जा रहा था कि गांव के एक सुन्दर घर में एक सुन्दर पुस्तकालय भी

बिशप के द्वारा अनुज्ञापित करने का प्रावधान किया गया था। ये अधिकारी पुस्तकों को पढ़ने के लिए अनुज्ञापक नियुक्त करते थे।

होना चाहिए। किन्तु अभी यह उतनी साधारणतया व्यवहार में नहीं आया था जितना कि हैनोवरियन समय में।

दूसरी ओर, आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के बाहर सार्वजनिक पुस्तकालयों के अत्यधिक कम होने के कारण थोड़े साधन वाले पाठकों के लिए पुस्तकों को उपयोग के लिये प्राप्त करना कठिन था। १६८४ में टेनीसन ने लंदन में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की; तब सेन्ट मार्टिन के रेक्टर ने फील्डस में और तत्पश्चात् कैण्टरबरी के आर्कबिशप ने सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किए। इवलिन ने अपनी डायरी में लिखा है—

"सार्वजनिक उपयोग के लिए सैन्ट मार्टिन के पैरिस में एक पुस्तकालय बनवाने का इरादा डा० टेनीसिन ने मुझ पर प्रकट किया और उन्होंने उसके स्थान और रचना के बारे में सर क्रिस्टोफर रेन के साथ मेरी भी सहायता चाही। यह एक प्रशंसनीय और योग्य योजना थी। उन्होंने मुझे बताया कि उनकी पैरिस में तीस या चालीस युवक थे जो या तो युवा सज्जनों के प्रशासक थे अथवा उच्च जनों के पादरी थे[1] और जो कहवाघरों और सरायों में जाकर अपना समय बिताने के लिए डा० टेनीसन द्वारा फटकारे गए थे, उन्होंने उनसे कहा था कि यदि पुस्तकें हों तो वे अपना समय उन्हें पढ़कर अधिक अच्छी तरह बिता सकेंगे। इस घटना ने पवित्र-विचार वाले डाक्टर को इस योजना के निर्माण के लिए प्रेरित किया। और दरअसल लंदन जैसे बड़े नगर के लिए उसके गौरव के अनुकूल एक सार्वजनिक पुस्तकालय का न होना एक निन्दनीय बात थी"

डा० टेनीसन ने सेन्ट मार्टिन के गिरजाघर के आहाते में एक बड़ा मकान बनवाया और उसका ऊपरी भाग पुस्तकालय के लिए उपयोग किया। इमारत का निचला भाग निर्धनों के लिये कार्य-स्थान था। देखिए स्ट्राइप का **स्टोज लंदन**, १७२०, अध्याय ४, पृ० ६८)।

दस वर्ष पूर्व कैम्ब्रिज के मास्टर ऑफ़ ट्रिनिटी, इजाक बैरो, ने अपने मित्र रेन को सर्वोत्तम कालेज पुस्तकालय भवन की योजना बनाने के लिये नियुक्त किया था। इस पुस्तकालय के पुस्तक-कोष्ठों को ग्रिनलिंग गिबन्स द्वारा तराशी हुई लकड़ी से सजाया गया था। यदि कुछ पुस्तकें अधिक दुर्लभ होती थीं तो उन्हें राजकुमारों की भांति और भी अधिक सम्मान से रखा जाता था।

दूरस्थ देहातों में रहने वाली जनता को मिला कर लोगों का एक अच्छा अनुपात

---

[1] उदाहरणतया, संरक्षकत्व के युग में बिशप अथवा डीन के पदों तक उन्नति कर पहुँचने वाले पादरियों का वर्ग।

पढ़-लिख लेता था। हिसाव-कितात्र लगाये जाते थे और व्यापारिक पत्र, गपशप तथा स्नेह का आदान-प्रदान होता था। जैसाकि हमें ज्ञात है डायरियां पूर्ण भाषा और संकेत लिपि में लिखी जाती थीं। किन्तु यद्यपि साधारण जीवन-व्यापार में यह एक पढ़ने और लिखने का युग था कम पढ़े लिखों को बहुत थोड़ी मुद्रित सामग्री उपलब्ध हो पाती थी। इस कारण प्रवचनों का महत्व अधिक बढ़ जाता था क्योंकि उनमें राजनैतिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों की चर्चा समान स्वतंत्रतापूर्वक हो सकती थी। बीते हुए शुद्धिवादी युग में हुडिब्रास के अनुसार 'प्रवचन मंच और धार्मिक डंका लकड़ी का अपेक्षा मुट्ठी से बजाया जाता था।'

अब समय बदल गया था। यह कहा जाता था कि पुन:स्थापित गिरजा के देहाती लोग जैसे क्राइस्ट के बलिदान की अपेक्षा राजा चार्ल्स के बलिदान का अधिक उपदेश दिया करते थे। यद्यपि इन उपदेशों में एक उग्र राजनैतिक आक्रोश अधिक सामान्य था किन्तु फिर भी देहात के पादरी राजनीति से अधिक अच्छी बातों का भी उपदेश किया करते थे। इसके अतिरिक्त मुख्यतया लन्दन में ऐंग्लिकन पादरियों की एक प्रभावशाली अल्प संख्या ऐसी थीं जिनके प्रवचन बहुधा मानवीय विद्वतापूर्ण और वाक्-पटु, गिरजा की ख्याति को बढ़ाते थे और उसके मंच को सभी लोगों के लिए उच्च-सम्मान का बनाते थे। ऐसे मनुष्य थे टैनसिन, स्टिलिंग फीट, और इजाक बैरो और सबसे ऊपर टिलॉट्सन।

इनके अतिरिक्त पुन: स्थापना और क्रांति के गिरजा (धर्म) ने विद्वता में महान् योगदान किया। उस समय के धार्मिक-राजनैतिक विवाद, जिसमें सभी पक्ष अतीत के अभ्यास का सहारा लेते थे, ऐतिहासिक अन्वेषण को बड़ा महत्व देते थे। इससे इंगलैंड में मध्य-कालीन विद्वता का प्रथम महान युग विकसित हुआ। इससे पादरियों और **मोनेस्टिकन** के विलियम डुग्डेल, ऐन्थानी वुड, आक्सफोर्ड के हीर्न, जेरेमी कोलियर निकॉल्सन, बुरनेट, सुधार का प्रथम गम्भीर इतिहासकार, **एंग्लिया साकरा** का व्हारटन, **फोयडेरा** का राइमर, और **कन्सीलिया** के वेक और विल्सन जैसे साधारण धार्मिक व्यक्तियों के अनुसंधानों को प्रेरित किया। १६६० और १७३० के बीच इन व्यक्तियों द्वारा ऐंग्लो-सेक्सन और मध्यकालीन पुरातनताओं का अध्ययन और मध्यकालीन पुस्तकों का प्रकाशन परिमाण और आयतन दोनों में आश्चर्यजनक दे। तत्पश्चात् वॉल्टेयर के युग में विश्वकोषात्मक प्रबोधन के प्रभाव में मध्यकालीन इतिहास में लोगों की रुचि समाप्त हो गई जिसका स्थान **इवानहो** के युग के पुरातत्ववादिता के भावनात्मक रोमॉस ने ले लिया। किन्तु जब उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य और उसके बाद के वर्षों में दो मेटलैण्डों, स्टब्ज और अनेक विद्वानों ने मध्यकालीन जीवन और विचार की यथार्थताओं का उद्‌घाटन किया। इन आधुनिक विद्वानों का कार्य स्टुअर्ट काल के बाद के वर्षों के विद्वानों के कार्य पर आधारित था। इनके सही और विशद अध्ययनों की प्रेरणा

रोम और जेनेवा के विरुद्ध इंगलैंड के चर्च की रक्षा करने की इच्छा से स्फूर्त थी। अथवा हो सकता है इसकी प्रेरणा नॉनजूनर और कान्वोकेशन के विवादों के पक्ष अथवा प्रतिपक्ष की पुष्टि के उत्साह में निहित हो। (प्रो० डैविस डगलस की कृति **इंग्लिश स्कालर्स**, १९२९ देखिए)।

शास्त्रीय विद्वता में कैम्ब्रिज के देवविद्या के प्रोफेसर और ट्रिनिटी **के मास्टर** रिचार्ड वेन्टले न केवल अपने समय के वरन् सभी समयों के सभी विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुए थे। १६९९ में उनकी कृति **फैलेरिस** का प्रकाशन ग्रीक अध्ययनों में युगान्तकारी था। लगभग १२ वर्ष पहले न्यूटन की कृति प्रिंसिपिया को भी यही सम्मान मिला था। इस तथ्य ने कि वेन्टले और उसके विरोधियों ने **फैलेरिस** से संबंधित अपने पांडित्यपूर्ण वादविवाद लैटिन के स्थान पर अंग्रेजी में प्रकाशित किए साधारण जनता के अधिकाधिक सदस्यों को इस विद्वतापूर्ण वादविवाद में बौद्धिक रुचि लेने का अवसर प्रदान किया। परन्तु स्वयं वेन्टले ने लैटिन की शास्त्रीय कृतियों के अपने संस्करणों की टिप्पणियां लैटिन भाषा में उसी तरह प्रकाशित कीं जैसे न्यूटन ने अपनी **प्रिंसिपिया**। कारण यह था कि अभी तक विद्वता और विज्ञान सार्वदेशिक पहले और वाद में राष्ट्रीय माने जाते थे।

इसी काल में, अन्य सभी प्रपीड़ित सम्प्रदायों की तुलना में क्वेकर समुदाय का प्रभाव अधिक तेजी से फैल रहा था। जिस समय क्रामवेल की तलवार महन्तों और पादरियों से 'भविष्यवाणी के स्वातन्त्र्य' की रक्षा में उठी थी जार्ज फाक्स नामक व्यक्ति ने इस विचित्र धर्म की स्थापना की थी जिसकी जड़ें जम चुकी थीं। परन्तु प्रथम मित्रों की असाधारण कार्य प्रणालियों और रीतियों का इस समुदायवादी स्वतंत्रता में भी वहुत दुरुपयोग हुआ। और जब पुन:स्थापन में धर्म के प्रति विमति (असहमति) का खुलकर उत्पीड़न होने लगा, 'क्लेरेण्डन कोड' के प्रावधानों के कारण सभी सम्प्रदायों की तुलना में क्वेकरों को सर्वाधिक अत्याचार सहना पड़ा। संस्थाकृत धर्म से विमुख, संस्कारों का तिरस्कार कर, पादरियों और धर्म सिद्धान्तों से दूर क्वेकर यदि पचास वर्ष पहले अस्तित्व में आ गये होते तो उन्हें समूहों में जला डाला गया होता। किन्तु इस समय उन्हें जिस प्रकार के सम्पत्ति छिन जाने और वन्दी वनाने के जुल्मों को सहना पड़ा; उन्होंने मुसीवतों को जिस सहिष्णुता और धैर्य से सहा उससे वे वहुत से धर्म-परिवर्तनों को जीतने में सफल हो सके।

क्वेकरों की इस सहिष्णुता में एक हल्की जिद का एक अंश था जो जानवूझ कर स्वयं महत्वपूर्ण छोटे अधिकारी वर्ग को क्रुद्ध करने के लिए विचित्र ढंग से अपनाया जाता था। जैसे फ्रेण्डस न्यायाधीशों के सामने, जो उन पर मुकदमा चलाते थे, अपना हैट उतारने से इनकार कर देते थे। उनका उस युग के दिखावटी ठाठ-वाट और मनुष्य-पूजा का विरोध वहुत महत्वपूर्ण था परन्तु कभी कभी यह सव वड़ी मूर्खता भरी वात लगती थी।

प्रारंभिक क्वेकरवाद की प्रकृति उसके संस्थापक के जीवन काल में (फॉक्स की मृत्यु १६६१ में हुई) एक लोकप्रिय पुनर्जीवनवाद था। इसका तेज प्रचार बहुत अधिक था और साधारण लोग हजारों की संख्या में इसके अनुयायी हो जाते थे। विलियम और ऐन्नी के शासन कालों में, सभी अंग्रेजी संप्रदायों की तुलना में फ्रेण्ड्स की संख्या सर्वाधिक हो गई थी। अठारहवीं शताब्दी में वे एक उच्च सम्मान वाले संप्रदाय के रूप में स्थापित हो गये थे और एक विशिष्ट मत के रूप में अब धर्म परिवर्तन कराने में उनकी कोई रुचि नहीं थी। उन्हें केवल अपनी आत्माओं से सम्बन्ध था और वे अपने जीवन को एक ऐसे प्रकाश से प्रदीप्त करते थे जो वस्तुतः प्रत्येक स्त्री और पुरुष में अंशतः आन्तरिक प्रकाश था। किन्तु उनके पास एक ऐसी परम्परा और असाधारण शक्ति से पूर्ण आध्यात्मिक नियमों की व्यवस्था थी जो फ्रेण्ड्स के परिवारों में पिता से पुत्र और माता से पुत्री को हस्तांतरित होती रहती थी।

अपने प्रथम आवेशपूर्ण पुनर्जीवनवादी शिष्यों और बाद में शान्त फ्रेण्ड्स के जार्ज फाक्स की विचित्र शिक्षाओं का सूक्ष्म सार निश्चित रूप से यह था कि ईसाइयों के सिद्धान्तों की अपेक्षा उनके गुण अधिक महत्वपूर्ण हैं। किसी भी गिरजा अथवा सम्प्रदाय ने इसके पहले इस प्रकार के नियम को अपना जीवित नियम नहीं बनाया था। व्यापार के संस्कार और पारिवारिक जीवन में ईसाई गुणों को बनाये रखना, और ऐसा बिना किसी दिखावे अथवा आडम्बर के करना, इन असाधारण लोगों की एक महान उपलब्धि थी। इंगलैंड को ऐसे लोगों को उत्पन्न करने और उन्हें लंबी अवधि तक कायम रखने में गर्व का अनुभव होना चाहिए। शुद्धिवादी आन्दोलन बहुत शोर और क्रोध के साथ अपनी चरम सीमा को पहुंच कर अब शिथिल पड़ गया था। उसके पूर्णतया शान्त हो जाने पर ही क्वेकरवाद जैसी उत्कृष्ट उत्पत्ति का सृजन हो सका था।

सर जॉन रेरेस्बी, यार्कशायर के वेस्ट राइडिंग में थ्रीबर्ग के बैरोनेट, के आत्म-चरित में एक कैवेलियर के भूपति परिवार के उत्थान-पतन के उदाहरण का उल्लेख है। नेसबी के बाद वाले वर्ष १६४६ में सर जॉन के पिता की मृत्यु हो गई। उनकी सम्पदा पर १२०० पौंड का ऋण था जिसका कारण बुरा गार्हस्थ्य न होकर युद्ध था। मृत्यु के दो वर्ष पूर्व राउन्ड हेड्स ने उसको बन्दी कर लिया था और 'स्वयं उसी के घर में बन्दी बना दिया था' और उसे 'अपने पार्क में खड़े हुए पेड़ों की बहुत सी लकड़ी जुर्माना लगाकर बेचने पर विवश कर दिया था।' उत्तराधिकार के समय उसका बारह वर्षीय पुत्र, सर जॉन, अपनी माता के सतर्क निर्देशन में, अपने परिवार की बिगड़ी हुई स्थिति को संभालने का प्रयास करने लगा। अगले २० वर्षों में उसने ऋण को धीरे धीरे चुकता कर दिया। और १६६८ में सर जॉन अपने ग्रामीण निवास में सुधार प्रारंभ करने की स्थिति में आ गया।

उसने निवास के बाह्य ऊबड़-खाबड़ भाग के स्थान पर पत्थर से बनवा दिया; कई

कमरों में सुन्दर खुदे हुए लकड़ी के काम रखवा दिए। हिरणों के पार्क को उसने खेती योग्य भूमि को शामिल कर विस्तृत किया और उसकी चहारदीवारी पत्थर की बनवा दी। इस स्थान की चहारदीवारी की लकड़ी कठिनाई के समय बेच दी गई थी। उसने अच्छे किस्म के पेड़ों के स्थान पर उस भूमि के उपयुक्त पेड़ लगवाए। उसने बगीचे को बहुत अच्छी तरह से विकसित किया; पुष्पवाटिका और गर्मी के मौसम में प्रयुक्त होने वाला तहखाना के बीच उसने एक फव्वारा लगवा दिया और सीसे के नलों में पानी लाया; बगीचे की दीवार की ऊंचाई भी बढ़ा दी। इन क्रियाओं को कई वर्षो तक मितव्ययिता से किया गया। अन्ततः क्रान्ति के ठीक पहले 'वह गिरजा घर और उसकी खिड़कियों की मरम्मत करने और सुधारने तथा गिरजा के मीनार में नये घंटे की व्यवस्था करने वाला था।'

इसलिये एक 'निरक्षक भूपति' न होकर सर जॉन एक अच्छा लैटिन विद्वान था और थोड़ी ग्रीक भी जानता था। वह इटली भाषा में धारा-प्रवाह बोलता था और फ्रांसीसी फ्रांस निवासी की भांति बोलता था। युवाकाल में उसने कुछ समय वेनिस के पडुवा विश्वविद्यालय में संगीत और गणित सीखने में बिताया था। अपने मूल निवास स्थान में वह एक सक्रिय शांति न्यायाधीश था। उसने लिखा है कि उसका मुंशी (क्लर्क) अपने स्थान से ४० पौंड प्रति वर्ष कमाता था। यह धनराशि बहुत से पादरियों की जीविका की धनराशि से अधिक थी। सर जॉन यार्क्स के आल्डबारो के तुच्छ बारो का अधिपति था जिसमें केवल नौ निर्वाचक थे जो 'किलेबन्दी वाले नगरों के घरानों' के विशेषाधिकारी मालिक थे। सर जॉन एक संयत विचार का (मध्यमार्गी) और सतर्क टोरी था और वह हाउस ऑफ़ कामन्स का सदस्य बन गया। बाद में वह राजदरबारी और कुछ समय के लिये सम्राट का वैतनिक कर्मचारी हो गया। किन्तु वह इस सब काल में सदैव एक प्रथम और अन्तिम रूप से ग्रामीण भद्रजन बना रहा।

इस प्रकार के भूस्वामी, जिनकी मध्य आकार की सम्पदाएं थीं और जिनके लाभकारी बाहरी सम्पर्क भी थे, पुनःस्थापन काल में अपनी स्थिति की तुलना में अधिक सम्मानीय माने जाते थे। किन्तु छोटे-छोटे जमींदार, जो स्वयं खेती करके जीवन यापन करते थे और जिनको न तो लगान मिलता था और न कोई अन्य सम्पत्ति थी, जो कम शिक्षित थे और अपने ग्रामीण क्षेत्र से बाहरी संसार के ज्ञान से रहित थे, सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में शक्तिहीन होने लगे थे। धीरे धीरे उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही थी क्योंकि भूमि सुधार की नई पद्धतियों को अपनाने के लिए पूंजी की जरूरत थी। संपदाओं के ऊपर अत्यधिक बोझ था। और इस समय पहले की अपेक्षा सबसे अधिक बड़े भूस्वामी और अन्य लोग, जिन्होंने कानून, राजनीति अथवा व्यापार की शक्ति से नया धन एकत्र कर लिया था, नई जमीन की तलाश में थे, जरूरतमन्द छोटे भूस्वामियों को आकर्षक कीमतें देकर खरीदने को तैयार थे। इस तरीके से बेडफोर्ड के

ड्यूकों ने धीरे धीरे एकड़-एकड़ और प्रतिष्ठित लोगों की एक भूमि के बाद दूसरी को खरीदकर एक विशाल संपत्ति बना ली। सारा बेडफोर्ड-शायर उन्हीं का लगता था।

छोटी सम्पदाओं की समाप्ति और बड़ी सम्पदाओं की वृद्धि की यह प्रक्रिया जॉर्ज तृतीय के शासन काल में चरम सीमा को पहुंची किन्तु इसका प्रारंभ पहले ही चार्ल्स द्वितीय के शासन काल में हो चुका था। १६८८ की क्रान्ति के तुरन्त पश्चात् धनवानों और बड़े व्हिग जागीरदारों के विरुद्ध टोरियों में व्याप्त कटु भावना का बहुत कुछ स्रोत उपरोक्त स्थिति में था। साधारणतया छोटा भूस्वामी एक टोरी होता था और वह अपनी घटती हुई पैतृक सम्पदा पर कर के बोझ को नापसन्द करता था जिसे विलियम और मार्लबारो के युद्धों के व्यय के लिए बढ़ाया जाता था। उसे यह बात इसलिए और भी खलती थी कि वह जानता था कि उस पर लगाये गए कर का एक बड़ा भाग नीचघरानों में जन्मे सेना के ठेकेदारों, धनवान विमतिकों और लन्दन तथा डचवासियों की जेबों में जाता था जो सरकार को कर्ज दिया करते थे। यद्यपि हमारे आधुनिक काल के आयकर और मृत्युकर की तुलना में उस समय का भूमि कर भूस्वामियों के लिए कम विनाशक था फिर भी वह बहुत सी छोटी सम्पदाओं (अचल सम्पतियों, इस्टेट्स) के लिए दुखदायी बोझ था।

निश्चय ही युद्ध और कर-प्रणाली से परिवर्तन की गति तीव्र हुई, परन्तु आधारतया छोटी सम्पदाओं के टूट कर बड़ी सम्पदाओं का निर्माण एक स्वाभाविक आर्थिक प्रक्रिया थी। यह हमारे आधुनिक औद्योगिक काल में छोटे व्यापार के स्थान पर विशाल व्यापार स्थापित होने की प्रक्रिया के समान थी। यदि एक बार कृषि को राष्ट्रीय धन उत्पन्न करने का एक साधन मान लिया जाता, केवल समाज की एक निर्दिष्ट स्थिति को बनाए रखने के लिए ही नहीं, तो यह परिवर्तन अटल था। बड़े धन-संग्रही भूस्वामियों के पास की पूंजी, और व्यापार तथा भूस्वामित्व के लोगों के प्रति उनकी लगन, उस कृषि संबंधी क्रान्ति के लिये आवश्यक दशाएं थीं जिसने अठारहवीं शताब्दी में अंग्रेजी भूमि की उत्पादकता सम्पूर्ण घेरेबन्दी और साधारणतया नई कृषि-पद्धतियों के उपयोग से बढ़ा दी थी।

चार्ल्स द्वितीय के शासन काल में ये परिवर्तन अभी भी परीक्षणात्मक अवस्था में थे। कृषि समस्याओं के लेखक कृषि सुधार की रीतियों को अपनाने का प्रचार कर रहे थे और कुछ जागृत भूस्वामी और कृषक इन्हें अपना रहे थे। अगली पीढ़ी में यह अधिक साधारण बात हो गई। फसलों का वैज्ञानिक चक्र, कृषि पशुओं को जाड़े में उचित खाना देना, गाजर, शलगम, तिपलिया घास, आलू की खेती, खली और हरितालय तथा पानी को जमा करना आदि मुख्यतया कृषि सुधार में सम्मिलित थे। पुनः स्थापना युग में ये सभी बातें मालूम थीं किन्तु उनका सर्वसाधारण द्वारा उपयोग मुक्त खेत व्यवस्था, जो सामुदायिक थी, छोटे जागीर स्वामियों तथा स्वतंत्र भूअधिपतियों में,

जिनके पास अभी भी बहुत सी भूमि थी, पूंजी और ज्ञान के अभाव में प्रतिबाधित हो गया था। गृह-युद्धों के ठीक बाद वाली पीढ़ियों के बड़े भूस्वामियों में पर्याप्त विश्वास नहीं था और न पर्याप्त पूंजी अथवा ऋण, न व्यापक भूमि सुधार में अगुआई करने के लिये व्यक्तिगत रुचि थी वैसे ही जैसे टरनिप टाउन्शेण्ड, नार्फोक के कोक और आर्थर यंग के काल में उनके पूर्वजों में ये सभी कमियां थीं।

पुनःस्थापना के पश्चात् लगान बढ़ रहे थे किन्तु ज़मींदार उनमें से बहुत थोड़ा पुनः भूमिसुधार में व्यय करते थे। वे अच्छे किसानों को प्रोत्साहन देने में विफल रहे। बर्कशायर में उस समय एक कहावत प्रचलित थी "जो सुधार करेगा, भागेगा; और जो विनाश करेगा, जमा रहेगा।" पेपीज़ ने भी लिखा था "हमारे संभ्रान्तजन अच्छी खेती बाड़ी से अनभिज्ञ हो गये हैं।" नेतृत्व एवं पूंजी के अभाव में परिवर्तन का युग आगे टल गया।

इस प्रकार उल्लासप्रिय राजा चार्ल्स के शासन काल में पुरानी ग्रामीण व्यवस्था, भूमि में व्यापक रूप से प्रसारित अधिकारों, तुलनात्मक आर्थिक समता, मुक्त खेतों और थोड़े उत्पादन के साथ, अब भी जीवित थी। किन्तु विपुल सम्पदाओं, घिरे हुए खेतों, और कृषि पद्धतियों में सुधार का आन्दोलन पहले ही प्रारम्भ हो गया था।

इतना तो स्पष्ट था कि राष्ट्रीय नीति से घरेलू और विदेशी बाजारों के लिए उत्पादन में वृद्धि को प्रोत्साहन मिलने लगा था। संसद् के अधिनियमों ने आयरलैंड से पशुओं तथा अन्य देशों से अनाज के आयात पर प्रतिबन्ध कर दिया था और किसानों को निर्यात के लिये सहायता दी। चार्ल्स द्वितीय से लेकर ऐन्नी द्वारा क्रमशः इस नीति को लागू करने का आंशिक उद्देश्य भूमि कर के भारी आपात को घटाना था जो निश्चय ही छोटे भूपतियों और स्वतंत्र किसानों में लोकप्रिय थी। फिर भी यदि देश-वासी उपभोक्ताओं को नुकसान पहुँचाकर वह नीति उपरोक्त वर्ग की सहायता करती थी, इससे भी अधिक वह बड़े ज़मींदारों और पूंजी तथा साहस वाले लोगों को बाजार के लिये उत्पादन बढ़ाने में भी सहायक थी क्योंकि यही लोग धीरे-धीरे छोटी-छोटी संपदाओं को खरीद रहे थे।[१]

---

[१] निर्यात किये गये गेहूं पर दी जाने वाली ५ शिलिंग की सहायता के वास्तविक कार्यान्वयन को १६७५ में लिखे गये फालमाउथ के निम्नांकित पत्र में देखा जा सकता है :

'कनारीज और हालैंड के उन भागों में बहुत-सा अनाज खरीदा जाता है ताकि फसल कट जाने के बाद बीस गैलनों पर ३ शिलिंग कीमत बढ़ जाये और अनाज महंगा हो जाय, क्योंकि व्यापारी ने उनको चुंगी घर में जो प्रति चतुर्थ भाग पर ५ शिलिंग दिया है उससे उन्हें खरीदने का प्रोत्साहन मिले, जिससे कि उपरोक्त

हेनरी युगों तक इन संरक्षणात्मक अनाज कानूनों और सहायताओं का पूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा था किन्तु बाद के स्टुअर्टो के समय में इनको लागू करना उन सामाजिक शक्तियों के लिए महत्वपूर्ण था जो हमारी राष्ट्रीय नीति को मोड़ रहीं थी। यह और भी इस कारण था कि अनाज पर निर्यात सहायताएँ उस समय दूसरे देशों में साधारणतया प्रचलित नहीं थीं। अकेले इंगलैंड में इसके लागू करने का कारण आर्थिक नीति का नियंत्रण था जिसमें गृह-युद्ध के परिणाम स्वरूप सम्राट् के विरुद्ध संसद् की विजय हुई थी। देश के व्यापारिक कारोबार पर हाउस ऑफ कामन्स का नियंत्रण पुनः-स्थापना से परिपुष्ट हो गया था और क्रान्ति से उसमें और अधिक विस्तार हुआ था। और हाउस ऑफ कामन्स भूपतियों के हितों की रक्षा के लिये बहुत सजग था क्योंकि इसी वर्ग से नब्बे प्रतिशत उसके सदस्य थे। संसदीय पुरों, जिनमें कि अधिकांश देहाती कस्बे थे, में मतदाता स्वयं अपने वर्ग के वास्तविक पुरनिवासियों की अपेक्षा अपने पड़ौस के संभ्रांत जनों को प्रतिनिधि बनाना पसंद करते थे। इस प्रबन्ध से, जो अंग्रेज़ों के मिथ्या बड़प्पन की एक बड़ी विशेषता थी, वेस्टमिन्स्टिर में नगरवासियों के हितों पर अधिक ध्यान केन्द्रित हो जाता था और साथ ही इससे हाउस आफ कामन्स की राजनैतिक और सामाजिक शक्ति में भी वृद्धि होती थी। उदाहरण के लिये यदि आल्डबारो से सर रेरेस्बी को न चुना जाकर वहां से कोई छोटा दुकानदार चुनकर संसद् में जाता तो उसके कथन या विचार की परवाह न तो राजा करता और न लार्ड और मन्त्री। केवल लंदन और कुछ अल्प नगर अपने यहां से उच्चासीन व्यापारियों को राष्ट्रीय विधानसभा में बोलने के लिये प्रतिनिधि चुनकर भेजते। क्योंकि ऐसे प्रतिनिधि जो कहते थे उसमें वज़न होता था।

परन्तु यद्यपि एक सदैव बढ़ते हुए अंश में हाउस आफ कामन्स जमींदारों के मंडल में बदलता जा रहा था किन्तु यह मानना गलत होगा कि वह व्यापार और उद्योग की उपेक्षा करता था। उसके पांच सौ सदस्यों में से चार सौ सदस्य नगरों के प्रतिनिधि थे। इसलिये ऐसा मंडल (परिषद्), जिसके अधिकांश सदस्य भूपति थे, जिनके निर्वाचक नगरवासी थे, स्वाभाविकतया राष्ट्र की कृषि और व्यापार सम्बन्धी आवश्यकताओं पर यथोचित ध्यान देता था। इसके अतिरिक्त, संसद् के दोनों सदनों के जमींदारों का एक बड़ा अनुपात, विशेषकर उनमें से अधिक धनी और प्रभावशाली, व्यक्तिगत रूप से औद्योगिक और व्यापारिक मामलों में रुचि रखते थे। इसलिये यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए की इसी अवधि में संसत् ने कपड़े के उत्पादन और अनाज की उपज को समान गंभीरता से संरक्षण दिया। उसने विदेशी कपड़े का आयात और कच्ची ऊन का निर्यात रोक दिया; अंग्रेज़ी कपड़ा-निर्माताओं के हित की

अधिनियम जैसाकि किसानों के लिए लाभदायी है वैसा नगरवासियों और व्यापारियों के लिये लाभदायक न रहे।' (स्टेट पेपर्स, डोम. १६७५, पृ० ४०३)।

रक्षा के लिए आयरलैंड के कपड़े के व्यापार को विनष्ट कर दिया और यह कानून बना दिया कि प्रत्येक मृतक को अंग्रेज़ी कपड़े में ही दफनाया जाये।[1]

जहाजरानी अधिनियम, जिसका उद्देश्य देश के व्यापार को डचों की अपेक्षा अंग्रेज़ी जहाजरानी के लिए सुरक्षित करना था, १६५१ में दीर्घकालीन संसद् ने पारित किया था। यह वह समय था जब राज्य की नीति लंडन के व्यापारिक समुदाय के बहुत अधिक प्रभाव में थी। पुनःस्थापना से इस मामले में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। जहाजरानी सम्बन्धित कानूनों, इंगलैंड और उसके उपनिवेशों के व्यापार को अंग्रेज़ी जहाज़ों द्वारा ही करने और प्रतिद्वन्दी डच व्यापारियों के प्रति विरोध की सहगामी नीति, के मामले में संसद् और सम्राट् एकमत थे।

चार्ल्स द्वितीय के दरबार के मंत्री और राजा, और संसद् में उनके आलोचक भी, नगर के उन प्रमुख व्यापारियों के निकट सम्पर्क में थे जो विदेशी व्यापार में महान् साहसिक कार्य करते थे। भारत, अफ्रीका और अमरीका के समुद्रों में व्यापार करने वाली संयुक्त स्कन्ध कंपनियों में सर्वोच्च व्यक्तियों के हिस्से थे। जेम्स, ड्यूक ऑफ यार्क, लार्ड हाई एडमिरल और राज्य का उत्तराधिकारी रॉयल अफ्रीकन कंपनी का प्रशासक और ईस्ट इण्डिया कंपनी का हिस्सेदार था। प्रिंस रूपर्ट के उत्तराधिकारी के रूप में वह हडसन बे कंपनी का प्रशासक बना और फिर मार्लबॉरो को उत्तराधिकारी हो गया।

इस प्रकार जो प्रमुख व्यापारी अंग्रेज़ी कूटनीतिज्ञ जल और थल सेना की नीति का नियंत्रण करते थे वे व्यापारिक समुदाय से निकटतम रूप से सम्बन्धित थे और स्वयं भी उसके स्वार्थों और दृष्टिकोणों में भी भागीदार थे। चार्ल्स द्वितीय के शासन-काल में हालैण्ड और विलियम और ऐन्नी के शासन काल में फ्रांस के साथ लड़े गये युद्ध बहुत दूर तक व्यापारिक और औपनिवेशिक युद्ध थे और उनकी आवश्यकता और लाभ पर राज दरबार, संसद् और नगर सभी एकमत थे।

शान्तिवादी और छोटी मालगुजारियों तथा देहाती दृष्टिकोण वाले भूपतियों की "छोटे इंगलैंड" की भावना ने टोरियों के चुनाव प्रचार में अपनी भूमिका अदा की किन्तु वेस्टमिन्स्टिर और व्हाइट के राजनीतिज्ञों पर उसका अधिक प्रभाव नहीं था। पहले डचों और फ्रांसीसियों के विरुद्ध व्यापारिक और औपनिवेशिक विस्तार के युद्धों की एक श्रृंखला से अमरीका में अंग्रेजों के प्रवेश का विस्तार हुआ और यूरोप तथा संसार के बाज़ारों में अंग्रेज़ी व्यापार फैल गया। इन युद्धों का व्यय अधिकांशतः भूमि

---

[1] एक दरिद्र व्यक्ति, नरीसा ने अन्तिम शब्द ये कहे थे—कि मेरा दुर्भाग्य है कि मैं सूती कपड़े के कफन में दफनाया जाता हूं। ऊनी कपड़े का कफन तो एक साधु को भी मरने के लिए प्रेरित कर देगा। (पोप, मारल एसेज, १)

कर से पूरा किया गया। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि चार्ल्स द्वितीय से ऐन्नी तक अंग्रेज़ी नीति से व्यापारिक अथवा राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा हुई और भूमि को अधिक प्रोत्साहन मिला अथवा न ऐसे भूपतियों (ज़मींदारों) की बहुसंख्या के मतों को आवश्यकता से अधिक ध्यान देकर ही हुआ।

औद्योगिक क्रान्ति और सम्पूर्ण वाड़ों के ठीक पूर्व के ग्रामीण इंगलैंड के दो प्रतिद्वन्द्वी चित्रों में से एक अथवा दूसरा बाद की पीढ़ी के सामने प्रस्तुत होता है। एक ओर तो हमें ऐसे स्वतंत्र और आत्मसम्मानी किसानों के देश की कल्पना करने को कहा जाता है जिनमें से अधिकांश भूमि से छोटे व्यक्तिगत अधिकारों से सम्बन्धित थे और देहाती क्षेत्र की शान्ति और आनन्द से, जो उसके उपरान्त समाप्त हो गये हैं, से सन्तुष्ट थे तथा जो 'हारवेस्ट होम' (फ़सल के घर) के बारे में शराब के घरों में गाने गा-गा कर ग्रामीण आनन्द का उत्सव मनाते थे। इन गानों को हमने आज अपने ड्राइंग रूमों (बैठकों) में सुरक्षित कर रखा है। हमें इस बात का स्मरण है कि यही भूमि गावों और विपण (हाट) कस्बों में रहने वाले दस्तकारों की थी। यद्यपि वे उद्योग में लगे थे किन्तु फिर भी ग्रामीण आनन्दों से वंचित नहीं थे। समय-मापी यंत्रों की अपेक्षा वे औजार इस्तेमाल करते थे और इसलिये अपने दैनिक कार्य में उन्हें वैयक्तिक कलाकार का आह्लाद मिलता था जिसके लिये हमारे आधुनिक आमोद-प्रमोद की ज्वरपूर्ण उत्तेजना केवल एक छुद्र विकल्प है। इन आमोद-प्रमोदों का विशाल स्तर पर आयोजन यांत्रिक एवं लिपिक परिश्रम की नीरसता को हटाने के लिए होता है। दूसरी ओर हमारे समक्ष एक विरोधी चित्र है। हमें पूर्व यांत्रिक युग की कटु, एवं पीठ-तोड़ मेहनत का स्मरण दिलाया जाता है जो प्रतिदिन तेरह-चौदह घंटे तक होती थी। प्राथमिक विद्यालयों के स्थान पर बच्चों से काम लिया जाता था; चिकित्सालय की सुविधाओं अथवा चिकित्सा विज्ञान के अभाव में रोग एवं अल्पायु में मृत्यु, स्वच्छता और आराम का अभाव जो आज के जीवन में आवश्यकताएं मानी जाती हैं, केवल अपराधियों और कर्जदारों के प्रति उपेक्षापूर्ण और अकाल्पनिक ही नहीं बहुधा स्त्रियों, बच्चों और निर्धनों के प्रति भी; और अन्ततः इंगलैंड और वेल्स की पचपन लाख जनसंख्या को १९३९ की जनसंख्या, जो पहले की अपेक्षा सात गुनी से भी अधिक थी, की तुलना में कम सुविधाएं।

इन दोनों चित्रों की पुष्टि उस काल के अध्ययन के आधार पर हो जाती है। किन्तु यह घोषित करना खतरनाक होगा कि उन दोनों में कौनसा चित्र अधिक सत्य है। अंशतः इसका कारण है अदृष्य मूल्यों के प्रति विवाद। हम अपने पूर्वजों के मस्तिष्क में जाकर नहीं बैठ सकते और यदि ऐसा कर भी सकें तो भी हम द्विविधा में पड़े रहेंगे। उसका अंशतः यह कारण है कि जहां सांख्यिकी की सहायता ली जा सकती है वहां सांख्यिकी उपलब्ध नहीं है।

यह सत्य है कि क्रान्ति के आस पास योग्य प्रचारक ग्रेगरी किंग ने समुदाय के विभिन्न वर्गों में चूल्हा कर और संभाव्य संस्थाओं की अन्य सूचनाओं के आधार पर गणना की थी। उसके द्वारा दिये हुए आंकड़े अधिक से अधिक अनुमान मात्र थे। इनकी उपयोगिता वास्तव में नकारात्मक है, क्योंकि ये अतीत के प्रति अंधश्रद्धा पर नियंत्रण करते हैं और इस तथ्य को सम्मुख लाते हैं कि महान आवलयन काल तथा औद्योगिक क्रान्ति से पहले भी भूमि पर किसानों और छोटे ज़मींदारों की संख्या कम थी और कृषि मज़दूरों की संख्या बहुत अधिक थी।

किंग द्वारा प्रस्तुत राष्ट्र के विवेचन में दो बृहत्तम वर्ग "झोंपड़ियों के निवासियों और अकिंचनों" तथा "मज़दूरों और निजी सेवकों" को सम्मिलित किया गया है। हमारे अनुमान से प्रथम श्रेणी उन लोगों की प्रतिनिधि है जिन्होंने मज़दूरी से स्वतंत्र होने का प्रयास किया था। किंग के अनुसार उन लोगों को अपने प्रयास में बहुत थोड़ी सफलता मिली। फिर भी ऐसे लोग, जिन्होंने साधारण लोगों से भिन्न अपने रहने के स्थान अथवा अपनी झोंपड़ी के पीछे की छोटी सी भूमि से पृथक् जीविका अपना ली, किंग की जानकारी से अधिक प्रसन्न रहे हों। हो सकता है कि अतीत को आदर्श मानने वाले आधुनिक लोगों के अनुमान से वे अधिक दरिद्र हों। किंग का द्वितीय बड़ा वर्ग "मज़दूर और बहिर्कर्मचारी" मज़दूरी करके जीविका चलाने वाले हैं। किन्तु उनमें से भी बहुतों को साधारण भूमि, किसी छोटे से बगीचे और छोटी सी जोत, पर अधिकार था जिससे जीवन में दिलचस्पी और सम्मान बढ़ता था किन्तु इससे ऐसा मालिक अंग्रेज सज्जन के सम्मानित पद पर आसीन नहीं हो जाता था। उद्योग के नौकरों में से भी बहुतों के पास छोटे बगीचे अथवा खेत होते थे जिन्हें वे अवकाश के समय जोतते थे। द्वीप के सभी भागों में ऊन के बुनकरों की विशेषतः ऐसी स्थिति थी। हैलीफैक्स के आसपास चट्टानी ऊंचाइयों पर प्रत्येक कपड़े के मज़दूर के पास एक खेत में दो गायें होती थीं, जिसकी दीवार पहाड़ी के ढाल की ओर होती थी और जहां पर उसकी झोंपड़ी होती थी।

दूसरी ओर, खेती और उद्योग दोनों में कर्मचारियों की बहुत बड़ी संख्या होती थी जिनके मज़दूरी के अतिरिक्त न तो खेती में कोई अधिकार होते थे और न जीविका का कोई अन्य साधन।

कृषि और उद्योग में मज़दूरी का नियमन प्रत्येक काउंटी के 'जस्टिसेज़ ऑफ़ पीस'[1] द्वारा जारी की गई अनुसूचियों से होता था। यही अधिकारी यदा कदा कीमतों की सीमायें निर्धारित करते थे जिन पर वस्तुएं बेची जा सकती थीं। ये अनुसूचियां मूल्यों अथवा मज़दूरी को सही-सही निर्धारित करने के उद्देश्य से कभी जारी नहीं की जाती थीं। वे केवल ऐसी अधिकतम सीमाएं निर्धारित करती थीं जिनका अतिक्रमण नहीं होना चाहिए था। इसलिए प्रत्येक काउंटी में भिन्नताएं हो सकती थीं और एक शायर

---

[1] शान्ति स्थापनार्थ-न्यायाधीश।

तथा दूसरे शायर में भी भेद हो सकते थे। इसके पश्चात् भी बहुधा व्यवहार में घोषित अधिकतम सीमाओं का उल्लंघन होता था।[१]

नकारात्मक साक्ष्य के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि उस समय मज़दूरी बढ़ाने के लिये संगठित हड़तालें और संयोजन साधारण बात नहीं थी। चार्ल्स द्वितीय के शासन काल की अपेक्षा एडवर्ड तृतीय के शासन काल में हुई हड़तालों के विषय में हम अधिक सुनते हैं।

दस्तकारों से संबंधित एलिजाबेथ के अधिनियम, जो अंशतः अभी भी लागू था, में कार्य को अधूरा छोड़ने तथा जस्टिस ऑव दि पीस द्वारा निर्धारित अधिकतम मज़दूरी का उल्लंघन करने पर दंड का प्रावधान था किन्तु जब सेवायोजक और कर्मचारी दोनों के लिये लाभकर होता था तो अधिकतम दर से ऊंची मज़दूरी बहुधा दी जाती थी। यद्यपि श्रमिक संघवाद नहीं था फिर भी मज़दूरी के विषय में बहुत सौदेबाजी होती थी।

यदि उस ससय के मूल्यों के निम्न स्तर को भी ध्यान में रखा जाय तो भी आधुनिक मानदंडों से उस समय दी जाने वाली मज़दूरियां कम थीं। किन्तु तत्कालीन योरुप की तुलना में वे ऊंची थीं। अंग्रेजों की राष्ट्रीय विशेषता, जो तब थी वह आज भी वह है: मितव्ययिता के बजाय रहन सहन का उच्च स्तर होना। एक नियोक्ता की हैसियत से डेफो ने लिखा था :

"मितव्ययी गार्हस्थ्य अंग्रेजों का गुण नहीं है। अंग्रेज मेहनतकश लोग संसार के उसी स्तर के किसी अन्य विदेशी वर्ग की तुलना में तिगुने मूल्य का खाते पीते हैं, विशेषकर पीते अधिक हैं।"

उनका मुख्य भोजन रोटी थी, अथवा हम कहें रोटी, जौ की शराब और अधिकांशतः

---

१ भिन्न भिन्न जागीरों में मज़दूरी की दरें भिन्न भिन्न थीं। १७०१ में यार्कशायर के एक भूपति ने लिखा था :

'एक अच्छे हलवाहे का बार्नस्ले और वोर्टले के कुछ भागों में मज़दूरी ३ पौंड से अधिक नहीं है। सर गाडफ्रे अपने सेवक को केवल ३ पौंड १४ शिलिंग देते थे और अपने मुंशी को केवल ४ पौंड; इससे स्पष्ट है कि ऊंची मज़दूरी के बारे में हमारी स्थिति अत्यन्त दयनीय है। वोर्टले के नजदीक सभी हलवाहे अपने जानवरों को लेकर ३ बजे प्रातः जग जाया करते थे और हमारे घरों में वे ७ बजे तक सोये पड़े रहते हैं। किन्तु सबसे अधिक मुझे बार्न द्वारा अपने सेवकों को दिया जाने वाला २० पौंड का वेतन चिंतित करता है।' मैं अपेक्षा करता हूं कि मज़दूरों की उल्लिखित मज़दूरी के अतिरिक्त उनके खाने और रहने की व्यवस्था भी की जाती थी। उस साल गेहूं की कीमत अन्य अनाजों की अपेक्षा बहुत कम थी अर्थात् १/४ तौल केवल ३४ शिलिंग में बिकती थी और वेस्ट राइडिंग में एक मुर्गी की कीमत केवल २ पेंस थी।

मांस था। उस काल के अंग्रेजी भोजन में साग-सब्जी और फल की बहुत कम मात्रा तथा मांस की बहुत अधिक मात्रा होती थी। मध्य और उच्च वर्गों में 'प्रातःकाल के नाश्ते' में बहुधा जौ की शराब, थोड़ी रोटी और मक्खन शामिल रहता था। वह दोपहर के भोजन तक काफी माना जाता था, जिसमें विभिन्न प्रकार की मछलियों और मांस की भरमार होती थी। ग्रेगरी किंग ने लिखा है कि निर्धन परिवारों में आधी जनसंख्या प्रतिदिन मांस खाती थी और शेष आधी का अधिक भाग सप्ताह में दो बार मांस खाता था। 'भिक्षा पर जीविका चलाने वाले लाखों लोगों को सप्ताह में एक बार से अधिक मांस नहीं मिलता था।'

१८०१ की जनगणना के पूर्व इंगलैंड की जनसंख्या तथा विभिन्न वर्गों में उसके विभाजन के बारे में विश्वसनीय सूचनाएं (आंकड़े) नहीं उपलब्ध थीं किन्तु ग्रेगरी किंग ने क्रान्ति के समय (१६८८) चूल्हा कर अथवा अन्य सूचनाओं के आधार पर जो गणनाएं कीं, अथवा अनुमान कहिए, वे परीक्षा करने योग्य हैं। कम से कम उस समय के एक सुविज्ञ विद्वान के विचार के अनुरूप उस समय के समाज का एक मानचित्र तो उनसे मिलता ही है। यह जानते हुए कि वे आंकड़े सही नहीं है किन्तु किस दिशा में उनमें अशुद्धियां हैं न जानते हुए पाठकों को इन आंकड़ों का अध्ययन करना अच्छा होगा।

ग्रेगरी किंग की सारणियां, १६८८

परिवारों की संख्या	श्रेणियां, मात्राएं, पद और योग्यताएं	प्रत्येक परिवार में मुखिया	व्यक्तियों की संख्या	प्रति परिवार वार्षिक आय (पौंड)
१६०	साधारण लार्ड	४०	६,४००	३२००
२६	आध्यात्मिक लार्ड	२०	५२०	१३००
८००	बैरोनेट	१६	१२,८००	८८०
६००	नाइट	१३	७,८००	६५०
३,०००	इस्क्वायर (भूपति)	१०	३०,०००	४५०
१२,०००	संभ्रान्तजन	८	९६,०००	२८०
५,०००	उच्च स्थानों और पदों पर व्यक्ति	८	४०,०००	२४०
५,०००	निम्न स्थानों और पदों पर व्यक्ति	६	३०,०००	१२०
२,०००	प्रख्यात सामुद्रिक व्यापारी और दुकानदार	८	१६,०००	४००
८,०००	छोटे सामुद्रिक व्यापारी और दुकानदार	६	४८,०००	१९८
१०,०००	कानूनी पेशे में लगे व्यक्ति	७	७०,०००	१५४

परिवारों की संख्या	श्रेणियां, मात्राएं, पद और योग्यताएं	प्रत्येक परिवार में मुखिया	व्यक्तियों की संख्या	प्रति परिवार वार्षिक आय (पौंड)
२,०००	प्रसिद्ध पादरी	६	१२,०००	७२
८,०००	निम्न स्थिति के पादरी	५	४०,०००	५०
४०,०००	अच्छी स्थिति के पूर्णस्वामित्वधारी	७	२,८०,०००	९१
१,२०,०००	निम्न स्थिति के पूर्णस्वामित्वधारी	५½	६,६०,०००	५५
१,५०,०००	कृषक	५	७,५०,०००	४२·५
१५,०००	उदार कलाओं और विज्ञानों में लगे व्यक्ति	५	७५,०००	६०
५०,०००	दुकानदार और व्यापारी	४½	२,२५,०००	४५
६०,०००	शिल्पकार और दस्तकार	४	२,४०,०००	३८
५,०००	नौसेना अधिकारी	४	२०,०००	८०
४,०००	सैनिक अधिकारी	४	१६,०००	६०
५०,०००	साधारण नाविक	३	१,५०,०००	२०
३,६४,०००	श्रमिक और घरेलू नौकर	३½	१२,७५,०००	१५
४,००,०००	झोंपड़ियों के निवासी और दरिद्र	३¼	१३,००,०००	६·५
३५,०००	साधारण सैनिक	२	७०,०००	१४
	घुमक्कड़, नट, चोर, भिखारी आदि		३०,०००	
		योग	५५,००,५२०	

(चार्ल्स डवेनेन्टर्स की कृतियों में मुद्रित (१७७१), खण्ड २, पृष्ठ १८४, अन्य आंकड़ों के साथ)।

इस सारणी का अर्थ-निर्धारण (निर्वचन) करने का लिए कुछ बातों पर विचार कर लेना चाहिए 'प्रति परिवार व्यक्तियों' का अर्थ है एक घर में रहने वाले व्यक्ति, 'परिवार' में घर के नौकर और बच्चे भी शामिल हैं। इसलिये अमीरों की तुलना में निर्धनों के 'परिवार' बहुत छोटे हैं। फिर भी सभी वर्गों में जीवित और घर पर रहने वाले बच्चों की औसत संख्या समान हो। निश्चित रूप से 'परिवार और आमदनियां' औसत अंकों पर आधृत अनुमान हैं; प्रत्येक वर्ग में कुछ गृहस्थों के परिवार और आमदनियां निर्धारित अंकों से बड़े होंगे जबकि उसी वर्ग के दूसरे अपेक्षतया छोटे पैमाने पर रहते होंगे। 'स्वतंत्र अधिपतियों' में अपने खेतों के स्वामियों के अतिरिक्त आजीवन कृषक और स्वत्वाधिकारी भी सम्मिलित हैं। अन्त में यह अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि "मेहनतकश लोगों और बाह्य नौकरों" तथा 'झोंपड़ियों के निवासियों और दरिद्रों', जो

समुदाय के दो सबसे बड़े वर्ग हैं, में ऐसे अनेक लोग शामिल हैं जो किसी न किसी प्रकार से भूमि पर छोटे अधिकार रखते थे।

ग्रेगरी किंग के अनुसार दस लाख लोगों से अधिक, सम्पूर्ण राष्ट्र का लगभग पांचवा भाग, यदाकदा भिक्षा प्राप्त करते थे जो अधिकांश पैरिश (जिला) द्वारा प्रदत्त सार्वजनिक सहायता के रूप में होती थी। निर्धनों को दी जानी वाली सहायता सारे देश में लगभग ८ लाख पौंड वार्षिक होती थी जो ऐन्नी के शासन काल में बढ़कर १० लाख तक हो गई थी। लोग इस बाह्य सहायता को प्राप्त करने में तनिक भी लज्जित नहीं होते थे और यह सहायता एक शरारतपूर्ण प्रचुरता से दी भी जाती थी। रिचर्ड डनिंग ने कहा था कि १६६८ में पैरिश से प्राप्त सहायता उस व्यय की तिगुनी होती थी जो एक श्रमिक स्वयं, अपनी पत्नी और तीन बच्चों का पालन पोषण पर करता था। जिन लोगों को एक बार सार्वजनिक सहायता मिल जाती थी वे फिर काम करने से ही इनकार करते थे और 'कभी भी तीक्ष्णतम शराब के अलावा दूसरी शराब नहीं पीते थे। वे सर्वोत्तम आटे की बनी रोटी के अलावा अन्य आटे की रोटी भी नहीं खाते थे'। यद्यपि इस कथन को स्वीकार करने में सतर्कता अवश्य बरतनी चाहिए फिर भी इससे इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि दरिद्र-अधिनियम (या निर्धन कानून) के बारे में नियोक्ताओं और करदाताओं की शिकायत की प्रकृति क्या थी।

सभी युगों में बाहर से मिलने वाली सहायता की एक समान समस्याएं होती हैं। किन्तु पुनःस्थापना युग और अठारहवीं शताब्दी के दरिद्र-अधिनियम की एक विलक्षणता चार्ल्स द्वितीय के कैवेलियर संसद् द्वारा पारित बस्ती-अधिनियम था। इस अधिनियम के अधीन प्रत्येक पैरिश अपने यहां आकर बसने वाले व्यक्ति को उसके मूल पैरिश को वापस भेज सकता था क्योंकि उसको भय रहता था कि यदि वह व्यक्ति अपने नये घर में ठहर गया तो भविष्य में किसी सहायता को पाने का दावेदार हो जायेगा। इंगलैंड की जनसंख्या का ९० प्रतिशत, वस्तुतः वे सभी जो भूपतियों के एक छोटे से वर्ग के सदस्य नहीं थे, अपने पैरिश के अतिरिक्त किसी भी पैरिश से बाहर निकाले जा सकते थे। उनका चरित्र चाहे जितना अच्छा होता अथवा किसी कमाई वाले काम में भी लगे होते तो भी उन्हें गिरफ्तार होने अथवा अपमान सहने की परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता था। कुछ पैरिशों के अधिकारियों में नये लोगों के आकर बस जाने का इतना भय बना रहता था कि वे इस अनुचित शक्ति का उपयोग बिलकुल अनावश्यक मामलों में भी कर बैठते थे। अतएव उपरोक्त अधिनियम श्रम की गतिशीलता को रोकता था और उसी प्रकार से लज्शाजनक था जैसे कि अंग्रेजों की गर्वयुक्त स्वतंत्रता पर प्रेस प्रतिबन्ध। किन्तु फिर भी इसका विरोध नहीं किया गया जब तक कि बहुत वर्षों बाद ऐडम स्मिथ ने कटु शब्दों में इसकी आलोचना नहीं की। इसके कार्यान्वयन का सही अंश में अनुमान लगाना कठिन है और ऐसा प्रतीत होता है कि ऐडम स्मिथ ने इस अधिनियम

से हुई हानि और अन्यायपूर्ण मामलों की संख्या का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। किन्तु सब मिलाकर यह एक बड़ा अनिष्ट था। स्टुअर्ट काल के इंगलैंड में स्थानीय सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा निर्धनों के पालन-पोषण के लिये जो प्रशंसनीय प्रयास हुआ उसका यह दूसरा पक्ष है। सब मिला कर वह प्रयास विफल नहीं हुआ था और अंग्रेज़ी समाज के शान्तिमय चरित्र (स्वभाव) का अधिकांशतया कारण रहा।

हाउस आफ कामन्स और राज्य में संभ्रांत महिलाओं के संरक्षकों की बढ़ती हुई शक्ति का सबसे अच्छा लक्षण पुनःस्थापन युग के शिकार सम्बन्धी कानून थे। नार्मन और प्लैन्टेजेनेट के कालों में वनों के कानूनों ने प्रजा के सभी वर्गों के हितों की बलि देदी जिससे राजा को शिकार करने के लिए लाल हिरन प्रचुरता से मिल सकें। किन्तु अब छोटे भूपतियों और किसानों के हितों की बलि इस कारण दी गई थी कि महिलाओं के संरक्षक प्रचुरता से तीतरों का शिकार कर सकें। राजनीति की अपेक्षा तीतरों के कारण पड़ौसी एक दूसरे को शंका की दृष्टि से देखा करते थे। क्योंकि स्वतंत्र भूपति अपने छोटे से फार्म पर वे शिकार मार लेता जो आस पास के सुरक्षित शिकारगाहों से बहक कर वहां आ जाते थे। और इसलिये १६७१ में कैवेलियर संसद् ने एक कानून बनाया जो एक सौ पौण्ड से नीचे वाले सभी स्वतंत्र किसानों अर्थात् इस वर्ग की एक बड़ी बहुसंख्या को शिकार मारने से रोकता था चाहे फिर वह अपनी भूमि पर ही हो। इस प्रकार बहुत से निर्धन परिवारों को अनेक अच्छे भोजनों से, जो अधिकांशतः उनके थे, वंचित कर दिया गया। और वे थोड़े से भूपति भी, जो इस विलक्षण कानून की सीमा से परे अपनी संपदा के कारण आ जाते थे, इस कारण से शंका की दृष्टि से देखे जाते थे। अच्छे हृदय वाले सर रोगर डि कैवेलरी ने भी लगभग १०० पौंड वार्षिक वाले भूपतियों, जो शिकार कानून की सीमा में हैं, के बारे में कहा "वह एक अच्छा पड़ोसी होगा जो बहुत तीतरों को नष्ट नहीं करेगा"—अर्थात् स्वयं अपनी भूमि पर।

आगे की कई पीढ़ियों तक ग्रामीण संभ्रान्तजनों की शिकार के पशु-पक्षियों की सुरक्षा के बारे में अत्यधिक उत्कंठा से बहुत से गम्भीर सामाजिक परिणाम हो सकते थे। कारतूसी बन्दूक के उपयोग के कारण इस विषय पर उनकी चिन्ताएं बढ़ गई थीं। स्टुअर्ट के युग में शिकार की सहायता से शिकार खेलने के स्थान पर गोली से मारना धीरे धीरे प्रतिष्ठित हो गया था। परिणामतः चिड़ियों का विनाश अधिक शीघ्रता से होने लगा था और यह प्रतीत होने लगा था कि उनकी पूर्ति असमाप्य नहीं है। चार्ल्स द्वितीय के शासन में पहले ही उड़ते हुए पक्षी को गोली से मारना साधारण बात थी। किन्तु यह एक कठिन कला मानी जाती थी, और तब और भी अधिक जब कभी-कभी घोड़े की पीठ पर से उसका अभ्यास होता था। किन्तु एक अन्य प्रकार की शिकारी चिड़ियों 'फैजेन्ट' का छिप कर पीछा करना और उन्हें शाखों पर बैठते ही गोली से मारना भद्रजनों में अब भी प्रचलित था।

भूमि पर चिड़ियों को जाल में फंसाना एक फैशनेबुल क्रीड़ा थी जिसमें बहुधा कुत्तों की सहायता भी ली जाती थी जो घास में छिपी हुई चिड़ियों की ओर संकेत कर देते थे। यह उल्लिखित है कि सर रोगर ने अपने यौवन काल में शायद इसी ढंग के एक मौसम में तीतरों के चालीस झुण्डों का शिकार किया था। जंगली बतखों को बीसों और सैंकड़ों की संख्या में ललचाकर के किनारे के गड्ढे में फंसा लेना दलदलों में एक व्यापार था और ग्रामीण अधिपति के घर में फंसाने वाले पोखरों पर यह एक क्रीड़ा थी। विभिन्न प्रकार की चिड़ियों और जलपक्षियों को फंसाने के लिये टहनियों की लास लगाना और जाल फैलाना आदि अभी तक 'ज़मींदारों के मनोरंजन' के एक प्रमुख साधन थे। किन्तु स्पष्टतया कारतूसी बन्दूक की प्रतिष्ठा बढ़ रही थी और इसके साथ ही विशेष रूप से शिकार के लिए निर्दिष्ट कुछ चिड़ियों तक ही शिकार को सीमित करने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही थी। इस पवित्र वर्ग में अभी हाल ही में देश के कानून द्वारा तीतर तथा काले मुर्गे को स्थान दिया गया था। और जो गड़रिया इस कानून का उल्लंघन करता था उसके कोड़े लगाये जा सकते थे। एडिसन के टोरी संरक्षक ने घोषित किया था कि क्रान्ति के बाद पास किए गए कानूनों में शिकार कानून ही अच्छा कानून था।[1]

स्टुअर्ट युग के पीछे के काल में लोमड़ी के शिकार में वे लक्षण आ गए थे जिनमें स्पष्ट रूप से अधुनिकता की छाप थी। ट्यूडर काल में किसान लोमड़ी को जमीन के भीतर से खोदकर निकालते थे और थैले में डालकर कोकड़ के समान उसका उत्पीडन करते थे, अथवा चूहे के समान निर्दयता से मारते थे। क्योंकि उन दिनों में हिरन की शिकार करना सबसे अच्छा माना जाता था। किन्तु गृहयुद्ध की गड़बड़ियों से हिरन-उद्यान खुल गए थे और हिरन इस सीमा तक नष्ट हो गए थे कि विवश होकर पुनः-स्थापना काल में बहुत से जिलों में हिरन के स्थान पर लोमड़ी का शिकार होने लगा था। अभी तक जिला अथवा क्षेत्रीय स्तर पर सार्वजनिक चन्दे से पोषित कुत्तों के दल नहीं थे किन्तु निजी भद्रजनों के अपने कुत्ते-दल होते थे और वे पड़ोसियों को शिकार के समय आमंत्रित कर लेते थे। वहां पहले यह विचार प्रचलित था कि भद्रजन अपने ही कुत्तों के दल से हिरन और लोमड़ी का अपने ही जंगलों में शिकार करें। अब इसके स्थान पर धीरे धीरे यह चलन होने लगा था कि विस्तृत स्तर पर देहातों में शिकार खेला जाये चाहे फिर वहां पर स्वामित्व किसी का भी हो।

कुछ जिलों (काउन्टीज़) में लोमड़ी को बिल में बन्द कर देना रोक दिया गया था और लोमड़ी को खुले मैदान में भगा कर शिकार करने में कुछ सफलता प्राप्त की गई थी। इन दशाओं में कभी कभी १० से २० मील तक की दौड़ हो जाती थी।

---

[1] शिकार के दो प्रमुख कानून चार्ल्स द्वितीय के २२-२३, केप. २५, और ४ डब्लु. और एम. कैप. २३ कहे जाते हैं।

किन्तु लंकाशायर और शायद अन्यत्र भी लोमड़ी को पहले बिल में घुसने पर मिट्टी से दबा देते थे फिर खोदकर उसका शिकार करते थे। यदि लोमड़ी बिल में नहीं घुसती तो साधारणतया वह बच कर भाग जाती थी। यह सम्भव है कि तब तक आज जैसे न थकने वाले शिकारी कुत्तों का विकास नहीं हो पया था।[1]

आखेट के सभी सुप्रतितिष्ठित संस्कारों के साथ हिरन का पीछा करना अब भी सर्वोत्तम शिकार समझा जाता था। किन्तु धीरे धीरे इसका ह्रास हो रहा था ज्यों ज्यों खेती के बढ़ने से जंगलों की संख्या कम हो गई थी। इससे भद्रजन द्वारा अपने निवास के चारों ओर बनाये जाने वाले हिरन-उद्यान के आकार की सीमा भी निश्चित हो गई थी।

हिरन अथवा लोमड़ी की शिकार से भी अधिक लोकप्रिय खरगोश का पीछा करना था जिसमें शिकारी कुत्तों को घोड़े पर सवार भद्रजन धीरे धीरे ललकारा करते थे और साधारण लोग पीछे पीछे भागते थे। सबसे आगे शिकारी एक बांस लेकर भागता था। इस दृश्य में एक लोकप्रिय ग्रामीण क्रीड़ा की भी प्रवृत्ति पाई जाती थी। अवश्य ही अगुआ भद्रजन रहते किन्तु इसमें सभी छोटे बड़े पड़ोसी भाग लेते थे।

अन्य लोकप्रिय क्रीड़ाएं भी थीं। देश के भिन्न भिन्न भागों में विभिन्न नियमों और परम्पराओं से कुश्ती प्रचलित थी। फुटबाल के विभिन्न अनगढ़ (अपरिष्कृत) प्रकार और 'फेंकन' भी प्रचलित थे। बहुधा दो गांवों की सम्पूर्ण पुरुष जनसंख्या हंसते-खेलते एक दूसरे को उठाकर फेंकने में व्यस्त हो जाती थी। अकेले लाठी चलाना, घूंसेबाजी, तलवारों से लड़ाई, सांड और रीछ की लड़ाई लोग बड़ी प्रसन्नता से देखते थे और अभी भी उनमें चोटों से उत्पन्न दर्द को नापसंद करने की मनोवृत्ति नहीं आई थी। वास्तव में लटकाकर कोड़े लगाने जैसी कम क्रीड़ा-पूर्ण क्रियाओं में लोग बहुत आनन्द लेते थे। परन्तु सभी क्रीड़ाओं में मुर्गों की लड़ाई सबसे लोकप्रिय थी जिसमें घुड़दौड़ की तुलना में सभी वर्गों के लोग रुपये की बाजी अधिक लगाते थे। किन्तु राष्ट्रीय चेतना में घुड़-दौड़ को अधिक महत्वपूर्ण स्थान मिलने लगा था जिसका कारण था चार्ल्स द्वितीय द्वारा नई बाजार को संरक्षण देना और सवारी के घोड़ों की नस्ल में सुधार होना तथा अरबी और बार्ब नस्ल के घोड़ों का प्रवेश।

बाद के स्टुअर्ट राजाओं के काल में फैशन और स्वास्थ्य के प्रयोजनों के लिए स्पैस पर बहुत से लोग आया-जाया करते थे। रोमन समय के पश्चात् सर्वप्रथम बाथ की

---

[1] इस प्रकार थामस टिलडेस्ली ने अपनी डायरी में लिखा था—'मैं तड़के लोमड़ी का शिकार खेलने और अपने भाई डाल्टन और फास्ट से मिलने गया, दो लोमड़ियां मिलीं लेकिन उनमें से किसी को भी नहीं मार पाया' (**नोटेस्टीन इंगलिश फोक**, पृष्ठ १७२)। लोमड़ी के शिकार के इस वर्णन की तुलना ब्लूम लिखित जेन्टलमैन्स **रिक्रियेशन**, १६८६, २, पृष्ठ १३७-१३६ में वर्णित लोमड़ी के शिकार से कीजिए।

नदियों की ओर बड़े लोगों का आकर्षण बढ़ा था किन्तु अभी तक व्यूनैश और जेन आस्टिन के सुन्दर नगर नहीं बने थे। उत्तरी प्रान्त के भद्रजन और उनके परिवार वक्सटन और हैरोगेट की ओर वहुत आकृष्ट होते थे। किन्तु राजघराना और लन्दन के फैशनेबुल लोग वहुधा अत्यधिक संख्या में टुनब्रिज वेल्स के चारों तरफ ग्रामीण झोपड़ियों में आते थे जहां १६८५ में राजदरबारियों ने अपने प्रयोग के लिए गिरजे का निर्माण कर शहीद चार्ल्स द्वितीय को समर्पित कर दिया था।

इस समय तक समुद्र तट के प्रेमी नहीं थे। डाक्टरों को उसकी वायु के स्वास्थ्य-वर्द्धक गुण नहीं ज्ञात हुए थे। न कोई समुद्र के जल में नहाना चाहता था और न किनारे पर उसके दर्शन से आनन्द-विभोर हो उठता था। अंग्रेजों के लिए समुद्र साधारण मात्र था; यह उसके लिये व्यापार का मार्ग, मछलियों का घर, युद्ध स्थल और उसकी विरासत था। किन्तु अभी तक कोई भी समुद्र तट अथवा पर्वतों पर मनुष्य की आत्मा की तुष्टि के लिए नहीं जाता था।

स्टुअर्ट के शासन काल की एक शताब्दी में इंगलैंड की काउन्टियों के वित्तीय उद्देश्यों के लिये बार-बार आकलन किये गये। सबसे धनी काउन्टी मिडिलसेक्स की थी क्योंकि उसमें लंदन का बहुत भाग सम्मिलित था और कम्बरलैंड सबसे निर्धन थी। लंदन और उसकी बाजार के विस्तार के कारण सर्रे १६९३ में द्वितीय स्थान पर आ गया था जबकि १६३६ में उसका अठारहवां स्थान था। धनवानता के इस क्रम में नीचे वर्क्स तथा टेम्स नदी के उत्तर ओर स्थित कृषिबहुल काउन्टियां—हर्ट्‌स, वेड्स, बक्स, आक्सफर्ड-शायर तथा नार्थेन्ट्स आती थीं। उनमें बड़े कस्वे, औद्योगिक केन्द्र या कोयले की खानें नहीं थी और उनमें कृषि भी मुख्यतया खुले हुए खेतों में होती थी। इस पर विचार करने पर उनकी सम्पदा अद्‌भुत लगती थी; किन्तु यह लंदन की बाजार से दूर नहीं थी। इस प्रकार से औसतन केन्द्रीय काउन्टियां सबसे धनवान थीं। इसके बाद केण्ट और ससेक्स की दक्षिणी काउन्टियां आतीं थी जिनमें पुराने घेरों वाली भूमि, फलों के उद्यान और भेड़ों के ढालू चरागाह थे। इसके बाद पूर्वी ऐंग्लिया, जिसमें कम वर्षा किसानों को वरदान थी, तथा लंदन से सटी हुई इसेक्स थी। सम्पदा की दृष्टि से इससे नीचे क्रम में राजधानी से दूर वेस्ट थी जिसकी जलवायु अधिक नम थी। इस क्रम में सबसे अन्त में उत्तरी भाग था जो कुछ समय पहले तक उपद्रवग्रस्त और निर्धन था। इंगलैंड में निर्धनतम सात काउंटियां चेशायर, उर्वीशायर, यार्कशायर, लंकाशायर, नार्थम्बरलैंड, डरहम और कम्बरलैंड थीं। उत्तरी शायरों की निर्धनता और भी वलिक्षण थी क्योंकि उन सभी में कोयले की खानें थीं और यार्कशायर और लंकाशायर में सूती कपड़ों के कारखाने भी थे। किन्तु इन उद्योगों में उत्पादित सम्पदा का वृहत् मात्रा में उपयोग इन उत्तरी भागों में कृषि के विकास के लिये इस समय तक नहीं किया गया था। ऐसा आने वाली शताब्दी में किया गया जब टेनेसाइड की खानों की सम्पदा

को भूमि पर पड़ोसी काउंटियों के मैदानी फार्मो को उपजाऊ बनाने के लिये अंधाधुंध व्यय किया गया।

यदि ग्लूसेस्टर से बोस्टन तक एक रेखा खींची जाय तो वेल्स को निकालने पर इंगलैंड का क्षेत्रफल लगभग दो समान भागों में—पूर्वी-पश्चिमी तथा दक्षिणी-पूर्वी अर्द्धांशों में—विभक्त हो जाता है। आजकल बहुसंख्यक जनसंख्या इस रेखा के उत्तरी-पश्चिमी ओर बसी है। इसका कारण भारी उद्योगों का विकास है यद्यपि कुछ समय पूर्व से दक्षिण की ओर जनसंख्या का दबाव बढ़ना प्रारंभ हो गया है। परन्तु यह संभव है कि चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में रेखा के उत्तर पश्चिम में केवल चौथाई जनसंख्या रहती हो। भूमि-कर विवरणों से यह संकेत मिलता है कि उत्तरी-पश्चिम आधे भाग की सम्पदा केवल ५:१४ थी जबकि आबकारी के विवरणों में यह केवल १:४ थी। (ऑग : **इंगलैंड इन दि रेन ऑफ़ चार्ल्स द्वितीय,** पृष्ठ ५१)।

सत्रहवीं शताब्दी की अवधि में वार्विकशायर में औद्योगिक प्रगति और कृषि पर उसकी प्रतिक्रियाओं को दर्शाने वाले परिवर्तन हो चुके थे। एलिजाबेथ के शासन में कैमडेन ने अपनी कृति **ब्रिटेनिया** में लिखा था कि ऐवन ने वार्विकशायर का दो भागों में विभाजन किया था : फेल्डन अथवा नदी के दक्षिण-पूर्व में खुले हुए खेतों का सम्पन्न सिंचित क्षेत्र, और उत्तर-पश्चिम में जंगली क्षेत्र (आर्डेन का जंगल)। विलियम तृतीय के शासनकाल में, गिब्सन, जो बाद में लंदन का सुप्रसिद्ध बिशप हो गया था, ने **ब्रिटेनिया** का एक नया संस्करण प्रकाशित किया जिसमें कैमडेन के समय के उपरान्त होने वाले परिवर्तनों पर टिप्पणियां जोड़ दी गई थी : "तब आर्डेन का जंगल समाप्त हो गया था और उसके स्थान पर एक धनी सिंचित क्षेत्र विकसित हो गया था "पड़ोस की काउंटियों, जैसे बिरमिंघम और ब्लैक कंट्री, में लोहे के कारखानों ने लकड़ी की इतनी विशाल मात्राओं को नष्ट किया कि उससे शीघ्र ही ग्रामीण क्षेत्र कुछ अधिक खुला हुआ हो गया और धीरे धीरे खेती होने लगी। इतने पर निवासियों ने कुछ तो अपने परिश्रम से और कुछ रेह मिट्टी की सहायता से बहुत से जंगल और बंजर भूमि को खेती और चरागाह के लिए इस्तेमाल कर लिया जिसमें उन्होंने इतना अनाज, पशु, पनीर और मक्खन पैदा किया जो न केवल उनके उपयोग के लिये पर्याप्त थे प्रत्युत् अन्य काउंटियों को भी दिये जाते थे।"

इसी अवधि में ऐवन के दूसरी ओर फेल्डन, जो किसी समय महान खेतिहर क्षेत्र था और ब्रिस्टल को अन्न की पूर्ति करता था, मुख्यतया घास का मैदान हो गया था और गिब्सन के अनुसार, बहुत से गांवों की जनसंख्या कम होकर कुछ गड़रियों तक सीमित हो गई थी। उसके विचार से फेल्डन में चरागाह में परिवर्तन हो जाने के कारण ऐवन के दूसरी ओर हाल में खेती के अधीन लायी गई पुरानी जंगली भूमियों का श्रेष्ठ खेती योग्य गुण था। यहां तब वार्विकशायर के दोनों ओर घेरेबन्द खेतों में

विशाल वृद्धि हुई थी—उत्तर पश्चिम की ओर पुराने जंगल और बंजर का घेरा था और दक्षिणपूर्व की ओर पहले के खुले हुए खेतों की बाड़ें। यह सब कुछ स्टुअर्ट काल में हुआ क्योंकि घेरों के विरुद्ध ट्यूडरकाल में जो तीव्र भावना थी वह उस काल में समाप्त हो गई थी।[1]

स्टुअर्ट के काल में विरमिंघम और उसके पश्चिम में ब्लैक कण्ट्री में लोहे के व्यापार में तीव्र वृद्धि होने के बावजूद लोहे में कोयले की आग (भट्टियों) का इस्तेमाल होता था और लंदन तथा अन्य सभी क्षेत्रों में जहां यह आसानी से पानी के रास्ते भेजा जा सकता था तो यह नियमित रूप से घरेलू ईंधन बन गया था। इन दशाओं में स्टुअर्ट काल में कोयले का व्यापार बढ़ गया था जो उस पहले के काल के लिये उतना ही आश्चर्यजनक था जितना कि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जो कोयला और लोहे का युग कहलाया।[2] इस प्रकार की दूसरी वृद्धि थी।

---

[1] कैम्डन के काल के पश्चात 'एडिशन्स टु वारविकशायर' नामक अपने लेख में गिब्सन ने **ब्रिटेनिया** के १६६५ के संस्करण (पृ० ५१०-१२) में यह उल्लेख किया है कि स्ट्रैटफोर्ड के गिरजाघर में वेदी के नीचे उसी स्थान का निवासी विलियम शेक्सपीयर लेटा हुआ है जिसकी प्रतिभा और महान् योग्यताओं का प्रमाण उसके उन ४८ नाटकों में मिलता है जिन्हें छोड़कर वह मरा था। वर्तमान में केवल ३७ नाटकों की जानकारी है किन्तु उपरोक्त उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि शेक्सपीयर को पहले ही अपने देशवासियों की ओर से पर्याप्त सम्मान प्राप्त हो गया था।

[2] श्री नेफ ने अपनी कृति **राइज़ ऑफ़ दि ब्रिटिश कोल इण्डस्ट्री**, पृ० १९-२०, (रुतलेज) में जो निम्नांकित आंकड़े दिये हैं वे इस बात को दर्शाते हैं कि एलिजाबेथ और विलियम तृतीय के शासनकालों के बीच कोयले के उत्पादन में कितनी तीव्र वृद्धि हो चुकी थी। ये आंकड़े कोयले की खानों का भौगोलिक वितरण भी दर्शाते हैं, जो लगभग वैसा ही था जैसाकि वर्तमान काल में है।

अनुमानित वार्षिक उत्पादन (टनों में)

	१५५१-६०	१६८१-९०	१७८१-९०	१९०१-१०
डरहम तथा नार्थम्बरलैंड	६५,०००	१२,२५,०००	३०,००,०००	५,००,००,०००
स्काटलैंड	४०,०००	४,७५,०००	१०,००,०००	३,७०,००,०००
वेल्स	२०,०००	२,००,०००	८,००,०००	५,००,००,०००
मिडलैंड्स	६५,०००	८,५०,०००	४०,००,०००	१०,०१,८०,०००
कम्बरलैंड	६,०००	१,००,०००	५,००,०००	२१,२०,०००
किंग्सवुड चेज तथा सोमरसेट	१०,०००	१,००,०००	१,४०,०००	११,००,०००

सम्पूर्ण सत्रहवीं शताब्दी में राष्ट्रीय सम्पदा की वृद्धि के साथ-साथ समुदाय के वहुत से वर्गों के कल्याण में कोयले का बहुत महत्वपूर्ण भाग रहा किन्तु दूसरी ओर स्वयं खनिकों के जीवन में औद्योगिक क्रान्ति के कम सुखदायी लक्षणों का विकास भी किया। उनके पूंजीवादी मालिक उनके जीवन और श्रम की दशाओं को देखते नहीं थे और उनके बारे में कम ध्यान देते थे। जैसे गड्ढे अधिक गहरे हो जाते थे खनिकों को जमीन के भीतर अधिक समय व्यतीत करना पड़ता था और वे अधिकाधिक शेष मानव समाज से पृथक होते जाते थे। आग की नमी के कारण विस्फोटों की संख्या बढ़ जाती थी और वे अधिक भयानक होते थे। जमीन के भीतर कोयला ढोने के लिए स्त्रियों और बच्चों को अधिकतर नौकर रखा जाता था। डरहम और नार्थम्बरलैंड में हजारों खनिकों और टाइन की कोयला ढोने वाली नावों के मल्लाहों के महान संगठन वहुत थोड़ी सफलता पाकर अपनी जीवन दशाओं को सुधारने का प्रयत्न करते थे। स्काटलैंड में खनिकों की स्थिति खानों की सेवा करने के लिये वाध्य बिके हुए मजदूरों जैसी हो गई थी। इंगलैंड में ऐसा नहीं हुआ था किन्तु खनिकों और उनके परिवारों की दशा कई बातों में समुदाय के अन्य किसी वड़े वर्ग की तुलना में अधिक खराब थी।

श्री नेफ, जिसने स्टुअर्ट और हैनोवरों के प्रारंभिक कालों में कोयला खनन की दशाओं से सम्वन्धित बहुत से तथ्य संग्रह किये थे, ने लिखा है :

"कोयले के कारण वर्गों के बीच एक नई खाई पैदा हो गई थी। अनेक कठिनाइयों और निर्योग्यताओं के बावजूद मध्यकालीन किसानों और दस्तकारों को अपने पड़ोसियों से अलग नहीं किया जाता था जैसा कि सत्रहवीं शताब्दी में अधिकांश कोयले की खानों के क्षेत्रों में कोयला खनिकों की स्थिति थी।"

इसके अतिरिक्त स्वयं कोयला-खनन उद्योग में पूजीवादी मालिकों और शारीरिक श्रमिकों के बीच सम्पूर्ण अलगाव था। यह स्थिति वैसी ही थी जैसी आगे चलकर कई अनेक दूसरे-रोजगारों में सामान्यतः हो गई थी। वास्तव में वाद के स्टुअर्ट राजाओं के काल में भट्टियों के लिये कोयले की आपूर्ति के कारण स्थापित होने वाले अनेक उद्योगों का वही वृहताकार और पूंजीवादी स्वभाव हो गया। (नेफ : **राइज ऑफ़ दि ब्रिटिश कोल इण्डस्ट्री**, पुस्तक २, अध्याय ४)।

	१५५१-६०	१६८१-९०	१७८१-९०	१९०१-१०
फोरेस्ट ऑफ़ डीन	३,०००	२५,०००	९०,०००	१३,१०,०००
डेवन तथा आयरलैंड	१,०००	७,०००	२५,०००	२,००,०००
योग	२,१०,०००	२९,८२,०००	१,०२,९५,०००	२४,१९,१०,०००
निकटतम वृद्धि		१४ गुनी	३ गुनी	२३ गुनी

मिडलैंड कोयला क्षेत्र में यार्क्स, लैंक्स, चेशायर, डर्बीशायर, श्रोपशायर, स्टाफ्स, नाट्स, वारविकशायर, लीसिस्टशायर और वोरसेस्टशायर की खानें सम्मिलित थीं।

किन्तु ऐसे बहुत से जिले थे जिन्हें नदी अथवा समुद्र के मार्ग से कोयला नहीं मिल पाता था। जंगली लकड़ी में कमी हो जाने के कारण इनमें से कुछ क्षेत्रों में खाना बनाने और गर्म करने जैसी प्रारंभिक आवश्यकताओं के लिये भी ईंधन का अभाव हो गया था। वे इस स्थिति में तब तक बने रहे जब तक अच्छी सड़कों, नहरों और अन्ततः बाद के समय की रेलगाड़ियों द्वारा कोयला घर घर नहीं पहुंचाया गया। इस तरह विलियम तृतीय के शासनकाल में साहसिक यात्री कुमारी सेलिया फेन्नेस[1] ने दक्षिणी वेल्स की घोड़े पर यात्रा की थी। पेन्जेल्स में उन्हें रात का जो भोजन मिला वह ऐसी आग पर उबाला गया था जो झाड़ियों को जला कर बराबर प्रज्ज्वलित रखी जाती थी और इसी पर मांस भी पकाया जाता था। कारण यह था कि कार्न के जंगल नष्ट हो गए थे। युद्ध के समय फ्रांसीसी सैनिक दक्षिणी कार्निश बन्दरगाहों में वेल्स से आये हुए कोयले को उतारने नहीं देते थे। लीसेस्टरशायर में राज्य के गोबर को खेतों में खाद न डाल कर उसे सुखा कर ईंधन के लिये सुखा लिया जाता था।

१६६५ में भी कैमडेन की **ब्रिटेनिया** के अपने संस्करण में गिब्सन ने 'जंगलों से ढकी हुई' आक्सफोर्डशायर की पहाड़ियां के एलिजाबेथ कालीन पुरातत्वान्वेषी के वर्णन पर टीका करते हुए लिखा है 'पिछले गृह-युद्धों के समय तक यह इतना अधिक बदल गया है कि चिल्टर्न के अतिरिक्त ऐसे स्थान बहुत कम हैं जिनमें आज भी उपरोक्त वर्णन के अनुकूल विशेषता मिलती है। क्योंकि उन भागों में ईंधन इतना मंहगा है कि वह आक्सफोर्ड और उस क्षेत्र के उत्तरी भाग के अन्य शहरों में आम तौर पर तौल कर मिलता है।" परन्तु आक्सफोर्ड के नागरिक और विश्वविद्यालय के सदस्य टेम्स नदी की नौकाओं द्वारा लाये गये कोयले से खाना पकाते थे और अपने कमरों को गर्म करते थे जबकि उस क्षेत्र के उत्तरी भाग में नगरों में लकड़ी के ईंधन का अधिक गंभीर अभाव था।

अगली शताब्दी में बहुत से अंग्रेज़ी परिवारों का भोजन रोटी-पनीर था जो ऐसा रसोई के ईंधन के अभाव के कारण करते थे। सर्दी में उनके निर्धन घरों में अवश्य ही भयानक ठंड रहती होगी। देश के उन भागों में जहाँ लकड़ी युग और कोयले-युग में कालान्तर था वहाँ गरीबों के लिए बड़ी मुसीबत थी और अमीरों को कुछ असुविधा होती थी।

---

[1] क्रिस्टोफर मारिस द्वारा संपादित दि **जर्नीज ऑफ़ सीलिया फेनीज** (१६४७)। यह दिलचस्प और महत्वपूर्ण अभिलेख अंशतः विलियम तृतीय और अंशतः रानी ऐन्नी के शासनकालों में किये गये भ्रमणों पर आधारित है। कुमारी फेनीज एक साधन-सम्पन्न और विमतिवादी महिला थीं। वह तृतीय वाईकाउन्ट सेयी और सैले की बहिन थीं। वह इंगलैंड में आमोद-प्रमोद और जिज्ञासा के लिये घोड़े पर भ्रमण करती थीं।

परन्तु पक्की सड़कें बनने के काल से पूर्व, भीतरी भागों में दूरस्थ खानों से बहुत दूरी तक कुछ व्यय करके कोयला नहीं ले जाया जाता था जहां यह सेवा सुसंगठित होती थी। इस प्रकार कुमारी फिन्नेस ने लिखा है कि ब्रिस्टल से कोयले से लादी नावें नदी के मार्ग से ब्रिजवाटर होते हुए टाउंटन से तीन मील की दूरी तक आ जाती थीं 'जहां वे नावें कोयला उतार देती थीं और वहां से चारों ओर घोड़ों पर बोरों से लाद कर कोयला भेजा जाता था। एक घोड़े पर एक बार में दो बुशल कोयला ले जाया जाता था जो उतारने के स्थान पर अठारह पेंस का होता था। जब यह टाउंटन लाया जाता था तो उसका दाम दो शिलिंग होता था। कोयला ढोने वाले आते-जाते घोड़ों से सड़कें भरी रहती थीं।

अन्य सभी नगरों की तुलना में लंदन की वृद्धि अधिक थी जो बिना किसी अवरोध के पुनःस्थापना काल के बाद भी कायम रही। सन् १७०० में इस राजधानी में इंगलैंड की ५५ लाख जनसंख्या का लगभग १/१० भाग रहता था।[१] इससे छोटे आकार के नगर ब्रिस्टल और नार्विच थे जिनमें से प्रत्येक की जनसंख्या लगभग ३०,००० थी। आनुपातिक दृष्टि से लंदन का व्यापार बड़ा था। १६८० में लंदन के बन्दरगाह के आबकारी विभाग के प्रशासन पर २०,००० पौंड, ब्रिस्टल में २००० पौंड तथा न्यूकैसल, प्लाईमाउथ और हुल में से प्रत्येक में ६०० पौंड व्यय होते थे। शेष नगर कहीं भी नहीं थे। न्यूकैसल बन्दरगाह की सारी आमदनी कोयले के निर्यात से होती थी जिसका एक तिहाई लन्डन को जाता था। व्हेल के शिकार और मछलियों के उद्योग के कारण तथा उत्तरी इंगलैंड का प्रमुख फौजी नगर होने के नाते हुल तरक्की पर थी। विशाल ब्रिस्टल और उदीयमान लिवरपूल की भांति प्लाईमाऊथ ओर अटलांटिक सागर के पार के उपनिवेशों से बढ़ते हुए व्यापार से लाभ होता था। दूसरे, यह रॉयल नेवी (शाही समुद्री सेना) का पश्चिमी केन्द्र होने के कारण भी महत्वपूर्ण था।

जहाजी कारखानों के कारण भिटबी, यारमाउथ और हारविक की तरक्की हो रही थी। किन्तु अन्य बहुत से बन्दरगाहों, जैसे किंग्ज लिन तथा पूर्वी ऐंगलिया के छोटे बन्दरगाहों, का ह्रास हो रहा था क्योंकि टेम्स नदी के मुहाने से व्यापार बढ़ रहा था अथवा अमरीकी व्यापार पाने के लिये वह पश्चिम की ओर मोड़ दिया जाता था।

---

१ दीक्षाओं के रजिस्टरों से यह अनुमान लगाया गया है कि सन् १७०० में जब इंगलैंड और वेल्स में ५५,००,००० से भी अधिक जनसंख्या थी, मेट्रोपोलिटिन में ६,७४,३५० निवासी थे। इनमें से मुख्य नगर में लगभग २,००,००० निवासी थे (श्रीमती जार्ज, **लंडन लाइफ**, आदि, पृष्ठ२४-२५, ३२६-३३०)। इंगलैंड और वेल्स में जनसंख्या के आंकड़ों के लिए देखिये तालबोट-ग्रिफिथ, **रायल स्टैटिसटिकल सोसाइटी जर्नल**, खण्ड ९२, भाग २, पृ० २५६-२६३

जहाजरानी के कानूनों का प्रभाव अटलांटिक सागर के पार इंगलैंड के औपनिवेशिक व्यापार को बढ़ाना था और स्कैन्डीनेविया तथा वाल्टिक से उसके विदेशी व्यापार को कम करना था। इससे पूर्वी तट के सभी बन्दरगाहों, लन्डन को छोड़कर, पर हानिकर प्रभाव पड़ा। लम्बी समुद्री यात्राओं की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बड़े बड़े जहाज वन जाने से पश्चिमी तट के फौवी तथा वाइडफोर्ड जैसे छोटे बन्दरगाहों की भी क्षति हुई। इसके अतिरिक्त दूसरे नगरों के व्यापार पर लन्डन के व्यापारियों और पूंजी का नियंत्रण था।

विदेशों से सम्पदा एवं आवासियों के निरन्तर आते रहने से लंदन में एक जीवन्त और आरोग्यप्रद (पुनः पूर्ण) शक्ति थी जिसकी १६६५-६६ के ताउन और अग्निकांड ने कठिन परीक्षा ली थी। ये बड़ी भयंकर विपदायें थी किन्तु फिर भी राजधानी की शक्ति, सम्पन्नता और जनसंख्या की भावी वृद्धि पर इसका शायद ही कोई प्रभाव पड़ा।

लन्डन का विख्यात ताउन तीन शताब्दियों में ताउनों की एक श्रृंखला में केवल अन्तिम था जो शायद सबसे अधिक विनाशकारी नहीं था। क्रेसी और पॉईटियर्स के अभियानों के बीच में सुदूर पूर्व के किसी अनजाने स्रोत से आकर काली मौत पहले यूरोप भर में फैल गई थी। वह साधारणतया किसी भी नई बीमारी की भांति सर्वव्यापी और हिंसात्मक थी। छोटे छोटे गांव भी इससे नहीं बचे थे। बोकेसियों, फ्रायसार्ट और चासर के देशवासियों के एक तिहाई, और संभवतया आधे लोग, तीन वर्षों के भीतर मर गए थे। यह काली मौत इंगलैंड की भूमि में बनी रही थीं और ताउन के नाम से विख्यात हो गई थी। पुनः यह कभी भी सम्पूर्ण देश में एक साथ नहीं फैली किन्तु लगातार भिन्न भिन्न स्थानों पर फैलती रही 'विशेषकर कस्बों बन्दरगाहों तथा नदी किनारे की आबादियों में' जहां जहाजों द्वारा लाये गए पिस्सू से पीड़ित चूहों की वृद्धि हो जाती थी। लंडन में लंकास्टर और ट्यूडर के राजाओं के काल में ताउन दीर्घ काल तक स्थानीय और प्रायः निरन्तर बना रहा। स्टुअर्ट के शासनकाल में यह बीमारी यदा कदा किन्तु भयानक रूप में फैली। जेम्स प्रथम के शासनारूढ़ होने पर लंडन में उल्लास की अवधि ताउन फैल जाने के कारण कम हो गई थी। इसमें तीस हजार व्यक्ति मरे थे। जब चार्ल्स प्रथम शासनारूढ़ हुआ था तो दूसरी बार ताउन फैला जो पहले की अपेक्षा कम विनाशकारी था। १६३६ में इससे भी कम गंभीर ताउन फैला। उसके पश्चात् लगभग तीस वर्ष तक लंडन इस रोग से अपेक्षतया मुक्त रहा। इस काल में ऐसी दूसरी अनेक घटनाएं घटीं जिनसे लन्डनवासी अपने बाप-दादों द्वारा भुगती हुई ताउन की विपत्तियों के बारे में बातें करना भूल गए। इसलिए जब अन्तिम बार १६६५ में ताउन फैला, यद्यपि पहले की अपेक्षा इससे लंडनवासियों का कम संहार हुआ था, लोगों की कल्पना पर इसका अधिक आघात हुआ क्योंकि तब यह महानतर सभ्यता, सुविधा और सुरक्षा के युग में फैला था और जब

ऐसी विपदाओं का लोग कम स्मरण करते थे और उनकी कम उपेक्षा करते थे। और ऐसा लगता था कि भगवान के आदेश पर इस विपत्ति के ठीक बाद दूसरी विपत्ति आ गई जिसकी तुलना लंदन के सबसे प्राचीन अभिलेखों में उल्लिखित किसी भी विपत्ति से नहीं की जा सकती थी।[1]

महान अग्नि (१६६६) पांच दिनों तक जलती रही जिससे टावर और टेम्पल के बीच का सम्पूर्ण मुख्य शहर नष्ट हो गया। फिर भी संभवतया राजधानी की आधी जनसंख्या भी बेघरबार नहीं हुई थी। नगर की प्राचीरों के बाहर स्वतंत्र बस्तियों को नाम मात्र की हानि हुई थी और इन्हीं में नागरिकों का अधिकांश भाग रहता था। पिछले साठ वर्षों में लंडन की बड़ी तीव्र वृद्धि हो रही थी। जनसंख्या पांच लाख से कुछ ही कम थी। इंगलैंड के अन्य सभी नगरों में नगरवासी देहातों के अति निकट रहते थे। वे दशायें वास्तव में नगर-गांव की मिली जुली दशायें थीं। केवल लन्दन में महान-नगर का जीवन बढ़ रहा था। कई पहलुओं में यह विचित्र ढंग से अस्पृहनीय था। नगर के बाहर स्वतंत्र बस्तियों से परे गरीबों की भीड़ गन्दी बस्तियों में रहती थी। ये गन्दी बस्तियां सेंट गाइल्स की, क्रिपलगेट, व्हाट चैपल, स्टेपनी, वेस्टमिन्स्टर, लैम्वेथ नाम की थी जहां उनकी जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि होती थी यद्यपि उनके शिशुओं में अत्यधिक ऊँची मृत्यु दर थी।

आग और इमारतों के पुनर्निर्माण से लन्दन की गन्दी बस्तियों की जनसंख्या की नैतिक दशाओं और स्वच्छता में कोई सुधार नहीं हुआ। क्योंकि ताउन की उत्पत्ति और उसका केन्द्र सदैव नगर के बाहर स्वतंत्र बस्तियों में होता था जहां सबसे अधिक निर्धन लोग रहते थे। चूंकि इस आग से ये क्षेत्र नहीं जले थे इसलिए इनका पुनर्निर्माण भी नहीं हुआ। १७७२ में डेफो ने घोषणा की थी कि 'उनकी वही स्थिति है जो पहले थी।' इसलिए यह स्पष्ट है कि आग से विनष्ट होने के बाद 'लन्दन के

---

[1] गृहयुद्ध (१६४२-१६४६) की अवधि में द्वीप के अन्य भागों में भी ताउन फैल गया था, विशेषकर दक्षिण और पश्चिम में; कुछ नगरों में, जैसे चेस्टर, लगभग चौथाई निवासी इससे मर गये थे। 'लन्दन का ताउन' (१६६५) केवल राजधानी तक सीमित नहीं रहा। ईस्ट एंजिलिया इससे बहुत बुरी तरह ग्रस्त था किन्तु यह रोग पश्चिम और उत्तर में दूर तक नहीं फैला। लैंगडेल और वेस्टमोरलैंड में परम्परा से अब भी यह संकेत मिलते हैं कि एकाकी कृषक घरों के खंडहर वे हैं जहां के निवासी ताउन से मर गये थे क्योंकि वहां एक सैनिक के कपड़े भेजे गये थे जो उक्त रोग के कीटाणुओं से दूषित थे। परन्तु घाटी का शेष भाग और जिला इस रोग से दूर रहा। अनुमान है कि सैनिक के कपड़ों में ताउन के पिस्सू छिपे हुए थे।

पुनर्निर्माण' को ताउन की समाप्ति, इंगलैंड में अपने अन्तिम महाविनाश के बाद, का हम प्रमुख कारण नहीं मान सकते।

लन्दन के जिस भाग में आग के कारण परिवर्तन आया था वह उसका केन्द्रीय व्यापारिक और आवासीक क्षेत्र था। इसमें वे महान व्यापारिक गृह सम्मिलित थे जहां व्यापारी और उनके सुव्यवस्थित तथा सुपोषित परिवार कार्य करते और सोते थे। मध्यकाल से चलते आये वन, व्यापार और आतिथ्य सत्कार के इन गृहों, जिनके पिछवाड़े बगीचे थे और भीतर आंगन, की लिसी-पुती दीवारें तंग और टेढ़ी-मेढ़ी गलियों के किनारे खड़ी थीं। कहीं कहीं द्वार और खिड़कियों के छज्जे दूकानों के सामने वाले भाग के ऊपर तक इतना निकले होते थे उनकी अट्टालिकाओं में काम करने वाले नव-शिक्षित रास्ते चलते हुए हाथ मिला लेते थे। जब भयानक आग हवा से भी तेज भागने लगी तो इन पुराने तथा दुर्बल मकानों ने उसकी लपटों को खूब बढ़ाया। उन थोड़े से स्थानों में जहां ईंटों के मकान बने थे आग रुकी तथा उसे बुझाने का प्रयास किया जा सका। व्यापारियों ने इस अवसर का उपयोग ईंटों के मकान बनाने में किया। इस बार उनके मकानों तथा सड़कों का सुन्दर होने की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक सम्बन्ध था। बहुत सी प्राचीन इमारतों को गिरा कर उनके स्थान पर नई इमारतों को बनवाने की बाध्यता के कारण नगर की सफाई में भी सुधार हो गया।

इंगलैंड में पुनः ताउन नहीं फैला। इसका अंशतः कारण था : ईंटों की इमारतों में वृद्धि, दरवाजों और खिड़कियों से खर-फूस और कपड़े की लटकती हुई चटाइयों के स्थान पर दरियों और चोखटों का प्रयोग, क्योंकि इससे पिस्सुओं और पिस्सुओं वाले चूहों को छिपने का स्थान ही नहीं मिलता था। किन्तु यह सम्भव हो सकता है कि ताउन की समाप्ति में किसी मानव प्रयास का स्थान न रहा तो प्रत्युत् पशुजगत में एक अदृश्य क्रान्ति इसके लिए उत्तरदायी हो। इस समय तक मध्ययुगीन काले चूहों का उन्मूलन कर उनका स्थान भूरे चूहों ने ले लिया था। जिस सीमा तक काले चूहों पर पिस्सू पलते थे उतना भूरे चूहों पर नहीं। (कैम्ब्रिज हिस्टॉरिकल जर्नल, १९४१ में साल्टमार्श का लेख)।

लन्दन नगर का पुनर्निर्माण ऐसी गति से हुआ जिससे संसार चकित हो गया।

"सर जॉन रेरेसबी ने लिखा है कि आग के प्रभाव इतने आश्चर्यजनक नहीं थे जितना की इस नगर का पुनः निर्माण। राजा और पार्लियामेन्ट की देखरेख और स्वयं नगर कि विशाल धन तथा सम्पन्नता के कारण सारा नगर ईंटों से बड़ी शान-शौकत के साथ चार-पांच वर्ष में पुनः बनकर खड़ा हो गया। पहले नगर का अधिकांश भाग तख्तों और चूने से बना था।"

ताउन से लन्दन की जनसंख्या का पांचवा भाग नष्ट हो गया था। यह क्षति भी धीरे धीरे अदृश्य रूप से पूरी हो गई क्योंकि इंगलैंड के सभी शायरों से तथा यूरोप के आधे देशों से आव्रजक आकर यहां बस गए थे।

नगर का मध्ययुगीन और ट्यूडरकालीन-भाग आग की लपटों में जलकर नष्ट हो गया था। केवल सड़कों और गलियों की भूमि योजना के चिन्ह शेष बचे थे। संसार के सबसे विशाल नगर की निर्माण योजना सबसे रद्दी थी और शायद मनुष्य की दृष्टि रेन के सेंट पाल जैसी इमारत पर अभी तक नहीं पड़ी थी।[१]

पुराने गोथिक कैथेड्राल को मिलाकर ८९ गिरजाघर जलकर भस्म हो गए थे। यदि उन्हें नष्ट ही हो जाना था तो इससे अच्छा कोई दूसरा समय नहीं हो सकता था। क्रिस्टोफर रेन की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। वह नगर और राज दरबार में विख्यात हो चला था। नवीन लन्दन की धार्मिक इमारतों पर उसकी प्रतिभा की स्पष्ट छाप थी। आज भी (१९३९) जिन सड़कों के पुनर्निर्माण के बावजूद जहां उसके बनाए हुए गिरजे खड़े हैं वे उस युग की चिर प्रतिष्ठा गरिमा एवं मध्ययुग के गिरजों के स्थान पर नये गिरजों के निर्माता व्यक्ति की गरिमा के साक्षी हैं।

एक महान् राष्ट्र की मर्यादा के अनुकूल सामुदायिक प्रयास से सेंट पाल गिरजे का पुनर्निर्माण किया गया। संसद ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लन्दन के बन्दरगाह में आने वाले कोयले पर कर लगा दिया। यह महान् कार्य साल व साल दृढ़ता से चलता रहा और इसमें पोप-षड्यन्त्र, क्रान्ति एवं मार्लबारो के युद्धों के कारण उत्पन्न आवेश से कोई अवरोध नहीं आया। रानी ऐन्नी के उच्च गौरव काल में, अपने निर्माता की मृत्यु के बारह वर्ष पहले, यह कार्य सम्पूर्ण हो गया था।

पोर्टलैण्ड के विचित्र प्रायद्वीप की खानों से सीधे लाए गए सफेद पत्थर से सेंट पाल के गिरजे का निर्माण किया गया था। यद्यपि लोग बहुत पहले से इन खानों से परिचित थे किन्तु स्टुअर्ट काल में ही पोर्टलैंड पत्थर का व्यापक स्तर पर उपयोग होना प्रारम्भ हुआ था।- रेन के अतिविशाल कार्य को आवश्यकताओं ने पोर्टलैंड द्वीप तथा उसके निवासियों को नया जीवन दिया। विशाल पाषाण-खानें खुल गई थीं और सड़कें तथा पुल बन गए थे। "एजेन्टों के वेतनों, घाट-समूहों तथा मार्गों की मरम्मतों, पुलों तथा क्रेनों और उनके निरीक्षण तथा संचालन, पाषाण खानों के कार्य के नियमन तथा द्वीप निवासियों से मामले तय करने के लिए, लन्दन से भेजे गए अनेक व्यक्तियों के खर्चों पर विशाल धनराशि व्यय की गई थी।" इकनामिक हिस्टारिकल रिव्यू, नवम्बर, १९३८)।

---

१ यह वाक्य भयानक अग्निकांड के पूर्व लिखा गया था।

इस काल के पश्चात् इंगलैंड के स्थापत्य इतिहास में पोर्टलैंड पत्थर का महत्वपूर्ण स्थान हो गया। विशेषकर यह रेन तथा गिब्ज़ के महान् कार्य की शीतल भव्यता से सम्बन्धित है वैसे ही जैसे उस काल की साधारण निवास की इमारतों में उष्मता युक्त लाल ईंटें सुविधाजनक ग्राहस्थ्य सरलता के अनुकूल थीं।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तकें :

इस अध्याय की टिप्पणियों में उल्लिखित पुस्तकों के अतिरिक्त देखिए—पेपीज़ एवं इवेलिन की **डायरियां**; आर्थर ब्रियांट, **लाइफ ऑफ़ पेपीज़**; डेविड ऑग, **इंगलैंड इन दि रेन ऑफ़ चार्ल्स सेकण्ड** (१९३४) अध्याय २, ३; वेसिल विली : **दि सेवेन्टींथ सेन्चुरी बैकग्राउण्ड** (१९३४)।

अध्याय १०

डिफो कालीन इंगलैंड[1]

रानी ऐन्नी, १७०२-१७१४—जार्ज प्रथम, १७१४-१७२७—मार्लबारो के युद्ध, १७०२-१७१२—स्काटलैंड के साथ संसदीय एवं आर्थिक एकता, १७०७

जब रानी ऐन्नी के काल के इंगलैंड और उसके दैनिक जीवन के सर्वेक्षण की आवश्यकता होती है तो हमें डैनियल डिफो का स्मरण हो जाता है जो घोड़े पर सवार होकर अकेला देहाती क्षेत्रों में निरीक्षण करता घूमता था। पर्यवेक्षण के लिए ऐसे भ्रमणों पर ब्रिटेन की यात्रा करना उसका एक कार्य था। दिन की यात्रा समाप्त कर रात्रि में किसी बाजार के कस्बे में वह अपने स्वामी राबर्ट हार्ले के बारे में स्थानीय राय पर अपना प्रतिवेदन लिखा करता था। उसका स्वामी उसी के समान एक रहस्यप्रिय व्यक्ति था जो गोपनीय ढंग से एकत्र सही सूचना का प्रेमी था। रविवार को वह 'डिसेन्टर्स चैपल' (असहमतिवादियों के गिरजाघर) में जाता था और वहां अन्य पूजा करने वालों का पर्यवेक्षण करता तथा उनके कार्यकलापों को जानने को उत्सुक रहता था। एक व्यापारी होने के अतिरिक्त वह नानकन्फार्मिस्ट (प्रचलित धर्म-विरोधी) भी था। परन्तु वास्तव में वह एक कठोर नैतिक भावना से युक्त नहीं था क्योंकि वह सभी लोगों के लिए सभी कुछ हो सकता था। वह फैशनेबुल प्रदर्शन की अपेक्षा सादगी तथा ठोस कार्य की तरजीह देने वाला शुद्धिवादी तो नहीं ही कहा जा सकता था। उसके सौ वर्ष पश्चात् इंगलैंड में घूमने और उसके बारे में लिखने वाले कोबट की भांति वह एक यथार्थवादी था और जनसाधारण में लोकप्रिय था, किन्तु अपने उत्तराधिकारी के विपरीत वह तत्कालीन सत्ता के विरुद्ध क्रोध से अंधा नहीं रहता था। ऐन्नी का काल संतोष के एक लम्बे युग की पूर्वसूचना थी और स्विफ्ट से भी अधिक डिफो अपने समय का विशिष्ट व्यक्ति था। जहां एक ओर प्रतिष्ठित भूपति कोबेट

---

[1] केवल कुछ वर्ष पूर्व मैंने रानी ऐन्नी के शासनकाल में इंगलैंड के सामाजिक जीवन पर कुछ अध्याय उसके शासनकाल के इतिहास में लिखे थे जो प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशक ने ही प्रकाशित किये थे। चूंकि अब मैं उनमें कोई सुधार नहीं कर सकता, अतः सामग्री प्रस्तुत पुस्तक में सम्मिलित है।

ग्रामीणता से ओतप्रोत अतीत के लिए बहुत दु:खी होता था वहां डिफो व्यापारिक समृद्धि के युग के आगमन पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता था। पहले उसने विवरणात्मक लेखन की कला में निपुणता प्राप्त की। उसके उपन्यास, उदाहरणत: राबिन्सन क्रूसो और मॉल फ्लेंडर्स भी दैनिक जीवन के काल्पनिक विवरण हैं, चाहे फिर उसका सम्बन्ध एक रेगिस्तानी द्वीप से हो अथवा चोरों के अड्डे से। इसलिए इस व्यक्ति ने ऐन्नी के शासन काल के इंगलैंड का जो भी विवरण दिया है वह वस्तुत: इतिहासकार के लिए एक विधि है। इसका कारण यह है कि डिफो प्रथम व्यक्ति था जिसने प्राचीन संसार को आधुनिक पैनी नजर से देखा था। उसके विवरण का अन्य साक्ष्यों की विशाल मात्रा से नियंत्रण और विस्तार हो सकता है। किन्तु हमारे विचार और दृष्टि में इसका केन्द्रीय स्थान है।[1]

डिफो ने साधारण से साधारण बातों का ब्यौरा शामिल कर इंगलैंड का जो चित्र प्रस्तुत किया है उससे वहां के एक स्वस्थ राष्ट्रीय जीवन की हमारी धारणा बनती है जिसमें कि नगर और देहात, कृषि, उद्योग एवं व्यापार एक संगठित अर्थ प्रणाली के सामंजस्यपूर्ण भाग थे। सरकार के प्रशासनिक तंत्र का बहुत भाग, विशेषकर निर्धन तथा ह्रासग्रस्त बौरों के कस्बे जिन्हें डिफो हेय समझता था, केवल पुरातन काठ-कबाड़ था जिसे बड़ी कठोरता से संरक्षित किया गया था किन्तु आने वाले कई वर्षों तक सुधार के लिए कोई मांग नहीं उठी क्योंकि उस समय के इंगलैंड की विशिष्टता स्वतंत्रता का सिद्धान्त था जिसके कारण व्यक्तिगत व्यापार की खूब उन्नति हुई और पुराने वन में अनेक नये अंकुर फूटे। आर्थिक क्षेत्र में नवीन कल्पना और क्रिया की उस सहज प्रवृति को, जोकि इस द्वीप के स्वभाव का अंग थी, उस समय के अधिकारी लोग नहीं दबा सके।

इस प्रकार की व्यवस्था से युक्त इंगलैंड समृद्ध था और युद्ध के समय में भी संतुष्ट रहता था जो अंशत: ऐन्नी के शासनकाल के पूर्वार्द्ध में अच्छी फसलों और सस्ते खाद्य पदार्थों के कारण था। १७०२ से लेकर १७१२ के अन्तिम तीन वर्षों में, जब फ्रांस के साथ युद्ध छिड़ा रहा, युद्ध की दशाओं के कारण संकट और असंतोष के चिन्ह प्रगट होते थे। अन्यथा कृषि, उद्योग और व्यापार में निरन्तर वृद्धि होती रही। समाज अचेतन अवस्था में ही औद्योगिक क्रान्ति की ओर बढ़ता गया। जो आगे के सौ वर्षों

---

[1] जार्ज प्रथम के शासनकाल में उसने अपनी कृति **टूअर थ्रू ग्रेट ब्रिटेन** में प्रकाशित की थी। किन्तु जिन भ्रमणों पर उसके प्रेक्षण आधारित थे वे अधिकांशतया रानी ऐन्नी के शासनकाल के प्रारम्भिक और मध्य के वर्षों में किये गये थे। उपरोक्त कृति के प्रथम संस्करण (१७२४-२७) को पुन: श्री जी. डी. एच. कौल के सम्पादन में १९२७ में प्रकाशित किया गया।

में डिफो द्वारा वर्णित-दशाओं से विकसित हुई। समुद्री व्यापार, नदियों में यातायात, विशेषकर कोयले का, भेड़ों का पालना और कपड़ा व्यापार आढ़तियों द्वारा कृषि की उपजों का राष्ट्रीय क्रय विक्रय—इन बातों पर डिफो ने बल दिया था। इन्हीं बातों के कारण बहुत से भूस्वामी भू—कर देने योग्य हो पाये थे जो मार्लबारो युद्धों का प्रधान अवलम्ब था। वे खिन्न रहते हुए भी कर तब तक देते रहे जब तक युद्ध में विजय नहीं हो गई जब उन्होंने अपना कार्य संभालने तथा शान्ति स्थापित करने के लिए व्हिग्ज़ को भेजा।

यह सत्य है कि अक्टूबर मास की शराब पीकर ग्रामीण क्षेत्रपति धनिकों तथा व्यापारियों को आर्थिक शोषक, (परजीवी) युद्धकाल में मुनाफाखोर और विरोधी (विमति-वादी) कहकर कोसा करते थे। वे उनके राजनैतिक जीवन में संभाव्य प्रवेश से भी खीझते थे क्योंकि उसे वे केवल भूस्वामियों अथवा क्षेत्रपतियों का उचित अधिकार मानते थे। किन्तु आर्थिक दृष्टि से इन अवांछित लोगों के कार्यकलापों से बहुत से क्षेत्रपतियों की मालगुजारी दूनी हो गई थी और डिफो को भी अंशतः इस बात का ज्ञान था। यद्यपि पतन के काल के किसी भी उल्लेख में सहिष्णुता के अधिनियम (दि ऐक्ट ऑफ़ टालरेशन) पर खेद प्रकट किया जाता है, फिर भी इस कानून से ही देश में धन और शान्ति आई।

ऐन्नी और जार्ज प्रथम के शासनकाल में किसान और दस्तकार की पुरानी जीवन-विधि अब भी कायम थी किन्तु अब यह विलक्षण रूप से अनुकूल परिस्थितियों में थी। व्यापारी और अन्य मध्यवर्तियों (आढ़तियों) की साहसिकता ने किसानों तथा दस्तकारों के श्रम से उत्पादित वस्तुओं के लिये नये बाजार खोज लिये थे। इससे उनकी मध्ययुगीन निर्धनता तो दूर हो गई थी परन्तु उनके सरल देहाती तरीके अब भी समाप्त नहीं हुए थे। व्यापार से कमाये हुए धन का अधिकांश भाग उन्नत जमींदारों द्वारा खेती में लगाया जाता था जिन्होंने व्यापार में धन लगाकर नया धन कमाया अथवा अपने पुराने धन में वृद्धि कर ली थी। कस्बों तथा देहातों की इस अन्तःक्रिया से जो पुरानी सामाजिक व्यवस्था पर अभी चोट नहीं करती थी, ऐन्नी को इंगलैंड में एक आधारभूत सामंजस्य तथा शक्ति उत्पन्न हुई। किन्तु सतह पर मतान्तरों और गुटों से उत्पन्न भयंकर विभ्रान्तकारी विरोध व्याप्त थे।

जबकि धर्म राष्ट्र में भेदभाव उत्पन्न कर रहा था व्यापार उसमें एकता ला रहा था। अतः व्यापार की सापेक्षिक महत्ता बढ़ रही थी और खाता-पुस्तक (बही) अब बाईबल से होड़ ले रही थी। साठ वर्ष पूर्व शुद्धिवादी धर्म का प्रतीक तलवार का प्रेमी क्रामवेल था और तीस वर्ष पहले जेल में भजन गाने वाला बुनयान, किन्तु अब शुद्धिवाद का प्रतीक व्यापारी पत्र-कार डिफो था। क्वेकर भी अब सार्वजनिक स्थानों पर गिरजाघरों के बारे में भविष्यवाणी करने की अपेक्षा एक मितव्ययी व्यापारी हो गया था

जो शान्त रहने का प्रयास करता था। परन्तु पुरानी आदत की वजह से शुद्धिवादी तथा क्वेकर आम बोलचाल में अब भी 'धर्मांध' कहे जाते थे। किन्तु यदि बाहर भी धर्मांध लोग थे तो उनमें से एक निश्चित ही न्यायाधीश श्रेडगेट था जो घोड़े पर सवार होकर लुटरवर्थ की एक सभा में गया और वहां उपदेशक को झूठा बताया। फिर भी उच्च पादरियों का क्रोध भरा उत्साह निरन्तर देश भक्ति सम्बन्धी और आर्थिक विचारों के कारण दब जाता था जो टॉरी लोगों के मस्तिष्क में बहुत प्रबल रूप से कार्य करते थे जिनका अगुआ हार्ले था और जिसके गुप्त नौकर डिफो था इस प्रकार से इस समय यह द्वीप (इंगलैंड) ऐसी स्थिति में था कि यह भाग्य का साथ तथा अच्छा नेतृत्व मिलने पर युद्ध काल में पर्याप्त एकता, धन तथा शक्ति का प्रदर्शन कर सकता था और फ्रांस के शक्तिशाली लुई को घुटने टेकने पर विवश कर सकता था। लुई अभि-जातों तथा निर्धन कृषकों का निर्विवाद स्वामी था और उसने विमातिवादियों (नोन-कन्फोर्मिस्ट्स) को नेन्टेज के इडिक्ट्स (विशिष्ट राजघोषणाओं) को समाप्त कर सदैव के लिए कुचल दिया था।

ब्रिटेन में कृषि का इतना सुधार हो गया था कि अब मध्यकाल की अपेक्षा गेहूं अधिक पैदा होता था। सम्पूर्ण जनसंख्या के भोजन का ३८ प्रतिशत भाग गेहूं होता था; राई का द्वितीय और जई का तीसरा अथवा चौथा स्थान होता था। अतः कीमतों का निर्धारण गेहूं अथवा राई के आधार पर होता था।

रोटी बनाने में गेहूं का जो अनुपात था उसकी तुलना में समस्त अनाजों की उपज में गेहूं का बहुत कम अनुपात था। सम्पूर्ण द्वीप भर में शराब के लिए सामग्री बनाने के लिए जौ की विशाल मात्रा उगाई जाती थी। उदाहरण के लिए इली के दक्षिण में कैम्ब्रिजशायर पूर्णतया अनाज उत्पादक क्षेत्र था और जैसा डिफो ने लिखा है "उस अनाज का ५/६ भाग जौ होता था जो साधारणतया जौ की शराब बनाने वाले वेयर, रॉयस्टन तथा अन्य बड़े नगरों में बेचा जाता था।" पश्चिम के सेब की शराब वाले जिलों को छोड़कर पुराने काल में अंग्रेज निवासियों, स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों का प्रत्येक भोजन के साथ सर्वोत्तम पेय जौ की शराब थी। इस समय इसकी प्रतियोगिता में शक्तिशाली शराबों तथा चाय और काफी का प्रयोग प्रारंभ हो गया था। जौ की शराब अभी भी स्त्रियों का पेय था। १७०५ में श्रीमती कार्नार्विन ने कुमारी कोक के विषय में कहा था कि चूंकि वह सारी गर्मी बासी जौ की शराब पीती रही थी इसलिए वह बिल्कुल बेहोश रहती थी और उसकी आवाज धीमी तथा अर्न्तमुखी रहती थी। अब तक बच्चे भी थोड़ी मात्रा में जौ की शराब पीते थे और बहुधा गन्दे पानी के स्थान पर इसे पीना उनके लिए लाभदायक भी था।

लगभग प्रत्येक स्थान पर जौ की शराब (बार्ली) प्रधान पेय था किन्तु कुछ जिलों में जो यह प्रधान भोजन भी था। वेल्श की पहाड़ियों के छोटे कृषक उत्तम जौ की रोटियां खाते थे। उत्तरी क्षेत्रों की कृषक जनता जई और राई के विभिन्न प्रकार के

खाद्य पदार्थ बनाकर खाती थी। डा० जॉन्सन ने बहुत वर्षों पश्चात् लिखा था कि स्काटलैंड में लोगों का प्रधान भोजन जई था। इंगलैंड के केन्द्रीय जिलों में राई और जौ की उतनी ही प्रतिष्ठा थी जितनी गेहूं की। केवल दक्षिण-पूर्व के शुष्क जलवायु वाले जिलों में गेहूं सर्वप्रधान था।

ऐन्नी के राज में विभिन्न जिलों में कृषि उत्पादनों का आदान-प्रदान होता था, विशेष रूप से जहां नदियों के मार्ग से यातायात हो सकता था। व्यापक रूप से यही कारण था कि इस अवधि की विशेषता नदियों को गहरा करना और जलद्वार बनाना था। इसके दो पीढ़ियों पश्चात् ड्यूक ऑफ़ ब्रिजवाटर का कृत्रिम नहरों का निर्माण युग आया।[1] आक्सफोर्ड से लेकर नीचे तक टेम्स नदी तथा उसकी सहायक वे, ली तथा मेडवे सभी में सक्रिय और भारी यातायात होता था। खाद्यपदार्थ, लकड़ी तथा पेय पदार्थ लन्दन को जाते थे और वहां से टिन साइड का कोयला तथा विदेशों से आयात किया गया माल नदी के रास्ते ऊपरी भाग में जाता था। एक विशाल कृषि जिले की प्रमुख बाजारें ऐबिंगडन और रीडिंग में लगती थीं जो उसकी उपजों को जलमार्ग से राजधानी को भेजती थीं। ससेक्स और हैम्पशायर के सागरतट अपना अनाज तथा चेशायर तथा अन्य पश्चिमी काउण्टियां अपना पनीर समुद्री मार्ग से लन्दन भेजती थीं जिसमें उन्हें डंकिर्क के निजी फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा दिया गया दंड भी भुगतना पड़ता था। वर्ष के कई भागों में सड़कें इतनी कमजोर होती थीं कि उन पर माल के डिब्बे नहीं चल सकते थे किन्तु वर्ष की अधिकांश ऋतुओं में उत्तरी तथा बीच के शायरों से भेड़ें तथा पशु, हंस और पातालमयूर (एक सुन्दर पर वाला खाया जाने वाला पक्षी) राजधानी की ओर हांक लाये जाते थे। सड़कों के किनारे उगी हुई घास पर चलते हुए वे उसे चरते जाते थे। १७०७ के संघ निर्माण के पहले से ही स्कॉटलैंड से प्रतिवर्ष ३०,००० पशु इंगलैंड में आते थे। वेल्स के पशुपालकों की विचित्र बोली लन्दन के निकट सड़कों पर सुनाई पड़ती थी। चार्ल्स द्वितीय द्वारा घोषित एक कानून से केवल आइरलैंड के पशु व्यापार का अन्त हो गया था। अंग्रेज पशुपालकों की ईर्ष्या के कारण इसकी बलि हुई थी।

पहले ही इंगलैंड और वेल्स को मिलाकर योरप में आन्तरिक व्यापार के लिए

---

[1] ऐन्नी के शासनकाल के **स्टेट्यूट्स** और **कामन्स जर्नल्स** तथा स्थानीय इतिहासों में इस बात का पर्याप्त साक्ष्य मिलता है। इनमें से एक उदाहरण को उद्धृत किया जा सकता है; १६९९ में विसबैच के निवासियों ने लोकसभा (हाउस ऑफ़ कामन्स) को एक याचना-पत्र दिया था ताकि लार्क नदी में नौकाएं और जहाज चलाएं जा सके, क्योंकि सड़कों का प्रयोग अव्यवहारिक था। और उनके जिले में, जहां केवल मक्खन, पनीर और ओट पैदा होता था, गेहूं, राई और माल्ट सफोक से मंगाया जा सके। इस काल में जिन नदियों को गहरा किया गया और उनके पानी को उचित रूप से रोकने का काम किया गया वे थीं ब्रिस्टल ऐवन, यार्कशायर डरवेन्ट, स्टूर और काम जो क्लेहाइथ घाट से कैंब्रिज में स्थित क्वीन्स मिल के बीच में बहती थी।

एक विशाल क्षेत्र हो जाता था जिसमें स्कॉटलैंड को ऐन्नी के शासन के बीच में मिला दिया। डिफो ने लिखा था, 'इंगलैंड में हमारा यह बड़ा सौभाग्य है कि इटली तथा योरप के अन्य देशों की भांति अनाज पर आज तक कर नहीं लगा है।'' वेनिस के चतुर राजदूत, मोसोनिगो ने हमारे द्वीप में अपने वास के अन्त में १७०६ में अपने शासकों को सूचित किया था कि आन्तरिक करों से मुक्ति इंगलैंड में उद्योग की प्रगति में संसार के किसी अन्य क्षेत्र की तुलना में एक कारण था लन्दन तथा प्रत्येक प्रान्तीय नगर में दैनिक आवश्यकता की चीजें स्वतंत्र रूप से बिकती थी और उन पर नगर के द्वारों पर किसी प्रकार की चुंगी नहीं लगती थी। इस स्वतंत्रता का लाभ उठाकर सारे द्वीप में कृषि के अनाज के व्यापारी तथा मध्यस्थ फैले हुए थे। वे खेतों में उगी हुई फसलों अथवा खलिहान में पड़ी कटी फसलों को सट्टे पर खरीद लेते थे। इस काम के लिए वे बहुत दूर दूर तक देहातों में, पठारी प्रदेशों की खतरनाक उपत्यकाओं में भी, जैकब के अनुयाइयों एवं दुधारी तलवारों की परवाह किए बिना इंगलैंड के पार्कों में पलने वाले पशुओं की तलाश में चले जाते थे। इससे सभी जगह दूरस्थ छोटे छोटे गांवों तथा बस्तियों की फसलों के लिए भी नई बाजारों की स्थापना से कृषि-प्रगति के आन्दोलन की उन्नति हुई।

उद्यम तथा सुधार के इस शासनकाल में निर्यातों पर राज-सहायता के कारण इंगलैंड से अन्न की विशाल मात्रा का निर्यात समुद्र के पार के देशों को होता था। ऐन्नी के शासनकाल के मध्य में ग्लूसेस्टरशायर के कोयले के व्यापार के कर्मचारियों ने अनाज की ऊंची कीमतों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अनाज की ऊंची कीमतों का कारण ब्रिस्टल के व्यापारियों द्वारा स्थानीय उत्पादन की बड़ी मात्रा का विदेशों को निर्यात करना था। ट्रेण्ट के उत्तर में भी भूपतियों के विचार में विदेशों में अनाज की बिक्री का उनके तथा उनके किसानों के भाग्य (कमाई) में एक महत्वपूर्ण स्थान था।[1]

तथापि, कृषि तथा वितरण-प्रणाली के हर्षयुक्त चित्र से हमें यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि अठारहवीं शताब्दी के अन्त में इंगलैंड की जो स्थिति कृषि तथा यातायात के

जुलाई १७०९ में राबर्ट मोलेसवर्थ ने डोनकास्टर के निकट एर्डलिंग्टन से अपनी पत्नी को लिखा था : 'यदि ईश्वर की दया से अच्छी फसल का मौसम आ गया तो राज्य भर में अनाज का विशाल भंडार बनाया जा सकेगा, और फिर भी विदेशों की मांगे इतनी अधिक है कि आने वाले कई वर्षों तक इस अन्न की अच्छी कीमत मिल सकेगी। इससे हमारे किसान धनी होंगे।' और अगले साल उसने लिखा : 'अनाज की कीमतें निश्चित बढ़नी चाहिए और वह भी बहुत अचानक रूप से हमें डच लोगों को बाल्टिक प्रदेश में व्यापार रोक देने को विवश कर देंगी क्योंकि उस क्षेत्र में ताउन फैल गया है और तब हमें डच लोगों को अपने यहां से अनाज भेजना पड़ेगा।'

सुधार में थी वह शताब्दी के प्रारंभ में ही उत्पन्न हो गई थी। नदियों में व्यस्त यातायात सड़कों की खराब स्थिति का परिचायक था। इंगलैंड के संभवतः सर्वोत्तम अनाज-क्षेत्र—मध्य क्षेत्र तथा उत्तरी पूर्वी ऐंग्लिया अभी भी अधिकांशतः घिरे हुए नहीं थे। उन क्षेत्रों में विशाल, बाड़ा रहित ग्रामीण खेतों की जुताई मध्ययुगीन ढंग से होती थी जिन्हें प्रलयदिवस के नियोजक तो पसन्द करते किन्तु आर्थर यंग जैसों की आधुनिक बुद्धि को तो निश्चित ही उनसे बड़ा आघात पहुंचता।

इन ग्रामीण खेतों पर उन्नतिशील जमींदार अथवा किसान का अभिक्रम और उद्यमशीलता प्रतिबाधित हो जाते थे, क्योंकि इनमें व्यक्तिगत कृषकों की बिखरी हुई पट्टियों की बुवाई-जोताई आदि सम्पूर्ण समुदाय द्वारा स्वीकृत योजना के अनुसार ही करनी पड़ती थी। कोई भी व्यक्ति अपनी बाड़ा रहित खेत की पट्टियों पर शलजम अथवा कृत्रिम घासें को लाभकारी ढंग से नहीं उगा सकता था। अनाज कटते ही सम्पूर्ण खेत गांव के पशुओं के लिए चरागाह के रूप में खोल दिया जाता था। ये पशु व्यक्तिगत किसानों की फसलों को खा जाया करते थे और किसान की कोई सुनने वाला नहीं था। खुला खेत एक समरूप योजना के आधार पर जोता-बोया जाता था। उदाहरण के लिए गॉड-मैनचेस्टर जैसे एक छोटे से काउण्टी में एक पुरानी प्रथा के अनुसार सभी कृषक कोर्ट-हाल में एकत्र होते थे और निर्णय करते थे कि शुक्रवार २१ मार्च १७०० से पूर्व कोई भी किसान जौ नहीं बोयेगा। केवल उसी दिन बुवाई शुरू होती थी।

जिन खेतों में नया बाड़ा लगा था और जिनकी संख्या लगातार बढ़ती जाती थी और जो पुराने बाड़ों वाले दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तरी इंगलैंड में आते थे, व्यक्तिगत किसान अधिक स्वतंत्र निर्णय ले सकते थे अतः अधिक प्रगति संभव थी परन्तु ऐसा अवश्यंभावी नहीं था। किन्तु जिन जिलों में बाड़ों का सर्वाधिक प्रचलन था वे द्वीप के औसतन कम उपजाऊ भागों में थे और उनकी जलवायु सबसे खराब थी। यह सत्य है कि केन्ट की ऊंची खेती, पश्चिमी काउण्टी के बगीचे तथा फलों के बगीचे ऐसे क्षेत्र थे जहां प्रारंभ से ही बाड़ाबन्दी थी किन्तु पश्चिम और उत्तर के जलवायु प्रताड़ित बंजर-भूमि की कृषियोग्य पट्टियां भी बाड़ों से युक्त थीं। मध्य मैदानी भागों के सर्वोत्तम अन्य उत्पादक क्षेत्रों में अभी भी बाड़ों का प्रचलन नहीं था।

क्योंकि अधिकांश भेड़ें और पशु ठूंठी वाले खेतों, झाड़ों तथा सामान्य भूमि पर चरते थे और जाड़े की ऋतु के लिए जड़ों तथा कृत्रिम घासें उपलब्ध नहीं होती थीं इसलिए वे दयनीय रूप से आकार में छोटे और पतले होते थे। १७९५ के साधारण पशुओं तथा भेड़ों की तुलना में १७१० में स्मिथफील्ड बाजार में उनका वजन आधा होता था। इस शताब्दी के प्रारंभ में जाड़े की ऋतु में पशुओं को जीवित रखना इतना कठिन हो जाता था कि गर्मी की ऋतु की घास समाप्त होते ही बच्चे देने वाले पशुओं को छोड़कर शेष सभी को मारा डाला जाता था और मांस को नमक लगाकर रख

लिया जाता था, और वसंत ऋतु तक जिन्दा पशुओं को थोड़े भोजन पर रखा जाता था। १७०३ में जब नमक की कीमतें बढ़ी तो हाउस ऑफ़ कॉमन्स (लोकसभा) में इस आधार पर आवेदन प्रस्तुत किया गया कि कीमतों की उपरोक्त वृद्धि निर्धन लोगों के प्रति हानिकर कदम है क्योंकि इन लोगों का अधिकांश भोजन नमक लगाकर सुरक्षित किए गए खाद्य पदार्थ होते हैं।

वह समय बहुत देर में आया जब लार्ड टाउन्सहेण्ड की शलजम की खेती होती थी अथवा कोक ऑफ़ नारफोक की भेड़ें तथा पशु स्वस्थ थे। परन्तु फिर भी विल्टशायर तथा काट्सवोल्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में, जहां पश्चिमी ऊनी कपड़ा निर्माताओं के लिए भेड़ें पाली जाती थीं, आश्चर्यजनक दृश्य मिलते थे। मनोरम वृक्षहीन खुले स्थानों पर, डोरकेस्टर के ६ मील के व्यास में डिफो को ज्ञात हुआ था कि ५ लाख से अधिक भेड़ें चरा करती थीं। उसने लिखा है कि सैलिसबरी के मैदान, डोरसेट की खुली नीची भूमि का प्रदेश भेड़ों के झुण्डों के रात्रि में ठहरने से इतना समृद्ध हो रहा था कि खड़िया मिट्टी के मैदान, जो अब तक केवल चरागाह योग्य माने जाते थे, शीघ्रता से खेती योग्य बनते जा रहे थे।

ट्यूडर के काल से और विशेषकर पुनःस्थापन के बाद से कृषि की उन्नत पद्धतियों पर मुद्रणालयों से नई नई पुस्तकें प्रकाशित हो रही थीं। रॉयल सोसायटी के क्षेत्रों से प्रारंभ होकर वैज्ञानिक अन्वेषण की प्रवृत्ति साधारण जीवन में फैलती जा रही थी। उससे कृषक को निरन्तर प्रेरणा मिलती थी किन्तु बहुधा वह व्यवहारिक कृषक के लिए कष्टदायी पहेली भी साबित होती थी। इसका कारण यह था कि विशारद् तथा आधुनिकतावादी बहुत कम एक दूसरे से सहमत होते थे जेथ्रो टुल एक महान उन्नतिशील व्यक्ति था। ऐन्नी के शासनकाल में उसने अपनी खेती में 'ड्रिल' तथा घोड़े से चलने वाले हल का सर्वप्रथम प्रयोग किया। बाद के अनुभव से यह स्पष्ट हो गया था कि वह स्वयं कई बातों से बिल्कुल गलती पर था। किन्तु जैसे ही नई पद्धतियों की उपयोगिता सिद्ध हो जाती थी उन्हें अपनाने को लोग उत्सुक रहते थे। विशेषकर जहां घिरी हुई भूमि में परिवर्तन करने की स्वतंत्रता थी।

कृषि में उन्नति का विचार व्याप्त हो रहा था। सामान्य भूमियों तथा झाड़ से युक्त भूमियों को बाड़ों से घेरने का न केवल अधिक चलन हो गया था जैसाकि शताब्दियों से होता आया था। प्रत्युत् आधुनिक सिद्धान्तकार राष्ट्रकुल के प्रति। इसे एक कर्त्तव्य कहकर प्रचारित करने लगे थे। किन्तु जब ऐन्नी शासनारूढ़ हुई तो कृषि संबंधी लेखक सामान्य भूमियों को अकर्मण्य और काम चोर लोगों के स्थल कहकर उनकी भर्त्सना करते थे। ऐसे लोगों की भेड़ें 'निर्बल, जीर्ण तथा क्षय से विसाक्त' होती थीं तथा झाडों पर पले हुए उनके पशु भूख से मरते हुए लोमड़ी से पेट वाले नाटे बैल-गाय थे जो न दूध दे सकते थे और न हल में चल सकते थे। सामान्य भूमि पर अधिकारों के

सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित एक शाश्वत (स्थायी) वादविवाद का यह एक अन्य पहलू था। इसके सौ वर्ष पश्चात् पराजित सामान्यवादियों का समर्थन कोवेट ने किया था। उस विवाद के औचित्य के संबंध में हमारे समय के इतिहासकारों में भी मतभेद है। ऐन्नी के शासनकाल में पार्लियामेंट (संसद) के कानून के अधीन अधिक जमीनों को वाड़ों से नहीं घेरा गया था किन्तु सामान्य कानून के अन्तर्गत सहमति अथवा अन्य प्रकार से वाड़ों के निर्माण में उन्नति हो रही थी।[1]

डिफो का युग अंग्रेज मौरूसी (पूर्ण स्वामित्व युक्त) किसान के लिए समृद्धि का काल था तथा आसामी कृषकों के बढ़ते हुए भाग्य के लिए, बुरा समय न था। देश की जनसंख्या का आठवां भाग मौरूसी किसान तथा उनके पारिवारिक सदस्य थे और स्थिर आसामी कृषकों की संख्या इससे कुछ कम थी। क्रान्ति के समय की गई गणना के अनुसार मौरूसी किसान औसतन एक आसामी किसान की तुलना में अधिक धनी था। इसके सौ वर्ष पश्चात् यह स्थिति संभवतया उलटी हो गई थी क्योंकि अब मौरूसी किसान समाप्त हो गए थे। जार्जियन युग में कृषि सुधारों के कारण आसामी कृषक को अपने ज़मींदार द्वारा भूमि में लगाए गये प्रचुर मात्रा में पूंजी का लाभ मिल गया जबकि छोटे स्वतंत्र कृषक के पास समय के अनुसार काम चलाने के अतिरिक्त कोई वित्तीय साधन न थे। किन्तु फिर भी ऐन्नी के शासन काल में इन दो वर्गों में गहरी आर्थिक विषमताएं उभर नहीं पाई।

इन वर्गों के बीच राजनैतिक और सामाजिक अन्तर था। स्वतंत्र कृषक को संसद में मत देने का अधिकार था जिसे वह बहुधा मन चाहे ढंग से इस्तेमाल करने की स्थिति में था। आसामी कृषक को मताधिकार नहीं प्राप्त था। यदि उसे यह अधिकार होता तो वह अपने ज़मींदार की इच्छानुसार इसे प्रयोग करने को बाध्य रहता। सर रोगर डी कोवर्ली जैसे आदर्श ज़मींदार के बारे में भी एडिसन ने लिखा है कि अपने आसामियों पर उसका सम्पूर्ण पितृत्मक प्रभुत्व था।

---

[1] गर्मी की ऋतु में मार्लबारो ने अपनी पत्नी को लिखा जबकि वह यार्कशायर के एक ब्लेनहीम नामक भूपति के पास जा रहा था: 'जैसाकि मेरा अनुभव है इंगलैंड का कानून है कि प्रत्येक पूर्ण स्वत्ताधिकारी कृषक अपनी सामान्य भूमि का केवल उतना ही भाग घेर सकता है जितना कि उसके अधिकार क्षेत्र में आता है (बहुत अधिक भूमि का स्वामी इससे अधिक घेर सकता है), यदि वह सामान्य भूमि का उतना भाग उन लोगों के लिए छोड़ देता है जिन्हें उसके उपयोग का अधिकार है और इस प्रकार छोड़ी हुई भूमि पर वह फिर अपने पशुओं को चराने के लिए अधिकार जमाने का प्रयास नहीं करता। यह उदाहरण हमारे पड़ोसी हैलेबी के श्री फ्रेटवेल का है, जिसने कि मुकदमा चलने पर सर्वोच्च भूपति लार्ड कैसलटन के विरुद्ध भी ऐसा ही किया। और हमारे तथा गन्सबारो के बीच भी ऐसा ही मामला है'

परन्तु स्वतंत्र कृषक की स्वतंत्रता सघनता से संजोयी और सबलता से बनाये रखी जाती थी। ऐन्नी के शासनकाल में ग्रामीण संभ्रान्तजनों के बीच में निर्वाचन सम्बन्धी पत्र व्यवहार में हमें ऐसे वाक्य देखने को मिल जाते हैं जैसे "स्वतन्त्र कृषक दृढ़ता से यह नहीं कहते कि मतदान में वे अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखेंगे।" भूपति सभी स्थानों पर स्वतन्त्र कृषकों को अपने अधीन रखता था। सबसे अधिक उसे चिन्ता स्वतंत्र कृषकों को राजनैतिक तथा शिकार सम्बन्धी कारणों से खरीद लेने की रहती थी। ज्यों ज्यों यह शताब्दी समाप्त हो रही थी स्वतंत्र कृषक तथा छोटे संभ्रान्त जन अच्छी शर्तों पर ग्रामीण क्षेत्र छोड़कर जाने को उद्यत हो जाते थे। इस स्थिति में बड़े जमींदार तथा उसके आसामी कृषकों की बढ़ती हुई घनिष्टता से उन्हें खतरा उत्पन्न हो जाता था। छोटे स्वतंत्र कृषकों को खरीदकर विशाल एकत्र जागीरों के बनने की प्रक्रिया पुनस्स्थापन के उपरान्त शुरू हुई और अगले १०० वर्ष या अधिक समय तक चलती रही।

किन्तु स्वतंत्र कृषकों तथा आसामियों के वर्गों के बीच भेद कभी भी सम्पूर्ण नहीं हुआ क्योंकि एक मनुष्य बहुधा एक खेत पर तो आसामी था परन्तु दूसरे खेत का वह स्वयं स्वामी था।

मध्ययुगीन गांव की गन्दगी बहुत दिन पहले ही समाप्त हो गई थी—क्योंकि ग्रामीण मध्यम वर्ग सम्मानपूर्वक और सुविधापूर्ण जीवन बिताने लगे थे। ऐन्नी के शासनकाल में सर्वत्र लोग फार्म-घरों को बनाते थे अथवा उनका विस्तार कर रहे थे। परम्परा अथवा जिले में उपलब्ध सामग्री के अनुसार इन घरों के निर्माण में पत्थर, ईंटे अथवा आधी लकड़ी का प्रयोग किया जाता था। उन अनुकूल क्षेत्रों में ग्रामीण-समृद्धि के फलस्वरूप भवननिर्माण सबसे अधिक दिख रहा था। जहां वस्त्र निर्माता स्थानीय ऊन की बहुत मांग करते थे जैसा कि पन्द्रहवीं से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक काट्सवोल्ड्स के भव्य पत्थर के फार्मों में था अथवा जैसा कम्बरियन एवं वेस्टमोरलैंड के पहाड़ी निवासियों की बस्तियों में, जिनका भाग्य अभी हाल में स्थानीय कपड़ा व्यापार की उन्नति के कारण ऊँचा उठा था।

लेक डिस्ट्रिक्ट में आज के यात्रियों को परिचित सुन्दर पुराने फार्म-गृहों के अतिरिक्त उस समय वहां बहुतसी झोंपड़ियां भी थीं जो अब तक नष्ट हो चुकी हैं, जहां कि घाटी के अपेक्षाकृत निर्धन लोग कड़े तथा पुष्टांग परिवारों का पालन-पोषण करते थे। मां अपने बच्चों को घुटनों पर लिटाए हुए वस्त्र निर्माताओं के लिए सूत कातती रहती थीं। यदि ये बच्चे बड़े होते थे तो वृक्ष कटे हुए स्थानों पर जाकर भेड़ों को हांकते थे और खड़ी चट्टानों के किनारे पत्थर की विशाल दीवालें खड़ी करते थे जो कि हमारे कम परिश्रमशील युग में आश्चर्य कहे जा सकते हैं। अठारहवीं शताब्दी में ही वर्ड्सवर्थ द्वारा वर्णित जन्मभूमि के सौन्दर्य को प्रकृति एवं मनुष्य के बीच न्यायपूर्ण संतुलन प्राप्त हो सका। पहले की शताब्दियों में घाटियों में घुटन, उलझाव,

दलदल तथा रूप-हीन थीं। हमारे युग में मनुष्य मशीन की सहायता से प्रकृति के रूप को अति सफलता से नियमित कर रहा है। किन्तु ऐन्नी के शासनकाल में घाटियों में ग्रामीण रमणीयता को संक्षिप्त पूर्णत्व प्राप्त होना शुरू हो गया था जो ऊपर और आसपास के पर्वतों की भव्यता की तुलना में व्यवस्थित होते हुए भी अनुशासित नहीं थीं।

तथापि इंगलैंड के सबसे जंगली-सर्वाधिक वंजर तथा भयानक लेक डिस्ट्रिक्ट में अत्यधिक कम पर्यटक आते थे। डिफो तथा उसके समकालीनों को यही प्रतीत हुआ था। जो थोड़े अजनवी किसी कार्य अथवा उत्सुकतावश विण्डरमेयर से आगे और हार्डनाट के ऊपर ढालू पथरीले मार्ग पर घोड़े से आते थे वे लेक वैलीज (झील की घाटियों) की "अत्यधिक काली, खुरदरी और कठोर रोटी" की शिकायत करते थे। उनके अनुसार वहां के घर ऊबड़-खाबड़ पत्थर के बने हुए छोटे, दरिद्र झोंपड़े थे जो मनुष्यों की तुलना में पशुओं के रहने के लिए अधिक उचित थे। किन्तु उस समय कहीं कहीं लेस लगे चिकने घर भी होते थे तथा कभी कभी चतुराई से सेंकी हुई स्वादिष्ट जई की रोटी भी मिल जाती थी। उस समय विण्डरमेयर का एक स्वादिष्ट भोजन, चार्स-नामक मछली, बर्तनों में बन्द करके लन्दन भेजी जाती थी। यात्रियों के इन विवरणों से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इस सुखी पशुपालक क्षेत्र की समृद्धि में महान उन्नति (इसकी घाटियों की तलहटियों में पानी के निकास की सुव्यवस्था थी तथा सुदृढ़ फार्म-इमारतें थीं जिनमें बलूत लकड़ी का फर्नीचर था) ऐन्नी के शासनकाल में किसी तरह भी पूर्णता नहीं प्राप्त हुई थी, यद्यपि पुनःस्थापना के पश्चात् केण्डल में कपड़े के निर्माण के कारण उसकी तीव्र उन्नति हो रही थी।

पड़ोस में नार्थम्बरलैंड की काउण्टी में जिसमें हाल में युद्ध और बर्बरता का वातावरण था, यात्रियों ने समुद्रतट पर तथा दक्षिणी टाइन नदी की घाटी में प्रचुर मात्रा में अच्छी रोटी तथा जौ की शराब तथा मुर्गियां और हंस देखे थे। वहां पर क्लैरेट (हल्के लाल रंग की अंगूरी शराब) की भी भारी मात्रा उपलब्ध थी जो पड़ोस के स्कॉटलैंड से वहां आती थी जहां संभ्रान्त लोग उसका फ्रांस से, युद्ध के बावजूद, आयात करते थे। जब ऐन्नी शासनरूढ़ हुई तो उस समय भी नार्थम्बरलैंड के लिए एक काउंटी-कीपर था जिसका वेतन ५०० पौंड था और जिसमें से वह चोरी गए हुए पशुओं के लिए क्षतिपूर्ति करता था। यद्यपि "रेडेस्डेल' तथा 'रोमन वाल' के बीच के सुनसान वंजर प्रदेश अब भी कुख्यात थे फिर भी 'काउण्टी-कीपर' इससे अपना सर्वोत्तम लाभ कर लेता था। वह यात्रियों को यह सूचित करने योग्य हो गया था कि 'यद्यपि दलदली भूमि के दस्युओं का आतंक बहुत कुछ समाप्त हो गया था फिर भी यात्रियों से लिया गया थोड़ा थोड़ा धन काउण्टी में वर्ष भर की सभी डकैतियों की क्षतिपूर्ति के लिए काफी हो सकेगा।" स्काटलैंड के साथ शान्ति, टिनसाइड खानों की सम्पदा और न्यूकैसल का व्यापार पहले ही सीमा प्रदेश के जीवन-स्तर में उन्नति के लिए उत्तरदायी थे। किन्तु दूरस्थ क्षेत्रों के ग्रामीण जिले-नार्थम्बरलैंड, कम्बरलैंड तथा डरहम अब भी

बहुत निर्धन थे और उनकी आबादी भी बहुत घनी थी जो बाद में कम हो गई। आज बहुत से कस्बों में केवल एक समृद्ध भेड़ फार्म होता है। उस समय पीलटावर के आसपास आधी दर्जन झोपड़ियां होती थी जिनमें सीमावासियों की परिश्रमी जनसंख्या बहुत कष्टप्रद जीवन बिताते हुए बंजर भूमि को जोतकर थोड़ी सी जई की उपज पैदा कर लेती थी।

स्टुअर्ट काल में, विशेषकर पुनःस्थापना के पश्चात्, उपद्रवग्रस्त अतीत में जिन प्रासादों में सीमाप्रान्त के संभ्रान्त लोग रहते थे उनके स्थान पर सुन्दर ग्रामीण घर बनते जा रहे थे। इनमें से कुछ स्टुअर्टकालीन प्रासाद जैसे चिपचेज़, कैंपहीटन, वालिंग्टन तथा प्रथम फॉलोडन ऐन्नी के शासनकाल में पहले ही विद्यमान थे। किन्तु सड़कों का निर्माण कार्य, नार्थम्बरलैंड के बंजर प्रदेशीय फार्मों में बाड़े बनाना तथा पानी के निकास की व्यवस्था करना, उसके किनारे पर वनों का लगाना तथा ईंट की दीवार से घिरे उनके सुव्यवस्थित बगीचों का निर्माण बाद में आने वाले हैनोवर युग में मुख्यतः किया गया था। दीर्घकाल तक पिछड़े एवं बर्बर क्षेत्र की उत्पादकता एवं उसके रूप में इन विशद् परिवर्तनों का क्रियान्वयन अठारहवीं शताब्दी में हुआ जिसके लिए १७०७ के संघ की स्थापना से स्कॉटलैंड के साथ स्वतंत्र व्यापार अनुकूल था। इस पर व्यय के लिए धन टिनसाइड से प्राप्त हुआ था जो कोयले की आमदनी थी और खेती में लगा दिया गया था। इस भूमि के पुराने जैकॉबी तथा कैथॉलिक सामन्तों को औद्योगिक तथा व्यापारी परिवारों द्वारा अपदस्थ करने की आर्थिक प्रवृत्ति में १७१५ के आन्दोलन जैसी राजनैतिक घटनाओं ने सहायता की। रॉब रॉय में ओस्वाल्डीस्टोन्स की ऐसी ही घटना थी। नवागन्तुक अपने साथ औद्योगिक धन लाये और उसे खरीदी हुई जायदादों में भरपूर लगा दिया जिससे उनके खेतों की मालगुजारी (लगान) तथा आसामियों की समृद्धि में वृद्धि हुई और उनके नये ग्रामीण घरों में सुख-सुविधाएं भी बढ़ीं।

इंगलैंड के अधिक दक्षिणी जिलों में जहां सभ्यता कुछ अधिक पुरानी थी, गृह युद्ध के पश्चात् निरन्तर शान्ति रहने से जीवन की सुविधाओं में अतीव वृद्धि हो रही थी। सर्वत्र मनुष्य एवं प्रकृति के बीच सम्पूर्ण सुन्दर संतुलन जो अठारहवीं शताब्दी के भूदृश्य की विशेषता थी, धीरे धीरे स्थापित हो रहा था। वन्य प्रान्तों में बाड़े की झाडियां तथा फलों के बगीचे लगाए जा रहे थे, ग्राम्य घरों की संख्या वृद्धि तथा सुधार हो रहा था, परम्परात्मक शैलियों के अथवा भव्य किन्तु सरल ढंग से फार्म-इमारतें तथा सभाभवन बन रहे थे। जो रानी ऐन्नी की शैली के परिचायक थे। जिसे हम आज मौलिक अंग्रेजी शैली कहते हैं उसकी उत्पत्ति पर कुछ डच प्रभाव पड़ा था। वास्तुकला की गरिमा के अनुरूप ही भीतरी सजावट थी। १७१० में एक विदेशी यात्री ने लिखा था कि "अब इंगलैंड में दीवारों आदि पर सजावटी पर्दे टांगने का फैशन नहीं था परन्तु कमरे के भीतरी भाग को बहुत अधिक व्यय करके सजावटी लकड़ी से ढका जाता

था।" लकड़ी के बड़े बड़े तख्ते, जो पांच फीट ऊँचे होते थे और उसी अनुपात में चौड़े, पूर्व प्रचलित छोटे तख्तों के स्थान पर लगाये जाते थे। गोथिक तथा एलिजाबेथ युग की झांझरियों के स्थान पर इधर उधर खिसकने वाली खिड़कियां, जिनमें बड़े बड़े कांच लगे थे, लगाई जाने लगी थीं। ऊँचे, सुप्रकाशित कमरे नये फैशन के अन्तर्गत आते थे।

डच तथा अंग्रेजों की पूर्वी भारत कम्पनियों द्वारा यूरोप को लाये गए चीनी के बर्तन महिलाओं को अत्यधिक प्रिय थे। रानी ऐन्नी के अनेक ग्रामीण तथा शहरी प्रासादों में सजावट की योजना की धारणा बनाई जा सकती है। दीवारों में लगे लकड़ी के तख्तों के अन्तरों में नीले और सफेद कलश रखे रहते थे। पितामह के समय की ऊँची घड़ियों को पूर्वी देशों से मंगाई गई नक्काशीयार वस्तुओं से सजाया जाता था। लकड़ी के नक्काशी के कार्यों में ग्रिनलिंग गिवन्स आज भी आश्चर्यजनक ख्याति पा रहा है। अमरीकी द्वीपों से महोगनी की लकड़ी आनी प्रारम्भ हो गई थी और इससे अठारहवीं शताब्दी की रुचि के अनुकूल अधिक सुन्दर और हलका फर्नीचर बनने लगा था। विदेशी कलात्मक वस्तुओं के विक्रेताओं को यहां मिलने वाले अवसरों पर आश्चर्य हो रहा था। कुछ कलात्मक वस्तुओं को वे फ्रांस और इटली से बहुत कम कीमत पर खरीद कर यहां भारी कीमतों पर बेचते थे और इस प्रकार अंग्रेजों से बड़ी धनराशि ले लेते थे। विदेशी कलाकारों ने घोषित किया था कि रानी ऐन्नी के शासनकाल में कुलीन एवं संभ्रान्त परिवारों के ग्रामीण हाल कमरों में विख्यात इटालवी कलाकारों की कृतियों संख्या में रोम नगर के समस्त संग्रहालयों और प्रासादों में उपलब्ध कृतियों से होड़ लेती थीं।

वानब्रुघ के ब्लेनहीम हाउस को, जो योजना में भव्य और निस्संदेह सुविस्तृत था, ऐन्नी के शासनकाल की वास्तुकला की विशेषता कदापि नहीं कहा जा सकता। साधारणतया धार्मिक, शैक्षणिक एवं सार्वजनिक भवनों में एक अधिक शुद्ध रुचि प्रचलित थी जबकि साधारण घरेलू इमारतों में लालित्य में सरलता को प्रमुखता दी जाती थी। रेन अभी जीवित था और वह लन्दन के गिरजाघरों तथा हैम्पटन के राजप्रासाद की भव्यता में वृद्धि करने में सक्रिय था। गिब्स उस कौशल को सीख रहा था सिससे निकट भविष्य में ही आक्सफोर्ड में रेडक्लिफ केमरा का निर्माण हुआ था। उन दोनों ने मिलकर भारी पीढ़ियों को स्थापत्य में चिरप्रतिष्ठित सौन्दर्य तथा स्थानीय शक्ति का एकीकरण करना सिखा दिया था। इन महापुरुषों द्वारा निर्दिष्ट समानुपात के नियम स्थानीय स्थापत्यकारों और भवन निर्माताओं द्वारा प्रयुक्त पाठ्यपुस्तकों में स्थान पा गये थे जिसके आधार पर अठारहवीं शताब्दी के लिए छोटे ग्रामों एवं देहाती कस्बों में सामान्य अंग्रेजी भवन निर्माण के एक दीर्घ और सुखद युग का निर्माण किया जा सका। जब उन्नीसवीं शताब्दी के लोगों ने प्राचीन एथेन्स तथा मध्ययुग की स्थापत्य

कला को पुन:स्थापित करना चाहा तो अंग्रेजी परम्परा समाप्त हो गई और उसके स्थान पर अपरिपक्व भावुकता तथा कामुक जीवन-विधि की भद्दी अराजकता घुस बैठी।

देहाती क्षेत्रों के संभ्रान्त लोगों में वैभव तथा संस्कृति की दृष्टि से विभिन्न स्तरों के लोग थे। सामाजिक पद-सोपानात्मक संगठन के शिखर पर ड्यूक थे जो किसी भी अन्य देश में राजा कहला सकते थे। इंगलैंड में वेतन पाने वाले सम्बन्धित राजाओं के दरबारों की विशालता से भी अधिक वढ़ चढ़ कर ड्यूकों का रहन-सहन था। इस संगठन की निचली सीढ़ी पर भूपति (छोटा जागीरदार) था जिसे दो-तीन सौ पौंड वार्षिक मिलते थे। वह अपनी भूमि के एक भाग पर खेती करता था और सर्वाधिक प्रचलित प्रान्तीय भाषा बोलता था। परन्तु कुलीन अथवा राजघरानों के सेवक-संभ्रान्तों से वह पृथक था यद्यपि उनके बीच में अधिकांश समानता के स्तर पर मिल जुलकर वह रहता था। एक छोटा सा शिकार प्रतिष्ठान तथा सभी लोगों की ओर से मिलने वाला सम्मान परिचय चिन्ह, यही उसकी विशिष्टता थी। यदि वह जीवन में एक बार भी लन्डन जाता तो वहां शहर की भीड़ में अपने अश्वकेशी शिरस्त्राण, अश्वारोही पेटी तथा पुराने ढंग के विना आस्तीनों के कोट के कारण अलग ही चमकता था। उसके पुस्तकालय में, परम्परा के वशीभूत, बाइविल, वेकर का 'क्रानिकल' (काल-विवरण), हुडिब्रास और फॉक्स का मार्टर्स (शहीद) पुस्तकें होती थीं। वह चाहे इन पुस्तकों को पढ़ता अथवा नहीं, वुद्धिवादियों तथा पोप-वादियों के बारे में उसके विचार साधारणतया अन्तिम दो ग्रन्थों में व्यक्त विचारों के अनुकूल होते थे।

परन्तु इस प्रकार के पुराने तौर-तरीकों वाले छोटे संभ्रान्त व्यक्ति को समय के दवाव का अनुभव होने लगा था। एक पौंड में चार शिलिंग की दर से व्हिग युद्धों के लिए दिया गया भारी भूमि कर उसके लिए वड़ा कष्टदायी था और इससे टोरी-वाद के प्रति उसका उत्साह वढ़ जाता था। देहाती क्षेत्रों में रहन-सहन कम सुविधाजनक और अधिक खर्चीला हो गया था। उस पर शहरी जीवन का अधिक व्यापक प्रभाव पड़ने लगा था। ऐसी स्थिति में यदि छोटे भूपति के लिए जीविका निर्वाह करना कठिन हो जाता तो उसके लिए अपनी भूमि को अच्छे मूल्य पर वेच लेना आसान था। अनेक वड़े ज़मींदार अपने पड़ोसियों की भूमि खरीदकर अपनी वड़ी जमीदारियों (जायदादों) को सुदृढ़ करने की ताक में रहते थे।

यह उल्लेखनीय है कि समुदाय के धनी सदस्यों में भूमि की भूख अब भी इतनी तीव्र थी जवकि विनियोग के अन्य दूसरे रूप उपलब्ध थे जिन्होंने भूमि के लगभग अद्वितीय मूल्य को समाप्त कर दिया था। इसके पूर्व के विनियोग का सवसे अधिक स्पष्ट उपयोग भूमि में ही होता था। ट्यूडर काल में मैदानी भागों के व्यापारियों के पास स्थायी भूमि होती थी अथवा वे वच्चों पर लगान या उपज का दसवां भाग लेते थे। अब वे अपनी पूंजी को कोषों में लगाते थे। सामाजिक और राजनैतिक महत्वाकांक्षा के

उद्देश्यों के अतिरिक्त पहले के सभी कालों की अपेक्षा अब भूमि का स्वामी बनना अधिक आकर्षक था। श्री हवा कुक ने १६८० और १७४० के बीच नार्थम्पटनशायर तथा वेडफोर्डशायर में भूस्वामित्व में परिवर्तनों का बड़ा सघन अध्ययन किया था। उन्होंने लिखा है : 'ऐसे लोग भूमि खरीदते थे जो सामाजिक प्रतिष्ठा एवं राजनैतिक शक्ति के विचारों के प्रति विचित्र ढंग से संवेदनशील थे। उनमें से कुछ बड़े व्यापारी भी थे, जो मुख्यत: ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अध्यक्ष थे, जो राजनीति में प्रविष्ट हो गए किन्तु अधिकांश नवागन्तुकों का या तो कोई न कोई सम्बन्ध सरकार से था अथवा वे न्यायाधीश थे, जिन्हें समाज में वह महत्त्व प्राप्त करने की इच्छा थी जो केवल भूमि स्वामित्व से ही मिल सकता था। देश के विभिन्न भागों में उन्होंने भूखण्डों को खरीद लिया और कुछ अड़ोस-पड़ोस के संभ्रान्त लोगों को भी खरीद लिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई स्थानों पर गिरजाघर को दान में देने के अधिकारों तथा संसदीय बारों के भूपतित्वाधिकारों को खरीद लिया था। वे भूमि खरीदने में अपने धन का विनियोजन इतना नहीं कर रहे थे जितना एक सामाजिक वर्ग की विशेष सुविधाओं को खरीदने में। वास्तव में इससे उन्हें एक पड़ोस के जीवन पर निरापद नियंत्रण करने का अवसर मिल जाता था। वे चाहते थे कि जिधर भी उनकी दृष्टि जाये उधर केवल उनके ही खेत दिखें। बड़े जागीरदारों, चाहे वे नये हों अथवा पुराने, जिन्होंने छोटे भूपतियों तथा संभ्रान्त लोगों की जायदाद खरीद ली थी, के प्रति घृणा कई तात्कालिक नाटकों का विषय था।' (**इकानामिक हिस्ट्री रिव्यू**, पृष्ठ १२, फरवरी १९४०, **इंगलिश लैंड ओनरशिप**, १६८०-१७४०)।

यदि हम उस समय के ग्रामीण घरों के जीवन का चित्रण करें तो सर्वप्रथम हम उन अत्यधिक प्रतिष्ठित कुलीनों के बारे में सोचते हैं जिनके ग्रामीण प्रासादों में इटली के चित्र, फ्रांस का फर्नीचर और इटालवी, फ्रांसीसी अथवा लैटिन लेखकों की पुस्तकें भरी थी। इन पुस्तकों का वे केवल संग्रह ही नहीं करते थे प्रत्युत् उन्हें पढ़ते थे। १७२६ से १७२९ में इंगलैंड की यात्रा पर आये वॉल्टेयर ने इन मनुष्यों की अनुकूल तुलना फ्रांसीसी कुलीनों से की थी जो साहित्य और विज्ञान के संरक्षक के। उनमें दार्शनिक लार्ड थे जैसे शैफ्टबरी के थर्डयर्ल, सोमर्स एवं माण्टेगु जैसे विद्वान राजनेता, और पुरातत्व-संग्रहकों में सबसे महान् राबर्ट हार्ले, जो राष्ट्र के बड़े सहायक के रूप में जब पुस्तकों और पाण्डुलिपियों की खोज में अत्यधिक व्यस्त रहता था तब अपने निजी अभिकर्ताओं (एजेण्टों) को सर्वत्र इस कार्य के लिए नियुक्त करता था। व्हिग जुण्टों के लार्डों और उनके अनुयाइयों तथा वेस्टमिन्स्टर एवं सेण्ट जेम्स में उनके शत्रुओं, सभी को ग्रामीण संभ्रान्त जन होने में गर्व था फिर चाहे वे अपने प्रयत्नों से इस स्थिति में पहुंचे हों अथवा जन्मजात हों। प्रत्येक के पास अपना ग्रामीण स्थान था जिस पर चिन्ताग्रस्त राजनेता सदैव कम से कम सिद्धान्तत: वापस लौटने के लिए व्यग्र रहता था।

जून के प्रथम सप्ताह तक लन्दन का मौसम समाप्त हो जाता था और तब फैशनेबुल लोग या तो अपने ग्रामीण घरों को चले जाते थे अथवा गरम स्रोतों के नगर को। लन्दन में अधिक लम्बी अवधि तक रहने में उन बहुत से परिवारों की तवाही आ जाती जिन्होंने लन्दन के विवाह बाजार में अपनी कन्याओं को लाने में बड़ी कठिनाई का सामना किया था। उनके पड़ौसी काउंटी की राजधानी पहुंच जाने में ही संतोष कर लेते अथवा केवल ऐसी ग्रामीण यात्रायें करते जहां गर्मी में उनकी महिलायें घोड़ा गाड़ी में उनके साथ जा सकती थीं अथवा क्रिस्मस पर धूल कीचड़ से भरी गलियों में अपने भाइयों के पीछे घोड़े की पीठ पर बैठ कर जा सकती थीं।

एक प्रखर विदुषी, लेडी वोर्टले माण्टेगु, ने अपने एक पत्र में, जिसमें सबसे नीरस भाग टोसों का एक उद्धरण है, किसी दक्षिणी काउंटी के भूस्वामियों की यह कहकर निन्दा की है कि वे सुरापान और शिकार के अतिरिक्त दूसरे प्रकार के सुखों के प्रति संवेदनशील नहीं थे। परिवार की बेचारी महिलाओं को घोड़ा-गाड़ी में बैठने का कोई अवसर नहीं मिलता था। उनके ज़मींदारों तथा मालिकों को ऐसे यन्त्र का अवसर ही कहां था। प्रातःकाल वे अपने कुत्तों को लेकर शिकार पर निकल जाते थे और उनकी रातें ऐसे ही पशुवत साथियों तथा उपलब्ध शराब के साथ बीततीं थीं। तथापि उसी पत्र से वह नार्थम्पटन शायर में भूस्वामियों के समाज के प्रति खेद प्रकाश करती है और उसकी प्रशंसा भी करती है। ग्रामीण (अशिष्ट) भूस्वामी वेस्टर्न की तुलना में कम वास्तविक विद्वान ग्रामीण सज्जन नहीं था जिसकी प्रशंसा सोमरविल की इन सूत्रबद्ध 'पंक्तियों' में देखने को मिल सकती है—

'एक ग्रामीण भूस्वामी, जिसे न भीड़ें जानती हैं और न राजदरबार। वह केवल अपने कक्ष में बैठता है, किन्तु अकेले नहीं, उसके चारों ओर ग्रीक तथा रोमन विद्वान होते हैं ये उसके बुढ़ापे के विनम्र साथी थे।'

फिर भी ऐन्नी के शासन काल के अधिक खुशहाल संभ्रान्त जनों को लिखे गए सैंकड़ों पत्रों को उलटने से यह धारणा वन जाती है कि न तो वे ग्रामीण विद्वान थे और न ग्रामीण भोंदू। हमने भूस्वामियों के वास्तविक विचारों को पढ़ा जिनमें वे अपने हिसाब किताब की बहियों, अपनी पुत्रियों के विवाहों, अपने पुत्रों के ऋणों तथा व्यवसायों के बारे में चिन्तित रहते थे। वे अपनी जायदादों तथा मजिस्ट्रेटों के न्यायालयों में अपनी काउण्टी से संबंधित मुकदमों की देख रेख करते थे। वे अपने घोड़ों तथा शिकारी कुत्तों की भी निगरानी रखते। किताबें पढ़ने की अपेक्षा उन्हें अपने बागों तथा परिवारों की देख भाल की अधिक लगन रहती थी। इस प्रकार हमारी अपेक्षा के अनुकूल वे स्वस्थ और लाभप्रद जीवन बिताते थे जो आधा सार्वजनिक और आधा निजी होता था और पूर्णतया अवकाशपूर्ण, स्वाभाविक एवं गरिमामय होता था। अधिक सम्पन्न संभ्रान्त जनों में बहुतों की, जैसा उनके पत्रों एवं डायरियों से ज्ञात होता है, अपनी जायदादों से कई हजार वार्षिक आमदनी होती थी।

एक ग्रामीण संभ्रान्तजन से, चाहे धनी हो अथवा निर्धन, एक दृष्टि से बहुत कम खर्च करने की अपेक्षा की जाती थी। उस समय संभ्रान्तजनों के लिए अपने पुत्रों को अभिजात वर्ग के विद्यालयों में बहुत व्यय करके भेजना अनिवार्य नहीं माना जाता था। सबसे निकट के स्थानीय ग्रामर विद्यालय में भूस्वामियों के बच्चे, स्वतंत्र कृषकों एवं दूकानदारों के बच्चों के साथ ही बैठते थे जिन्हें पादरी का जीवन बिताने के लिए चुना जाता था। नहीं तो युवा संभ्रान्तजनों को पड़ोस का पादरी घर पर पढ़ाने आया करता था। धनी परिवारों के बच्चों को निजी गिरजाघरों का पादरी पढ़ाया करता था। जहां घरेलू शिक्षक को विशेष रूप से नियुक्त किया जाता था तो वह बहुधा ह्यूनांट का शरणार्थी होता था। देश में इस प्रकार के शिक्षित लोगों की भरमार थी। सावधानी बरतने वाले माता-पिता इन शिक्षित व्यक्तियों को उनके फ्रांसीसी भाषा के ज्ञान के कारण बहुत चाहते थे। ह्विग परिवारों में तो उनके त्याग तथा सिद्धान्तों के कारण उनका दुगुना स्वागत होता था। ईटन, मिन्चेस्टर तथा वेस्टमिन्स्टर (विद्यालयों) को वास्तव में बहुत से कुलीन घरानों के बच्चे पढ़ने आते थे। ऐन्नी के शासनकाल के अन्त में वेस्ट-मिन्स्टर में ऐसे मकान पाये जाते थे जहां लड़कों को रहने के लिए २० पौंड प्रति वर्ष तथा पढ़ाई के लिए केवल ५ या ६ गिन्नी देने पड़ते थे। एलिजाबेथ के शासनकाल में स्थानीय तथा साधारण (अकुलीन) बच्चों की शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए स्थापित हैरो विद्यालय की फैशनेबुल विद्यालयों की श्रेणी में जार्ज प्रथम के शासनकाल में उन्नति होना प्रारंभ हो गया था।

इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि जहां आज के युग का मध्यवित्त का एक संभ्रान्त व्यक्ति अपनी आय का छठा भाग अपने एक बच्चे की पढ़ाई पर व्यय करता है वहां उस समय का ऐसा व्यक्ति अपनी आय का सौवां भाग व्यय करके संतोष कर लेता था। जब भूस्वामी मोलसवर्थ को मालगुजारी में केवल २००० पौंड वार्षिक मिलता था वह अपने प्रत्येक पुत्र पर २० पौंड वार्षिक व्यय करता था जिसमें रहने, शिक्षण, कपड़ों तथा अन्य बातों पर व्यय शामिल थे। उसकी भारी पैतृक देयताएं (उत्तरदायित्व) तब प्रारंभ हुई जब उसके दो लड़कों ने विद्यालय छोड़ा और उनमें से छोटे ने सेना में नौकरी करली। तब वास्तव में डिक को सौ पौंड देना आवश्यक था नहीं तो वह कतई उन्नति नहीं कर सकता था। उसे घोड़े, कपड़े तथा अन्य सामान खरीदना पड़ता था। क्योंकि वह ब्लेनहीम के गत गौरवमय युद्ध में मारे गये अधिकारियों की सूची में नहीं था, जो एक दुःखद अर्थ व्यवस्था रही होती, और न लिली पर हुए हताश आक्रमणों में से किसी में, इसलिए बहुत वर्षो तक डिक अपने यार्कशायर परिवार की शान रहा और उस पर निरन्तर बढ़ते हुए व्यय का बोझ डालता रहा। बड़े पुत्र जैक ने दौत्य सेवा का पेशा चुना था, राज्य की सेवा का यह कम खर्चीला ढंग नहीं था। १७१० में उनके पिता ने लिखा "मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमारे दोनों पुत्रों ने गत सात-आठ वर्ष में १०,००० पौंड व्यय किए हैं। वे तथा पुत्रियां सभी ऋणी हैं। यह अच्छी

बात है कि रहने बसने के लिए उनके अच्छे पिता का घर है।" पांच वर्ष के उपरान्त डिक के अपने रेजिमेन्ट के लिए उत्साह ने उसे मिलने वाली धनराशि से ६००० पौंड व्यय करने को बाध्य किया, उसे इतनी अधिक यह नौकरी प्रिय थी।

छोटे भूस्वामि अपनी क्षमता के अनुसार अपने पुत्रों की शिक्षा पर कम धन व्यय किया करते थे। और तब सेना अथवा दौत्य सेवा की अपेक्षा उन्हें सस्ते व्यवसायों में अप्रैन्टिस लगवा देते थे। कान्ग्रेव और फ़र्कुहर के नाटकों में जागीरदार का छोटा लड़का शायद श्रिउसबरी में फेल्ट (टोपी) बनाने वालों के यहां अपैरन्टिस होने की अपेक्षा कर सकता था। स्टील ने लिखा है कि जागीरदार के छोटे भाइयों के भाग्य में तो दुकानों, कालेजों और राजदरबारों की सरायों में नौकरी करना निश्चित था। इन्हीं दशाओं में संभ्रान्त लोग बड़े परिवारों का पालन-पोषण कर पाते थे। यद्यपि उनके बहुत से बच्चे बाल्यकाल में ही मर जाते थे फिर भी वे लन्दन को उच्चाकांक्षी नवयुवकों को निरन्तर भेजते रहते थे जिनकी बदौलत वह आन्तरिक तथा सागर-पार की प्रगति में आगे बढ़ता जाता था। यौरोप महाद्वीप के कुलीन सैनिक प्रशिक्षार्थियों के विपरीत जागीरदारों के छोटे पुत्र मनुष्यों के सामान्य व्यवसाय कर सकते थे और उन्हें अपनी संभ्रान्तता का गर्व नहीं रहता था। जागीरदारों के छोटे लड़के सेना, वकालत उद्योग अथवा व्यापार में अपनी जीविका उपार्जित करने जाते थे। हि्वगों तथा जागीरदारों की घनिष्टता के अनुकूल सामान्य कारणों में से यह एक कारण था। इसके विपरीत उच्च टॉरियों की इच्छा भूस्वामी संभ्रान्तों को एक विशिष्ट तथा प्रबल वर्ग बनाये रखने की थी। अगली शताब्दी भर यह वर्ग प्रबल बना रहा किन्तु इसे नवागन्तुकों को अपने में प्रवेश करने के द्वारा खोल देना पड़ा। साथ ही कृषि से सम्बन्धित लोगों के अतिरिक्त अन्य वर्गों से इसे सैंकड़ों प्रकार से घनिष्टता बढ़ानी पड़ी। इन क्रियाकलापों को स्थल जागीरदार के निवास और ग्रामीण गिरजाघर से बहुत दूर स्थित थे। अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड पर ग्रामीण संभ्रान्तजनों का शासन था किन्तु उन्होंने अधिकांशतः व्यापार और साम्राज्य बढ़ाने के शिए शासन किया था।

उच्च एवं मध्य वर्ग के सामान्य शिक्षण की उसके कठोर पुरातन पाठ्यक्रम के कारण पहले ही आलोचना हो रही थी। कुछ लोग तो यहां तक कहते थे कि केवल लैटिन जानने वाले सोलह वर्षीय लड़के की तुलना में अपनी माता के पास पढ़ने वाली बारहवर्षीय लड़की अधिक बुद्धिमान होती थी। फिर भी दूसरी शास्त्रीय भाषा स्कूल और कालेज में इतने बुरे ढंग से पढ़ाई जाती थी कि क्राइस्ट चर्च (कालेज) में सर्वोत्तम लैटिन जानने वालों को पर्याप्त ग्रीक भाषा नहीं आती थी जिसके कारण बेन्टले उन्हें "लेटर्स आफ फैलेरिस" न जानने के कारण मूर्ख कहता था। केवल उन्नीसवीं शताब्दी

का आदर्श अंग्रेज विद्वान समान योग्यता से अरिस्टोफेन्स और होरेस की रचनाओं को पढ़ सकता था।

इतने पर भी बेन्टले कालीन इंगलैंड में शेष योरप की तुलना में ग्रीक विद्वान का स्तर ऊँचा था। तत्कालीन जर्मनी में न केवल शास्त्रीय ग्रीक का अध्ययन नहीं होता था प्रत्युत वहां हेलास के इतिहास और पुरास की कहानियां भी कोई नहीं जानता था।[1] परन्तु यह मानना गलत होगा कि शास्त्रीय (पुरातन) भाषाओं के अतिरिक्त कहीं कुछ अन्य नहीं पढ़ाया जाता था। संभ्रान्त लोगों के संरक्षण में चलने वाले विद्यालयों में पर्याप्त विविध विषय पढ़ाये जाते थे। इस प्रकार रावर्ट पिट, जो एक महान पुत्र का पिता था, ने अपने उतने ही महान पिता, मद्रास के गवर्नर पिट, को १७०४ में लिखा था :

"इंगलैंड में सबसे प्रतिष्ठित श्रीम्यूरे की एकेडेमी में, जो सोहो स्क्वायर के निकट है, मेरे दो भाई शिक्षा पाते हैं। वे लैटिन, फ्रांसीसी तथा लेखा और स्वरक्षा में तलवार चलाना, नृत्य करना तथा रेखा-चित्रण की शिक्षा पाते हैं। अगली गर्मी में मैं उन्हें अधिक अच्छी शिक्षा के लिए हालैण्ड भेजना चाहता हूं और यदि मेरे ससुर, लेफ्टीनैण्ट जनरल स्टेवार्ट मार्लबारो के ड्यूक के साथ गए तो उन्हीं के अधीन एक अभियान देखने के लिए रखना चाहूंगा।"

बुद्धिमान लाक तथा मृदुस्वभाव वाले स्टील हमारी शैक्षणिक पद्धतियों के आलोचकों में से थे। उन दोनों का आग्रह था कि निरन्तर कशाघात न तो ज्ञान प्रदान करने की सबसे अच्छी पद्धति है और न अनुशासन बनाये रखने की। सर्वत्र यह स्वीकार किया जाता था कि उच्च वर्ग की शिक्षा में सुधार आवश्यक है किन्तु उसमें सुधार लाने के लिए कुछ नहीं किया गया था। स्कॉटवासियों को सब प्रकार से घृणा करने वाला स्विफ्ट एक बार ब्रूस से सहमत हो गया था कि स्कॉटलैंड के जमींदार धनी और आलसी अंग्रेजों की तुलना में अपने लड़कों को अधिक ठोस किताबी शिक्षा प्रदान करते थे।

फिर भी अपने शैक्षणिक दोषों के बावजूद अठारहवीं शताब्दी ने स्कूलों की शिक्षा के अनुपात में अधिक संख्या में प्रख्यात और मौलिक अंग्रेजों को उत्पन्न किया। उसकी तुलना में हमारा उच्च शिक्षापूर्ण तथा सुयोजित युग ऐसे कम लोग उत्पन्न कर पाया

---

[1] १७१८ में बर्खाड ने एक घोषणा की कि जर्मनी में बहुसंख्यक विश्वविद्यालय विद्यार्थी प्लेटो, अरस्तू, होमर, थ्यूसिड्राइडिस तथा य्यूरीपाइडिस का नाम भी नहीं जानते थे। यदि ऐसा कथन इंगलैंड के बारे में किया जाता तो वह पूर्णतया बेहूदा माना जाता। हम्फ्री ट्रेवेलयान, *दि पापूलर बैकग्राउण्ड आफ गेटेस् हेलेनिज्म*, १९३४, पृ० ८ और आगे।

है। अनुज्ञापित अत्याचारी अध्यापकों की क्रूर कोड़े बाजी और 'उद्दंड सहपाठियों की अविहित क्रूरता द्वारा आतंकित होने पर भी बाल्यकाल में एक बड़ा आनन्द था, क्योंकि उस समय बड़ा अवकाश मिलता था जिसे ग्रामीण क्षेत्र में उन्मुक्त रूप से व्यय किया जा सकता था। और फिर यह कठोरता भी सब विद्यालयों में सामान्य नहीं थी। ईटन (विद्यालय) में नवीन प्रवेश लेने वाले एक युवक जागीरदार ने अपने घर लिखा था : "मेरे विचार से ईटन के स्कूल में बड़ा सुखकर जीवन है। मेरी निश्चित धारणा है कि जब तक आप किसी को अपशब्द न कहें तब तक कोई भी नहीं सतायेगा।"

स्त्री शिक्षा की बड़ी दुःखद स्थिति थी। निम्नतर वर्गों में सम्भवतः इसकी स्थिति पुरुषों की शिक्षा से अधिक खराब नहीं थी किन्तु सम्पन्न परिवारों की पुत्रियां अपने भाइयों की अपेक्षा कम शिक्षित होती थीं। यह स्थिति महिलाओं की एकेडेमियां स्थापित होने तक बनी रही और यद्यपि लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय थे किन्तु वे बहुत कम और असुविधापूर्ण थे। अधिकांश महिलाएं अपनी माताओं से पढ़ना-लिखना, सीना और गृहस्थी का प्रबन्ध करना सीखती थीं। हमें प्राचीन समय में लेडी जेन ग्रे तथा रानी एलिजाबेथ जैसी महिला यूनानी विद्वानों का पता नहीं है। किन्तु कुछ महिलाएं इटली के कवियों की रचनायें पढ़ लेती थीं अतः उनके ग्रामीण प्रेमी उनसे भय खाते थे। कम से कम दो स्त्रियां ऐसी थीं जो स्विफ्ट से समान बौद्धिक स्तर पर मुकाबला कर सकती थीं। फिर भी स्विफ्ट को इस बात का पाश्चाताप था कि संभ्रान्त लोगों की एक हजार पुत्रियों में एक भी ऐसी नहीं थी जो अपनी मातृभाषा को पढ़ सके अथवा उसमें लिखी सरलतम पुस्तकों पर अपना अभिमत दे सके। स्त्रियों में शिक्षा के अभाव को एक मान्य तथ्य मानकर उस पर विचार विमर्श होता था। एक पक्ष इस अभाव को पत्नियों को अधीन बनाए रखने के लिए आवश्यक मानता था। दूसरा पक्ष, जिसके अगुआ उस काल के साहित्यक व्यक्ति थे, फैशनेबुल स्त्रियों में प्रचलित समय के अपव्यय-निरर्थकता, छिछोरपन तथा जुएं की आदतों का कारण उनका पालन-पोषण मानता था जो उन्हें अधिक गम्भीर अभिरुचियों के अनुगमन से वंचित करता था। तथापि, उस काल के ग्रामीण घरानों के पत्रों से हमें ज्ञात होता है कि पत्नियां और पुत्रियां अपने पुरुषों को बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श दिया करती थीं। इस प्रकार के पत्र लिखने वाली स्त्रियां मूर्खतापूर्ण आमोद सामग्री अथवा घरेलू सेवकों की तुलना में कुछ अच्छी थीं। उस काल का एक सम्पूर्ण साहित्य, स्पेक्टर से नीचे तक, महिलाओं तथा उनके पिताओं और भाइयों के लिए समान रूप से लिखा गया था। इसका भी उल्लेख मिलता है कि महिलाएं, बहुधा अत्यधिक उत्साह से, व्हिगों तथा टोरियों के पारस्परिक झगड़ों में भाग लेती थीं जो गांवों तथा नगरों में विभाजन उत्पन्न कर देते थे। ग्रामीण मनोविनोद को लीजिये। 'रॉब रॉय' में डायना वरनॉन की मूलाकृति फर्कुहर के नाटक में बेलिण्डा में मिलती है जो अपने मित्र से कहती है,

"मैं सारे प्रातःकाल शिकार के पीछे घोड़े पर चढ़कर दौड़ सकती हूं और सारी शाम नाच सकती हूं। संक्षेप में, मैं अपने पिता के साथ शराब पीने और उड़ते पक्षियों को मारने के अतिरिक्त प्रत्येक कार्य कर सकती हूं।"

उच्च और मध्य वर्गों में लड़कियों के लिये पतियों को स्पष्ट वस्तु-विनिमय के के सिद्धान्त पर खोजा जाता था। भूस्वामी मोलसवर्थ ने अपनी लड़की क्लॉटी के विषय में लिखा है: "हमारे पास यहां उसका विवाह करने के लिये पर्याप्त धन नहीं है अतः हम उसे आयरलैंड में सस्ती दर पर पति खोजने भेज देंगे।" गाइज नाम के एक अन्य भूस्वामी ने, जो विवाह करना चाहता था, लिखा है: "लेडी डायना ने एक बहुत सम्मानित व्यक्ति को मेरी जायदाद (जागीर) देखने को भेजा और उसके विवरण से बहुत संतुष्ट हुई और मेरे विचार से मेरे साथ अपनी पुत्री व्याहने की उसकी उत्कृष्ट इच्छा है।" किन्तु पुत्री का भिन्न विचार था इसलिये गाइज को अन्यत्र सन्तोष करना पड़ा।

"त्रैमासिक सत्र में शांति के एक न्यायाधीश ने मुझे एक ओर ले जाकर कहा कि क्या मैं एक २६ हजार पौंड के मूल्य की स्त्री से विवाह करना चाहूंगा? इस महिला को मैंने देखा था किन्तु कभी उससे बातें न हुई थीं। सभी बातें सोचते हुए मैंने उसके प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया।"

ऐसी ही स्पष्टता से अश्वारोही सेना का एक पताका-वाहक (जमादार) लिखता है—

"अन्य किसी वस्तु की अपेक्षा न करते हुए मैंने इस अभियान को दूसरे विचार से, प्रेम के देवता के अधीन अपना भाग्य आजमाने के लिए, चलाया था। तदनुसार एक पक्ष पूर्व कुछ मित्रों ने एक बहुत अच्छी सम्पत्ति की अधिकारिणी महिला से मेरे विवाह का प्रस्ताव किया। किन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि पहले ही हो गए एक अनुकूल साक्षात्कार के आगे मैं इस प्रस्ताव को कैसे आगे बढ़ाऊंगा।"

क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अविवाहित रहना एक बड़ा दुर्भाग्य मानता था इसलिए दूसरों के द्वारा उनके विवाह का निर्णय वे एक सार्वभौमिक कष्ट नहीं मानती थीं। किन्तु उनके भाग्यनिर्णय के पूर्व साधारणतया उनकी राय ले ली जाती थी जिसकी मात्रा स्वभाव और परिस्थिति के अनुसार कम या अधिक हो सकती थी। एक नवयुवती के विवाह के अवसर पर उसे स्विफ्ट ने इस प्रकार लिखा: "तुम्हारे माता-पिता ने जिस व्यक्ति को तुम्हारा वर चुना है वह दूरदर्शिता (व्यवहारकुशलता) और सामान्य अच्छी पसन्द में तुम्हारा उत्तम साथी है और इस सूत्र में रोमानी प्रेम के हास्यास्पद आवेश का तिलमात्र सम्मिश्रण नहीं है।" उस काल में माता-पिता अथवा अन्य उत्तरदायी सम्बन्धियों द्वारा निश्चित किए गए अधिकांश विवाह शायद उपरोक्त वर्णन के अनुकूल होते थे। किन्तु चूंकि बहुधा हास्यास्पद आवेश भी प्रवल हो जाता, इसलिये घर से भाग कर विवाह करना भी एक साधारण घटना थी,

जैसा कि लेडी मैरी वोर्टले मांटेगु के मामले में हुआ था। और जिन वहुत से मामलों में यह निराशाजनक घटना नहीं होती, साधारण विवाहों का एक सदैव वढ़ता हुआ अनुपात पारस्परिक प्रेम का परिणाम होता था।

विवाह-विच्छेद लगभग अज्ञात था। इसे केवल गिरजाघर के न्यायालयों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता था, और ऐसा तभी हो सकता था जवकि संसद द्वारा एक विशेष अधिनियम पारित किया जाता। रानी ऐन्नी के शासनकाल के वारह वर्षों में तलाक छह मामलों से अधिक को वैध नहीं किया जा सका।

स्त्री-पुरुष दोनों वेरोक-टोक जुआ खेलते थे। ग्रामीण जागीरदारों की तुलना में शिष्ट महिलाएं और संभ्रान्त जन अधिक जुआ खेलते थे। लन्दन, वाथ और दुन व्रिज वेल्स में जुआ खेलने की मेज मनोरंजन का केन्द्र-विन्दु थी। जागीरदारों के भवनों में अस्तवलों और कुत्ता-खानों में जुए की अपेक्षा अधिक दिलचस्पी ली जाती थी। जुए और क्रीड़ा पर तथा भवन-निर्माण, वाग लगाने और सड़कों के किनारे वृक्षों की पंक्तियां लगाने के श्रेष्ठ उत्साह पर किए गए व्यय के कारण जागीरदारों पर रहनों का वोझ वढ़ता जाता था जो कृषि सुधार और पारिवारिक आनन्द के लिए एक वड़ी वाधा थी। ताश और जुआ खेलने में वहुत वड़ी धनराशि का हेर-फेर होता था।

सभी वर्ग के अंग्रेज पुरुषों का एक प्रचलित राष्ट्रीय दुराचार (व्यसन) मदिरा-पान था यद्यपि ऐसे समय में जव प्रत्येक घर में चाय अथवा काफी नहीं मिलती थी और पीने के लिए शुद्ध पानी भी नहीं मिलता था तो स्त्रियां इसकी दोषी नहीं ठहराई जाती थीं। सम्पूर्ण मद्य-निषेध के लिए आन्दोलन चलाने का विचार ही नहीं आ सकता था। किन्तु धार्मिक संगठनों एवं चिन्ताग्रस्त देशभक्तों ने कम शराव पीने के पक्ष में लघु पुस्तिकाओं का अवाध रूप से प्रचार कराया था जिनमें मदिरा पीने के विभिन्न भयानक परिणामों का आकर्षक व्यौरा दिया जाता था। इन विवरणों के अनुसार, कुछ मदिरा पीने वाले तो घोड़े पर सवार होकर घर आते समय मार्ग में ही मर जाते और कुछ मदिरा पीकर पापाचार में लीन हो जाने पर मूर्छित हो जाते। सभी सीधे नरक को चले जाते। साधारण जनता में जौ की शराव सर्वाधिक प्रचलित थी, किन्तु जौ की शराव की एक खराव प्रतिद्वन्दी मदिरा थी, जिसकी गन्ध में भयानक आकर्षण होता था। जार्ज द्वितीय के शासनकाल में होगार्थ की 'जिन लेन' थी। इसके पूर्व मदिरा-पान अपनी चरम सीमा पर नहीं पहुँचा था यद्यपि इस दिशा में स्थिति आगे वढ़ने लगी थी।

इस समय उच्च वर्ग कभी शराव पीता था और कभी जौ की शराव। यह कहना कठिन है कि फैशनेवुल लोग सवसे अधिक शराव पीते थे अथवा ग्रामीण संभ्रान्तजन। किन्तु शायद घर से वाहर के कार्य, जैसे लोमड़ी का शिकार, अन्य शिकार खेलना और कृषि करना, भूस्वामी को अधिक मात्रा में शराव पीने के योग्य वना देते थे। इसकी तुलना में सेण्ट जेम्स स्क्वायर के जुआरी (खिलाड़ी) तथा राजनीतिज्ञ अनगिनत हि्वग

तथा टॉरी दावतों में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की देशी तथा फ्रांसीसी शराबों के दुष्प्रभावों से बच सकने में योग्य थे। मजिस्ट्रेट बहुधा न्यायालयों में शराब पीकर आते थे। अतः म्यूटिनी ऐक्ट (देश-द्रोह अधिनियम) के एक बुद्धिमत्तापूर्ण प्रावधान के अन्तर्गत 'कोर्ट मार्शल' केवल रात्रि के भोजन के पूर्व ही हो सकते थे।

मृत्तिका निर्मित सुदीर्घ नलों में तम्बाकू अब भी पी जाती थी। कुछ ग्रामीण घरों में तम्बाकू पीने के लिए एक पृथक कक्ष रहता था। किन्तु बाथ (गरम पानी के चश्मों के नगर) में सार्वजनिक कमरों में तम्बाकू पीना व्यू नैश ने निषिद्ध कर दिया था क्योंकि यह महिलाओं को अखरने वाला और उनके प्रति अभद्रता-सूचक था। दक्षिणी पश्चिमी जिलों के साधारण लोगों में पुरुष, स्त्री और बच्चे शाम को पाइप (नलों में तम्बाकू) पिया करते थे। जब १७०७ में चर्च आफ इंगलैंड की सुरक्षा के लिये एक विधेयक संसद में पारित हो रहा था तो सेण्ट डैविड का हाई चर्च बिशप, डा. बुल, जिसे कुछ बिशप सदस्यों में ह्विगों की ओर झुकाव होने का संदेह था, हाउस आफ लार्ड्स के गोष्ठी कक्ष में बैठा बराबर पाइप पीते हुए उसे देखता रहा। उस समय के पादरी अपने प्रिय ट्रूवी काफी हाउस में बैठकर जैसे स्विफ्ट के चरित्र पर आक्रमण करते थे इसका वर्णन निम्नांकित पंक्तियों में किया गया है :

"पाइप पीते हुए थोड़ा रुककर वह संदेहपूर्ण ढंग से सर हिलाता है।
ऐसे संकेत देता है कि कवि ईश्वर में कदापि विश्वास नहीं करते।"

ऐन्नी के शासनकाल के प्रथम वर्ष में इंगलैंड में सुंघनी तम्बाकू का प्रयोग आम बात हो गई थी। विगो खाड़ी में एक अभियान में सुंघनी तम्बाकू से लदा हुआ एक स्पेनी जहाज अधिकार में करने के बाद लन्दन के बाजारों में विशाल मात्रा में तम्बाकू के पहुँच जाने का यह परिणाम था।

समाज की जुआ खेलने और शराब पीने की आदतों तथा राजनैतिक गुटबन्दी की भयानकता के कारण बहुधा झगड़े (द्वन्द) होते थे जिनमें से बहुतों की दुष्परिणामपूर्ण समाप्ति होती। जीवित बचा हुआ व्यक्ति यदि अपने कार्य की न्यायपरकता सिद्ध कर देता तो मानव-हत्या के अभियोग में उसे थोड़ी अवधि के कारावास का दण्ड दिया जाता। अथवा शायद अपने पादरी की अभ्यर्थना पर ठंडे लोहू से छूकर मुक्त कर दिया जाता था। ड्यूक से लेकर नीचे तक के सभी संभ्रान्त लोगों का तलवार रखना और एक दूसरे की नियम से हत्या कर देना विशेषाधिकार माना जाता था। जब शाम को लोग शराब के नशे में धुत होते थे तब वे लड़ने लगते थे। और झगड़ा करते ही कमरे में अपनी तलवारें निकाल लेते थे। यदि उसी समय हत्या नहीं करते तो घर के पीछे वाले बाग में पुनः लड़ने के लिए स्थगित कर देते। उसी रात को गर्म रुधिर तथा डगमगाते हाथ से अपने झगड़े का फैसला कर डालते। यदि लोगों के पास तलवार न होती तो या तो झगड़ा होता ही नहीं अथवा भुला दिया जाता

अथवा फिर दूसरे दिन प्रात: को उसे निपटाने का निर्णय होता जब शराब का नशा उतर जाता। लन्दन में लोग आम तौर पर अपनी पोशाक के आवश्यक भाग के रूप में तलवार अपने साथ रखते थे किन्तु सौभाग्य से सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में अग्रामीण परन्तु अच्छे स्वभाव के भूस्वामियों में यह आम बात नहीं थी। वास्तव में उनकी धमकी ही अधिक आतंकपूर्ण थी। बाथ में व्यू नैश अपनी निरंकुश सत्ता से फैशनेबुल लोगों को भी अपनी तलवारें एक ओर रखने को बाध्य कर देता ज्योंही वे लोग उसके अधिकार-क्षेत्र में प्रवेश करते। इस कार्य में वह समुदाय की उतनी ही अच्छी सेवा करता जितनी सायंकालीन समाजों और नृत्यों में ग्रामीण घामड़ों को ऊँचे जूते पहनने और भोंड़ी भाषा बोलने से मना करने में। उत्सवों के आयोजक की हैसियत से नैश को ऐन्नी तथा प्रथम एवं द्वितीय जार्जों के शासनकाल में जो सर्वोच्च सत्ता प्राप्त रही उससे उसने मानवता के उपेक्षित आचरणों को सुसभ्य बनाने का उतना ही काम किया जितना अठारहवीं शताब्दी के किसी व्यक्ति ने किया। किन्तु उसने सार्वजनिक जुआ को प्रोत्साहित किया और वह स्वयं विजयी पक्ष से एक निश्चित प्रतिशत धन लिया करता था।

लन्दन और काउण्टियों की राजधानियों में इस प्रकार के द्वन्दों के दृश्य बहुत आम घटना थी जिनको थैकरे ने अपनी कृति **एस्मांड** में अमर कर दिया। लीसेस्टर फील्डस की तुलना में कहीं अधिक माण्टेगू भवन के पीछे खुले ग्रामीण क्षेत्र को, जिस स्थान पर कि वर्तमान ब्रिटिश अजायबघर (संग्रहालय) बना है, द्वन्द करने वाले इसलिए चुनते थे क्योंकि यह उस समय के लन्दन के किनारे पर था। निम्नांकित पंक्तियों में वर्णित दोहरी घटना जैसी घटनाओं से नगर के जीवन का विक्षुब्ध हो जाना कोई असाधारण बात न थी।

"जैसी सूचना मिली है, नेड गुडईयर ने व्यू फील्डिंग की हत्या कर दी है और फरार हो गया है। ड्रूरी लेन में प्लेहाउस (जुए घर) में झगड़ा शुरू हुआ था। उसी रात को उसी स्थान पर एक कैप्टन ने नवयुवक फुलवुड के साथ वैसा ही व्यवहार किया जिससे वार्विकशायर के दो व्यू कम हो गए। कैप्टन न्यूगेट में है।"

पुनस्स्थापन के पश्चात् से ही विदेशी लोग उन मैदानों की प्रशंसा करते थे जहां अंग्रेज गेंद फेंक कर खेला करते थे। वे कहा करते थे कि वे मैदान इतने समतल हैं कि उन पर अंग्रेज वैसे ही आसानी से गेंद फेंक सकते हैं जैसे बिलियर्ड की बड़ी मेज पर, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में संभ्रान्त लोगों का यहसाधारण मनोविनोद था इसलिए वे हरे-भरे मैदानों पर बड़े गोल पत्थरों को घुमाकर उन्हें चिकना (समतल) रखते थे। ऐन्नी के शासनकाल में ग्रामीण खेल-कूदों में अत्यधिक प्राचीन फुटबाल के साथ एक पिछड़े प्रकार के क्रिकेट का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा था। इस नये खेल में केंट का जिला सर्वाधिक विख्यात था और केण्टवासियों में डार्टफोर्ड के पुरुषों का इस खेल में सर्वाधिक कुशल होने का दावा था।

कुक्कुट-युद्ध में सभी वर्ग अपने-अपने बाजी लगे पक्षी को लघु दंगल स्थल के आस पास घूमकर चिल्ला चिल्लाकर प्रोत्साहित करते थे। यदि दैवयोग से कोई विदेशी वहां आ जाता तो वह निश्चय ही सारे जमघट को पागल मान लेता, क्योंकि वे लोग निरन्तर छह के विरुद्ध चार, पांच के विरुद्ध एक चिल्लाते थे और इसे बड़ी मुस्तैदी (लगन) से दोहराते थे। प्रत्येक दर्शक अपने प्रिय मुर्गे के साथ उस दृश्य में भागीदार था जैसेकि वह मानो उसका दलगत हित हो। एक अधिक खुले हुए क्षेत्र में घुड़-दौड़ का दृश्य बहुत कुछ ऐसा ही होता था। दर्शक, अधिकांश घोड़ों पर सवार होकर, घुड़-दौड़ के रास्ते पर तेज भागते थे और आवेश से चिल्लाते थे। ये सभायें अभी भी क्षेत्रीय अथवा जिलास्तरीय होती थीं। केवल न्यूमार्केट में एक राष्ट्रीय सभा होती थी। वहां निश्चय ही मैदानी भाग के घुड़-सवारों की विशाल संख्या एक प्रतियोगिता के लिए एकत्र होती थी, जिसमें ड्यूक से लेकर ग्रामीण कृषक तक सभी समान स्तर पर माने जाते थे। किसी भी व्यक्ति के पास तलवार नहीं होती थी, वे सभी लोग अश्वक्रीड़ाओं के लिये निर्धारित स्थान के स्वरूप और परिस्थिति के अनुसार कपड़े पहनते थे। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से घुड़-सवारी में बाजी मारने का कठिन प्रयास करता था। रानी ऐन्नी गुप्त सेवा के कोष में से न्यूमार्केट तथा विण्डसर के निकट डैचेट में प्लेटें पुरस्कार में दिया करती थीं। इस क्रीड़ा के कतिपय कुलीन संरक्षकों तथा गोडोल्फिन द्वारा अरब और बार्ब नस्ल के घोड़ों का प्रवेश किया जा रहा था। इस परिवर्तन में इंगलैंड में घोड़ों की शक्ल और चरित्र से सम्बन्धित महान भावी परिणाम निहित थे।

जब हम यह कल्पना करने का प्रयास करते हैं कि हमारे समस्त पूर्वज किस प्रकार से बस्तियों के बाहर अपना मनोरंजन करते थे तो हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि उनमें से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में दूर-दूर बिखरे हुए रहते थे। अधिकांश लोगों के लिए ग्राम ही सामाजिक अन्तःक्रिया की सबसे बड़ी इकाई थी। एक ग्रामीण क्रिकेट मैच अथवा फुटबाल के मैदान का कोलाहल अथवा हरे मैदान में दौड़े आधुनिक क्रीड़ा-क्षेत्रों के संगठित खेलकूद से बहुत भिन्न होते थे। परन्तु अधिकांश लोग अपनी 'कसरत' स्वाभाविक रूप से अपना दैनिक कार्य करते हुए खेत जोतने, टहलने अथवा घुड़-सवारी करने में, कर लिया करते थे। उच्च और मध्य वर्ग में सर्वसामान्य दैनिक कार्य घुड़-सवारी था।

बहुत से लोगों के दरवाजों पर सर्वसाधारण क्रीड़ा (मनोरंजन) मछली मारना, सभी प्रकार की चिड़ियों को जाल में फंसाना और गोली से मारना था। विशेषकर लोग जानवरों का शिकार खेलते थे किन्तु अन्यतम रूप से नहीं। इंगलैंड में शिकारी पशुओं और बहुत से पक्षियों की भरमार थी, जो कि अब अत्यल्प बचे हैं, अथवा विनष्ट हो गए हैं। बहुत सी भूमि की कठोरता से रक्षा की जाती थी और केवल स्वामी ही (खेत के) वहां गोली चलाते थे। परन्तु विशाल भू-भाग ऐसे किसी भी मनुष्य के लिए खुला था जिसके पास जाल अथवा बन्दूक होती अथवा जो लासा लगाने में बड़ा

कुशल होता। ऐन्नी के शासनकाल में और वास्तव में शेष शताब्दी भर, कैम्ब्रिज के चारों ओर पंकभूमि और बिना जुती हुई भूमि पूर्वस्नातकों के लिये सामान्य शिकार-गाह थी जहां से वे तीतर, बतख आदि अनेक प्रकार के पक्षियों को मारकर साथ लाते थे। उन्हें वहां कोई रोक-टोक नहीं थी। इस मनोरम द्वीप के प्रत्येक भाग में बीहड़, झाड़-झंखाड़ तथा दलदल थे जिन पर मनुष्य का कोई ध्यान न गया था और जहां सुदीर्घ काल के उपरान्त जल-निकासी, जुताई अथवा इमारतों का निर्माण होता था। वे हर प्रकार के वन्य जीवन के छिपने के स्थल थे। अंग्रेज अपने घर के द्वार से कुछ कदम आगे जाते ही सर्वोत्तम प्रकृति के सम्पर्क में आ जाता था। विस्तृत क्षेत्र में आमोद-प्रमोद के लिए वह दूर-दूर घूमने निकल जाता।

बहुत कम ग्रामीणों ने किसी प्रकार का शहरी जीवन देखा था। अधिकांश लोग जीवन पर्यन्त ग्राम देवता (यूनान के) और उसके जादू के प्रभाव में रहते थे। अंग्रेजी बच्चों का मानसिक भोजन घरों में आग के पास बैठकर कही गई उन परियों, भूत-प्रेतों तथा डायनों की कहानियां होती थीं जो हाल-हाउस को आते थे। संभवतः बच्चे इन पर अर्ध-विश्वास करते थे किन्तु उन्हें सुनकर थर्रा जाते थे। अब केवल डायन की ओर संकेत किया जा सकता था, न तो उसे फांसी दी जा सकती थी और न डुबाया जा सकता था। इस प्रकार सांसारिक पुराण कथा से भरपूर मनोरंजन होता था। नगर की शंकालुता से अप्रभावित जनसाधारण को अब भी विश्वास था कि जंगलों में परियां नाचती हैं जो किसी राहगीर के निकट आते ही अदृश्य हो जाती हैं।[1] गांवों में थोड़ी पुस्तकें थीं। साधारण किसानों अथवा झोंपड़ी-वासियों ने बाइबिल तथा प्रार्थना पुस्तक के अतिरिक्त कोई छपी सामग्री नहीं देखी थी। उन्होंने दीवालों पर चिपके हुए फ्रांस की जोन तथा अंग्रेजी माल के शौर्यगीत देखे थे जिनमें सुन्दर रोजामण्ड तथा रॉबिन हुड और वन में छोटे बच्चों का बखान होता था। अतः 'तर्क की शताब्दी' की समाप्ति पर भी तथा शासक वर्ग में नागरिक कविता के प्रचलन के बावजूद अंग्रेजी जनता में आश्चर्य करने की प्रवृत्ति मरी नहीं थी। वर्ड्सवर्थ ने अपने मस्तिष्क में कल्पना की वृद्धि का कारण उन परीकथाओं तथा ग्रामीण उत्तरी आंचल के शौर्य-गीतों को माना है जिनको उसने अपनी बाल्यावस्था में सुना था, न कि उन्नीसवीं शताब्दी की कक्षा के बुद्धिवाद को। (प्रील्यूड, पुस्तक ५, १, पृष्ठ २०५ आदि)। राष्ट्र में समरूप मानसिकता

[1] शिक्षित उच्च वर्ग साधारणतया परियों के वास्तविक अस्तित्व में विश्वास नहीं करता था। १७०७ में दार्शनिक शैफ्टेस्बरी ने अपनी पुस्तक **लेटर कन्सर्निग इन्थ्यूजियाज्म** में लार्ड सोमर्स को लिखा था, 'मैं आप जैसे महानुभाव को एक प्रसिद्ध, विद्वान और सच्चे ईसाई पादरी, जिसे आप एक बार जानते थे और जो परियों में अपने विश्वास के बारे में आपको एक पूरा विवरण दे सकता था, के मस्तिष्क में रख सकता था' जैसेकि ऐसा विश्वास करना असामान्य और स्पष्टरूप से बेहूदा हो।

गढ़ने के लिए नगरों में प्रकाशित समाचार पत्र अथवा पत्रिकाएं नहीं थीं। विस्तृत संसार से इस प्रकार के अलगाव में प्रत्येक शायर, प्रत्येक गांव की अपनी परम्परायें, स्वार्थ और चरित्र होता था। ब्लेनहीम के युद्ध अथवा डा० सैकवेरेल पर मुकदमा चलने जैसी कतिपय असामान्य घटनाओं के अतिरिक्त ग्रामीण लोगों को अपने मामलों के सिवा बात करने का कोई अन्य विषय नहीं होता था। जाने-समझे विषयों पर वे अपनी चातुर्यपूर्ण देहाती टीकाओं को अपने ग्रामीण क्षेत्र की बोली में संक्षिप्त रूप से व्यक्त करते थे। स्वयं उनके ग्राम-जीवन का दैनिक मानव-नाटक गपशप और सनसनी-खेज बातों के लिए संतोषप्रद था जिसमें चोरी से सम्बन्धित झगड़े, तस्करी की साहसिक घटनायें, संघर्ष और प्रेम, भूत-प्रेत तथा आत्म-हत्याएं, सराय के स्वामी तथा पनचक्की वाले और पादरी तथा जागीरदार के झगड़े, सभी कुछ होते रहते थे।

सड़कों के निर्माण एवं मरम्मत के लिए यथेष्ट प्रशासकीय तंत्र के अभाव में सड़कों की अब भी खराब दशा थी। जिस पैरिश से होकर सड़क जाती थी वह वर्ष में छह दिन बिना मजदूरी दिए किसानों के श्रम से उसकी देख-रेख करने को कानूनन बाध्य होता था। इस कार्य का बाह्य निरीक्षण नहीं होता था। उन्हीं में से एक को सर्वेक्षक चुन लिया जाता था। विशद सड़कों के प्रयोगकर्त्ताओं पर उनकी मरम्मत का भार न डालकर उन पैरिशों पर, जिनसे होकर सड़क जाती थी, भार डालने का अनौचित्य केवल उस मूर्खता से तुलनीय था जिसमें किसानों को सड़कों के निर्माण के लिए मुफ्त ही कुशल कारीगर मान लिया जाता था जबकि इस कार्य में उनकी कोई रुचि नहीं थी। इसका अर्थ यह हुआ कि द्वीप से रोमनों के चले जाने के पश्चात से बहुत अपर्याप्त संख्या में सख्त सड़कें निर्मित हुई थीं अथवा बनी हुई थीं। मध्य युगों में जब व्यापार नहीं था तो इसका कम महत्व था। उत्तरकालीन स्टुअर्टों के काल में जब व्यापार विशाल था और शीघ्रता से बढ़ रहा था इसका महत्व बढ़ गया था। अच्छी सड़कों का अभाव एक राष्ट्रीय अपमान माना जाने लगा था। सड़कों के प्रयोगकर्त्ताओं द्वारा उसके रख-रखाव के लिए धन देने के लिए चौकियों की स्थापना की नई व्यवस्था संसद के अधिनियमों की कुछ सबसे खराब धाराओं द्वारा लागू की गयी थी। ऐन्नी के शासनारूढ़ होने पर शान्ति के स्थानीय न्यायाधीशों की प्रणाली का चुंगी—चौकियों के प्रबन्ध के लिए प्रयोग किया गया किन्तु शासन के अन्तकाल में चुंगी चौकी के न्यासिकों की विशेष समितियों की कभी-कभी संविधान द्वारा स्थापना की गई। परन्तु जब तक हैनोवर घराना शासनारूढ़ नहीं हुआ तब तक इस साधन द्वारा किसी प्रकार का सामान्य सुधार नहीं किया जा सका। लंकाशायर के एक प्रमुख मार्ग का डिफो ने इस प्रकार वर्णन किया है : "हम अब ऐसे प्रदेश में हैं जहां सड़कों की पटरी पर छोटे-छोटे कंकड़ बिछाये जाते हैं जिससे हम इस सड़क की उस पटरी पर, जो साधारणतया डेढ़ गज चौड़ी होती थी, पैदल अथवा घोड़े पर सवार होकर चल सकें। किन्तु सड़क का मध्य भाग, जहां गाड़ियाँ चलने को बाध्य थीं, बहुत बुरा होता था।"

शीत ऋतु और बुरे मौसम में गाड़ियां सड़क पर चलने का प्रयास नहीं करती थीं। घुड़सवार भोर में ही चल निकलते थे, जिससे लद्दू घोड़ों की लम्बी पंक्तियों के आगे रह सकें, जिन्हें सकडे रास्ते पर पिछाड़ना कठिन होता था।

ऐसी दशाओं में, समुद्री या नदी—यातायात, चाहे वह कितना ही धीमा हो, सड़क यातायात की अपेक्षा विशेषकर भारी सामानों के लिए बहुत सुविधाजनक था। तेज-दौड़ने वाले घोड़ों की टोलियों द्वारा लाइम, रेगिस से लन्डन को मछलियां भेजी जा सकती थीं किन्तु वहां कोयला समुद्र के मार्ग से आता था। इतने पर भी जबकि टिनेसाइड की खान के मुँह पर एक चाल्ड्रन (कोयले की नाप—३६ बुशल) का मूल्य केवल पांच शिलिंग होता था, लन्डन में आने पर इसका दाम ३० शिलिंग हो जाता था। ऊपरी टेम्स नदी के नगरों में तो कोयले का दाम पचास शिलिंग तक हो जाता था। यह अंशतः इस कारण था कि कोयले के समुद्री यातायात पर सेंट पॉल गिरजा के पुर्नानिर्माण तथा फ्रांसीसी युद्ध का व्यय-भार उठाने के लिए कर लगाया जाता था। यार्कशायर, लंकाशायर तथा पश्चिमी मिडलैंड के उन नगरों में कोयला सस्ता था जहां खान के मुँह से काल्डर और सेवेर्न जैसी नदियों द्वारा वह लाया जा सकता था। देश के भीतरी भाग में नदियों द्वारा ढोये गये कोयले पर समुद्री मार्ग से ढोये गए कोयले की भांति कर नहीं लगता था; न ही इस पर डंकर्क के निजी सैनिकों का आक्रमण होता था और न ही टाइन तथा टेम्स नदियों के बीच रॉयल नेवी द्वारा प्रदत्त अपर्याप्त निगरानी व्यवस्था के प्रतिफल प्रतिबन्धों से परेशान किया जाता था।

खानों का स्वामित्व तथा उनके संचालन में दिलचस्पी लेना देश के उच्चतम कुलीनों के गौरव के प्रतिकूल नहीं माना जाता था क्योंकि योरुप के अधिकांश देशों के विपरीत इंगलैंड में सोने और चांदी के अतिरिक्त सभी खनिज पदार्थ भूमि के स्वामियों की सम्पत्ति माने जाते रहे हैं। उस काल के कोयले के जागीरदार मालिकों में लार्ड डार्टमाउथ था जो सैण्डवेल में अपने ग्रामीण निवास के निकट स्टैफर्डशायर की कई ख़ानों का स्वामी था। उसी ग्रामीण क्षेत्र का एक संभ्रान्त व्यक्ति, जिसका नाम विल्किन्स था, उसका प्रतिद्वन्द्वी था जिसने लीसेस्टरशायर की कोयले की खानों को हड़प लिया था।

उस समय लकड़ी के लट्ठों से सहारा न देकर कोयले की खानों में छत को रोकने के लिये कोयले के खंबों को छोड़ देने का चलन था। ४०० फीट अथवा अधिक गहराई तक खान की सुरंगें बनाई जाती थीं और लंकाशायर में १७१२ में इंजीनियरों ने खान से पानी बाहर निकालने की एक ऐसी मशीन बनाई थी जिसे प्रथम वास्तविक वाष्प-इंजिन कहा गया था। टाइन साइड नदी पर जहाजों में कोयला लादने के लिए भारी गाड़ियों के जाने के लिये लकड़ी की पटरियां इस्तेमाल की जाती थीं। अकेले न्यूकैसल के आसपास के क्षेत्र में कोयले के यातायात में बीस हजार घोड़े लगे रहते थे।

मध्य युग की तुलना में बड़ी खानें बहुत अधिक गहरी होती थीं, अतः अग्नि आर्द्रता के कारण अधिक विस्फोट होने लगे थे। उदाहरण के लिए १७०५ में गेटशेड तथा १७०८ में चेस्टर-ले-स्ट्रीट की दुर्घटनाएं, जिनमें एक सौ खनिक मारे गये थे। इसके अतिरिक्त कई मील के घेरे में अनेक घरों तथा व्यक्तियों को भारी नुकसान हुआ था। एक आदमी तो तीन सौ फीट की गहरी सुरंग के मुँह के भीतर से उड़ गया था और उस स्थान से बहुत दूर जाकर गिरा था। उसी उत्तरी डरहम जिले में दो वर्ष पश्चात् एक दूसरा विस्फोट हुआ था जिसमें अस्सी व्यक्ति मरे थे। परन्तु इस समय भी सतह पर खनिजों को निकालने की काफी बड़ी मात्रा थी। पश्चिम में अनेक बीसियों छोटी-छोटी खानें थीं जहां दो-तीन खनिक काम करते थे और कभी-कभी तो अकेला खनिक ही।

इस कथन, कि प्राचीन इंगलैंड में उद्योग की विधि घरेलू थी, का एक महत्वपूर्ण अपवाद हमें सभी प्रकार के खनिकों और प्रत्येक काउन्टी के कंकड़-पत्थर की खानों के खनिकों में मिलता है। कुछ अन्य अपवाद भी थे किन्तु उनको निश्चित करना और परिभाषित करना अधिक कठिन है। अनेक कार्यशालाओं के आहाते इतने बड़े होते थे तथा उनमें प्रशिक्षित होने वाले नौसिखिए एवं वेतनभोगी कर्मचारी इतने अधिक थे कि उन्हें घरेलू पद्धति तथा औद्योगिक पद्धति के बीच में खड़ा माना जा सकता था। उद्योग का सामान्य आधार अब भी शिल्पशिक्षण व्यवस्था थी; लड़के और लड़कियों दोनों के लिए उद्योग में प्रवेश का यही वैधानिक द्वार था। क्रूर स्वामी अथवा स्वामिनियां शिल्पशिक्षण पद्धति का बहुधा दुरुपयोग करते थे। निर्धन शिल्पशिष्यों के प्रति उतना ही बुरा व्यवहार किया जाता था जितना कि बाद वाली कारखाना पद्धति के निकृष्टतम दिनों में बच्चों के प्रति। उस समय न तो निरीक्षक थे और न दुरुपयोग पर रुकावटें (नियंत्रण)। दूसरी ओर शिल्पशिष्य अपने मालिक के 'परिवार' का अंग माना जाता था और औसत आदमी अपने ही परिवार में तथा अपने ही भोजनस्थल पर दुःखी चेहरे नहीं देखना चाहता था। इसके अतिरिक्त शिल्पशिक्षण पद्धति उस अनुशासन तथा दक्ष प्रशिक्षण के लिए अति मूल्यवान थी जिसे यह महत्वपूर्ण 'विद्यालयेतर आयु' की अवधि में प्रदान करती थी। हमारे समय में इस आयु के लोगों की बहुत उपेक्षा होती है। मोटे तौर पर इससे विद्यालय-शिक्षा की कमियां पूरी हो जाती थीं। शिल्पशिक्षण पद्धति शिल्पकौशल एवं चरित्र-निर्माण का प्राचीन अंग्रेजी विद्यालय था।[१]

---

[१] रानी ऐन्नी के शासन में पहले से ही इस प्रकार की शिकायतें थीं कि प्रचलित कानून के अनुसार काम सीखने सम्बन्धी व्यवस्था सार्वभौमिक रूप से अनिवार्यतः नहीं लागू की जाती थी। १७०२ में केन्डल के कारपोरेशन ने एक नये और कठोर कानून को लागू करने की याचना की थी क्योंकि उस समय तक यद्यपि कुछ ऐसे कानून विद्यमान थे

शिल्पशिक्षण में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त बड़ा होने के पूर्व बच्चे कभी-कभी अपने पिता की कुटीर में ही उस अवस्था में कार्य सीखने लगते थे जिसमें कि बाद के समय के कारखाना के बच्चे काम करते थे। इस शैली में विशेषकर कपड़े के उद्योग के लिए सूत काता जाता था। डिफो ने कोलचेस्टर और टौन्टन कपड़े के क्षेत्र में इस स्थिति पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए लिखा था : "इस क्षेत्र के आस-पास पांच वर्ष की आयु से अधिक का ऐसा कोई बालक नहीं था, यदि उसके माता-पिता ने उसकी उपेक्षा न की हो अथवा पढ़ाया न हो, जो अपनी जीविका स्वयं न कमा लेता।" पुनः वेस्ट राईडिंग की कपड़े की घाटियों में तो उसे सभी बच्चे चार वर्ष की आयु से नीचे के ही मिले थे किन्तु वे सभी कमाने में सक्षम थे। बेचारे छोटे कीड़े ! किन्तु कम से कम जब कभी उनके माता-पिता उन्हें खेलने देने जाते थे वे गन्दी बस्तियों के असीम वीरानों की अपेक्षा निकट के खेतों में ही खेल सकते थे।

ग्रामीण कुटीरों में मुख्यतः स्त्रियां और बालक सूत कातते थे, और गांवों तथा कस्बों में मुख्यतः पुरुष कपड़े बुना करते थे। यद्यपि ये दोनों प्रक्रियायें घरेलू परिस्थितियों में चलती थीं फिर भी सेवायोजकों अथवा मध्यस्थों, जो कुटीर स्वामियों से निर्मित माल खरीदते थे, द्वारा पूंजीवादी संगठन और निरीक्षण की स्थापना आवश्यक थी। इंगलैंड के विभिन्न क्षेत्रों में, जहां कपड़े का व्यापार प्रगतिशील था, इस व्यापार के संगठन की पद्धतियां भिन्न-भिन्न थीं।

उस समय का प्रमुख उद्योग कपड़े का व्यापार था। अंग्रेजी निर्यातों का २/५ भाग इंगलैंड में बुना कपड़ा होता था। हमारे बहुत से आन्तरिक (घरेलू) कानूनों तथा आर्थिक एवं विदेशी नीति के बहुत से उपायों का उद्देश्य कपड़े का निर्माण तथा घरेलू व विदेशी बाजारों में उसकी बिक्री को प्रोत्साहित करने का महान राष्ट्रीय लक्ष्य था। यह अनुभव किया जाता था कि संसार के यातायात व्यापार में डच प्रतिद्वन्दियों की तुलना में उपरोक्त लक्ष्य की सिद्धि में हमारा वास्तविक लाभ था। क्योंकि हमारे यहां कपड़े का विशाल उत्पादन होता था, जिसे हम विदेश जाने वाले जहाजों में लादकर भेज सकते थे, जब कि डचों के पास हेरिंग मछली (उत्तरी अतलांतक सागर में मिलने वाली) के अतिरिक्त निर्यात करने के लिए अन्य कुछ न था, जिससे वे दूसरे राष्ट्रों के बीच में केवल माल ढो सकते थे।

कि सात साल तक काम का प्रशिक्षण प्राप्त किये बिना लोग किसी भी व्यापार को स्थापित कर सकते थे फिर भी जब कभी ऐसे लोगों पर उक्त कानूनों के उल्लंघन करने का मुकदमा चलाया जाता तो उनके साथ दया बरती जाती और उनमें से किसी को दण्ड नहीं दिया जाता। (एच. एम. सी. वैगोट, आर, दस, भाग ४, पृष्ठ ३३६)।

संसार के महान बाजारों को अंग्रेजी कपड़े के लिए खुला रखने की इच्छा ने अंग्रेजों को फ्रांसीसी-स्पेनी शक्ति के विरुद्ध १७०२ में युद्ध छेड़ने के लिए मुख्यत: प्रेरित किया था जो उस समय लुई चौदहवें के नेतृत्व में स्पेन, नीदरलैंड, दक्षिणी अमरीका तथा भूमध्य-सागरीय देशों में हमारे माल के प्रवेश को रोकने की तैयारी में थी। १७०४ में जिब्राल्टर पर अधिकार करना और उस पर अधिपत्य बनाए रखना केवल थल सेना अथवा जल सेना की महत्वाकांक्षा न थी। भूमध्यसागर तथा टर्की व्यापार में निर्बाध प्रवेश कपड़े के उद्योग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था। उन प्रदेशों में न केवल हमारे कपड़े की विशाल मात्रा बिकती थी अपितु हमारे व्यापारी स्पेन तथा दक्षिणी इटली से यहां कपड़े के निर्माण में प्रयोग होने वाला तेल लाते थे। स्पेन की मेरिनो भेड़ों का ऊन यहां आता था जिसके बने कपड़े पुन: स्पेन में बेचे जाते थे। जिसका अपना देशी उद्योग ह्रास की अन्तिम अवस्थाओं में था। कुछ वर्षों पूर्व से स्वयं इंगलैंड में अच्छी किस्म की ऊन बहुमात्रा में पैदा की जाती थी जिसके लिए भेड़ों के चारे में सुधार के कई प्रयोग किए गए थे। हमारे अमरीकी उपनिवेशों को हमारे कपड़े की बिक्री के लिए साधारणतया बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था। उसी शताब्दी में रूस में भी उसकी मांग में भारी वृद्धि हो रही थी।

केवल सुदूरपूर्व में भारी अंग्रेजी कपड़े को बेचना असंभव था, और यही सबसे हानिकारक तर्क था जिसके विरुद्ध संसद में अपने हितों की रक्षा के लिए ईस्ट इंडिया कम्पनी को दलील देनी पड़ती थी। किन्तु वह इंगलैंड को जितना चाय और रेशम लाती थी उससे अंग्रेजी कपड़े की बिक्री में असफलता का उसका गंभीर अपराध तथा कपड़े के स्थानापन्नों को खरीदने के लिए सोने अथवा चांदी की ईंटों के निर्यात का उसका दुस्साहस क्षमा हो जाते थे। प्रतिद्वन्द्वी टर्की कम्पनी के व्यापारियों की यह दलील व्यर्थ हो जाती थी कि "यदि भारत से रेशम लाया जाय, जहां इसे सोने-चांदी की ईंटों से सस्ता खरीदा जाता है, तो इससे टर्की के साथ हमारा व्यापार नष्ट हो जायेगा जहां से रेशम लेकर बदले में हम कपड़ा भेजते हैं।" कपड़ा-निर्माताओं, टर्की व्यापारियों तथा कट्टवादी (रूढ़िवादी) अर्थशास्त्रियों की दलीलें फैशन और ऐश-आराम (विलासिता) की आवश्यकताओं के सामने फीकी पड़ जाती थीं। 'हमारे वैभवशाली बांके स्पिटलफील्डस् में निर्मित कपड़ों की अपेक्षा भारतीय ड्रेसिंग गाउन पहनकर आत्म-प्रशंसा करते हैं।' इसके अतिरिक्त, सब महिलायें 'टी' पीती थीं। अत: भारतीय व्यापार को उन्नति करने की अनुमति मिली और उसके बावजूद कपड़े के व्यापार में भी उन्नति हुई।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के भारी जहाजों के कारण ही यह संभव हो सका था कि अब कम से कम धनी वर्गों में चाय ही नहीं काफी भी एक साधारण पेय हो गया था। चार्ल्स द्वितीय के शासन से लेकर जार्जों के प्रारंभिक काल तक लन्दन काफीहाउस सामाजिक जीवन का केन्द्र था। उस समय प्रचलित अत्यधिक सुरापान की आदतों से बहुअपेक्षित निवृत्ति इसी से मिलती थी क्योंकि काफीहाउस में शराब पीना वर्जित था। रानी

ऐन्नी के काल में काफ़ीहाउसों (कक्षों) की सूची में लगभग पांच सौ नाम सम्मिलित थे। प्रत्येक प्रतिष्ठित लन्दनवासी का अपना प्रिय काफीघर था जहां उसके मित्र अथवा ग्राहक निश्चित समय पर उसे पा सकते थे। जब कोई दूकानदार दूकान छोड़कर काफीघर जाता था तो अपने शिल्प-शिष्य (ऐप्रेन्टिस) से बतलाता था कि वह जब लोयड काफी हाउस में होता है तो पत्रों को पढ़ने और बिक्री करने में वह कभी नहीं चूकता।[1]

ठाट-बाट से रहने वालों (बांकों) की मंडली जेम्स स्ट्रीट में व्हाइट के चाकलेट हाउस में एकत्र होती, जहां युवा श्रेष्ठियों को फैशनेबुल जुआड़ी तथा दुराचारी (व्यसनी) भ्रष्ट करते तथा उनका सारा धन व्यय करा देते थे। इस पर हार्ले ने घोर आपत्ति की थी। टॉरी दल के सदस्य कोको ट्री चाकलेट हाउस तथा व्हिग दल के सदस्य सेण्ट जेम्स काफीहाउस जाते थे, कावेन्ट गार्डेन के निकट विल्स काफीघर में कवि, आलोचक तथा उनके संरक्षक एकत्र होते थे। टर्बी के काफी हाउस में पादरी आते थे। विद्वान मंडली का प्रिय काफी हाउस ग्रेशियन था। इसी प्रकार डिसेन्टर्स (असहमतिवादियों), क्वेकर्स, पैपिस्टों और जैकोबाइट्स के लिए भी विशिष्ट काफीघर उपलब्ध थे। तम्बाकू के धुएं के बादलों के वातावरण में अंग्रेजी राष्ट्र की भाषण की सार्वभौमिक स्वतंत्रता सरकार अथवा गिरजाघर (धर्म) अथवा अपने शत्रुओं के विरुद्ध समान प्रबलता से व्यक्त होती थी जिस पर बहुत समय तक विदेशियों को आश्चर्य होता रहा। काफीहाउस के जीवन का यही सारतत्व था।

आज के जीवन में जो स्थान क्लब को प्राप्त है उस समय वही काफी हाउस को प्राप्त था, किन्तु वह एक अधिक सस्ता और अनौपचारिक ढंग का था जिसमें अजनबियों (अपरिचितों) को प्रवेश की अधिक स्वतंत्रता थी। जिन दिनों लोगों को अपने पद का सदैव ध्यान रहता था, काफीहाउस के जीवन का समतादायी प्रभाव था। काफी हाउस में नीली धारियों और तारों से सुशोभित उच्च-पदासीन लोग अशासकीय संभ्रान्त जनों के साथ इस प्रकार बैठे देखे जा सकते थे जैसे कि उन्होंने अपने गुणों तथा दूरी के अंशों को घर पर ही छोड़ दिया हो, किन्तु यही सब कुछ नहीं था। उन दिनों जब तारों तथा

---

[1] १७०६ में प्रकाशित नेड वार्ड की पुस्तक वैल्दी शापकीपर में उसकी दैनिक दिनचर्या का इस प्रकार वर्णन किया गया है : सुबह ५ बजे उठना; ८ बजे तक गणनागृह में रहना; तब रोटी और मक्खन का नाश्ता करना; दो घंटे तक अपनी दूकान में रहकर फिर पड़ोस के काफीघर में समाचारों के लिए जाना; पुनः दूकान में घर पर बारह बजे भोजन करने के पूर्व तक रहना; एक बजे चेंज नामक स्थान पर जाना; ३ बजे कार-बार के सिलसिले में लायड के काफीघर में जाना; पुनः १ घंटा दूकान पर; तब किसी अन्य काफीघर में मनोरंजन के लिए जाना; उसके बाद दूकान बन्द कर अपने परिचितों के साथ शाम के हल्के भोजन के समय से पूर्व तक शराब पीना और तब ९ बजे रात्रि के पहले सोने के लिए जाना।

प्रभावपूर्ण पत्रकारिता का चलन नहीं था, काफीहाउस में सबसे सरलता से समाचार ज्ञात हो जाते थे। चेरिंग क्रास पर स्थित विंडसर काफीहाउस तो स्वयं विज्ञापन करता था कि "बारह पेंस प्रति क्वार्ट की दर से सर्वोत्तम चाकलेट देने के साथ डाक आते ही वहां 'हार्लेम कूरैण्ट' का अनुवाद भी दिया जाता है।" समाचार पाने का प्रयास केवल उसके राजनैतिक, सैनिक एवं सामान्य रुचि के लिए ही नहीं किया जाता था अपितु व्यापार के उद्देश्य से भी, विशेषकर लोयड्स हाउस में, होता था। एडवर्ड लोयड, जिसका नाम जहाजरानी के संबंध में लोगों की जबान पर तुरन्त आ जाता है, अपने जीवन काल में रानी ऐन्नी के शासन में लोम्बार्ड स्ट्रीट पर काफीहाउस का मालिक था। उसके प्रतिष्ठान में व्यापारी सबसे ताजा खबरें पाने तथा विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापों के लिए आवश्यक वैयक्तिक आदान-प्रदान और परामर्श के लिए आया करते थे। उस समय के समाचार-पत्रों में व्यापार स्तंभ नहीं होता था और न जहाजरानी के बारे में ब्यौरे। जो महत्व आज प्रकाशित समाचारों का है वही कई मामलों में मौखिक समाचारों का था। और व्यापारियों के लिए लोयड में होने वाली बात-चीत बड़े महत्व की थी। रानी ऐन्नी के शासन की समाप्ति के पूर्व लोयड में नीलामों तथा जहाजरानी की खबरें पढ़ने के लिए एक मंच बना दिया गया था। 'हाई चर्च का लो चर्च' तथा 'डिसेन्ट' के प्रति झगड़ा राजनैतिक तथा धार्मिक क्रोध एवं वाक्‌चातुर्य के प्रदर्शन का मुख्य विषय था। इतने पर भी, दूसरे पक्ष में, विलियम और ऐन्नी के शासनकालों में शुद्ध धार्मिक क्रिया और पुनर्जीवन का बोलबाला था जिनका देश के जीवन पर स्थायी प्रभाव पड़ा तथा जिन्होंने भविष्य के महान् विकासों का बीजारोपण किया था। जिस युग की देन, धर्मार्थ विद्यालय तथा ईसाई ज्ञान-संवर्द्धन सभा है वह हाई चर्च तथा लो चर्च के झगड़ों में ही समाप्त नहीं हो गया। इनमें से कुछ अच्छी क्रियाओं में दोनों दलों के सदस्यों का परस्पर सहयोग रहा तथा उन्होंने 'डिसेन्टर्स' (विमतावलंबियों) से भी सहयोग किया।

धार्मिक पुनर्जीवन का सूत्रपात जेम्स द्वितीय के संक्षिप्त एवं तूफानी शासनकाल में हुआ था। डेवेनांट नामक टॉरी पुस्तिका लेखक ने रानी ऐन्नी के प्रारंभिक वर्षो में पुराने समय की उन बातों का वर्णन किया जिन्होंने लोगों की आत्माओं को हिला दिया था।

"राजा जेम्स द्वितीय ने देश के धर्म में परिवर्तन करने के लिये जो उपाय किये उनसे सभी प्रकार के मनुष्यों के मस्तिष्कों में ताजा उत्साह जागृत हुआ। जिसे खोदने का उन्हें भय था उसे उन्होंने अधिक आग्रहपूर्वक पकड़ लिया। दरबारियों ने चर्च आफ इंगलैंड को असंतुष्ट करने का कोई कार्य करने की अपेक्षा अपने पदों को त्यागना अधिक अच्छा समझा। न ही जहाजी बेड़ों तथा सेनाओं में रहने के निन्दनीय ढंगों से हमारे नौसैनिकों तथा थल-सैनिकों के सिद्धान्तों में कोई अन्तर आया। वे सब अपरिवर्तित बने रहे। पादरियों ने अपने अनुयाइयों के साथ मर मिटने में सन्नद्धता दिखलाई तथा उन्होंने देवत्व के विवादास्पद भागों की व्यवस्था आदिमकालीन साहस

और प्रशंसनीय विद्वता के साथ की। सर्वत्र गिरजाघरों में भीड़ें रहने लगी और धार्मिक प्रपीड़न की संभावनाओं ने यद्यपि कभी कभी दुस्साहस के कारण ही होती थीं, भक्ति को जन्म दिया।"

जिस संकटकाल ने धार्मिक पुनर्जीवन को जन्म दिया था उसकी समाप्ति के साथ नैतिकता तथा धार्मिक पुनर्जीवन के लक्षण नहीं मिट सके। इसका प्रथम उदाहरण यह है कि इसने 'चर्च ऑफ इंगलैंड' के भीतर पूर्व स्थित धार्मिक संगठनों के कार्य को बड़ा सहारा दिया। ये संगठन गम्भीर युवा पुरुषों के समूह थे जो साधारणतया किसी सक्रिय पादरी के प्रभाव में आकर एक दूसरे को धार्मिक जीवन एवं अभ्यास में सुदृढ़ करने के उद्देश्य से संगठित होते थे। अनेक वर्षों पश्चात्, जॉन वेसले का मूल विचार चर्च के भीतर ऐसे संगठनों का निर्माण करना था जो उनसे मिलती-जुलती हों जिन्हें उसके उत्साही पादरी पिता ने विलियम और ऐन्नी के शासनकालों में सहायता दी थी और जिनकी रक्षा की थी। इन समूहों का प्रथम उद्देश्य व्यक्तियों और परिवारों में ईसाई जीवन का प्रवर्तन करना था तथा गिरजाघरों में उपस्थिति, पारिवारिक प्रार्थनाओं तथा बाइबिल के अध्ययन को प्रोत्साहित करना था। किन्तु इस प्रेरणा से शीघ्र ही अधिक सार्वजनिक क्रियाओं की वृद्धि हुई। इन क्रियाओं में कुछ को डिसेन्टर्स (विमतावलंबियों) की प्रतिद्वन्द्विता में चलाया जाता था और कुछेक को उनके सहयोग से।

विमतावलंबियों का दोनों विश्वविद्यालयों में कानूनन प्रवेश विषिद्ध था तथा बहुत से विद्यालयों में उन्हें कानूनन अथवा प्रथानुसार प्रवेश नहीं मिलता था। अतः उन्होंने सम्पूर्ण देश भर में अपने अनेक उत्तम विद्यालय तथा विद्यापीठ स्थापित कर डाले थे। जिनमें प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चत्तर शिक्षा देने की व्यवस्था थी। इससे बहुत ईर्ष्या उत्पन्न हुई और ऐन्नी के शासन के अन्त काल में अंततः 'हाई चर्चमेन' उन्हें दबाने के लिए 'शिज्म ऐक्ट' पारित कराने में सफल हुए। यह अधिनियम धार्मिक उत्पीड़न के लक्ष्य से पारित हुआ था जिसे जार्ज प्रथम के काल में समाप्त कर दिया गया। किन्तु चर्च ने अधिक उदारता से 'नानकन्फार्मिस्ट' स्कूलों की चुनौती का उत्तर दिया। ऐन्नी के शासन में सैकड़ों धर्मार्थ विद्यालयों की स्थापना सारे इंगलैंड में हुई थी जिनका उद्देश्य निर्धनों के बच्चों को पढ़ने-लिखने तथा नैतिक अनुशासन एवं इंगलैंड के चर्च के सिद्धान्तों की शिक्षा देना था। उनकी बहुत आवश्यकता थी। राज्य निर्धनों की शिक्षा के लिए कुछ भी नहीं करता था और साधारण पैरिश में किसी प्रकार के धर्मस्व विद्यालय न थे, यद्यपि बहुत से गांवों में वृद्धाओं तथा गैर-सरकारी व्यक्तियों द्वारा थोड़ी फीस लेकर ग्रामीणों को पढ़ना सिखाया जाता था। कहीं-कहीं धर्मस्व 'ग्रामर स्कूल' मध्यम वर्ग को माध्यमिक शिक्षा प्रदान करते थे।

धर्मार्थ विद्यालयों के आन्दोलन के योग्य संचालकों ने शैक्षणिक धर्मस्वता के क्षेत्र

में जनतंत्रीय सहयोग के सिद्धान्त का प्रवेश कर दिया था। वे केवल कुछ धनवान संस्थापकों की सहायता पर निर्भर नहीं रहते थे। मुख्यालयों की यह नीति थी कि एक पैरिश के स्थानीय लोगों को विद्यालय की स्थापना के लिये प्रेरित किया जाय। छोटे दुकानदारों तथा दस्तकारों को स्वयं चन्दा देने तथा अन्य लोगों से चन्दा एकत्र करने को प्रोत्साहित किया जाता था तथा उन्हें सफलता में व्यक्तिगत रुचि लेने एवं प्रति वर्ष सहायता-प्राप्त स्कूल के नियंत्रण में व्यक्तिगत भाग लेने की शिक्षा दी जाती थी। "संयुक्त स्कंध उद्यम" के सिद्धान्त को उस युग में जीवन के अनेक पक्षों में अपनाया जा रहा था। अन्यों में परमार्थ (परोपकार) तथा शिक्षा भी सम्मिलित थी। ऐन्नी के शासन के अन्तकाल तक लन्दन क्षेत्र में लगभग ५००० बालक-बालिकाएं नए धर्मार्थ विद्यालयों में पढ़ते थे। लगभग २०,००० शेष इंगलैंड में पढ़ते थे। 'जनरल एसेम्बली आफ चर्च' द्वारा प्रेस्बीटेरियन स्काटलैंड में भी इस आन्दोलन का प्रचार किया जा रहा था। इस योजना के मुख्य अंग स्कूल में बच्चों को साफ-सुथरी पोशाक पहनाना तथा स्कूल छोड़ने के बाद अच्छे रोजगारों में अपरेन्टिस बना देना था। १७०८ में लन्दन के एक विद्यालय में एक निर्धन बालक की पोशाक पर ६ शिलिंग २ पैंस तथा एक निर्धन बालिका की पोशाक पर १० शिलिंग ३ पैंस व्यय किया जाता था।

इस युग का एक अन्य विशेष संगठन "आचरण-सुधार समाज था"। उस युग की उच्छृंखलताओं के विरुद्ध इस संगठन में चर्चमैन तथा विमतावलंबियों दोनों का सहयोग था। मदिरा पीकर बेहोश होने, पाखंडपूर्ण शपथ लेने, सार्वजनिक अभद्रता एवं रविवार को व्यापार करने के विरुद्ध हजारों अपीलें जारी की जाती थीं। किन्तु हमें ज्ञात नहीं हैं कि लन्दन में भाड़े पर चलने वाली घोड़ा-गाड़ियों के कोचवानों तथा पश्चिमी काउन्टी के नाविकों में झूठी शपथ खाने के विरुद्ध शिष्टाचार अपीलों को कितनी सफलता मिली थी। संभवत: इस दिशा में चलाए जाने वाले अनेक मुकदमें अधिक प्रभावशाली थे। निष्प्रभावपूर्ण कानूनों को लागू करने में मजिस्ट्रेटों को निर्लज्ज बाध्यता का सहारा लेना पड़ता था। इन क्रियाओं का तीव्र विरोध हुआ। हाई चर्चमैन में से कुछ लोग जैसे सैकरवेल, पापाचार, अनैतिकता, धर्मोल्लंघन तथा फूट को दबाने के लिये, धर्म के प्राचीन अनुशासन को लागू करने पर जोर देते थे। उनके विचार से, आचरण में सुधार के लिए नये प्रकार का समाज, जिसमें साधारण जनता तथा विमतावलंबी (डिसेन्टर्स) भी भाग लेने को स्वतंत्र थे, चर्च न्यायालयों को आवेदन न करके साधारण मजिस्ट्रेटों से आवेदन करता था, जिसका असफल होना स्वाभाविक था। कुछ बुद्धिमान विषयों, जैसे शार्प तथा होल्ट जैसे न्यायाधीशों को यह भय था कि संगठित दोषारोपण से दुर्भावना, भ्रष्टाचार एवं धमकी देकर घूस लेने जैसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलेगा। अनेक मजिस्ट्रेट तो परोपकारी सूचनादाताओं के साक्ष्य को निश्चय ही अस्वीकार कर देते थे, कई स्थानों पर उग्र भीड़ बड़ी खतरनाक हो जाती थी और

शिष्टाचार समाज का कम से कम एक सक्रिय सदस्य तो तत्काल मार डाला गया था।

इतना होने पर भी हजारों मुकदमें सफल हुए थे। यह कहा जाता था कि एक गुण-वान व्यक्ति के अतिरिक्त कोई भी सार्वजनिक स्थान में सुरक्षित होकर शपथ नहीं ले सकता था। इन मुकदमों को एक प्रबल जनमत से सहायता मिलती थी। अनेक शान्ति-प्रिय नागरिकों ने पाया कि पुनस्स्थापना के पश्चात् से पियक्कड़ों द्वारा सौम्य नागरिकों को तंग करने, स्त्रियों की अपमान से रक्षा करने तथा भद्रता एवं व्यवस्था के किसी भी प्रदर्शन को सुरक्षित रखने में मजिस्ट्रेट निन्दनीय ढंग से शिथिल रहते थे। समुदाय के अधिकांश सदस्य रविवार के व्यापार के इच्छुक नहीं थे। डील के मेयर, एक साहसी और कर्मठ व्यक्ति, ने नगर के व्यवहार के विरुद्ध अकेले ही एक अभियान चलाया और अपने कई उपायों में सफल हुआ, वह १७०८ में पुनः मेयर निर्वाचित हो गया। यह निश्चय ही सम्भव हो सकता है कि झूठी शपथ खाने एवं रविवार के दिन यात्रा करने से सम्बन्धित बहुत से मुकदमें केवल परेशान करने वाले हों और जार्जों के काल में एक समय ऐसा आ गया था जब शिष्टाचार समाज लाभ के साथ ही बड़ी हानि भी पहुँचा रहा था और सरलता से समाप्त हो सकता था किन्तु ऐन्नी के शासनकाल में इसके कार्यकलापों से सड़कें तथा मदिरालयों में भद्र लोगों को अधिक सुखकर वातावरण मिला। इससे मदिरापान कर हुड़दंग करने में कमी हुई तथा रविवार के दिन श्रमिकों तथा व्यापारियों को शान्ति मिली।

अंग्रेजों के रविवार की अधिक निराशाजनक दशा का वर्णन १७१० में एक जर्मन यात्री ने इस प्रकार किया है :

"तीसरे पहर सेण्ट जेम्स पार्क में भीड़ें देखने जा सकते हैं। रविवार को अन्य कोई मनोरंजन करने की अनुमति नहीं है। इस नियम का अन्यत्र इतनी कठोरता से पालन नहीं होता होगा। न केवल सभी प्रकार के खेल वर्जित हैं तथा सार्वजनिक गृह बन्द हैं अपितु नौकाएं तथा सार्वजनिक घोड़ा गाड़ियां भी नहीं चल सकती हैं। मेरी आतिथ्यकर्त्री तो किसी परदेशी को बांसुरी भी नहीं बजाने देती है, नहीं तो उसे दण्ड मिलेगा।" उसने खिन्न होकर कहा था कि रविवार को काम-काज ठप करना ही केवल एक दृश्य चिह्न है जिससे अंग्रेज ईसाई मालूम होते हैं।

किन्तु धार्मिक पुनर्जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और स्थायी प्रभाव 'ईसाई ज्ञान संवर्द्धन समाज' तथा उसकी शाखा "विदेशों में धर्म प्रचार समाज" ने डाला। दोनों के उन्ननायक एक ही लोग थे। उन सब में अनथक डा० टॉम्स ब्रे था। जो प्रेरणा बाद में स्त्रियों के व्यापार तथा दासता के उन्मूलन के आन्दोलन की विशेषता बनी उसी ने धर्म-प्रचारकों, पादरियों तथा सामान्य लोगों की इन स्वयं सेवक समितियों को प्रेरित किया जिसमें हाई तथा लो चर्च, नानजरर तथा नानकन्फार्मिस्ट सभी थे। विलियम के

शासन के अन्तिम वर्षों तथा ऐन्नी के शासन के प्रथम वर्ष में ये लोग पूर्णतया सक्रिय रहे। वाइबिल तथा अन्य धार्मिक साहित्य का प्रचार उनका प्रमुख उद्देश्य था। अतएव वे धर्मार्थ विद्यालयों के महान् समर्थक थे, जहां निर्धनों को उन्हें पढ़ने की शिक्षा दी जा सकती थी। ये दोनों आन्दोलन साथ-साथ चले इस 'समाज' के प्रकाशनों का सेना में मार्ल वारो तथा जहाजी दस्ते में वेनवो तथा रूके ने स्वागत किया। देश के जिलों में सस्ती बाइबिलें तथा प्रार्थना पुस्तकें वितरित की गई। तथा अमरीका को बाइबिल तथा अन्य पुस्तकों को वड़ी मात्रा में भेजना प्रारंभ किया गया। शेष संसार को भी इससे कम मात्रा में पुस्तकें भेजी गई। इसकी तुलना में वाद के वर्षों में 'समाज' ने विशाल मात्रा में यह कार्य किया था। विदेशों में इंगलैंड की बढ़ती हुई शक्ति और समृद्धि के साथ इस क्रिया में वृद्धि होती गई। ये क्रिया-कलाप अंग्रेजी धार्मिक जगत् के एक सहज-स्फूर्त्ति आन्दोलन के परिचायक थे जिससे एक ओर तो वह साम्प्रदायिक तथा राजनैतिक झगड़ों से निकलकर व्यापक दृष्टि के ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता था जहां उत्साह से घृणा की तुलना में कोई अधिक अच्छी वस्तु उत्पन्न हो सके।

ऐन्नी के शासनकाल में, और उसके बहुत पूर्व और पश्चात् भी, राजनैतिक आवेशों का मूल कारण धार्मिक मतभेद थे। अतः यदि कोई अंग्रेज इतिहासकार अन्य विषयों की व्याख्या करना चाहता है तो उसे धर्म की उपेक्षा करनी दुगुनी असंभव है। परन्तु उसे यह भुलाने का लोभ नहीं करना चाहिए कि राष्ट्र की धार्मिक भावना में झगड़ों की तुलना में वहुत कुछ था यद्यपि दैवयोग से झगड़ों से राजनैतिक स्वतंत्रताओं का वड़ा भाग उत्पन्न हुआ। हाई अथवा लो चर्च की दलगत भावनाओं से अछूता रहकर अनेक शांतिप्रिय पैरिशों तथा विनम्र परिवारों का धार्मिक जीवन चलता रहता था। अंग्रेजी धर्म मुख्यतया प्राचीन जगत के जीवन का एक स्वस्थ और स्वतंत्र कार्य था। एक ओर मिथ्याविश्वास तथा धर्मान्धता तथा दूसरी ओर भौतिक वर्बरता के बीच सुचारु रूप से अपना पथ निर्धारण करते हुए धार्मिक जीवन चलता था।

और दलगत संघर्ष की कटुता के बावजूद शिक्षित लोगों की मनोदशा मुख्य रूप से शांति, उदारतापूर्ण आशावाद से समन्वित थी जोकि अठारहवीं शताब्दी के ब्रिटेनवासी की विशेषता कही जाती हैं। यह उचित ही कहा गया है कि :

"एडिसन के काल के इंगलैंड का सौभाग्य था कि न केवल (१६८८) की गौरवमयी क्रान्ति ही उसके पीछे थी वरन् मिल्टन जैसे कवि, न्यूटन जैसे भौतिकशास्त्री तथा लॉक जैसे दार्शनिक भी थे।"

ब्रिटेनवासियों तथा मनुष्यमात्र की सर्वप्रिय महत्वाकांक्षाएं पूरी हो गई थीं, संविधान की स्थापना हो गई थी और स्वतंत्रता प्राप्त हो गई थी। होमर तथा वर्जिल से बढ़ चढ़ कर नहीं तो कम से कम उनके समकक्ष कवि हो चुके थे। ग्रह-नक्षत्रों को पथ-भ्रान्त होने से बचाने वाले नियम को खोज लिया गया था तथा मस्तिष्क की यथार्थ क्रिया का

भी उद्घाटन हो चुका था। ये सब चीजें अंग्रेजों ने नहीं वरन् ईसाइयों ने की थीं। न्यूटन तथा लॉक की प्रतिभाशाली व्याख्याओं ने एक रहस्यमय ब्रह्माण्ड में रहने के मानसिक तनावों को ही दूर नहीं किया था प्रत्युत् उनसे धर्म के सिद्धान्तों की परिपुष्टि हो गई थी। (बैसिल विल्ले, **सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी बैकग्राउण्ड**, पृष्ठ २६४)। वेस्टमिन्स्टर में संसद सेण्ट जैम्स में क्वींस कोर्ट से दो मील की दूरी पर संसार के महानतम नगर का केन्द्र स्थित था जो इंगलैंड के किसी अन्य भाग की तुलना में संसद तथा कोर्ट के अधि-कार-क्षेत्र से कम प्रभावित था। लंडन का शासन स्वतंत्र रूप से निर्वाचित मजिस्ट्रेटों द्वारा होता था। पुलिस व्यवस्था (शान्ति और व्यवस्था) भी उस नगर के सिपाही करते थे। उसकी अपनी निजी सेना रक्षा के लिए नियुक्त थी। पड़ोस की राजधानी के लिए, द्वीप भर में विशालतम तथा सबसे कम व्यवस्थित भीड़ वाला यह नगर दुर्जेय (भयंकर) था। यद्यपि उस समय लन्डन की जनसंख्या तथा क्षेत्र आज के लन्डन की जनसंख्या तथा क्षेत्र के केवल दसवां अंश थे किन्तु फिर भी उसके आज के सापेक्षित महत्व की तुलना में उसका उस समय अधिक महत्व था। अपने निकटतम अंग्रेजी प्रतिद्वन्द्वियों, ब्रिस्टल तथा नार्विक, से वह कम से कम पन्द्रह गुने निवासियों के कारण बढ़-चढ़ कर था। इंगलैंड के गांवों तथा नगरों का अधिकांश व्यापारिक कार-बार उसके व्यापारियों तथा बाजारों द्वारा नियंत्रित होता था। वस्तुतः व्यापार की जीवनी-शक्ति वह स्वयं चूस लेता था। ब्रिस्टल के लोगों का यह विचित्र दम्भ था कि वे अपने व्यापार को लन्डन से स्वतंत्र रखते थे। अमरीकी माल उसके बन्दरगाह पर आता था जहां से वह उनके स्वयं के वाहकों तथा एजेन्टों द्वारा ले जाकर पश्चिम में बेचा जाता था। अन्य सभी स्थानों पर व्यापार का नियंत्रण राजधानी (लन्डन) से होता था। नार्विक एक्सेटर की बनी सर्जें तथा एक्सेटर नार्विक का माल खरीदता था, परन्तु यह सब लेन-देन लन्डन में ही होता था प्रत्येक काउंटी लन्डन को खाद्य, कोयला अथवा कच्चा माल भेजने के महान् राष्ट्रीय व्यापार में सहयोग देती थी। बदले में लन्डन अपने विलासिता के व्यापारों के बने हुए मालों तथा अपने विदेशी व्यापार के दूरस्थ उत्पादनों को प्रत्येक काउंटी को भेजता था। देश का लगभग सम्पूर्ण ईस्ट इण्डिया व्यापार लन्डन के बन्दरगाह से होता था और यही स्थिति अधिकतम यूरोपीय, भूमध्यसागरीय, अफ्रीकी तथा अधिकांश अमरीकी व्यापार की थी।

राजधानी की जनसंख्या का निम्न स्तर, एक महान् बाजार तथा बन्दरगाह के गोदी मजदूर तथा अकुशल आकस्मिक मजदूर भीड़-भाड़ की अत्यन्त गन्दी दशाओं में रहते थे जहां न सफाई थी और न पुलिस तथा डाक्टर थे तथा जो परमार्थ, शिक्षा तथा धर्म के विस्तार के बहुत परे रहते थे। डिफो के समय में उनकी यही स्थिति मुख्य नगर तथा बाहर की स्वतंत्र बस्तियों में थी। उनमें मृत्युदर भी भयंकर थी तथा उस समय भी बढ़ रही थी, क्योंकि वे जौ की शराब के स्थान पर स्प्रिट पीना सीख रहे थे। 'एलास्टिआ' में अपराधियों का विशिष्ट अड्डा था जो 'टेम्पल' के पड़ोसी वकीलों के सम्मान के लिए

बहुत घातक था। वास्तव में ऐन्नी के शासनारूढ़ होने के कुछ वर्ष पूर्व उसका उन्मूलन कर दिया गया था। किन्तु वहां से चोरों, राहजनी करने वालों तथा वेश्याओं के समुदाय केवल इधर-उधर बिखरकर सारे महानगर के क्षेत्र में फैल गए थे। उनका गुप्त संगठक, कुख्यात जोनैथन वाइल्ड, इस काल में बहुत उन्नति कर गया था, जो प्रकट रूप से एक उत्साही न्यायाधीश था किन्तु वास्तव में वह विशाल मात्रा में चोरी के माल का प्राप्त-कर्त्ता था। अपने अधीनस्थों में अनुशासन कायम रखने के उसके कुछ तरीकों को "बेगर्स ऑपेरा" के प्रारंभिक दृश्य में 'पीचम' से सम्बद्ध कर दिया गया है। इस ऑपेरा को वाइल्ड के विलम्ब से हुए रहस्योद्घाटन, अभियुक्त बनने तथा १७२५ में फांसी लगाए जाने के तुरन्त बाद में लिखा गया था। उसके जीवन की कथा मजिस्ट्रेटों तथा पुलिस कर्मचारियों की असमर्थता को तर्कतः सिद्ध करती है। इस असमर्थता का निराकरण मध्य शताब्दी में होना प्रारंभ हुआ जब सुप्रसिद्ध फील्डिंग भाइयों ने "बौ" सड़क पर अपना कार्यालय स्थापित किया। लन्डन के अकुशल श्रमिकों में ईमानदार मजदूर भी पूर्णतया अशिक्षित थे। मांझियों में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, जोनैथन ब्राउन, ने विमतावलंबी उपदेशक कैलमी से स्वयं कहा था कि उसने तथा उसके साथियों ने यह कभी नहीं सुना था कि ईसा कौन और कैसा था। यद्यपि उनके नेता उन्हें सरलता से सभा-गृहों तथा पोपवादी गिरजों को तात्कालिक राजनैतिक आवश्यकता के अनुसार जला देने के लिए तैयार कर लेते थे। इस दुर्दशा को समाप्त करने के लिए सार्व-जनिक चन्दों में धर्मार्थ विद्यालयों की स्थापना की जा रही थी और १७११ में संसद ने करदाताओं के धन को उपनगरों में पचास नए गिरजे बनवाने के लिए व्यय करने का प्रस्ताव स्वीकार किया था। इसका उद्देश्य ऐसे हजारों व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था करना था जिनके लिए प्रतिष्ठित गिरजा (इस्टेबलिश्ड चर्च) कुछ नहीं करता था। संसद की एक समिति ने उस जिले में भिन्न धर्मावलम्बियों की संख्या एक लाख बताई थी। उन लोगों ने पहले ही अपने गिरजे स्थापित कर लिए थे।

पर सबसे बढ़कर बात तो यह है कि लन्डन विषमताओं का एक नगर था। बन्दरगाह और बाजार में, जहां इंगलैंड तथा विश्व के सामानों का विनियम होता था, न केवल अकुशल श्रमिकों के कठिन परिश्रम की जरूरत पड़ती थी अपितु फोरमैनों, क्लर्कों, दूकानदारों तथा हर प्रकार के दलालों का निरीक्षण करने वाली सेना की भी जरूरत पड़ती थी। इसके अतिरिक्त, लन्डन केवल एक बाजार न था, यह सामानों के उत्पादन, निर्माणान्त प्रक्रियाओं, तथा विलास-सामग्री के व्यापार का एक केन्द्र भी था जहां द्वीप के सर्वाधिक कुशल कारीगर काम में लगे थे। कई हजार ह्यूगनट रेशम निर्माता हाल में स्पाइटल फील्डस में बस गए थे और अनेक कुशल व्यापार जो पहले फ्रांस में होते थे, अब शरणार्थियों द्वारा 'लॉंग ऐकर' तथा 'सोहो' में किए जा रहे थे जो शीघ्रता से अंग्रेज बनते जा रहे थे तथा व्हिगों को इसलिए अपना मत देते थे ताकि उन्हें काल्विनवादी पूजा करने के लिए स्थानीय जनता से सहिष्णुतापूर्ण व्यवहार मिल

सके। सम्पूर्ण देश के सर्वोत्तम दस्तकार इंगलैंड में आकर एकत्र हो गए थे। नगर की सर्वोत्तम दूकानों में देहात के संभ्रान्त जनों के पुत्र शिल्पशिष्य के रूप में काम करते थे जिन्हें अपने बड़े भाइयों की अपेक्षा अधिक समृद्ध जीवन विताने की आशा थी तथा जो अवकाश के समय अच्छे गहरे बालों के टोप पहनते थे। बृहत्तर लन्डन अंग्रेजी साहित्यिक तथा बौद्धिक जीवन और फैशन, कानून तथा प्रशासन का केन्द्र था। इन सभी कारणों से राजधानी में जहां एक ओर दुर्भेद्य अज्ञान था तो दूसरी ओर विशाल तथा विभिन्न प्रकार की दक्षता एवं बुद्धिमत्ता थी, लन्डन निवासियों की बुद्धि न केवल राष्ट्रीय प्रक्रियाओं तथा विश्व-व्यापार से तीक्ष्णतर होती थी वरन् वकीलों तथा वेस्टमिन्स्टर के राजनीतिज्ञों के दैनिक सम्पर्क में आने पर भी वह पैनी होती थी। इसका एक अन्य कारण सेण्ट जेम्स के कुलीनों तथा फैशनेवुल व्यक्तियों से सम्पर्क होना था। मौसम की अवधि में समाज के नेता निजी प्रासादों तथा टेम्पल वार के पश्चिम में स्थित यात्री-गृहों में ठहरते थे और उतने ही लन्डनवासी हो जाते थे जितना कि प्रतिवर्ष लौटने वाली प्रवासी अवाबील को अंग्रेजी कहा जा सकता है।

लन्डन में इंगलैंड की सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग दसवां भाग तथा देश की प्रशिक्षित विचार-शक्ति का आधे से भी अधिक भाग बसा था। यह नगर सरकार के केन्द्र वेस्टमिन्स्टर के इतना सटकर बसा था कि दोनों मिलकर एक महानगर हो जाते थे। ऐसी स्थिति में इस नगर का अंग्रेजों के इतिहास-प्रवाह पर निर्णायक प्रभाव पड़ना अनिवार्य था, विशेषकर जिन दिनों यात्रा की कठिनाई के कारण संसद तथा राजघराने देश के दूसरे नगरों तथा क्षेत्रों से पृथक रहते थे। किन्तु वास्तव में किसी भी समय लन्डन ने इंगलैंड पर शासन करने का वैसा प्रयास नहीं किया जैसा कि रोम ने इटली पर तथा एथेंस ने यूनान पर किया था। उसने इंगलैंड में राजतंत्र अथवा संसद के शासन को स्वीकार किया जब तक कि शासक उसकी सीमाओं के बाहर वेस्टमिन्स्टर में स्थित रहे तथा जब तक उन्होंने उसकी प्राचीन नगरपालिका व्यवस्था की स्वतंत्रताओं में हस्तक्षेप नहीं किया, अथवा जब तक वे देश के धार्मिक एवं विदेशी मामलों का संचालन लन्डन में लोकप्रिय सिद्धान्तों के अनुरूप करते रहे। जिन राजा-रानियों-हेनरी अष्टम, एलिजावेथ, विलियम तृतीय तथा ऐन्नी-को वह (लन्डन) पसन्द करता था, वे ऐसी राजनैतिक संस्थाएं छोड़ गए थे जो बाद में बहुत दिनों तक जीवित रहीं। और जो उससे झगड़े उनका शासन केवल अल्पकालिक राजनैतिक प्रणालियां बना सका; ऐसे शासकों में मेरी ट्यूडर, दोनों चार्ल्स तथा जेम्स और प्रोटेक्टर थे। यद्यपि ऑलिवर तथा चार्ल्स द्वितीय दोनों की शक्ति में वृद्धि अधिकांशतः लन्डन की सहायता से हुई।

लन्डन के टॉवर (स्तंभ) को, जिससे नागरिकों को अभिभूत होना चाहिए था, विजयी विलियम ने वेस्टमिन्स्टर से दूर नगर की ओर बनवाया था। अंशतः इस कारण से नागरिक दीर्घ काल तक इससे अभिभूत नहीं हुए। अपनी एकान्त की स्थिति में

स्टुअर्ट काल में वेस्टमिन्स्टर तथा व्हाइट हाल की लन्डन की क्रुद्ध भीड़ के अपमानों से यह रक्षा नहीं कर सकता था। ऐन्नी के शासन में स्तंभ आग्नेय अस्त्रों का विशाल भंडार था जहाँ से तोपें तथा बारूद विदेशों के युद्धों के लिए भेजे जाते थे। इसमें टकसाल तथा शासित क्षेत्र के लिए मुद्रा ढालने के यन्त्र भी रहते थे जिनका अध्यक्ष स्वयं न्यूटन था। टॉवर की बाहरी दीवारों से एक ऐसा जाल बन जाता था जहां उपरोक्त दो प्रतिष्ठानों के अधिकारी रहते थे। अवसर पड़ने पर यह राज्य-कारागार में बदला जा सकता था। किन्तु सदैव से इसका एक मनोरंजनात्मक पक्ष भी था, क्योंकि यह राजधानी का चिड़ियाघर तथा संग्रहालय भी था। दर्शकों को मुकुटों में लगने वाले जवाहरातों और नवसज्जित शस्त्रागर भी, जहांकि युद्ध की साज-सज्जा में घोड़ों पर सवार राजाओं की परम्परा चित्रित थी, दिखाया जाता था। जिन दिनों स्तंभ मध्ययुगीन राजाओं का प्रिय आवास रहा था उन्हीं दिनों से शेरों तथा अन्य वन्य पशुओं का समूह वहां रखा जाता था। इसमें रानी ऐन्नी को उत्तरी अफ्रीका के बर्बर राजाओं से प्राप्त भेंटें सुन्दर ढंग से सजाई गयी थीं। इन्हीं राजाओं के साथ अंग्रेज व्यापारी व्यापार करते थे तथा उन्हीं के साथ जिब्राल्टर के विजेताओं ने फ्रांस तथा स्पेन के विरुद्ध मैत्री की संधियां की थीं।

प्रसिद्ध स्तंभ तथा टेम्पल बार (विधि-वेत्ताओं का सुप्रसिद्ध स्थान) के बीच मुख्य नगर लम्बाई में फैला था, नदी के उत्तर की ओर इसकी चौड़ाई बहुत कम थी जो स्मिथफील्ड, हालबोर्न तथा व्हाइटचैपल नामक बैरिस्टरों के कार्यालयों तक सीमित थीं।[१] किन्तु इमारतों के निर्माण के प्रसार ने नगरपालिका की सीमाएं, मुख्यतः पश्चिम दिशा में, पार कर दी थीं क्योंकि इस ओर वेस्टमिंस्टर पर राष्ट्रीय शासन की राजधानी का आकर्षण था। समुद्र तट से ही नगर का अधिकार-क्षेत्र प्रारंभ होता था। किन्तु लन्डन तथा वेस्टमिंस्टर के नगरपालिका सम्बन्धी विशेषाधिकारों में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी न तो लन्डन और न राजा अथवा संसद ने कभी भी वेस्टमिंस्टर के लार्ड मेयर (नगरपालिका का अध्यक्ष) के साथ कारबार करने की इच्छा की थी। अतएव वेस्टमिंस्टर को स्वायत्त शासन अथवा निगम बनाने के लिए कभी अनुमति नहीं मिली। उच्च व्यवस्थापक द्वारा आजीवन काल के लिये नियुक्त बारह नगर-प्रतिनिधियों द्वारा उसका शासन होता था और शान्ति के न्यायाधीशों तथा विभिन्न पैरिशों के प्रबन्धकों द्वारा उनकी शक्तियां अधिग्रहण करली जाती थीं। यह सत्य है कि वेस्टमिन्स्टर में संसदीय मताधिकार जनतंत्रीय होता था और उन दिनों, जब अधिकांश कस्बों में संकुचित मताधिकार होता था, तो वेस्टमिंस्टर के लिए एक संसदीय सदस्य का चुनाव असामान्य

---

१ विधि-वेत्ता केन्द्र (बार) की सीमाएं वास्तव में मूल नगर की दीवारों और दरवाजों की सीमा से अधिक विस्तृत थीं। उदाहरण के लिए लुडगेट के पश्चिम के बहुत दूर टेम्पल बार स्थित थी।

राजनैतिक उत्तेजना उत्पन्न कर देता था। यह स्थिति चार्ल्स फॉक्स के काल से भी पहले पाई जाती थी, उदाहरणतः जब १७१० में व्हिग हित में जनरल स्टैवहोप कठिन संघर्ष और अत्यधिक चुनाव प्रचार के पश्चात् पराजित हो गया था। किन्तु वेस्टमिस्टर की स्थानीय सरकार मात्र नौकरशाहीपरक थी, इस तरह यह प्रतिस्पर्धा अधिकार-क्षेत्रों की एक अराजकता से कुछ अच्छी थी।

दूसरी ओर लन्डन नगर एक असाधारण लोकतंत्रीय रूप से पूर्ण स्वायत्त-शासन प्राप्त था। उस समय इप्सविक तथा नार्विक के अतिरिक्त इंगलैंड के बहुत कम कस्बे अभिजाततंत्र से मुक्त थे। लन्डन में १२००० करदाता गृहस्थ अपने-अपने वार्डों (खंडों) में २६ उपनगरपालों तथा २०० सामान्य पार्षदों का चुनाव करते थे। वार्डों के ये करदाता ८९ कम्पनियों तथा कर्मिक-संघों के विशेष वर्दी वाले सदस्यों के बिल्कुल समान थे। वे अपनी दोहरी क्षमता में अपने मतों से प्राचीन कला तथा लन्डन के स्वायत्त शासन के जटिल तंत्र पर नियंत्रण रखते थे। दुकानदारों के निर्वाचक अपने वर्ग के प्रतिनिधियों को सामान्य परिषद के लिए चुनते थे। उच्च वित्त अथवा राजनीति के जगत में बड़े व्यापारी-श्रेष्ठियों को वे इस कार्य के लिए नहीं चुनते थे। नगर के बड़े व्यापारी बहुधा उपनगर-पाल चुने जाते थे। लन्डन की शक्ति और विशेषाधिकारों में सामान्य गर्व तथा उसके स्वातंत्र्य के लिए ईर्ष्यालु सावधानी ने व्यापार-विनिमय के श्रेष्ठ व्यक्तियों तथा जनतंत्रीय दुकानदारों में गंभीर मतभेद या विद्वेष को रोका। किन्तु यदा-कदा कुछ मनमुटाव हो जाता था और ऐन्नी के शासनकाल में जनतंत्रीय सामान्य परिषद के टोरी होने तथा नगराधिपति (मेयर), उपनगरपालों तथा धनी के श्रेष्ठियों के नगर व्हिग होने की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट हो गई थी।

लन्डन के निर्वाचित मजिस्ट्रेटों (न्यायाधीशों) का अधिकार-क्षेत्र उन्हीं के नगर तक सीमित न था। यद्यपि वेस्टमिस्टर पर उनकी कोई शक्ति नहीं थी किन्तु उसे उन्होंने प्रत्येक ओर से दबा रखा था। मिडलसेक्स की श्रीवैल्टी तथा साउथ वार्क की बैलीविक पर उनका अधिकार था। लन्डन के बन्दरगाह पर कर लगाना तथा उसका प्रशासन करना उन्हीं के अधिकार में था। ग्रेव्जेण्ड और टिलबरी से लेकर स्टेन्स पुल तक लगभग साठ मील तक नदी का संरक्षण लार्ड मेयर करता था। बारह मील के अर्धव्यास में लन्डन कोयले पर कर लगाता था और सात मील के अर्धव्यास में सभी बाजारों पर उसका एकाधिकार स्थापित था।

इंगलैंड भर में मुख्य लन्डन नगर की जनसंख्या का प्रति एकड़ घनत्व सर्वाधिक था। जैसा बाद के कालों में हुआ उस समय नगर रात्रि को 'बिल्लियों तथा रखवालों' के लिए नहीं छोड़ दिया जाता था। व्यापार श्रेष्ठी तथा दूकानदार सभी अपने व्यापार स्थल पर अपने परिवार के साथ सोते थे। नौकर तथा शिल्पशिष्य ऊपर के छत के कमरों में तथा कुली और संदेशवाहक कहीं भी कोठारों अथवा गोदामों में सो जाते थे। विशेषकर ओल्ड ज्यूरी तथा बेसिंगहाल स्ट्रीट इंगलैंड में सर्वाधिक धनी लोगों के मकानों

के लिए प्रख्यात थीं। किन्तु राज्य भर के कुलीन घराने भीड़-भाड़ वाले नगर में तथा समुद्र-तट पर बने हुए अपने पूर्वजों के घरों को छोड़ चुके थे, जहां से बाग शीघ्रता से नष्ट हो रहे थे। मौसम के भीतर अभिजात लोग कावेण्ट गार्डन, पिकैडिली, ब्लूम्सबरी अथवा सेण्ट जेम्स स्क्वायर अथवा वेस्टमिंस्टर के किसी भाग में रहते थे। ग्रामीण क्षेत्रों में संभ्रान्त लोग, राजकीय कर्मचारी, संसद सदस्य तथा व्यावसायिक लोग इन्हीं क्षेत्रों में छोटे मकानों में रहते थे जो कुलीन लोगों के प्रासादों के चारों ओर होते थे। लन्डन के अनेक विख्यात स्क्वायरों (आयताकार पार्कों) की उत्पत्ति इसी प्रकार से हुई थी।[१]

किन्तु धनी व्यापारी अपनी भावनाओं तथा व्यापार के कारण अब भी अपने प्रिय नगर में रहते थे। लन्डन नगर के २० मील के अर्धव्यास में जंगलों, मनोरम ग्रामों तथा खेतों के मध्य उनके ग्रामीण घर तथा कुटीरें भी थी। उपनगरीय तथा नदी तट के अपने आवासों (*अल्पकालीन*) में—जो हैम्पस्टेड, वेस्ट हैम, वालथाम्सटो तथा एप्सम घाटियों के नीचे और विशेषकर चेल्सी से लेकर ऊपर तक टेम्स नदी के हरे-भरे तटों पर थे लन्डनवासी उतना ही अच्छा भोजन और मदिरापान करते थे जितना कि स्वयं नगर में निर्धन लोग छुट्टी का आनन्द लेने ग्रामीण क्षेत्रों को, डुलविक जैसे प्रिय स्थानों को, चले जाते थे।

लन्डन के सभी सार्वजनिक मार्गों में नदी में सबसे अधिक भीड़ रहती थी। भारी व्यापारिक यातायात के बीच नावों में सवार यात्री निरन्तर बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ पाते थे। इस समय यात्री-नावों के मांझियों तथा भारवाही नौकाओं के मल्लाहों के बीच परम्परागत गाली-गलौज तथा तकरार चलती रहती थी। उत्तरी तट पर लन्डन

---

१ इस प्रकार ब्लूम्सबरी स्क्वायर, जिसे मूलत: साउथैम्पटन स्क्वायर, कहा जाता था एक फेशनेबुल चौकड़ी थी। उसका निर्माण पुन:स्थापन काल के बाद हुआ था। साउथैम्पटन के पिछले अर्ल की ब्लूम्सबरी नामक सम्पत्ति पर बनी हुई उक्त चौकड़ी सबसे पहली नियोजित रूप से विकसित चौकड़ी थी। उक्त अर्ल की मृत्यु के पश्चात् यह अधिसम्पत्ति उसकी पुत्री और उसके प्रिय स्वामी के अधिकार में आई। उसका पति १६८३ में व्हिग नेता होने के कारण फांसी चढ़ा दिया गया था। ब्लूम्सबरी स्क्वायर लंडन की सबसे पहली चौकड़ियों में से एक था और उसको खुला इसलिए छोड़ दिया गया था ताकि साउथैम्पटन हाउस (जो बाद में बेडफोर्ड कहलाया) नामक विशाल प्रासाद के सामने खुला हुआ क्षेत्र पड़ा रहे। उक्त प्रासाद इस चौकड़ी के उत्तरी सिरे पर स्थित था। इसके पश्चात् एक शताब्दी बीत जाने पर उक्त विशाल प्रासाद के उत्तर में स्थित मैदानों पर समान नियोजित रूप से रसेल स्क्वायर का विकास किया गया था। स्काट टाम्सन, **दि रसेल्स इन ब्लूम्सबरी**, अध्याय २ और ३।

पुल तथा संसद की सीढ़ियों के बीच में लगभग तीस घाट थे जहां नावें सीढ़ियों के पास यात्रियों को नदी के पार अथवा अन्यत्र ले जाने के लिए प्रतीक्षा करती थीं। राजनयिक और लैम्बेथ जाने वाले व्यक्ति, अथवा शिल्पशिष्य और निकट के क्यूपिड गार्डन को हल्के संदेश ले जाते हुए युवा वैरिस्टर ये सभी नावों से नदी पार करते थे। ऐसी भी नौकाएं थीं जिनके मंचों पर गाड़ी तथा घोड़ा समा जाते थे। जब तक १७३८ में वेस्टमिंस्टर पुल का निर्माण नहीं हुआ था, लन्डन पुल नदी के ऊपर से एक मात्र मार्ग था। वहां जो सड़क थी उसे भयंकर अग्नि द्वारा की गई हानियों के पश्चात् एक अधिक आधुनिक शैली में पुनर्निर्मित कर दिया गया था। किन्तु उसके प्राचीन स्तंभों (पुलों के खंभों) के बाहर निकले हुए भाग यातायात में बाधक होते थे तथा खतरनाक भी थे। पुल पर से निकल जाना अब भी एक साहसिक कार्य माना जाता था। यह कहा जाता था कि लन्डन पुल पार कर ना बुद्धिमानों का कार्य है और उसके नीचे गिर जाना मूर्खों का।

अतः बड़े जहाज पुल से अधिक ऊँचे नहीं हो सकते थे। उसके नीचे लन्डन के खड्ड (पूल ऑफ़ लन्डन) में जहाजों के मस्तूलों का एक वन दिखाई पड़ता था। इस दृश्य की तुलना केवल ऐम्सटर्डम के बन्दरगाह के दृश्य से की जा सकती थी। चूंकि उस समय डेप्टफोर्ड की गोदी के अतिरिक्त शायद ही कोई विशाल गोदी खोदी गई थी अतः जहाज चलाने योग्य मार्ग में बड़ी भीड़ रहती थी। ब्लैकवेल में जो एक गोदी थी वह ईस्ट इंडिया कम्पनी के जहाजों के काम में आती थी।

टेम्स नदी के तट पर शुष्क घास के मैदान में अपनी निराली गरिमा के साथ चेल्सी का अस्पताल स्थित था जिसमें सेजमूर, लैन्डेन तथा बोयन के चारसौ लालकोट-धारी क्रीत सैनिक रहते थे जो कारपोरल ट्रिम की व्यावसायिक एकाग्रता से मार्लबारो की क्रियाओं की साप्ताहिक खबरों पर विचार-विमर्श करते थे। थोड़ी दूर पर चेल्सी का ग्राम स्थित था जहां कुछ फैशनेबुल लोगों के मन भा गई थी कि वे लन्डन और वेस्टमिंस्टर के हलचल से उतनी ही दूर अपने एकान्तवास बनवायें जितना दूर स्वयं केंसिग्टन राजमहल था।

चूंकि लन्डन के प्रत्येक रसोईघर में कोयला जलता था अतः वायु इतनी दूषित रहती थी कि एक विदेशी विद्वान ने शिकायत की थी कि "जब कभी मैं लन्डन की पुस्तकों को पढ़ता हूँ मेरे कलाई के मोड़ (आस्तीन के) कोयले जैसे काले हो जाते हैं।" जिन दिनों उत्तरी-पूर्वी हवा कोयले के बादलों को उड़ाती थी चेल्सी के दमा पीड़ित व्यक्तियों के लिए बड़ा खतरा उत्पन्न हो जाता था। सौम्य दार्शनिक शैफ्टवरी के अर्ल को कुछ ऐसी ही शिकायत थी। यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि दुर्बल फेफड़ों वाला राजा विलियम साधारणतया हैम्पटन कोर्ट में रहता था किन्तु आवश्यकता पड़ने पर केन्सिंग्टन चला जाता था। शासनारूढ़ होते ही रानी ऐन्नी ने

सरलता से राजप्रासाद को ग्रामीण क्षेत्र से नगर और केन्सिंग्टन से सेण्ट जेम्स राजप्रासाद को स्थानान्तरित किया था। किन्तु वह अपनी प्रिय जनता को इतना ही संतोष दे सकती थी। बहुधा वह 'बाथ' में रहती थी और उससे भी अधिक विण्डसर में। किन्तु जब कभी वह नगर में प्रवेश करती थी सेण्ट जेम्स राजभवन के द्वार केवल उसके मंत्रियों और उसकी महिला कृपा-पात्रों के लिए खुलते थे। कुछ लोग आगे अथवा पीछे की सीढ़ियों से प्रवेश कर जाते थे जिन्हें मंत्री अथवा कृपा-पात्र चाहते थे। अपने सम्पूर्ण शासनकाल में वह अपंग रही। विलियम दमा पीड़ित था और ऐन्नी वात-रोग तथा जलशोथ से ग्रस्त रही। संसद के सत्र का उद्घाटन करने घोड़ा-गाड़ी में बैठकर वेस्टमिंस्टर जाने अथवा किसी विख्यात विजय के उपलक्ष्य में जनता को धन्यवाद देने के लिए सेण्ट पाल जाने के अवसरों को वह प्रायश्चित मानती थी जिन्हें सहन करने के लिए वह यदा-कदा ही सहमत होती थी।

अतएव रानी ऐन्नी का मन्त्रि-परिषद उतना ही छोटा था जितना विलियम का। अलंकारिक और यथार्थ दृष्टि से सम्राज्ञी मेरी का व्हाइटहाल खंडहर हो गया था जिसके पुनर्निर्माण की कोई संभावना न थी। दुःखद स्मृतियुक्त प्रीतिभोज भवन के अतिरिक्त सम्पूर्ण राजप्रासाद १५६८ में भस्म हो गया था और उसकी छतविहीन दीवारें नदी तट पर अब भी खड़ी थीं। बकिंघम हाउस इस समय भी प्रजा का एक निवास था। फैशनेवुल लोग सेडान की कुर्सियों तथा छः अश्ववाही-गाड़ियों में बैठे 'माल' मार्ग पर घूमा करते थे अथवा सेण्ट जेम्स राजप्रासाद की खिड़कियों के ठीक नीचे अधिक निजी बाग में निरुद्देश्य भ्रमण करते थे। उन्हें केवल इस स्मरण मात्र से संतोष हो जाता था कि वे अदृश्य रानी के निकट हैं। यह इसलिए अधिक उल्लेखनीय है कि दूसरी दिशा में थोड़ी ही दूर पर संसद के दोनों भवन थे।

एल्फ्रेड के काल से ही राजसभासद्-निकाय इंगलैंड का सूक्ष्मस्वरूप और स्पंदित हृदय रहा है; नार्मन एवं प्लैन्टैजेनेट के कालों में, हेनरी के सुविस्तृत दिनों एवं एलिजाबेथ से लेकर चार्ल्स द्वितीय के काल तक ऐसी ही स्थिति रही है। उसका राजसभासद्-निकाय प्रभूत आनन्द, स्वच्छंदता एवं सार्वजनिक निन्दा का स्थल ही नहीं था वह राजनीति, फैशन, साहित्य, कला, विद्वता, आविष्कार, कम्पनी की स्थापना और कुख्याति अथवापुरस्कार चाहने वाली राजा की उत्सुक प्रजा की ऐसी ही सैकड़ों गतिविधियों का केन्द्र भी था। किन्तु क्रान्ति के उपरान्त राजसभा सद्-निकाय की गरिमा धूमिल हो गई थी। न तो 'ताज' की राजनैतिक स्थिति और न उसे पहनने वालों का वैयक्तिक स्वभाव ही पुराने समय के 'ताज' और राजाओं के समान था। कठोर विलियम, अपंग ऐन्नी, जर्मनी के जार्ज, कृपक जार्ज, घरेलू विक्टोरिया में से कोई भी रानी एलिजाबेथ की भांति राजसभासद्-निकाय रखना चाहते थे। इसके पश्चात् राजसभासद्-निकाय एकान्तप्रिय राजवंश का निवास हो गया था जिसकी ओर दूर से ही संकेत किया जा सकता था क्योंकि केवल अकथनीय नीरसता के औपचारिक अवसरों के अतिरिक्त वहां पहुंचना

कठिन था। अब संरक्षण दूसरे स्थानों पर, जैसे संसद के गोष्ठी-कक्षों में, मंत्रियों के पार्श्व-कक्षों में तथा संसार में सबसे मनोहर संभ्रान्त वर्ग के ग्रामीण निवासों में खोजा जाता था और अंततः ऐसा शिक्षित जनता से अपील करके किया जाता था। राजदरबार के इस पतन के अंग्रेजों के जीवन पर अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष परिणाम हुए। सम-कालीन फ्रांस में इसका कोई सादृश्य न था जहां वार्सेल्स का लोगों के लिए अब भी चुम्बकीय आकर्षण था तथा जिसने जागीरदारों (सामन्तों) की गढ़ियों और प्रान्तों को निर्धन बना दिया था।

अध्याय ११

डा. जॉन्सन के काल में इंगलैंड (१७४०-१७८०)[1]

[१]

जनसंख्या—चिकित्सा और परोपकारिता—न्याय—स्थानीय प्रशासन—धर्म—शिक्षा—विश्वविद्यालय—वेल्स

अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों, ऐन्नी तथा वालपोल के शासनकाल, को एक संक्रमण युग कहा जा सकता है जिसमें स्टुअर्ट युग के पारस्परिक झगड़े और आदर्श, जो कि चिरकाल से लावा की एक वाढ़ के समान सारे देश में विनाशकारी ताप का प्रकोप फैला रहे थे, अब एक स्थिर तथा स्थायी हेनरी-युगीन पद्धतियों में नियोजित किये जा रहे थे। इस प्रकार मार्लबारो तथा बोलिंग ब्रोक, स्विफ्ट और डिफो का काल दो युगों का संधिस्थल था। केवल इसके वाद आने वाले वर्षों (१७४० से १७८०) में हमें अठारहवीं शताब्दी की स्वाभाविक प्रकृति की विशेषताओं से युक्त मनुष्य मिलते हैं। इस शताब्दी के समाज का एक अपना मानसिक दृष्टिकोण था, यह आत्म-संतुलित, आत्म-आलोचक तथा आत्म-अनुमोदित और अतीत के विशेषाकारी आवेशों से मुक्त तथा अभी तक एक अत्यन्त भिन्न प्रकार के भविष्य की चिन्ताओं की विकलता से रहित था जो फ्रांसीसी तथा औद्योगिक क्रान्तियों के कारण शीघ्र ही आ पहुँचने वाली थी। अतीत की धार्मिक हठधर्मिताओं और वर्ग तथा प्रजाति की हठधर्मिताओं, जो शीघ्र ही उत्पन्न होने वाली थीं और आने वाले समय में प्रवल हो जाने वाली थीं, के बीच मानव को शान्ति का एक लघु क्षण देवों ने दिया था। इंगलैंड में यह कुलीनतंत्र और स्वाधीनता का युग था; और कानून के शासन और सुधार की अनुपस्थिति का, व्यक्तिगत पहल तथा संस्थागत ह्रास का, ऊपर से धार्मिक सहिष्णुता का और नीचे वेस्लेवाद का; मानवतावादी तथा परमार्थवादी अनुभूतियों एवं प्रयत्न का, मनुष्य के जीवन में उपयोगी और अलंकारक सभी व्यवसायों और कलाओं में सृजनात्मक ओज का युग था।

यह एक "चिरप्रतिष्ठित युग" है, या दूसरे शब्दों में निर्विवाद मान्यताओं का युग है जब सर्वसाधारण के दार्शनिकों, जैसे डा. जॉन्सन, के पास मानव परिस्थितियों पर

---

[1] जार्ज द्वितीय, १७२७-१७६०, जार्ज तृतीय, १७६०-१८२०, डा. जॉन्सन, जन्म १७०९, मृत्यु १७८४। सप्तवर्षीय युद्ध, १७५५-१७६१। अमरीकी स्वातंत्र्य युद्ध, १७७६-१७८२।

नैतिक उपदेश देने का प्रचुर अवकाश था। उन्हें यह सुखद विश्वास था कि समाज की जिस दशा और विचार के ढंगों से वे अभ्यस्त हैं वे सतत परिवर्तनशील वस्तुस्थिति के अल्पकालिक पक्ष नहीं हैं वरन् वे स्थायी व्यवस्थाएं हैं और बुद्धि एवं अनुभव का अन्तिम परिणाम हैं। ऐसा युग प्रगति का आकांक्षी नहीं होता यद्यपि यथार्थ में वह प्रगति कर रहा हो। वह अपने को यात्रा पर न मानकर गन्तव्य स्थान पर आ पहुँचा मानता है। जो कुछ उसके पास है उसके लिए वह कृतज्ञ है, सहायतार्थ मिली हुई वस्तुओं के प्रति गहरी पृच्छावृत्ति न रख कर वह केवल जीवन में आनन्द मनाता है। अतएव इस चिरप्रतिष्ठित युग के मनुष्य सुदूर प्राचीन संसार की ओर एक रुधिर-संबंध की भावना से देखते थे। उच्चवर्ग ग्रीसवासियों और रोमवासियों को अंग्रेज सम्मानित मानते थे जो स्वाधीनता और संस्कृति में उनके पूर्वगामी थे, वे रोमन सिनेट को ब्रिटिश पार्लियामेंट (संसद) का आदि रूप मानते थे। अपनी अपरिष्कृत आकांक्षाओं एवं बर्बरताओं के कारण मध्ययुग कुछ समय के लिए अध्ययन एवं सहानुभूति के क्षितिज के नीचे चला गया था। जिससे सुरुचिपूर्ण दृष्टि बिना किसी बाधा के समय की खाड़ी के पार जा सके और उसके दूसरे किनारे पर केवल ऐसी सभ्यता पर विचार कर सके जो इस युग की सौभाग्यशाली (सभ्यता) के समान ही चिरप्रतिष्ठित, संतुलित, प्रबुद्ध एवं कलात्मक हो।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य की आत्मश्लाघा की तुलना में विक्टोरिया के युग के लोगों की लोक-प्रसिद्ध आत्मश्लाघा स्वयं विनयशीलता है क्योंकि कुछ सीमाओं के साथ विक्टोरिया काल के लोग उत्साहपूर्ण और सफल सुधारक थे और जो सुधार उन्होंने किए थे उनके लिये आत्मप्रशंसाशील थे। किन्तु ब्लैकस्टोन, गिब्बन और बर्क के समय के विशेष लोगों को एक अपूर्ण (त्रुटिपूर्ण) संसार में इंगलैंड यथासंभव सर्वोत्तम देश प्रतीत होता था। केवल उसी स्थिति में छोड़ देने की आवश्यकता थी जिसमें दैव और १६८८ की क्रान्ति ने सौभाग्य से उसे रखा था। इंगलैंड के बारे में उनकी आशावादिता का आधार मानव प्रजाति के विषय में एक सर्वसाधारण निराशावादिता थी न कि एक सर्वकालीन एवं विश्वव्यापी 'प्रगति' का विश्वास जो कि उन्नीसवीं शताब्दी के सरल-हृदय लोगों को प्रमुदित करता था।

यह सत्य है कि जिन लोगों को कम से कम संतोष था वे लोग ऐसे थे जो अंग्रेजी जीवन की यथार्थताओं को निकटतम रूप से देखते थे। ये लोग थे होगार्थ, फील्डिंग, स्मॉलेट और लोकोपकारी लोग। वे डिकन्स की भांति ही विशिष्ट दोषों का निर्भयतापूर्वक अनावरण करते थे। किन्तु उनकी कड़ी आलोचनाएं भी उस समय के चिरप्रतिष्ठित एवं रूढ़िवादी दर्शन की सीमाओं के भीतर ही रहती थीं। उस युग का आत्मसंतोष पूर्णतया अनुचित नहीं था यद्यपि वह दुर्भाग्यपूर्ण था क्योंकि उससे एक ऐसा वातावरण कायम हो रहा था जो एक सामान्य सुधार आन्दोलन का विरोधी था।

यह एक ऐसा समाज था जो अपने तमाम गम्भीर दोषों के बावजूद ऊपर से उज्ज्वल था और नीचे से स्थिर।

अठारहवीं शताब्दी में इंगलैंड और वेल्स की जनसंख्या, जो रानी ऐन्नी के शासनारूढ़ होते समय ५५ लाख थी, बढ़कर १८०१ में ९० लाख हो गई। हमारे द्वीप के जीवन में महान् परिवर्तनों की अग्रदूत जनसंख्या की इस अप्रत्याशित वृद्धि का कारण आव्रजन न था। आयरलैंड के सस्ते श्रमिकों का प्रवेश यद्यपि हमारे आर्थिक एवं सामाजिक जीवन की प्रथमतया एक महत्वपूर्ण विशेषता थी परन्तु उसके बराबर ही हमारे देशवासी समुद्रपार के देशों को चले जाते थे। जनसंख्या में वृद्धि प्रधानतया उच्च जन्मदर तथा न्यून मृत्युदर के कारण हो रही थी। आधुनिक युग प्राचीन काल से इस बात में भिन्न है कि आज बहुत अधिक बच्चे जीवित रहते हैं और प्रौढ़ों के जीवन काल में वृद्धि हो गई है। इस महान परिवर्तन का प्रारम्भ अठारहवीं शताब्दी में हुआ था। यह सब मुख्यतया चिकित्सा सेवाओं में सुधार का परिणाम था।

अठारहवीं शताब्दी के प्रथम दशकों में मृत्युदर में तीव्र वृद्धि हो गई थी और वह जन्मदर से भी बढ़ गई थी। किन्तु १७३० से लेकर १७६० के बीच इस भयंकर प्रवृत्ति में प्रत्यावर्तन हो गया था। १७८० के पश्चात् मृत्युदर में बहुत शीघ्रता से गिरावट आई।

मृत्युदर में वृद्धि और तत्पश्चात् उसमें गिरावट आने का कारण अंशतः जौ की शराब की अपेक्षा सस्ती जिन पीने की लोगों की आदत में वृद्धि और ह्रास बताया गया था। निर्धन लोगों की आदत में इस परिवर्तन के भयानक परिणामों का अमर एवं प्रसिद्ध वर्णन होगार्थ ने किया जिसने "जिन लेन" के भयों की भिन्नता समृद्ध 'बियर स्ट्रीट' से दर्शायी। अठारहवीं शताब्दी के तीसरे दशक में, जो "बेगर्स ऑपरा" का युग था, विधायकों एवं राजनयिकों ने जिन के उपभोग को सप्रयास प्रोत्साहित किया, क्योंकि इस समय शराब निकालने के व्यापार को मुक्त कर दिया गया था और स्प्रिटों पर अत्यधिक कम कर लगता था। डिफो के कथनानुसार, शराब निकालने में अन्न का उपयोग होता था; और यह बात भूपतियों के हित में थी। भूपतियों (जमींदारों एवं जागीरदारों) के संसद का भी ऐसा ही विचार था। किन्तु उस युग के प्रबुद्ध परोपकारियों ने जैसे-जैसे संसद का ध्यान गम्भीर सामाजिक परिणामों की ओर आकृष्ट किया, वैसे ही इस दुर्गुण को कम करने के लिये शीघ्र ही अनेक उपाय किये गए। फिर भी १७५१ तक इसको न रोका जा सका। इस वर्ष स्प्रिटों पर भारी कर लगाया गया और शराब निकालने वालों तथा दुकानदारों को उनकी खुदरा बिक्री करने से मना कर दिया गया (२४ जी. II, सी. ४०)।

"अठारहवीं शताब्दी इंगलैंड" के इतिहासकार ने लिखा है कि १७५१ का अधिनियम वास्तव में स्प्रिट पीने की अधिकताओं को कम करने में सफल हुआ। लंडन के

सामाजिक इतिहास में यह एक परिवर्तन-स्थल था और उस युग के लोग इसका स्मरण इसी रूप में करते रहे। उस शुभ तिथि के बीत जाने पर भी चिकित्सक लंदन के प्रौढ़ों की मृत्युओं के १/८ भाग का कारण स्प्रिट पीने का आधिक्य बताया करते थे। किन्तु दुर्दिन अब समाप्त हो गया था। अर्धशताब्दी के वर्षों में राजधानी एवं बाहर देहातों में सभी वर्गों में शराब का शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वी चाय हो गई थी।

'जिन युग' के सर्वोत्तम काल में (१७४० और १७४२ के बीच) लन्दन क्षेत्र में नामकरण संस्कारों की अपेक्षा दफनाये जाने वाले मृतकों की संख्या दुगनी होती थी। राजधानी में अधिक स्वस्थ और संयत (शराब न पीने वाले) देहाती आव्रजकों का एक निरन्तर प्रवाह आकर बसता रहता था। मध्य शताब्दी के पश्चात् अधिक अच्छी दशाओं की ओर परिवर्तन बहुत विशद् था। १७५० में लंदन में मृत्युदर केवल ५ प्रतिशत थी और १८२१ में यह घटकर २.५ प्रतिशत रह गई थी। १७०० और १८२० के बीच बृहत्तर लन्दन की जनसंख्या दूनी हो गई थी (६,७४,००० से बढ़कर १२,७४,००० हो गई थी) किन्तु पंजीकृत दफनाए गए मृतकों की वार्षिक दर अपरिवर्तित रही। दूसरे शब्दों में, १८२० में लन्दन में मृत्यु के बाणों के लिये जितने लक्ष्य उपलब्ध थे वे एक शताब्दी पूर्व के लक्ष्यों से दुगने थे किन्तु मृत्यु को मिलने वाली सफलताओं की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई। (देखिए, श्रीमती जार्ज, **लन्दन लाइफ इन दि ऐट्टीन्थ सेन्चुरी**, पृष्ठ २४-३८)।

सस्ती जिन की अवधि भर (१७२० से १७५०) राजधानी की जनसंख्या में बहुत ह्रास होता रहा। विस्तृततर देहाती क्षेत्रों में इससे भयंकर हानियां हुईं किन्तु नगरों की तुलना में ग्रामों में इस अवधि भर 'खेल' का अच्छा प्रचलन रहा। लन्दन क्षेत्र के बाहर जन्म मृत्यु दरों पर जिन पीने के प्रभावों का कभी कभी सामाजिक इतिहासकारों ने वस्तुतः अतिशयोक्तिपूर्ण उल्लेख किया है। उदाहरण स्वरूप, १७०० से १७२० के काल में मृत्युदर में तीव्र वृद्धि का कारण जिन नहीं माना जा सकता क्योंकि उन वर्षों में सस्ती स्प्रिटों का विशद् उपभोग होना प्रारम्भ ही नहीं हुआ था। इसके विपरीत, लन्दन क्षेत्र की तुलना में समस्त इंगलैंड में १७३० और १७५० के बीच में मृत्युदर में तीव्र ह्रास हुआ किन्तु निश्चय ही इन वर्षों में जिन पीना सबसे खराब दशा में था।

अतएव, अठारहवीं शताब्दी के मध्य, विशेषकर उसके अन्तिम बीस वर्षों में, मृत्युदर में जो उल्लेखनीय गिरावट आई उसका कारण हमें स्प्रिटों के उपभोग में कमी के अतिरिक्त अन्य बातों में ढूंढना चाहिए। अंग्रेज शिशुओं, बालकों और प्रौढ़ों में मृत्यु-संख्या में कमी के दो कारण, जीवन की दशाओं में सुधार तथा सुधरी हुई (उन्नत) चिकित्सा सुविधाएं, कहे जा सकते हैं। अठारहवीं शताब्दी में कृषि में महान् उन्नति से यदि सबको नहीं तो भी बहुतों को प्रचुर भोजन मिलने लगा। गमनागमन में उन्नति और औद्योगिक रीतियों में परिवर्तन से रोजगार तथा मजदूरी में वृद्धि

हुई तथा इससे अनेक प्रकार के सामान भारी संख्या में उपलब्ध होने लगे जिन्हें निर्धन व्यक्ति भी खरीद सकता था। यह सत्य है कि औद्योगिक एवं कृषि उन्नति से समाज तथा ग्रामों एवं नगरों के जीवन की सुविधाओं पर कुछ अत्यन्त दुःखदायी प्रभाव पड़े। सदा इससे संतोष में वृद्धि नहीं हुई और संभवतः औसतन आनन्द (सुख) में भी वृद्धि नहीं हुई। किन्तु निःसंदेह इससे जनसंख्या के प्रति व्यक्ति को अधिक भोजन, वस्त्र और अन्य सामग्री उपलब्ध हुई यद्यपि उनका वितरण निन्दनीय ढंग से असमान था। और इस व्यापकतर सम्पन्नता, जिसने मानव जीवन के काल को दीर्घ कर दिया था, को जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि का एक कारण माना जा सकता है।

किन्तु मृत्युदर में इससे भी अधिक रुकावट चिकित्सा में उन्नति के कारण हुई। सम्पूर्ण अठारहवीं शताब्दी भर चिकित्सा व्यवसाय पाखंडीपन और परम्परागत मिथ्या-विश्वास के अंधकार युग से निकलकर विज्ञान के प्रकाश में आने का प्रयास करता रहा। चिकित्सक, सर्जन, औषधि विक्रेता एवं अनुज्ञाप्ति-रहित चिकित्सक सभी ज्ञान की वृद्धि और निष्ठाशील सेवा में वेग से आगे बढ़ रहे थे, विशेषकर निर्धनों की सेवा में, जिनकी अभी तक गंभीर उपेक्षा की गई थी। 'प्रबोधन के युग' की प्रेरणास्वभावआत्माया का सर्वोत्तम भाग विज्ञान और परोपकार थे और इस स्वभाव ने अच्छे चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण तथा व्यक्तियों द्वारा उपचार-अभ्यास को प्रेरित किया।

इस शताब्दी के प्रारंभ में चेचक सबसे भयंकर रोग माना जाता था जो सौंदर्य, और उससे भी अधिक जीवन, को विनष्ट कर देता था। एक महिला यात्री, श्रीमती मेरी वोर्टले मान्टेगु, ने टर्की से चेचक का टीका लाकर प्रवेश किया तथा लन्डन में एक टीका लगाने वाले अस्पताल की स्थापना की गई। यद्यपि इस उपचार पर अप्राकृतिक और अपवित्र होने का संदेह था फिर भी इसकी कुछ प्रगति हुई तथा उससे रोग के प्रकोप में कमी आई। किन्तु शताब्दी के अन्त में जब तक जेनर ने 'वैक्सीनेशन' की खोज नहीं की थी इस रोग से प्रत्येक पीढ़ी का तेरहवां भाग मर जाता था।

स्काटलैंड ने सीमा के दक्षिण में जीवन में महान् बौद्धिक योगदान करना प्रारंभ कर दिया था। मस्तिष्कों (विचारों) की एकता संसदों और व्यापार की एकता का अनुगमन कर रही थी। यह ह्यूम, स्मॉलेट, एड्म स्मिथ और बॉस्वेल का युग था। और इसी अवधि में सर जॉन प्रिंग्ल, हंटर भाई और विलियम स्मेली स्काटलैंड से लन्डन को आये थे। हंटर भ्राताओं ने अपनी शिक्षा से ब्रिटेन के सर्जनों को भद्दे औजारों से चीड़-फाड़ करने वालों से विशेषज्ञों में परिणत कर दिया। इसी प्रकार स्मेली ने दाइयों के कारबार में क्रान्ति ला दी। प्रिंग्ल ने वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर सेना की स्वच्छता में सुधार किया जिसका नागरिक जनसंख्या की आदतों और उपचार पर महान् प्रभाव पड़ा।

व्यावसायिक दक्षताओं में बड़े सुधार को अस्पतालों को स्थापना से सहायता मिली जिनमें परमार्थ युग की अनुभूतियों को संयत व्यंजना मिली। यह ठीक उसी प्रकार से

हुआ जैसे कि विश्वास के युग की आत्मा गिरजे से लगे हुए छायादार रास्तों की पाषाण रचनाओं एवं गिरजाघरों के मीनारों में मुखरित हुई थी। प्रमुख नगरों में ऐसे अस्पतालों की स्थापना हुई जहां रोगियों के रहने की व्यवस्था थी। काउण्टी के अस्पताल सभी प्रकार के रोगियों के लिए स्थापित हुए थे। १७२० और १७४५ के बीच राजधानी में गुई, वेस्टमिंस्टर, सेण्ट जार्ज, लन्डन और मिडिल सेक्स अस्पतालों की स्थापना हुई। मध्ययुगीन सेण्ट टॉम्स अस्पताल का रानी ऐन्नी के शासनकाल में पुर्ननिर्माण किया गया था। बार्ट अस्पताल में शिक्षण एवं चिकित्सा दोनों में तीव्रता से सुधार हो रहा था। १७०० ई० के पश्चात् १२५ वर्ष की अवधि में ब्रिटेन में १५४ नये अस्पताल एवं डिस्पेंसरियां स्थापित हुई थीं। इन्हें नगरपालिकाओं ने नहीं स्थापित किया था क्योंकि उस समय में नागरिक जीवन का यह पक्ष अत्यन्त अविकसित था। अस्पतालों की स्थापना व्यक्तिगत उपक्रम (पहलकदमी) और समन्वित स्वैच्छिक प्रयास तथा चंदा का परिणाम था।

उसी समय उस युग की बढ़ती हुई परोपकारिता निर्धन जनसंख्या के शिशुओं और विशेषकर परित्यक्त दोगले बच्चों में भयानक शिशु-मृत्यु अनुपात पर नियंत्रण पाने के लिए सक्रिय हुई। जोनास हैनवे, जिसने इन बुराइयों के कम करने का बहुत प्रयास किया, ने कहा था कि शायद ही कोई पैरिश निवासी बच्चे बड़े होकर व्यापार-व्यवसाय में शिष्यत्व करने को जीवित रहते हों। और हजारों शिशु पैरिश बच्चे कहलाने को जीवित ही नहीं रहते थे क्योंकि वे खाली कमरों अथवा सड़कों पर गर्मी, जाड़े, बरसात से असुरक्षित मर जाते थे; यदि उनकी माताएं उनका परित्याग न करतीं तो या तो उन्हें अधिक व्ययभार उठाना पड़ता अथवा निर्लज्जता सहनी पड़ती। कैप्टन कोरम, जो एक सहृदय नाविक था, सड़कों के किनारे पड़े हुए परित्यक्त बच्चों के दृश्य को सहन नहीं कर सका था किन्तु सम्मानित नागरिक अपने पारसी कोट को हिलाते हुए पास से गुजर जाते थे। कोरम कई वर्षों तक एक अस्पताल की स्थापना की योजना के लिए प्रयत्न करता रहा। अन्ततः उसे जार्ज द्वितीय से इस सम्बन्ध में एक आदेश प्राप्त हो गया। हैण्डेल ने अंशदान किया, होगार्थ ने एक चित्र बनाया, चन्दा एकत्र होने लगा और १७४५ में अस्पताल का निर्माण पूरा हो गया और उसका उद्घाटन हुआ। अनेक शिशुओं के जीवन की रक्षा हुई और अनेक परित्यक्त बच्चों का पालन-पोषण कर उन्हें व्यापार में एप्रेन्टिस बना दिया गया।

इस दयालु (सहृदय) कप्तान की मृत्यु के कुछ वर्षों के पश्चात् उसके द्वारा संस्थापित संस्था के इतिहास में एक बुरा क्षण आया। १७५६ में संसद ने उस संस्था को अनुदान इस शर्त पर स्वीकृत किया कि जो भी बच्चे अस्पताल लाए जायं उन्हें भरती किया जाय। १५ हजार बच्चे वहां लाए गए और इतनी बड़ी भीड़ के लिए जो स्वाभाविक परिणाम होना था वही हुआ। केवल ४४०० बच्चे एप्रेण्टिस बनने को जीवित रहे। इस अमंगलजनक (दारुण, भीषण) परीक्षण के पश्चात् वह शिशुपालक

अस्पताल पुनः एक निजी संस्था हो गया जिसमें प्रवेश सीमित कर दिया गया। फलतः उसमें प्रविष्ट बच्चों में मृत्युदर भी कम हो गई। दीर्घकाल तक यह संस्था अच्छा कार्य करती रही। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में सुखद सामाजिक दशाओं में इसे नगर के बाहर हटा दिया गया। जिस स्थान पर यह पहले स्थापित थी उसे सभी प्रकार के बालकों के खेलने के लिए प्राप्त कर लिया गया और उसका पुनः नामकरण कर 'कोरम फील्ड्स' नाम रख दिया गया।

जार्ज तृतीय के शासन के प्रारंभ-काल में हैनवे के सतत् प्रयत्नों को संसद से एक अधिनियम को पारित कराने में सफलता मिली जिससे लन्डन की पैरिशों को पृथक-पृथक कार्यगृहों में पैरिश के शिशुओं को न रखने के लिए बाध्य किया गया जहां वे शीघ्रता से मर जाते थे। इसके स्थान पर उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों की कुटीरों में रखने का आदेश दिया गया जहां वे रहकर उन्नति करते थे।[1]

ऐसी ही प्रेरणा के वशीभूत जनरल ऑगलथार्प ने ऋणियों के कारागारों की निन्दनीय प्रथा की ओर ध्यान आकृष्ट किया। १७२९ में उसने संसद को ऐसे ही दो कारागारों, फ्लीट तथा मार्शलसी, की वीभत्सताओं (भयों) की जांच करने के लिए प्रेरित किया जहां जेल अधिकारी ऋणियों (कर्जदारों) को यातना देकर मार डालते थे और जिन लोगों के पास धन नहीं होता था उनसे फीस वसूल करने का प्रयास करते थे; शताब्दी के शेष भाग में अंग्रेजी कारागार राष्ट्र के लिए अपमानजनक बने रहे, जो अभी भी स्थानीय अधिकारियों द्वारा ऐसे ही दुष्टों को सौंप दिए जाते थे क्योंकि वे (स्थानीय अधिकारी) उन कारागारों के संचालन के लिए उचित रूप से सार्वजनिक कोष से वेतन पाने वाले अधिकारियों को नियुक्त करने का कष्ट नहीं उठाते थे।[2] किन्तु ऑगलथार्प

---

[1] हैनवे (१७१२-१७८६) इंगलैंड में छाता का चलन प्रारंभ करने के लिए प्रसिद्ध है। जनसाधारण के व्यंग और कुर्सी पर भद्रजनों को ढोनेवालों और घोड़ा-गाड़ी के कोचवानों के क्रोध के बावजूद भी वह बहुत दिनों तक छाता लेकर चलता रहा। उसके जीवन के अन्तिम वर्षों में लोगों ने उसके उदाहरण का अनुकरण कर लिया। किन्तु यह कहना अधिक सच होगा कि छाता लेकर चलने की प्रथा का चलन पहले से ही था जिसे हैनवे ने पुनः शुरू किया। उसके जन्म के दो वर्ष पूर्व स्विफ्ट ने अपनी कविता सिटी शावर (नगर की बरसात) में लिखा था :

'सिलाई करने वाली स्त्री लम्बे-लम्बे डग लेती हुई चली जा रही है, उसके तेल लगे हुए छातों के किनारों से धारें बह रही हैं।' अतः यह संभव है कि हैनवे ने अपने बाल्यकाल में ही लन्डन में छातों का स्तेमाल होता देखा हो।

[2] १७७३ में जॉन होवर्ड ने जेलों पर अपने जीवन की कृति में बेडफोर्डशायर के न्यायाधीशों और पड़ोसी काउंटियों को जेल के कर्मचारियों को नियमित वेतन देने के

करना उनके अधिकारक्षेत्र में था। यद्यपि जस्टिसेज की नियुक्ति नाम से तो राजा करता था किन्तु वास्तविकतया उनकी नियुक्ति लार्ड लेफटीनेंट करता था जो शायर के संभ्रान्तजनों की राय से प्रभावित होता था। जस्टिसेज़ ऑफ पीस नाम से तो राज्याधिकारी थे किन्तु यथार्थ में स्थानीय प्रादेशिक सत्ता के प्रतिनिधि थे। ट्यूडर और प्रारम्भिक स्टुअर्ट काल के विपरीत प्रिवी कौंसिल का उन्हें भय न था और न उनके कार्य राष्ट्रीय सिद्धान्तों से निर्देशित होते थे। एक पहलू से १६८८ की क्रान्ति इन्हीं अवैतनिक स्थानीय मजिस्ट्रेटों का केन्द्रीय शासन के विरुद्ध विद्रोह था जिसने (शासन ने) 'धर्म और राजनीति में उनकी वफादारी पर अत्यधिक दवाव डाला था। जेम्स द्वितीय की प्रेमान्धता (मूढ़ता) के कारण संसद के विशेषाधिकारों एवं अंग्रेज़ों की स्वतंत्रताओं पर यहां तक वल दिया गया कि स्थानीय सत्ताधिकारियों पर उन मामलों में भी, जो राजनैतिक और सामाजिक नहीं थे केन्द्रीय नियंत्रण में अत्यधिक शिथिलता कर दी गई।

प्रिवी कौंसिल ने समस्त बातों में सम्पूर्ण शक्ति पाने के उद्देश्य से उन शक्तियों को खो दिया जिन्हें यह पूर्वकाल में साधारण जनता में भलाई के लिए प्रयोग करती थी। अठारहवीं शताव्दी में यह कहा जाता था कि जस्टिसेज़ ऑफ पीस का महान् राष्ट्रीय ''क्वार्टर सेशन्स ऑफ पार्लियामेंट'' के माध्यम से केन्द्रीय शासन पर नियंत्रण था न कि वे केन्द्रीय शासन के नियंत्रण में थे। उस समय किसी भी स्थानीय सत्ताधिकरण (अधिकरण) को 'व्हाइटहाल' का ध्यान नहीं रखना होता था।

जस्टिसेज़ ऑफ पीस की शक्तियों और कार्यो के क्षेत्र में ग्रामीण जीवन के सभी पक्ष आ जाते थे। वे 'क्वार्टर' अथवा 'पेटी' सेशन्स अथवा एक अकेले मजिस्ट्रेट के निजी घर' में न्यायाधीशों का कार्य करते थे। उनका उत्तरदायित्व सड़कों, पुलों, कारागारों एवं कार्यशालाओं का रख-रखाव करना था। वे सार्वजनिक गृहों को अनुज्ञप्ति प्रदान करते थे। जव कोई कर लगाना होता था तो वे एक काउण्टी कर लगाते थे। काउण्टी के ये तथा अन्य सैकड़ों मामले इनके नियंत्रण में थे। इतने पर भी उनके पास इन कार्यों के लिए कोई नियमित कर्मचारी न थे और न ही स्थानीय प्रशासन के संचालन के लिए उनके पास कोई प्रभावशाली नौकरशाही थी। क्योंकि इन सब का होना एक वड़े काउण्टी कर को अनिवार्य कर देता जिसे देने के लिए लोग अनिच्छुक थे। सर्वसाधारण अकुशल स्थानीय शासन को पसन्द करता था यदि वह केवल सस्ता हो। इस विषय में आधुनिक अंग्रेजी व्यवहार इतना भिन्न है कि यह समझ पाना कठिन है कि कितना वड़ा परिवर्तन हो गया है।[1]

---

[1] १७८२ और १७९३ के वीच दरिद्र सहायता पर वार्षिक व्यय २० लाख पौंड होता था; स्थानीय करों की वसूली से किया गया समस्त खर्चा २० लाख पौंड प्रति वर्ष

शताब्दी के मध्यकालीन वर्षों में फील्डिंग स्मोलेट तथा जीवन के अन्यायों के अन्य पर्यवेक्षकों ने जस्टिसेज ऑफ पीस की अनुत्तरदायी शक्ति तथा पक्षपात एवं नृशंसता के कार्यों में उसके अक्सर दुरुपयोग पर करारा व्यंग किया है। उस समय एक भ्रष्ट जस्टिस ऑफ पीस था जो 'ट्रेडिंग जस्टिसेज़' (न्यायों का व्यापारी) के नाम से कुख्यात था। ऐसे लोग समाज के निम्नतर वर्ग के सदस्य होते थे जो अपनी स्थिति के प्रभाव से वित्तीय लाभ कमाने के उद्देश्य से अपने को मजिस्ट्रेट नियुक्त करा लिया करते थे। किन्तु सामान्यतौर पर, जो जस्टिसेज ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश कार्य करते थे वे सम्पन्न जागीरदार होते थे। वे इतने धनी होते थे कि उन्हें भ्रष्ट अथवा नीच होने की आवश्यकता ही न थी, उन्हें बिना किसी वेतन के कठोर सार्वजनिक कार्य करने में गर्व का अनुभव होता था। वे अपने पड़ौसियों के साथ सम्मानपूर्वक रहने के लिए सदैव आतुर (व्यग्र, उत्कंठित) रहते थे। किन्तु वे बहुधा अज्ञानी और अन्याय के इरादे से रहित पूर्वाग्रही होते थे और वे कानून को अत्यधिक रूप से अपनी इच्छाओं का यन्त्र बना लेते थे।

अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड को अधार्मिक मानना सामान्यतः एक गलत धारणा है। ईसाई सिद्धान्तों पर आश्रित एक आचार-संहिता का समुदाय के एक बड़े भाग के जीवन में नियमतः पालन होता था। ऐसा बाद के मध्ययुग और ट्यूडर के काल में भी नहीं था। वास्तव में, वेसले, कॉवपर, और डा. जॉन्सन का युग संभवतः उतना ही धार्मिक था जितना कि सत्रहवीं शताब्दी का समाज, यद्यपि इसमें ईसाइयों के प्रतिद्वन्द्वी सिद्धान्तों के लिए युद्ध होना बन्द हो गया था। अतः यह युग पूर्व की अपेक्षा व्यापकतर मत-वैभिन्य के प्रति कुछ अधिक सहिष्णु कहा जा सकता है।

लॉक की यह दलील कि सहष्णिुता न केवल राजनैतिक दृष्टि से ही आवश्यक नहीं है अपितु यह निश्चय ही न्यायपूर्ण और सही है, अठारहवीं शताब्दी के बीतने के साथ साधारणतया स्वीकृत हो चुकी थी। यह विवादस्पद है कि इस बात से वह बहुनिन्दित युग कम ईसाई-परक नहीं हो जाता है। एक दीर्घ काल तक मानव अनुभूति में धर्म एवं असहिष्णुता परस्पर सम्बद्ध रहे हैं। यहां तक कि जब असहिष्णुता शिथिल पड़ गई तो लोगों ने समझ लिया कि धर्म का ह्रास हो गया है। इस निष्कर्ष की सत्यता को चुनौती दी जा सकती है।

जेम्स द्वितीय और विलियम के शासन कालों में लिखते हुए स्वयं लॉक ने इस बात पर बल दिया था कि नास्तिकों अथवा रोमन कैथोलिक धर्मावलम्वियों में से किसी का सहिष्णुता के लिए समाज पर सम्पूर्ण दावा नहीं है। इसका कारण है कि जहां प्रथम वर्ग ने नैतिकता पर आक्रमण किया दूसरे वर्ग ने राज्य की शक्ति को कमजोर

से अधिक नहीं होता था। हेलेवी, हिस्ट्री आफ इंगलिश पीपुल, खंड २, पृष्ठ २३३ (पेलिकन संस्करण)।

के कारागारों की निन्दनीय स्थिति का रहस्योद्घाटन कर किया। इसी श्रृंखला में बेन्थम ने अंग्रेजी कानून की निरर्थक और उलझी हुई बेहूदगियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उसके विचार में वह (कानून) अत्यन्त अनुदार व्यवसायों को हृदय से प्रिय लगने वाला एक वेशित हित था।

कानून के शासन का सर्वोत्तम विचार, जो किन्हीं दृष्टियों से शासकों की इच्छा से श्रेष्टतर था, अठारहवीं शताब्दी के अंग्रेजों में काफी प्रबल था। इसे क्रान्ति की घटनाओं एवं उनके परिणाम स्वरूप न्यायाधीशों की अपदस्थता से प्राप्त किया गया था। अब न्यायाधीश मात्र सरकार (प्रशासन) के गीदड़ नहीं थे किन्तु राजा और प्रजा के विवादों को निपटाने के स्वतंत्र पर्यवेक्षक थे।

कानून की सर्वोच्चता की इस उच्च अवधारणा को ब्लैकस्टोन की कृति "कमेंट्रीज़ आन दि लॉ आफ इंगलैंड" (१७६५) ने लोकप्रसिद्ध बना दिया। इस पुस्तक को इंगलैंड और अमरीका के शिक्षित लोग व्यापक रूप से पढ़ते थे क्योंकि उस युग के लोगों की कानून में तीव्र दिलचस्पी थी। उसमें केवल इतना दोष था कि इस प्रकार जिस कानून को आदर्श स्वीकारा जा रहा था उसे अत्यधिक स्थिर माना जाता था, जैसे वह कोई ऐसी वस्तु हो जो सदा के लिये दे दी गई हो। परन्तु यदि कानून वास्तव में किसी राष्ट्र के जीवन का स्थायी शासक हो सकता है तो इसमें समाज की परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं में परिवर्तन होने की क्षमता होनी चाहिये। अठारहवीं शताब्दी में संसद ने विधायिका क्रिया (कानून बनाने की क्रिया) में कोई रुचि नहीं दिखाई। उसने केवल भूमि की घेरेबन्दी, रोकफाटक वाली सड़कों तथा कुछ अन्य आर्थिक कानूनों, जैसे निजी कानूनों, को पारित किया। प्रशासकीय मामलों में विधान में एक पश्चायन था और यह ऐसा समय था जबकि प्रत्येक वर्ष महान् औद्योगिक विकासों से सामाजिक दशायें बदल जाती थीं और बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं में वृद्धि आ जाती थी।

अतएव जरमी बेन्थम, जिसे अंग्रेजी कानून के सुधारों का पिता कहा जाता है, ब्लैकस्टोन को घोर शत्रु मानता था जो उस समय विद्यमान इंगलैंड के कानूनों के प्रति लोगों में अन्ध श्रद्धा जगाकर परिवर्तन में बाधक था। उस समय कानूनों का जो रूप था वह तात्कालिक युग की अपेक्षा लम्बे बीते युगों की आवश्यकताओं के अनुरूप था।[1]

सर्वप्रथम, १७७६ में प्रकाशित अपनी कृति "फ्रैगमेण्ट ऑन गवर्नमेंट" के माध्यम से

---

[1] प्रोफेसर होल्ड्सवर्थ का विचार है कि ब्लैकस्टोन की रूढ़िवादी आशावादिता का बेन्थम ने कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है, वास्तव में ब्लैकस्टोन उतना अंधा नहीं था जितना कि उसे उसके आलोचक ने कहा है।

युवा बेन्थम ने ब्लैकस्टोन पर प्रथम आघात किया। इसी उत्पत्ति विषयक (अंकुरीय) वर्ष में ऐडम स्मिथ की कृति "वेल्थ ऑफ नेशन्स", गिबन की 'हिस्ट्री' के प्रथम भाग का प्रकाशन और अमेरिकी स्वातंत्र्य की घोषणा जैसी महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं। जब अस्सी वर्ष की आयु से अधिक में बेन्थम की मृत्यु १८३२ में हुई तो इंगलैंड के कानूनों की जो स्थिति ब्लैकस्टोन के काल में थी और जिसकी उसने (बेन्थमने) भर्त्सना की थी, उस स्थिति से वे केवल सजग होना प्रारम्भ हुए थे। फिर भी उसके दीर्घकालिक प्रयत्न व्यर्थ नहीं सिद्ध हुए थे क्योंकि नयी पीढ़ी के विचारों को बदलने में वह सफल हो गया था। उस समय के पश्चात् हमारे कानूनों में सामान्य बुद्धि और बेन्थम द्वारा प्रतिपादित उपयोगितावादी सिद्धान्तों के अनुसार तीव्र परिवर्तन आया।

उन्नीसवीं शताब्दी का विशिष्ट कार्य सुधार था। उससे पूर्व के हैनोवर युग का विशिष्ट कार्य कानून के शासन की स्थापना था। और वह कानून, अपने समस्त गम्भीर दोषों के बावजूद, कम से कम स्वतंत्रता का कानून था। उसी ठोस आधारशिला पर कालान्तर के हमारे समस्त सुधारों का निर्माण हुआ था। यदि अठारहवीं शताब्दी ने स्वातंत्र्य के कानून की स्थापना न की होती तो इंगलैंड में उन्नीसवीं शताब्दी क्रान्ति जन्य हिंसा को लेकर आगे बढ़ी होती न कि कानून का संसदीय तरीकों से संशोधन, जैसा वस्तुतः हुआ।

निर्धनों से सम्बन्धित कानूनों के दुरुपयोगों का कारण सरकार के आधुनिक अवयवों का अभाव और सबसे ऊपर केन्द्रीय संगठन और नियंत्रण का पूर्णतया अभाव था। इन दुरुपयोगों के बारे में अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड में बहुत कुछ कहा सुना गया। निर्धनों (दरिद्रों) और बेकारी की समस्या तत्वतः एक राष्ट्रीय समस्या थी अथवा कम से कम क्षेत्रीय तथापि प्रत्येक तुच्छ पैरिश प्रत्येक दूसरी पैरिश से विरोध की स्थिति में उससे निपटने का पृथक प्रयास करती थी। ग्राम्य अज्ञानता एवं स्थानीय ईर्ष्या को इस भयंकर समस्या से अपनी अपनी युक्तियों से खिलवाड़ करने की छूट थी। 'उस समय मुख्य चिन्ता यही रहती थी कि यदि कोई व्यक्ति दरिद्र सहायता पर भार बन कर बैठा है तो उसे पैरिश से बाहर कैसे खदेड़ा जाय। यह नीति श्रम की गतिशीलता में बाधक हुई तथा इससे बेकारी की स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो गई। किन्तु इंगलैंड में पुलिस एवं कारागारों की समस्या की तुलना में निर्धनों की समस्या को एक लाभ था कि प्रत्येक पैरिश में निर्धनों की सहायता के लिए निर्धनता शुल्क लगाना कानूनी रूप से अनिवार्य था। इसके विपरीत करदाताओं को असाधारण कठिनाई मालूम पड़ती यदि मजिस्ट्रेट सड़कों, कारागारों, स्वच्छता एवं पुलिस पर व्यय करने के लिए कोई शुल्क लगाने की घोषणा करता।

ग्रामीण इगलैंड पर जस्टिसेज़ आफ पीस के पितृसत्तात्मक प्रभुत्व का शासन था। किसी प्रयोजन के लिए एक स्थानीय कर में वृद्धि करना एवं उसके व्यय के ढंग का निर्णय

युग में बढ़ी हुई कानूनी कठोरता का प्रभाव यह हुआ कि जूरी बहुधा साधारण (गौण, छोटे) अपराधों के लिए अभियुक्तों को दोषी ठहराना अस्वीकार कर देते क्योंकि दोष सिद्ध होने पर उन्हें फांसी पर लटका दिया जाता। इसके अतिरिक्त एक चतुर वकील की सहायता से एक अपराधी के लिए पुरातनपन्थी एवं अतिशय विस्तीर्ण कार्यविधि के जाल से मात्र प्राविधिक आधारों पर छूट जाना आसान था। यदि छः चोरों पर मुकदमा चलाया जाता तो उनमें से पांच किसी न किसी प्रकार निर्दोष सिद्ध होकर छूट जाते थे किन्तु अभागे छठे को फांसी दे दी जाती थी। संभवत अपराधों के लिए यह अधिक प्रतिरोधक सिद्ध होता यदि छहों अभियुक्तों को एक निश्चित अवधि का कारावास भोगने का विश्वास होता।

यह स्थिति और भी खराब हो गई थी क्योंकि गिरफ्तार होने के बहुत कम अवसर थे। द्वीप में कार्यालय के लिए धावकों के अतिरिक्त कोई भी प्रभावपूर्ण पुलिस न थी। इन 'धावकों', को फील्डिंग बन्धुओं ने अठारहवीं शताब्दी के लगभग मध्य में अपने बौ स्ट्रीट वाले घर में स्थापित किया था।[1] जब तक वास्तव में सैनिकों को बुलाया न जाता तब तक एक अनियंत्रित भीड़ को तितर बितर करने के लिए कोई सक्षम दल (शक्ति) वहां नहीं पहुंचता। अतएव १७८० में गोर्डन दंगों की अशोभनीय घटना घटी थी। जिसमें लन्डन की उग्रभीड़ ने सत्तर मकानों और चार कारागारों को भस्म कर दिया था। वास्तव में आश्चर्य की बात यह है कि इन स्थितियों में हमारे पूर्वजों ने सार्वजनिक व्यवस्था एवं निजी (व्यक्तिगत) सम्पत्ति की इतने अच्छे ढंग से सुरक्षा की। कम से कम औसतन वे हमारी अपनी पीढ़ी के लोगों के समान ही नैतिक नियमों एवं कानूनों का पालन करने वाले रहे होंगे, यदि हमारे विशाल नगरों में आज पुलिस का उन्मूलन कर दिया जाये तो उसका क्या प्रभाव होगा ?

फिर भी जब तक यूरोप महाद्वीप में नैपोलियन संहिता नहीं प्राप्त हुई थी यह संभव है कि अपने दोषों के बावजूद अंग्रेजी न्यायप्रणाली संसार में सर्वोत्तम रही हो, जैसी गर्वोक्ति ब्लैकस्टोन ने की थी। प्राचीन शासनों की यूरोपीय संहिताओं की तुलना में कम से कम इससे दो लाभ थे। इसने राजनैतिक मामलों के बन्दी को प्रशासन के

---

[1] उपन्यासकार हेनरी फील्डिंग और उसका सुप्रसिद्ध सौतेला भाई सर जान, जो जन्मांध था, लन्डन के उस शताब्दी के सर्वोत्तम मजिस्ट्रेट थे। वास्तव में वे वेस्टमिंस्टर के वेतनभोगी न्यायाधीश थे। उस युग के एक लोक गीत में सड़कों पर राहजनी करने वाले एक व्यक्ति ने नीचे लिखी पंक्तियां गाई थी :

'एक सुन्दर दिन मैं लंडन गया, अपनी प्रेयसी के साथ नाटक देखने, वहां फील्डिंग के गिरोह ने मेरा पिछा किया, और उन दुष्टों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया।'

विरुद्ध अपनी रक्षा करने का यथार्थ अवसर प्रदान किया। यह सुधार १६९५ के देश-द्रोह अधिनियम के कारण संभव हो सका था तथा इसमें क्रान्ति के पश्चात् राजनैतिक एवं न्यायिक अभ्यास की सामान्य प्रवृत्ति से भी सहायता मिली। किसी प्रकार के मुकदमों, राजनैतिक अथवा अन्य, में अपराध स्वीकारोक्ति (अभियोग-स्वीकृति) अथवा साक्ष्य प्राप्त करने के लिए यातना देना निषिद्ध था। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि अंग्रेजी न्याय में दण्ड के रूप में यातना देना त्याग दिया गया था क्योंकि यद्यपि हमारे द्वीप में अभियुक्त को पहिए से बांधकर उसकी हड्डी तोड़ना (फांसी देने का पुराना ढंग) अज्ञात था, विशेषकर नौसेना या थल सेना में कोड़े लगाना एक प्रकार की यातना ही थी।

अभी तक अंग्रेज लोगों को उन लोगों को दण्ड दिया जाता देखने का शौक था जिनके कार्यों को वे नापसन्द करते थे। पार्सन वुडफोर्ड की डायरियों से दो उद्धरण यहां देना अनुचित न होगा। यह सज्जन परोपकारी थे और साधारणतया मनुष्यों एवं पशुओं के प्रति दयालु थे।

"२२ जुलाई १७७७—आलू चुराने के अपराध में राबर्ट बिगेन को कैरी (सोमरसेट) की सड़कों पर आज अपरान्ह को कोड़े लगाए गए। वह एक गाड़ी के पीछे बंधा था और जल्लाद कोड़े लगा रहा था। 'जार्ज इन' से लेकर एंजेल तक और वहां से दक्षिणी कैरी तक सारी सड़क पर और फिर जार्ज इन तक वापस लौटने तक उसे कोड़े लगाए गए। यह व्यक्ति पुराना अपराधी था। अतः उसके प्रति 'न्याय' करने के लिए जनता ने जल्लाद को १७·५ शिलिंग चन्दा दिया। किन्तु यह उस सबके लिए अधिक नहीं था। जल्लाद वृद्ध था और एक अत्यन्त दुष्ट (खल) दिखने वाला व्यक्ति था। मैं अपनी ओर से उसे उस दुष्कृत्य के लिए एक फार्दिंग भी चन्दा नहीं देता।'

"७ अप्रैल १७८१—मैंने अपने नौकर विल को दस मील सड़क की यात्रा कर नार्विक जाने की छुट्टी दी जहां आज तीन राहजनी के अपराधियों (दस्युओं) को फांसी लटकाया गया। विल सायंकाल में लगभग ७ बजे लौट आया। वे तीनों फांसी लटकाये गये और लग रहा था उन्हें अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप था।"

चाहे सब मिलाकर अंग्रेजी न्याय आज कल के यूरोपीय चलन (अभ्यास) की तुलना में कम अच्छा हो अथवा नहीं, यूरोप और इंगलैंड के दार्शनिकों ने कानून एवं दण्ड की विद्यमान प्रणालियों पर अपना विख्यात आक्रमण प्रारम्भ कर दिया था। जिन दुष्कर्मों को सभी पूर्ववर्ती युगों में साधारण घटनाएं मानकर सहन किया जाता था उन दुष्कर्मों (विकारों) के प्रति व्यापकतर संवेदनाशीलता एक सामान्य मानवतावादी आन्दोलन का भाग थी जिसका सम्बन्ध यूरोप महाद्वीप के वोल्टायर और 'दार्शनिकों' से तथा इंगलैंड के 'दर्शन' और धर्म से था। इटालवी सुधारक, बैकेरिया ने यूरोप की 'दण्ड संहिताओं पर जो आक्रमण किया उसका अनुसरण होवार्ड ने इंगलैंड तथा विदेशों

ने इस भयानक स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट किया और कुछ अत्यन्त दूषित प्रथाओं को कम करने में सफलता प्राप्त की। उसके पूर्व की पीढ़ियों ने कदाचित ही कभी यह जानने की कोशिश की हो कि इन कष्टों के गृहों (जेलों) में क्या होता था।

यह वीर सेनापति जार्जिया के नये उपनिवेश का संस्थापक और प्रथम गवर्नर हो गया। यहां उसने अनेक कर्जदारों और दरिद्र लोगों को ले जाकर वसाया। वह पोप की प्रशंसा का सुपात्र था,

"जो व्यक्ति आत्मा की प्रगाढ़ परोपकारिता से प्रेरित है वह ऑगलथार्प की भांति स्थान-स्थान पर विचरण करेगा।"

उस युग के बहुत से लोगों की विशेपता "आत्मा की प्रगाढ़ परोपकारिता" थी। ऑगलथार्प के महत्वपूर्ण मित्र डा. जॉन्सन की असाधारण घरेलू व्यवस्था इसी प्रेरणा से शासित थी। प्रारंभ से लेकर शताब्दी के अन्त तक उत्साही धार्मिक व्यक्तियों, जैसे राबर्ट नेल्सन, लेडी एलिजावेथ हैस्टिग्ज, वेज्लेज, कॉवपर और अन्ततः विल्वर फोर्स, के नवीन शुद्धिवाद ने न्यू टेस्टामेंट की दानशीलता का अभ्यास करने का प्रयास किया। उन्होंने ओल्ड टेस्टामेंट के कठोर उपदेशों को त्याग दिया जिन्होंने क्रामवेल की सेनाओं को युद्ध के लिए प्रस्थान करने को प्रेरित किया था। यह कोई आकस्मिक घटना न थी कि अंग्रेजी कथा (गल्प) साहित्य के प्रथम महान् युग में अंकल टॉवी, वाइकर ऑफ़ वेकफील्ड, श्रीऑलवर्दी और पार्सन एडम्स जैसे अग्रणी व्यक्ति पैदा हुए थे। दूसरों की विशेपतया निर्धनों की, कठिनाइयों और आवश्यकताओं के प्रति एक तीव्र संवेदनशीलता न केवल साहित्य में प्रतिविम्वित हुई थी किन्तु उसे परोपकारवादियों के जीवन और उस युग के क्रियाकलापों में भी देखा जा सकता था। इसी के परिणामस्वरूप प्रथम धर्मार्थ विद्यालयों की, तदनन्तर अस्पतालों की और शताव्दी के अन्तिम वर्षों में रवि-वासीय विद्यालयों की स्थापना हुई थी। इस प्रवृत्ति ने प्रजाति और वर्ण की सीमाओं का अतिक्रमण कर लिया था। इससे राजनयिकों की कठोर व्यवहारकुशलता पिघल गई थी। 'झंझावत सम दया' ने ही भारत और फ्रांस के सम्बन्ध में क्रमशः वर्क और फॉक्स की भाषण प्रवीणता और कुछ त्रुटियों को प्रेरित किया था। "अन्ततः इसी ने अंग्रेजों के विवेक (अन्तःकरण) को दास व्यापार के विरुद्ध महान् विद्रोह करने के लिए उकसाया था।

फिर भी जहां नवीन मानवतावादी भावना से व्यक्तिगत पहलकदमी को प्रेरणा मिली वहां अभी तक इसका प्रशासकीय, स्थानीय निकायों एवं विधायिका के कार्यों पर नगण्य प्रभाव था। सरकार जो व्यवहार अपने सैनिकों और नाविकों के प्रति करती

लिए प्रेरित करने का असफल प्रयास किया था ताकि वे कर्मचारी कैदियों से जवर्दस्ती फीस वसूल न किया करें।

थी उससे अधिक अच्छा व्यवहार निजी सेवायोजक (मालिक) अपने नौकरों के साथ करते थे। अनिवार्य भरती के सैनिकों के अव्यवस्थित एवं अन्यायपूर्ण बाध्यता द्वारा जहाजी बेड़े को चलाया जाता था क्योंकि राजकीय (शाही) जहाजों में कुख्यात दशाओं के कारण स्वेच्छिक भर्ती बहुत अपर्याप्त होती थी। मछुओं और व्यापारिक नाविकों का जीवन काफी कठिन था किन्तु फिर भी यह सैनिकों के जीवन से अच्छा था। सैनिकों को बहुत थोड़ा और खराब भोजन मिलता था। उन्हें अपर्याप्त और अनियमित वेतन मिलता था; उनके स्वास्थ्य पर कोई ध्यान नहीं देता था जबकि उन्हें लौह अनुशासन के अन्तर्गत काम करना पड़ता था। दयालु नौसेनाध्यक्ष वर्नन, जिसे नाविकों का स्पष्ट-भाषी मित्र होने के कारण जार्ज तृतीय के शासन में कठिनाई उठानी पड़ी थी, ने कहा था कि "हमारे जहाजी बेड़ों के साथ अन्याय द्वारा धोखा होता है, हिंसा से उनपर अधिकार रखा जाता है और उनके संचालन में क्रूरता की जाती है।"

थल सेना के निजी सैनिक के साथ इससे अच्छा व्यवहार नहीं होता था। अपने मूलस्थान में रहने पर उसके लिए सैनिक बैरकों की व्यवस्था न थी किन्तु जनसाधारण के बीच उसे शराब खानों में ठूंस दिया जाता था जहां ऐसे लाल कोटधारी सैनिकों से लोग घृणा करते थे और तदनुरूप उसके प्रति व्यवहार करते थे। वे जनता में अधिक अप्रिय थे क्योंकि दंगों तथा तस्करी के मामलों में वही कार्यकुशल पुलिस के रूप में कार्य करते थे। इन सैनिकों के अनुशासन के बारे में कुछ मत पूछिए। जार्ज द्वितीय के एक सैनिक को १६ वर्ष की अवधि में ३०,००० कोड़ों की सजा मिली थी, फिर भी यह व्यक्ति स्वस्थ और प्रसन्न चित्त था और पूर्णतया अप्रभावित प्रतीत होता था। देश में रहने पर उनकी यह दशा थी किन्तु यदि उन्हें वेस्ट इन्डीज में तैनात कर दिया जाता तो यह मृत्यु दण्ड के बराबर था। इन्हीं मनुष्यों ने सागर अथवा भूमि पर विभिन्न अभियानों से इंगलैंड के लिए साम्राज्य जीता, उसके व्यापार की रक्षा की तथा देश के भीतर उसे धन एवं आनन्द प्रदान जिया था किन्तु उस सबका उन्हें यह पुरस्कार मिला था।

सम्पूर्ण शताब्दी भर संसद अंग्रेजी कानून की 'घृणित संहिता' में एक अधिनियम के बाद दूसरा अधिनियम जोड़ता गया जिससे मृत्यु दण्ड दिए जाने वाले अपराधों की सूची में शाश्वत रूप से वृद्धि होती गई और अन्ततः ऐसे अपराधों की संख्या दो सौ पहुंच गई। न केवल घोड़ों एवं भेड़ों का चुराना तथा जाली सिक्के बनाना मृत्युदण्ड योग्य अपराध थे वरन् पांच शिलिंग से अधिक मूल्य के सामान को दुकान से चुराना अथवा किसी व्यक्ति से रहस्यमय ढंग से कोई वस्तु चुराना, चाहे फिर वह रूमाल क्यों न हो, आदि अपराध भी मृत्यु दण्ड के योग्य थे। किन्तु कानून की ऐसी तर्कहीन अराजकता थी कि हत्या के प्रयास को अब भी मामूली दण्डनीय माना जाता था यद्यपि किसी व्यक्ति की नाक काट लेना मृत्यु-दण्डनीय था। अधिक मानवतावादी होने वाले

वनाया। किन्तु वास्तव में दोनों को अधिक उदार एवं सहिष्णु दर्शन, जिसको उसके (लॉक के) प्रभाव ने क्रमानुगत युगों पर थोपने में सहायता की थी, से लाभ हुआ।

लॉक की कृति "रीजनेबलनेस ऑफ़ क्रिस्चियनिटी" (ईसाई धर्म का औचित्य) (इसका शीर्षक ही नए प्रकार के विचार एवं धर्म का संकेत देता है) दो आन्दोलनों का आरंभ-विन्दु था, धार्मिक सहिष्णुतावाद, जो कुछ समय के लिए प्रतिष्ठित चर्च का, न कि मेथॉडिक चर्च का, प्रचलित स्वर हो गया था, तथा अंग्रेजी आस्तिकतावादी आन्दोलन, जिसके प्रति समस्त सम्माननीय लोगों में अविश्वास था।

अठारहवीं शताब्दी के प्रथम तीस वर्षों में आस्तिकतावादियों, जैसे टोलैंड, टिण्डल और कॉलिन्स, को अपने सावधानीपूर्वक व्यक्त विचारों को छापने की अनुमति थी और उसके लिए उन पर मुकदमा नहीं चलाया जाता था। उनको केवल स्विफ्ट के व्यंग से ही प्रत्युतर नहीं मिला अपितु उनके विरुद्ध ऐसे लोगों ने तर्क दिए थे जो उनसे कहीं अधिक बुद्धिमान थे। इन लोगों में विशप वटलर, विशप वर्कले, बेन्टले और विलियम ला सम्मिलित थे। वोल्टायर इन अंग्रेज आस्तिकतावादियों का अधिक महत्वपूर्ण और साहसी शिष्य था। उसे फ्रांस में ऐसे विरोधियों का सामना नहीं करना पड़ा। किन्तु वह सदैव चर्च एवं राज्य की ओर से उत्पीड़न से भयभीत बना रहा। अंशतः इसी कारण से यूरोप महाद्वीप में आस्तिकतावाद इंगलैंड की तुलना में अधिक कट्टर और ईसाई-विरोधी हो गया। वास्तव में, अठारहवीं शताब्दी के विचारों के आधुनिकतम इतिहासकार ने इसके विषय में लिखा है, 'वह विचित्र अंग्रेजी घटना, विज्ञान एवं धर्म की पवित्र मैत्री, जो (ह्यूम की उपस्थिति के वावजूद) शताब्दी के अन्त तक कायम रही' (वैसिल विल्ले, **दि एटीन्थ सेन्चुरी बैकग्राउण्ड**, पृ० १३६)। डैविड हार्टले, जिसके नाम पर कॉलरिज ने अपने पुत्र का नामकरण किया था, भी इसे 'पवित्र मैत्री' कहता था। पोप की इस सूक्ति के शब्दों पर ध्यान दीजिए—

'प्रकृति एवं प्राकृतिक नियम रात्रि के अंधकार में छिपे पड़े थे, ईश्वर ने कहा, न्यूटन जन्मे। और अब सब कुछ प्रकाशमान था।'

विज्ञान एवं धर्म के सामंजस्य (मेल) के श्रेष्ठ प्रतीक के रूप में १७५५ में कैम्ब्रिज स्थित ट्रिनिटी कालेज के पार्श्व गिरजे में रौविलॉक द्वारा निर्मित न्यूटन की प्रतिमा की स्थापना की गई थी।

यह सत्य है कि जार्ज तृतीय के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में ह्यूम एवं गिवन की वौद्धिक महत्ता के व्रिटेनवासी थे जो घोर संशयवादी (अनीश्वरवादी नास्तिक) थे। फिर भी गिवन ने भी व्यंग की शिष्ट अस्पष्टता में अपने यथार्थ विचारों को प्रच्छन्न रखना ठीक समझा। जैसाकि वॉसवेल की पुस्तक 'जॉन्सन' का प्रत्येक शिक्षक परिचित है इन महान् संशयवादियों और उनके कम महत्वपूर्ण अनुयाइयों की समाज में निन्दा होती थी। कट्टरपंथी (धर्मनिष्ठ) लेखकों ने इन लोगों पर अनेक आक्रमण किए किन्तु गुण में वे ऊँचे नहीं थे। (धर्मनिष्ठ लेखकों ने इन लोगों पर अत्यधिक आक्रमण

किए किन्तु वे निम्नस्तर के थे ।) १७७६ में एक ऐसी निधि, जिसका स्मरण आज भी इस अवधि के सम्बन्ध में किया जाता है, जो अनास्था एवं सिद्धान्तहीनता सर्वाधिक मार्के की थी, ह्यूम ने गिबन को उसके रोमन इतिहास के प्रथम भाग के स्वागत के विषय में लिखा था : "इंगलैंड में मिथ्या विश्वास का व्याप्त होना दर्शनशास्त्र के पतन एवं सुरुचि के ह्रास के लिए भविष्यवाणी करता है।" ह्यूम अत्यन्त निराशावादी था किन्तु उसका उपरोक्त कथन उसकी यथार्थ अनुभूति से निसृत था।

किसी भी तरह अंग्रेजों को अठारहवीं शताब्दी का विद्वतापूर्ण संशयवाद केवल उच्च शिक्षा प्राप्त श्रोतागणों (जनता) के लिए व्यक्त किया जाता था; उसका आशावादी-दर्शन जीवन की उच्चवर्गीय दशाओं का परिणाम था। जब फ्रांसीसी क्रान्ति की अवधि में टॉम पेन ने जनतंत्र के एक उचित धर्म (विश्वास) के रूप में आस्तिकतावाद की ओर से जनसाधारण से अपील की तब एक नया युग आ चुका था। (दुष्तोष्य तुनक मिजाज) एवं रूढ़िवादी गिबन के जीवन काल में, यह कहा जाता है कि बालों के पाउडर की भांति अनास्था को केवल कुलीन लोग धारण कर सकते थे। राष्ट्र का जनसाधारण सक्रिय एवं निष्क्रिय (निश्चेष्ट, अकर्मण्य, उदासीन) रूप से ईसाई धर्म का अनुयायी था। जिस धर्म की उन्हें शिक्षा दी जाती थी उसे वे स्वीकार करते थे। वास्तव में समाज के निम्नतम वर्ग को किसी चीज की शिक्षा नहीं दी गई थी किन्तु इन्हें भी धर्मार्थ विद्यालय एवं वेस्लेवादी प्रचारक अज्ञानता से निकालकर समझदार ईसाइयों के स्तर तक लाने का प्रयत्न कर रहे थे।

अंग्रेजों की अठारहवीं शताब्दी का धर्म, प्रतिष्ठित गिरजा और विमतिवादी संगठन दो सम्प्रदायों (मतान्तरों) में विभक्त था जिसे संक्षेप में हम सहिष्णुतावादी एवं मेथोडिस्ट (ईसाइयों का कट्टर धार्मिक सम्प्रदाय) कह सकते हैं। यदि हम इनमें से किसी एक का भी वर्णन न करें तो उस युग के सामाजिक दृश्य का सही चित्रण नहीं हो सकता। इन पूरक व्यवस्थाओं में से प्रत्येक के अपने कार्य थे; प्रत्येक के गुणों में दोष भी थे, जिन्हें दूसरा पूरा करता था। सहिष्णुतावादी सहिष्णुता की भावना के समर्थक थे, जिसके अभाव में ईसाई धर्म ने गत कई शताब्दियों में उस संसार में भयंकर विनाश किए थे जिसकी रक्षा का इसने बीड़ा उठाया था। धार्मिक सिद्धान्तों के निर्वचन (व्याख्या) में औचित्य के भी समर्थक सहिष्णुतावादी थे जिसके बिना उन्हें अधिक वैज्ञानिक आधुनिक मानस शायद ही स्वीकार करता। दूसरी ओर मेथॉडिज्म (कट्टर धार्मिकता) ने आत्म-संयम (आत्मानुशासन) एवं सक्रिय उत्साह का पुनर्नवीकरण किया जिनके अभाव में धर्म की शक्ति नष्ट हो जाती है और उसका प्रयोजन (उद्देश्य) विस्मृत हो जाता है। और इस नये ईसाई धर्म प्रचार का एक सक्रिय परोपकारिता से संयोग था। इस युग के दोनों सम्प्रदायों, सहिष्णुतावादी एवं धार्मिक कट्टरतावादी, में समय के परिवर्तन के साथ परिवर्तन आ गए थे। किन्तु उन्होंने क्रमशः जिन सिद्धान्तों का

उद्धार एवं संगठन (साकार रूप) किया उन्होंने नए रूपों एवं मेलों (मिश्रणों) में प्रगति की है। इसी कारण से अनेक परिवर्तनीय पीढ़ियों में अंग्रेजी जीवन में एक प्रवल शक्ति के रूप में धर्म सुरक्षित बना रहा है।

क्रान्ति के पश्चात् से ही राजनैतिक परिस्थितियां सहिष्णुतावादियों के अनुकूल रही हैं। तथा जार्ज प्रथम के सिंहासनारूढ़ होने के उपरान्त व्हिग राजनयिकों, जिनके पास गिरजे (धर्म) के उच्चतर संरक्षकत्व की कुंजी थी, में हेनोवेरियन राजवंश की रक्षा करने की कर्तव्यभावना थी। इसे वे गिवन एवं वेक की भांति विद्वान राजनयिकों और संदेहपूर्ण होडले को भी प्रोत्साहित एवं उस उत्साह को निरुत्साहित कर करना चाहते थे जिसका अर्थ वालपोल के समय में उच्च धर्म और ऐटरवरी तथा एक वेरेल की जैकोवी धर्मान्विता से था। जैसे जैसे शताब्दी का अन्त निकट आता गया वेस्ले के उत्साह सहित सभी प्रकार का उत्साह प्रतिष्ठित धर्म के पादरियों एवं उच्च वर्गों द्वारा बुरा माना जाता था।

जार्ज तृतीय के सिंहासनारूढ़ होने के समय तक धर्म (गिरजा) एवं हैनौवर के राजघराने के बीच पूर्ण समायोजन हो गया था और सहिष्णुतावाद के लिए राजनैतिक प्रेरक शक्ति निष्क्रिय हो चुकी थी। किन्तु अपनी आन्तरिक शक्ति और राजनैतिक शक्तियों से भी अधिक गहरी शक्तियों से चालित होकर आन्दोलन चलता रहा। मृत होते हुए भी लॉक और न्यूटन का प्रभाव सर्वोपरि था। युग की उत्तरोतर बढ़ती हुई वैज्ञानिक भावना ने इस बात को आवश्यक बना दिया था कि ईसाई धर्म का औचित्य सिद्ध किया जाय और उस पर बल दिया जाय। चमत्कारपूर्ण कार्य कम वास्तविक प्रतीत होते थे: कुछ लोगों के लिए ये अविश्वसनीय थे। ब्रह्माण्ड में अपरिवर्तनीय नियम, जैसे कि गुरुत्वाकर्षण का नियम, जो नक्षत्रों को पथभ्रष्ट होने से रोकता था, को अब ईश्वर की गरिमा का एक लक्षण माना जाता था।

एडिसन का एक भजन १७१२ में स्पेक्टैटर नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था जो उस शताब्दी को प्रतिध्वनित करती रही जब तक युवा कॉलरिज एवं वर्ड्स्वर्थ ने उस आश्चर्यजनक कहानी को नहीं कहा।[1] उस भजन का रूपान्तर निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है—

ऊँचे विस्तीर्ण अन्तरिक्ष में,
सम्पूर्ण नीले तरल आकाश के साथ,

---

[1] तुलना के लिये देखिये, कॉलरिज कृत **हिम बिफोर सनराइज, इन दि वेल ऑफ़ चमूनी**। लाक से वर्ड्सवर्थ के संबंध आदि के लिए देखिए श्री वासिलविली की कृति **सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी बैकग्राउंड**, अध्याय १२, और उसी लेखक की समान रूप से महत्वपूर्ण अन्य कृति, **दि एटीन्थ सेन्चुरी बैकग्राउंड**।

और चमकते हुए ग्रह, एक चमकता हुआ ढांचा
उनकी महान् मौलिक घोषणाएं करता है ।
प्रतिदिन अश्रान्त, निरन्तर प्रदीप्त सूर्य,
अपने सृष्टिकर्त्ता की शक्तियों को दर्शाता है,
और प्रत्येक देश को सूचित करता है,
एक सर्वशक्तिमान सत्ता के कार्य ।

इस प्रकार के धर्म के लिए एकतावादी अथवा आस्तिकतावादी धर्म में बदल जाना सरल था । वास्तव में अंग्रेजी प्रेसबिटेरियन संगठन मुख्यतया एकतावादी हो गया था जिसका अग्रणी दार्शनिक एवं वैज्ञानिक प्रीस्टले था । पूर्व की शताब्दियों में धर्म प्रथमतः एवं अन्ततः एक रूढ़ सिद्धान्त (हठधर्मिता) था । अब एक नैतिकता के रूप में इसका प्रचार करना फैशन हो गया था और उसके साथ विनम्रता से थोड़ा सारूढ़ सिद्धान्त भी जुड़ा रहता था । प्रतिष्ठित चर्च के धर्म का वर्णन कैनन चार्ल्स स्माइथ ने निम्नलिखित रूप में किया है—

"अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड में आर्कबिशप टिल्लोट्सन (१६३०-१६९४) का प्रभाव सबसे प्रबल था । उसकी विरासत अंशतः अच्छी और अंशतः बुरी थी । बाद के मध्ययुग में श्रमणों के बड़े गिरजों की भांति उस युग में हमारे गिरजे भी प्रवचनों के लिए उपयुक्त माने जाते थे । उस समय अंग्रेजी धार्मिक सभाओं के लिए टिल्लोट्सन ने जिस भाषा का प्रचार किया वह सरल, व्यावहारिक एवं स्पष्ट गद्य था । उसकी शैली की सफलता ने मध्ययुगीन धर्म की विस्तृत परम्परागत धार्मिक सभाओं में वक्तृत्वशैली से निश्चय ही अपने को पृथक कर लिया था । लैटिमर, एण्ड्रयूज, डोन एवं टायलर सभी अपने अपने विभिन्न ढंग से निस्संदेह मध्ययुगीन थे । यह समझ लेना संभव है कि टिल्लोट्सन ने किस प्रकार ऐंग्लिकन धर्म-प्रचार कला को पांडित्य और आडम्वर के दलदल में गिरने से बचाया । दूसरी ओर, उसके धार्मिक प्रवचनों में सांसारिक नैतिकता के सिवा कुछ नहीं होता था जो ईश्वर से प्राप्त ज्ञान की अपेक्षा तर्क पर आधारित होती थी । इन प्रवचनों का शिष्ट सामान्य बुद्धि वाले लोगों पर निश्चयात्मक प्रभाव पड़ता था । नैतिक शुद्धाचरण की दिव्य वार्त्ता ने अंग्रेजी चरित्र (स्वभाव) की जो सेवा की उसकी उपेक्षा केवल धर्मान्धता कर सकती है । आज जिस किसी स्थिति में एक अंग्रेज कार्य करता है उसमें कर्त्तव्य भावना समायी रहती है । यह सब टिल्लोट्सन के कार्यों का प्रभाव है । (बेरिंग गूल्ड) फिर भी यह ईसाई दिव्यवार्ता की तुलना में कहीं अधिक कम है । यद्यपि आज भी हमारे वास्तविक राष्ट्रीय धर्म के रूप में साधारण अंग्रेज स्त्री-पुरुषों की चेतनाओं में इसकी स्थिति (प्रभाव) दृढ़ है चाहे फिर इंगलैंड के धर्म (चर्च) के प्रवचन स्थलों में इसका प्रभाव नगण्य हो ।" (**दि प्रीस्ट ऐज स्टुडेण्ट**, एस. पी. सी. के., १९३९, पृष्ठ २६३-६४) ।

जार्ज तृतीय के शासन के प्रारंभिक वर्षों में पादरी की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति में उन्नति हो रही थी। इस समय उसे भद्रजनों के समान प्रतिष्ठा मिलने लगी थी जैसा कि इसके पूर्व कभी नहीं हुआ था। किन्तु इस स्थिति में अधिकांश पैरिश-वासियों से उसका सम्पर्क समाप्त हो गया था। वह अपने उपदेशों को सावधानीपूर्वक लिखता था तथा उन्हें प्रवचन मंच से साहित्यिक निबन्धों की भांति पढ़ा जाता था जिसका उद्देश्य उत्कृष्ट युवा लोगों की सुरुचि को संतुष्ट करना होता था। ये युवा लोग ऊंघते हुए भूस्वामियों के आसपास ऊँचे घेरे में बैठते थे। किन्तु उपरोक्त प्रवचनों का गिरजे की श्रोतामण्डली में सम्मिलित धैर्यवान् ग्रामीणों पर बिल्कुल प्रभाव नहीं पड़ता था क्योंकि वे प्रवचन अत्यधिक सूक्ष्म (अमूर्त) एवं अवैयक्तिक होते थे। नये औद्योगिक एवं खनिज प्रधान जिलों के उपेक्षित नागरिक प्रतिष्ठित धर्म के उपदेशों से बच जाते थे। इन जिलों की पुरातन भौगोलिक दशाओं में नये पैरिशों की स्थापना से भी शायद ही कोई आवृतन अन्तर आया हो। इस क्षेत्र में धर्म प्रचार का कार्य वेस्ले के लिए छोड़ दिया गया था।

यह अस्वाभाविक था कि एक कुलीनतंत्रात्मक, असुधारवादी, व्यक्तिवादी, शास्त्रीय युग में वही धर्म सम्प्रदाय (चर्च) प्रचलित हो जिसमें कि देश की अन्य वैधानिक संस्थाओं की भांति ही दोष-गुण हों। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी समझदारी, फिर चाहे वह कितनी ही सनकपूर्ण हो, के अनुसार कार्य करने (आचरण करने) की पूर्ण स्वतंत्रता थी। उसके मस्तिष्क में लारेन्स स्टर्न की भांति कितनी ही उलझनें हो सकती थीं। वह कौपर के खतरनाक मित्र, जॉन न्यूटन, की भांति कुसंस्कृत होने के कारण कट्टरधर्मी (मेथाडिस्ट) हो जाता अथवा एवर्टन के वेरिज की भांति होता जिसने अपने तथा अन्य लोगों की पैरिशों के लोगों को धर्म परिवर्तन की शारीरिक यातनाओं में ढकेल दिया था। बहुधा पादरी 'आदर्श प्रकार का अंग्रेज' दयालु, समझदार और थोड़ा पवित्र विचारों वाला व्यक्ति होता था। यह चर्च (धर्म) विद्वता, संस्कृति एवं स्वतंत्रता के लिए विख्यात था। किन्तु पादरियों को अपनी इच्छानुसार प्रयास करने से अधिक के लिए न तो उन पर जनमत का और न धार्मिक अधिकारियों का कोई दबाव पड़ता था।[1]

---

[1] इंगलैंड के अठारहवीं शताब्दी के गिरजा (धर्म), और उसके एक अनिवार्य भाग — देहाती जीवन, को समझने के लिए जेम्स वुडफोर्ड की डायरियां पढ़िए जिसमें जान वेरेस्फोर्ड की भूमिका दी हुई है। पादरी वुडफोर्ड कृषि से सम्बन्धित जीवन के सम्पर्क में इसलिए था कि उसे फसल का १०वां भाग मिलता था और उसके पास अपना भी एक छोटा सा फार्म था। उसने अपनी डायरी में लिखा है: '१४ सितम्बर, १७७६, मैं अपने जौ के खेत में दिन भर व्यस्त रहा, अपराह्न में ५ बजे तक भोजन नहीं किया, मेरे खेत काटने वालों ने भी यहीं भोजन किया, उनको मैंने

आजीविका को, संसद के एक पद (सदस्यता) अथवा कालेज की फैलोशिप के समान ही माना जाता था। ऐसा समझा जाता था कि वह कृपा के रूप में प्राप्त और विशेषाधिकार के रूप में उपभोग्य है। इस ढंग के विचार का एक मनोरंजक उदाहरण निम्नलिखित समाधिलेख (एपीटैफ़) में मिलता है जो निकॉल्स रचित **लिटरेरी एनेकडोट्स** (३, पृष्ठ ५२) में सम्मिलित है।

"श्रीमती एलिजाबेथ बेट का अनित्य शरीर यहां स्थित है। वे श्रद्धेय रिचार्ड बेट की विधवा थीं। यह महिला सहज पवित्रता से ओतप्रोत थी और उसमें असाधारण गुण विद्यमान थे। वे सम्मानित परिवार की उत्तराधिकारिणी थीं। स्टैनहोप के विख्यात परिवार से अपनी मित्रता के कारण वे अपने पति और सन्तान के लिए राज्य और गिरजा से सम्बन्धित अनेक पद (नौकरियां) पाने में सफल हुईं। उनकी मृत्यु ७ जून, १७५१ में ७५ वर्ष की अवस्था में हुई।"

यह उस युग की विशेषता थी कि गिबन ने अपने आत्मचरित्र में आकस्मिक रूप से खेद प्रकट किया है कि "उसने कानून अथवा व्यापार से सम्बन्धित अच्छी आमदनी वाले पेशे अथवा सरकारी पदों अथवा भारतीय साहसिक यात्रा के अवसर अथवा गिरजे (धर्म) की गहरी नींदें नहीं अपनायीं।" आर्कडीकॉन गिबन द्वारा लिखित धर्म सम्बन्धी इतिहास उतना ही विद्वतापूर्ण एवं बड़े आकार का होता किन्तु विवशतः उससे अधिक शिष्टतापूर्ण एवं सूक्ष्म रूप से व्यंग्यपूर्ण होता जितना कि एडवर्ड गिबन की वास्तविक उत्तम रचना होती।

इस समय भी धनी एवं निर्धन पादरियों के बीच सामाजिक खाई उतनी ही चौड़ी थी जितनी कि वह मध्ययुगीन काल में थी। किन्तु इस समय सम्पन्न लोगों का अनुपात अधिक बड़ा था क्योंकि अब उनमें मुख्य पादरियों और बहुत्ववादियों के अतिरिक्त अच्छे परिवारों और सम्पर्कों वाले आवासी पैरिश पादरियों को भी सम्मिलित किया जाता था जो पादरी होकर रहते थे और उसके कर्त्तव्यों को निभाते थे। कृषि में उन्नति के साथ-साथ गिरजा से सम्बद्ध और उसे अपनी उपज का दसवां भाग देने वाले फार्मों के मूल्य में वृद्धि से इस विकास को सहायता मिली। रानी ऐन्नी के शासन में १०००० आजीविकाओं में से ५५९७ में वार्षिक आय ५० पौंड से कम थी। इसके एक सौ वर्ष पश्चात् केवल ४००० की आय १५० पौंड से कम थी। सम्पूर्ण अठारहवीं

कुछ गोमांस दिया और कुछ खीर तथा उनकी इच्छा भर उनको शराब पिलाई। आज शाम को मेरे खेतों की कटाई समाप्त हुई और सारी फसल को (८ एकड़ की) खलिहान में लाकर डाला। १३ दिसम्बर, आज मेरे लोगों ने मुझे अपनी फसल का १०वां भाग देकर प्रसन्न कर दिया है। मैंने उन्हें बहुत अच्छा शाम का भोजन कराया, जिसमें खीर और विभिन्न प्रकार के गोमांस के व्यंजन शामिल थे।

शताब्दी भर ग्रामीण संभ्रान्त लोग भेंट में मिलने वाली आजीविकाओं को अपने पुत्रों के स्वीकार करने योग्य मानने लगे थे। जैसा कि उसके पाठक जानते हैं जेन आस्टेन के काल तक सुस्थापित आदर्श प्रबन्ध एक अच्छे रेक्टर का पद था जो जागीरदार के भवन से लगभग एक मील की दूरी पर मनोरम स्थान पर निर्मित मोड़दार खिड़की वाला भवन था जिसमें जागीरदार का बेटा अथवा दामाद रहता था। इस प्रकार से पारिवारिक समूह को एक साथ रखा जाता था और ग्राम की धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति एक संभ्रान्त जन द्वारा की जाती थीं जो शिक्षित और सुसंस्कृत होता था किन्तु बहुत उत्साही नहीं। क्योंकि केवल १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ के पश्चात् ऐसा हुआ कि संभ्रान्तजन पादरी के गम्भीर अथवा धार्मिक होने की सम्भावना प्रकट हुई थी।

किन्तु इंगलैंड की आधी आजीविकाएं ऐसी नहीं थीं जो एक ग्रामीण भूपति के पुत्र को आर्थिक आश्रय दें। अभी भी निर्धन पादरियों का एक बड़ा वर्ग था, यद्यपि, संख्या में वह चासर के काल एवं चार्ल्स द्वितीय के काल की तुलना में कम था। चार्ल्स द्वितीय के समय में ईखार्ड ने "पादरियों के अपमान के अवसर एवं आधार" (Grounds and occasions of the contempt of the clergy) नामक पुस्तक लिखी थी जिसमें पादरियों की निर्धनता तथा नीचे कुलों में जन्म लेना प्रधान आधार बताए गए थे। किन्तु जार्ज तृतीय के शासनकाल में भी हजारों निर्धन तथा हेय दृष्टि से देखे जाने वाले काले कोटधारी (पादरी) थे, जिनकी वार्षिक आजीविका का मूल्य ५० से १०० पौंड के बीच होता था। अथवा उन्हें अनुपस्थित बहुत्ववादियों के सहायक पादरियों के रूप में पचास पौंड का वेतन स्वीकार करना पड़ता था। बहुत्ववाद सदा कुप्रबन्ध नहीं कहा जा सकता था क्योंकि बहुधा जो सर्वोत्तम व्यवस्था सम्भव हो सकती थी वह यह थी कि एक पादरी दो पड़ौसी पैरिशों में काम कर सके। इनमें से कोई भी एक पैरिश एक पादरी का भार अकेले उठाने में असमर्थ थी।

लगभग बिना किसी अपवाद के बिशप या तो कुलीन लोगों के सम्बन्धी अथवा कुलीनों के भूतपूर्व पुजारी अथवा उनके पुत्रों के शिक्षक होते थे। उनमें से कुछ, जैसे जोजफ बटलर, बर्कले एवं वारबर्टन, महान दार्शनिक एवं विद्वान थे। किन्तु चर्च की सेवाओं के उपलक्ष में किसी को भी बिशप के पद पर नियुक्त नहीं किया गया था प्रत्युत् यह सम्मान उन्हें विद्वता, साधारण संरक्षकों एवं राजनैतिक दलों के प्रति की गई सेवाओं के उपलक्ष में मिलता था। अनेक अच्छी वस्तुओं की भांति चर्च के पदों पर उन्नति ह्विग एवं टोरी दलों के संरक्षकत्व के जाल में फंसा दी गई थी। इस संरक्षकत्व ने अतीत के राजकीय (शाही) संरक्षकत्व का स्थान ले लिया था। मध्ययुगों में बिशप राजा के नागरिक अधिकारी होते थे। अब उनके धर्मनिरपेक्ष कर्तव्यों में

यहां तक कमी हो गई थी कि वे केवल संसद के सत्रों में नियमित रूप से उपस्थित रहते थे; वे ऐसे मंत्री के पक्ष में मतदान किया करते थे जिसने उनकी नियुक्ति की थी। और जो अब भी उनकी पदोन्नति कर सकता था। बिशप के कुछ पद ऐसे थे जो अन्यों की तुलना में दसगुने वार्षिक मूल्य के थे।

किन्तु अठारहवीं शताब्दी के मुख्य पुजारी (पादरी) के पास अपने संसदीय कर्त्तव्यों को निभाने के पश्चात् धार्मिक कार्यों में व्यय करने के लिए अधिक अवकाश रहता था। इसकी तुलना में मध्ययुगीन बिशपों, जो राजा के पूर्णकालिक सेवक होते थे, को धार्मिक कृत्यों के लिए अपेक्षतया कम समय मिलता था। हैनोवर काल के केवल कुछ बिशप, सब नहीं, अपने अधिकारक्षेत्र में, विशेषकर लम्बी एवं खराब सड़कों पर यात्रा करते हुए, आस्थापूर्ण धर्मानुयाइयों को धार्मिक संघ में सम्मिलित करने में कठोर परिश्रम करते थे। १७६८ से लेकर १७७१ तक यार्क के आर्कबिशप ने धर्म संघ में प्रवेश के लिए ४१,६०० अभ्यर्थियों से सम्पर्क किया। और एक्सेटर के बिशप ने १७६४-१७६५ में अकेले कार्नवाल एवं डेवॉन में ४१,६४२ लोगों को धर्म संघ में प्रविष्ट किया। इन आंकड़ों को देखते हुए यह कहना असम्भव है कि बिशप अपने धार्मिक कर्त्तव्यों की पूर्णतया उपेक्षा करते थे अथवा जनसाधारण का धार्मिक उत्साह पूर्णतया वेस्लेयान मिशन में बदल गया था। इस बात का बहुत साक्ष्य है कि कम से कम बहुत से जिलों में धार्मिक (गिरजा) जीवन सशक्त और सजीव था। इतने पर भी अन्य कई स्थानों पर बहुत शिथिलता एवं उपेक्षा थी। किसी रूप में, जिन कुलीनतंत्रीय पादरियों का हमने वर्णन किया वे बहुधा सहिष्णुतावादी गुणों, न कि कट्टरधर्मवादी गुणों, के उदाहरण थे।

जिस जीवन ढंग को कट्टरधर्मिता कहा जाता था वह अपने नाम और वेल्से बन्धुओं के प्रचार (आन्दोलन) से भी अधिक प्राचीन था। बाल्यावस्था में उनका पालन-पोषण उच्च चर्च से सम्बन्धित अपने पिता की रेक्टरी के वातावरण में हुआ था। यह एक ऐसा जीवन ढंग था जो केवल धर्माचारण में ही रत नहीं रहता था प्रत्युत् आत्मानुशासन एवं परोपकार में भी रत रहता था। साधारण एवं जूरी से असम्बन्धित राबर्ट नेल्सन में यह परिपूर्णता की स्थिति में देखा जा सकता था। इससे उन चर्च-अधिकारियों एवं विमतिवादियों को प्रेरणा मिली जिन्होंने विलियम और ऐन्नी के शासनकालों में सोसाइटी फॉर प्रोमोटिंग क्रिस्चियन कॉलेज एण्ड चैरिटी स्कूल्स (ईसाई ज्ञान एवं धर्मार्थ विद्यालयों के प्रोत्साहन हेतु समाज) की स्थापना में सहयोग दिया। इसकी और अधिक उन्नति सुन्दर लेडी एलिजाबेथ हैस्टिंग्ज (१६८२-१७३९) के संयमी और परोपकारी जीवन में हुई। यह महिला स्टीले के इस संक्षिप्त कथन से अमर हो गई "उसे प्रेम करना एक उदार शिक्षा थी।" उसने अपनी विशाल सम्पदा धर्मार्थ (परोपकार्थ) कार्यों पर, विशेषकर निर्धन छात्रों की स्कूली और विश्वविद्यालयीन

शिक्षा की सुविचारित योजनाओं पर व्यय की। किसी न किसी रूप में कट्टर धर्मवाद (मेथॉडिज्म) ने इस शताब्दी के बहुत से परोपकारी कार्य को प्रेरित किया जिसकी समाप्ति विल्बरफोर्स के साथ हुई।

धार्मिक जीवन का यह ढंग (रीति) व्यापारी एवं व्यावसायिक वर्गों में तीव्रता से फैल गया फिर चाहे वे चर्चवादी थे अथवा विमतिवादी। इसका स्वभाव बिल्कुल शुद्धिवादी एवं मध्यवर्गीय था। पादरियों की तुलना में जनसाधारण में यह अधिक शक्तिशाली था। इसके अनुयायी (भक्त) जीवन व्यापार से विरत न होकर ईश्वर का भजन करने का प्रयास करते थे। अठारहवीं शताब्दी के शुद्धिवादी पर चरित्र की, न कि सिद्धान्त की, छाप थी। वह मनुष्य की सेवा के प्रति अरोध्य रूप से आकृष्ट होता था जो अपने कष्टों अथवा अज्ञानता अथवा लम्पटता के कारण ईश्वर को उसकी गरिमा से विरत करता था। ऐसी प्रकृति के लोगों के लिए परोपकार अनिवार्य था।[1] इस जीवन--ढंग का गढ़ मध्यवर्गीय घर था जहां परिवार पूजा होती थी और जहां से यह अन्य आत्माओं का धर्म परिवर्तन करने, मस्तिष्कों को शिक्षित करने एवं उपेक्षित गरीबों के शरीर की देख-रेख करने बाहर जाता था।

'मेथॉडिज्म' की सबसे बड़ी और अत्यन्त उचित रूप से विख्यात व्यंजना वेस्ले बन्धुओं एवं व्हाइटफील्ड का पुनरुत्थान संबंधी धर्म प्रचार था जो अभी तक गिरजा एवं राज्य द्वारा उपेक्षित मनुष्यों के एक विशाल समूह को गहनता से प्रभावित करता था। और सौभाग्य से जॉन वेस्ले की प्रतिभा केवल पुनरुन्नयन सम्बन्धी धर्म प्रचार में उसकी शक्ति में निहित नहीं थी वरन् एक संगठक के रूप में उसके गुणों में भी। अपने धर्म-परिवर्तकों को स्थायी धर्म-सभाओं में संगठित कर उसने श्रमिक वर्ग के धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक इतिहास में एक नया अध्याय प्रारंभ किया। वेस्ले बन्धुओं और औद्योगिक क्रान्ति के समयों के एक ही साथ पड़ने का इंगलैंड की कई आगामी पीढ़ियों पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

उस समय के इंगलैंड के प्रोटेस्टैण्ट वातावरण का तार्किक परिणाम 'धर्म का निरन्तर जनसाधारणीकरण' था। धार्मिक संगठन और उससे सम्बन्धित परमार्थ कार्य (लोकोपकारी कार्य) में जनता द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से सक्रिय भाग लेना रानी ऐन्नी के शासन में राबर्ट नेल्सन के काल में एक स्पष्ट तथ्य था जो सौ वर्ष पश्चात् वेस्ले बन्धुओं द्वारा प्रेरित धर्म-सभाओं में और भी अधिक स्पष्ट हो गया। आधुनिक अंग्रेजी धर्म को अठारहवीं शताब्दी की एक अन्य महत्वपूर्ण देन भजनों की पुस्तक

---

[1] कुमारी जोन्स, दि **चैरिटी स्कूल मूवमेंट** (कैम्ब्रिज प्रेस, १९३८) पृष्ठ ६-७ और आगे। यह प्रसिद्ध पुस्तक और **जान्संस इंगलैंड** (आक्सफोर्ड प्रेस, १९३३) में प्रोफेसर नार्मनसाइक का एक अध्याय और १९३१-३३ में लिखे गये उसके **वर्कबेक लेक्चर्स** और **लाइफ ऑफ़ गिब्सन** १८वीं शताब्दी के धर्म पर नया प्रकाश डालते हैं।

(Hymn Book) थी। इजाक वाट्स (१६७४-१७४८), जॉन वेस्ले के भाई चार्ल्स और अन्य कई कम विख्यात लोगों ने भजनों के एक संग्रह का आविर्भाव किया जिन्होंने चर्च और चैंपल में समान रूप से उन गीतों का शनैः शनैः स्थान ले लिया जो उन धर्म-सभाओं में लोकप्रिय थे जो ईश्वर के सामने उन्हें (गीतों को) आनन्द-विभोर होकर उच्च स्वर से गाते थे।

ईश्वर और मनुष्य के प्रति जीवन के समर्पण के अन्य ढंगों में क्वेकरों का शान्त (मौन) कार्य भी था। उन्होंने लोकप्रिय पुनरुत्थान के कार्य को वेस्ले के लिए छोड़ दिया जिसमें अपने संस्थापक के काल में स्वयं उन्होंने बड़ी तन्मयता से परिश्रम किया था। अब वे बुर्जुआ सम्मान को स्थिर रूप से प्राप्त कर चुके थे। इस स्थिति में उन्होंने प्रेम की भावना, जो अपने शुद्ध प्रभाव से फ्रेण्ड्स के अनन्य एवं लोकोपकारी समाज में परिव्याप्त थी, को पुनः प्राप्त कर लिया था। जार्ज द्वितीय के शासनकाल में पहले से ही वे ईमानदारी से व्यापार करके समृद्ध होने की अपनी सहजप्रवृत्ति के लिए विख्यात थे। कवि मैथ्यू ग्रीन, जो १७३७ में मरा था, ने क्वेकरों और उनके उदारतावादी सिद्धान्तों के विषय में इस प्रकार लिखा है—

'वे भूमि और सुरक्षित बैंक सम्पत्ति के स्वामी थे, उनमें अडिग विश्वास भरा था, वे एक अच्छे आविष्कार के प्रसारक थे और पवित्र साहित्य का स्वेच्छा से अर्थ करते थे।'

सांसरिक दृष्टि से बुद्धिमान लोगों के लिए अब फ्रेण्ड्स की उपस्थिति अपमानजनक न थी, वे एक स्वीकृत राष्ट्रीय संस्था हो गए थे।

अठारहवीं शताब्दी की मानवतावादी-भावना, जिसमें अभागे एवं निर्धन लोगों के शरीर और मस्तिष्क की रक्षा की जाती थी, ने अधिक अच्छी वस्तुओं की ओर यथार्थ प्रगति की थी। किन्तु फिर भी इसमें दोष थे। अस्पतालों की स्थापना, चिकित्सा सेवा में सुधार एवं शिशु कल्याण स्पष्टतया उन्नतिशील कहे जा सकते थे। किन्तु जो शैक्षणिक कार्य किया वह मूल्यवान होते हुए भी आलोचना योग्य है। धर्मार्थ विद्यालय वास्तव में श्रमिक वर्ग के बड़े भाग को किसी प्रकार की शिक्षा देने का प्रथम क्रमबद्ध प्रयत्न थे। इनके पूर्व केवल चुने हुए चतुर लड़कों को प्राचीन 'ग्रामर स्कूल' अपने वर्ग से ऊपर उठने का अवसर प्रदान करते थे। धर्मार्थ विद्यालयों का अनुसरण 'सण्डे स्कूल' आन्दोलन ने किया जो १७८० के पश्चात् इतने व्यापक आकार का हो गया था। नये धर्मार्थ विद्यालयों और रविवासरीय विद्यालयों में सभी के लिए कुछ न कुछ करने का गुण था। किन्तु उनमें दोष यह था कि उन्हें युवा विद्यार्थियों को अपने निर्धारित क्षेत्रों में बनाये रखने एवं एक विनम्र पीढ़ी को प्रशिक्षित करने की अत्यधिक चिन्ता थी। हमारे काल में आधुनिक शिक्षा एक विरोधी दिशा में बहुत आगे बढ़ गई है और इसने अवांछित बौद्धिक सर्वहारा को जन्म दिया है। किन्तु अठारहवीं शताब्दी का दोष, जो उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भी बना रहा था, यह था कि वर्गों के

भेद और 'निम्नतर व्यवस्थाओं (स्तरों) में उचित अधीनता' पर अत्यधिक जोर दिया जाता था।

धर्मार्थ विद्यालयों के इतिहासकार ने बड़े अच्छे ढंग से लिखा है—"अठारहवीं शताब्दी की यह विशेषता थी कि इसमें ऐसे बालकों के लिए दया और दायित्व की एक वास्तविक भावना थी जिनके शारीरिक एवं आध्यात्मिक स्वार्थों की दु:खदायी उपेक्षा की गई थी। साथ ही उसमें डिफो के शब्दों में अधीनता के महान् नियम', का प्रयोग कर इन लोगों में सुधार करने का संकल्प भी था। सत्रहवीं शताब्दी की राजनैतिक और धार्मिक अशान्ति ने निर्धनों में सामाजिक अनुशासन स्थापित करने की उच्च एवं मध्य वर्गों की इच्छा में बहुत योगदान किया। तात्कालिक समाज के मत में ये निर्धन लोग विद्रोह एवं अनास्था के विष से विचित्र रूप से सुप्रभाव्य थे।...परन्तु परोपकार के उस युग को गलत समझना होगा यदि हम अधीनता के सिद्धान्त की प्रमुखता में श्रेष्ठ वर्गों का हीन वर्गों के प्रति एक कठोर एवं असहानुभूतिपूर्ण रुख देखने का प्रयास करें। स्थिति उससे बिल्कुल भिन्न थी। अठारहवीं शताब्दी सुपरिभाषित (सुस्पष्ट) सामाजिक भिन्नताओं का एक युग था और तब उसकी सामाजिक संरचना के अनुरूप ही एक भाषा का प्रयोग होता था।"[1]

किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में, जो हन्नाह मोर का युग था, निर्धनों को जो अत्यधिक शिक्षा और परोपकारिता प्रदान की जाती थी उसमें वर्ग चेतना और संरक्षकत्व की भावना बनी रही। इसी समय अठारहवीं शताब्दी में अज्ञात समतामूलक भावना ने चिन्तायुक्त सहमति को एक भिन्न युग की आवश्यकताओं एवं समस्याओं के लिए अरुचिकर एवं असम्बद्ध बनाना प्रारंभ कर दिया था।

'भूस्वामी और उसके सम्बन्धियों को ईश्वर सुखी रखे, और हमें अपनी उचित स्थितियों में रहने दे।'

उपरोक्त पंक्तियों में निहित भावना ऐसी थी जिस पर सर रोगर डि कैवर्ले के काल में कोई टिप्पणी नहीं करता था किन्तु जब औद्योगिक क्रान्ति ने परम्परागत सामन्तवाद की चेतनाशून्य सरलता को समाप्त कर दिया था उसके पश्चात् उपरोक्त रविवासरीय विद्यालय मनोवृत्ति उपहास और अपराध का एक कारण बन गई थी।

जबकि अठारहवीं शताब्दी में धर्मार्थ और रविवासरीय विद्यालयों की स्थापना कर वृहत् आधार पर शिक्षा प्रारंभ की गई इसे माध्यमिक शिक्षा में असफलता मिली क्योंकि इसने अनेक 'ग्रामर स्कूलों' और धर्मार्थ विद्यालयों का पतन हो जाने दिया। वास्तव में यह उस युग की साधारण विशेषता थी। जबकि निजी उद्यम और लोकोपकारी

---

[1] कुमारी एम. जी. जोन्स, **दि चैरिटी स्कूल मूवमेंट,** पृष्ठ ४ और इस पुस्तक की मई १९३९ के इकानामिक हिस्ट्री रिव्यू के अंक में प्रोफेसर टानी द्वारा की गई समीक्षा देखिए।

उत्साह ने नए मार्गों को प्रशस्त किया, विधि (राज्य) द्वारा स्थापित संस्थाएं शिथिल और भ्रष्ट हो गईं। कानून और कानून सम्मत अधिकारों पर जेम्स द्वितीय के आक्रमण की भयंकर पराजय ने सौ वर्षों को वह दिया जो वैधानिक एवं रूढ़िवादी स्वरूप का अनुगामी था और जिसकी अधिकता भी हो गई थी। एक राज्यादेश (चार्टर) दिखाने से आलोचना से बचा जा सकता था। उस समय न तो संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों, नगर निगमों, विश्वविद्यालयों, और न धर्मार्थ (लोकहितैषी) संस्थाओं की शताब्दी के अन्त के निकट तक सुधार की कोई चर्चा थी। और तब, आह ! 'फ्रांस के दुःखद उदाहरण' ने सुधार को अभिशाप बना दिया। जैसे कि नामांकित सदस्यों वाली नगर कुलीन-तंत्रीय परिषदें अपनी निगमीय आयों को विशाल भोजों पर व्यय करती थीं और नगरीय प्रशासन के कर्त्तव्यों की अवहेलना करती थीं, धर्मार्थ विद्यालयों के प्रधानाध्यापक उसी भावना से बहुधा उपेक्षा दिखलाते थे और कभी कभी अपने स्कूलों को बन्द कर धर्मस्व को अपनी निजी सम्पत्ति मानकर उससे जीवन-निर्वाह करते थे।

किन्तु इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा की जो हानि हुई उसकी पूर्ति निजी स्कूलों द्वारा हो गई जिनका सम्पूर्ण खर्चा विद्यार्थियों से प्राप्त शुल्क से चलता था और जिन्होंने अठारहवीं शताब्दी में अच्छी प्रगति की थी। ऐसे विद्यालयों, जिनमें विमतिवादियों की अकेडेमियां भी शामिल थीं, ने साधारण व्यय पर अच्छी शिक्षा प्रदान की थी जिसमें शास्त्रीय विषयों के अतिरिक्त प्रचलित भाषाओं एवं विज्ञान का भी स्थान था। इन नये फैशन (चलन) के विषयों के लिए विश्वविद्यालयों की तुलना में प्राचीन धर्मार्थ विद्यालयों को कोई अधिक लाभ न था।

वैभवपूर्ण विद्यालयों, जिनमें प्रीस्टले जैसी उच्च प्रतिष्ठा के लोग सम्मिलित थे, ने भी आक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालयों के अभावों को कुछ सीमा तक दूर किया। इन दोनों विश्वविद्यालयों में ऐसे सभी लोगों का प्रवेश वर्जित था जो गिरजाधिकारी (कर्मचारी) नहीं थे और यहां प्रविष्ट लोगों को इतनी खराब और खर्चीली शिक्षा दी जाती थी कि उनकी संख्या बहुत शोचनीय अनुपात तक घट गई। अब इनमें प्रवेशार्थियों की संख्या उसकी आधी भी नहीं रह गई थी—जो लॉड और मिल्टन के काल में थी।

वास्तव में, आइसिस और कैम के तटों पर शासनपत्रित एकाधिकार की भावना अपनी सर्वाधिक दुरवस्था में देखी जा सकती थी। कालेज के अधिकारी के पास आजीवन 'फेलोशिप' रह सकती थी जब तक वह गिरजा की आजीविका स्वीकार न करता। उसे किसी प्रकार का शैक्षणिक कार्य करने को बाध्य नहीं किया जाता था और न उसे विवाह करने की ही अनुमति दी जाती थी और अधिकांश कालेजों में उसे 'होली आर्डर्स' अपनाने के लिए[१] बाध्य किया जाता था। अठारहवीं शताब्दी के

---

१ रोमन और ग्रीक गिरजों में यह एक पवित्र संस्कार है जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति अपने को धर्म की सेवा के लिए अर्पित कर देता है।

कालेज-अधिकारी, अपने आलस्यपूर्ण, आत्म-अतिभोग एवं अविवाहित पादरीत्व के कारण पन्द्रहवीं शताब्दी के भिक्षुओं (साधुओं) के समान लगते थे; दोनों समान उपयोगी भी थे। गिबन को एक साधारण सज्जन की हैसियत से सन् १७५२ में आक्सफोर्ड में मैगडैलेन में 'फेलोज़ टेबल' में प्रवेश मिला था। उसने उनकी (फेलौज़ की) आदतों का वर्णन इस प्रकार किया है—

"पढ़ने, लिखने अथवा सोचने के परिश्रम से उन्होंने अपने अन्तःकरण को मुक्त कर लिया था। उनकी बातचीत के विषय घुमा-फिराकर सदा कालेज का कार्यकलाप, टॉरी राजनीति, व्यक्तिगत कहानियां और निजी कलंक (लोकापवाद) ही रहते। शराब पीने की उनकी गहरी और शिथिल आदतें उनमें युवकों जैसे त्वरित असंयम को आने से रोकती थीं।"

दोनों ही विश्वविद्यालयों में फेलोज़ के एक बड़े बहुमत द्वारा पूर्वस्नातकीय विद्यार्थियों की पूर्ण अवहेलना होती थी, यद्यपि कभी कभी कोई कालेज ट्यूटर बड़े उत्साह से उन दायित्वों को निभाते थे जिनमें सारे समाज को भाग लेना चाहिए था। अभिजात व्यक्तियों के पुत्र और धनी फेलो कामनर्स, जो बहुत अधिक दिखते थे और जिन्हें अनुशासन के मामलों में बड़ी छूटें दी जाती थीं, के साथ बहुधा निजी ट्यूटर रहते थे। विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कदाचित ही अपने नियत कार्यों को करते थे। कैंब्रिज में आधुनिक इतिहास के रेजियस प्रोफेसर ने १७२५ और १७७३ के बीच कोई व्याख्यान नहीं दिया। इस पद पर आसीन यह तृतीय और सर्वाधिक कलंकित प्रोफेसर था जो १७६८ में ओवर में अपने निवास स्थान (Vicarage) से घर को शराब पिये हुए घोड़े पर जाते हुए गिरकर मर गया था।

१७७० तक आक्सफोर्ड में एक डिग्री प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार की गंभीर परीक्षा नहीं ली जाती थी। कैंब्रिज में गणित की स्नातकीय परीक्षा में विशिष्टता प्राप्त करने के लिए अधिक महत्वाकांक्षी उम्मीदवारों की प्रतिद्वन्द्वी योग्यताओं की वास्तविक जांच होती थी। वास्तव में गिबन ने यह घोषणा की थी कि अपनी बहिन (आक्सफोर्ड) की अपेक्षा कैंब्रिज विश्वविद्यालय Cloyster पद्धति के दुर्गुणों से कम प्रभावित हुआ प्रतीत होता था। हैनोवर के घराने के प्रति उसकी वफादारी एक अधिक बाद के काल की है और उसके अमर न्यूटन का दर्शन और नाम सर्वप्रथम न्यूटन की अपनी स्थानीय अकेडेमी में सम्मानित हुए थे।

शताब्दी के अन्तिम वर्षों में आन्तरिक सुधार का एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिससे दोनों विश्वविद्यालय आत्मोन्नति के पथ पर अग्रसर हुए। इसके प्रारम्भ की तिथि कैंब्रिज में ट्रिनिटी कालेज से १७८७ के संकट काल से मानी जा सकती है। जब एक कठिन संघर्ष के पश्चात्, जिसमें दोनों प्रतिपक्षियों को लार्ड चांसलर की न्यायपीठ के सामने जाना पड़ा था, यह निश्चय किया गया कि उसकी फेलोशिप एक सावधानी-पूर्वक ली हुई परीक्षा के परिणामों के अनुसार न्यायोचित रूप से दी जानी चाहिए। इस

परिवर्तन के पश्चात् ट्रिनिटी कालेज अपने प्रतिद्वन्द्वी सेंटजांस कालेज से प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों और शैक्षणिक ख्याति में अन्ततः आगे बढ़ गया यद्यपि वर्ड्सवर्थ और विल्वरफोर्स का कालेज महान् विशिष्टता के लोगों को उत्पन्न करता रहा।

प्रथम दो जार्जों के शासनकाल में आक्सफोर्ड का कुख्यात जैकबवाद (जेम्स द्वितीय के अनुयायियों का सम्प्रदाय) शासन की शक्ति की सीमाओं के लिए उच्च रूप से महत्वपूर्ण था। साथ ही यह कानून के शासन और राज्याज्ञा द्वारा प्रजा को उन्मुक्ति दिलाने में भी महत्वपूर्ण था। गिरजाघरों का संरक्षकत्व व्हिग मंत्रियों के हाथ में था जो जैकबवादी पादरी नियुक्त करने की अपेक्षा एक मुसलमान को अधिक शीघ्रता से नियुक्त कर सकते थे। किन्तु आक्सफोर्ड और कैंब्रिज के कालेज उनके अधिकार-क्षेत्र के बाहर थे और विश्वविद्यालयों पर जेम्स द्वितीय के आक्रमण की विफलता एक ऐसी गम्भीर चेतावनी थी जिसने इंगलैंड में भावी शासनों के हस्तक्षेप से शैक्षणिक स्वतंत्रता की रक्षा की। हैनोवर ढंग की शपथ लेकर अपने वेतन को प्राप्त करने के पश्चात् यदि आक्सफोर्ड के शिक्षाधिकारी जैकबवादी दावतों में अधिक मदिरा पी लेते थे तो राजा जॉर्ज के मंत्री उस विषय में कुछ नहीं कर सकते थे। इस ढंग से विश्वविद्यालयों की आवश्यक स्वतंत्रता १८वीं शताब्दी के प्रचलन से स्थापित हो गई थी। जिसमें विभिन्न अंशों में कमी ट्यूडर, स्टुअर्ट और क्रामवेल के अनुयायियों के समय में हुई थी। कुछ पहलुओं में विश्वविद्यालयों की इस उन्मुक्ति (Immunity) का दुरुपयोग किया गया किन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि उसको संरक्षित रखा जा सका। विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि विभिन्न देशों में शैक्षणिक जीवन दासता की स्थिति में गिर चुका था और जब उन देशों में कानून के शासन और प्रजा की स्वतंत्रता जैसी सम्माननीय परम्पराएं न थीं।[1]

उस समय इंगलैंड में विद्यमान मात्र दो विश्वविद्यालयों के पतन के बाद भी और माध्यमिक शिक्षा का उत्तरदायित्व वहन करने वाले धर्मार्थ विद्यालयों के ह्रास के बावजूद देश का बौद्धिक जीवन सर्वाधिक प्रखर था और जॉर्ज तृतीय के काल के इंगलैंड में अनियमित रूप से शिक्षा पाये हुए लोगों में जनसंख्या के प्रति व्यक्ति पर प्रतिभाशाली लोगों का अनुपात हमारे समय की तुलना में बहुत अधिक था। यह प्रतीत होता है कि मानव के मस्तिष्क के सर्वोत्तम उत्पादन समरूप संगठन की अपेक्षा संयोग, स्वतंत्रता और विविधता का प्रतिफल होते हैं। उन्हें नगरीय और ग्रामीण जीवन के संतुलन की न,

---

[1] इस युग के विश्वविद्यालयों के लिए देखिए, ए. डी. गोडले, **आक्सफोर्ड इन दि एट्टीन्थ सेन्चुरी**; सी. ई. मैलेट, **हिस्ट्री ऑफ़ दि यूनिवर्सिटी ऑफ़ आक्सफोर्ड**, खंड ३; डी विन्सटेनले, **अनरिफार्म्ड कैंब्रिज**, गनिंग, **रेमिनीसेंसेज ऑफ़ कैंब्रिज फ्राम दि इयर १७८०**। १७७४-५ में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का एक गहन और रुचिकर चित्रण पादरी वुडफोर्ड की डायरियों में मिलता है।

कि महानगरों में जीवन के निर्जीव भार की, उपज कहा जा सकता है। इसी प्रकार वे मशीन की अपेक्षा कलाओं और दस्तकारियों तथा पत्रकारिता की अपेक्षा साहित्य की उपज होते हैं। परन्तु यदि भविष्य में कभी वर्क, गिवन और जॉन्सन जैसी महाविभूतियां, न्यूटन और रेन की बात न भी करें, उत्पन्न हो सकें तो भी किसी प्रकार का बौद्धिक जीवन बिताने की सामर्थ्य वाले शिक्षित लोगों की संख्या भूतकाल की तुलना में काफी बड़ी हो सकती है।

१८वीं शताब्दी में धर्म और शिक्षा के माध्यम से वेल्स के निवासियों ने अपने बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन की चेतनता को पुनः प्राप्त किया जो इंगलैंड की इसी प्रकार की चेतनता से पृथक् थी। यह कहानी अनोखी और महत्वपूर्ण भी है।

हेनरी अष्टम्, जो वेल्स और इंगलैंड की मिली जुली परम्परा की उपज कहा जा सकता था, का दोनों देशों के राजनैतिक संघ की स्थापना करने में उद्देश्य यह था कि स्वतंत्र और समान आधार पर वेल्सवासी अंग्रेज लोगों का एक भाग बन जायें। इस कार्य में उसे काफी सीमा तक सफलता मिली क्योंकि वेल्स के देश व उसके देशवासियों का अंग्रेजों ने वैसा शोषण नहीं किया जैसा उन्होंने आयरलैंड में किया था। और न दोनों जातियों को धर्म ने ही विभाजित किया था। ट्यूडर काल में वेल्स के संभ्रान्तवासियों ने अंग्रेजी भाषा, दृष्टिकोण और साहित्य को अपना लिया और स्वदेश के चारणों (गायकों) को संरक्षण देना वन्द कर दिया। अन्य नेतृत्व के अभाव में कृषकों नें भी इसी धारा में वहना लाभकर समझा किन्तु वे अपनी स्थानीय वोलियां वोलते रहे और अपने लोकगीतों को गाते रहे।

एलिजावेथ के शासनकाल में गिरिजा ने वाइविल और प्रार्थना पुस्तक का वेल्स की भाषा में अनुवाद कर राज्य की अंग्रेजीकरण नीति का अचेतन रूप से विरोध करना प्रारम्भ कर दिया था। यह ऐसा वीज था जिसका वाद में व्यापक परिणाम हुआ किन्तु इस वीज से मिलने वाली समृद्ध फसल एक लम्वी अवधि के पश्चात् ही काटी जा सकी। क्रॉमवेल प्रकार का अंग्रेजी शुद्धिवाद वेल्सवासियों को अधिक आकृष्ट न कर सका। जहां तक उनके किसी पक्ष के साथ रहने का सवाल था वे कैवेलियर (Cavalier) ही वने रहे। राजा चार्ल्स के पैदल सैनिकों के रेजिमेन्ट मुख्यतया वेल्स की पहाड़ियों के निवासियों से वने थे जो नेस्वी के युद्ध में नष्ट हो गये थे।

जब अठारहवीं शताब्दी प्रारंभ हुई तो इंगलैंड के छोटे भूपतियों की भांति वेल्स के छोटे भूमिपति बड़े जमींदारों के हाथ बिक रहे थे। कानूनी दृष्टि से वेल्स बड़ी जागीरों का देश हो रहा था किन्तु अपनी मूलभूत सामाजिक संरचना में वह छोटे किसानों के खेतों का एक देश था। इन खेतों में से प्रत्येक का औसत आकार ३० से लेकर १०० एकड़ तक था। वे अल्पावधि अथवा वार्षिक पट्टों पर लिये जाते थे। उनका उपयोग पुराने ढंग की जीविका-निर्वाह खेती के लिए किया जाता था। उनसे उन्हें जोतने वाले परिवारों का भरण-पोषण होता था। उनकी उपज बाजार में नहीं जाती थी। बड़े

किसान और किसी प्रकार के मध्यम वर्ग के लोग बहुत थोड़े थे और विशाल जागीर व्यवस्था की आड़ में वास्तव में वेल्स खेतिहर कृषकों का एक समतावादी लोकतंत्र था और दक्षिणी वेल्स में कुछ खान-मजदूर भी रहते थे।

द्वीप के अन्य पश्चिमी और सेल्टिक भागों की भाँति वेल्स पुराने घेरों का एक देश था। वहां खुले हुए खेतों की व्यवस्था कभी प्रचलित नहीं थी। यह व्यवस्था केवल पेमब्रोकशायर के उन भागों में विद्यमान थीं जहां अंग्रेज बस गये थे और वहां भी अब घेरे बनाना प्रारम्भ हो गया था। वेल्स के साधारण खेतों की बाड़ पत्थर की दीवारों अथवा तृण-मृदा के किनारों से बनाई जाती थी।

दूर रहने वाले इन देहाती लोगों के पारम्परिक ढंगों में स्टुअर्ट काल में किसी संवेगात्मक आन्दोलन के संघात से कोई गड़बड़ी उत्पन्न नहीं हुई थी चाहे वह आन्दोलन सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक अथवा धार्मिक रहा हो। उन्हें अपनी पुरुतंत्री के पारम्परिक संगीत और गानों से ही लगाव था और उनके धर्म में अधिकतया भजनों का गाना सम्मिलित था। वे इतने अपढ़ थे कि उनके लिए तात्कालिक बाइबिल पढ़ने वाले प्रोटेस्टेंटवाद के पूर्ण प्रवाह में बहना कठिन था। आर्थिक दृष्टि से और बौद्धिक रूप से वेल्स आने-जाने की भौगोलिक कठिनाइयों के कारण अंग्रेजी प्रभाव से एकदम दूर था। यहां तक कि १७६८ में आर्थर यंग ने वेल्स की पहाड़ी सड़कों को केवल चट्टानी गलियां कहा था जो घोड़े के आकार की बड़ी बड़ी चट्टानों से भरी हुई रहती थीं।

यदि ऐसी स्थिति में वेल्स में कोई धार्मिक अथवा शैक्षणिक पुनर्जागृति होती तो उन्हें यह स्वयं ही करनी पड़ती जैसाकि उन्होंने बाद में किया भी। विलियम और ऐन्नी के शासनकालों में प्रारम्भ होकर और सम्पूर्ण अठारहवीं शताब्दी में वेल्स के परोपकारवादियों ने अपने देशवासियों में शैक्षणिक और धार्मिक प्रचार को प्रोत्साहित किया। अन्तत: वेल्स के धार्मिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग मेथाडिस्ट गिरिजा हो गये। किन्तु यह आन्दोलन जॉन वेस्ले के जन्म के पूर्व ही प्रारम्भ हो गया था।

कृषकों को पढ़ने की शिक्षा देना और उनके हाथ में वेल्स की बाइबिल देना ऐसे लोगों के उद्देश्य थे जिन्होंने सम्पूर्ण वेल्स देश में लोकप्रिय शिक्षा की स्थापना की थी। निस्सन्देह इंगलैंड में भी धर्मार्थ और रविवारीय विद्यालयों की स्थापना धार्मिक कारणों से ही हुई थी किन्तु विमतिवादियों अथवा जैकबवादियों से राज्य धर्म की रक्षा करने के अधिक लौकिक उद्देश्यों से ये कारण सम्बद्ध थे। साथ ही इनका उद्देश्य निर्धन लोगों के बच्चों को परिश्रमी तथा एक सावधानीपूर्वक श्रेणीबद्ध सामाजिक अर्थ-व्यवस्था के उपयोगी सदस्य होने के लिए प्रशिक्षित करना भी था। वेल्स के सरलतर और समतावादी कृषक समाज में ऐसी समस्याएं विद्यमान नहीं थीं और उपयोगिता के मध्यमवर्गीय विचार भी अज्ञात थे। जिन्होंने उपरोक्त विद्यालयों की स्थापना की थी उनकी इच्छा केवल स्त्रियों एवं पुरुषों की आत्माओं की रक्षा करना था अर्थात् उन्हें

बाइबिल पढ़ने वाले धार्मिक ईसाइयों के रूप में विकसित करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हो गई थी और साथ ही साक्षर हो जाने के कारण वेल्सवासियों के समक्ष बौद्धिक और राष्ट्रीय संस्कृति के नये मानसिक दृश्य (Vistas) खुल गये थे जो सदैव धार्मिक रंग से तो रंगे थे, किन्तु दूसरे क्षेत्रों में भी प्रसरित रहते थे।

धर्मार्थ विद्यालयों के एक इतिहासकार ने, जो स्वयं वेल्स की एक स्त्री थी, ने इस प्रकार लिखा है :[१]

'वेल्सवासियों के चरित्र और इतिहास पर धर्मार्थ विद्यालयों के प्रभाव व महत्व का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करना कठिन होगा। इस प्रकार की शिक्षा के ध्येय और उद्देश्य के रूप में दया पर निरन्तर संकेन्द्रण ने सुखी और सरल लोगों को बल दिया था जो धर्म के प्रति अन्यमनस्क थे और जिनमें राजनीतिक चेतनता का अभाव था। अब ये ऐसे लोग हो गये थे जिनको धर्म और राजनीति में प्रबल रुचि हो गई थी। प्रत्येक वेल्सवासी के लिए बाइबिल एक नियमावली बन गई थी। वह उसी की भाषा को अपनी भाषा मानने लगा था और उसके सामाजिक और राजनीतिक जीवन में बाइबिल की शिक्षाओं की प्रधानता थी। पेंटीसिलिन के विलियम्स के भजनों और बाइबिल में साधारण ग्रामीणों को अपनी संवेगात्मक और बौद्धिक रुचियों की पूर्ण तुष्टि प्राप्त होती थीं।

धर्मार्थ विद्यालयों के आन्दोलन का राजनीतिक प्रभाव कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं था। आधुनिक वेल्स राष्ट्रवाद की उत्पति अठारहवीं शताब्दी के साहित्यिक और भाषायी पुनर्जागरण से हुई थी। इसमें धर्मार्थ विद्यालयों के आन्दोलन की वैसी ही महत्वपूर्ण भूमिका थी जैसी कि उसकी धार्मिक पुनरुत्थान में। इन विद्यालयों का कार्य प्रारम्भ होने के पूर्व वेल्स भाषा केवल कवियों एवं राजकुमारों की भाषा थी जिसके विनाश का खतरा आसन्न था। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक यह भाषा पुनः गद्य और कविता का माध्यम बन गई; यह मात्र राजकुमारों की भाषा नहीं रह गई। इसमें ग्रामीण उत्पत्ति एवं पवित्र प्रेरणा के स्पष्ट चिन्ह अंकित थे।'

---

[१] दि चैरिटी स्कूल मूवमेंट, ए स्टडी ऑफ़ एटीन्थ सेन्चुरी प्यूरिटैनिज्म इन ऐक्शन। एम. जी. जोन्स, गिर्टन कालेज की फेलो, १९३८, पृ० ३२१।

अध्याय १२

डा. जॉन्सन के काल में इंगलैंड

[२]

कृषि एवं औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ—संचार साधनों की उन्नति—समुद्र पार के देशों से व्यापार—नगर

यद्यपि सैक्सन की विजय के पश्चात् औद्योगिक क्रान्ति सामाजिक इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण आन्दोलन है किन्तु यह कहना कि उसका प्रारम्भ कब हुआ उतना ही कठिन है जितना यह निर्णय करना कि मध्ययुग का अन्त कब हुआ। पूंजीवाद, कोयला, समुद्र के पार व्यापार, कारखाने, मशीनरी तथा श्रमिक संघ सभी का हैनौवर युग के पूर्व अंग्रेजी जीवन में अपना-अपना स्थान है। किन्तु अठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध वह समय माना जाता है जिसमें वैज्ञानिक आविष्कार एवं बढ़ती हुई जनसंख्या से प्रेरित होकर औद्योगिक परिवर्तन ने उस निश्चयात्मक अवस्था में प्रवेश किया जिसकी तीव्र गति में आज भी कोई धीमापन नहीं दीखता।

अठारहवीं शताब्दी के कृषि आन्दोलन के भी ऐसे ही गुण थे। द्वीप के कृषि उत्पादन में जो भारी वृद्धि हुई थी वह उन दिनों जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण आवश्यक हो गई थी। इतनी विशाल जनसंख्या को उस समय विदेशों से आयात किए अनाज से भोजन नहीं दिया जा सकता था। इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति एवं शोषण उस काल की विशिष्ट सामाजिक तथा आर्थिक दशाओं के कारण सफलता पूर्वक हो सका। अठारहवीं शताब्दी में जमींदार वर्ग भूमि और जोत के तरीकों में उन्नति करने के लिए समर्थ था और अपने व्यक्तिगत ध्यान तथा संचित धन को लगाने के लिए इच्छुक था। प्रारम्भिक औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न पूंजी का बहुत सा भाग बड़ी जागीर प्रणाली के माध्यम से कृषि को उपजाऊ बनाने में लगा दिया गया था। यह धन कपडे, रुई, कोयले तथा व्यापार से आता था किन्तु पूंजी विपरीत दिशा में—भूमि से उद्योग में—भी गई। जिन अनेक नये उद्योगपतियों ने अठारहवीं शताब्दी में कारखानों, मिलों तथा व्यापारों की स्थापना की थी उनके लिए धन या तो उन्हें अपनी ही भूमि से मिला था अथवा अपने पूर्वजों से जो कृषकों के रूप में सफल हुए थे। काउण्टी बैंकों ने, जिनकी संख्या इस समय बढ़ रही थीं, उद्योग से

कृषि तथा कृषि से उद्योग में पूंजी के दोहरे प्रवाह को सहायता दी थी। वास्तव में, कृषि तथा औद्योगिक क्रान्तियों का सम्बन्ध कई प्रकार से था। वे केवल समकालीन नहीं थीं, प्रत्येक दूसरे की सहायक बनी। उन दोनों को एक ऐसा अकेला प्रयास माना जा सकता है जिससे समाज ने अपना इस प्रकार पुनर्निर्माण किया कि वह उन्नत चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं के कारण अभूतपूर्व तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या को भोजन एवं रोजगार देने में समर्थ हो सका।[1]

एक सौ वर्षों में जो परिवर्तन हुए उन्हें जॉर्ज द्वितीय और जॉर्ज चतुर्थ के शासन-कालों की स्थिति की तुलना से संक्षिप्त रूप से दर्शाया जा सकता है।

जब जॉर्ज द्वितीय (१७२७-१७६०) के शासन का आरम्भ हुआ तो वस्तुओं का उत्पादन ग्रामीण जीवन का कार्य था। उस समय 'उत्पादक' शब्द का प्रयोग पूंजी-पति सेवायोजकों के लिए न होकर स्वयं दस्तकारों के लिए होता था जो साधारण ग्रामों में रहते थे। इनमें से प्रत्येक ग्राम कपड़े, औजारों, साधारण प्रकार के मकानों तथा रोटी, गोश्त और जौ की शराब की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर लेता था। केवल निकट के पार्क में रहने वाले 'भद्र जन' के लिए सुरुचि और भारी व्यय के युग में काउण्टी की राजधानी अथवा लन्दन से सर्वोत्तम फर्नीचर, पुस्तकें, चीनी के बर्तन तथा अन्य सुविधाएं और उत्कृष्ट रुचि के अनुकूल मेंजें मंगाई जाती थीं, तथापि उसके साधारण भोजन का स्रोत स्वयं उसकी जागीर थी।

फिर भी, बहुत से देहाती ग्रामों में न केवल उनकी आवश्यकता के लिए सस्ती वस्तुएं बनती थीं बल्कि बाजार के लिए कुछ विलासिता की वस्तुएं भी बनती थीं। अनेक उदाहरणों में से केवल एक उदाहरण देखिए। मेरे पास मेरे दादा की एम अठारहवीं शताब्दी की घड़ी है, वह प्रायर मार्स्टन के छोटे वार्विकशायर गांव में बनी थी। वह

---

[1] १८वीं शताब्दी के आयरलैंड में जनसंख्या और भी तेजी से बढ़ी और लगभग १५ लाख से बढ़कर ४० लाख हो गई। किन्तु उस द्वीप की सामाजिक दशाएं और प्रजातीय विशेषताएं आर्थिक परिवर्तन के अनुकूल नहीं थी, और औद्योगिक अथवा कृषि क्रान्ति के स्थान पर आलुओं पर निर्भर रहने वाली जनसंख्या में उस देश में भयंकर भूखमरी और बार-बार अकाल पड़ते थे। इसी का परिणाम १८४७ का भयंकर संकट था।

वेल्थ आफ नेशन्स (प्रथम पुस्तक, अध्याय ११) के सुप्रसिद्ध पैरा में ऐडम-स्मिथ ने लंदन में आयरवासियों की शारीरिक शक्ति और सुन्दरता का सम्बन्ध स्वयं उनके देश में खाए जाने वाले आलू के भोजन से किया था। उसका कहना सच था अथवा झूठ किन्तु इतना तो मानना पड़ेगा कि एक विशाल जनसख्या को आलू पर जीवित रखना एक सरल किन्तु खतरनाक तरीका था।

आज भी सही समय देती है। ऊनी कपड़ा, जो आज भी हमारे आन्तरिक और विदेशी व्यापार की मुख्य वस्तु है, उस समय भी बनता था। उसके निर्माण की मुख्य प्रक्रिया ग्रामीण क्षेत्रों में होती थीं। तीव्रता से बढ़ता हुआ सूती वस्त्र-उद्योग भी देहातों में चल रहा था। कस्बे इस प्रकार के निर्माण में थोड़ा भाग लेते थे किन्तु वे मुख्यतया वितरण केन्द्र थे। काट्सवोल्ड तथा ईस्ट ऐंग्लियन ग्रामों में निर्मित कपड़े की बिक्री एवं वितरण ब्रिस्टल तथा नार्विक में होता था। लीड्स तथा हैली-फैक्स में वे वस्तुएं बिकती थीं जो पत्थर के फार्मों तथा देहाती घरों में बनती थी, जिसमें सबके पास अपने खेत और गायें थीं। इस प्रकार के निर्माण-केन्द्र यार्कशायर के सूती कपड़ों की घाटियों के ढलान पर फैले हुए थे।

प्रारम्भिक हेनरी-कालीन इंगलैंड के कस्बे स्वनिर्मित वस्तुओं पर अपनी जीविका के लिए इतना निर्भर नहीं रहते थे जितना कि अपनी बाजारों, अपनी दुकानों एवं अपने वाणिज्य पर। लन्दन सचमुच एक औद्योगिक और व्यापारिक नगर था तथा उसी समय उसमें आधुनिक 'बृहत नगर' के जीवन की अनेक विशेषताएं दृष्टिगोचर होती थीं। बरमिंघम सदा से छोटे उद्योगों का नगर था। बृहदाकार ब्रिस्टल तथा उसके विकास-शील प्रतिद्वन्द्वी लिवरपूल, से लेकर लघु फोवी तथा आल्डेबर्ग तक सभी बन्दरगाहों में सामुद्रिक जीवन पाया जाता था। इन सबका अतीत सर्वोत्तम दिनों के लिए विख्यात था। किन्तु अधिकांश कस्बे देहातों पर आश्रित केन्द्र थे जो उनकी (देहातों की) आवश्यकताओं की पूर्ति किया करते थे। वे प्राचीरों से घिरे हुए मध्ययुगीन कस्बों की ईर्ष्यालु नगरीय देश भक्ति को भूल चुके थे तथा उसके दस्तकार-संगठनों का निर्माण एकाधिकार अब समाप्त हो चुका था। वे अब किसानों के लिए बाजार-स्थल थे। इन्हीं स्थलों पर भद्र जन तथा उनके परिवार परस्पर मिलते और नाचते थे तथा दैनिक आव-श्यकता की चीजों को खरीदते थे। यहीं वे काउण्टी के कार्यकलापों का संचालन करने से सम्बन्धित निर्णय लेते थे। मध्यम स्थिति के भूमिपति (जागीरदार), जो विशेषकर राजधानी से सैकड़ों मील दूर रहते थे, और जो लन्दन के मौसम का आनन्द लेने में असमर्थ थे, काउण्टी कस्बे के भीतर अथवा उसके आसपास स्वयं अच्छे मकानों का निर्माण करते थे जहां उनके परिवार वैवाहिक सम्बन्धों को स्थापित करने के इरादे से प्रत्येक वर्ष थोड़े समय के लिए आकर प्रयास करते थे। गिर्जाघरों वाले नगर पादरियों के सम्माननीय संरक्षण के अधीन सम्मानपूर्ण प्रगति करते थे। किन्तु इन सबके अतिरिक्त बृहत्तर काउण्टी कस्बे, जैसे न्यूकैसल-आन-टाइन तथा नार्विक राष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे।

जिस इंगलैंड पर जार्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०) शासन करता था वह अब बहुत कुछ बदल चुका था। उस समय तक वहां, विशेषकर वेस्ट मिडलैंडस तथा उत्तर में एक नवीन पूर्वलक्षण के रूप में, अनेक "वस्तुनिर्माता कस्बों" तथा शहरी क्षेत्रों का

विकास हो रहा था जो कारखानों तथा मशीन उद्योग से परिपूर्ण थे तथा आसपास के क्षेत्र के ग्रामीण जीवन से बिल्कुल विलग थे। पुराने अंग्रेजी समाज के सामंजस्यपूर्ण जीवन में शहर तथा गांव में एक लम्बवत् दरार पड़ गई। साथ ही धनी और निर्धन वर्गों के बीच की पुरानी खाई भी अधिक चौड़ी हो रही थी। यह सत्य है कि उस काल में ग्रामीण तथा नागरिक जीवन का उग्र भेद केवल कुछ क्षेत्रों तक सीमित था किन्तु विक्टोरिया के शासन काल में वह सार्वभौमिक हो गया था।

जॉर्ज चतुर्थ के शासनकाल में इसी के समकक्ष एक परिवर्तन ग्रामीण जीवन में भी बहुत आगे बढ़ चुका था। विशेषीकृत सामानों के निर्माता, कपड़े तथा रुई की अनेक प्रक्रियाओं के निर्माताओं को मिलाकर, देहाती घरों को छोड़कर कारखाना क्षेत्रों में जा बसे थे। सड़कों की उन्नति ने स्वावलम्बी गांवों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया था। गावों के निवासी अब कस्बों में उन चीजों को खरीदते थे जो उनके माता-पिता स्वयं अपने लिए बनाते थे। अनेक ग्रामीण दर्जी, बढ़ई, शराब खींचने वाले, आटा पीसने वाले और घोड़े की काठी बनाने वाले बेरोजगार हो गए थे। घर में गृहणी का चरखा अब शायद ही कभी गूंजता था। 'सूत कातने वाली स्त्री' शब्द ही अब काल-कवलित हो चला था। आधुनिक किसान अनाज और मांस का उत्पादन मुख्यतया बिक्री के लिए करता था, वह केवल गौण रूप से घरेलू उपभोग के लिए होता था।

१८२० तक कृषि-क्रान्ति के कारण खुले खेतों को आयताकार बाड़ी वाले खेतों में बदल दिया गया था। इन खेतों में अनाज तथा चारा वैज्ञानिक रीति से [बारी-बारी से पैदा किया जा सकता था तथा पशुओं के बड़े-बड़े झुण्डों को खिलाकर इतने भार एवं आकार का बनाया जाता था जिसका अतीत में स्वप्न भी नहीं देखा गया था। बेकार तथा पुराने जंगलों की भूमि के हजारों एकड़ क्षेत्र को कृषि के लिए घेर दिया गया था।[1] पक्की सड़कों पर चिरपरिचित डकैतों का अब नाम-निशान न था क्योंकि वे बीहड़ों तथा झाडियों में छिपते थे और उन्हें काटकर भूमि को जोत डाला गया था। व्यवस्थित नए 'वनों' की रक्षा शिकार के संरक्षकों, पहरेदारों, तथा स्प्रिंगदार बन्दूकों द्वारा की जाती थी।

अतीत में इस प्रकार से उत्पन्न परिवर्तनों को ही कृषि-क्रान्ति की संज्ञा दी गई है। क्योंकि वे पुरानी आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था के विस्तार से सक्रिय न होकर एक नई व्यवस्था के सृजन से कार्यरत थे। बड़ी संगठित जागीरों के बड़े फार्मों में

---

[1] यदि ग्रेगरी किंग के अनुमान (१६९६) और कृषि मंडल की १७९५ की रिपोर्ट लगभग सही है तो सौ वर्षों में इंगलैंड और वेल्स में कृषि-भूमि में बीस लाख एकड़ भूमि का इजाफा हुआ था।

पट्टाधारी किसान भूमिहीन श्रमिकों को लगाकर जोतते थे। यह व्यवस्था इंगलैंड के अधिकाधिक कृषि-क्षेत्र में व्याप्त होती जा रही थी। छोटी खेती तथा स्वामित्व के अनेक रूपों पर इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा था। छोटे भूस्वामियों तथा भूमि में क्षुद्र अधिकारों वाले कृषकों को खरीदा जा रहा था जिससे नयी व्यवस्था की स्थापना में कोई बाधा न पड़े। वृहद मध्यदेशीय अनाज के खुले खेतों को बाड़ी लगे हुए खेतों के शतरंजी प्रतिमान में घेरा जा रहा था जो उसी समय से इंगलैंड में आन्तरिक दृश्यों की प्रमुख विशेषता रही है। और इंगलैंड के उस अर्ध भाग में भी, जहां घिरे हुए खेत सदैव से विद्यमान रहे हैं, समान सामाजिक परिवर्तन घटित हो रहे थे। क्योंकि सभी स्थानों पर बड़े भूस्वामी भूमि खरीद कर अपनी जागीरों को सुदृढ़ कर रहे थे; प्रत्येक स्थान पर भूस्वामी और कृषक नए तरीकों के प्रयोग में व्यस्त थे। तथा प्रत्येक स्थान पर अच्छी सड़कें, नहरें तथा मशीनें गांव और कुटीर से उद्योग को कारखाना तथा कस्बे की ओर मोड़ रहे थे। इसमें कृषक परिवार सूत कातने तथा अन्य छोटी-छोटी निर्माण क्रियाओं से पृथक किया जा रहा था। अभी तक इन्हीं से वह अपनी जीविका के लिए अल्प साधन जुटाता रहा था।

स्थानीय दशाओं की भारी विविधता को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण इंगलैंड के विषय में यह कहना सत्य है कि उन अनेक परिवर्तनों में खेतों की घेरेबन्दी एकमात्र किन्तु संभवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन था, जिन्होंने मिलकर स्वतंत्र कृषकों की संख्या घटा दी थी जबकि देहाती क्षेत्रों की सकल सम्पदा में वृद्धि कर दी थी।[1]

ट्राफैलगर तथा वाटरलू के युग में भी ये परिवर्तन तीव्रता से घटित हो रहे थे किन्तु १७४० और १७८९ के बीच ये विशाल परिमाण में हुए थे। अतएव इस समग्र

---

[1] वर्डस्वर्थ ने लिखा था कि लेक डिस्ट्रिक्ट में १७७० और १८२० के बीच स्वत्वाधिकारी 'राजनयिकों' की संख्या आधी हो गई थी और उनके पास जोत का आकार दूना हो गया था। छोटे-छोटे फार्मों को मिलाकर एक कर दिया गया था क्योंकि वे परिवारों के भरण-पोषण के लिए अपर्याप्त सिद्ध हो चुके थे जब तकुए के अविष्कार ने कारखानों में सूत की कताई को केन्द्रित कर दिया था और इस प्रकार किसानों की स्त्रियों और बच्चों से सूत कातने का लाभदायी काम छीन लिया था।

दूसरी ओर मिडलैंड शायरों में मुक्त खेतों की घेराबन्दी ने भूमि पर अधिकार रखने वाले अनेक छोटे किसानों को समाप्त कर दिया था। किन्तु यह बात मिडलैंड और ईस्टर्न काउण्टियों के बारे में सही नहीं थी जहां उपरोक्त घेराबन्दी होने के बाद भी भूमि पर अधिकार रखने वाले छोटे किसानों की संख्या में कमी नहीं आई थी। (देखिए चैपमैन, १, पृ० १०३-१०५ और जे. डी. चैम्बर का इकनामिक हिस्ट्री रिव्यू, नवम्बर १९४०, में लेख)।

प्रक्रिया पर इस अध्याय में विचार करना उचित होगा। इस प्रक्रिया के पूर्ण होते ही ग्रामीण इंगलैंड के जीवन का अविस्मरणीय ढंग बदल चुका था।

उत्तरकालीन स्टुअर्टों तथा जार्ज प्रथम के शासनकालों में खुले हुए खेतों, सामूहिक तथा बंजर भूमियों की घेरेवन्दी वड़ी शीघ्रता से हो रही थी। इसके लिए या तो सम्वद्ध पक्षों में इकरारनामा हो जाता था अथवा खरीददारी। किन्तु इस समय तक घेरेवन्दी एक राष्ट्रीय नीति न होकर केवल एक स्थानीय सुविधाजनक उपाय था। किन्तु अठारहवीं शताब्दी के तीसरे दशक के पश्चात् इस कार्य को एक नई तथा अधिक उपयुक्त कार्य प्रणाली से चलाया जाने लगा। संसद के निजी अधिनियमों को पारित कर खेतों के व्यक्तिगत स्वामियों के घेरेवन्दी से सम्वन्धित प्रतिरोध को समाप्त किया गया। संसद के आयुक्तों, जिनके निर्णयों को कानूनी शक्ति प्राप्त थी, द्वारा प्रत्येक स्वामी को जो भूमि अथवा आर्थिक मुआवजा दिया जाता था उसी से उन्हें सन्तुष्ट होना पड़ता था। जार्ज तृतीय के शासनकाल में संसद के प्रत्येक सत्र में ऐसे अनेक क्रान्तिकारी क़ानून जल्दी जल्दी पारित किए जाते थे। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि इन संसद सभाओं ने उस काल में कोई अन्य विख्यात क्रान्तिकारी विधान नहीं पारित किया। किन्तु उपरोक्त क्रान्तिकारी कानून निर्धनों को हानि पहुँचाने वाला धनिकों का उन्मूलनवाद था।

१७४० से आगे के प्रत्येक दशाब्द में भूमि की घेरेवन्दी की गति अधिकाधिक तीव्र होती गई तथा शताब्दी के अन्त में यह सर्वाधिक तीव्र थी। विक्टोरिया के सिंहासनारूढ़ होने के समय तक खुले अनाज के खेतों को घेरने का कार्य लगभग सम्पूर्ण हो चुका था। केवल सामूहिक भूमि की घेरेवन्दी उसके शासन के प्रथम तीस वर्षों तक चलती रही। जो क्षेत्र घेरेवन्दी से सम्वन्धित कानूनों से गम्भीरता से प्रभावित हुआ था वह इंगलैंड की काउंटियों के क्षेत्र का लगभग आधा था। यह क्षेत्र यार्कशायर की ईस्ट राइडिंग के दक्षिण से लेकर लिंकन, नार्फोक, मध्यदेशीय शायरों से होते हुए विल्ट्स तथा बर्क्स तक फैला था। संसद के अधिनियम द्वारा नार्थम्पटनशायर के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का लगभग आधा घेर लिया गया था। हण्ट्स, वेड्स, आक्सफोर्ड तथा ईस्ट राइडिंग के क्षेत्रफल का ४० प्रतिशत से अधिक घिर गया था। लीसेस्टर तथा कैम्ब्रिजशायर की इस दिशा में प्रगति वहुत पीछे नहीं थी।

किन्तु घेरेवन्दी कानूनों का कोई प्रभाव केण्ट, एसेक्स, ससेक्स तथा उत्तरी तथा पश्चिमी काउंटियों (जिलों) और वेल्स पर नहीं पड़ा था क्योंकि उनके वहुत से क्षेत्र में या तो ऐसे खेत थे जो कई युगों पूर्व घेरे जा चुके थे अथवा वहाँ इतने विस्तृत मैदानी चरागाह थे जिनको तार के घेरों के युग के आने के पूर्व घेरने की किसी में सामर्थ्य नहीं थी। इस प्रकार नार्दम्बरलैंड का २ प्रतिशत क्षेत्र भी घेरेवन्दी कानूनों से प्रभावित नहीं

हुआ, यद्यपि ठीक इसी समय इस प्रदेश के जमींदार टिनसाइड में अर्जित पूंजी की बड़ी राशियों को कृषि की उन्नति में लगा रहे थे।

इसका कारण यह था कि घेरेबन्दी का युग खेतों से पानी निकालने, कुएं खोदने, बोने, खाद डालने, पशुओं को पालने तथा उन्हें खिलाने, सड़कें बनाने, फार्मों की इमारतों के पुर्ननिमारण तथा इसी प्रकार के सैंकड़ों परिवर्तनों का युग था और इन सभी क्रियाओं के लिए पूंजी की आवश्यकता थी। पुनस्स्थापन के काल के बाद से ही बड़ी संगठित जागीरों में भूमि का संचय करने का तीव्रता से बढ़ता हुआ आन्दोलन चल रहा था। इस क्षेत्र के बड़े-बड़े जागीरदारों (धनपतियों), महान् राजनीतिक पीयरों के पास बहुत बड़ी-बड़ीं जागीरें थीं तथा १६६० की तुलना में १७६० में इंगलैंड के क्षेत्र-फल का बहुत छोटा भाग कम महत्वपूर्ण ग्रामीण भूस्वामियों के कब्जे में था। अतएव जमींदार वर्ग के पास अधिक पूंजी तथा साख (ऋण) कृषि की उन्नति में लगाने के लिए थे, जोकि अब तक एक फैशन बन गया था।

विशाल सघन जागीरों के मालिक इस आन्दोलन में अग्रगण्य थे। इसमें टाउंशेण्ड जैसे पुरुष थे जो जार्ज द्वितीय के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में सेवानिवृत्त हो गया था। ऐसा ही एक व्यक्ति कोक ऑफ नारफोक था, जो चालीस वर्ष पश्चात् इस क्षेत्र में प्रकट हुआ था। वह फाक्स का मित्र था और जार्ज तृतीय का शत्रु। दोनों टाउंशेण्ड तथा कोक ने नारफोक में नई फसलों तथा नई पद्धतियों का प्रवेश किया था। सबसे महत्वपूर्ण शलजम, शकरकंद जैसी मूल (जड़) वाली फसलें उगाना और हलकी भूमि को उपजाऊ बनाना था। उनके उदाहरण ने उनकी पिछड़ी हुई काउंटी को अंग्रेजी कृषि का अग्रगण्य बना दिया। १७७६ तथा १८१६ के बीच कोक ने अपनी भूमि का इतना विकास किया जिससे उसकी होलखम जागीर का वार्षिक लगान २००० पौंड से बढ़कर २०,००० पौंड हो गया और फिर भी जो आसामी ये ऊँचे लगान देते थे उनके पास प्रचुर धन हो गया था। वह उन्हें खेती के लिए कठोर शर्तों पर दीर्घकालीन पट्टों की सुरक्षा प्रदान करता था। मूल सुधारवादी कॉबेट के अनुसार, ये आसामी अपने जमींदार के लिए वैसे ही स्नेहपूर्ण शब्दों का प्रयोग करते थे जैसे बच्चे अपने माता-पिता के लिए करते हैं। होलखम जागीर में उसका भेड़ों के बाल काटने का उत्सव सारे योरोप में प्रसिद्ध था। वहां कृषि विशारद आते थे जो कभी-कभी एक साथ नारफोक के दूरस्थ किनारे में छह सौ की संख्या में यह देखने के लिए एकत्र हो जाते थे की खेती कैसे की जाती है और भेड़ें कैसे पाली जाती हैं। अपने शाही आतिथेय के आवास में अस्सी दर्शक तक एक साथ रह सकते थे। शेष दर्शक पड़ोसी फार्मों में ठहराये जाते थे।

प्रत्येक शायर के जमींदारों में टाउंशेण्ड तथा कोक के अनुकरणकर्ता थे। और नई शैली के कृषक, जैसे लीसेस्टरशायर का राबर्ट बेकवेल, जो भेड़ों तथा पशुओं की

उन्नत नस्लों को पालते थे, स्वयं सक्रिय नवोन्मेषकर्ता थे। इस सबका परिणाम राष्ट्रीय उपभोग के लिए रोटी तथा बीयर (जौ की शराब) के लिये अनाज के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई थी। इससे भी अधिक वृद्धि पशुओं की संख्या और आकार में हुई थी। इसका कारण यह था कि अभी तक इंगलैंड की सर्वोत्तम भूमि पर विशाल खुले हुए खेतों में कृषि की जाती थी और उनमें अनाज कट जाने पर अनाज के डंठलों में पशु भोजन की तलाश में फिरा करते थे। अब उन्हीं को मध्य आकार के खेतों में घेर दिया गया था जिन्हें कंटीली झाड़ियों से विभाजित किया जाता था। इनमें उगी हुई अच्छी घास को पशु चरते थे और साथ ही पहले की अपेक्षा बहुत अधिक कृषि-भूमि पर कृत्रिम घास एवं मूलवाली फसलें उगाई जाती थीं जिससे ठंडी ऋतु में भेड़ों तथा पशुजों के लिए चारा (भोजन) जुटाया जा सकता।

इस प्रकार से, जबसे मनुष्य ने खेती करना प्रारम्भ किया तबसे प्रथम बार पतझड़ के पश्चात् सम्पूर्ण ढोरों की हत्या बन्द हुई। अब नमकीन मांस का स्थान ताजे गाय-बैल के मांस और भेड़ बकरी के मांस ने ले लिया था। इसका तुरन्त परिणाम यह हुआ कि स्कर्वी तथा अन्य चर्म रोग, जिनसे रसेल तथा वर्नी जैसे उच्चत्तम घराने सत्रहवीं शताब्दी में पीड़ित होते थे, अब केवल निर्धन लोगों में ही यदाकदा होते थे। सम्पूर्ण वर्ष भर पशुओं को खिलाने की नई सुविधाओं तथा कृषकों के उन्नत नस्ल के पशुओं तथा भेड़ों को खरीदने तथा उनके पालन के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया। स्मिथफील्ड में बिकने वाले पशु तथा भेड़ों का औसत वजन १७१० तथा १७९५ के बीच दुगना हो गया था।[1]

किन्तु गोमांस तथा भेड़ बकरी के मांस के उत्पादन में इस विस्मयकारी वृद्धि से कृषि में किसी प्रकार की कमी नहीं आई। इसके विपरीत, एक अवधि तक गेहूं और जौ का उत्पादन देश की जनसंख्या की रोटी तथा बीयर की आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहा, जो उस शताब्दी भर में दूनी हो गई थी। साथ ही अनाज की सहायता से इंगलैंड के निर्यात को बढ़ाया गया। केवल शताब्दी के उत्तरार्ध में जब जनसंख्या बहुत अधिक वेग से बढ़ी तब आयात किया हुआ अनाज धीरे-धीरे निर्यात के बराबर हो गया, जो बाद में निर्यात के परिणाम से बहुत अधिक बढ़ गया।

---

[1] १८वीं शताब्दी के इंगलैंड में सभी प्रकार के घोड़ों में सुधार होना समान महत्वपूर्ण घटना थी। स्टुअर्ट काल में अंग्रेज लोग अरब और बारबैरी को घुड़-दौड़ों और शिकार के लिए घोड़े खरीदने जाते थे। जार्ज तृतीय के शासनकाल में सारा संसार इंगलैंड में घोड़े खरीदने आता था फिर चाहे वे घोड़े घुड़ दौड़ अथवा गाड़ियों में जोतने के लिए चाहे जाते। उस समय शिकार, यात्रा और कृषि के लिए घोड़ा अनिवार्य होता था और इन सभी में अंग्रेजी संभ्रान्तजन उस युग में लगे थे।

भूमि की उन्नति इस सीमा तक हो गयी कि जहां पहले केवल राई, ओट (जई) तथा जौ जैसे मोटे अनाज ही उत्पन्न होते थे, वहां अब गेहूं भी उत्पन्न होने लगा। इंगलैंड की भूमि और जलवायु केवल कुछ क्षेत्रों में, मुख्यतया ईस्ट एंग्लिया में, गेहूं की खेती के अनुकूल है। फिर भी बड़ी जागीरों द्वारा प्रदत्त पूंजी के विनियोग से भूमि की इतनी कृत्रिम उन्नति की गई कि अठारहवीं शताब्दी के दौरान में सभी वर्गों के अंग्रेज लोग इतने विलासप्रिय हो गए कि वे उत्कृष्ट गेहूं की रोटी खाना ही पसन्द करते थे जिसे पहले के समय में केवल धनी लोगों की विलासिता माना जाता था। यह नई मांग, जो शहरों में प्रारम्भ हुई थी, अब गांवों तक फैल गई, यहां तक कि दरिद्रों में भी इसकी मांग बढ़ने लगी। मोटे अनाजों से बने सम्पूर्ण खाद्यपदार्थों का परित्याग बुरा था, क्योंकि बेईमान रोटी पकाने वालों द्वारा वास्तव में जो परिष्कृत आटे की रोटियां दी जाती थीं वे अंग्रेज जाति के स्वास्थ्य तथा दांतों के लिए हानिकारक थीं। किन्तु यह पूंजी के उच्च विनियोजन से युक्त खेती की प्रभावपूर्णता का प्रमाण था।[१]

इस आर्थिक लाभ की सामाजिक कीमत स्वतंत्र कृषकों की संख्या में कमी तथा भूमिहीन श्रमिकों की वृद्धि के रूप में चुकानी पड़ी। बहुत हद तक यह एक अनिवार्य अनिष्ट था इससे कम हानि हुई होती यदि कृषि क्षेत्र से प्राप्त अधिक लाभ का उचित वितरण होता। किन्तु जबकि जमीदार का लगान, पादरी का वेतन, कृषक तथा मध्यस्थ का लाभ सभी में तीव्र वृद्धि हुई, खेतिहर श्रमिकों का भूमि में स्वल्प अधिकार समाप्त हो गया और उद्योग में रोजगार मिलने से उनके परिवारों के अधिकार छिन गए। उन्हें इन सबका मुआवजा ऊँची मजदूरी के रूप में नहीं मिला। दक्षिणी काउंटियों में भी खेतिहर श्रमिकों की स्थिति पराधीनता एवं दरिद्रता की हो गई।

जनसंख्या में वृद्धि के कारण मजदूरी का बाजार-मूल्य नीचा बना रहा। और यह उस समय हुआ जब श्रमिक की आजीविका के स्वतन्त्र साधन समाप्त हो रहे थे। अतएव जार्ज तृतीय के शासनकाल में मजदूरों में जीवन निर्वाह योग्य मजदूरी के लिए सौदा करने की उतनी सामर्थ्य नहीं थी जितनी की एडवर्ड तृतीय के शासनकाल में उनके पूर्वजों में भी, जबकि प्लेग के कारण मजदूरों की कमी हो गई थी। इसके अतिरिक्त, निर्धन अब युद्ध के लिये न शस्त्र सज्जित थे और न उपयुक्त रूप से प्रशिक्षित ही थे। जैसा कि १३८१ के विद्रोह के काल में साधारण जनसमुदाय अपने "धनुषों तथा भालों" के कारण बड़ा शक्तिशाली था वैसा वह अब नहीं था। उन दिनों संसद के कानूनों के बावजूद वे मजदूरी तथा अधिकारों की अपनी मांगे पूरी कराने के लिए हड़ताल करने बाहर आ जाते थे, उनके समूह की अगुआई पुराने तीरन्दाज करते थे।

---

[१] जे. सी. ड्रमंड और ए. विल्ब्राहम, **दि इंगलिशमैन्स फूड** (१९३९) पृ० १५७, १९५, २२२-२२६; सर विलियम ऐशले, **दि ब्रेड आफ अवर फादर्स**, १९२८।

न अब किसानों के अत्यन्त दयनीय मामले को ही राजनीतिज्ञों से वैसी सहानुभूति मिल सकती थी जैसी कि ट्यूडर युग की कहीं कम घेरेबंदियों की स्थिति में मिल जाती थी। उस समय खेतों की घेरेबन्दी एक सार्वजनिक अपराध माना जाता था। इस समय यह एक सार्वजनिक कर्त्तव्य हो गया था। घेरेबन्दी कानूनों के निर्माता वर्गों से किसी सहानुभूति के बिना कृषक अपने मामले को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में असमर्थ था। खुले खेत में यदि उसकी पट्टी से अथवा सामूहिक भूमि में उसकी गाय के लिए चरागाह से उसे वंचित किया जाता तो उसे मिलने वाली कुछ गिन्नियां शीघ्र ही सार्वजनिक भवन में उड़ा दी जातीं। यदि उसके सामूहिक अधिकारों के बदले में संसदीय आयुक्त उसे कुछ दूरवर्ती भूमि भी देता तो उस भूमि से पानी निकालने में वह असमर्थ था। वह केवल किसी धनी व्यक्ति को पुनः सस्ती दर पर उसे बेच देता था जो सामान्यतया खुले खेत को नए सघन फार्मों में परिवर्तित करने में संलग्न थे। इसका कारण यह था कि यही व्यक्ति अपने व्यय पर उस भूमि की बाड़ी (आलवाल) बना सकते थे अथवा उसके पानी के निकास की व्यवस्था कर सकते थे। उन्हें पूंजी के इस विनियोग से किसी समय बड़ा लाभ मिल सकता था।[1]

भविष्य में, इंगलैंड की भूमि पर खेती करने के लिए एक मनुष्य के पास या तो स्वयं की पूंजी अथवा दूसरे की पूंजी होनी चाहिये। असामी किसान अपने जमींदार की पूंजी का लाभ उठाता था और उन दोनों को बैंक से ऋण लेना पड़ता था। भूमि की घेरेबन्दी के साथ साथ अंग्रेजी बैंकिंग पद्धति का भी विकास हुआ क्योंकि धनी लोग भी अपनी भूमि की बाड़ीबन्दी तथा अन्य सुधार उधार लिए हुए धन से करते थे। इस पद्धति के अन्तर्गत निर्धनतम वर्ग को खेती में सफल होने का कोई अवसर नहीं था, क्योंकि उसे ऋण कहीं से नहीं मिलता था। वह अवसर भी कम हो गया जब ग्रामीण भूमि के नवीन वितरण में उसके हितों की बहुधा उपेक्षा की जाती थी। यद्यपि राष्ट्रीय उत्पादन के दृष्टिकोण से सामान्य भूमि की घेरेबन्दी बहुत वांछनीय थी फिर भी उसका

---

[1] गांव की भूमि से पानी की निकासी और उसकी घेरेबन्दी की बड़ी कठिनाई और भारी खर्च का सविस्तार उदाहरण बोर्न के मामले में दिया गया है जिसका विवरण गनिंग ने अपनी रचना **रेमिनीसेन्सेज आफ कैम्ब्रिज**, २, पृ० २४४-२५० में किया है। बाड़ी के अतिरिक्त, घेरेबन्दी के साथ पानी की निकासी की एक पूर्णतया नई पद्धति काम में लाई जाती थी जिसमें पुरानी मेड़ों (जो नालियों और सीमाओं दोनों का ही काम करती थीं) के बीच की नालियां मिट्टी से भरदी जाती थीं। मेड़ों और नालियों से पानी के निकास की पद्धति दीर्घकाल में जमीन के लिए हानिकर सिद्ध हुई, और तब खेतों की घेरेबन्दी करने वालों को खेतों की सतह बराबर करने और नालियों को तोपने में काफी व्यय करना पड़ा। कभी कभी नालियों से ऊपर मेड़ों की ऊंचाई ५ फीट तक होती थी।

अर्थ निर्धन व्यक्तियों को अपनी गायों तथा बतखों से वंचित करना होता था। साथ ही, बहुधा उसे कई अन्य छोटे अधिकारों, जैसे ईंधन के लिए लकड़ी काटना आदि, से भी वंचित होना पड़ता था जिनके सहारे वे अपनी स्वतंत्र आजीविका अर्जित करते थे। (इर्न्ले, **इंगलिश फार्मिंग**, पृ० ३०५-३०७)।

वस्तुतः यह किसी भी प्रकार से निश्चित नहीं है कि नई व्यवस्था के अन्तर्गत निर्धन ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति अतीत की तुलना में हीनतर थी, (क्लैफम, **इकनॉमिक हिस्ट्री ऑफ माडर्न ब्रिटेन**, प्रथम खंड, चतुर्थ अध्याय)। किन्तु उन्हें छोटे भू-स्वामी तथा कृषक की तुलना में कम आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त थी। कुलीनतन्त्र के उस युग में इस पर किसी का ध्यान नहीं जाता था। किन्तु जब आगामी युग में नगरों में नई शक्ति प्राप्त कर जनतन्त्र की कठोर एवं तीखी दृष्टि 'कृषिगत हितों' पर पड़ी तो कुलीनतंत्रात्मक विशेषाधिकारों के लिए एक स्वाभाविक अरुचि को अनुभव किया गया। जैसा कि अन्य योरोपीय देशों में कृषक वर्ग अपनी रक्षा के लिए प्रयास करता था वह दशा अब इंगलैंड में न थी। अतः विक्टोरिया के शासनकाल के अन्त में जब अन्ततः विदेशी प्रतियोगिता चुभने लगी तो नगरीय मतदाता ब्रिटेन की कृषि को विनाश से बचाने के लिए किसी भी प्रस्ताव को सुनना नहीं चाहते थे।

अठारहवीं शताब्दी में, बहुत से लोग जिन्हें प्रणाली में परिवर्तन के कारण भूमि से विलग होना पडा था, स्वेच्छा से बाहर चले गये और अन्यत्र जाकर बस गए। नये और अधिक धनी इंगलैंड में बसे हुए तथा बहुत से समृद्ध व्यापारी, औद्योगिक एवं व्यावसायिक परिवारों के पूर्वज, गांवों के छोटे भूस्वामी, स्वतन्त्र कृषक तथा किसान थे जो अपनी भूमि को बेचकर नगरों में आकर बस गए थे। विक्टोरिया युग के प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन-चरित्रों में बहुधा उनके स्वतन्त्र कृषक पूर्वजों से प्रारम्भ किया जाता है। उपनिवेशों को भी उस स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट वर्ग से लाभ हुआ। अनेक मौसमी कृषकों ने अपने फार्मों को सुरक्षित रखते हुए अन्य फार्मों को लगान पर ले लिया तथा कृषि सम्बन्धी परिवर्तनों का लाभ उठाकर बृहत्तर समृद्धि अर्जित की। अपनी स्थिति में सुधार करने वाली अंग्रेजों की सहज प्रवृत्ति ने गांव, नगर एवं विदेश में उन्हें धन, शक्ति तथा बुद्धि की तीव्र वृद्धि के लिए प्रेरित किया था। केवल कुछ दिशाओं में अंग्रेजों को 'रूढ़ीवादी राष्ट्र' कहा जा सकता है। औद्योगिक एवं कृषि की क्रान्तियों में वे सारे संसार के अग्रणी थे और चूंकि उन्होंने इन क्षेत्रों में पहल की इसलिए उन्होंने कुछ भयंकर भूलें भी कीं।[1]

---

[1] १८वीं शताब्दी की कृषि क्रान्ति के सम्बन्ध में निम्नलिखित रचनाएं पढ़िए—**जान्संस इंगलैंड** (१९३३) में आरबिन लिखित अध्याय १०; डार्बी, **हिस्टारिकल ज्योगराफी आफ इंगलैंड**, (१९३६) में ईस्ट का अध्याय १३; गिलबर्ड स्लेटर, **दि इंगलिश**

देहातों से नगरों की ओर समान रूप से मनुष्यों तथा उत्पादकों का निष्क्रमण सड़कों तथा जल यातायात में उन्नति से प्रभावित हुआ था। आर्थर यंग, जिसे ग्रामों के हित सदैव प्रिय थे, इस बात को देखकर प्रसन्न होता था कि अच्छी पक्की सड़कें बन गई थीं जिन्होंने नये बाजारों को खोल दिया था तथा इधर-उधर की बार-बार की यात्राओं से नये विचारों का आदान-प्रदान सम्भव कर दिया था। कृषि में उन्नति से शीघ्र ही कस्बों में किराये ऊंचे हो गए थे। दूसरी ओर वह 'ग्रामीण प्रवास' के प्रारम्भ को देखता था और उसके लिए खेद-प्रकट करता था क्योंकि यह प्रक्रिया निरन्तर जारी थी। इसका कारण भी वह अच्छी सड़कें मानता था। अपनी पुस्तक **"फार्मर्स लेटर्स"** (संपादित १७७१, पृ० ३५३) में उसने लिखा था—"अच्छी सड़कों को दोषी ठहराना एक विरोधाभास तथा वेहूदगी प्रतीत होगी परन्तु फिर भी यह एक तथ्य है कि तीव्र गतिक यात्रा की सुविधाएं उपलब्ध होने से राज्य की जनसंख्या में ह्रास होता है। देश के ग्रामों के युवकों और युवतियों की आंखें लन्दन पर उनकी आशा के अन्तिम चरण के रूप में टिकी रहती हैं। वे देहात में नौकरी किसी अन्य उद्देश्य से न करके केवल लन्दन जाने के लिए पर्याप्त धन जुटाने के लिए करते हैं। जिस काल में घोड़ा-गाड़ी हिचकोले खाती हुई, रेंगते हुए सौ मील की यात्रा करती थी तो उनके लिए लंदन जाना सम्भव न था। उस समय किराया और अन्य व्यय बहुत अधिक थे। परन्तु आज कल एक देहाती व्यक्ति, जो लन्दन से सौ मील की दूरी पर रहता है, प्रातः काल एक घोड़ा-गाड़ी पर सवार होता है और आठ या दस शिलिंग का किराया लगाकर रात्रि में लन्दन पहुँच जाता है। इस प्रकार पहले तथा आज की स्थिति में पर्याप्त अन्तर है। आजकल केवल इधर उधर आना जाना ही बहुत आसान नहीं हो गया है वरन् लन्दन देखने वाले लोगों की संख्या दस गुनी हो गई है। निस्संदेह अब दस गुणा अधिक अत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा देहाती मूर्खों के कान में पड़ती है जिससे वे अपने स्वास्थ्यकर और स्वच्छ खेतों को छोड़कर धूल, दुर्गन्ध तथा कोलाहलपूर्ण प्रदेश में जाने के लिए फुसला लिए जाते हैं।"

संचार साधनों में उन्नति के विना न तो औद्योगिक और न कृषि क्रान्ति का होना सम्भव था। रानी ऐन्नी की प्रजा के पास विशाल समुद्री पोत थे जिनसे भारी माल भारत तथा अमरीका को सरलता से भेजा जाता था। किन्तु स्वयं अपने द्वीप के भीतर वे अब भी कोयले तथा लोहे के माल की बोरियों को लद्दू घोड़ों की पीठ पर लाद कर भेजते थे। क्योंकि जहाँ कही भी मार्ग में मिट्टी का थोड़ा सा फैलाव भी आ जाता था तो पहिए वाली गाड़ियां कीचड़ में फंस जाती थीं तथा अंग्रेजी सड़कों के गड्ढों

पेजेन्टरी एण्ड दि इन्कलोजर्स आफ कामन फील्ड्स (१९०७); हेमण्ड, **विलेज लेबरर** (१९११); लार्ड एर्नले, **इंगलिश फार्मिंग**, अध्याय ७-९. १९वीं शताब्दी प्रारम्भ में कृषि क्रान्ति के लिए देखिए क्लैफम, खंड १, अध्याय ५।

में फंस कर टूट जाती थीं, आर्थिक प्रगति के मार्ग में बहुत कुछ करने के लिए उपरोक्त दशा में परिवर्तन लाना आवश्यक था।

उस समय कोई प्रभावशाली स्थानीय अथवा केन्द्रीय प्राधिकरण नहीं था। यह अत्यधिक बेहूदी बात थी कि दूर-दूर से आने वाले यात्रियों द्वारा अधिकांशतया प्रयुक्त सड़कों के संरक्षण के लिए काउंटी पर न होकर पैरिश पर व्यय भार पड़ता था। अतः यह स्वाभाविक था कि या तो पैरिश उस कार्य को अपर्याप्त ढंग से करता था अथवा उसे करता ही नहीं था। चूंकि अठारहवीं शताब्दी में स्थानीय प्रशासन का सुधारना अथवा उसका पुनर्गठन करना असम्भव प्रतीत होता था अतः निजी उपक्रम का आश्रय लेना पड़ता था जिसमें उस काल की सुधारात्मक प्रवृत्ति समाहित थी। अवरोधों से युक्त सड़के बनाने वाली कम्पनियों को संसद की ओर से द्वार तथा चुंगी के अवरोध खड़ा करने का अधिकार मिला था, वे सड़कों के प्रयोग कर्ताओं पर वास्तविक अर्थ दंड लगा सकते थे। (सड़क के किसी विशिष्ट खंड के पुनःनिर्माण अथवा उसके रख-रखाव के बदले में) १७०० और १७५० के मध्य कम से कम चार सौ सड़क अधिनियम पारित किए गए थे और १७५१ से १७९० की अवधि में यह संख्या बढ़कर सोलह सौ हो गई थी। सम्पूर्ण हेनरी काल में थल संचार के साधनों में निरन्तर उन्नति करने के लिए यह प्रधान व्यवस्था थी। सड़कों की उन्नति में कई अवस्थाएं थीं और उतनी ही गाड़ियों की समकक्ष उन्नति में। रानी ऐन्नी के काल में, 'कांच-गाड़ी' को मनुष्य के चलने की गति से छः घोड़ों का समूह खींचता था। १७५० तक स्टेट कोच में, जो अधिक हलका तथा अधिक द्रुतगामी था, दो अथवा चार घोड़े जुते रहते थे। किन्तु इस गाड़ी में अब भी स्प्रिंग नहीं लगे थे, मालगाड़ी के डिब्बे के समान इसके पहिए भारी थे और इसके भीतर छः सवारियां बैठ सकती थीं किन्तु बाहर किसी सवारी के बैठने का प्रबन्ध नहीं था। निर्धन मुसाफिरों को कभी कभी गाड़ी की छत पर रखे सामान के साथ लटकने दिया जाता था। ये गाड़ियां स्थान स्थान पर ठहरती थीं तथा इनकी उलटने की दुर्घटनाएं बहुत होती थीं। मार्ग में लुटेरों का बड़ा भय रहता था। वे किसी भी गाड़ी को लूट कर घोड़ों पर सवार होकर भाग निकलते थे। अतएव लूट-मार से रक्षा के लिए उन गाड़ियों में बन्दूक से लैस लालकोटधारी रक्षकों की बहुत मांग थी। १७७५ में नार्विक की गाड़ी एपिंग फारेस्ट (वन) में सात लुटेरों ने लूट ली थी, उनमें से तीन को रक्षक ने स्वयं मारे जाने के पूर्व गोली से मार गिराया था।

जैसे जैसे सड़कों में सुधार हुआ, निजी गाड़ियां अधिक हल्की एवं सुन्दर हो गई। दो सीटों वाली एक हल्की खुली हुई गाड़ी में, जिसके पहिए ऊंचे होते थे तथा फुर्तीले घोड़ों की एक जोड़ी जुती रहती थी, महिलाओं को ले जाना शताब्दी के अन्तिम भाग में एक फैशनेबल मनोरंजन था। लम्बी यात्राओं के लिए यात्रा गाड़ियों तथा अश्वा-

रोही कोचवानों को किराये पर लेना एक साधारण चलन था। ऐसा विशेषकर मुख्य मार्गों पर होता था क्योंकि उन पर स्थित सरायों के थके हुए घोड़ों के बदले में अन्य घोड़ों की मिलने की नियमित व्यवस्था थी। अतीत के किसी युग की अपेक्षा अब सड़कों पर अधिक भीड़-भाड़ रहती थी क्योंकि जब गाड़ियों की संख्या अधिक हो गई थी तब घोड़ों पर सवारी करने वालों की संख्या में कोई कमी नहीं हुई थी। डा. जॉन्सन के काल में, अधिकतर उन्नत यातायात के कारण, सामाजिक, व्यापारिक, और बौद्धिक आदान-प्रदान की मात्रा उस काल की उच्च सभ्यता का कारण एवं विशेषता दोनों ही थी।[1]

वास्तव में, सभी वर्गों के अंग्रेजों में अपने अपने साधनों के अनुसार यात्रा करने की प्रबल इच्छा जागृत हो गई थी। सबसे धनी लोग फ्रांस और इटली का भव्य भ्रमण करते थे। छः मास अथवा दो वर्ष तक कुछ समय सरायों में ठहर कर और शेष समय विदेशी उच्चकुलों के घरों में अतिथि रहकर वे अपने ग्रामीण आवासों को वापिस लौट आते थे और अपने साथ बहुत सी मूर्तियां और चित्र ले आते थे, जिन्हें या तो वे अपनी सुरुचि से चुनते थे अथवा उनकी अनभिज्ञता के कारण जिनको उनके मत्थे मढ़ दिया जाता था। अंग्रेज सामन्तों के प्रासादों की दीवारों पर पुराने प्रख्यात सागरपार के कलाकारों के प्रामाणिक अथवा नकली चित्रों का जमघट रहता था। उनके साथ स्वदेश के रेनल्ड्स, रोसानी तथा गेन्सवारों जैसे कलाकारों द्वारा प्रचुरता से निर्मित चित्र भी लटकाये रहते थे। योरोप में पर्यटकों की यात्राओं में अंग्रेज संभ्रान्त जनों का एकाधिकार सा था। विदेशी सरायों के मालिक इन संभ्रान्तजनों को 'मिलाई' (मेरे सरकार) के सम्मानसूचक पद से सम्बोधित करते थे। इन्हीं पर्यटकों की आवश्यकताओं से कैले से लेकर नेपल्स तक के नगरों की सरायों का स्तर निश्चित होता था। १७८५ में गिबन को बताया गया था कि चालीस हजार अंग्रेज, स्वामी और उनके सेवक मिलाकर, उस समय यूरोप के महाद्वीप में या तो पर्यटक थे अथवा निवासी हो गए थे।

इंगलैंड के भीतर सड़कों में सुधार के कारण यात्री सुदूरवर्ती स्थानों को चले जाते थे। १७८८ में विल्बरफोर्स ने लिखा था, "टेम्स के किनारों पर दर्शकों की शायद ही इतनी भीड़-भाड़ होती हो जितनी कि विण्डरमेर के किनारों पर होने लगी थी। उस समय के पूर्व वहां गाड़ियों के अलावा अन्य कोई निकट के पहाड़ों पर भी नहीं

---

[1] १७७४ में पादरी वुडफोर्ड ने आक्सफोर्ड से सोमरसेट स्थित कैसिल कैरी तक एक घोड़ा-गाड़ी में जाने के लिए ४ डालर ८ शिलिंग चुकाए थे। इस १०० मील के फासले को उसने एक दिन में ही पूरा किया था। इससे उस समय चलने वाली घोड़ा-गाड़ी की रफ्तार और भारी किराए पर प्रकाश पड़ता है।

जाता था। अच्छी सड़कों तथा गाड़ियों के कारण ब्यू नैश के काल में बाथ में दर्शकों की इतनी भीड़ हो जाती थी कि उस युग की सुविधा और प्रभूत शान शौकत के अनुकूल उस नगर की सड़कों का पुनर्निर्माण कराने का विचार किया गया। और १८०१ की प्रथम जनगणना के समय इस फैशनेबुल स्वास्थ्य केन्द्र की जनसंख्या तीस हजार पाई गई। जनसंख्या के आधार पर इंगलैंड के नगरों में इसका नवां स्थान था।

किन्तु अभी भी स्थानीय मिट्टी के अनुसार सड़कों की दशा में बड़ी भिन्नता मिलती थी। १७८९ में भी शरत्कालीन वर्षा होने पर हीयर फोर्डशायर की प्रमुख सड़कों पर मालवाही तथा सवारी गाड़ियों का निकलना असंभव हो जाता था। लगभग आधे वर्ष भर काउंटी के परिवार एक दूसरे के उहाँ केवल घोड़ों पर सवार होकर जा सकते थे। इन यात्राओं में युवा महिलाएं घोड़े पर सवार अपने भाइयों के पीछे हलकी कांठी पर बैठली थीं। अप्रैल मास समाप्त होते-होते इन सड़कों की सतह को आठ-दस घोड़ों द्वारा खींचे गये हलों से समतल किया जाता था। (गुनिंग के **संस्मरण**, १, पृ० १००)। परन्तु अधिकांश काउंटियों में मुख्य सड़कों की इतनी अविकसित दशा नहीं थी, केवल कुछ छोटी अथवा सहायक सड़कों की इतनी खराब दशा थी।

नई इंजीनियरी पद्धतियों तथा सड़कों की नई सतहों में निरन्तर परीक्षणों द्वारा टर्नपाइक ट्रस्टीगण ने अन्ततः पक्की सड़कों के निर्माण में पूर्णता प्राप्त कर ली थी। इन सड़कों पर द्रुतगामी गाड़ियां, जिनमें गाड़ियों के लिए सरायों से घोड़ों की टोलियां जुती रहती थीं, सरपट दौड़ से आठ से दस मील प्रति घंटा की रफ्तार से चलती थीं। प्रमुख सड़कों की गरिमा का यह संक्षिप्त काल वाटरलू युद्ध तथा रेलों के प्रारम्भ के बीच में पडा था। १८४० तक इंगलैंड में २२,००० मील लम्बी अच्छी सड़कें बन गई थीं जिन पर ८,००० चुंगी एकत्र करने के लिए द्वार तथा किनारे के अवरोध स्थित थे।

जैसे जैसे प्रमुख सड़कों में सुधार हुआ, माल का यातायात तथा सवारियों का आवागमन उसी अविरत गति से बढ़ा। पहले तो मालवाही गाड़ियां लद्दू घोड़ों की पूरक होती थीं किन्तु कालान्तर में उन्होंने लद्दू घोड़ों को स्थानच्युत कर दिया। सड़कों पर सबसे अधिक परिचित ध्वनि घंटियों के वजने की होती थी जो यह घोषणा करती थी कि चार घोड़े जुती हुई मालवाही गाड़ी (वैगन) आ रही हैं, घोड़ों के सरपट दौड़ने से उनके कन्धों से संगीतमय ध्वनि होती थी। सड़क की यात्रा का यह एक अलिखित नियम था कि मालवाही गाड़ियां आते ही सभी प्रकार के यात्री अथवा सवारियां सड़क के किनारे आकर उन्हें आगे निकल जाने देते थे।

औद्योगिक परिवर्तन लाने में सड़कों के सुधार की तुलना में 'देश के भीतर जल यातायात' में सुधार कम महत्वपूर्ण नहीं था। अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में यातायात-योग्य नदियों को गहरा करने तथा उनमें यथावश्यक जलबंध बनाने में बहुत

सक्रियता देखी गई थी। शताब्दी के उत्तरार्ध में कृत्रिम जलमार्गों के निर्माण में उतनी ही सक्रियता थी। ब्रिजवाटर के ड्यूक को "आन्तरिक यातायात का पिता" कहा जाता है। किन्तु उसे अंग्रेजी नहरों का पिता कहना अधिक सही होगा क्योंकि उससे पूर्व भी नदियों के स्वाभाविक मार्गों पर यातायात तो सदा ही होता था। यार्क, नार्विच तथा अन्य अनेक केन्द्र, जहाँ देश के भीतरी भाग का व्यापार होता था, सदैव ही जल-यातायात पर निर्भर रहते थे। अनेक पीयरों के समान ब्रिजवाटर भी कोयले का स्वामी था। वह अपने कर्त्तव्यों और अवसरों का पालन बड़ी गंभीरता से करता था। अपनी वोर्सले की खानों को मैनचेस्टर से नहर द्वारा जोड़ने के लिए इस महान अभिज़ात पुरुष ने १७५९ में अपने संसदीय प्रभाव तथा अपनी पूंजी से अपने अर्ध-निरक्षर इंजीनियर ब्रिण्डले की प्रतिमा को सहयोग दिया। इस प्रख्यात साझेदारी, जो योरोप महाद्वीप के अभिजातवर्ग की तुलना में अंग्रेज अभिजातवर्ग की प्रमुख विशेषता थी, ने एक ऐसे आन्दोलन का सूत्रपात किया जिसने अगले पचास वर्षो में सारे इंगलैंड में जलमार्गो का जाल बिछा दिया। उन्नत इंजीनियरी प्रवधियों के कारण पेन्नाइन तथा काट्सवोल्ड जैसी पहाड़ियों में भी सुरंगे वनाई जा सकीं तथा नदियों की घाटियों के पार ऊंचाइयों पर जलमार्ग (नालियां) वनाये जा सके।

नहर आन्दोलन दक्षिणी लंकाशायर तथा पश्चिमी मिडलैंड्स के तीव्र विकासशील औद्योगिक क्षेत्रों में प्रारंभ हुआ और शीघ्र ही सम्पूर्ण देश में फैल गया। १८६० से दस वर्ष के भीतर बिंडले ने अपने ड्यूक की सहायता से मैनचेस्टर लिवरपूल नहर का निर्माण कर एक महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग कार्य कर डाला था। बाद वाले दशक में उन्होंने ग्राण्ड जंकशन कैनाल वनाकर मर्सी से ट्रेण्ट को जोड़ दिया था। ग्रामीण क्षेत्रों के जिन भागों में इस नहर का उपयोग होता था वहां पर इसके प्रभावों का वर्णन १७८२ में टॉम्स पेनैण्ट ने इस प्रकार किया था:

"ग्रामीण घर अब दयनीय छप्पर से अधढंका नहीं था, उस पर वेल्स अथवा कम्वरलैंड की सुदूरवर्ती पहाड़ियों से लायी गई पत्थर की पट्टियां अच्छी तरह से ढकी हुई थीं। जो खेत पहले ऊसर पड़े रहते थे उनका पानी निकालकर तथा उनमें खाद डालकर सिंचाई-कर रहित नहरों से उन्हें सम्बन्द्ध कर दिया जाता था। वे सुन्दर हरियाली से लहराया करते थे। जिन स्थानों पर पहले कोयले का उपयोग शायद ही कभी होता था वहां अब कोयला प्रचुर मात्रा में उचित दरों पर मिलता था। इससे भी अधिक सार्वजनिक उपयोगिता की एक अन्य बात हो गई थी। अनाज के एका-धिकारियों को अब अपने कुख्यात व्यापार की मनाही थी। क्योंकि अब लिवरपूल, ब्रिस्टल तथा हल के बीच संचार संबंध स्थापित हो गया था तथा नहर अनाज का प्रचुर उत्पादन करने वाले क्षेत्रों से निकलती थी, इसलिए अब अनाज लाने ले जाने की सुविधा मिल गई थी (जो कि अतीत के युगों में अज्ञात थी)।"

नहर पद्धति तथा सड़कों ने द्वीप के भीतर (वस्तुओं) के विनिमय को प्रोत्साहित करने से भी अधिक कार्य किया। उन्होंने सागर-पार के व्यापार की वृद्धि में तीव्रता ला दी। योरुप, अमरीका, एशिया तथा अफ्रीका से लाया गया माल अब अधिक परिमाणों में सम्पूर्ण इंगलैंड के भीतर वितरित किया जा सकता था। इसी प्रकार कोयले तथा निर्मित वस्तुओं के बढ़े हुए निर्यात से विदेशी माल को अधिक आसानी से खरीदा जा सकता था। अब काले प्रदेश तथा पेन्नाइन पहाड़ियों के भारी से भारी खनिज पदार्थों तथा कपड़े के उत्पादनों तथा स्टैफोर्ड शायर पाटरी के कोमल वर्तनों को अब सुविधा पूर्वक जलमार्ग से लन्डन, लिवरपूल, ब्रिस्टल तथा हल के बन्दरगाहों को ले जाया जा सकता था जहां से वे विदेशों को भेजे जाते थे।

इस ढंग से ब्रिटिश व्यापार का सम्पूर्ण स्वभाव और क्षेत्र केवल धनी लोगों की विलासिताओं की पूर्ति के स्थान पर सभी वर्ग के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला आधुनिक रूप ग्रहण कर रहे थे। मध्ययुगों में, इंगलैंड का समुद्र पार व्यापार कुलीनों, नाइटों तथा बड़े व्यापारियों के लिए मदिरा, मसालों, रेशमी कपड़ों तथा अन्य फैशन की वस्तुओं की खोज मात्र था। इससे किसानों की जनसंख्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। स्टुअर्ट के काल में यह प्रधान तथा अपरिवर्तित रहा यद्यपि अधिक भारी जहाजों के निर्माण से दोनों निर्यात तथा आयात की मात्राएं बढ़ गई थीं तथा उस युग के बृहत्तर एवं अधिक धनी मध्यम वर्ग के लोगों में विलासिता की वस्तुओं का प्रयोग बढ़ रहा था। किन्तु यह केवल अठारहवीं शताब्दी में संभव हो सका कि विदेशों से कपड़ा चाय तथा काफी का आयात देश की निर्धन जनता के उपयोग के लिए हुआ।

अनेक उदाहरणों में से केवल एक यहां देना पर्याप्त होगा। चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में हजारों सम्पन्न लन्डन वासी ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा लाए गए नए फैशनेबल पेयों का आनन्द लेने काफी घरों में जाते थे। किन्तु जार्ज तृतीय के शासन-काल के प्रारंभ में नगरों तथा देहातों में सभी वर्ग अपने अपने घरों में चाय पीते थे। अपनी कृति "फार्मर्स लेटर्स" (१७६७) में आर्थर यंग ने खेद प्रकट करते हुए लिखा था कि "चाय तथा चीनी पर इतने विशाल धन का अपव्यय हो रहा है जो चालीस लाख अतिरिक्त लोगों को रोटी देने के लिए पर्याप्त होगा।" चाय पीना एक राष्ट्रीय आदत बन गई थी, यह मदिराओं तथा बीयर के उपभोग का प्रतिस्पर्धी हो गई थी। चाय पीकर मनुष्य प्रफुल्लित होता था किन्तु उसे मादकता नहीं आती थी। इसी कारण चाय मजदूरों के घरों तथा कवि कॉवपर के प्रासाद में सर्वत्र समान महत्वपूर्ण मानी जाती थी। १७९७ में सर फ्रेडेरिक ईडन ने लिखा था—

"यदि कोई व्यक्ति मिडिलसेक्स और सर्रे के साधारण घरों में भोजन के समय जाने का कष्ट करे तो उसे ज्ञात होगा कि निर्धन परिवारों में चाय केवल प्रातः और सायं एक साधारण पेय नहीं है वरन् भोजन के समय यह बड़ी मात्रा में पी जाती है।"

निर्धन लोग चाय की कड़ुआहट मिटाने के लिए अधिक परिमाण में चीनी का प्रयोग करते थे। ब्रिटिश पश्चिमी हिन्द द्वीप समूह से आयात की हुई चीनी अब प्रत्येक भोजन की मेज पर दिखती थी जबकि शेक्सपीयर के काल में भूमध्यसागर के बन्दरगाहों से बहुत थोड़ी मात्रा में आयात की हुई चीनी केवल विलासिता की वस्तु थी।[1]

जब तक नवयुवक पिट ने उच्च सीमा शुल्कों में कमी नहीं की तब तक बहुत तस्कर व्यापार होता था। १७८४ में पिट ने गणना की थी कि इंगलैंड में १,३०,००,००० पौंड की खपत होती थी जिसमें से केवल ५५ लाख पौंड पर सीमा शुल्क अदा किया जाता था। (लेकी, इंगलैंड (संपादित) १९४२, ५, पृ० २६६)। तस्करी का लोगों के जीवन में वही स्थान था जो जंगल या शिकार की चोरी का, उन सभी को समान निर्दोष माना जाता था। पार्सन वुडफोर्ड नामक एक वास्तव में अच्छे और सम्मानित व्यक्ति ने २९ मार्च सन् १७७७ को लिखा था : "तस्कर एण्ड्रयूज आज रात को लगभग ११ बजे छः पौंड वजन का हाईसन चाय का एक थैला मेरे पास ले आया। हम लोग सोने वाले ही थे कि उसने मकान की खिड़की के पास सीटी बजाई। इससे हम थोड़ा सा डर गए थे। मैंने उसे कुछ जेनेवा निर्मित शराब दी और १०½ शिलिंग प्रति पौंड की दर से उसे चाय का मूल्य दे दिया।" इस द्वीप के रेक्टर निवासों के निवासी 'तस्कर एंड्रयूज' के बारे में इस प्रकार सोचा और बात किया करते थे जैसे कोई 'एंड्रयूज पंसारी' की बात कर रहा हो।

सभी घरों में चाय, चीनी और तम्बाकू का आना (चाहे चुंगी कर में चुंगी चुकाकर आती हो अथवा तस्कर के गुप्त स्थानों से) तथा मुख्यतया विदेशों से लकड़ी का आयात होना[2] हमको उस समय की याद दिलाते हैं जब आधुनिक इंगलैंड की ऐतिहासिक सीमायें प्रारंभ होती हैं। इंगलैंड का एक समुदाय था जो समुद्र पार महान् साम्राज्य के एक केन्द्र के रूप में विद्यमान था तथा जहां सभी वर्गों के सामान्य उपभोग के लिए सामान की पूर्ति एक महानतर समुद्र-पार व्यापार से होती थी। जिस समय

---

[1] सन् १७०० में इंगलैंड में केवल १० हजार टन चीनी की खपत होती थी, यद्यपि उस काल तक इंगलैंड के अपने चीनी उत्पादक उपनिवेश बन चुके थे। कहने का तात्पर्य यह है कि इंगलैंड की जनसंख्या दूनी हो गई थी किन्तु १८वीं शताब्दी में प्रत्येक अंग्रेज द्वारा खाई जाने वाली चीनी की मात्रा औसतन ७॥ गुणा हो गई थी। श्रमिक वर्ग की चाय पीने की आदत के लिए पढ़िए जे. सी. ड्रमंड, दि इंगलिशमैन्स फूड, पृष्ठ २४२-२४४।

[2] १७७८ और १८०२ के बीच इंगलैंड में उत्तरी योरुप से पहाड़ी लकड़ी के लगभग दो लाख बोझ आयात किए जाते थे। (क्लैफम, १, पृष्ठ २३७)।

जार्ज तृतीय सिंहासन पर बैठा उसके पहले ही इंगलैंड के कुछ प्रमुख घरेलू उद्योग, जैसे विशेषकर लंकाशायर का तीव्रता से विस्तारशील कपड़े का निर्माण, सुदूर देशों से आयात की हुई कच्ची सामग्री पर पूर्णतया निर्भर था। विक्टोरिया के युग में तो समुद्र के पार के देशों से लाई गई वस्तुओं की सूची में रोटी तथा मांस को भी सम्मिलित कर लिया गया था। इससे छोटे से द्वीप की सम्पदा और जनसंख्या में विस्तार पर लग सकने वाली अन्तिम सीमा भी हट गई किन्तु युद्ध के समय इसके भाग्य के लिए एक खतरा उत्पन्न कर दिया।

आइए, अब अठारहवीं शताब्दी के मध्य को लौट चलें। उस समय लंडन के बन्दरगाह पर संसार के प्रत्येक भाग से जहाज आते थे, किन्तु इसे इंगलैंड के ईस्ट इण्डिया व्यापार का एकाधिकार प्राप्त था। टेम्स नदी पर चीन और भारत से शोरा, मसाले और रेशम के ढेर के ढेर आया करते थे किन्तु चाय, पोर्सलीन के बर्तन तथा बुनी रूई की वस्तुएं उन सुदूर देशों से इतने परिमाण में आयात किए जाते थे कि जिससे सर्वसाधारण को वे उपलब्ध हो सकें। इन वस्तुओं के आयात से नई मांगें उत्पन्न हुई तथा उनके लिए लोकप्रिय मांगें इतनी अधिक हो गई कि देश के निर्माताओं को रूई की वस्तुएँ तथा चीनी के बर्तन बनाने पड़े।

अमरीका से व्यापार लन्डन, ब्रिस्टल तथा लिवरपूल के बन्दरगाहों से होता था। मध्ययुगों में लिवरपूल चेस्टर बन्दरगाह का सहायक मात्र था, किन्तु जैसे जैसे ही नदी का मुहाना रेत से भर गया प्राचीन रोमन नगर का समुद्री व्यापार धीरे धीरे समाप्त हो गया और मर्सी नदी के मुहाने पर स्थित उन्नतस्थित कस्बे ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया। १८०१ की जनगणना में लिवरपूल की आबादी ७८,००० थी जो अपने पड़ोसी मैनचेस्टर सैलफोर्ड की ८४,००० की जनसंख्या को छोड़कर सभी प्रान्तीय नगरों से बड़ा था।

अमरीकी व्यापार की जिस शाखा का विशेष सम्बन्ध लिवरपूल से था वह दास-व्यापार था, जिसका लंकाशायर में कपड़े के निर्माण से घनिष्ट सम्बन्ध था। अट्लांटिक सागर के पार जाने वाले दासों में आधे से अधिक अंग्रेजी जहाजों से ले जाए जाते थे, यद्यपि इस वीभत्स व्यापार में फ्रांसीसी, डच तथा पुर्तगाली प्रतिस्पर्धी भी भाग लेते थे। १७७१ में लन्डन के बन्दरगाह से दासों से लदे हुए ५८ जहाज गए, २३ जहाज ब्रिस्टल से तथा १०७ जहाज लिवरपूल से। उस वर्ष उन्होंने ५०,००० दासों को ढोया।

सर्व प्रथम दास-व्यापार के विरुद्ध नैतिक आधार पर डा. जॉन्सन ने आपत्ति की। होरेस वालपोल दूसरा व्यक्ति था। १७५० में डा. जॉन्सन ने मान को लिखा था—

"इस पखवारे में हम अफ्रीकन कम्पनी के मसले पर विचार करते रहे हैं।" हम "से तात्पर्य ब्रिटिश सिनेट से है जो स्वाधीनता का मन्दिर तथा प्रोटेस्टेण्ट ईसाई मत का

गढ़ कहा जाता है। पखवारे में हम नीग्रो लोगों की बिक्री के उस घृणित व्यापार को अधिक प्रभावशाली बनाने की रीतियों पर विचार करते रहे हैं। हमें यह ज्ञात हुआ कि इन अभागों में से प्रत्येक वर्ष ४६,००० केवल हमारे बागानों को बेचे जाते हैं। यह सुनकर हमारा रक्त उबलने लगता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने उसके लिए अमरीकी महाद्वीप के पक्ष में अपना मत दिया।"

लिवरपूल से दास ले जाने वाले जहाज लंकाशायर से बने हुए सूती माल को अफ्रीका ले जाते थे और बदले में वहां से नीग्रो दासों को ले आते थे। पुनः इन दासों को अतलांतिक सागर पार ले जाते थे और वहां से बदले में कच्ची रुई, तम्बाकू और चीनी का लदान कर लाते थे। इण्डियन द्वीपों तथा अमरीका के भीतरी प्रदेशों के बागान मालिक लंकाशायर में निर्मित सूती वस्तुएं अपने दासों के पहनने के लिए खरीद लेते थे। अफ्रीका से नीग्रो मजदूरों के आयात से वे महान लंकाशायर-उद्योग को कच्चा माल देने में समर्थ हो पाते थे। पापिष्ठ व्यापार तथा निष्पाप निर्माण अनेक ढंगों से परस्पर सहायक थे।

सूती वस्तुओं का प्रयोग इंगलैंड के सभी वर्ग करते थे। ये इस समय तक अच्छे अंग्रेजी कपड़े के भयानक प्रतिद्वन्द्वी हो चुके थे। १७८२ की एक पुस्तिका में हमें लिखा मिला है : "स्त्रियां शायद ही सूती कपड़ों, छींटों, मलमल अथवा रेशम के अतिरिक्त अन्य कुछ पहनती हों। उन्होंने ऊनी कपड़ों का वैसे ही परित्याग कर दिया जैसे हम पुराने पंचांगों (जन्त्रियों) का कर देते हैं। हमारे बिस्तरों में कम्बलों के अतिरिक्त अन्य कोई ऊनी कपड़ा नहीं होता है। और यदि हम अपने शरीर को गर्म रखने के लिए कोई अन्य वस्तु पा जायें तो कम्बलों को भी फेंक देंगे।" शताब्दी के मध्य में रुई की कच्ची सामग्री में विशाल वृद्धि से कई हजार पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों को अपने घरों में ही काम मिल गया। रुई के मजदूरों का घर एक छोटा सा कारखाना होता था। स्त्रियां तथा बच्चे रूई को चुनते थे और पुरुष उससे कपड़े बुनते थे। यह घरेलू पद्धति अनेक परिवारों तथा अनेक अकेली स्त्रियों के लिए आजीविका और स्वाधीनता का स्रोत थी, नहीं तो वे दरिद्र हो सकते थे। किन्तु इसे जीवन का आदर्श ढंग नहीं कहा जा सकता था। क्योंकि जब रुई के लिए घर एक कारखाना हो जाता था तो न तो यह स्वच्छ रह सकता था और न सुखदायक। इस पद्धति में गृहिणी निर्मात्री होती थी अतः वह अपने समय का थोड़ा तथा अनियमित अंश ही भोजन पकाने तथा गृहस्थी के अन्य कर्त्तव्यों के लिए व्यय कर सकती थी।[1]

जैसे जैसे शताब्दी बीतती गई, आर्कराइट के आविष्कार जैसे आविष्कारों से धीरे धीरे अधिकाधिक कार्य नियमित सूती मिलों में होने लगा। ये मिल पहाड़ी प्रदेश में बहते हुए पानी के निकट स्थापित किए गए थे। जब तक जल शक्ति का स्थान भाप

[1] आइ. वी. पिंचबेक, **वीमेन वर्कर्स एण्ड दि इंडस्ट्रियल रिवोल्युशन,** अध्याय ६।

ने नहीं ले लिया तब तक नगरों में सूत उद्योग का संकेन्द्रण नहीं हो पाया था। १८०१ की जनगणना से विदित होता है कि गत एक सौ वर्ष में लंकाशायर काउंटी की जनसंख्या १,६०,००० से बढ़कर ६,९५,००० हो गई थी और यह काउंटी मिडिलसेक्स के वाद सभी काउंटियों में सबसे धनी और अधिक आबादी वाली थी। इस परिवर्तन का कारण रुई का काम घरों में अथवा पेन्नाइन नदियों के किनारे पर मिलों में होना, लिवरपूल का समुद्रपार व्यापार तथा मैनचेस्टर का व्यापार तथा विभिन्न प्रकार के कपड़ों का निर्माण कहा जा सकता है।

सूती उद्योग पहले से ही बड़ा था किन्तु ऊनी उद्योग अभी भी सर्वाधिक उत्कर्ष पर था और सब मिलाकर सबसे अधिक फैला हुआ राष्ट्रीय उद्योग था। संसद को अब भी यह प्रिय था। कच्ची ऊन के निर्यात तथा ऊनी कपड़े के आयात से इस उद्योग को संरक्षण देने को प्रोत्साहित करने के लिए कानूनों की एक विस्तृत संहिता लागू थी। हारग्रीव्स के 'कताई के क्रेन (Spining Cane) (१७६७) तथा क्राम्पटन के 'खच्चर' (Mule) (१७७५) के आविष्कारों के पश्चात् ऊन की कताई धीरे धीरे घरों के स्थान पर फैक्टरी में होने लगी तथा यह काम गांवों से हटकर नगरों को चला गया। परन्तु यह प्रक्रिया उन्नीसवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण नहीं हो पाई। इतने पर भी, बुनाई की अधिक कुशल कला अभी भी फार्मों अथवा घरों में होती थी। जहां प्रत्येक में एक या अधिक कर्घे होते थे। इस समय तक समस्त इंगलैंड के सैंकड़ों कृषि प्रधान ग्रामों में ऊनी कपड़े की बुनाई अतिरिक्त सम्पदा का स्रोत थी। लीड्स, हैलीफैक्स, नार्विच और एक्सेटर जैसे नगरों के व्यापारी ऊनी माल को एकत्र करके वेचते थे। एक बाद के युग में भाप-शक्ति के आविष्कार से बुनकर भी कत्तियों का अनुकरण कर घर छोड़कर फैक्टरी में काम करने चले गए। यह प्रक्रिया गांव से छोटे कस्बे तथा वहां से बड़े नगर में जाकर समाप्त हुई। इस क्रमिक परिवर्तन की कई पीढ़ियों तक घरेलू तथा फैक्टरी पद्धतियां कपड़े के उद्योगों में साथ-साथ विद्यमान रहीं।

ब्रिटिश वेस्ट इंडियन द्वीप तथा इंगलैंड के दक्षिणी उपनिवेश यहां रुई, चीनी और तम्बाकू भेजते थे। इस युग में मिट्टी के बने लम्बे हुक्के प्रचलित थे। तब अपेक्षतया सहसा ही जार्ज तृतीय के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में उच्च वर्गों में तम्बाकू पीने का रिवाज समाप्त हो गया। डा. जॉन्सन ने १७७३ में कहा था कि "तम्बाकू पीना समाप्त हो गया है" (वॉस्वेल, टूअर टू दि हेब्राइड्स, अगस्त १९)। और अस्सी वर्ष तक तम्बाकू पीने का पुनः प्रचलन नहीं हुआ। केवल सेवा के अधिकारियों में हुक्कों, तथा सिगार पीने का प्रचलन था। यह जीवन के प्रति उनके दुस्साहसिक रुख का प्रतीक था। किन्तु क्रीमियन युद्ध से पूर्व अन्य भद्रजनों में तम्बाकू पीना एक हेय काम माना जाता था। इस युद्ध से पुनः तम्बाकू पीना और दाढ़ी रखना फैशन में आ गए। दोनों ही क्रीमियन युद्ध के विजयी योद्धाओं के अनुकरण थे।

परन्तु जनसाधारण फैशन की उश्रृंखलताओं से ग्रस्त नहीं थे। ज्यों ज्यों जार्ज तृतीय का शासनकाल बीतता गया, तम्बाकू का राष्ट्रीय उपभोग बढ़ता गया। यही स्थिति सूती कपड़ों के पहिनने तथा चीनी के प्रयोग की थी। इस कारण वेस्ट इण्यिन द्वीपों को अंग्रेजी राज्य का सर्वाधिक मूल्यवान हीरा माना जाता था। 'अमरीकी धनकुबेरों' के समान उस काल में इंगलैंड में क्रेओल्स का स्थान था जो वेस्ट इंडियन दास बागानों का ब्रिटिश स्वामी था, जिनमें भारी अंग्रेजी पूंजी का विनियोजन हुआ था। समुद्रपार के देशों में जिस दूसरे धनी वर्ग की चर्चा एवं आलोचना की जाती थी वह 'नवाब' थे। इस नाम से इंगलैंड वापिस आए हुए वे एंग्लो-इंडियन लोग पुकारे जाते थे जिन्होंने क्लाइव की नई विजयों का सिद्धान्तशून्य लोभ से परिशोषण किया था, जिस पर भारत के अंग्रेजी शासकों की पीढ़ी ने रोक लगा दी थी। 'नवाबों' ने संसद की सदस्यता के मूल्य को बढ़ा दिया था। अन्यथा वे जिस प्राचीन-स्थापित कुलीनतंत्रीय समाज में अनचाहे ही अपने अपरिचित (अशिष्ट) तरीको से घुस आए थे वह उसके विरुद्ध आपत्ति करता था। अमरीकी मुख्यभूमि के उत्तरी उपनिवेश अंग्रेजी कपड़ा तथा अन्य निर्मित वस्तुएं लेते थे और बदले में लकड़ी तथा कच्चा लोहा भेजते थे। लकड़ी, लोहा तथा जहाज निर्माण की वस्तुएँ स्कैण्डीनेविया तथा बाल्टिक से भी लेनी पड़ती थीं क्योंकि अठारहवीं शताब्दी का इंगलैंड अपने प्राकृतिक वनों को समाप्त कर चुका था तथा यहां जहाजों तथा मकानों के निर्माण और ईंधन के लिए लकड़ी की मात्रा बहुत कम उपलब्ध होती थी। घरेलू प्रयोजनों तथा बहुत से कारखानों में ईंधन की कमी कोयले से पूरी की जाती थी किन्तु लोहा को गलाने में बृहद मात्रा में इसका प्रयोग होना अभी प्रारंभ ही हुआ था। अतएव, इंगलैंड की कच्चे लोहे की सम्पदा की क्षमता होते हुए भी अधिक लोहा उन देशों से आयात किया जाता था जहां अब भी लोहा गलाने के लिए विशाल वनों की लकड़ी ईंधन के रूप में इस्तेमाल होती थी। अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड में वस्तु निर्माण की प्रगति तीव्र होते हुए भी उस भाग्यशाली युग में द्वीप की आवश्यक सुविधाओं को कोई हानि नहीं पहुंची। लन्डन अब तक एक मात्र 'महान् नगर' था। १८०२ में वर्ड्सवर्थ सोचता था कि वेस्टमिन्स्टर ब्रिज से लन्डन के दृश्य से अधिक सुन्दर संसार में अन्य कोई वस्तु नहीं है। भूमि के सौंदर्य में अभिवृद्धि भवनों से होती थी तथा समुद्र के सौंदर्य की अभिवृद्धि जहाजों से। इस समय तक 'कोयला एवं लोहा' युग नहीं प्रारंभ हुआ था।

जोसियाह वेजवुड (१७३०-१७९५) इस युग की प्रवृत्तियों का एक प्रतिनिधि था, जिसमें कि यद्यपि उद्योग विशाल मात्रा उत्पादन की ओर बढ़ रहा था तो भी सुरुचि एवं कला से इसका बिलगाव नहीं हुआ था। वह अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड के उत्कृष्ट बुर्जुआ जीवन का एक आदर्श प्रकार था। अपने वाणिज्य बृहत् आधार पर विकसित करते हुए भी मध्यवर्गीय मालिक अपने कर्मचारियों से निकट व्यक्तिगत सम्पर्क बनाये रखते थे। उनमें से अनेक उस युग के सर्वोत्तम सांस्कृतिक एवं कलात्मक

शासन के बाद से लेकर आगे तक डर्बी परिवार की क्रमागत पीढ़ियां व्यावहारिक व्यापार-परीक्षण से लकड़ी के कोयले के स्थान पर पत्थर के कच्चे कोयले से लोहा गलाने के प्रयोग का विकास कर रही थीं। १७७९ में अब्राहम डर्बी की तीसरी पीढ़ी ने संसार के सर्वप्रथम लौहपुल का निर्माण पूरा कर लिया जो श्रापशायर स्थित कोल-ब्रुकडेल में पारिवारिक कारखाने के निकट सेवेर्न नदी के ऊपर 'लोहे के पुल' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके पश्चात् लोहे के व्यापार का जो महान विकास हुआ और विशेषकर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जिसकी गति निरन्तर बढ़ी थी, वह मुख्यतया दक्षिणी वेल्स, दक्षिणी यार्कशायर और टिनेसाइड जैसे क्षेत्रों में, जहां लोहा तथा कोयला साथ-साथ मिलते थे, अथवा समुद्र के निकट अथवा नहर या नदी से आसानी से पहुंचे जाने वाले स्थानों में हुआ था। किन्तु कोयले तथा लोहे के युग का प्रारंभ नैपोलियन के युद्धों से पूर्व नहीं हुआ था।

१७६९ में आर्कराइट ने जल-ढाचे (Water frame) तथा जेम्स वाट ने भाप के इंजिन का पेंटेट स्वीकृत कराया। अतः सूती तथा इंजीनियरिंग उद्योग में यान्त्रिक शक्ति का जन्मकाल १७६९ है। दोनों वाट तथा आर्कराइट को देश के उद्यमशील उत्तरी भाग में यान्त्रिक विचार को उपयुक्त वातावरण मिला था। १७६० से लेकर अगले पच्चीस वर्षों में जारी किए गए पेटेंटों की संख्या पूर्वगामी डेढ़ शताब्दी भर में तत्संबंधी संख्या से अधिक थी। (सी. आर. फे., ग्रेट ब्रिटेन फ्राम एडम स्मिथ टु दि प्रेजेण्ट डे, १९२८, पृष्ठ ३०३)

अब औद्योगिक क्रान्ति का सुचारु रूप से विकास हो रहा था। शताब्दी के अन्त में इंगलैंड तथा वेल्स की जनसंख्या ९० लाख हो गई थी। उसका लगभग एक तिहाई कृषि में लगा हुआ था किन्तु ७८ प्रतिशत जनसंख्या अब भी ग्रामों में रहती थी।

सम्पूर्ण अठारहवीं शताब्दी भर इंगलैंड के आन्तरिक उद्योग तथा समुद्र पार के व्यापार की सतत वृद्धि उन उद्देश्यों के लिए धन की प्राप्ति पर आश्रित थी। और बाद के काल की अपेक्षा उस समय उसकी उपलब्धि इतनी आसान न थी। धन उधार लेने में सरकार की ओर से कड़ी प्रतिस्पर्धा होती थी। किन्तु लन्डन में मुद्रा-बाजार की प्रविधि (Technique) को सम्पूर्ण रूप से विकसित किया जा रहा था। हालैंड के पतन के पश्चात् यह नगर विश्व के वित्त को केन्द्र बन गया जहां संसार के किसी भी स्थान की अपेक्षा पूंजी सरलता से उपलब्ध हो जाती थी।

१७२० में दक्षिणी सागर के काण्ड के उद्घाटन होने के पश्चात् संयुक्त-स्कंध रीतियों को धक्का लगा था किन्तु वे उस अपमान को सहकर जीवित रहीं तथा लोगों ने भविष्य में थोड़ा अधिक बुद्धिमान बनना सीखा था। उस कुलीनतंत्रीय किन्तु वाणिज्य प्रवृत्ति वाली शताब्दी की सामाजिक संरचना के संयुक्त-स्कंध कम्पनी सराहनीय

वित्तीय क्षेत्रों में क्वेकर लोग भी शक्तिशाली हो रहे थे। नार्विच के गुर्नीज के समान उन्होंने बैंक व्यवसाय अपनाया था। उस व्यवसाय में सर्वोत्तम अंग्रेजी परम्परा की स्थापना में उनका प्रशंसनीय योगदान था। वे ईमानदार, सौम्य, शान्तिप्रिय एवं उदार लोग थे। वित्तीय जगत की शीघ्र भड़कने वाली हिंसाओं तथा दंभपूर्ण देशभक्ति की नीतियों पर उनका अक्षुब्धकारी प्रभाव था।

रूप से अनुकूल थी क्योंकि बड़े भूस्वामी घृणित 'व्यापारी' बने नगर के लोगों से समानता के स्तर पर मिल सकते थे और उससे काम काज कर सकते थे ताकि एक का राजनैतिक प्रभाव दूसरे के वाणिज्य कौशल से सहयोग कर सके। किन्तु संयुक्त स्कंध कम्पनी से भी अधिक समस्त द्वीप में प्रान्तीय बैंकों की उन्नति ने दोनों औद्योगिक एवं कृषि क्रान्तियों के लिए धन जुटाया। ये बैंक या तो विशिष्ट परिवार अथवा एक व्यक्ति की सम्पत्ति थीं अतः सदैव सुरक्षित नहीं थी किन्तु सर्वांगीण दृष्टि से विस्तारशील वाणिज्य की आवश्यकताओं की पूर्ति अपेक्षित पूंजी से कर सकती थीं।

उस समय वहां यहूदी तथा क्वैकर भी थे। दोनों ही नगर के अग्रणी पदों तथा इंगलैंड के बैंक जगत में उन्नति कर रहे थे और मूल्य के कुछ गुणों को ला रहे थे।

जिस समय पर एडवर्ड प्रथम ने यहूदियों को देश से निकाल दिया उसके तथा क्रामवेल द्वारा उन्हें पुनः प्रवेश किए जाने के समय के बीच अंग्रेजों ने अपने वित्तीय तथा वाणिज्य सम्बन्धी मामलों का स्वयं प्रबन्ध करना सीख लिया था। अतएव अब यहूदियों की प्रबलता तथा यहूदी-विरोधी प्रतिक्रिया के घटने का कोई भय न था। हैनोवर के काल तक इंगलैंड यहूदियों के मध्यम प्रवेश को आत्मसात करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो गया था। ज्योंही हालैंड की समृद्धि का पतन हुआ त्योंही बहुत से यहूदी एम्सटर्डम से लन्दन चले आये और वहां पूंजी के हिस्सों की दलाली में प्रख्यात हो गए। यहूदियों ने नगर के विकास में सहायता की।" यहूदी सर्वत्र देखा जा सकता था, वह उद्यमी और अध्यवसायी था किन्तु कलहप्रिय नहीं था। ग्राहकों का पीछा करने में उसे आत्मसम्मान का कोई ध्यान नहीं था। जिन वस्तुओं अथवा सौदों को दूसरे लोग अस्वीकार अथवा घृणा करते थे उन्हीं से वह लाभ कमा लेता था। अन्तर्राष्ट्रीय वित्त में यहूदियों का विशेष झुकाव था। वे अपने जन जातीय सम्पर्कों से राष्ट्रीय सीमाओं का अतिक्रमण कर लेते थे। और फिर भी व्यक्तिगत रूप से उनमें वह मानसिक अनासक्ति बनी रहती थी जो वित्तीय विश्लेषण के लिए अनिवार्य होती है।[१] सातवर्षीय युद्ध की अवधि में एक बैंकर की हैसियत से सैम्पसन गिडियन का नगर में महत्वपूर्ण स्थान था। आगामी पीढ़ी में गोल्डस्मिड्स का स्थान अग्रणी हो गया। १८०५ में नैथन रोथचाइल्ड ने लन्दन में यहूदियों के घरानों में सर्वाधिक विख्यात घराने की स्थापना की जिसे उसने अन्य योरुपीय देशों में उस परिवार के प्रतिष्ठानों से लाभप्रद ढंग से सम्बन्धित कर दिया था। किन्तु नगर के महान् यहूदियों के अतिरिक्त वहां एक हीन प्रकार के यहूदी महाजन भी महत्वपूर्ण हो गए थे, जिनका शिकार सर्वाधिक दरिद्र तथा अपव्ययी वर्ग के लोग होते थे और जो उचित कारण से ही उन्हें घृणा करते थे।

---

[१] सी. आर. फे., **ग्रेट ब्रिटेन फ्राम ऐडम स्मिथ टु प्रजेंट डे**, पृष्ठ १२८।

विर्त्तीय क्षेत्रों में क्वेकर लोग भी शक्तिशाली हो रहे थे। नार्विच के गुर्नीज के समान उन्होंने बैंक व्यवसाय अपनाया था। उस व्यवसाय में सर्वोत्तम अंग्रेजी परम्परा की स्थापना में उनका प्रशंसनीय योगदान था। वे ईमानदार, सौम्य, शान्तिप्रिय एवं उदार लोग थे। वित्तीय जगत की शीघ्र भड़कने वाली हिंसाओं तथा दंभपूर्ण देशभक्ति की नीतियों पर उनका अक्षुब्धकारी प्रभाव था।

अध्याय १६

डा. जॉन्सन के काल में इंगलैंड

[३]

कला और संस्कृति के अनुकूल सामाजिक दशाएं–प्राकृतिक दृश्यों से प्रेम–ग्रामीण आवास का जीवन–क्रीड़ा–भोजन–नाटक एवं संगीत–समाचार पत्र–मुद्रण एवं प्रकाशन पुस्तकालय–घरेलू नौकर

यदि कुलीनतंत्रीय नेतृत्व के अन्तर्गत अठारहवीं शताब्दी का इंगलैंड कला और लालित्य का देश था तो उसमें उसकी आर्थिक एवं सामाजिक संरचना सहायक थी। अभी तक विशाल मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन करने वाले कारखानों का विकास नहीं हो पाया था जिससे कलानिपुणता एवं सुरुचि का नाश होता और सेवायोजकों तथा उनके कर्मचारियों के बीच कठोर विभाजन होता। मजदूरी से आजीविका चलाने वालों में एक बड़ा अनुपात उत्कृष्ट दस्तकारों का था जो बहुधा छोटे सेवायोजक तथा दुकानदार के समान सुशिक्षित, सम्पन्न और सामाजिक रूप से सम्मानित लोग थे।

इन सुखद दशाओं में कुशल दस्तकार इतनी सुन्दर रूप-रचना एवं कौशल से परिपूर्ण वस्तुओं का साधारण बाजारों के लिए उत्पादन करते थे कि आज भी कला-प्रेमी एवं संग्रहकर्ता उन्हें मूल्यवान मानते हैं। इनमें सजावट तथा उपयोग की अनेक वस्तुएं थी, जैसे चीनी, कांच तथा अन्य प्रकार की वस्तुएं, चांदी की तस्तरी, सुन्दर मुद्रित एवं जिल्दबंधी पुस्तकें, ड्राइंग रूम की हलकी कोटि की कुर्सियां तथा अलमारियां। बड़े आकार की साधारण सी घड़ियां, जो उस समय ग्रामीण घरों के रसोई घर में समय जानने के लिए प्रयोग में आती थीं, वे भी बनावट में बड़ी सरल तथा प्रभावशाली होती थीं। वे वस्तुत: अगणित छोटे-छोटे निर्माताओं द्वारा व्यक्तिगत भिन्नताओं सहित अपनाई गई एक परम्परा का परिणाम थीं।

इस काल की 'जार्जियन' नाम से विख्यात सरल अंग्रेजी शैली में वास्तुकला सुरक्षित थी। उन दिनों नगरों अथवा गांवों में निर्मित सारी इमारतें, नागरिक भवनों तथा ग्रामीण प्रासादों से लेकर खेतों, कुटीरों तथा बागों में प्रयुक्त यंत्रों के घरों तक, देखने में रमणीय लगते थे क्योंकि सामान्य गृह-निर्माता भी सम्पूर्ण इमारतों के सम्बन्ध में द्वारों तथा खिड़कियों को लगाने में अनुपात के नियमों

को समझते थे। गिब्स की लघु पुस्तिकाओं में सम्मिलित उनके निर्देशन के लिए अनुपात के नियमों का पालन करके व सरल लोग एक ऐसे रहस्य को अपनाये रहे जो तदनन्तर विक्टोरिया के युग के आडम्बरपूर्ण वास्तुकलाविदों में लुप्त हो गया था। उन्होंने सरल अंग्रेजी 'जार्जियन' शैली को त्याग दिया था और उसके स्थान पर सैकड़ों विदेशी कल्पनाओं, यूनानी, मध्ययुगीन अथवा किसी को भी, का अनुसरण किया। वे लोग अपने कार्य सम्बन्धी आवश्यक के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु में पुस्तकीय-ज्ञान का अनुगमन करते थे।

अठारहवीं शताब्दी में कला साधारण जीवन एवं व्यापार का एक भाग थी। होगार्थ, गेन्सबारो, रेनोल्डस्, रोमनी तथा जोफैनी के चित्र, लघु छबिचित्रों का सम्प्रदाय, जिसकी चरम परिणति कोस्वे की कला में हुई थी, वर्ट्‌ तथा वूल्लेट की नक्काशी-कला, रोविलैक की आवक्ष प्रतिमाएं तथा पूर्ण प्रतिमाएं, आदम वन्धुओं का फर्नीचर तथा सजावटी वस्तुएं—ये सभी अपने आस-पास की परिस्थितियों के विरोध स्वरूप प्रतिभा का आकस्मिक उद्‌गार मात्र न थीं। वे उस युग की विशिष्ट प्रकृति का स्वाभाविक परिणाम थीं तथा विद्यमान मांग तथा पूर्ति की प्रक्रिया का भाग थीं। यही बात ग्रे, गोल्डस्मिथ, कौपर, जान्सन, बॉस्वेल तथा वर्क के साहित्य-जगत के विषय में कही जा सकती है। वह अपनी शान्ति, उद्देश्य की स्थिर एकता और विचार के दृष्टिकोण से एक प्रतिष्ठित युग था जो सन्तापित (प्रकुपित) विक्टोरिया युग से भिन्न था जिसमें अधिकांश महान पुरुष जैसे कार्लाइल, रस्किन, मैथ्यू अर्नोल्ड, रैफल के अनुयाइयों के पूर्ववर्ती, विलियम मारिस, व्हिस्लर, ब्राउनिंग और मेरेडिथ अपने काल के भ्रष्ट आदर्शों के विरुद्ध विद्रोह की स्थिनि में थे अथवा जंगली योद्धाओं के समान प्रत्येक जनसाधारण पर अपनी विचित्र प्रतिभा थोपने के लिए लड़ता रहता था। फिर भी यह सत्य है कि अठारहवीं शताब्दी ने एक महानतम विद्रोही को जन्म दिया था : विलियम ब्लेक का जन्म सन् १७५७ में हुआ था।

आत्मा का संगीत स्वतः जात है :

सामाजिक इतिहासकार यह व्याख्या करने का दंभ नहीं कर सकता कि एक विशिष्ट अवधि में कला अथवा साहित्य की क्यों उन्नति होती है अथवा ये क्यों एक विशिष्ट मार्ग ग्रहण करते हैं। किन्तु वह डा० जान्सन के काल के इंगलैंड में ऐसी सामान्य परिस्थितियों की ओर संकेत कर सकता है जो सुरुचि और उत्पादन के उस उच्च स्तर के पोषक कहे जा सकते हैं।

धन तथा अवकाश की वृद्धि हो रही थी और वे बृहदाकार वर्गों में व्यापक रूप से विकीर्ण थे। किसी भी अन्य पूर्वगामी युग की अपेक्षा इस समय नागरिक शान्ति एवं वैयक्तिक स्वाधीनता अधिक सुरक्षित थी। समुद्र पार देशों में हमारे राष्ट्र द्वारा छोटी पेशेवर सेनाओं से लड़े गए युद्धों का बोझ अल्प होने के कारण इस सौभाग्यशाली द्वीप के निवासियों के शान्तिकालीन कारबार में बहुत कम बाधा आई। कनाडा और

भारत में जितनी कम हानि उठाकर हमारे साम्राज्य की स्थापना हुई थी वह अभूतपूर्व घटना थी। आस्ट्रेलिया में हमारे साम्राज्य की स्थापना को लें। कैप्टन कुक ने समुद्र में आस्ट्रेलिया को खोज निकाला था (१७७०)। उस विनाशकारी युद्ध में भी, जिसमें हमें पुराने अमरीकी उपनिवेशों का मोह त्यागना पड़ा था, व्यापार में गम्भीर बाधा पड़ने के बावजूद पराजित देश के शान्तिपूर्ण जीवन पर अत्यल्प प्रभाव पड़ा था। इसका कारण यह था कि समुद्रों पर हमारे आधिपत्य को कुछ चुनौतियों के बावजूद भी हटाया न जा सका। जिस समय कुछ अवधि तक फ्रांसीसी जहाजी बेड़ा चैनेल (इंगलिश चैनेल) में होकर जाता था हमें भुखमरी का नहीं अपितु आक्रमण का भय रहता था। यह खतरा भी शीघ्र टल गया था। ऐसा ही नैपोलियन के युद्धों के समय हुआ था। हमारे द्वीप का अधिकांश भोजन यहीं उत्पन्न होता था और समुद्री मार्गों पर इसका आधिपत्य था। 'ब्रिटेन के शान्त उल्लास एवं शक्ति' का यही दोहरा आधार था। वड्र्सवर्थ एक उचित आत्मसंतोष से ही ऐसा सोचता था जब वह क्रान्तिकारी फ्रांस के साथ इंगलैंड के युद्ध के बीसवें वर्ष में ब्लैक कोम्ब की चोटी से सागर और भूमि को देखता था। वरिष्ठ अथवा कनिष्ठ पिट के काल में युद्ध के चक्र की अपेक्षा आधुनिक सर्वसत्तावादी युद्ध का एक वर्ष ही इंगलैंड में समाज के लिए अधिक विघटनकारी और सभ्यता की उच्चतर शाखाओं के लिए अधिक विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।

किन्तु सुरुचि एवं कला के एक महान युग का कारण केवल धन और सुरक्षा से नहीं बताया जा सकता। विक्टोरिया का युग तो इससे अधिक धनी और अधिक सुरक्षित था। फिर भी उस युग में जो इमारतें बनीं तथा उनमें पुस्तकों के अतिरिक्त जो भी वस्तुएं रखी जाती थीं वे उच्च स्तर की नहीं थीं। अठारहवीं शताब्दी में अत्यधिक यान्त्रिक उत्पादन से लोगों की रुचि विकृत नहीं हुई थी। वस्तुओं के निर्माता तथा ग्राहक दोनों ही अभी तक हस्तकला के दृष्टिकोण से सोचते थे। अभी तक कलाकार तथा वस्तुनिर्माता विभक्त होकर दो विपरीत छोरों पर नहीं खड़े थे। वे दोनों ही सीमित जनता के लिए वस्तुओं का व्यापार करते थे जिसकी रुचि में अभी तक कोई विकार नहीं आया था, क्योंकि उसने अभी तक निस्संदेह बहुत सी कुत्सित वस्तुओं को नहीं देखा था। अभी तक जीवन तथा कला मानवीय थे। वे यान्त्रिक नहीं हुए थे और उनमें परिमाण की तुलना में गुण का अभी भी अधिक महत्व था।

हेनरी के युग में कलाओं के अनुकूल एक अन्य परिस्थिति थी। यह राजनीति के अतिरिक्त जीवन के कई पक्षों को अनुरंजित करने वाला कुलीनतंत्रीय प्रभाव था। उस काल के सामाजिक कुलीनतंत्र में अभिजातों एवं भूस्वामियों के अतिरिक्त अधिक धनी पादरी तथा सुसंस्कृत मध्यवर्ग भी सम्मिलित था जो अभिजातों तथा भूस्वामियों के साथ घनिष्टता से समानता का व्यवहार करते थे। बास्वेल कृत जॉन्सन के सम्वादों तथा उदार व्यवसायियों में सर्वाधिक राजसी ठाठबाट के पुरुष—सर जोशुआ रेनोल्ड्स

के जीवनवृत्त में हमें ऐसा पढ़ने को मिलता है। पर्याप्त संस्थाओं पर व्यापक रूप से आवृत एवं अपने सामाजिक विशेषाधिकारों में निर्विवाद वह महान समाज प्रत्येक वस्तु में गुण (उत्कृष्टता) खोज लेने में सक्षम था। इसी कुलीनतंत्र के उच्चतर पदों द्वारा वुर्जुआ तथा उदार व्यवसायी वर्गों का प्रवर्तन होता था जो इसके प्रत्युतर में अभिजातों को नए विचार देते थे। लार्ड राकिंघम को वर्क द्वारा विचारों से प्रेरित करना ऐसा ही एक दृष्टान्त है। अठारहवीं शताब्दी के अग्रणी अधिकाधिक धन कमाने अथवा अधिकाधिक वस्तुओं का, चाहे वे कैसी भी हों, उत्पादन करने की लालसा से व्यग्र नहीं थे। इस प्रकार की व्यग्रता उन्नीसवीं शताब्दी के धन देवता के उन सपूतों में देखी जाती थी जिन्होंने इंगलैंड, अमरीका तथा सारे संसार का प्रवर्तन किया। कुलीनतंत्रीय वातावरण कला तथा रुचि के लिए अधिक अनुकूल था। इसकी तुलना न तो कालान्तर में इंगलैंड का वुर्जुआ अथवा लोकतंत्रीय वातावरण कर सका और न यूरोप का सर्वसत्तावादी वातावरण।

वास्तव में, पुरानी प्रणाली की राजशाही की तुलना में कला एवं साहित्य के संरक्षक के रूप में कुलीनतंत्र अधिक अच्छी तरह कार्य कर रहा था। कभी कभी राजतंत्र को उनमें रुचि हो सकती है जिसके उदाहरण फ्रांस के लुई चौदहवें और पन्द्रहवें थे। किन्तु इसके अन्तर्गत प्रकाश और नेतृत्व का एकमात्र केन्द्र राजदरबार माना जाता है परन्तु अंग्रेजी कुलीनतंत्र में ऐसा एक केन्द्र न होकर सारे देश में भद्रजनों के स्थान तथा प्रान्तीय शहर विखरे हुए थे। इनमें से प्रत्येक ज्ञान एवं रुचि का केन्द्र था जिससे कि सरकारी विश्वविद्यालयों में ज्ञान तथा हेनरी राजाओं के राज दरबार में रुचि के ह्रास की क्षतिपूर्ति हो जाती थी। जार्ज द्वितीय हैंडेल के संगीत के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु को संरक्षण नहीं देता था। इसका कोई महत्व इसलिए नहीं था क्योंकि चाहे लाखों जनसाधारण के हाथ में संरक्षकत्व नहीं भी पहुँचा था फिर भी सैकड़ों के हाथों में तो पहुँच ही गया था। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने गिवन के लिए कुछ नहीं किया था। तात्कालिक राजघराना भी उससे यही पूछता था कि वह क्या अस्पष्ट वातें लिखता था। किन्तु ज्योंही उसकी प्रथम कृति सन् १७७६ में प्रकाशित हुई, पढ़ी-लिखी जनता ने उसे समुचित मान्यता देने में किसी प्रकार की कमी नहीं की।

अठारहवीं शताब्दी की रुचि में पूर्णता नहीं थी। साहित्य में इसकी सहानुभूति की सीमाएं कुख्यात हैं। कला के क्षेत्र में भी कदाचित रेनोल्डस के विषय में अत्यधिक कहा जाता था और होगार्थ और गैन्सवारो के विषय में अयथेष्ट। १७६८ में रॉयल अकेडमी की स्थापना करके सर जोशुआ ने आभिजात्य की विशेषता प्राप्त करने के लिये सचेष्ट उन्नतिशील मध्यम वर्ग में चित्रों की खरीददारी को एक फैशन वना दिया था। निस्संदेह इससे उसने अपने वन्धु कलाकारों की वस्तुओं के लिये अधिक व्यापक मांग उत्पन्न करके इन्हें आर्थिक लाभ पहुंचाया था। किन्तु क्या उस सबसे उस सज्जन

व्यक्ति ने अनजाने में कला में असंस्कृतता का मार्ग नहीं खोल दिया ? और क्या उसकी रॉयल अकेडेमी ने विशिष्ट प्रकार की चित्रकारी और वास्तुकला को अत्यधिक रूढ़ बनाने में योग नहीं दिया ?

जमीन में दबे हक्युंलेनियम और पॉम्पे नगरों की खोज की रोमांचपूर्ण परिस्थिति ने बहुत कुतुहल को उत्तेजित किया जो शायद कला की अपेक्षा पुरातत्त्व के लिये अधिक उपयोगी था। यूनान और रोम की अपेक्षाकृत निम्नस्तर की मूर्तिकला को निर्णय का मापदण्ड मान लिया गया और अकेडेमी के मूर्ति शिल्पियों, नोलेकेन्स और फ्लेक्समैन, की दूसरी पीढ़ी ने इस बात को दृढ़ता से प्रतिपादित किया कि सभी मूर्तियां, समकालीन ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की भी, उसी शैली में बनाई जाएँ और प्राचीन लोगों द्वारा पहने जाने वाले लबादे से उन्हें अलंकृत किया जाय, जैसे कि ब्लूम्सबरी स्केवयर में फॉक्स की मूर्ति है। उन्होंने यह भी चाहा कि रोबिलॉक की शुद्ध पुनर्जागरण परम्परा का अनुगमन अन्य पहलुओं में भी निश्चित ही बन्द हो जाना चाहिए। यह बहुत आश्चर्यजनक बात है कि उसी समय बेंजामिन वेस्ट ने ऐतिहासिक चित्रकला से सम्बन्धित और वेश-भूषा के नियम को बदल कर उल्टा कर दिया। स्वयं सर जोशुआ के गंभीर किन्तु मित्रतापूर्ण उपालंभों के बावजूद वेस्ट इस बात पर दृढ़ रहा कि उसके द्वारा निर्मित उल्फ की मृत्यु के चित्र में (जो १७७१ में अकेडेमी में प्रदर्शित हुआ था) जनरल और उसके साथियों को प्राचीन योद्धाओं की वेश-भूषा में नहीं दिखा कर समकालीन ब्रिटिश वेश-भूषा में ही दिखाया जाय, जैसा कि उस समय के वीर योद्धाओं को भी प्राचीन वेश-भूषा में उनकी ख्याति बढ़ाने के लिये चित्रित करने की प्रथा थी। वेस्ट ने अपने इस साहसपूर्ण नवोन्मेष के प्रति दृढ़ता से उस ऐतिहासिक चित्रकारी के सम्प्रदाय के लिये स्वाधीनता का वातावरण उत्पन्न कर दिया जिसका कि वह संस्थापक था। उसने इस सम्प्रदाय को विशेषतया नक्काशी के माध्यम से अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया।

किन्तु कला के क्षेत्र में फैशन की अनिश्चितताओं और उसके अग्रणी उपासकों की शक्तियों में बहुधा विविधता के होने के बावजूद अठारहवीं शताब्दी का वातावरण कलाओं और हस्तकलाओं में उच्च गुण के लिये अनुकूल था। इंगलैंड में हर प्रकार की सुन्दर, पुरानी और नई, देशी और विदेशी, वस्तुओं का भंडार था। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मकान इस दृष्टिकोण से उतने ही सम्पन्न थे जितने कि संग्रहालय और कला प्रकोष्ठ। किन्तु पुस्तकों, नक्काशी की हुई वस्तुओं, चीनी की वस्तुओं और फर्नीचर तथा चित्रों को प्रदर्शन के लिये एकत्र नहीं किया जाता था, किन्तु अतिथिप्रेमी घरों में उन्हें घरेलू उपयोग के लिये स्वाभाविक स्थानों में जमाया जाता था।

घरों के भीतर और बाहर सर्वत्र एक मनोरम देश था। मनुष्य ने प्रकृति के सौंदर्य से जो कुछ छीना था उससे अधिक वह उसमें योग करने में समर्थ था। खेतों

पर की स्थानीय शैली और सामग्री से बनी हुई इमारतें और कुटीरें कोमल चित्रों और प्राकृतिक दृश्यों से घुल मिल जाती थीं और सामंजस्यपूर्ण ढंग से उसकी विविधता और सुन्दरता को बढ़ाती थीं। करंज की झाड़ियों और कंटीली झाड़ियों के बीच बीच में ऊंचे ऊंचे पेड़ों से घिरे हुए खेतों और ओक तथा बीच के नये बागानों ने पूर्वकालीन झाड़ियों तथा मुक्त खेतों के स्थान पर एक नया और सुन्दर दृश्य उपस्थित कर दिया था। किन्तु मुक्त खेत और झाड़ियां तथा छोटे छोटे बीहड़ सब समाप्त नहीं हो गये थे। लगभग प्रत्येक गांव के निकट जागीरदार के आवास से सटा हुआ पार्क होता था जिसमें विशाल वृक्षों के झुरमुट के नीचे अब भी हिरण कोंपलें चरा करते थे।

इस शताब्दी के अंतिम दशाब्द में प्राकृतिक दृश्यों के चित्रकारों के महान सम्प्रदाय का उदय हुआ जो मुख्यतया पानी के रंगों से चित्र बनाया करते थे और जिनमें प्रमुख थे गिरटिन और नवयुवक टर्नर। शीघ्र ही इनके बहुत से अनुयायी बन गये जिनमें नार्विक सम्प्रदाय के कोटमेन और क्रोम तथा स्वयं कांस्टेबिल सम्मिलित थे। उन्होंने इंगलैंड का सर्वथा सुन्दर चित्रण किया। यह इंगलैंड के इतिहास का वह क्षण था जिसमें उसके सौंदर्य पर कोई आक्रमण नहीं प्रारम्भ हुआ था। आरंभिक वर्षों में प्राकृतिक दृश्यों के स्थान पर आवक्ष मूर्तियों और विषयचित्रों की मांग बहुत अधिक थी। यद्यपि प्राकृतिक चित्रों के चित्रण में उस समय गेन्सबारो और रिचर्ड विल्सन बहुत प्रतिष्ठित हो गये थे किन्तु इस सम्पूर्ण अवधि में विस्तृत रेखाओं वाले अच्छे अच्छे दृश्यों और प्राकृतिक दृश्यों की ओर एक चेतन प्रशंसा बढ़ रही थी। १७२६ में टॉम्सन की कृति 'सीजन्स' के प्रथम प्रकाशन के साथ साहित्य में यह प्रकृति प्रतिबिम्बित हुई और कौपर द्वारा यह परम्परा और आगे बढ़ी तथा अन्त में वर्डस्वर्थ में जा कर इसका अन्तिम रूप से रूपान्तरण और उदात्तीकरण हो गया। किन्तु हमारे द्वीप के विलक्षण गौरव को व्यक्त करने में कोई भी लिखित शब्द समर्थ नहीं हो सकता था। उसे तो केवल चित्रकार ही दिखा सकते थे : जलाधिक्य से पूर्ण वातावरण में पेड़-पौधों, और पृथ्वी और आकाश में धूप-छांह की आंखमिचौनी ये चित्र द्वारा ही व्यक्त हो सकते थे। इस प्रकार से, अठारहवीं शताब्दी के समाप्त होने तथा नवीन युग के आरंभ के साथ स्वदेश में अंग्रेज लोगों के उल्लास की अभिव्यंजना साहित्य और कला के माध्यम से हुई।

जार्ज द्वितीय के शासनकाल में प्राकृतिक दृश्यों के विस्तीर्ण और अधिक वन्य रूपों में अनोखी रुचि और आल्हाद ने ग्रामीण घरों के बाहर घास के मैदानों की साज सज्जा की अभिरुचियों को बदल दिया था। विधिवत् बगीचों और उन तक जाने वाले मार्गों पर डच शैली में निर्मित शीशे की छोटी-छोटी मूर्तियों से सजावट करना विलियम और ऐन्नी के शासनकाल में प्रचलित था और धनुर्वृक्षों की झाड़ियों को विचित्र रूप-आकारों में काटा छांटा जाता था। इन सभी को त्याग कर जागीरदार के घर की

दीवारों तक पार्क में पेड़ों और घास को लगाया जाता था। ग्रामीण आवास की ऊंची ईंट की दीवारों के भीतर फलों और शाक-भाजी के बगीचे को एक आवश्यक उपकरण माना जाता था और इसे मकान के सामने की खिड़कियों से न दिखने वाली थोड़ी दूरी पर रखा जाता था। यह सभी परिवर्तन विलियम केंट और उसके उत्तराधिकारी "कैपेबिलिटी ब्राऊन" के प्रभाव में किये गये थे। ब्राऊन के नाम के पूर्व कैपेबिलिटी शब्द का इसलिये प्रयोग होने लगा था कि उसको जब कभी किसी भद्रजन के मैदान की रूप-रचना से सम्बन्धित परामर्श के लिये बुलाया जाता तो उसे यह कहने की आदत थी : "मुझे यहां पर सुधार की बहुत संभावना (कैपेबिलिटी) दिखाई देती है।"

निस्सन्देह, इसमें लाभ और हानि दोनों हुए। यह दुःखपूर्ण था कि सीसे की बनी हुई सैकड़ों मनोहर मूर्तियों को फेंक दिया गया था और उन्हें गला कर अमरीका और फ्रांस के निवासियों से युद्ध के लिये गोलियां बनाई गई थीं। किन्तु घास के ढलवां मैदानों और पेड़ों के लिये स्थान निकालने के लिये डच शैली के बगीचों का निर्मूलन इस बात का प्रमाण था कि अंग्रेजों की प्राकृतिक दृश्यों में रुचि बढ़ रही थी। इसी के परिणामस्वरूप शीघ्र ही वे पहाड़ों की रचनाओं में भी आनन्द लेने लगे और लेक डिस्ट्रिक्ट में उनकी बहुत भीड़भाड़ होने लगी। अगली शताब्दी में वे स्कॉटलैंड की पहाड़ियों और आल्प्स पर्वतों पर भी जमघट लगाने लगे। ये दोनों ही अभी तक सभ्य लोगों द्वारा घृणा से देखे जाते थे।

प्रकृति के मूल स्वरूप की बृहत्तर विशेषताओं के प्रति लोगों में जो सहज उत्कण्ठा थी वह अति-सभ्य हो रहे समाज की अवश्यंभावी प्रतिक्रिया थी। अतीत में वन तथा पेड़ों और झाड़ियों के घने झुरमुट सर्वत्र निकट ही स्थित थे और मनुष्य निरन्तर उनके विरुद्ध संघर्ष करता रहता था। उन दिनों वह उस संघर्ष से छुटकारा पाने के लिए विधिवत बगीचों को लगाता था। अब उसकी विजय हो गई थी। ग्रामीण अंचल यद्यपि अब भी सुन्दर थे किन्तु उन्हें मनुष्य ने घेरों के लिए झाड़ियों तथा बागानों में परिवर्तित कर अपनी आवश्यकतानुसार नियंत्रित कर लिया था। अतः अब रूसो के रहस्यपूर्ण सिद्धान्तों के अनुसार मनुष्य को मौलिक एवं अनियंत्रित प्रकृति की खोज के लिए खेतों से दूर बाहर जाना पड़ता था।

अठारहवीं शताब्दी के उतरार्ध में पर्वतों में जो रुचि प्रारंभ हुई थी उसके साथ ही अभी तक उपेक्षित सागर-तटों के लिए प्रेम भी उदय हो रहा था। यह सत्य है कि इस शताब्दी के पूर्वार्ध में सागर-तटीय जल-प्रदेशों का भ्रमण करने की प्रथा का उद्देश्य चिकित्सा सम्बन्धी था। डाक्टरों के आदेश से लोग ब्राइट हेल्मस्टोन (ब्राइटन) के गांव में समुद्री वायु का सेवन करने जाते थे अथवा स्कारबारो में कुएं का पानी पीने अथवा समुद्र की लहरों में गोता लगाने जाते थे। १७४५ में स्कारबारो समुद्रतट

के चित्र में पुरुष पर्यटकों को तैरते हुए दिखाया गया है। १७५० के एक चित्र में मार्गेट के एक चित्र में वील-निर्मित स्नान करने के यन्त्रों को दिखाया गया है जिसमें घोड़े जुते होते थे तथा स्त्री-पुरुष दोनों सवार होते थे, इसमें वे एक टोपी पहन कर सीढ़ी से पानी में उतर सकते थे और इच्छानुसार तैर कर बाहर आ सकते थे।

किन्तु जो लोग शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के उद्देश्य से वहां जाते थे उन्हें आत्मा का सुख भी प्राप्त होता था। समुद्र तथा उसके तटवर्ती दृश्यों का ध्यान करने में इतना आकर्षण बढ़ता था कि उससे अधिक बड़ी भीड़ें ढलवां चट्टानों तथा रेतीले स्थलों पर प्राथमिकतया स्वास्थ्य लाभ के उद्देश्य से जाती थीं, किन्तु उससे उन्हें मानसिक सुख भी मिलता था जो स्वास्थ्य का एक अंग है। यह महत्वपूर्ण है कि जार्ज तृतीय के शासनकाल के बाद वाले भाग में सर्वप्रथम समुद्र की लहरों का टर्नर ने सत्यता और स्नेह से वर्णन किया था। यद्यपि जहाजों में पहले अच्छा रंग किया जाता था परन्तु जिन सागरों में वे यात्रा करते थे उनके आकर्षक वर्णन की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। इसके पूर्व बहुधा कवियों ने सागर के भैरव रूप का वर्णन ही किया था। अब वे उसके सौंदर्य का भी वर्णन करते और उससे बहते रहने के लिए अनुरोध करते।

अठारहवीं शताब्दी में सर्वप्रथम ग्रामीण घरों के निर्माण के लिए स्थान के चुनाव में केवल व्यावहारिक कारणों का ही ध्यान नहीं रखा जाता था वरन् सौंदर्यात्मक कारणों का भी ध्यान रखा जाता था। बहुधा उन्हें ऊंचाई पर बनाया जाता था जिससे वहां से दृश्यों को देखा जा सके। जल के कृत्रिम स्रोत स्थलों पर धनी लोगों के बढ़ते हुए नियंत्रण से यह संभव हो जाता था। कौपर, जो "महान जादूगर ब्राउन" को पसंद नहीं करता था, यह शिकायत करता था कि उसने नंगी पहाड़ी चोटियों पर लोगों को मकान बनाने के लिए प्रेरित किया था जो बहुत ठंडे रहते थे जब तक कि उनकी रक्षा के लिए पेड़ नहीं उगाए जाते। उसकी यह भी शिकायत थी कि ब्राउन की प्राकृतिक दृश्यों से युक्त बागवानी इतनी खर्चीली थी कि उससे उसके बहुत से उत्साही संरक्षकों का नाश हो गया था। (दि टास्क, पुस्तक ३)। निश्चय ही लोग अपनी सामर्थ्य से कहीं अधिक व्यय इमारतें बनाने पर करते थे और उनमें सुधार करने के उत्साह में अपनी जागीरों को रहन कर देते थे। क्लेडन के अन्तिम अर्ल व वर्नी ने ऐसा ही किया था।

फैशन (शौक) में अनेक विचित्र उतार-चढ़ाव होते हैं। साहित्य, धर्म और स्थापत्य कला में 'गोथिक' शैली के पुनर्जीवन के बहुत वर्ष पूर्व कृत्रिम भग्नावशेष में लोगों की रुचि बढ़ी थी। पूगिन अथवा सर वाल्टर स्काट के जन्म के पूर्व और उनके प्रभाव की अनुभूति के लगभग पचास वर्ष पूर्व भग्न मध्ययुगीन दुर्गों को प्राकृतिक दृश्यों के अंग के रूप में निर्मित किया जाता था और कुछ मकानों में कल्पित 'गोथिक'

सजावट जोड़ी जाती थी ।[1] किन्तु सौभाग्य से अठारहवीं शताब्दी के लोगों ने जिन प्रासादों को अपने रहने के लिए बनाया था वे अधिकांशत : ठोस जार्जिन शैली में बने थे । कभी कभी उनमें कुछ लक्षण पुरातनकालीन होते थे, जैसे द्वारमण्डल (दालान) और मकान की खिड़कियों के ऊपर त्रिभुजाकार तोरण । परन्तु उन्हें जार्जिन शैली के साथ, जो स्वयं पुनर्जागरण की उत्पत्ति थी, स्वाभाविक रूप से समायोजित किया जा सकता था । इन प्रासादों में कुछेक अधिक आडम्बरपूर्ण थे जो पहाड़ी अथवा किसी अन्य शैली में बने थे जिन्हें प्रासादों के स्वामियों ने इटली के भ्रमण के समय देखा था ।

सभी छोटे और बड़े ग्रामीण घरों में लोग सर्वविधि-सम्पन्न जीवन बिताते थे । जागीरों के प्रबन्ध और कृषि में उन्नति के उत्साह में भूस्वामी सारे दिन भर घोड़ों पर सवार होकर बाहर आते-जाते रहते थे । घर पर महिलाएं भी उपयोगी कार्यों में लगी रहती थीं । वे अपनी विशाल गृहस्थियों के लिए आवश्यक वस्तुओं को जुटाती रहती अथवा संगठन करती थीं । साथ कढ़ाई-सिलाई-बुनाई करतीं अथवा खाद्य पदार्थों और आचार-मुरब्बे वाले कमरे में कार्य व्यस्त रहती थीं । इन घरों में कई सप्ताहों अथवा महीनों तक एक साथ आगन्तुकों के बड़े दलों की आवभगत में प्रचुर भोजों एवं पेयों, मैदानी आखेटों, संगीत और साहित्य की गोष्ठियों, ताशों के खेल तथा जुएं का प्रबन्ध किया जाता जिससे कभी कभी अतिथि अथवा आतिथेय का नाश आजाता । प्रत्येक ग्रामीण-घर में उसके आकार के अनुपात में एक पुस्तकालय का होना सामान्य प्रथा हो गई थी, जिसमें चमड़े की जिल्दों में बंधी पुस्तकें रहती थीं और उन पर पारिवारिक शस्त्रों अथवा शिरस्त्राण के चिन्ह का ठप्पा लगा रहता था । पुस्तकों में अंग्रेजी, लैटिन तथा इटैलियन भाषाओं की चिरप्रतिष्ठित रचनाएं और भव्य चित्रों से परिपूर्ण यात्रा-वृत्तों, स्थानीय इतिहासों के बृहत् ग्रंथ अथवा नक्काशियों और छीटों की पुस्तकें सम्मिलित रहती थीं । बीसवीं शताब्दी की सभ्यता में उपरोक्त पुस्तकालयों के समान कोई वस्तु नहीं दिखती है ।

बहुत से पहलुओं में यह एक स्वतंत्र और सुविधापूर्ण समाज था । चार्ल्स फाक्स ने लापरवाही से वस्त्र पहनने का फैशन चलाया था । हाउस आफ कामन्स (लोक-सभा)—जो अंग्रेजी कुलीनतंत्र का केन्द्रीयस्थल था—में जाने पर १७८२ में एक विदेशी पर्यटक को वहां के सदस्यों के लापरवाही के व्यवहार की अनुभूति हुई थी—

---

१ १७५० में होरेस वालपोल द्वारा स्ट्राबेरी हिल के गोथिक भागों का निर्माण प्रारंभ करने के पूर्व भी घरों की गोथिक ढंग से आन्तरिक और बाह्य सजावट करने का चलन था जो बहुत अश्लील प्रकार की होती थी । इसके बाद चीनी ढंग की सजावट की रुचि का चलन हुआ । किन्तु इस प्रकार के शौक असाधारण थे । देखिए केट्टन-क्रेमर, **होरेस वालपोल**, पृष्ठ १५१-१५४ ।

'सदस्यों के पहनावे में कोई विशिष्टता नहीं है। वे सदन में बड़े कोट, घुड़सवारी में युक्त लम्बे जूते और एड़ लगाने के कांटे पहने चले आते थे। जब दूसरे लोग वाद-विवाद में भाग ले रहे होते तो प्रायः एक-दो सदस्य बेंच पर फैलाकर लेटे दिखाई देते। कुछ अखरोट तोड़-तोड़ खाते थे और कुछ सदस्य नारंगी खाते रहते। वे अबाध रूप से सदन के बाहर-भीतर आते जाते रहते थे और किसी भी सदस्य को अपनी इच्छानुसार ऐसा करने दिया जाता। जब कभी वह बाहर जाना चाहता तो सदन के अध्यक्ष के समक्ष जाता और झुककर उसकी अनुमति वैसे ही मांगता जैसे एक विद्यार्थी बाहर जाते समय अपने शिक्षक की आज्ञा मांगता है।' (मारिज, ट्रैवेल्स, एच. मिलफोर्ड, १९२४, पृष्ठ ५३)।

संसार की सृष्टि से लेकर आज तक शायद ही स्त्री-पुरुषों के किसी वर्ग ने जीवन के इतने विभिन्न पक्षों का आनन्द इतनी अधिक आसक्ति से लिया हो जितना इस अवधि के अंग्रेज उच्च वर्ग ने लिया था। साहित्यिक, क्रीड़ा-निमज्ज, शौकीन और राजनीतिक समूह एक ही तथा वही थे। जब सभी महान् राजनीतिज्ञों में सर्वाधिक असफल चार्ल्स फाक्स ने मृत्युशैया पर यह कहा था कि उसका जीवन 'सुखी' था तो उसने सत्य ही कहा था। सर्वथा प्रखर वाकपटुता, घोरतम राजनीति, तीतरों की शिकार में कई-कई दिनों तक पैदल फिरना, ग्रामीण क्रिकेट, असीम बात-चीत और अंग्रेजी, यूनानी, लैटिन तथा इटालियन काव्य और इतिहास के लिए प्रगाढ़ अभिलाशा (उत्कंठा, लालसा)—ये सभी और जुआड़ी की विक्षिप्तता—फाक्स इनका आनन्द ले चुका था और जो अगणित मित्र उसे प्रेम करते थे उन सभी के साथ वह इन सभी में भाग लेने का सुख भोग चुका था। वह होलखम में एक वर्षाकालीन दिन बिताने के लिए भी कम सुखी नहीं था जब उसने एक झाड़ी के नीचे बैठकर वर्षा की परवाह किए बिना एक किसान से मित्रतापूर्ण बातें की थीं, जिसने उसे शलजम के उत्पादन के रहस्य को समझाया था।

क्रिया और सुख के नानारूपों में फाक्स उस समाज का प्रतिनिधि था जिसमें दीर्घकाल तक वह एक गण्यमान व्यक्ति रहा था। उन उदार-विचार एवं उन्मुक्त हृदय वाले कुलीनों ने ग्राम और नगर तथा सार्वजनिक एवं निजी जीवन की समस्त क्रियाओं में भाग लिया था और उनका रसास्वादन किया था। इन लोगों के देशवासियों को उनकी क्रियाओं पर किंचित प्रतिबंध लगाने का अनुभव नहीं होता था। इन कुलीनों में से अधिक शौकीन लोगों में गम्भीर दोस्त होते थे। यद्यपि कहावत यह प्रचलित है कि 'उच्चकुलीन के समान मदिरा पिए हुए' किन्तु ऊंच और नीच सभी वर्गों के अंग्रेजों में, अत्यधिक मदिरा पान की आदत थी। किन्तु उस काल के समाज के सर्वोच्च स्तरों में अधिक जुआं खेलना और दाम्पत्य अविश्वास शायद सर्वाधिक अवलोकनीय थे। यह स्थिति तब तक बनी रही जब तक पादरियों ने अपने प्रभाव से साधारण जनता के

व्यसनों को पहले नियंत्रित कर फिर उच्च वर्ग पर नियंत्रण नहीं किया और उन्हें उन्नीसवीं शताब्दी में आने वाले कठोर समय के उपयुक्त नहीं बना दिया। उन्नीसवीं शताब्दी में उनके आचरण पर सार्वजनिक चर्चा होती थी और उनके विशेषाधिकारों को चुनौती दी गई। किन्तु उस काल के पूर्व तो समय उनका था और वह स्वर्णिम था।

इस प्रतिष्ठित युग में, जब डा. जान्सन के शब्दकोष (१७५५) ने अच्छी अंग्रेजी में स्वीकृत होने वाले शब्दों को निर्धारित करने में बहुत योगदान किया, शब्दों के अक्षर-विन्यास को उन नियमों द्वारा निश्चित किया गया था जिन्हें अब सभी शिक्षित लोगों में अविकल माना जाता है। मार्लबारो के युग में रानियां और महान् सेनाध्यक्ष भी इच्छानुसार शब्दों के हिज्जे करते थे। किन्तु १७५० में लार्ड चेस्टरफील्ड ने अपने पुत्र को लिखा था—'मैं तुम्हें यह अवश्य बताना चाहूंगा कि किसी भी शब्द का सही अर्थ में शुद्ध लिखना साहित्यिक पुरुषों तथा भद्रजनों के लिए समान रूप से आवश्यक है। यदि उनमें से कोई एक अशुद्ध वर्ण विन्यास करता है तो उसे शेष जीवन भर उपहास्य विषय बना रहना होगा। मैं एक ऐसे गुणवान व्यक्ति को जानता हूँ जिसे 'होलसम' शब्द के वर्णविन्यास में 'डब्लु' छोड़ देने पर सदैव उपहास सहना पड़ा।'

साथ में उसने अपने पुत्र को प्लैटो, अरस्तू, डिमास्थेनीज़, थ्यूसीडाइड्स की रचनाओं को पढ़ने का परामर्श दिया जिन्हें केवल दक्ष लोग ही जानते हैं यद्यपि बहुत से लोग होमर की रचनाओं से उद्धरण दे देते हैं। चेस्टरफील्ड ने लिखा था कि ग्रीक साहित्य से परिचय होना एक मनुष्य की विशिष्टता है। केवल लैटिन से परिचय पर्याप्त नहीं है। यह महत्वपूर्ण है कि उस काल में जब फैशन का प्रावल्य था तो फैशन में अग्रणी व्यक्ति एक बहुत ही वास्तविक प्रकार की शास्त्रीय विद्वता को एक भद्रजन के चरित्र के उपयुक्त मानता था।

शिकार के लिए वन्य पशुओं-पक्षियों का पीछा करने के पुराने रूपों के स्थान पर अब लोमड़ी का पीछा किया जाने लगा था। अतीत के सभी युगों में हिरण की शिकार को सर्वश्रेष्ठ आखेट माना जाता था किन्तु अब एक्समूर तथा कुछ अन्य क्षेत्रों के अतिरिक्त इस आखेट की स्मृति मात्र शेष थी। १७२८ में ही कुछ शिकारों को हिरण को गाड़ी में ढोने की कुख्यात संज्ञा दी जा चुकी थी और यह हिरण के शिकार का अन्त था। इसका स्पष्ट कारण था कि जंगलों का विनाश हो गया था। ऊसर भूमियों की घेरेबन्दी तथा अधिकाधिक भूमि पर खेती होने के कारण वन्य हिरणों के झुंडों में निरन्तर कमी आ रही थी जो पहले ग्रामीण क्षेत्रों में स्वतंत्र घूमा करते थे। जार्ज तृतीय के शासनकाल में बलूत वृक्ष के नीचे घास की कोंपलों को चरते हुए हिरणों को भद्रजन के पार्क की शोभा माना जाता था, जो उसकी सीमाओं में सुरक्षित बन्द

रहते थे और शिकार के पशु नहीं माने जाते थे। पार्क का स्वामी अथवा उसका आखेट पशु निरीक्षक उपयुक्त समय पर उनका शिकार कर लेते थे।

खरगोश का शिकार, जो शेक्सपीयर और सर रोगर डि कावरली को प्रिय था, धीरे-धीरे समाप्त हुआ। यद्यपि सम्पूर्ण अठारहवीं शताब्दी में लोमड़ी का शिकार प्रचलित हो रहा था फिर भी १८३५ में एक आखेट-पत्रिका ने लोमड़ी के शिकारी कुत्तों के १०१ झुंडों की तुलना में खरगोश के शिकारी कुत्तों के १३८ झुंडों की सूची दी थी। खरगोश के शिकारी कुत्तों से यह लाभ था कि जब वे खरगोश का पीछा करते थे तो पैदल भागने वाला ग्रामीण भी खरगोश को छोटे-छोटे चक्कर काटते हुए देख सकता था। इसके विपरीत, शिकारी कुत्तों द्वारा पीछा करने पर लोमड़ी सीधे और लम्बे भागती थी और शिकारी की दृष्टि से शीघ्र ही ओझल हो जाती थी। किन्तु यद्यपि लोमड़ी के शिकार के क्षेत्र में साधारण स्थिति के और पैदल शिकारी बहुत कम होते थे इस शिकार में लाल और नीले कोटधारी शिकारी, शिकारी कुत्ते और बिगुलें सब मिलाकर ग्रामीण जनता के सभी वर्गों के लिए बड़े आकर्षक थे। लोमड़ी के शिकार के स्फूर्तियुक्त गाने इतने लोकप्रिय थे कि वे साधारण मदिरालयों और भूस्वामियों के घर में भोजन की मेज पर समान रूप से उल्लास और उच्च स्वर में गाये जाते थे।

जार्ज तृतीय के शासनकाल में लोमड़ी के शिकार के वे सभी सारभूत लक्षण अक्षुण्ण थे जो सदैव उसमें थे। अतीत में केवल वे लोग शिकार में भाग नहीं लेते थे जो काउण्टी के बाहर के निवासी होते थे। किन्तु अब यह ऐसी क्रिया नहीं रही थी जिसमें एक अथवा दो पड़ोसी घोड़ों पर सवार होकर अपने ही खेतों में शिकार खेलते। अब शिकारी कुत्ते सारे जिले में दौड़ा करते थे और बैडमिन्टन, पिचले तथा कुओर्न जैसे महान् शिकारियों ने इस (शिकार) विज्ञान को इतना विकसित कर दिया कि वह आज भी अपरिवर्तित है। ज्यों-ज्यों शताब्दी बीतती गई शिकार के पीछे अधिकाधिक दूरी तक दौड़ें होने लगीं और घेरेबन्दी अधिनियमों ने मिडलैंड्स (मध्य प्रदेशों) के शिकारी क्षेत्रों में अनावृत्त मैदानों को बाड़ियों से विभक्त करके घोड़ों तथा सवारों के लिए अधिक निपुणता से कार्य करना आवश्यक बना दिया था। किन्तु इससे भी बहुत पूर्व सन् १७३६ में भूस्वामी कवि सोमरविले ने अपनी कृति 'चेंज' में कूदने को शिकार का एक आवश्यक अंग माना था। उसकी कविता के एक अंश का भावार्थ इस प्रकार है—
"प्रतिस्पर्धा से स्फूर्त शिकारी मैदान में अन्यों को पछाड़ देने के लिए कठोर प्रयत्न करते थे। वे बन्द द्वारों को कूद जाते थे। गहरी खाइयों को हर्षोन्मत्त होकर लांघ जाते थे। मार्ग में आने वाली कंटीली तथा उलझी हुई झाड़ियों को एक ओर हटाकर वे आगे बढ़ जाते थे।"

अठारहवीं शताब्दी में वन्य पक्षियों की शिकारों को जाल में फंसाकर अथवा

लासा लगाकर शिकार करने के स्थान पर उन्हें गोली से मारना प्रचलित हो गया था। इसकी कार्यप्रणाली आधुनिक प्रथा की ओर बढ़ रही थी किन्तु वन्यपशुओं का पीछा कर शिकार करने की तुलना में इसकी प्रगति धीमी थी। पक्षियों का 'हांकना' अभी प्रारम्भ नहीं हुआ था। लम्बे, तथा हाथ से कटी हुई फसल के डंठलों की उपस्थिति के कारण शिकारियों के लिए तीतरों के निकट पहुँच जाना सरल था। वे वफादार शिकारी कुत्ते (लम्बे बालों वाले) के पीछे-पीछे उन तक चले जाते थे। चकोरों (बीजकों) को छिपने के स्थानों से हंकार कर इतना ऊंचा नहीं उड़ाया जाता था कि वे बन्दूकधारी शिकारियों के सिर पर से उड़ें। परन्तु उन्हें वाड़ियों तथा झाड़ियों से भूंकते हुए लोमश कुत्तों द्वारा बाहर निकाला जाता था। ज्योंही वे फड़फड़ाकर ऊपर उढ़ते उन्हें बन्दूक से मार दिया जाता। उत्तरी घास के मैदानों में आज की तुलना में रोएंदार टांगों वाले मुर्गों की संख्या कम थी किन्तु वे कम वन्य थे। उपयुक्त स्थानों पर काले पक्षी और बतखें बहुतायत से थीं और प्रत्येक स्थान पर खरगोशों के झुंड के झुंड फिरते थे जो किसानों को बड़ी हानि पहुंचाते थे। वर्तमान समय (१९३९) की तुलना में चूहे फसल के लिए कम हानिकर थे क्योंकि कृषिगत भूमि की तुलना में घास के मैदानों का अनुपात कम था। टिटहरी जाति के पक्षी, रवट-मीनें, तितलौआ, करवानक, कश्मीराश्वक (क्षुद्र पक्षी विशेष), लैण्ड रेल्स तथा अन्य वन्य पक्षियों को उतनी ही स्वतंत्रता से बन्दूक से मारा जाता था जितना कि नियमित पशुओं का शिकार होता था।

उस समय बारूद भरी जाने वाली, चकमक पत्थर और इस्पात से युक्त, देर से दगने वाली बन्दूकों का चलन था जो वर्तमान समयों की कारतूस का खोल बाहर फेंक देने वाली बन्दूकों से बिल्कुल भिन्न थीं। पहले की बन्दूक दागने में अधिक देर लगती थी अतः उड़ते अथवा भागते हुए पक्षी के काफी आगे निशाना लगाया जाता था। यह बड़ी चतुराई का कार्य था। इसमें कोक आफ नारफोक बड़ा निपुण था। कई अवसरों पर उसने एक सौ बार से कम बन्दूक दागकर ८० तीतर मारे थे। बन्दूक को दुबारा भरने में समय लगता था और यदि उसमें थोड़ी भी असावधानी रह जाती तो भी खतरा था। अतः प्रत्येक बार बन्दूक छोड़ने के पश्चात् शिकारी को ठहरना पड़ता था। जब तक वह अपनी बन्दूक को भरता तब तक शिकार का पीछा कुत्ता करता रहता था। अठारहवीं शताब्दी के मध्य काल में शिकार किए हुए पशु-पक्षी को ढोने वाले जैसे 'टॉम जोन्स' में वर्णित ब्लैक जार्ज, उतने सम्मानित वर्ग के लोग नहीं माने जाते थे जितने कि कालान्तर में उनके उतराधिकारी माने जाते थे। वे बहुधा सबसे निकृष्ट शिकार-चोर होते थे जो शिकार का एक भाग अपने स्वामी को देते थे और दो भाग स्वयं ले लेते थे। किन्तु ऐसा नहीं था कि केवल भद्रजन और उनके आखेट-वाहक ही शिकार लेते हों, प्राचीन इंगलैंड में शिकार चोरी में कभी 'युद्धविराम' नहीं हुआ था।

स्टुअर्ट काल में हेम्पशायर और केंट में साधारण जनता के एक खेल के रूप में क्रिकेट का विकास साधारण और स्थानीय रूप से हुआ था। इस खेल में एक छड़ी पर गेंद मार कर चोटों की संख्या को गिनने की मौलिक रीति निरक्षरता की द्योतक थी। किन्तु १८वीं शताब्दी के आरंभ में क्रिकेट का विस्तार भौगोलिक और सामाजिक सीमाओं दोनों में हुआ था। १७४३ में यह कहा जाता था कि कुलीन भद्र जन और पादरी कसाइयों और मोचियों के साथ यह खेल खेला करते थे। इसके तीन वर्ष पश्चात् जब एक मैच में सम्पूर्ण इंगलैंड की टीम के विरुद्ध केंट की टीम ने १११ नोचेज़ बनाये तो विजयी पक्ष का एक सदस्य लार्ड जोह्‌न सेक्विले भी था, जिसका कप्तान नोल में काम करने वाला एक माली था। ग्रामीण क्रिकेट का सारे देश में बहुत तीव्रता से विस्तार हुआ। उन दिनों में एक वैज्ञानिक खेल बनाने के पहले क्रिकेट को देखना संसार में सबसे अच्छा लगता था। क्योंकि इसमें मनोरंजक घटनाएं बहुत शीघ्र क्रम में घटती थीं। प्रत्येक बार गेंद फेंकने से एक संभावित संकट खड़ा हो जाता था। भूस्वामी, किसान, लुहार और श्रमिक अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ इस खेल का मजा लेने आते थे और गर्मियों में सम्पूर्ण तीसरे पहर बहुत आराम और मोद से साथ साथ बैठते थे। यदि फ्रांस के कुलीन लोग क्रिकेट को अपने कृषकों के साथ खेलने में समर्थ होते तो उनके ग्रामीण दुर्गों को कभी जलाया नहीं जाता।

इस शताब्दी के अंतिम वर्षों तक दो विकेटों में से प्रत्येक में दो स्टम्प होते थे। जिनकी ऊंचाई केवल एक फुट होती थी और दोनों के बीच में लगभग दो फुट की दूरी होती थी। तीसरा स्टम्प उनके दूसरी ओर गाड़ा जाता था। स्टम्पों के बीच की दूरी को पॉपिंग होल कहते थे। जिसमें कि बल्लेबाज को अपने बल्ले के सिरे को घुसेड़ना पड़ता था पूर्व इसके कि विकेटकीपर गेंद को अपनी उंगलियों पर करारी चोट खा जाने का खतरा उठाकर उसमें फेंकता। बॉलर गेंद को बहुत तेजी से ज़मीन के सहारे नीचे वाली विकट पर मारता था और जब जैसा कि बहुधा होता था गेंद स्टम्पों के बीच से बगैर उनमें लगे हुए पार निकल जाती तो बल्लेबाज आउट नहीं होता था। बल्ला सिरे पर हाकी की स्टिक की भांति मुड़ा होता था। इस शताब्दी के अन्त समय तक इस खेल में मौलिक परिवर्तन आ गये थे, पार्पिग होल समाप्त कर तीसरा स्टम्प जोड़ दिया गया था और विकेट की ऊंचाई २२ इंच कर दी गई थी। इन परिवर्तनों के प्रतिफल अब सीधा बल्ला प्रयोग होने लगा था।

१८वीं शताब्दी के अंग्रेज भोजन के सुखों के व्यसनी हो गये थे और हमारे द्वीप में भोजन बनाने की कला में कुछ विशेष गुण और अवगुण पहले ही आ गये थे। उत्तम प्रकार की मछलियों और लाल एवं सफेद मांस के उपभोग पर विदेशी चकित रह जाते थे। किन्तु वे शाक भाजी के सम्बन्ध में अंग्रेजी नीति की प्रशंसा नहीं करते थे। क्योंकि शाक भाजी का उपभोग केवल मांस के साथ थोड़ी मात्रा में होता था।

अंग्रेज बावर्ची शाक भाजी बनाने में उतने ही अयोग्य प्रतीत होते थे जितना कि कॉफी बनाने में। जिसे वे केवल भूरे पानी से किसी प्रकार भी अच्छे रूप में नहीं बना पाते थे किन्तु शाक भाजी का कैसा भी प्रयोग होता, धनवानों और निर्धनों के रसोई-बगीचों में विभिन्न प्रकार की शाक भाजी अब बहुत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। आलू, गोभी, गाजर, शलजम, ककड़ी अथवा खीरा, अंकुर और सलाद मांस के साथ उतनी ही बहुतायत से खाये जाते थे जितना कि आजकल। मीठे पकवान और खीर विशेष कर प्लंब पुड़िंग, जैसाकि पार्सन वुडफोर्ड उनका उच्चारण करता था, अंग्रेजों के भोजन कक्ष में बड़े सम्मानित माने जाते थे।

१७६० में वुडफोर्ड ने आटे पर जो व्यय किया था वह केवल ५ पौंड ७ शिलिंग ६ पेंस था। यह रेक्टर आवास में पकाई और खाई जाने वाली रोटी के बहुत सीमित परिमाण का संकेत है। उसी अवधि में मांस पर इसका व्यय ४६ पौंड और ५ शिलिंग हुआ था। इस अवधि की अंग्रेजी मध्यमवर्गीय गृहस्थी में निश्चय ही बहुत अधिक मात्रा में मांसाहारी थी और उसके भोजन में रोटी के स्तर से बहुत अधिक ऊंचा स्तर मांस का था। उसी वर्ष उपरोक्त व्यक्ति के घर में शराब बनाने के लिये माल्ट पर २२ पौंड १८ शिलिंग ६ पेंस व्यय हुआ था। इस योग्य पादरी ने अपने भोजनों का विवरण अपनी डायरी में इस प्रकार दिया है। "एक औसत समूह के लिये एक अच्छे सामान्य सायंकालीन भोजन में (१७७६) उबले हुए भेड़ या बकरी के मांस की एक टांग, विभिन्न वस्तुओं के मिश्रण से बनी हुई खीर और एक जोड़ा बतखें सम्मिलित रहती थीं। १७७७ में ऐसे ही एक अन्य भोजन में प्याज लिपटे हुए खरगोशों का एक जोड़ा, उबाले हुए बकरी के मांस की गर्दन और भुना हुआ एक हंस, एक किशमिश की खीर और सादी खीर शामिल रहते थे। और इन सबके बाद में चाय पी जाती थी। एक बहुत ही भव्य भोज जिसका उसने आक्सफोर्ड के क्राईस्ट चर्च में (१७७४) आनन्द लिया था, हमारी धारणा के उन सामूहिक भोजों के बहुत निकट है जिनमें हमारे पूर्वजों में से अधिक विशिष्ट लोग बड़े आनन्द से भाग लेते थे।"

"भोजन में पहले एक बड़ी कॉड मछली, बकरे अथवा भेड़ के मांस की हड्डी, कुछ शोरबा, मुर्गे के मांस की एक कचौड़ी, खीर तथा खाद्य-जड़ें आदि परोसी गईं। उसके बाद, कबूतर और शतावर, कुकुरमुत्तों तथा ऊंची लगी चटनी के साथ बछड़े के मांस का एक टुकड़ा, भुनी हुई मीठी रोटियां, गरम झींगा मछली, चीलू की मीठी पकौड़ी, और सबके बीच में अंगूर की मदिरा और मक्खन से मिश्रित जमाया हुआ एक पदार्थ तथा मुरब्बे परोसे गए थे। भोजन के अन्त में हमने फलों का अल्पाहार किया और मैडीरा, श्वेत तथा लाल पोर्ट नामक मदिराएं पीं। हम सब बहुत प्रसन्न एवं प्रफुल्लित थे।"

देहाती क्षेत्रों में 'मदिरा पीकर' अंधेरी रात में घोड़े पर घर जाने में बहुधा दुर्घटनाएं और मृत्युएं हो जाती थीं।

जर्मन युवक मोरिज़, जो इंगलैंड में १७८२ में अल्प आय पर निर्वाह करते हुए रहा था, पादरी वुडफोर्ड की तुलना में कम सुखी रहता था क्योंकि वह अंग्रेज गृह-स्वामिनियों की दया पर निर्भर था जो उसके प्रति वही व्यवहार करती थीं जैसा आजकल भी अधिकांश गृहस्वामिनियां अपने अभागे अतिथियों के प्रति करती हैं। उसने लिखा था कि उसके जैसे टिकने वालों का जो अंग्रेजी भोजन (शाम का) होता था उसमें साधारणतया एक आधा-उवाला हुआ अथवा आधा-भुना हुआ मांस का टुकड़ा, सादे पानी में उवाली हुई करमकल्ला की थोड़ीसी पत्तियां सम्मिलित रहती थीं, जिनपर वे आटा और मक्खन की वनी चटनी उडेल देती थीं।

(मुझे संदेह है कि इसी तरल पदार्थ (द्रव) का वोल्तेयर को स्मरण था जब उसने कहा था कि अंग्रेजों के धर्म तो सैंकड़ों हैं किन्तु चटनी केवल एक है)।

किन्तु मोरिज़ ने यह भी लिखा था, "मुझे उत्तम मक्खन तथा चेशायर के पनीर के अतिरिक्त अच्छे गेहूं की रोटी मिलती थी। चाय के साथ रोटी और मक्खन के जो टुकड़े दिए जाते थे वे पोस्त की पत्तियों की भांति पतले होते थे। किन्तु चाय के साथ साधारणतया खाई जाने वाली एक अन्य रोटी और मक्खन होता था जो आग से सेकी जाने पर अत्यधिक अच्छी होती थी। रोटी के कई टुकड़ों को एक साथ लेकर उन्हें कांटे पर रखकर आग से सेको, जव तक कि मक्खन पिघल कर कई टुकड़ों में एक साथ नहीं पहुंच जाय, इसे 'टोस्ट' कहते हैं।"

आर्थिक परिस्थितियों के कारण अठारहवीं शताब्दी का पूर्वार्ध श्रमिक वर्ग के लिए अपेक्षाकृत प्रचुरता का युग था। कम से कम उनमें से अनेक प्रातःकाल के कलेवा (उपाहार) में वीयर, रोटी, मक्खन, कुछ मात्रा में पनीर, और कभी कभी मांस भी खाते थे। दोपहर को भी वहुतों के भोजन में घटिया मांस की प्रचुर मात्रा होती थी स्मोलेट ने 'रोडरिक रैण्डम' नामक अपनी कृति (१७४८) में एक वावर्ची की दुकान में प्रवेश करने का वर्णन किया है—

"सारी दुकान में उवलते हुए वैल-गाय के मांस की भापों से घुटन पैदा करने वाला वातावरण था। उसमें घोड़ा-गाड़ियों के कोचवानों, पालकी ढोने वालों, ठेले वालों तथा वेकार अथवा भोजन के स्थान पर प्रदत्त मजदूरी पर काम करने वाले श्रमिकों की भीड़ थी जो गाय की अग्रजंघा, उदर, गाय के खुर और कवाव पृथक पृथक मेजों पर वैठकर खा रहे थे जो कपड़े से ढकी होती थीं। यह सव देखकर मैं लगभग क्षुधाग्रस्त हो गया।"

किन्तु मजदूरी तथा जीवन दशाओं में असंख्य स्थानीय विविधताओं के कारण श्रमिक के भोजन के विषय में साधारणीकरण करना भ्रामक है। वहुत से श्रमिक

मुख्यतया रोटी तथा पनीर पर जिन्दा रहते थे और कुछ शाक-भाजियों, बीयर तथा चाय पर भी।

अठारहवीं शताब्दी में इंगलैंड के जनसाधारण के जीवन में रंगमंच का बहुत प्रचलन था। चार्ल्स द्वितीय के शासन में इसके पुनरुज्जीवन के आरंभिक वर्षों में यह केवल लन्डन और राजदरबार के संरक्षण तक ही सीमित था। अब इसका विस्तार सारे देश में हो गया था। बड़े प्रान्तीय नगरों में रंगमंच की कम्पनियां स्थापित हुईं और पर्यटक रंगमंच-कलाकार सदैव ग्रामीण क्षेत्रों में घूमते रहते थे। वे खलिहानों तथा नगर-भवनों में देहाती दर्शकों के समक्ष नाटकीय प्रदर्शन करते थे। पार्सन वुडफोर्ड ने कैसल कैरी के कोर्ट हाउस में समय समय पर उनके द्वारा किए गए प्रदर्शनों का उल्लेख किया है। कैसल कैरी समरसेटशायर का एक गांव था जिसमें १२०० निवासी रहते थे। यहां रंगमंच के कलाकार समय समय पर 'हैमलेट', 'बेगर्स ऑपेरा' तथा अन्य अच्छे नाटकों का प्रदर्शन करते थे। फ़र्कुहार का नाटक 'ब्यूक्स स्ट्रेटेजम' १७०७ में उसकी मृत्यु के बहुत समय पश्चात् तक जनता में लोकप्रिय रहा। किन्तु उस समय अच्छे नये नाटकों की कमी थी जो अगले साठ वर्षों तक बनी रही जब तक कि गोल्डस्मिथ तथा शेरिडन ने कुछ प्रथम श्रेणी के सुखान्त नाटकों का सृजन नहीं किया।

दूसरी ओर, जिस देश में हेन्डेल के धर्म-गीतों (भजनों) को इतना प्रबल संरक्षण मिले उससे हम रंगमंच के संगीत-पक्ष के उत्तम विकास की अपेक्षा कर सकते हैं। टामस आर्ने (१७१०-१७७८) ने शेक्सपीयर के गीतों को व्यवस्थित किया और अनेक नाटकों के आनुषांगिक संगीत को लिखा। और अंग्रेजी लघु संगीत-नाट्य (जो 'बैगर्स ऑपेरा' से लेकर गिलबर्ट और सलीवान के संगीत नाटकों तक सतत रूप से जीवित रहा) की अत्यधिक उन्नति डिवडिन के काल में (१७४५-१८१४) हुई थी। जब वह बहुत युवा था तभी उसने 'लायनेल और क्लैरिसा' के संगीत की रचना की थी। वह दीर्घकाल तक अपने देशवासियों को भावनाप्रधान, देशभक्तिपूर्ण और नौपरिवहन सम्बन्धी गीत देता रहा जिन्हें वे बड़े प्रेम से गाते थे। ऐसे ही गीतों के दो उदाहरण हैं 'पुअर जैक' और 'टाम बाउलिंग।' उस समय इंगलैंड की जनता केवल संगीत को नहीं सुनती थी। उन्हें स्वयं गाने में कोई लज्जा अनुभव नहीं होती थी क्योंकि वे घुड़सवारी करते, काम करते अथवा चलते समय निश्चित होकर गा सकते थे। घर से बाहर इन कामों को करते समय न तो उन्हें सदा जल्दी रहती थी और न उनकी उन्मुक्तता में बाधक कोई ही भीड़ होती थी। घर में रहते समय उन्हें प्रभूत अवकाश मिलता था जिसका उपयोग वे संगीत के लिए कर सकते थे।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य में गैरिक की और उसके अनन्तर श्रीमती सिडन्स की आश्चर्यजनक प्रतिभा ने लंडन के रंगमंच को प्रसिद्ध कर दिया था। शेक्सपीयर के

नाटकों का अर्थ विपर्यय की दृष्टि से उन्होंने जो रूपान्तरण किया था—जैसे 'किंग-लियर' को एक सुखान्त नाटक बनाना—वह वीभत्स था। किन्तु हमें उस काल के अभिनेताओं तथा साहित्यिक आलोचकों की सेवा को स्वीकारना होगा जिन्होंने अंग्रेजी जनता को यह विश्वास दिलाने का सफल प्रयास किया कि शेक्सपीयर हमारे राष्ट्र का सबसे बड़ा गौरव है। वर्तमान काल की अपेक्षा उस समय शेक्सपीयर की रचनाओं का अधिक व्यापक रूप से अध्ययन होता था, उनके उद्धरण दिये जाते थे तथा जनसामान्य को उनकी जानकारी थी। इसका कारण यह था कि उस काल में काव्य और महान साहित्य को अधिक अस्थायी प्रकार की प्रकाशित सामग्री से कठोर प्रतियोगिता नहीं करनी पड़ती थी। पाठक-वर्ग ठीक उतने ही आकार का था जो महान साहित्य को सर्वोत्तम अवसर प्रदान कर सके। उस समय शेक्सपीयर की तुलना में मिल्टन की ख्याति और प्रतिष्ठा कम थी। शताब्दी के मध्य तक हाथ से लिखे गए 'समाचार पत्रों' का स्थान मुद्रित समाचार पत्रों ने पूर्णतया ले लिया था। जार्ज तृतीय के शासन के प्रारंभ में कर के कारण इसका मूल्य दो या तीन पेंस होता था और आकार चार बड़े पृष्ठों का। कौपर अपने ग्रामीण आवास में प्रत्येक सायंकाल ऐसे समाचार पत्र की अपेक्षा करता था। चाय पीते समय वह उसे जोर से पढ़कर महिलाओं को सुनाया करता था। भावप्रवण होते हुए भी अपने प्रगाढ़ मौन को भंग करने में महिलाएं भयभीत रहती थीं।'

समाचार-पत्र के चार बड़े पृष्ठों में से प्रत्येक में चार स्तम्भ होते थे। १७७१ के उपरान्त जब संसद के दोनों सदनों ने समाचार-पत्रों को संसदीय वादविवादों को प्रकाशित करने का अधिकार मूकरूप से स्वीकृत कर लिया था तो वह दायित्व समाचार-पत्रों का एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया था। चूंकि समाचार-पत्रों की क्रेता सीमित जनता सघनता एवं बुद्धिमत्ता से राजनीतिक थी इसलिये संसद के अधिवेशन काल में समाचारों के आधे से अधिक स्थान में संसदीय समाचार भरे रहते थे। एक या एक से अधिक पृष्ठों में विज्ञापनों, पुस्तकों के परिचय, संगीत गोष्ठियों, रंगमंचों, पोशाकों और घरेलू सेवा की तलाश में विभिन्न प्रकार के लोगों का विवरण प्रकाशित होता था। शेष पृष्ठों में कविता, गम्भीर तथा प्रहसनात्मक लेख, समाचार-पत्र को प्रेषित पत्र, जिनपर प्रेषक (सम्वाददाता) के नाम अथवा छद्मनाम के हस्ताक्षर होते थे, सामाजिक अथवा रंगमंचीय गपशप तथा सूचनाओं की चयनिकाएं छपीं रहती थीं जिनके बीच-बीच में सरकारी समाचार अथवा प्रशासनिक घोषणाएं और विदेशी मामलों की दीर्घ सरकारी रिपोर्टें भरी रहती थीं। वस्तुतः एक आधुनिक समाचार-पत्र का विकास हो रहा था। किन्तु उस समय तक समाचार-पत्र की विक्रत प्रतियों की संख्या सीमित थी। २००० प्रतियों की बिक्री को अच्छा प्रसार कहा जाता था। १७९५ में 'मार्निंग पोस्ट' का प्रसार घट कर ३५० हो गया था जबकि 'टाइम्स' का प्रसार बढ़कर ४८०० हो गया था। पत्रकारिता इस समय तक विशाल धन के अर्जन अथवा विनाश का क्षेत्र नहीं

बना था। इसका पुरस्कार था प्रभाव और वह भी विशेषकर राजनीति में। अनेक अच्छे प्रांतीय समाचार-पत्र प्रकाशित होते थे जिनमें से 'नार्थैम्पटन मर्करी', ग्लौसेस्टर जर्नल', 'नार्विक मर्करी' तथा 'न्यूकैसल कौरेण्ट' प्रमुख थे।

चार्ल्स द्वितीय के शासन काल में रंग-मंच और समाचार-पत्रों का जैसा प्रसार राजधानियों से प्रान्तों की ओर हुआ था वैसे ही पुस्तकों के मुद्रण और प्रकाशन का विकास भी हुआ था। विलियम तृतीय के शासन काल में सेंसरशिप और लाइसेंसिग एक्ट की समाप्ति से प्रिंटिंग प्रेसों की संख्या पर लगा हुआ वैधानिक नियंत्रण भी समाप्त हो गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि लन्डन में न केवल मुद्रण और प्रकाशन के व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की वहुत वृद्धि हुई वरन् अनेक अन्य नगरों में प्रान्तीय छापेखाने स्थापित हुए। उस समय पुस्तकों के प्रकाशन और विक्रय के वाणिज्य में एक ही प्रतिष्ठान या फर्म लगा रहता था।[१] १७२६ और १७७५ के बीच लन्डन के बाहर इंगलैंड में ऐसी फर्मों की संख्या १५० थी। और लगभग इतनी ही फर्में राजधानी में थीं।

डा० जॉन्सन के काल में अनेक प्रान्तीय नगरों के प्रबल साहित्यिक और वैज्ञानिक जीवन को स्थानीय समाचार-पत्रों और स्थानीय प्रकाशन फर्मों से प्रोत्साहन मिला था जो बहुधा एक उच्च स्तर का होता था। इस शताब्दी के अन्त के पूर्व ऐसी प्रथम श्रेणी की रचनाएं, जैसे वेविक की 'ब्रिटिश बर्ड्स्' और उसकी विख्यात काष्ठ-कलाकृतियों का मुद्रण और प्रकाशन न्यू केसेल ओन टाइन में हो रहा था। यद्यपि अठारहवीं शताब्दी का मुद्रण एलिजाबेथ के काल के मुद्रण की अपेक्षा कम सुन्दर था और विक्टोरिया के काल की तुलना में यह आन्तरिक रूप से कम शुद्ध होता था फिर भी उन दोनों से एक सुन्दर कला के रूप में अधिक श्रेष्ठ था।

उस शताब्दी के कुलीन लोगों द्वारा पसन्द की जाने वाली वृहत् और व्यय साध्य पुस्तकों का अधिकांश प्रकाशन चन्दे की सहायता से होता था। जिसके लिये लेखक अपने मित्रों और संरक्षकों में से ग्राहक खोजता था। इस व्यापार का अधिकांश भाग उत्कृष्ट निजी पुस्तकालयों पर निर्भर था। किन्तु लन्डन और प्रान्तों में दोनों ही स्थानों पर प्रसार पुस्तकालय विद्यमान थे, विशेषकर प्रान्त के स्वास्थ्यदायी नगरों में

---

१ इन फर्मों में से सर्वाधिक दीर्घजीवी लांगमैन्स का फर्म था। १७२४ में टाम्पसन लांगमैन्स ने इस व्यापार में प्रवेश किया था। यह अब भी एक पारिवारिक प्रतिष्ठान है और १६४० में शत्रुओं द्वारा विनिष्ट होने के पूर्व यह पैंटर नोस्टर रो नामक अपने पुराने स्थान पर ही व्यापार करता रहा था। अब केवल यह व्यापार प्रकाशन तक सीमित है, क्योंकि पुस्तकों का विक्रय एक पृथक व्यापार हो गया है।

ऐसे प्रथम पुस्तकालय की स्थापना १७४० में हुई थी। बाथ और साउथैम्प्टन दोनों में ही श्रेष्ठ प्रसार पुस्तकालय स्थित थे। निजी मित्रों और पड़ोसियों में बुक क्लब ही सामान्यतया प्रचलित थे।

कविता, यात्रा, इतिहास और उपन्यास सभी की पुस्तकें लोकप्रिय थीं। इंगलैंड में अपने निवास काल के पश्चात् जर्मन यात्री मोरिज़ ने उस काल की (१७८२) हमारी साहित्यिक सभ्यता के प्रमाण में महत्वपूर्ण उल्लेख किया है। यह निःसन्देह सत्य है कि जर्मनी के शास्त्रीय लेखकों की तुलना में अंग्रेजी शास्त्रीय लेखकों की पुस्तकों का बहुत अधिक अध्ययन किया जाता है। जर्मनी में ऐसी पुस्तकों को सामान्यतया विद्वान लोग ही पढ़ते हैं अथवा अधिक से अधिक मध्यम वर्ग की जनता। इंगलैंड के राष्ट्रीय लेखकों की पुस्तकें सभी के पास देखी जा सकती हैं और सभी लोग उन्हें पढ़ते हैं। इस बात का पर्याप्त प्रमाण यह है कि इनमें से सभी के अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं। मेरी गृह-स्वामिनी जो केवल एक दरजी की विधवा है, मिल्टन की पुस्तकें पढ़ती है और मुझे बताती है कि उसका स्वर्गीय पति इसी कारण से उसे पहले पहल प्रेम करने लगा था। यह विधवा मिल्टन को समुचित बल देकर बढ़ती थी। इस अकेले उदाहरण से कोई बात प्रमाणित नहीं होती किन्तु मैं निम्न वर्ग के अनेक लोगों से बातें कर चुका हूं। इनमें से सभी अपने राष्ट्रीय लेखकों से परिचित थे और यदि उनमें से सबकी रचनाओं को नहीं तो बहुतों की रचनाओं को उन्होंने पढ़ा था।

१८वीं शताब्दी में कुलीनों तथा धनी भद्रजनों द्वारा बृहत् सुदृढ़ जागीरों का संचय और पूंजीवादी कृषि के विकास के कारण छोटे भूस्वामी सामान्यतः विलुप्त हो गये थे। जिनकी वार्षिक आय १०० पौंड से लेकर ३०० पौंड तक थी। अथवा जो स्वयं अपनी खेती करते थे या उनमें से दो-चार खेतों को लगान पर उठा देते थे। छोटे भूस्वामी, जो एक समय में ग्रामीण क्षेत्रों के प्रशासन और जीवन में बहुत महत्व-पूर्ण थे, अब बहुत कम संख्या में शेष रह गये थे। किन्तु कुछ पहलूओं में उनके स्थान की पूर्ति ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की छोटी आमदनियों पर निर्वाह करने वाले व्यक्तियों और भद्रजनों की बढ़ती हुई संख्या से हो गई थी। किन्तु यह पुराने प्रकार के देहाती भूस्वामियों की अपेक्षा ग्रामीण जीवन से कम आवद्ध थे। इस परिवर्तन से कुछ लाभ भी हुआ और कुछ हानि भी। इससे एक उच्चतर स्तर की संस्कृति का विकास हुआ। 'प्राइड और प्रिजुडिस' नामक कृति में बेनेट का चरित्र कुछ नये प्रकार का एक उदाहरण है। भूमि की अपेक्षा उसका अपने पुस्तकालय से अधिक लगाव था। डायरी लेखक पार्सन वुडफोर्ड की वार्षिक आय केवल ४०० पौंड थी। किन्तु उससे वह अपने घर और बाहर के लिये ५ या ६ नौकर रखता था। जिससे वह अपने सम्बन्धियों की अच्छी तरह देखभाल कर सके, स्वतंत्रता से यात्रा की जा सके और धनी और निर्धन लोगों का उदारता से आतिथ्य सत्कार कर सके। प्रत्येक ६ पेंस को जब भी वह कभी व्यय करता था या देता था तो उसको लिख लेता था।

उसकी इस आदत से यह संकेत मिलता है कि वह जानता था कि उसे सावधानी से व्यय करना है। इसलिये वह एक मध्य स्तर की आमदनी से भी इतनी अच्छी शैली में जीवन-यापन करने में सफल रहा।

सबसे अच्छे प्रकार के घरेलू अथवा बाहरी कर्मचारी पर केवल १० पौंड वार्षिक व्यय होता था। बहुत से कर्मचारी इससे भी कम लेकर सन्तोष करते थे। इन दशाओं में स्त्री और पुरुष नौकरों की सेनाएं भद्र लोगों के घरों में रहती थीं। इनमें से कोई पुराने नौकर हो जाते थे जो कि अपने मालिकों की दृष्टि में घनिष्ठ और विशेषाधिकार प्राप्त स्तर के माने जाते थे। उन्हें नौकरी से निकाल देने का स्वप्न भी उनके मालिक और मालिकनियां नहीं देखते थे। प्राचीन अंग्रेजी जीवन में यह एक महत्वपूर्ण और मानव-गुण-प्रदायक तत्व था। नौकरानियों की इधर-उधर फिरने वाली जनसंख्या, जो शीघ्र ही विवाह करने के लिये नौकरी छोड़ जाती थीं, अपने सेवा काल में भोजन पकाने और गृहस्थी का प्रवन्ध करने की बहुत सी कलाओं को सीख लेती थी। उनका यह ज्ञान उन्हें पत्नी और माता होने पर बहुत लाभप्रद होता था। इन मामलों में गांवों और कुटीरों की अपनी अविस्मरणीय परम्पराएं थीं। उस काल में जब घर के निकट की दूकानों से डिब्बों में बन्द भोजनों को लेकर प्रत्येक वस्तु खरीदना सम्भव नहीं था, तब अयोग्य और अप्रशिक्षित गृहिणी नितान्त विनाशकारी मानी जाती थी और इस कारण वर्तमान नागरिक जीवन की तुलना में उनकी संख्या बहुत कम थी।

अतिरिक्त पठन-सामग्री

इस और पूर्वगामी अध्यायों की सामग्री एवं तत्संबंधी टिप्पणियों में मैंने विषय के विशिष्ट पहलुओं पर अनेक मूल्यवान रचनाओं का उल्लेख किया है। मैं विशेष रूप से चाहूंगा कि विद्यार्थी लेकी रचित 'हिस्ट्री आफ इंगलैंड इन दि एट्टीन्थ सेन्चरी के सामाजिक भागों को तथा एक अन्य बड़े महत्व की नवीन रचना 'जान्सन्स इंगलैंड', जिसे १९३३ में प्रोफेसर टर्बरविले ने आक्सफोर्ड प्रेस के लिए सम्पादित किया था, पढ़ें। इस ग्रंथ में उस काल के जीवन के कई विशिष्ट पक्षों पर अनेक विभिन्न प्रामाणिक विद्वानों के लेख संकलित हैं। हमारे इतिहास के उस काल का दिग्दर्शन इस ग्रंथ में किया गया है जब समकालीन संस्मरणों, उपन्यासों, डायरियों, जीवन चरित्रों और होरेस वालपोल के पत्रों, की भाँति सामग्री के आधार पर सामाजिक इतिहास का अध्ययन अधिक यथार्थ और बहुत आनन्ददायक हो जाता है। अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड पर एक बहुत महत्वपूर्ण निबन्ध डब्लु. पी. केर, 'कलेक्टेड एसेज' (१९२५) के प्रथम खण्ड के पृष्ठ ७२-९१ पर पढ़ा जा सकता है।

अध्याय १४

अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ तथा अन्त में स्कॉटलैंड

[१]

संघ, १७०७—कुलोडन और हाइलैंड की विजय—१७४६

इस पुस्तक का क्षेत्र चूंकि इंगलैंड के सामाजिक इतिहास तक सीमित है इसलिये पड़ोसी देश स्कॉटलैंड के विषय में यहां अभी तक कुछ नहीं कहा गया है। एडवर्ड प्रथम तथा वालास द्वारा लड़े गये युद्धों के दो शताब्दी बाद तक, स्कॉटवासियों तथा अंग्रेजों के कुछ परस्पर सम्बन्ध बने हुए थे। एलिजावेथ के राज्यकाल में दोनों का सक्रिय वैमनस्य समाप्त हो चुका था, क्योंकि कैथोलिक प्रतिक्रियावादी शक्तियों से वे दोनों ही द्वीप की रक्षा करना चाहते थे। लेकिन दोनों ही ने पृथक-पृथक धर्मप्रधान राज्यतन्त्रों को अपनाया और धर्मप्रधान राज्यतन्त्रों की इस पृथकता ने दोनों ही ओर के सामाजिक तथा बौद्धिक जीवन में विभेद उत्पन्न कर दिये।

स्कॉटलैंड के जेम्स शष्ट के इंगलैंड की गद्दी पर बैठने पर (१६०३) दोनों ही द्वीप पुनः एक दुहरे शासन तन्त्र के आधीन हो गए। जेम्स स्वयं भी इंगलैंड की अपेक्षा स्कॉटलैंड से ही अधिक परिचित था, लेकिन उसके पुत्र तथा पौत्रों के काल में स्कॉटलैंड का शासन लन्डन के ऐसे पादरियों, दरवारियों अथवा संसद्-सदस्यों की सलाह से चलाया जाने लगा जिन्हें कि स्कॉटलैंड वासियों की आदतों तथा आवश्यकताओं का कोई ज्ञान नहीं था तथा जो उनका उपयोग इंगलैंड की तत्कालीन राजनीति के ही लिये करना चाहते थे। एडिनवरा की प्रीविकाउन्सिल अपने निर्देश केवल ह्वाइट हाउस से ही प्राप्त करती थी। भले ही चार्ल्स का राज्य काल रहा हो या ओलीवर अथवा जेम्स का, स्कॉटलैंड ने अपनी इंगलैंड की इस अधीनता को कभी पसन्द नहीं किया। स्कॉटवासियों का इन लोगों के प्रति द्वेषभाव अधिक तीव्र था और अपने इस बड़े पड़ोसी देश के प्रभावों के प्रति भी वे सदा की अपेक्षा इस काल में अधिक शंकालु थे।

इन राजनैतिक परिस्थितियों में दोनों देशों का सामाजिक जीवन परस्पर पृथक ही रहा। अन्तर्राष्ट्रीय सम्वन्धों की प्रगति में वस्तुतः भौतिक तथा आर्थिक कारण भी पर्याप्त रूप में वाधक रहे थे। यातायात के मार्ग में केवल चुंगी के कारण ही वाधा उत्पन्न नहीं हुई, विशाल उत्तरी सड़क की जो स्थिति थी वह भी काफी वाधा उत्पन्न कर रही थी। एडिनवरा से लन्डन तक की यात्रा लगभग एक सप्ताह की यात्रा थी और सीमा पर स्थित अंग्रेजी वस्तियां जंगली लोगों तथा स्कॉटलैंड विरोधी लोगों की

वस्तियां थीं। धर्म, कानून, शिक्षा, कृषि प्रणालियों तथा विभिन्न वर्गों के परस्पर सम्बन्धों के वारे में इंगलैंड का नेतृत्व स्वीकार करने की तो वात ही क्या, उसकी व्यवस्थाओं को उदाहरणस्वरूप मानना भी उन्हें स्वीकार्य नहीं था।

दोनों देशों के परस्पर सम्वन्ध निसन्देह इतने कटु थे कि सन् १७०२ में, अर्थात् विलियम की मृत्यु के पूर्व, जिसका कि शासनकाल कई कठिनाइयों में होकर गुज़रा था, बुद्धिमान लोगों को यह अनुभव होने लगा था कि दोनों देशों के मध्य राजनैतिक तथा वाणिज्य के क्षेत्रों में एक समान संगठन होना चाहिये, अन्यथा दोनों देश पुनः पृथक-पृथक राज्यों का रूप ले लेंगे और तव युद्ध की अवश्यम्भावी स्थिति को किसी भी प्रकार से नहीं टाला जा सकेगा। सन् १७८८ की क्रान्ति के बाद से एडिनबरा की संसद् में स्वतन्त्रता की एक नई भावना प्रकट हुई, और इसके कारण इंगलैंड के लिये अपनी कठपुतली प्रीवीकाउंसिल द्वारा स्कॉटलैंड के मामलों पर नियन्त्रण रख पाना कठिन हो गया। दुहरे शासन की व्यवस्था विघटित हो चली थी। दोनों देशों के सम्मुख एक मात्र यही विकल्प था कि या तो समानता के आधार पर दोनों परस्पर संगठित हो जाएं, अन्यथा वर्तमान सम्बन्धों को और भी बिगाड़ लें।

यद्यपि स्कॉटवासियों में कुछ अविश्वास का वातावरण अवश्य व्याप्त हुआ लेकिन फिर भी सही विकल्प को ही चुना गया। नये आविभूत 'ग्रेटब्रिटेन' नामक प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य में दो पृथक् संसदों तथा वाणिज्य व्यवस्थाओं का स्थान यद्यपि एक संघ अथवा संगठन ने ले लिया लेकिन चर्च तथा कानूनों की दृष्टि से दोनों देशों में पर्याप्त भिन्नता रही। सन् १७०७ के इस संघ के परिणामस्वरूप यद्यपि स्कॉटलैंड को अपने पृथक् संसदीय जीवन से वंचित होना पड़ा (जिसको कि इतनी गम्भीरता से स्कॉटवासियों ने उस काल में पहले कभी नहीं लिया जितना कि हाल ही के वर्षों में लिया है), फिर भी इंगलैंड के वाजारों तथा उपनिवेशों में उसे पूरा अधिकार प्राप्त हुआ। इस सुविधा ने उसे अत्यधिक गरीबी से मुक्त होने का अवसर प्रदान किया।

लेकिन कुछ पीढ़ियों तक इस संघ से उन्हें कोई विशेष लाभ नहीं पहुंच सका। लेकिन जैकोवाइट तथा हाइलैंड की समस्याओं के सन् १७४५-१७४६ में हल हो जाने पर स्कॉटलैंड सुखपूर्ण दिनों की ओर अग्रसर होने लगा। उसकी कृषि प्रणाली से, जो कि काफी पुरानी तथा कष्टप्रद हो चुकी थी, शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व इंगलैंड के उन्नत होते हुए ज़मींदारों ने काफी शिक्षा ग्रहण की। स्कॉटलैंड के कई किसान, बागवान, इंजीनियर तथा डाक्टर दक्षिण में आए तथा अंग्रेजों को उन्होंने कई बातें सिखाईं। अंग्रेज स्कॉटलैंड की यात्रा की प्रशंसा करने लगा। स्कॉट लोग ब्रिटिश राज्य के उपनिवेशों तथा वाणिज्य, उसके युद्धों तथा भारत पर उसके शासन में भाग लेने लगे। निर्धनता की इस वर्षों की दासता से मुक्ति प्राप्त होने के बाद स्कॉटलैंड ने सहसा ही वैभव की प्राप्ति की। उसके धर्म से पुरातन निराशावादिता तथा

कट्टरता छंटने लगी लेकिन फिर भी वह जनतांत्रिक तथा शक्ति सम्पन्न बना रहा। स्कॉटलैंड के ह्यूम, एडमस्मिथ, रॉबर्टसन, ड्यूगल्ड स्टेवार्ट आदि प्रतिभा सम्पन्न पुत्रों ने उसे समस्त वैचारिकजगत में अग्रणी बनाया। उसकी धाक न केवल ब्रिटेन पर ही बैठ गयी बल्कि समस्त यूरोप के दार्शनिक उससे प्रभावित हुए। स्मोलेट, बॉसवेल तथा बर्न्स ने उसे साहित्य में तथा राएबर्न ने कला के क्षेत्र में प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी का अन्तिम चरण स्वर्णयुग कहलाने का अधिकारी बना, यही युग अगली पीढ़ी के समय में भी जबकि सर वाल्टर ने अपने गीतों तथा रूमानी भावधारा द्वारा स्कॉटिश विचारों को समस्त यूरोप पर अंकित किया बना रहा।

हैनोवरकालीन स्कॉटलैंड में हुए परिवर्तनों के सम्बन्ध में इस अध्याय में मैं पहले महारानी ऐन्नी[1] के समय के संघ में जो उसकी अवस्था थी उसकी चर्चा करूंगा और उसके बाद जार्ज तृतीय के शासनकाल के मध्य में उसकी जो दशा थी उसकी।

[१]

सन् १७०७ के संघ के समय स्काटलैंड

शासक विलियम, १६८९-१७०२, महारानी ऐन्नी, १७०२-१७१४

बर्न्स तथा सर वाल्टर के समय से ही स्कॉट तथा इंगलैंडवासी दोनों स्कॉटिश कहानियों तथा परम्परा में समान रूप से रस लेते रहे थे, कभी-कभी उनकी साहित्यिक अभिरुचि भावुकता की सीमा तक भी पहुंच जाती थी। वे अन्य अधिकृत देशों के साथ अपने देश में तथा स्कॉटलैंड में भी प्राकृतिक दृश्यों के सौंदर्य-पान के लिये जाते थे तथा स्कॉटलैंडवासियों की उत्कृष्टता के प्रति एक ईर्षा मिश्रित प्रशंसा का भाव भी रखते थे। लेकिन ऐन्नी के शासनकाल में एक दूसरे से पूर्णतया परिचित नहीं होना अंग्रेजों तथा स्कॉटवासियों में परस्पर द्वेष भाव तथा दुराव का एक बहुत बड़ा कारण था। दोनों देशों के लोगों में सम्पर्क काफी कम तथा सौहार्द्रशून्य था। स्कॉट अपनी जीविका उपार्जन के लिये इंगलैंड की अपेक्षा यूरोप ही अधिक जाना पसन्द करते थे। देश निष्कासित जैकोबाइट लोग (जेम्स द्वितीय के मतानुयायी) इटली तथा फ्रांस में रहते थे। प्रेसबिटर चर्च के पादरी तथा वकील कैलविनवादी धर्मशास्त्र तथा रोमन कानून के मूल-केन्द्रों में अध्ययन के लिये डच विश्वविद्यालयों में गए। स्कॉटलैंड के आयात-निर्यात कर्त्ता व्यापारी हालैंड तथा स्कैन्डीनेविया जाते रहे लेकिन इंगलैंड के उपनिवेशों से अलग रहे। सीमा निवासियों के अतिरिक्त, जो कि प्रत्येक स्कॉटिश वस्तु के प्रति घृणा का भाव रखते आए थे, व्यापार के लिये जो अंग्रेज स्कॉटलैंड की

---

[1] इसकी सविस्तार चर्चा मैंने अपनी 'इंगलैंड अण्डर क्वीन ऐन्ने' नामक पुस्तक के दूसरे भाग में स्कॉटलैंड का विवरण देते समय की है।

कैवियट पहाड़ियों को पार कर सके उनकी संख्या बहुत कम थी; नार्थम्बर के ईर्षालु लोग यात्रियों को आगाह किया करते थे कि 'स्कॉटलैंड संसार में सबसे अधिक बर्बर देश है।' स्कॉटलैंड के पशु-व्यापारी अपने पशुओं को उत्तरी इंगलैंड के मेलों में बेचने जाते थे लेकिन वास्तव में दोनों देशों का परस्पर व्यापार इतना कम था कि कभी-कभी लन्दन से एडिनबरा जाने वाले पत्रों की संख्या केवल एक हुआ करती थी।

एक वर्ष में मनोरंजन के लिये स्कॉटलैंड की यात्रा करने वालों की संख्या लगभग एक दर्जन से अधिक नहीं होती थी। और इनमें से भी अपेक्षाकृत कम स्वस्थ यात्री, गन्दे कमरों वाली बेढंगी सरायों के कारण जहां केवल अच्छी फ्रेन्च शराब तथा ताजा मछली के अतिरिक्त ऐसी कोई भी खाद्य सामग्री उपलब्ध नहीं थी जो अन्य स्वादिष्ट व्यंजनों की क्षतिपूर्ति कर सकती, शीघ्र ही वापस चले जाते थे। अंग्रेज यात्री की अपने प्रति स्कॉटलैंड के इस व्यवहार की शिकायत पूर्णतया उचित नहीं थी, वह स्वयं भी 'घोड़े को अस्तबल की जगह ऐसे स्थान पर रखने के लिये दोषी था जो घोड़ा क्या किसी सुअर के रहने योग्य भी नहीं होता था', और वहां उसे अच्छी घास के बदले केवल भूसा ही उपलब्ध हो सकता था। यदि ये यात्री कुछ लोगों से पूर्व परिचय के आधार पर आते और कुछ भद्र स्कॉट लोगों के घरों में उसी प्रकार अतिथि बन पाते जैसे कि स्कॉट लोग आपस में हुआ करते थे, तो उन्हें इतने कष्ट न झेलने पड़ते।

इसके अतिरिक्त, स्कॉटलैंड में उस समय कोई ऐसी विशेषता भी नहीं थी जिसे दर्शक-यात्री सुन्दर समझकर उसके प्रति आर्कषित हो पाते। निस्सन्देह स्कॉट लोग अपने देश की मटियाली भूमि तथा हरे-भरे वन-प्रान्तर के प्रति अपने अन्तर्मन में आकर्षण का अनुभव करते थे, लेकिन जब अपने इस अजान स्नेह को वे स्वयं ही साहित्य द्वारा व्यक्त न कर सके तो पड़ोसी अमित्रों के लिये उस वन्य सौंदर्य के प्रति आर्कषित हो पाना तो और भी कठिन था। बेरविक से एडिनबरा की यात्रा करने वाला अंग्रेज स्कॉटलैंड के दृश्यों को उदास बियावान तथा अव्यवस्थित जई के खेतों में विभाजित कर उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से ही देखता था। एडिनबरा के आसपास के क्षेत्र को छोड़कर यह सब घने वृक्षों से रहित तथा उन हवेलियों, बगीचों, ऊंचे गिरजा घरों तथा सुव्यवस्थित खेतों से विहीन था जिन्हें कि अंग्रेज यात्री अपने देश में निरन्तर देखते रहने का आदी हो चुका था। जहां तक उन्नत प्रदेशों के पहाड़ों का प्रश्न है, उस रास्ते व्यापार या नौकरी के सिलसिले में बहुत थोड़े ही अंग्रेज लोग जाते थे और वे उनकी 'भयानक' तथा छोटी कंटीली झाड़ियों के खिले होने पर 'सर्वाधिक अप्रिय' कहकर निन्दा करते थे।

स्कॉटवासी वस्तुतः या तो जैकोबाईन चर्च के अनुयायी थे या प्रेसबिटेरी चर्च के और दोनों ही स्थितियों के कारण उन्हें अधिकांश अंग्रेज लोगों की सहानुभूति से वंचित रहना पड़ा। अंग्रेज किसी भी सम्प्रदाय अथवा धर्म का मतावलम्बी क्यों न हो, स्कॉट-चर्च (किर्क) के कठोर सामाजिक नियमों को देख कर या तो आश्चर्य प्रकट करता था

या उसका मजाक उड़ाता था। स्कॉटलैंड पर प्रभुसत्ता के काल में क्रामवैल के सैनिक लोग 'प्रायश्चित के स्टूल पर घृणापूर्ण उपहास के साथ बैठते थे, तथा महारानी ऐन्नी के काल में भी नैतिक सुधार का यह उपकरण विमतवादी अंग्रेजी सम्प्रदायों की स्वच्छन्दता की भावना से उतना ही विलग था जितना कि शिथिल अधिकार सम्पन्न गांव के पादरी से था। अंग्रेज विमतवादियों के कैलेमी नामक एक नेता ने स्कॉटलैंड के प्रेसबिटेरी चर्च से भ्रातृत्व स्थापित करने के उद्देश्य से सन् १७०६ में एक बार स्कॉटलैंड की अपनी यात्रा के दौरान उनकी धार्मिक सभा की कार्यवाही को 'मतविरोधियों के उत्पीड़न की पुनरावृत्ति' कह कर उन्हें अपमानित किया था। राजनीति तथा धर्म से सम्बन्धित सभी प्रश्नों के अतिरिक्त, स्कॉट लोगों का वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान उनकी निर्धनता के प्रसंग में, कल्पना शून्य अंग्रेजों को उपहासप्रद ही प्रतीत होता था। यद्यपि किसी भी 'भद्र-पुरुष' को स्वाभिमानी अवश्य होना चाहिये लेकिन बड़े लवादे वाले अंग्रेज व्यापारी की दृष्टि में किसी का फटे हाल दिखाई देना उपहासप्रद ही था। स्कॉटों को बहुधा ही ऐसे असंस्कृत उलाहनों का सामना करना पड़ता था जिसे सुनकर वे चुप तथा कठोर ही अधिक होते थे।

स्कॉट लोग अंग्रेजों को धन का घमंड करने वाले उद्दंड पड़ोसियों के रूप में देखते थे तथा उन्हें घृणित समझते थे। परम्परा, इतिहास, लोकप्रिय कविताओं आदि में जिनका कि इस कल्पनाशील तथा भावुक प्रजाति पर अत्यधिक प्रभाव था—सभी में इंगलैंड को एक पुराने शत्रु के रूप में देखा जाता था। चार शताब्दियों से एक-एक कर दक्षिणवासियों से निरन्तर होते आ रहे युद्ध स्कॉट कविताओं तथा कहावतों का विषय बन गए थें। प्राचीन साम्राज्य में शायद ही कोई ऐसा स्थान हो जिसके निवासी अंग्रेजों द्वारा उसे जलाये जाने की कहानी नहीं सुनाते थे। और फ्लोड्न, जिसकी कि प्रतिशोध ज्वाला अभी तक शान्त नहीं हुई थी, गीतों का कथानक बन कर प्रत्येक स्कॉट-वासी के हृदय में धधकती थी।

एडिनबरा की संसद् विद्रोह के बाद यद्यपि कुछ महत्वपूर्ण अवश्य हो गई थी लेकिन जनकल्पना तथा लोगों के सामाजिक जीवन में उसका कोई विशेष महत्व नहीं बन पाया था। संसद की बैठकें 'पार्लियामेंट हाउस' कहलाने वाले हाइस्ट्रीट पर स्थित एक विशाल कक्ष अथवा हाल में हुआ करती थीं। संघ बन जाने के बाद उसे वकीलों को दे दिया गया था, और आज भी स्कॉटलैंड का वह एक अत्यन्त प्रसिद्ध दर्शनीय कक्ष है। इस कक्ष की ऊंची लकड़ी की छत के नीचे, अभिजात (नोबल) सामन्त (बैरन) तथा नगर प्रतिनिधिगण (बरजेस) सम्मिलित रूप से बैठते थे, उन्हें यद्यपि तीन पृथक श्रेणियों के रूप में देखा जाता था लेकिन वे सभी उस एक ही कक्ष में बहस करते थे तथा मतदान करते थे।

यद्यपि ये बैरन अथवा काउन्टी के सदस्यगण, इंगलैंड की लोकसभा (हाउस ऑफ

कॉमन्स) की भांति चालीस शिलिंग वाले माफ़ी-जागीरदारों (फ्री-होल्ड) की मत-गणना द्वारा नहीं चुने जाते थे लेकिन प्रत्येक को कुछ ऐसे भद्र पुरुष चुना करते थे जो स्कॉटिश कानून की दृष्टि में राजा के प्रमुख भूमिधर माने जाते थे। स्कॉटलैंड के संसद में प्रतिनिधि भेजने वाले नगर भी उतने ही निम्नकोटि के थे जितने अंग्रेजी नगरों (जहाँ से कि संसद के प्रतिनिधि चुने जाते थे) के निकृष्ट भाग। अतः स्कॉटलैंड की संसद में जाने वाला प्रतिनिधि दल, अंग्रेजी संसद के प्रतिनिधियों की तुलना में निम्न-कोटि का था और इसी को वास्तविक प्रतिनिधित्व कहा जा सकता था। कुछ इस कारण से तथा कुछ स्कॉटलैंड की सामाजिक संरचना के सामन्तवादी तथा कुलीन-तन्त्री (एरिस्ट्रोक्रेटिक) होने के कारण, संसद में अभिजात वर्ग अत्यन्त शक्तिशाली वर्ग था। मुख्य रूप से यही लोग संसद की बहसों तथा गुटबन्दियों का नेतृत्व तथा उसके क्रियाकलापों व नीतियों का निर्धारण करते थे।

इस अभिजात वर्ग की प्रधानता केवल संसद तक ही सीमित नहीं थी। देहाती क्षेत्र के प्रत्येक जिले में लोग प्रथा, सम्मान तथा सुरक्षा की आवश्यकता के कारण किसी ऐसे बड़े घराने से अवश्य सम्बन्धित रहते थे जो स्कॉटलैंड की दृष्टि में उनके क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता था। स्कॉटलैंड के ताल्लुकेदारों को बुलाकर उन्हें हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था तथा उनके साथ वे विदेश जाते थे, स्थानीय कुलीन (नोब्ल) अपने महल में उन्हें भोज पर आमन्त्रित करता था, झगड़ों में उनका पक्ष लेता था, उनके स्वार्थों को सिद्ध करने के प्रयत्न करता था तथा बदले में उनसे अपेक्षा करता था कि वे उसके सम्मान-स्तर को बनाए रखने में उसकी सहायता करेंगे—चाहे वह सरकार के पक्ष में उसका उपयोग करे, चाहे यदि सरकार ने उसके अधिकारों का हनन किया है तो उसके विरुद्ध उनका उपयोग करे।

यदि ह्विग तथा जैकोवाइट परस्पर झगड़ते भी थे, जैसाकि वे महारानी ऐन्नी के काल में कई बार कर चुके थे और सन् १७१५ में तो उनसे वास्तविक संघर्ष हो भी चुका था, इसका श्रेय अरगाइल, एथोल, भार अथवा उस क्षेत्र के किसी अन्य अभिजात को ही प्राप्त होता था और इंगलैंड में यह स्कॉटलैंड की अपेक्षा कुछ कम अनुपात में था। यदि समस्त अभिजात वर्ग सरकार के विरुद्ध संगठित हो जाता तो स्कॉटलैंड की सेना उन्हें देर तक दबाए रखने में सफल नहीं होती। लेकिन अन्य वर्गों की भांति वे भी विभाजित थे। और लगभग वे सभी जो राजनीति में भाग लेते थे पद लोलुप थे क्योंकि गरीब देहाती क्षेत्र से प्राप्त होने वाली थोड़ी मालगुजारी तथा वस्तु-राशि पर सामन्ती राज्य को बनाए रखने के लिए लगभग वे सभी विवश हो चुके थे तथा पद को ही कुलीन जागीरदार की आय का स्वाभाविक साधन समझने के लिये संस्कारों द्वारा विवश हो चुके थे। लेकिन जैकोवाइट तथा ह्विग, दोनों ही पक्षों में स्वार्थियों के अतिरिक्त राष्ट्रभक्त तथा चतुर राजनीतिज्ञ भी थे और उन्हें मालूम था कि अपने देश के

हितों की पूर्ति किस प्रकार की जाती है; उनकी वर्ग स्थिति भी अन्यों की अपेक्षा इतनी उच्च थी कि उन्हें जनता में जनप्रिय बनने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसी कोटि के लोगों ने संघ की स्थापना में सहयोग दिया था।

कुलीनों के बाद तालुकेदार अथवा ग्राम्य क्षेत्र के भद्रजन आए। उनके गढ़ीनुमा तथा क्षीणकाय ढलवां तिकोनी छतों वाले भवन वृक्षों तथा झाड़ियों से विहीन भूमि पर बनाए गए थे। इंगलैंड की भांति भवन निर्माण कला उतनी विकसित नहीं हो पाई थी। देहात के ऐसे अनेकों मकान पिछले युगों में युद्ध में काम आने वाली मीनारों में जोड़ तोड़ कर बनाए गए थे। उत्तरी दिशा में शायद ही कभी कोई खिड़की बनाई गई हो; उस दशा में जबकि उत्तर दिशा में ही किसी सुन्दर दृश्य को देखना सम्भव हो सकता था कोई खिड़की नहीं बनाई गई। घर के लॉन, बराम्दों तथा बगीचों का समय अभी आना शेष था। कृषकों के मकान, तथा उनका कूड़ा और दुर्गन्ध उन भवनों का स्पर्श करते थे; उनकी दीवारों के एक ओर अनाज के खेत थे तथा दूसरी ओर अव्यवस्थित गोभी का बगीचा और दवा बनाने वाली जड़ी-बूटियां तथा जंगली फूलों के पेड़।

घर का भीतरी भाग भी, द्वीप के अन्य दक्षिणी भागों में प्रचलित विलास की वस्तुओं से शून्य था। फर्नीचर काफी साधारण कोटि का था, फर्श पर गलीचे नहीं थे, तथा दीवारों पर किसी प्रकार के चित्र अथवा कागज आदि कुछ भी नहीं टांगे गए थे। 'अग्नि-कक्ष' ('फायर रूम') को छोड़कर सोने वाले कमरों में आग तापने का कोई स्थान नहीं था। क्योंकि आमोदी ताल्लुकेदार के लिये रात को घर लौटना सुरक्षित नहीं था—अतः अतिथियों के लिये ड्राइंग रूम में ही सोने का स्थायी प्रबन्ध रहता था। आतिथ्य सत्कार में, एक ही बार में अनेकों प्रकार का मांस तथा स्कॉटलैंड की बनी जौ की शराब परोसी जाती थी; इंगलैंड में स्थानीय ह्विस्की से सत्कार किया जाता था। महारानी ऐन्नी की स्कॉटिश प्रजा चाय को एक खर्चीली औषधि मानती थी यद्यपि मितव्ययिता की अत्यन्त आवश्यकता थी, लेकिन अतिथि सत्कार एक राष्ट्रीय स्वभाव बन चुका था। गांव के मकान में समकालीन इंगलैंड की अपेक्षा समय बिताने के साधन पर्याप्त नहीं थे अतः पड़ोसी गांवों के लोग घोड़े पर सवार हो अकस्मात् ही आ जाया करते थे और करीब आधे दिन तक ठहरते थे; उनका हार्दिक स्वागत किया जाता था।

एडिनबरा तथा अन्य कस्बों में गोल्फ के खेल को आदर की दृष्टि से देखा जाता था। सम्पूर्ण स्कॉटलैंड में खरगोश, ग्राउस (एक बड़ा पक्षी), तीतर आदि शिकारों को बन्दूकों की अपेक्षा कुत्तों, बाजों तथा जाल की सहायता से ही अधिक मारने अथवा पकड़ने का प्रयत्न किया जाता था। लेकिन पहले प्रायः ही पाये जाने वाले लाल हिरण अब इंगलैंड के जंगलों में चले गये थे। सामन तथा ट्राउट मछलियों की इतनी

अधिकता थी कि उनका शिकार न केवल मनोरंजन का ही साधन था बल्कि उनसे गरीब लोगों को भोजन भी प्राप्त होता था। कुछ क्षेत्रों में सामन को खाते-खाते भद्रजन काफी ऊब चुके थे और किसान भी खेती की ओर रुचि लेने लगते थे।

स्कॉटलैंड के भद्रजन, ह्विग तथा जैकोबाइट के राजनैतिक विभाजन से यदा कदा ही अलग दिखाई देने वाले प्रेसबिटेरियन तथा एपिस्कोपैलियन वर्गों में बंटे हुए थे। अंग्रेजी अर्थों में वहां टोरी (अनुदारवादी) लोग नहीं थे, क्योंकि टोरी ऐसा एपिस्कोपैलियन था जिसने 'रिवोल्यूशन सेट्लमैंट (क्रान्ति व्यवस्था) को इसलिये स्वीकार किया था कि उसके कारण टोरी के गिरजे को स्थायित्व तथा विशेष सुविधाएं मिली थीं, जबकि स्कॉटलैंड में क्रान्ति के कारण पोप का अधीनस्थ चर्च उखड़ चुका था तथा कानून द्वारा भी उसे मान्यता नहीं मिल सकी थी, अतः स्कॉटिश पोप-अनुयायी जैकोबाइट थे तथा अपने सुख की प्राप्ति के लिये क्रान्ति का विरोध करते थे। अंग्रेजी तथा स्कॉटिश राजनीति में यही प्रमुख भेद था और इसने उत्तरी राज्य (नारदर्न किंगडम) के सामाजिक जीवन तथा सम्बन्धों को अत्यधिक प्रभावित किया।

पारिवारिक तथा धार्मिक अनुशासन एपिस्कोपेलियन परिवारों की अपेक्षा प्रेसबिटेरियन परिवारों में अधिक कठोर हो रहा था। जैकोबाइट परिवार में अपेक्षाकृत अधिक स्वतन्त्रता तथा उल्लासपूर्ण वातावरण था। लेकिन अत्यधिक प्रेसबिटेरियन धर्मनिष्ठा तथा सार्वजनिक सेवा की तीव्र भावना के कारण कुलोडन के फोर्बस में व्याप्त अत्यधिक मद्यपता, आतिथ्य सत्कार, विद्यानुराग तथा स्वातन्त्र्य प्रेम में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई। और महारानी ऐन्नी के गद्दीनशीन होने पर भी स्तोत्र-गान, उपदेश तथा प्रार्थना के कार्यक्रम पोप के सभाभवन में तथा प्रेसबिटेरियन पादरी चर्च में लगभग उसी रूप में चलते रहे। महारानी के शासनकाल के उत्तरार्ध में ही इनमें से कुछ धार्मिक सभा भवनों में प्रार्थना पुस्तकों (प्रेयर बुक) का प्रचलन आरम्भ हुआ। प्रतिस्पर्धी सम्प्रदायों द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों में चर्च-आधिपत्य सम्बन्धी धारणाओं को छोड़कर कोई विशेष मतभेद नहीं था और चर्च आधिपत्य के विषय में भी कोई अधिक मतभेद नहीं था, क्योंकि नैतिक नियमन तथा जांच के लिए पोप के अनुयायियों की भी अपनी पृथक चर्च-सत्ताएं (प्रेस्बिटेरीज) तथा किर्कसत्र (किर्क सेशन्स) हुआ करते थे।

अतः दोनों सम्प्रदायों में तीव्र अन्तर अथवा विभेद वस्तुतः राजनैतिक पक्षों में ही था, और इसका प्रभाव स्कॉटलैंड के सामान्य जन की अभिव्यक्तियों पर नहीं पड़ सका। शैफ्टसबरी तथा बोलिंग-ब्रोक की भूमि से ह्यूम की भूमि पर स्वतन्त्र विचार-धारा का प्रसार नहीं हो सका। विलियम के शासन-काल में एडिनबरा के एक अभागे विद्यार्थी को ट्रिनिटी तथा धर्मशास्त्र की प्रभुता के सम्बन्ध में ऐसी शंकाएं व्यक्त करने

के कारण, जो कि लन्डन के कॉफ़ी हाउस में एक आक्रोश को जन्म दे सकती थीं, फांसी दे दी गई थी।

लगभग सभी स्कॉटिश परिवार, विशेष रूप से भद्र वर्ग के, नियमित रूप से या तो पादरी चर्च (पेरिश चर्च) अथवा एपिस्कोपल सभा-भवनों में जाते थे जहां कि उन्हें विभिन्न अनुपातों में पानी के घोल के साथ उसी आध्यात्मिक औषधि का पान कराया जाता था। निर्धनता तथा धार्मिक मतभेदों का प्रभाव राष्ट्रीय चरित्र पर संयुक्त रूप से पड़ा था जिसके कारण तीव्र राजनैतिक विभाजन गौण हो गए थे तथा केवियट पहाड़ियों के दक्षिण की धनिक तथा विषयासक्त सभ्यता के विरुद्ध सभी स्कॉट नैतिक तथा मानसिक रूप से संगठित हो गए थे। महारानी ऐन्नी के शासन के अन्तिम चरण में एडीसन तथा स्टील द्वारासंपादित **स्पैक्टेटर** पत्र की महिलाओं तथा भद्रपुरुषों में बढ़ी लोकप्रियता, दक्षिणी ब्रिटेन के उत्तर (नार्थ) पर होने वाले बौद्धिक आक्रमण का पहला यथार्थ उदाहरण थी। संघ निर्माण के परिणामस्वरूप ऐसे प्रभावों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होने लगी।

राष्ट्र की बौद्धिक एकता तथा उसके सामाजिक वर्गों को ठीक से समझ पाने की क्षमता सर्वाधिक थी क्योंकि स्कॉटिश ताल्लुकेदार उन दिनों अपने बच्चों को गांव की पाठशाला में पढ़ने भेजते थे। स्कॉटिश भद्रजन अपने लड़के को किसी अंग्रेजी पब्लिक स्कूल में भेजने की बात मित्व्ययिता तथा राष्ट्रप्रेम के कारण सोच भी नहीं सकता था। गांव की पाठशाला द्वारा प्रदत्त शिक्षा से स्थानीय प्राकृतिक स्थलों तथा उसकी अपनी भूमि के प्रति बच्चे में प्रेम की भावना अधिक दृढ़ होती थी तथा अपने पिता की जमींदारी में काम करने वाले अपने भूतपूर्व सहपाठी किसानों को देख कर उसमें उनके प्रति सहानुभूति जागृत होती थी। स्कॉट मातृभाषा में बोलते हुए शीर्षस्थ लोग किसी प्रकार की शर्म महसूस नहीं करते थे; देहाती परम्पराएं तथा लोकगीत सभी की समान धरोहर थे। इसी कारण दो पीढ़ियों के बाद, बर्न्स तथा स्कॉट के समय में स्कॉटलैंड के काव्य तथा परम्पराओं ने कम सौभाग्यशाली देशों में, जहां कि गरीब तथा अमीर लोगों की संस्कृतियों में स्पष्ट अन्तर था, पहुँच कर लोगों की कल्पना को अभिभूत किया। स्कॉटलैंड इंगलैंड की अपेक्षा सामन्तवादी तथा समानतावादी दोनों ही अधिक था। एक स्पष्ट तथा निश्चित सामाजिक स्तरों से युक्त समाज के वर्गों में आश्चर्यजनक रूप से समान वाणी-स्वातन्त्र्य का होना, उन लोगों के परस्पर सम्बन्धों की विशेषता थी जो कि स्कूल में एक साथ एक बेंच पर बैठ चुके थे तथा जिनके पिता युद्ध संकट में कंधों से कंधा रगड़ते हुए साथ-साथ लड़ चुके थे।

लेकिन ऐन्नी के काल में विश्व के बौद्धिक क्षेत्र में स्कॉटलैंड ने किसी भी प्रकार का साहित्य अथवा बौद्धिक स्थान प्राप्त नहीं किया। उस देश की निर्धनता अब भी काफी अधिक थी तथा धर्म काफी संकीर्ण था। लेकिन महानता के बीज तब भी थे,

वस्तुत: यह निर्धनता तथा धर्म स्वयं एक राष्ट्रीय मानस को जन्म दे रहे थे। स्विफ्ट, जो कि स्कॉटवासियों के प्रेसबिटेरियन होने के कारण उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता था, स्वयं यह स्वीकार करता था कि उनका युवा वर्ग अंग्रेजों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित था। डिफो ने कुछ अतिशयोक्तिपूर्वक लिखा कि—"आपको भद्र लोगों की बहुत ही थोड़ी संख्या ऐसी मिलेगी जो कि अशिक्षित अथवा अज्ञानी हो। स्कॉटलैंड में ऐसे नौकर भी आसानी से नहीं मिलेंगे जो पढ़ लिख नहीं सकें।" सन् १७०५ में जब कुलोडन का फोबर्स लेडन विश्वविद्यालय में अपनी कानून की शिक्षा के लिये गया था तब उसे विदेश में रहने वाले देशवासियों के गम्भीर तथा अध्ययनशील स्वभाव में तथा बड़ी यात्राएं करने वाले फिजूलखर्च युवा अंग्रेजों के स्वभाव में, जो मूल निवासियों की विनम्रता तथा सहन शक्ति का मूल्य उनके तिरस्कार तथा अपने अज्ञान द्वारा चुकाते थे और झगड़ों तथा व्यभिचार में निरत रहते थे, जमीन आसमान का अन्तर दिखाई दिया।

आधुनिक कसौटी पर स्कॉटिश स्कूलों की शिक्षा अत्यन्त अनुपयुक्त प्रतीत होती है। सुधार आन्दोलन के समय कुलीन (नोबल्स) लोगों ने, शिक्षा में व्यय होने वाले चर्च के धर्म-दाय को, जिसे जॉननॉक्स की 'धार्मिक कल्पना' ने शिक्षा की एक प्रमुख विशिष्टता माना था, चुरा लिया था। तब से जन शिक्षा के लिये चर्च ने निरन्तर प्रयत्न किये लेकिन इसमें भद्रवर्ग तथा कंजूस 'उत्तराधिकारियों' से, जिनका कि धन पर नियंत्रण था, बहुत कम सहयोग मिला। सन् १६३३ तथा १६९६ के उत्कृष्ट कानूनों में यह व्यवस्था की गई कि प्रत्येक हल्के में एक अच्छा स्कूल खोला जाए तथा स्थानीय शुल्कों से उसका खर्च चलाया जाए। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही थी; ऐन्नी के शासन काल में कई हल्कों में एक भी स्कूल नहीं था, और जहां-जहां स्कूल थे वे अधिकांश अंधेरे, अपर्याप्त स्थान वाले, गन्दे मकान में थे, तथा शिक्षक अथवा शिक्षिका को भोजन आदि के लिये आवश्यक वेतन भी नहीं दिया जाता था। ऐन्नी के शासन काल की अन्तिम अवस्था में, फाइफ में जहां तीन में से दो पुरुष तथा बारह स्त्रियों में से केवल एक स्त्री अपने हस्ताक्षर कर सकती थी, गैलोवे में बहुत थोड़े लोग पढ़ सकते थे।

दूसरी ओर यद्यपि स्कूलों की संख्या पर्याप्त नहीं थी लेकिन जो थी उनमें से लेटिन अधिकांश में पढ़ाई जाती थी; नगरों के स्कूलों में इस ओर और भी अधिक ध्यान दिया जाता था। ग्रामीण तथा नागरिक स्कूल केवल प्राथमिक शालाएं ही नहीं थे; कुछ उत्कृष्ट तथा प्रौढ़ अध्येताओं को भी विश्वविद्यालय के लिये कॉलेज के अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता था। बहुत से अध्यापक जिन्हें वास्तव में पूरा भोजन भी उपलब्ध नहीं था यद्यपि पुस्तकें नहीं खरीद सकते थे फिर भी विषय का आधारभूत ज्ञान उन्हें पर्याप्त रूप में था; और यद्यपि वे थोड़े ही लोगों को शिक्षित

करते थे लेकिन वह छोटा प्रशिक्षित वर्ग स्कॉटिश गणतन्त्र का मूल होता था; शिक्षा के लिये उन छात्रों में बलिदान की भावना भरी जाती थी और वे थोड़ी मात्रा में भी उपलब्ध पाठ्य सामग्री अथवा सुविधाओं का पूर्ण उपयोग करते थे। यह यूरोप का अन्य कोई भी राष्ट्र नहीं कर सका, इसीलिये शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन लोगों ने स्वयं को तथा अपने देश को सभ्यता के उच्च शिखरों तक पहुँचाया।

उस शताब्दी के प्रभात में स्कॉटलैंड के विश्वविद्यालय, झुटपुटे से घिरे हुए थे और उन्हें प्रिन्सिपल राबर्टसन्, एडमस्मिथ तथा एडिनबरा के दार्शनिकों के स्वर्णिम प्रकाश में जगमगाना अभी शेष था। नागरिक विक्षोभ का काल विरले ही कभी राज्य नियन्त्रित शिक्षण संस्थाओं के अनुकूल होता है। चार्ल्स द्वितीय के बिशपप्रधान शासन में स्कॉटलैंड के आधे विद्वानों को शैक्षणिक जीवन से विलग ही रखा गया तथा अन्य आधे भाग में से अधिकांश को क्रान्ति ने पृथक कर उनके स्थान पर ऐसे लोगों को प्रतिष्ठित किया कि जिन्होंने डाकुओं से बहुधा ही आक्रमित जंगली गुप्त धर्म स्थानों में बैठकर ज्ञान की जगह कट्टरता अधिक सीखी थी।

सभी वर्गों—कुलीनों, ताल्लुकेदारों, मन्त्रियों, किसानों तथा मिस्त्रियों—के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। अधिकांश विद्यार्थी सुविधा सम्पन्न पादरी अधिक बनने का प्रयत्न करते थे लेकिन इसके लिये आवेदकों की संख्या अत्यधिक थी। छोटी-छोटी छात्रवृत्तियों की संख्या तथा ज्ञानार्जन के प्रति कृषक के उत्साह के कारण उन दिनों में भी जबकि शिक्षितों के लिये कुछ अन्य धन्धे सम्भव थे, इस पवित्र पेशे के प्रति एक पूरी भीड़ आसक्त थी। छोटे पादरी, ताल्लुकेदार के गृह शिक्षक (ट्यूटर) तथा कम वेतन प्राप्त स्कूल शिक्षिकों का वर्ग कठिन स्थिति में था। लेकिन जो लोग खैराती हल्कों (पैरिश) में नियुक्त हो सकते थे उस समय के सामान्य जीवन स्तर की दृष्टि से इतनी कठिन स्थिति में नहीं थे। अंग्रेज विद्रोही नेता कैलेमी ने सन् १७०९ में अपनी उत्तरी ब्रिटेन की यात्रा के बाद लिखा था :

'जहां तक स्कॉटलैंड के उन पादरियों का प्रश्न है कि जो वहां जम चुके हैं, उन्हें यद्यपि इंगलैंड के चर्च की भांति उतनी अधिक मात्रा में सुविधाएं प्राप्त नहीं थीं फिर भी ऐसा कुछ नहीं था कि वे सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये जितनी सम्पन्नता की आवश्यकता होती है, उतनी भी प्राप्त न कर सकें।'

अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये किये गये संघर्षों के दौरान वे ऊपरी मंजिल के कमरों में रह कर जई की रोटियों से ही अपना जीवन-यापन करते रहे। कुछ निश्चित छुट्टियों में देहाती छात्र खाली थैले को लेकर अपने गांव वाले घर जाता था तथा वहां से अपने पिता के खेत में पैदा हुए अनाज से उसे भर कर वापस लौट आता था।

स्कॉटिश रियासत में किसान वहां के ताल्लुकेदार से पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर ही व्यवहार करता था; और अपनी भूमि के निरीक्षण पर आए हुए ताल्लुकेदार को उस स्पष्टवादी प्रजाति के तीक्ष्ण शब्दों का सामना करना पड़ता था। वस्तुतः वे आर्थिक तथा सामन्तशाही दोनों ही स्तरों पर उसके दास थे। इन संबंधों का अंग्रेज यात्रियों ने, जैसा कि वे कहा करते थे, नया ही अनुभव किया था। यद्यपि इंगलैंड में सामन्तवादी अदालतों की समाप्ति बहुत पहले हो चुकी थी लेकिन असामियों पर व्यक्तिगत अधिक्षेत्र-कुछ स्थितियों में दीवानी तथा कुछ में दीवानी तथा फौजदारी दोनों—स्कॉटलैंड में सामान्य रूप से प्रचलित था। लन्डन के राजनीतिज्ञों का मत था कि प्रोटेस्टेन्ट राज्याधिकार इस प्रकार की 'उच्चताओं' के कारण ही खतरे में था तथा इन उच्च प्रस्थितियों ने ही स्कॉटिश प्रजा को राजकीय अदालतों के क्षेत्र से पृथक कर लोगों तथा उनकी सम्पत्ति को जैकोबाइट सर्वाधिपतियों के अधीन बना दिया था।

किसानों को भूमि का वितरण प्रति वर्ष, कभी भी समाप्त हो सकने वाले अनुबन्ध के आधार पर किया जाता था, जिसके कारण वे ताल्लुकेदार अथवा उसके कर्मचारियों की ही दया पर पूरी तरह आश्रित हो जाते थे तथा जिस भूमि को वे जोतते थे उसके सुधार का प्रयत्न भी नहीं कर पाते थे। और ताल्लुकेदार भी अपने असामियों की भूमि के सुधार के लिये अपनी पूंजी यदाकदा ही लगाता था। और कभी कभी इच्छा होने पर भी उसके पास साधनों का अभाव होता था। भूमि-शुल्क के रूप में पांच सौ पौंड की आय स्कॉटलैंड में बहुत बड़ी सम्पदा मानी जाती थी, पचास पौंड की आय सामान्य कोटि की आय थी, तथा कुछ विशेष प्रकार के टोपधारी ताल्लुकेदारों को तो केवल बीस पौंड की आय द्वारा तथा अपनी जमीन पर खुद खेती करके अपने परिवार का भरण-पोषण करना पड़ता था। अंग्रेजी सामन्तवर्ग की पूंजी का चित्रण करने के लिये इन राशियों को दस से गुणा करके देखा जा सकता है। स्कॉटिश भूमिकर की आधी राशि वस्तुतः मुद्रा की अपेक्षा वस्तुओं में चुकाई जाती थी : भेड़, मुर्गे-मुर्गी अथवा उनके अंडे, जई का सामान, जौ तथा शराब गाड़ियों पर नहीं (क्योंकि असामियों के पास गाड़ियां नहीं थीं) मरियल घोड़ों पर लादकर पहुँचाए जाते थे। ताल्लुकेदार की खाद्य-सामग्री के रूप में जो अन्य वस्तु उसके घर पर पहुँचाई जाती थी वह आसपास के खेतों में अनाज चुगने वाले कबूतरों का मांस था। इसके अतिरिक्त, स्कॉटिश किसान को इंगलैंड के मध्ययुगीन किसान की भांति बुरे मौसमों वाले दिनों में भी, जब कि वह यदि अपनी थोड़ी सी फसल की देखभाल कर पाता तो शायद आगामी वर्ष में अपने परिवार के भरण-पोषण के लिये उसे खराब होने से बचा लेता लेकिन यह समय उसे ताल्लुकेदार के खेत में खाद देने, बीज बोने तथा फसल की कटाई में बिताना पड़ता था।

महारानी ऐन्नी के शासन काल में ऐसी स्थितियों में इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि स्कॉटलैंड के नौ में से दस खेत विना किसी वाड़ या दीवार के ही खड़े थे। पशुओं को दिन भर या तो बांध कर रखा जाता था या उनकी निगरानी की जाती थी तथा रात्रि को वन्द करके रखा जाता था। केवल लोथियन्स में धनी जमींदारों द्वारा उन्हें वन्द करने के लिये पत्थर की दीवारें वनाई गई थीं। तात्कालिक उपयोगिता की दृष्टि से लगाई गई झाड़ियों की वाड़ कहीं नहीं दिखाई देती थी, और उनकी आवश्यकता भी महसूस नहीं की जाती थी क्योंकि उनका विश्वास था कि उन झाड़ियों में पक्षी शरण ले लेते हैं और इसके कारण अनाज को हानि पहुँचाते हैं। इसी प्रकार शंका वृक्षों के सम्वन्ध में भी थी। छोटे-छोटे वृक्षों को केवल पशु ही नहीं खा कर समाप्त कर देते थे वल्कि, दंड-विधान होने पर भी किसान लोग स्वयं ही उन्हें तोड़ डालते थे। वास्तव में गिरजे तथा जमींदार के मकान के आसपास के वृक्षों को छोड़ कर उन्हें नुकसान पहुँचा सकें, ऐसे वृक्ष वहुत कम थे। पुराने जंगल, जिनमें कि रावर्टब्रूस के 'टेस्टामेन्ट' में दी गई हिदायतों के अनुसार अंग्रेजों के आक्रमणों के समय लोग शरण लिया करते थे, वे अव समाप्त हो चुके थे। और आँधियों से खेती को वचाने अथा वाजार में इमारती लकड़ी की खपत के लिये नये जंगल लगाने का आधुनिक प्रयास भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही था। अतः स्कॉटलैंड सामान्यतः पिछले कालों की अपेक्षा अधिक वृक्ष विहीन था। कुछ स्थानों पर, विशेष रूप से क्लाइडसाइड में नाम मात्र के जंगल अवश्य थे, लेकिन सुदूर उत्तर में जहां कि लोग नहीं पहुँचते थे, इंगलैंड की ओर से चलने वाली हवाओं में पुराने जंगल खड़खड़ाते रहते थे। स्कॉटलैंड में भी छोटे नालों के ढलावदार किनारों वाले आर्द्र कछारों में, जहां कि कभी घने जंगल थे, छोटे वलूत, वैंतों की झाड़ियों तथा देवदारु के गिने चुने वृक्षशेष वच रहे थे।

हरे भरे वन-खंडों की कमी की तरह ही कृषक परिवार भी किसी सुव्यवस्थित कृषि-सुधार के विना दारिद्रय की ही स्थिति में थे। महारानी ऐन्नी के शासनकाल के स्कॉटिश कृषक-गृह की दशा की सही कल्पना के लिये हमें वाद के काल के खेतों पर ही वने पाषाण-निर्मित घरों के स्थान पर पश्चिमी आयरलैंड की वन्द कोठरियों की कल्पना करनी होगी। वहुधा ये मकान एक मंजिल तथा एक ही कमरे वाले थे। मकान का आकार-प्रकार तथा निर्धनता का स्वरूप अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार का था, लेकिन घास अथवा भूसे से घिरी हुई कच्ची अथवा विना तराशे हुए पत्थरों की दीवारों का होना एक सामान्य वात थी, चिमनियां तथा शीशे की खिड़कियां वहुत कम थीं, फर्श के नाम पर विना चुनी हुई केवल कुछ जमीन भर छोड़ दी जाती थी, कई स्थानों पर कमरे के एक छोर पर पशु वांधे जाते थे और दूसरे छोर पर लोग स्वयं रहते थे—दोनों के वीच एक विभाजन अवश्य था। कोयले की काई से प्रज्वलित आग के चारों ओर घास के ढेर पर अथवा पत्थरों पर परिवार के सदस्य वैठ

जाते थे और वहीं कुछ ऊंचाई पर बने एक छोटे सूराख से थोड़ा धुआं बाहर निकल जाता था। क्योंकि उन्हें गन्दी मिट्टी में काम करना पड़ता था इसलिये वे आधे कीचड़ में सने हुए भीगे कपड़ों से जिन्हें कि वे यदाकदा ही बदल पाते थे, अपने सीलन भरे घर को लौटते थे और इसके कारण वे गठिया और प्लेग जैसी बीमारियों से अपनी पूरी आयु का भोग किये बिना ही काल का ग्रास हो जाते थे।

स्त्री-पुरुष पड़ोस के जुलाहों तथा दर्जियों द्वारा निर्मित कपड़े पहनते थे जिन्हें कि जुलाहे अपनी झौंपड़ी में ही तैयार करते थे तथा रंगते थे। बच्चे हमेशा और वयस्क बहुधा नंगे पैर ही चला करते थे। पुरुष ऊन की बनी हुई स्कॉटलैंड की एक विशिष्टता समझी जाने वाली नीले रंग की चौड़ी तथा चपटे आकार की एक टोपी पहनते थे। केवल ताल्लुकेदार तथा पादरी ही फ़ैल्टहैट का प्रयोग करते थे, लेकिन वे भी कपड़े घर के बुने हुए तथा गांव के दर्जी द्वारा सिले हुए ही पहनते थे। दक्षिणी ब्रिटेन के विमतवादियों की दृष्टि में यह आश्चर्यजनक बात ही थी कि पादरी चर्च के बाहर अथवा भीतर कहीं भी काले या विशिष्ट प्रकार के चोगे नहीं पहनते थे और अपने दौरे तथा धर्मोपदेश घर की बनी हुई ऊन से तैयार किये गये रंगीन कोट तथा वास्कट पहन कर तथा गले पर एक वस्त्र लपेट कर ही करता था।

जिस प्रकार कि सेक्सन-पूर्व काल में इंगलैंड की स्थिति थी, स्कॉटलैंड में अभी भी अधिकांश भूमि जो संभावित रूप से अच्छी उपजाऊ भूमि सिद्ध हो सकती थी वह घाटी की तलहटी में कीचड़ से भरी हुई बिना जुती ही पड़ी थी और किसान पहाड़ के ऊपरी भाग पर ऊसर भूमि में हल चलाने की यातना भोगते रहते थे। फाल को छोड़ हल का अधिकांश भाग अविकसित प्रकार की लकड़ी का बना हुआ था और उसे साधारणतः किसान स्वयं तैयार करता था। ढलुवां भूमि पर इस हल को आधे दर्जन किसान आठ-दस मरियल बैलों के सहारे उन पर चिल्लाते और पीटते हुए जोतते थे। पशुओं तथा स्वयं के सम्मिलित प्रयास से यह चाकर वर्ग एक दिन में इस प्रकार लगभग आधी एकड़ भूमि की जुताई करता था।

सामान्यतः एक कृषक दल के लोग अपने भूखंडों की जुताई मिलकर करते थे तथा मुनाफ़े को कभी कम तथा कभी ज्यादा अनुपात में ('रन-रिंग-प्रणाली') परस्पर बांट लेते थे, प्रत्येक किसान हर फसल-कटाई में अपना अधिकार जताता था। प्रत्येक खेत, जिसका किराया मुद्रा में अथवा वस्तु रूप में लगभग पचास पौंड था उसे आधे दर्जन अथवा उससे भी अधिक किरायेदार परस्पर बांट लेते थे और यह बंटाई प्रत्येक वर्ष नये सिरे से की जाती थी। इस प्रणाली के कारण तथा ताल्लुकेदार द्वारा भूमि को एक वर्ष के लिये हर माह पट्टे पर दे देने के कारण कृषि-सुधार असम्भव हो गया था। सहयोगी किसानों के समूह में ही पारस्परिक झगड़े हुआ करते थे और इनमें से कुछ झगड़े इतने कटु होते थे कि सदस्यगण कैमेरोनियन तथा 'किक' सम्बन्ध विच्छेदकों की

भांति समूह से पृथक हो जाते थे और हफ्तों तक कृषि के कार्य में विघ्न बना रहता था। किसानों को हर प्रातःकाल नित्य के थका देने वाले कृषि कार्यों को सम्मिलित रूप से शुरू करने के पहले अपने आलसी तथा विक्षुब्ध पड़ोसियों के जगने और काम में हाथ बंटाने के लिये नित्य प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

खेतों का 'आन्तरिक क्षेत्र' तथा 'वाह्य क्षेत्र' के रूप में और अधिक विभाजन किया जाता था। गांव के मकानों के निकटवर्ती 'आन्तरिक क्षेत्र' में भद्र पुरुष के मकान में एकत्र भूसे सहित इधर उधर से इकट्ठा किया गया खाद जमा रहता था। लेकिन वाह्य क्षेत्र, जिसका कि क्षेत्रफल कुल एकड़-क्षेत्र का लगभग तीन चौथाई था, उसमें किसी प्रकार का खाद नहीं दिया जाता था और आठ-दस वर्षों तक के लिये उसका उपयोग चरागाह के रूप में किया जाता था। इसके वाद एक या दो वर्षों के लिये उसमें खेती की जाती थी और तदुपरान्त पुनः उसे एक बीहड़ चरागाह में वदल दिया जाता था। यह प्रणाली इंगलैंड की मुक्त-क्षेत्र-कृषि व्यवस्था की त्रि-क्षेत्रीय प्रणाली की तुलना में अत्यधिक निरर्थक प्रणाली थी, हां पश्चिमी इंगलैंड, वेल्स, कॉर्नवाल तथा ईस्ट राइडिंग के कुछ भागों में की जाने वाली कृषि से इसकी तुलना अवश्य की जा सकती है।

स्कॉटलैंड की खाद्य फसलों में जई की फसल प्रमुख थी और एक विशेष प्रकार की शराब वनाने के लिये, जो स्कॉटलैंड की अंग्रेजी ह्विस्की के आगमन से पूर्व एक राष्ट्रीय पेय था, जौ की खेती की जाती थी। घरेलू बगीची (किचन गार्डन) में करमकल्ला, मटर तथा सेम उगाए जाते थे। लेकिन शलजम तथा पशुओं के लिये कृत्रिम घास उगाना वे विलकुल नहीं जानते थे। आलू केवल कुछ ही वागवानों द्वारा एक मौसमी फसल के रूप में ताल्लुकेदार के सामिष भोज को स्वादिष्ट वनाने के लिये उगाये जाते थे, जन सामान्य की खाद्य सामग्री के रूप में किसानों द्वारा उनकी खेती नहीं की जाती थी।

कृषि के इन अविकसित प्रकारों के कारण, जिन्हें लोगों ने स्वयं ही अपनाया था, वे सदा अकाल ग्रस्त रहते थे। उनके अनाज की मात्रा, जो इस प्रकार की कृषि-पद्धतियों द्वारा कुछ भी नहीं बढ़ सकी थी इस पुरानी कहावत के अनुसार तीन भागों में विभक्त हो जाती थी : काटना, खाना और शेष ताल्लुकेदार को भेंट चढ़ा देना।'

ताल्लुकेदार स्वयं अपनी निर्धनता से इतने ग्रस्त थे कि अपने किसानों की क्या स्वयं की सहायता करने में भी असमर्थ थे। फिर भी उदय होती हुई इस नयी शताब्दी में, सभी वर्गों की समृद्धि तथा कृषि में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिये संघ ने जो वाणिज्य सम्वन्धी सुविधाएं प्रदान की थीं उन्हें आत्मसात् कर उनका उपयोग कर पाने में ये ताल्लुकेदार अग्रणी थे।

विलियम के शासनकाल के अन्तिम छः वर्ष स्कॉटलैंड की स्मृति पर अमिट छाप छोड़ गये। इन वर्षों में लगातार खराव मौसम रहने के कारण फसल नहीं पक सकी।

देश के पास विदेशों से भोजन खरीदने के लिये साधन नहीं थे और इस कारण लोगों को भूखों मरना पड़ा। कई जिलों की आबादी आधी या एक-तिहाई रह गई थी। इन कुत्सित अनुभवों ने, जिनसे कि राष्ट्र संघीय-सन्धि के वर्षों में पुनः त्राण पा रहा था, उत्तरी ब्रिटेनवासी के दृष्टिकोण को काफी प्रभावित किया; उसके अन्धविश्वासों को इसने और अधिक गहरा किया तथा उसकी राजनैतिक भावनाओं को और भी अधिक कालिमा युक्त कर दिया—विशेष रूप से उस इंगलैंडवासी के प्रति कि जिससे वह पहले से ही घृणा करता रहा था और जो स्कॉटवासियों को भूख से मरते हुए चुपचाप देखता रहा था और डेरियन प्रणाली का विरोध कर उनकी स्थिति को और अधिक बदतर बनाने के अतिरिक्त उसने और कुछ नहीं किया था। सौभाग्य से राजा विलियम के शासन के आपत्कालीन वर्षों के बाद महारानी ऐन्नी के शासनकाल में कुछ अच्छे वर्षों की पुनरावृत्ति हुई। और उसके बाद सन् १७०९ में संघ बन जाने के बाद, फसल खराब हो जाने के कारण पुनः अकाल पड़ गया और खेत, खलिहान, जन शून्य हो गये तथा गांवों में भिखारियों की संख्या बढ़ गई। कृषि प्रणाली में आमूल-चूल सुधार होने के पूर्व खराब मौसम के कारण प्रत्येक फसल के नष्ट होने की आशंका बनी ही रहती थी।

भरण पोषण के लिये जितनी सामग्री की आवश्यकता होती थी, उसके अतिरिक्त कृषि सम्पदा जुटाने का प्रमुख स्रोत पशु धन था। भेड़ों के ऊन से कपड़ा बनाने के कुटीर उद्योग में सहायता मिलती थी तथा भेड़ों व अन्य पशुओं की इंगलैंड के बाजार में पर्याप्त संख्या में बिक्री भी होती थी। गैलोवे में पशुओं की नस्ल काफी बढ़ी थी, लेकिन इस पशुधन का अंग्रेजों तथा चार्ल्स द्वितीय के अत्याचारी शासनकाल में राज्य के दूतों द्वारा विध्वंस किये जाने के कारण गैलोवे अपनी पशु सम्पदा की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो पाया था। सन् १७०५ में स्कॉटलैंड ने तीस हजार पशु बेचे थे और प्रत्येक पशु का मूल्य साधारणतः लगभग एक या दो पौंड के बीच था। पशुओं के काले बाजार से प्राप्त राशि स्कॉटिश ताल्लुकेदार की आय का एक प्रमुख स्रोत थी। उस काल के इंगलिश पशुओं की तुलना में भी इन भेड़ों तथा पशुओं का आकार प्रकार काफी छोटा था। उनके चरागाह अधिकांश अविकसित बंजर भूमि-खंड थे। पशुओं को बाड़ की व्यवस्था न होने के कारण रात भर बन्द करके रखा जाता था। दक्षिणी इंगलिश चरागाहों में जिन पशुओं को नहीं बेचा जा सका था उनमें से कई को सरदी के आगमन पर चारे की व्यवस्था न हो पाने के कारण मारटिनमास में कत्ल कर देना पड़ता था। अगले छः मासों तक भद्रजनों की भोजन सामग्री में नमक लगा गोश्त विशेष खाद्य पदार्थ होता था, लेकिन किसान के चौके में सारे साल शायद ही कभी मांस बनाया गया हो। विलम्बित बसन्त के आगमन पर, सारी सर्दी उबले हुए भूसे तथा तिनकों पर बन्द रहे जीवित कंकाल पशुओं को एक दयनीय झुंड में इस

स्थिति से बिना किसी संभाल के चरागाह तक पहुंचाया जाता था। इस वार्षिक उत्सव को एक सर्व परिचित 'लिफ्टिंग' के नाम से जाना जाता था।

स्कॉटलैंड का जीवन स्तर भौतिक दृष्टि से लगभग सभी पक्षों में अत्यन्त निम्न-स्तर का था, लेकिन संघर्ष पूर्ण जीवन लोगों के उत्साह को, यहां तक कि विलियम कालीन महंगाई के वर्षों में भी, कोई हानि नहीं पहुंचा सका था। किसी चन्दे पर जीवन न व्यतीत करने की लगन समृद्धिशाली इंगलैंड की अपेक्षा वहां के सामान्यकाल में अधिक तीव्र थी। एलिजावेथ के काल से ही इंगलैंड में निर्धन लोग समाज के लिये भार समझे जाते थे, उनकी देखभाल प्रत्येक जिले से अनिवार्य चन्दा वसूल करके की जाती थी और महारानी ऐन्नी के शासनकाल के अन्त में इस चन्दे की राशि प्रति वर्ष दस लाख पौंड इक्ट्ठी होती थी जिसे कि एक कठोर राष्ट्रीय भार समझा जाता था। स्कॉटलैंड में इस प्रकार की कोई चन्दा वसूली नहीं होती थी, निर्धनों की सहायता करना राज्य की अपेक्षा चर्च का कर्त्तव्य समझा जाता था। गरीबों के लिये वृत्तिदान लोग व्यक्तिगत रूप से करते थे और इसकी घोषणा चर्च में तथा कभी-कभी दीवारों पर लटके सूचना-पट्टों पर लिखकर कर दी जाती थी। चर्च में निर्धन-कोष के लिये वक्स रखे होते थे जिन्हें कि खर्चीली प्रकृति वाले स्कॉट लोग कुछ उपयोग में आ सकने वाले अच्छे सिक्कों के साथ तांबे के अधिकांश खोटे सिक्कों द्वारा भर दिया करते थे। यद्यपि सभी चर्चों में नहीं लेकिन अधिकांश जिला-गिरजों में दान अधिकारी चर्च का ही एक निम्न दर्जे का कर्मचारी होता था, जो इस राशि को आवश्यकता महसूस करने वाले लोगों में वितरित करता था और वे लोग बहुधा स्वाभिमान पूर्वक उस राशि को स्वीकार करने में अपनी अनिच्छा दर्शाते थे। इस प्रकार की सहायता से इतर सम्बन्ध बनाए रखने की आवश्यकता तीव्र रूप में अनुभव की जाती थी और यह कार्य जिन लोगों द्वारा किया जाता था वे स्वयं भी अत्यधिक निर्धन थे।

किसी क्षेत्र विशेष में घर-घर जाकर भिक्षा मांगने के लिये भी किर्क-सत्र कुछ विशिष्ट साधुओं अथवा नीला चोगाधारियों को अनुमति पत्र प्रदान किया करता था। उनमें से एडी ऑकिल्ट्री जैसे अनेक साधु एकाकी खेतों तक समाचार पहुंचाने का कार्य करते थे, क्षेत्रीय लोक साहित्य का प्रसारण करते थे और उन्हें अपने ग्रामीण क्षेत्र में बड़े ही आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

लेकिन दुर्भाग्य से बिना अनुमति प्राप्त आवारा लोगों की संख्या इनमें अधिक थी। ट्यूडर कालीन इंगलैंड के हृष्ट-पुष्ट भिखारियों का जवाब महारानी ऐन्नी कालीन स्कॉटलैंड के हठीले भिखारियों ने दिया। यद्यपि साल्टून के फ्लेचर द्वारा किये गये इस अनुमान की कि इन लोगों की संख्या दो लाख तक पहुंच गई थी, जो कि सम्पूर्ण जनसंख्या का पांचवा अथवा छठा भाग होती, कोई पुष्टि नहीं हुई थी फिर भी विलियम कालीन महंगाई के वर्षों में इन टूटे हुए आश्रय हीन लोगों की संख्या वहुत वढ़ गई थी। लेकिन कृषि प्रधान देहाती गांवों में, जहां एक स्थान पर केवल तीन

मकान पास-पास बने होते थे, उनके एकाकीपन में सम्पूर्ण क्षेत्र को आतंकित करने के लिये जबरन भिक्षा लेने वालों की संख्या बहुत अधिक थी; इन उचक्के लोगों का एक दल दिन दहाड़े झोपड़ी से अन्तिम दाना, बाड़े से गाय और कभी-कभी दुःखी माता-पिताओं से उनके बच्चों तक को लूट ले जाता था। इंगलैंड की भांति यहां निर्धनों से सम्बन्धित किसी भी अधिनियम के न होने के कारण स्कॉटलैंड को इन जबरन भिक्षा लेने वालों की संख्या एवं शक्ति के रूप में काफी मूल्य चुकाना पड़ा था और इस स्थिति का किसी भी देश में पुलिस द्वारा समुचित प्रबन्ध नहीं किया गया था।

एक कठोर रिपब्लिकन राष्ट्रभक्त साल्टून के फ्लेचर ने, जिसने कि उस काल की स्कॉटिश राजनीति को काफी प्रभावित किया था, यह सुझाव दिया कि इन 'हठधर्मी' भिखारियों को अनिवार्य सेवा में लगा देना चाहिये; उसका यह विचार स्कॉटलैंड में पहले से ही चली आ रही पद्धति का ही प्रसारण था। कोयले तथा नमक की खानों में दास लोग तथा सचमुच के बेगारी लोग काम किया करते थे जिन्हें कि काम से भागने पर पकड़ कर काफी कड़ा दंड दिया जाता था। हैडिंग्टनशायर के न्यूमिल्स कपड़ा कारखाने जैसे स्वतन्त्र अनुबन्धों पर आधारित आधुनिक प्रतिष्ठानों के भीतर ही जेल की व्यवस्था थी और जो लोग अनुबन्ध तोड़ देते थे अथवा भाग जाते थे उन्हें तत्काल सजा सुना दी जाती थी। लेकिन उस समय के स्तर की दृष्टि से न्यूमिल्स के कर्मचारियों की दशा खराब थी लेकिन खानों में काम करने वाले जन्मजात दास लोगों से उनके मालिक बन्धकों की भांति व्यवहार करते थे और अन्य लोग भी उन्हें दयामिश्रित आतंक से 'ब्राउनयिन' अथवा 'दि ब्लैक फॉक'[1] (काले आदमी) कहकर सम्बोधित करते थे।

संघ के समय स्कॉटलैंड ने भले ही इंगलैंड को कृषि-प्रणाली में पीछे छोड़ दिया हो लेकिन उसके उद्योग तथा वाणिज्य किसी भी रूप में श्रेष्ठ नहीं थे। उसकी निर्यात की लगभग सभी वस्तुओं में या तो खाद्य पदार्थ थे अथवा कच्चा माल जैसे इंगलैंड को भेजी जाने वाली वस्तुओं में पशु तथा सामन मछली, हालैंड भेजी जाने वाली वस्तुओं में कोयला और सामन मछली, नॉरवे भेजने के लिये नमक तथा शीशा और आइबेरियन प्रायः द्वीप के लिये हेरिंग मछली थे। स्कॉट लोग स्वयं स्थानीय खपत के लिये गांव के जुलाहों द्वारा बुना गया कपड़ा पहनते थे, लेकिन लिनन अथवा

---

[1] असमानता दर्शाने वाली यह बेगार प्रणाली अठारहवीं शताब्दी के अन्त में समाप्त कर दी गई थी। लेकिन तब तक खानों में काम करने वाले स्कॉटिश श्रमिक को उसके बीवी बच्चों सहित—जो उसके काटे हुए कोयले को इधर-उधर लाते ले जाते थे, खान को किसी अन्य को बेचते समय उन्हें भी खान के साथ ही नये मालिक को सौंप दिया करता था। अपने जीवनकाल में वे अपनी नौकरी से अलग नहीं हो सकते थे।

ऊनी कपड़े की बहुत ही कम मात्रा विदेशों को भेजी जाती थी। हैडिंग्टन न्यूमिल्स काफी प्रसिद्ध थे लेकिन उनकी भी स्थिति अच्छी नहीं थी। उनके अतिरिक्त ऊनी कपड़े बनाने के और भी कारखाने थे जैसे मुसेलबरा तथा एबरडीन जो स्कॉट संसद के सामने आर्थिक सहायता तथा एकाधिकार प्राप्ति के लिये काफी विरोध के साथ अपनी मांगें प्रस्तुत करते थे, लेकिन उन्हें संतुष्टि कम तथा निराशा ही अधिक हाथ लगती थी। दूसरी ओर ऊन का उत्पादन करने वाले उद्योगपतियों ने स्कॉटिश कपड़े के विदेशी बाजार को हानि पहुंचाने के लिये, जो कि इंगलैंड द्वारा निर्धारित नीति के भी विरुद्ध था, संसद पर कच्चे ऊन के हालैंड तथा स्वीडन में निर्यात की स्वीकृति के लिये दबाव डाला। हेरिंग मछली का उद्योग राष्ट्रीय सम्पत्ति का एक प्रमुख स्रोत था, स्कॉट लोगों से अधिक उस सम्पदा का उपयोग डच मछेरे करते थे। एडिनबरा की संसद का एक महत्वपूर्ण कार्य स्कॉटलैंड के वाणिज्य सम्बन्धी प्रयत्नों तथा छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करने वाले नियमों की रचना करना था।

यद्यपि स्कॉटिश सैनिक टुकड़ियां तथा अफ़सर अपनी जन्मभूमि के सम्मान में काफी वृद्धि कर रहे थे—स्कॉट लोगों की ख्याति जितनी वेलिंग्टन में थी उतनी ही मार्लबोरो में थी—लेकिन फ्रान्स से हुए युद्ध के प्रति स्कॉटलैंड के सामान्यजन में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी। वे इसे अपने युद्ध की अपेक्षा इंगलैंड और फ्रांस के बीच का युद्ध समझते थे। संघ निर्माण के चार वर्ष पूर्व, एडिनबरा की संसद ने शत्रुपक्ष से होने वाले शराब के अत्यन्त लोकप्रिय व्यापार को वैधानिक स्वरूप देने के लिये एक शराब अधिनियम का निर्माण किया था। अंग्रेज लोग युद्ध काल में औचित्य उल्लंघन के इस साहसिक कदम से बड़े आश्चर्यचकित थे, जबकि वे स्वयं फ्रांस की बन्दरगाहों को अवैधानिक रूप से चोरी छिपे शराब भेज रहे थे। लेकिन इसके विरुद्ध कुछ करने का साहस नहीं हो सका, क्योंकि यदि उनका कोई गश्ती जहाज़ ब्रान्डी, कैलेरेट तथा जैकोबाइट के एजेन्टों सहित किसी स्कॉटिश जहाज को पकड़ भी लेता तो उससे इंगलैंड तथा स्कॉटलैंड के बीच युद्ध ठन जाने की आशंका ही अधिक थी।

पुर्नस्थापन (रेस्टोरेशन) काल में, ग्लासगो नगर को साम्राज्य में दूसरे नम्बर का तथा उत्पादन और व्यापार में प्रथम कोटि का नगर माना जाने लगा था। सम्भवतया विलियम के शासनकाल में दुर्भिक्षों तथा विपदाओं के कारण हाल ही में जनसंख्या में कमी हो गई थी : सन् १७०७ में जब संघ बना था उस समय सम्पूर्ण स्कॉटलैंड की कुल दस लाख अथवा उससे भी अधिक जनसंख्या में से केवल १२,५०० व्यक्ति ही शेष बचे थे। ग्लासगो के व्यापारियों के पास पन्द्रह मालवाहक जहाज़ थे जिनका कुल वजन ११८२ टन था; और चूंकि क्लाइड में अब भी छोटी-छोटी नौकाओं के अतिरिक्त कोई वस्तु आ जा नहीं सकती थी इन छोटे जहाज़ों को नगर से लगभग बारह मील दूर ही अपना माल उतारना पड़ता था। संघ-संधि (यूनियन

ट्रीटी) के लागू होने के बाद ही बैली निकोल जारवी तथा उसके सहयोगी नागरिकों को अंग्रेजी उपनिवेशों से तम्बाकू के व्यापार की अनुमति दी गई थी, इससे पूर्व किसी भी स्कॉटिश फर्म को अंग्रेजी उपनिवेशों से व्यापार करने की स्वतन्त्रता नहीं थी और इस कारण उनका व्यापार यूरोप तक ही सीमित था। ऐन्नी के शासनकाल तक ग्लासगो एक छोटा सा देहाती नगर था जहां केन्द्रीय चौराहे पर खंभों के पास व्यापारी छोटे व्यापार के लिये परस्पर एकत्र होते थे। इसके अतिरिक्त यह स्कॉटलैंड के उन चार नगरों में से एक नगर था जहां कि विश्वविद्यालयों की स्थापना हो चुकी थी: एक अंग्रेज यात्री ने ब्लेनहीम के समय में देखा था कि 'कालेज में रहने वाले केवल चालीस विद्यार्थी थे', लेकिन कुल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या दो अथवा तीन सौ के करीब थी, सभी एबरडीन तथा सेन्ट एन्ड्रयूज के छात्रों की ही भांति लाल चोगे (गाउन) पहनते थे।

चौथा विश्वविद्यालयीय नगर एडिनबरा स्वयं था—जो स्कॉटलैंड के कानून तथा अदालतों का केन्द्रीय नगर होने के साथ ही तीन रियासतों (एस्टेट्स) की संसद का कार्यस्थल था तथा चर्च की केन्द्रीय कार्यकारिणी, जिसे एक अन्य संसद की संज्ञा दी जा सकती है और जो अपेक्षाकृत अधिक स्थायी भी सिद्ध हुई, उसका भी प्रमुख केन्द्र था। वहां हॉलीरूड पैलेस नामक एक ऐसी आरामगाह भी थी जहां स्कॉटलैंड के शासक कुछ समय बिताने के लिये जब तब चले आया करते थे। एक मील लम्बे कैननगेट तथा हाई स्ट्रीट, जिसे कि उस समय के एक यात्री ने 'संसार की सबसे अधिक गौरवयुक्त सड़क' माना था, के दूसरे छोर पर एक चट्टान पर एक गढ़ी स्थित थी जहां कि महारानी ऐन्नी की अनुपस्थिति में उसका प्रतिनिधित्व करने वाली एक छोटी लाल वस्त्र धारी सैनिक टुकड़ी रहा करती थी। वहां से आलसी सैनिक एडिनबरा की छतों तथा धूम्राच्छन्न वातावरण की ओर एक प्रश्नाकुल दृष्टि से देखा करते थे कि नीचे शहर में कौन से षड्यन्त्र बन रहे हैं और कौन से धार्मिक, राजनैतिक अथवा आर्थिक संघर्ष चल रहे हैं, क्योंकि उनका तत्काल दमन करना उनका कर्त्तव्य था।

यद्यपि एडिनबरा के कुल्हाड़ेधारी नगर-रक्षक स्कॉट लोगों के हंसी के ही पात्र थे, लेकिन उनके कारण देश के इस प्रमुख नगर में लोगों के रात भर घर खुला छोड़कर बाहर चले जाने पर भी चोरी और डाके की घटनाएं नहीं होती थीं। स्कॉट लोगों की ईमानदारी के काफी प्रमाण हैं, और इसका श्रेय उस कठोर धार्मिक व्यवस्था को है जिसमें कि उनका लालन-पालन हुआ था। इस धार्मिक व्यवस्था ने नगर पर जहां प्रभावशाली ढंग से शासन किया था वहीं स्कॉटलैंड के इस फैशन के केन्द्र में रंगमंच (नाट्य प्रदर्शन) तथा नृत्यकला, और रविवार (सैबाथ) के दिन खिड़कियों से चुपचाप इधर उधर देख कर समय काटने, सड़कों पर मटरगश्ती करने जैसी प्रवृत्तियों को भी सुरक्षित रखा था। इसमें तनिक भी आश्चर्य की बात नहीं थी कि डा. पिटकैर्न ने

पादरी पर तीक्ष्ण व्यंग्य करने वाले छन्दों की रचना की तथा, 'हेल-फ़ायर क्लब्स' और 'सल्फर क्लब्स' जो कि नाटकों तथा नृत्यों से अधिक अमान्य हो सकते थे, वे चर्च के उपहास के लिये गुप्त रूप से कार्य करते रहते थे।

यहां तक कि रविवार से इतर दिनों में भी लेथ के रेतीले मैदान में होने वाली घुड़ दौड़, गौल्फ के खेल, मुर्गों की लड़ाई अथवा अत्यधिक शराब खोरी को रोकने का चर्च ने कोई प्रयत्न नहीं किया। सप्ताह की छहों सन्ध्याओं को मदिरालयों में सभी वर्गों के लोग एकत्रित होते थे और रात्रि के दस बजे तक जब कि मजिस्ट्रेट के आदेश से ढोल बजा कर सभी को वापिस पहुंच जाने की चेतावनी नहीं दी जाती थी, वे मदिरालय में ही बने रहते थे। 'हाई-स्ट्रीट' तथा कैननगेट तेज़ी से चलते हुए विभिन्न प्रकार के लोगों से खचाखच भरे होते थे। अपना बड़प्पन छलकाते हुए सीधे तन कर चलने वाले उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सौगन्ध खाकर टमटम तक तेज़ी से पहुंचते हुए अंग्रेज ये सभी इनमें शामिल थे; और पाँच, छः अथवा दसवीं मंजिल की खिड़कियों से पिछले चौबीस घंटों से इकट्ठी गन्दगी को उसी समय सड़क पर नीचे फेंका जाता था। गन्दगी फेंकने वालों का यह शिष्ट पक्ष ही था कि वे उसे नीचे फेंकने से पहले एक चेतावनी भरी आवाज लगाकर कहते थे 'गार्डी-लू।' लौटते समय व्यक्ति 'हाड येर हैन' आवाज देता था और भारी भरकम कन्धों को सिकोड़ कर भागता था, ऊपर से गिरने वाली गन्दगी के गिरने से यदि उसकी कीमती टोपी नहीं गिर पड़ती तो यह उसका सौभाग्य ही होता था। ऊपर से फेंकी गई यह गन्दगी गली में पड़ी रहती थी और इस कुएं नुमा बन्द गली में रात्रि कालीन हवाओं के कारण उत्पन्न दुर्गन्ध तब तक बनी रहती थी जब तक कि नगर रक्षक अन्यमनस्क भाव से उसकी सुबह होने पर सफाई नहीं कर देते थे। केवल रविवार की सुबह इसकी सफाई नहीं की जाती थी, और स्कॉटलैंड की राजधानी इस धार्मिक नासमझी के कारण दुर्गन्ध से भर जाती थी।

एडिनबरा की यह प्रसिद्ध सफाई व्यवस्था इंगलिश यात्रियों के बीच चर्चा का विषय बनी रहती थी और स्कॉट लोगों को अन्य राष्ट्रों के कलंक—जैसा कि डिफो के शब्दों में "(वे) स्वच्छता एवं सुन्दरतापूर्वक नहीं रहना चाहते"—का पात्र बनना पड़ता था। लेकिन डिफो द्वारा स्कॉटों के समर्थन में कहे गये शब्दों का उद्धरण देना यहां अधिक उचित होगा : "यदि अन्य लोगों को भी इसी प्रकार का दुःखपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता अर्थात् सात से दस बारह मंजिलों वाले ऊंचे मकानों में, जहां कि पानी की काफी कमी होती, और जो थोड़ा बहुत पानी उन्हें मिलता वह भी प्राप्त न होता तथा सबसे ऊपरी मंजिल तक उसे ले जाने में और भी कठिनाई होती तब ऐसी उबड़-खाबड़ स्थिति में लन्डन अथवा ब्रिसल भी उतने ही गन्दे होते जितना कि एडिनबरा था; कई नगरों में यद्यपि एडिनबरा से भी अधिक लोग रहते हैं लेकिन मेरा विश्वास है कि संसार के किसी भी नगर में एक छोटे से कमरे में इतने अधिक लोग नहीं रहते जितने कि वहां।"

एडिनबरा वास्तव में फ्रेन्च नगर-प्रकार का एक मात्र ऐसा उदाहरण था जो सुरक्षा सम्बन्धी कारणों से अपनी प्राचीन सीमाओं में ही केन्द्रित था। इसके कारण उसे इंगलैंड के शान्त और सुचारु जीवन व्यतीत करने वाले नगरों के विपरीत जो कि प्रत्येक परिवार को रहने के लिये उसका अपना घर तथा यदि सम्भव हुआ तो बगीचा भी प्रदान कर सकते थे और देहात की ओर उपनगरों की रचना करते हुए निरन्तर विस्तृत होते रहते थे, भूमि पर विस्तार प्राप्त करने की अपेक्षा ऊंचाई में बढ़ना पड़ा। फ्रेन्च प्रभाव तथा स्कॉटलैंड की पूर्वकालीन अशान्त स्थिति ने इस राजधानी को उसके चारों ओर बने परकोटे तक ही सीमित रखा तथा उसके विस्तार को ऊंचाई की ओर मोड़ दिया। किर्क ओ' फील्ड्स में डार्नले की भांति किसी भद्र व्यक्ति के लिये बिना दीवारों वाले मकान में रात्रि व्यतीत करना सहज नहीं रह गया था। इसलिये स्कॉटलैंड के श्रेष्ठिजनों को एडिनबरा में वैसे भवन उपलब्ध नहीं थे जैसे कि अंग्रेज कुलीनों को ब्लूम्सबरी तथा स्ट्रेन्ड में प्राप्त थे। इतना ही नहीं बल्कि संसद सत्र के दौरान उन्हें परिस्थितिवश, हाई स्ट्रीट पर बने मकानों की तंग मंजिलों पर भी रहना पड़ता था।

इस प्रकार के नगर के बारे में, जहां कि प्रत्येक फ्लैट को एक पृथक मकान माना जाता था और मकानों पर किसी प्रकार के नम्बर भी अंकित नहीं थे, यह कल्पना की जा सकती है कि पत्रों अथवा अजनबी भेंटकर्ताओं को ठिकाने पर पहुंचने में कितनी कठिनाई उत्पन्न होती होगी। निस्सन्देह समझदार और तीक्ष्ण दृष्टि वाले विश्वस्त नौकरों की सेवाओं के बिना प्राचीन एडिनबरा की उलझन भरी गलियों तथा मंजिलों तक ले जाने वाले ज़ीनों की भूलभुलैया में दैनिक कार्यों का होना अत्यन्त कठिन था।

स्कॉटिश साहित्य यद्यपि अधिकांश इस राजधानी में ही केन्द्रित था, लेकिन इस नई शताब्दी के उत्तरार्ध में ऐसा कभी प्रतीत नहीं हुआ कि उसने अपने ज्ञान से कभी लोगों को प्रकाशित किया हो। यद्यपि वह सभी सामग्री राष्ट्र ने अपनी विचार प्रणाली तथा हृदय में आत्मसात कर ली थी लेकिन प्रभथ्यु की अग्नि का अवतरित होना अभी शेष था। जन-मानस की अभिव्यक्ति लोक गीतों; लोककथाओं तथा किसान की झोपड़ी में प्रज्वलित अग्नि के चारों ओर बैठकर विभिन्न विचारधाराओं पर की जाने वाली चर्चाओं में होती थी। बाइबिल के अतिरिक्त प्रकाशित पुस्तकें प्रमुखतया धर्म अथवा राजनीति से ही अधिक सम्बन्धित थीं।

उस समय वहां सही अर्थों में कोई पत्रकारिता भी नहीं थी। एडिनबरा से सप्ताह में दो बार दो पत्र प्रकाशित होते थे, एक काफी समय से चला आ रहा 'गज़ट' था और दूसरा उसका प्रतिस्पर्धी 'कोरेन्ट' था जो सन् १७०५ में प्रथम बार प्रकाशित किया गया था; दोनों ही दफ्तरशाही का प्रतिनिधित्व करते थे, आकार-प्रकार में लन्दन के समाचार पत्रों का अनुकरण मात्र थे तथा यूरोप तथा इंगलैंड के समाचारों के अतिरिक्त स्कॉट लोगों को उनके अपने विषय में किसी प्रकार की सूचना

नहीं देते थे। संघ बन जाने के बाद जब स्कॉटिश प्रिवी काउन्सिल समाप्त कर दी गई थी तब स्कॉटिश प्रेस को कुछ स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और ऐन्नी के शासनकाल के अन्तिम वर्षों में नये-नये समाचार पत्रों के प्रकाशन के साथ पत्रकारिता का भी अपना जीवन प्रारम्भ हुआ।

स्कॉटिश किसान समान्तशाही शिकंजों तथा मध्ययुगीन गरीबी में जकड़ा हुआ था और इससे त्राण प्राप्ति के लिये धर्म की ओर पलायन करता था। किसी प्रकार की बौद्धिक गिज़ा भी उसे उपलब्ध नहीं थी। घुटनों पर रखी बाइबिल पढ़ते हुए वह अपने पादरी अथवा घनिष्ट मित्रों के साथ आनन्ददायी तर्क-वितर्कों में उलझा होता था और उसके मन में, आज के सामान्य जन के मन में जिस प्रकार 'खाओ पिओ और मौज करो' वाले विचार घुमड़ते हैं, उससे विपरीत बुरे अथवा अच्छे किसी भी पक्ष से सम्बन्धित गहन, संकीर्ण तथा तीव्र विचार घुमड़ते रहते थे। बड़े लोगों अथवा महत्वपूर्ण लोगों द्वारा राजनैतिक प्रसंगों पर उससे कोई विमर्ष न करने पर भी और संसदीय क्षेत्रों में उसका कोई प्रतिनिधित्व न होने पर भी वह धार्मिक कार्यवाहियों में, जहां-जहां उसे अपना प्रभाव महसूस होता था—चर्च की धर्म-सत्ता—जिले (पैरिश) के किर्क सत्रों में, बारह ज़िलों की प्रेसबिटेरी में, प्रान्तीय धर्म परिषद में तथा एडिनबरा में प्रतिवर्ष एकत्र होने वाली 'जनरल एसेम्बली' में तत्परता से रुचि लिया करता था। क्योंकि यार्क और कैन्टरबरी की विशुद्ध पादरीय सभाओं में सांसारिकों को सम्मिलित नहीं किया जाता था अतः उपरोक्त वर्णित अन्य प्रकार की धार्मिक सभाओं में इन लोगों को भी प्रतिनिधित्व का अवसर मिलता था। यह बहुधा ही कहा जाता था कि चर्च एसेम्बली तीनों राज-संस्थाओं (एस्टेट्स) की तुलना में स्कॉटलैंड की सही प्रतिनिधित्व करने वाली संसद है। और किसी भी प्रकार के स्थानीय शासनतन्त्र की अनुपस्थिति में जिला-परिषद की निकटतम पहुँच में किर्क-सत्र (किर्क-सेशन) ही था जहां कि बड़े बूढ़े लोग पादरी को सदैव आतंकित किये रहते थे।

ज़िला-गिरजा, घासफूस की छत वाली कमजोर और छोटी सी इमारत थी, उसमें किसी भी प्रकार की मध्ययुगीन भव्यता अथवा सुविधाएं नहीं थी; इंगलैंड में वस्तुतः इस प्रकार की इमारत का उपयोग केवल खलिहान के ही रूप में किया जाता था। देहाती गिरजों में बड़े बूढ़ों तथा कुछ विशेष सुविधा-प्राप्त परिवारों को छोड़कर अन्य लोगों के बैठने की शायद ही कभी व्यवस्था की जाती थी। अधिकांश स्त्री-पुरुष प्रार्थना के समय या तो खड़े रहते थे अथवा टूटे-फूटे उस प्रकार के स्टूलों पर बैठते थे जिस पर बैठ कर कि एक बार जेनी गेड्स ने प्रार्थना-पुस्तक में अपनी अस्वीकृति लिखी थी। इतना होने पर भी वह कुव्यवस्थित कक्ष प्रत्येक सेबाथ (रविवार) को होने वाली तीन-तीन घंटों की दो प्रार्थना सभाओं में मीलों दूर से जंगली रास्तों को पैदल पार कर आने वाले लोगों द्वारा खचाखच भरा होता था। चर्च में इतना कम स्थान होता था

कि दर्शकों की भीड़ चर्च के बाहर भी जमा हो जाती थी और वहीं किसी कब्र के पत्थर पर एक लड़के को खड़ा करके उससे बाइबिल का पाठ करवाया जाता था।

सबसे अधिक पवित्र तथा प्रभावशाली धार्मिक संस्कार चर्च के दरवाजे के सामने गर्मियों में संध्या समय बड़ी-बड़ी मेजों पर सहधर्मचारिता (कम्यूनियन) के भोज के रूप में किये जाते थे जिन्हें देख कर जंगल में फांसी के समय होने वाली भयानक भीड़ की याद ताजा हो आती थी। जून से अगस्त तक आठ अथवा दस पैरिशों (जिलों) में से प्रत्येक को बारी-बारी से सभी को इस सहभोज के लिये आमन्त्रित करना पड़ता था और अनेकों लोग एक के बाद एक पहाड़ी को पार कर चालीस मील की पद-यात्रा करते हुए वहां तक पहुँचने में तनिक भी असुविधा का अनुभव नहीं करते थे।

महारानी ऐन्नी के शासनकाल में पुराने पादरी वे लोग थे जिनकी शिक्षा में कई बाधाएं उत्पन्न होती रहती थीं और उनकी आत्मा अत्याचारों के कारण कटुतापूर्ण तथा विखंडित हो गई थी। उनके विषय में जो लोग जानते हैं बताते हैं कि वे लोग : "अशक्त, अर्धशिक्षित लोग थे, उनका जीवन अनिद्य था तथा उनका व्यवहार कठोर तथा असंस्कृत था। ठोस सिद्धान्तों पर आधारित होते हुए भी उनकी धर्मसभाएं उनके पक्षपात पूर्ण रवैयों से पर्याप्त सम्बन्धित थीं, और इसके कारण उनकी हीन भावना तथा अशक्तता का प्रदर्शन बहुधा होता रहता था।"

ईश्वर तथा धर्म सम्बन्धी रहस्यों के बेढंगे वर्णन में, चर्च में चुस्त पोषाक पहन कर आने अथवा 'लन्डनस्पेक्टेटर' ले जाने जैसे हानि रहित कार्यों की आलोचना करने में 'प्रेस्बिटेरियन भाषण कला' अंग्रेजों के लिये एक कहावत का विषय बन गई थी। लेकिन एक अंग्रेज ने ही यह भी लिखा था कि : यदि स्कॉटलैंड की भांति इंगलैंड के गिरजों को भी इतने कम प्रोत्साहनों के साथ निःस्वार्थ भाव से उतना श्रम करना पड़ता तो मैं यह कह सकता हूं कि वे पादरियों के स्थान पर मिस्त्री उत्पन्न करने लगते। स्कॉटलैंड में किसी प्रकार के निरुद्योगी व्यक्ति, आलसी पादरी, कुव्यसनी पुरोहित नहीं थे और न किसी प्रकार के सम्मान-भेद अथवा तृष्णा को भड़काने वाले साधनों का ही उपयोग किया जाता था।"

निस्सन्देह, कृषक परिवारों में उत्पन्न हुए ये अधिकांश पादरी पैरिश (जिले) के नेतृत्व तथा अपने प्रति लोगों के विश्वास से पूर्ण संतुष्ट थे। लेकिन इसी दौरान कुछ कम विपदाजनक काल में, अधिक शिक्षित, भाषा तथा वैचारिक क्षमताओं में अधिक समृद्ध लोगों की एक पीढ़ी भी पनप रही थी जो शीघ्र ही 'मोडरेट्स' (उदारवादी) बन कर पुराने लोगों के प्रति, जिन्हें कि 'क्लेवर हाउस' ने हठधर्मिता की ओर बरबस धकेला था, विपक्षी रवैया अपनाने लगी।

पादरी के साथ संयुक्त होकर कार्य करने वाला बड़े-बूढ़ों का स्वमान्य 'किर्क-सेशन' लोगों के दैनिक जीवन में अत्यधिक हस्तक्षेप करता था।

एक सप्ताह उसी स्थान पर तथा एक सप्ताह बाहर कार्य करने वाला 'किर्क-सेशन' तथा प्रेस्विटेरी का उच्च न्यायालय शपथ तोड़ने वालों, मिथ्या कलंक लगाने वाले लोगों, झगड़ा करने वालों, 'सैबाथ' के नियम भंग करने वालों, जादू-टोना करने वालों तथा मौन अपराधियों के मुकदमों की सुनवाई करता था। कुछ ऐसे स्तर के मामलों की जो कि इंगलैंड में मजिस्ट्रेट की अदालत में तय किये जाते थे, जांच तथा निर्णय इनके द्वारा भली प्रकार किये जाते थे तथा वह उपयोगी भी होते थे। लेकिन कुछ मामलों का चयन तथा निर्णय जैसे उपवास के दिन किसी स्त्री द्वारा पानी का घड़ा उठा कर ले जाना तथा किसी व्यक्ति द्वारा बप्तिस्मा पार्टी में घुसपैठ करना अत्यधिक दु:खद थे। व्यभिचार करने वाले स्त्री-पुरुषों को पश्चाताप के स्टूल पर चढ़ा कर एकत्रित जन समुदाय में से किशोरों के मजाक का, सम्मानितों के धिक्कार का तथा छः, दस अथवा बीस सैबाथ तक लगातार अपने इस कार्य में तनिक भी न झिझकने वाले पादरियों के तिरस्कार का पात्र बनाया जाता था। ऐसे पश्चाताप करने वालों की बहुधा एक लम्बी पंक्ति हुआ करती थी और उन्हें पहनाये जाने वाले गाउनों का इतना अधिक उपयोग होता था कि उनके फट जाने पर नये गाउनों की शीघ्र ही व्यवस्था करनी पड़ती थी। इस असह्य तिरस्कार से बचने के लिये, बेचारी लड़कियों को या तो अपने गर्भ को किसी प्रकार छिपाने की व्यवस्था करनी पड़ती थी अथवा भ्रूण हत्या का मार्ग अपनाना पड़ता था। इस प्रकार के मामलों पर प्रिवी काउन्सिल के सामने कड़ी सजा देने अथवा सजा कम कर देने का प्रश्न विचारार्थ कई बार उपस्थित हुआ था।

किर्क-सेशन तथा प्रेस्विटेरी के इन कार्यों को जन-मत का प्रबल समर्थन प्राप्त था अन्यथा इसी प्रकार के चर्च-नियमों का दुरुपयोग इंगलैंड में इतने समय तक न होता रहता। लेकिन उच्च वर्गों को छोड़ कर सामान्य लोगों में इसके प्रति काफी आक्रोश जन्मा था। यह सत्य है कि भद्र वर्ग के लोगों के लिये प्रायश्चित के दंड को जुर्माने में बहुधा ही परिवर्तित कर दिया जाता था लेकिन इस सुविधा के साथ भी पादरियों तथा निम्नवर्गीय वृद्धजनों द्वारा अपेक्षित आचरण का नियन्त्रण कुलीन तथा अभिमानी परिवारों को काफी अखरता था; बिशप-सम्प्रदाय तथा अनेक ऐसे लोगों के, जिनका प्रेसिबटेरियन चर्च के विश्वासों तथा गतिविधियों से कोई झगड़ा नहीं था, जैकोबाइट राजनीति से सम्बन्धित होने का एक यह भी मूल कारण था। पादरीवाद के विरोध ने जिस प्रकार इंगलैंड में ह्विग लोगों को संगठित किया था उसी प्रकार स्कॉटलैंड में जैकोबाइटों को दृढ़ बनाया। फिर भी यह स्मरणीय है कि 'किर्क-सेशन्स' तथा प्रायश्चित का कार्यक्रम चार्ल्स द्वितीय के एपिस्कोपल प्रधान समय में भी निरन्तर चलता रहा तथा एपिस्कोपल पादरियों द्वारा नियंत्रित अनेक जिला-गिरजों में भी समाप्त न हो सका।

कुल मिला कर बिशप अथवा जैकोबाइट दल प्रेस्बिटेरियन अथवा ह्विग लोगों की अपेक्षा उच्च वर्गों के आश्रय पर अधिक निर्भर था। 'नॉक्स' का शिष्यत्व जितना अधिक दृढ़ होता जाता था उतनी ही आचरण तथा विचारधाराओं के जनतांत्रिक होने की सम्भावना अधिक होती जाती थी। पादरियों की नियुक्ति में लेकिन झगड़ा उत्पन्न हुआ था। कट्टर प्रेस्बिटेरियनों की मांग जिले (पैरिश) के लोगों को ही नियुक्त करने की थी; और इसके लिये वे धर्माध्यक्षों को धार्मिक विचारधारा की दुहाई देते थे, लेकिन नियुक्ति करने वाले अन्य संरक्षकों को उनके प्रेस्बिटेरियन विश्वासों पर सन्देह था।

एपिस्कोपेलियन लोग छपे हुए पर्चों द्वारा प्रेस्बिटेरियन लोगों की इस नीति-विहीनता पर व्यंग करते रहते थे कि वे पादरियों द्वारा समर्थित भद्र तथा कुलीन लोगों, जिन पर कि वे अपनी तथा धर्म की सुरक्षा के लिये निर्भर करते थे, विरोध करते थे तथा झगड़ालू सामान्यजनों की भीड़ का पक्ष लेते थे। 'वस्तुतः कुलीनों तथा भद्रजनों के सामान्य लोग इतने आधीन कि इतनी स्पष्ट स्थिति में उनकी इस निर्बुद्धि पर कि किसका पक्ष लिया जाए जरा भी विचार की आवश्यकता नहीं थी।' स्कॉटलैंड आने वाले विद्रोही यात्री भी आश्चर्यचकित तथा आशंकित थे कि चर्च उच्चवर्गीय लोगों से इतनी निर्भीकतापूर्वक किस प्रकार व्यवहार करता है। अन्य दोषों के अतिरिक्त जॉन नॉक्स के चर्च ने स्कॉटलैंड के निम्नवर्गीय लोगों को इतना ऊंचा उठा दिया था कि वे अपने सामन्त मालिकों से अभिमानपूर्वक बात करने लगे थे।

एपिस्कोपेलियन लोगों की स्थिति अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में विश्रृंखलित हो गई थी। उनके धार्मिक कार्य, विश्वास, संगठन तथा अनुशासन में अधिकारों का कुछ उपयोग कर पाने वाले पादरियों की उपस्थिति को छोड़कर-प्रेस्बिटेरियन प्रणाली से अधिक भिन्न नहीं थे। फिर भी दोनों में काफी कटुता थी क्योंकि गिरजों के मतभेद ह्विग तथा जैकोबाइट के बीच के राजनैतिक मतभेदों से जिनकी पृष्ठभूमि में कि द्वेष भाव दो पीढ़ियों से निरन्तर चला आ रहा था, काफी सम्बन्धित थे।

स्कॉटलैंड के एपिस्कोपेलियन इंगलैंड के विद्रोहियों की तुलना में एक ओर जहां श्रेष्ठ थे वहीं खराब भी थे। एक ओर जहां सन् १७१२ तक उनके धार्मिक कार्यों को मान्यता प्रदान करने के लिये 'एक्ट ऑफ़ टॉलरेशन' जैसे किसी अधिनियम की रचना नहीं हो पाई थी, दूसरी ओर जिला-गिरजों (पैरिश-चर्च) की लगभग एक/छः संख्या पर अब भी उन्हीं के पादरियों का अधिकार था। हाईलैंड्स तथा उनकी पूर्वी सीमा पर तथा एबरडीनशायर में, स्वयं को प्रेस्बिटेरियन पादरी जतलाने वालों पर उतनी ही बर्बर भीड़ के आक्रमणों का खतरा रहता था जितनी बर्बर कि दक्षिण-पश्चिम के एपिस्कोपल पादरियों पर आक्रमण करने वाली भीड़ थी। सन् १७०४ में जब एक प्रेस्बिटेरियन पादरी को डिंगवाल में पदासीन किया जा रहा था, स्त्रियों तथा पुरुषों

की एक भीड़ ने यह नारा लगाते हुए कि 'राजा विली मर चुका है और हमारा राजा जीवित है' उस पर पत्थरों की वर्षा की थी तथा पीट कर भगा दिया था।

उत्तर-पूर्व में लोगों की जो भावना इस प्रकार व्यक्त हुई थी उसका कारण वस्तुतः मतभेदों की अपेक्षा राजनैतिक संघर्ष, दक्षिण-पश्चिम के ह्विग मोर्स की प्रान्तीय घृणा तथा देखे परखे हुए पुराने पादरियों के प्रति आस्था का होना था। स्कॉटलैंड में सन् १७०७ में ६०० जिलों में से १६५ अब भी ऐसे जिले थे जिनके पादरी-एपिस्कोपल चर्च के ही पक्ष धर थे। लेकिन अधिकांश एपिस्कोपल पादरी 'क्रान्ति' के समय अपने अधिकारों से वंचित कर दिये गये थे। ऐन्नी के शासनकाल में उनकी दशा दयनीय हो गई थी, किसी बड़े घराने के पुरोहित जैसे कुछ भाग्यशाली पादरियों को भी या तो अपने स्कॉटलैंड के ही धर्म समर्थकों की भिक्षा पर जीवन यापन करना पड़ता था, अथवा अंग्रेजी चर्च सम्प्रदायियों की वृत्ति पर आश्रित रहना पड़ता था कि जो उन्हें समान कार्य के लिये हुए शहीदों के रूप में देखते थे।

मैं पिछले अध्याय में यह बता चुका हूं कि उच्च वर्गों में जादू-टोने के प्रति लोगों के विश्वास में कितनी कमी हो गई थी क्योंकि उस शिक्षा प्रधान देश में कानून के अनुसार जादूगरनियों पर मुकदमें चलाना तथा उनके प्रति लोगों के विश्वास को मान्यता देना बन्द कर दिया गया था। स्कॉटलैंड में भी एक दो पीढ़ियों बाद यही स्थिति उत्पन्न होने लगी थी। अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उच्चवर्ग का एक भाग जादुई संस्थाओं की दृष्टि से पर्याप्त अस्पष्ट था लेकिन पादरियों तथा सामान्य लोगों का इनमें कट्टर विश्वास था। महारानी ऐन्नी के शासनकाल में जादूगरनी प्रतीत होने वाली कई स्त्रियों को मौत के घाट उतार दिया गया था तथा कई को ऐसा न करने की कड़ी हिदायतें दे दी गई थीं। जार्ज प्रथम के समय में जादूगरनियों को सदरलैंडशायर के सुदूर जंगलों में अन्तिम बार मृत्युदंड दिया गया था। सन् १७३६ में ग्रेट ब्रिटेन की वेस्टमिनिस्टर पार्लियामेन्ट ने जादूगरनियों को मृत्युदंड देने वाले कानून को समाप्त कर दिया था। एक पीढ़ी के बाद बर्न्स तथा उसके कृषक मित्रों के लिये जादूगरनियां भय की अपेक्षा उपहास का विषय हो गई थीं लेकिन कट्टर प्रेस्बिटेरियन जादू-टोने में अविश्वास को नास्तिकता के ही रूप में मानते रहे।

वास्तव में प्रेस्बिटेरियन चर्च सभी आम विश्वासों का उत्पत्ति केन्द्र नहीं था। कुछ विश्वासों को जहां वह प्रोत्साहित करता था कुछ को समाप्त करने का भी प्रयत्न करता था। लेकिन इन सभी विश्वासों का मूल वस्तुतः पोप-सम्प्रदाय, अन्धविश्वासी मूर्तिपूजकों, आदिम प्रवृत्तियों तथा प्रथाओं से प्राप्त हुआ था जो कि पर्वतीय क्षेत्रों, जंगली प्रदेशों तथा प्रकृति प्रधान स्थलों पर रहने वाले लोगों में (लोलैंड्सवासियों में भी) जिनकी स्थिति कि अब भी भूतकालीन स्थिति के ही समान थी, अब भी विद्यमान थे। अब भी, घर आते हुए जब लोग अर्द्ध रात्रि में नदी को पार करते थे तो उन्हें

बाढ़ के समान गर्जना करते हुए जल-प्रेतों की आवाज सुनाई देती थी। अब भी उन्हें घाटी के पेड़ों में छिपी हुई प्रेतनियां दिखाई देती थीं, परिचित धर्म प्रचारिकाओं की भी संस्कारों द्वारा इस डर से शुद्धि की जाती थी कि कहीं वे पशुओं को न मार डालें अथवा बच्चों को उनके पालने से न उड़ा ले जाएं। टे के उत्तर में, प्रथम मई के दिन लोग बेल्टान अग्नि प्रज्वलित करते थे तथा उसके चारों ओर नृत्य करते थे। फसलों और पशुओं की रक्षा कई प्रकार की कहावतों के आधार पर की जाती थी जिनमें से कुछ तो कृषि-प्रधान युग तथा पशुपालन युग से चली आ रही थीं, उदाहरणार्थ यह कहावत—कि "जिस समय जंगल में आच्छादित वृक्ष-शाखाओं पर मूर्त थी एक पावनता, हवा, जल और अग्नि सभी कुछ पवित्र था।" जादुई कुओं पर भी लोग जाया करते थे और पेड़ों तथा झाड़ियों पर प्रेतात्माओं के आतंक के कारण तथा भक्ति स्वरूप फटे हुए कपड़ों आदि के रूप में कुछ भेंट चढ़ाया करते थे। हाईलैन्ड्स के कुछ क्षेत्रों में इस प्रकार की धार्मिक क्रियाओं का करना लोगों के धर्म का प्रमुख भाग था; लोलैन्ड्स में यद्यपि ऐसी क्रियाओं की प्रमुखता नहीं थी लेकिन फिर भी किर्क-चर्च को मानने वाले ईसाइयों के इस देश में लोगों के व्यावहारिक जीवन में ऐसी क्रियाएं अवश्य सम्मिलित थीं।

अच्छे डाक्टरों की अनुपस्थिति में देहात में लोग पारम्परिक देशी औषधियों का ही प्रयोग करते थे और जादू-टोना तथा उपचार परस्पर इतने मिले जुले थे कि उनमें अन्तर कर पाना कभी-कभी बड़ा कठिन हो जाता था। कुछ ऐसे बुद्धिमान लोग भी थे जो एक ओर जहां मानवीय सुख शांति के लिये अपना योगदान करते थे वहीं दूसरी ओर उसे हानि पहुंचाने वाले जादू-टोना करने वाले स्त्री-पुरुषों की भी सहायता करते थे। चर्च यद्यपि लोगों को जादू-टोना के उन्मूलन के लिये प्रोत्साहित करता था लेकिन जादूगरों को भद्रजनों से सहायता प्राप्त कर पाने से वंचित नहीं कर सकता था। पादरी की स्थिति भी अधिक शक्ति-सम्पन्न नहीं थी। और चूंकि उसने हानि रहित सुख-सुविधाओं को भी त्याग दिया था—वह शक्ति-सम्पन्न हो भी कैसे सकता था? प्रत्येक उत्सव में, चर्च द्वारा पाबन्दी होने पर भी लड़के लड़कियां वाद्यों के साथ नृत्य करते थे; और न वृद्धों और न युवा लोगों किसी को भी प्रेस्विटर अथवा पोप से भी पहले से चले आ रहे धार्मिक संस्कारों (क्रियाओं) से वंचित करना कठिन था। किसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को दूर करने के लिये जीवन की प्रत्येक स्थिति-जन्म, विवाह, मृत्यु, दूध बिलोना, यात्रा के लिये प्रस्थान, खेत बोना आदि से सम्बन्धित सैकड़ों प्रथाओं तथा मन्त्रों का प्रयोग किया जाता था।

अकल्पना प्रधान शंकावादी इंगलैंड की अपेक्षा स्कॉटलैंड में दैनिक जीवन में किसी न किसी प्रकार के करिश्मे के घटित होने की कल्पना सदैव उपस्थित रहती थी। भूत-प्रेत, शकुन, प्रतीतियां दैनिक जीवन की सामान्य विशेषताएं थीं; जीवित लाशें दैनिक

जीवन में किस प्रकार सम्मिलित होकर भाग लेती हैं, इस प्रसंग की अनेकों कहानियां कही जाती थीं और उन पर लोग विश्वास भी कर लेते थे; होमरकालीन यूनान की भांति, जंगल में किसी अजनबी से भेंट हो जाने पर एक स्कॉट के लिये उसे एक 'धूर्त' समझ लेने की पर्याप्त सम्भावना थी। मकान के बाहर दरवाजे पर संध्या समय प्रतीक्षा करता हुआ अथवा कब्रिस्तान के ऊपर से गुजरता हुआ कोई दानवीय-आकार वहुधा दिखाई देता था। बीहड़ जंगलों में जो लोग हिंस्र पशुओं के शिकार बन जाते थे वे पारलौकिक शक्तियों के प्रकट रूप में वुड्रो तथा उसके एतिहासज्ञों की भांति सदैव विस्मयकारी वस्तुओं को स्तम्भित दृष्टि से ताकते हुए इधर-उधर घूमा करते थे। अपनी सभाओं में पादरी लोग ऐसी धारणाओं को प्रोत्साहित करते-रहते थे। पहाड़ियों पर घंटों अकेले बैठे हुए चरवाहों के लड़के कभी-कभी अद्भुत तथा सुन्दर दिवास्वप्न वुनते रहते थे : वुड्रो ने लिखा है कि सन् १७०४ में एक व्यक्ति ने यह घोषित किया था कि जब वह ऐसे ही एकान्त में विचरण कर रहा था एक कंकाल व्यक्ति उसके पास आया, भक्ति भाव से उसकी अभ्यर्थना की तथा शिक्षा देने के लिये प्रार्थना की; क्योंकि वह उसे ईसामसीह समझा बैठा था। उसके अनुसार, इसी प्रकार अगले वर्ष जब एक लड़का कुए में डूब रहा था और आसपास कहीं कोई नहीं था एक दुर्बल युवक ने आकर उसे पानी से वाहर निकाला, और लोगों ने उसे देवदूत समझ लिया। स्कॉटलैंड का यह स्वरूप प्राचीन स्वरूप ही था, डेविड ह्यूम, एडम स्मिथ अथवा एडिनबरा के बुद्धिवादियों के स्कॉटलैंड की तो बात ही क्या, बर्न्स तथा वाल्टर स्कॉट का प्रभाव भी (यद्यपि वह उन्हें चिन्तन की सामग्री देता रहा था) उस पर नहीं पड़ सका था।

यद्यपि लोलैन्ड्स में उसकी प्रकृति प्रधान तथा आदिम परिस्थितियां ऐसे प्राचीन विश्वासों तथा कल्पनाओं को जन्म देती रही थीं लेकिन हाईलैन्ड्स में यह स्थिति और भी विकट थी; परियों, आत्माओं, नौका के नीचे पानी में छिपे हुए अतीन्द्रिय निराकार दैत्य, जीवन से लिपटे हुए शकुन तथा भविष्यवाणियों की बातें काफी प्रचलित थीं। हाईलैंड सीमा पर (जिसे स्कॉट शायद ही कभी पार करते हों और यदि कभी पार करते भी थे तो अभियानकर्ता वेली निकोल जाखी की भांति भयग्रस्त होकर ही पार करते थे) मार्गविहीन अजानी पहाड़ियों पर अन्य भाषा-भाषी सेल्टिक जनजातियां रहा करती थीं। उनकी पोषाक, नियम तथा समाज सभी कुछ दक्षिणी स्कॉटलैंड की तुलना में लगभग एक हजार वर्ष पुराने थे और वे किर्क (चर्च) अथवा महारानी किसी को भी स्वीकार न कर केवल अपने ही मुखियाओं, कवीलों, प्रथाओं तथा अन्धविश्वासों के आधीन थे। जनरल वेड की सेवाओं के पूर्व, एक पीढ़ी वाद तक वहां हाईलैन्ड्स से उसे जोड़ने वाली किसी प्रकार की सड़क का निर्माण नहीं हुआ था। अजेय प्रकृति का उसके सौंदर्य प्रधान तथा उदास पक्षों सहित एक छत्र साम्राज्य था और उसी साम्राज्य के एक कोने में उसका ही भाग वनकर प्राकृतिक छटा की सौंदर्यानुभूति से उदासीन मनुष्य भी बैठा था।

आज जितनी जानकारी अफ्रीका के सुदूर क्षेत्रों के बारे में एक पुस्तक द्वारा प्राप्त की जा सकती है उससे कहीं कम जानकारी उस समय लन्डन अथवा एडिनबरा में हाईलैन्ड्स की स्थिति के बारे में उपलब्ध थी। हाईलैन्ड्स के बारे में बर्ट्स के पत्रों के पूर्व कोई भी अच्छी पुस्तक प्राप्य नहीं थी। महारानी ऐन्नी के समय में मोर्स द्वारा लिखे गये स्कॉटलैंड के विवरण के कुछ प्रारम्भिक पृष्ठ ही उस द्वीप के उत्तरी छोर वाले अजाने प्रदेश के विषय में कुछ जानकारी प्रदान करते थे: "हाईलैंड निवासियों के पास यद्यपि अन्न की कोई विशेष कमी नहीं है फिर भी वे अपनी जन-संख्या को उससे संतुष्ट नहीं कर सकते हैं अतः प्रत्येक वर्ष अपने पशुओं सहित निचले प्रदेशों की ओर चले आते हैं, उनके पास पशु धन पर्याप्त मात्रा में है अतः जितनी अन्न की मात्रा उनके परिवारों के सन्तोष के लिये आवश्यक होती है वे पशुओं के बदले लोलैंड निवासियों से उसे प्राप्त कर लेते हैं...। वर्ष में एक या दो बार उनमें से काफी लोग सम्मिलित रूप से लोलैंड की ओर चले आते हैं, वहां के निवासियों को लूटते हैं और वापस चले जाते हैं। इस प्रकार की लूट में उन्हें अत्यन्त सुख मिलता है और वे इसे निर्द्वन्द भाव से कर पाने में पर्याप्त कुशल हैं।"

एडिनबरा से सन् १७०६ में डिफो ने हार्ले को लिखे गये अपने पत्र में हाईलैन्ड-वासियों के बारे में कुछ प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं: "वे काफी भयानक प्रकृति के लोग हैं, मैं यही चाहता हूं कि महारानी उनमें से २५००० को स्पेन पहुंचा दे क्योंकि वह देश भी उन्हीं लोगों के समान अत्यन्त स्वाभिमानी तथा भयानक लोगों का देश है। वे काफी शरीफ लोग हैं और किसी भी प्रकार का झगड़ा या अभद्र व्यवहार नहीं करेंगे। लेकिन मनुष्य को जंगली रूप में, एक चौड़ी तलवार, तमंचा, कमर में कटार लटकाये हुए कुछ साथियों के साथ 'हाई स्ट्रीट' पर किसी सरदार की भांति निर्द्वन्द गाय हांकते हुए घूमते देखना एक अत्यन्त अप्रिय दृश्य उत्पन्न करेगा।"

ये जंगली लोग लोलैंडर से व्यापार न करते समय अथवा पशुओं को न हांकते समय घर पर स्वाभाविक रूप से किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे? यह कहना मिथ्या होगा कि जिस भूमि पर ये गणजातियां रहा करती थीं वह उन्हीं की भूमि थी और वे उस पर सन् पैंतालीस तक अन्य लोगों (सैनिक मुखियाओं) द्वारा अचानक वहां न पहुंचने तक उस पर अपने निजी रूप में निर्द्वन्द विचरते रहे। वास्तव में महारानी ऐन्नी के शासनकाल में किराये पर खेत लेने वाले लोग सम्पत्तिदारों से भूमि प्राप्त करने के इच्छुक थे ताकि उस भूमि को एक भारी किराये की राशि पर पुनः किराये पर उठाया जा सके। पहाड़ी के आसपास की जमीन जल-प्रपातों के प्रबल वेग के प्रभाव से पथरीली हो गई थी और खाद आदि साधनों द्वारा उसमें किसी प्रकार का सुधार भी नहीं किया गया था, कृषि प्रणाली तथा खेती के औजार दक्षिणी स्कॉट-लैंड की तुलना में भी काफी अविकसित प्रकार के थे, छोटी-मोटी क्यारियां भी केवल

कुछ ऊबड़-खाबड़ सीमित भूखंड भर थीं। वस्तुतः घाटियों पर जनसंख्या का भार अत्यधिक था अतः इस सबके अतिरिक्त कोई अन्य सम्भावना थी भी नहीं। कबीले के लोगों की संख्या में जैसे जैसे वृद्धि होती गई खेतों का भी विभाजन होने लगा और इसका काफी खराब परिणाम हुआ। यह भविष्यवाणी सरलतापूर्वक की जा सकती है कि यदि हाईलैन्ड्स को सड़कों द्वारा बाहरी प्रदेशों से जोड़ दिया जाता अथवा सैनिक अथवा राजनैतिक शक्ति द्वारा जीत लिया जाता और गणजातियां जैसे ही यह समझ पातीं कि स्थान परिवर्तन से उनका जीवन सुधर सकता है, तो वे तुरन्त वहां से चले जाते। ऐन्नी के शासनकाल में यूरोप की ओर फ्रेन्च शासन में 'आयरिश' सैनिक टुकड़ी में भर्ती होने के लिये तथा लोलैन्ड्स में साधारण नौकरी के लिये बहुत थोड़े लोग बाहर जाया करते थे।

मुखिया (चीफ़) को जन्म-मरण सम्बन्धी सभी अधिकार प्राप्त थे और वह उनका पूरा उपयोग करता था जिसके कारण उसके कबीले में लोग उससे काफी आतंकित रहते थे तथा उसके प्रति पारस्परिक भक्ति भाव तथा कई बार स्नेह भी बनाए रखते थे। लेकिन यह चीफ़ के व्यक्तित्व पर अर्थात्—वह पिता की भांति व्यवहार करता है अथवा निरंकुश अत्याचारी के रूप में अथवा दोनों स्थितियों के बीच की स्थिति को अपनाता है—पर काफी निर्भर करता था। जिस प्रकार लुई XIV अपनी सेना को बनाए रखने के लिये कृषकों पर कर लगाया करता था, उसी प्रकार चीफ़ भी अपने सैनिक रक्षकों का भरण-पोषण अपने कबीले के मूल्य पर करता था; लेकिन इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत तथा जातीय स्वाभिमान से ओतप्रोत प्रजाति में कोई भी अन्य शान्तिपूर्ण तथा मितव्ययी जीवन विधि लोकप्रिय नहीं हो सकती थी।

आरगाइल महान के अतिरिक्त भी 'हाईलैंड चीफ़्स' में से कई अन्य भी कुलीन वंशीय सरदार थे जिनका एडिनबरा की राजनीति में तथा फ्रांस अथवा इंगलैंड की संस्कृति धारण करने वालों में महत्वपूर्ण स्थान था। लेकिन सुसंस्कृत चीफ़ तथा उसके अनुयायियों में भी काफी समानता थी—कबीले के प्रति स्वाभिमानी दृष्टि, वीणा तथा बांसुरी से प्रेम, प्राचीन कल्पनाओं तथा संघर्षो के कथानक वाले गीतों तथा लोक कथाओं जिन्हें कबीले के कवि निरन्तर समृद्ध करते रहते थे लगाव—ये सभी उनमें समान भाव भूमि का निर्माण करते थे। इस घाटी के अंचल में समुद्र की सुन्दर पहाड़ी बाहुओं के अतिरिक्त जहां द्वीप के अन्य भागों की अपेक्षा गरीबी तथा असभ्यता अधिक प्रमुख थी, वहीं काव्य तथा आंचलिक कल्पनाओं की भी काफी प्रचुरता थी।

इस प्रकार की स्थिति ने 'चर्च एसेम्बली' तथा 'सोसायटी' की ईसाइयत की शिक्षा देने के लिये प्रोत्साहित किया; सन् १७०४ से हाईलैन्ड्स में, जहां धर्म प्रेस्बिटेरियन, रोमन कैथोलिक, एपिस्कोपेलियन तथा आदिम पैगान शाखाओं में इस प्रकार विभाजित था कि उसका निर्धारण भी कठिन था, पुस्तकालय, पाठशालाएं तथा प्रेस्बिटेरियन

सेवादलों की स्थापना के लिये धन एकत्र किया जाने लगा। कुछ सफलता तो तत्काल ही प्राप्त हो गई, लेकिन कुछ स्थानों पर धर्म प्रसार के कार्यों को 'चीफ़' के आदेशों द्वारा बलपूर्वक दबा दिया गया और कुछ स्थानों पर कुछ वर्षों तक चलते रहने के बाद ऐसे कार्य स्वयं ही समाप्त हो गये। सन् पैंतालीस के बाद जब दक्षिण से सेना तथा राजनैतिक प्रभावों द्वारा गणजातिवाद (ट्राइबलिज्म) को दबा दिया गया, केवल तब ही प्रेस्बिटेरियन धर्म प्रचारकों को कुछ अवसर मिल सका और हाईलैंड्स में वे अपने धर्म का प्रसार वास्तविक अर्थों में कर सके।

सामाजिक शक्तियों ने जब सम्पूर्ण द्वीप के, काफी समय से चले आ रहे एकीकरण के प्रश्न को अन्तिम रूप दिया उस समय के स्कॉटलैंड की वास्तविकता कुछ इस प्रकार की ही थी। इस योजना को कार्यान्वित करने में ही राजा एडवर्ड को असफलता हाथ लगी थी और क्रॉमवेल कालकवलित हो गया था; जहां शक्ति का प्रयोग व्यर्थ सिद्ध हुआ था वहां महारानी ऐन्नी को अपने स्त्री सुलभ कार्यों के कारण सफलता मिल गई। दोनों देशों के बीच स्वतन्त्र रूप से हुई सन्धि सन् १७०७ में लागू कर दी गई तथा इसके कारण आधुनिक स्कॉटलैंड के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अन्य संदर्भ ग्रन्थ :

एच. जी. ग्राहम, सोश्यल लाइफ़ ऑफ़ स्काटलैंड इन दि एट्टीन्थ सेन्चुरी। इस विषय पर अन्य पुस्तकों की सूची मेरी पुस्तक 'इंगलैंड अन्डर क्वीन ऐन्नी' (रैमिलीज़ एंड दि यूनियन विद स्कॉटलैंड) के द्वितीय खंड में दी गई है।

---

[२]

अठारहवीं शताब्दी के अन्त में स्कॉटलैंड

जार्ज तृतीय, सन् १७६०-१८२०

जैसाकि हम बीसवीं शताब्दी के लोग विक्टोरियन अंग्रेजों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह से जानते हैं, 'प्रगति' का अर्थ सदा खराब से अच्छे अथवा श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर स्थितियों की ओर होने वाला परिवर्तन ही नहीं होता, और 'औद्योगिक क्रान्ति' का प्रभाव भी मनुष्य पर केवल अच्छा ही पड़ा हो, ऐसा भी नहीं है। लेकिन अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में स्कॉटलैंड की 'प्रगति' केवल तीव्र ही नहीं थी बल्कि उचित दिशा की ओर भी प्रवृत्त थी। निस्सन्देह उसमें भावी दुर्गुणों के बीज अवश्य विद्यमान थे फिर भी सन् १८०० का स्कॉटलैंड सन् १७०० के स्कॉटलैंड से निश्चय ही अधिक श्रेष्ठ था। अधिकांश लोगों के कन्धों से निर्धनता का भार कम हो जाने तथा उच्च वर्गों की सम्पन्नता में कमी हो जाने के कारण स्कॉटलैंड को उच्चतम उपलब्धियों के लिये एक मुक्त वातावरण प्राप्त हो गया था।

पिछले अध्याय में चित्रित जिन कष्टप्रद स्थितियों से इस देश को छुटकारा मिला था उसका कारण वास्तव में उसकी कृषि प्रणाली में होने वाला क्रान्तिकारी परिवर्तन था। यह वस्तुतः समसामयिक इंगलैंड में हो रहे परिवर्तनों के ही अनुरूप था, लेकिन शताब्दी के प्रारंभ में स्कॉटलैंड की दशा अधिक खराब होने के कारण उसका परिवर्तन इंगलैंड की अपेक्षा अधिक क्रान्तिकारी था। इस सुधार का प्रारंभ स्कॉटिश ज़मींदारों ने अपने असामियों को दक्षिणी ब्रिटेन के नवीन विचारों से अवगत कराने के लिये अंग्रेज किसानों तथा हालियों को नई विधियों के प्रशिक्षकों के रूप में नियुक्त कर लिया था और यह कार्य नेपोलियन से होने वाले युद्धों के दौरान उस समय अत्यधिक विकसित हुआ जबकि स्कॉटलैंड में उस समय तक विकसित हो चुकी प्रणालियों से इंगलैंड को परिचित कराने के लिये लोथियान्स के किसानों को इंगलैंड ले जाया गया। यद्यपि सन् १७६० तथा १८२० के बीच इंगलैंड का कृषि-स्तर पिछले युगों की अपेक्षा अधिक तीव्रता से विकसित हुआ था लेकिन इन्हीं वर्षों में स्कॉटलैंड की कृषि इंगलैंड से काफी कुछ ग्रहण करते हुए भी उसे पीछे छोड़ चुकी थी।

इंगलैंड की भांति वहां इस परिवर्तन के नेता छोटी पूंजी, कम लागत तथा अल्प ज्ञान वाले कुछ ज़मींदार ही थे। उनकी सफलता ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया और सबने उसका अनुकरण किया। उन्होंने सबसे पहले सम्मिलित जोत की 'रन-रिग' प्रणाली को समाप्त किया। यह प्रणाली वस्तुतः इंगलैंड के खुले खेतों (ओपन फील्ड्स) वाली प्रणाली से भी अधिक अविकसित कृषि प्रणाली थी, इसमें व्यक्तिगत

उपक्रम, कृषक समुदाय का लगाव तथा लगान की सुरक्षा बिलकुल नहीं थी और कृषकों को खोखले सामन्तवाद की चक्की में पिसना पड़ता था। पुराने इंगलिश पट्टेदारों की ही भांति स्कॉटिश असामियों को भी भूमि पर कोई वैधानिक अधिकार प्राप्त नहीं था, उन्हें उधार के तौर पर कभी तो कुछ भूमि मिल जाया करती थी और कभी बिलकुल नहीं मिल पाती थी। लेकिन इस प्रणाली के खराब होने पर भी उसमें एक लाभ अवश्य था और वह यह कि इच्छानुसार उस भूमि का अनुबन्ध तोड़ा जा सकता था। 'रन-रिग' प्रणाली को समाप्त करने तथा भूमि का उचित आकार वाले खेतों में पुर्नविभाजन कर किसानों को उन्नीस अथवा उससे अधिक वर्षो के लिये पट्टे पर दे देने में भू-स्वामियों को किसी भी प्रकार की अड़चन का सामना नहीं करना पड़ा। इस महत्वपूर्ण सुधार के कारण कृपकों को पहली मर्तबा अपनी राष्ट्रीय प्रजाति की क्षमता को प्रत्यक्ष दर्शाने तथा अपनी शक्ति का उपयोग करने की प्रेरणा मिली।

इंगलैंड में हुए इसी प्रकार के सुधार की भांति इस सुधार में भी पुरानी असामियों (टीनेन्ट्स) से भूमि के छिन जाने का खतरा अवश्य था। उदाहरणार्थ, दर्जन भर किसानों द्वारा जोते जाने वाले पुराने 'रन-रिग' फार्म के पुनः विभाजित हो जाने तथा लगभग छः किसानों में बंट जाने पर शेष छः किसानों का क्या होता ? कृषि व्यवसाय से निष्कासित ऐसे कुछ लोग स्कॉटलैंड के लोगों को बसाने के लिये 'संघ' (यूनियन) द्वारा बनाई गई बस्तियों में आ बसे थे और कुछ लोग विकसित होते हुए नगरों की ओर चले गये थे। लेकिन सामान्य रूप से ऐसी स्थिति में भी कृषि योग्य भूमि के निरन्तर विस्तार के कारण स्कॉटलैंड में कृषकों की संख्या भी बढ़ती गई। और व्यर्थ पड़ी हुई भूमि कृषि के लिये अधिक उपजाऊ भी सिद्ध हुई, क्योंकि वह घाटी की तलहटी में स्थित थी जिसमें पहाड़ी के ऊपर स्थित स्वसिंचित खेतों की अपेक्षा थोड़े से कृत्रिम सिंचाई के साधन ही पर्याप्त उपयोगी सिद्ध होते थे।

अब पुराने तथा नवनिर्मित दोनों ही प्रकार के खेतों के चारों ओर पत्थर की दीवारों अथवा झाड़ियों की चाहारदीवारी बना दी गई थी, ऊबड़-खाबड़ खेतों (रिंगों) को समतल बना दिया गया था, खेतों में खाद, पानी की व्यवस्था कर दी गई थी, कई भूखे तथा दुर्बल बैलों से हल जुतवाने की अपेक्षा घोड़ों (एक या दो) का उपयोग किया जाने लगा था, और लोग घोड़े की पूंछ के बालों से बने चाबुकों की जगह चमड़े के चाबुकों, लकड़ी के हल के स्थान पर लोहे के हल तथा स्लेज गाड़ियों की जगह अच्छी सुन्दर गाड़ियों का उपयोग करने लगे थे। खेतों में बोये गये आलुओं तथा बगीचों में उगाई गई सब्ज़ियों से लोगों के भोजन में विविधता आ गई थी और अन्य फसलों से सर्दी भर पशुओं के चारे की पूर्ति हो जाती थी। बड़े वृक्षों का लगाया जाना जहां आंधियों से रक्षा करता था, वहीं उससे इमारती लकड़ी का भी उत्पादन होता था और

व्यापक स्तर पर नये जंगलों के उग आने से स्कॉटलैंड के कई पहाड़ी स्थलों पर हरियाली भी छा गई थी।[1]

सन् १७५१ के टर्नपाइक एक्ट के बाद से सड़कों का इतना विकास हो गया था कि किसानों तथा औद्योगिकों को मंडियों में अपने माल के लाने और ले जाने के अवसरों में समानरूप से वृद्धि हो गई थी। कृषि सम्बन्धी समृद्धि से पुनः उसकी वृद्धि के लिये पर्याप्त पूंजी प्राप्त होने लगी थी। और जार्ज तृतीय के समय में काउन्टी कस्बों में हुई बैंकों की स्थापना से जमींदारों तथा किसानों को जिस प्रकार के परिवर्तन वे लाना चाह रहे थे उन्हें लाने में धन की दृष्टि से काफी सुविधा मिल गई थी। 'क्लाइड साइड' के औद्योगिक तथा वाणिज्य सम्बन्धी प्रगति से एक मंडी बन जाने के कारण भूमि के और अधिक सुधार के लिये कृषि तथा पूंजी सम्बन्धी सुविधाओं में और अधिक बढ़ती हो गई थी। ग्लासगों में तम्बाकू का उद्योग करने वाले धनिकों ने तथा अंग्रेजी भारत से लौटकर आए कई साहसी व्यक्तियों ने पर्याप्त भू-सम्पतियों को खरीद कर तथा उसका विकास कर पर्याप्त धन एकत्र कर लिया था। संक्षेप में, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन में समान विकास हो रहा था—किसी भी एक पक्ष का दूसरे पर कुप्रभाव नहीं पड़ा था : क्योंकि इस भाग्यशाली युग में उद्योग तथा वाणिज्य कृषि के किसी भी रूप में शत्रु नहीं बल्कि मित्र ही सिद्ध हुए थे।

इस प्रकार से, सामयिक दुर्भिक्षों का भय, जिनसे लोग आक्रान्त रहा करते थे, कम हो गया था। साधारणतः लोगों का वेतन, खेती का मुनाफा तथा भाड़ा पिछले कालों की अपेक्षा काफी बढ़ गये थे। दूध और दलिये के साथ प्रयुक्त आलू, हरी सब्जियां और पनीर के ही साथ कभी-कभी मांस भी सम्मिलित हो जाता था, अन्तर केवल इतना था कि पहले दूध का ग्लास जहां कम भरा होता था अब पूरा भर जाता था। इंगलैंड की भांति स्कॉटलैंड में भी चोरी छिपे जो चाय और तम्बाकू आती थी वह गरीबों तक भी पहुंचने लगी थी। मकानों की कुव्यवस्था में यद्यपि सार्वभौमिक रूप से सुधार नहीं किया जा सका था लेकिन जहां-जहां भी सुधार हुआ था वह उत्कृष्ट था; कुछ क्षेत्रों में पक्के अहातों वाले खेत बन गए थे और उन गन्दे मकानों के स्थान पर, जिनमें कि मनुष्य तथा पशु एक साथ रहते थे, एक या दो कमरे वाले सुन्दर मकान जिनमें चिमनी (धुएं दानी), शीशे की खिड़कियां, पलंग, फर्नीचर, गैलरी आदि की व्यवस्था थी, बन गये थे। बर्न्स (१७५९-१७९६) कालीन स्कॉटलैंड के लोग अपने पूर्वजों की अपेक्षा, जिन्हें कि भोजन, कपड़े और अन्य साधनों की कमी ने कृपकाय, मलिन तथा आलसी बना दिया था, काफी ताजगीपूर्ण तथा स्वस्थ दिखाई देते थे।

---

[1] डा. जॉनसन, जिन्होंने सन् १७७३ में स्कॉटलैंड की यात्रा की थी, वहां की वृक्ष-हीनता का निरन्तर मजाक बनाते रहते थे। वस्तुतः उस समय भी वृक्षारोपण कर दिया गया था लेकिन उनका बढ़ना अभी शेष था। इस दृष्टि से तीस वर्ष बाद तक उस देश के कई भागों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ चुका था।

इसके अतिरिक्त स्कॉट लोग अब स्वतन्त्र भी थे। मरणासन्न सामन्तवाद के दुर्गुण, जो इंगलैंड में आमूल चूल नष्ट हो जाने के बाद भी स्कॉटलैंड में बच रहे थे, 'वंश सम्बन्धी विशेष अधिकारों' (हेरेडिटेबल ज्यूरिस्डिक्शन) को समाप्त कर देने वाले सन् १७४८ के अधिनियम के साथ समाप्त हो गये थे। हाईलैन्ड्स तथा लोलैन्ड्स में समान रूप से ज़मींदारों की अपनी निजी अदालतें थीं जिनमें वे अपने पट्टेदार किसानों (असामियों) पर मुकदमा चलाया करते थे और अपनी इच्छानुसार उन्हें वे काल कोठरियों में कैद कर दिया करते थे, जिसकी अपील भी वे लोग राजा के पास नहीं कर सकते थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इन विशेषाधिकारों ने ही सन् १७४५ में अपने लोगों को एकत्र कर पाने में जैकोबाइट ज़मींदार तथा ताल्लुकेदारों की सहायता की थी। तीन वर्ष बाद उन्हें भी समाप्त कर दिया गया था, क्योंकि जिस राजनैतिक उद्देश्य के कारण उनका अन्त शीघ्र हुआ उसके अतिरिक्त भी कई अन्य कारण उनके अन्त के लिये ज़िम्मेदार थे।

हाईलैंड्स में वंश-उत्तराधिकारी से सम्बन्धित पक्षों के अतिरिक्त कई विशेषताएं समाप्त हो गई थीं। सन् 'पैंतालीस' के दमन के बाद के वर्षों में स्कॉटलैंड की पहाड़ियों में रहने वाली आदिम जातियों के स्थिर सामाजिक जीवन में आद्योपान्त परिवर्तन कर दिया गया। जन-जातीय व्यवस्था चौड़ी ढ़ाल-तलवार वाला नायकत्व, तथा 'चीफ़' (ज़मींदार) का पैतृक साम्राज्य सदा के लिये समाप्त हो गये थे। इतिहास में इस प्रकार सर्वप्रथम हाईलैंड्स तथा शेष स्कॉटलैंड में अधिनियम लगान, शिक्षा तथा धर्म की दृष्टि से एकता स्थापित हुई। सन् १७४५ के पूर्व ही जनरल वेड द्वारा हाईलैंड्स में बनाई गई सड़कों के कारण लोलैंड्स का पहाड़ी क्षेत्रों पर काफी प्रभाव पड़ा था और इसने एक बड़े परिवर्तन की पृष्ठभूमि का भी निर्माण किया, यदि काफी समय से कष्ट झेलते हुए दक्षिणी प्रदेश को जैकोबाइटों का आक्रमण हजार वर्षों से चले आ रहे कबीलों की असभ्य लूटमार को सदा के लिये समाप्त करने की प्रेरणा न देता तो यह परिवर्तन इतना शीघ्र घटित न होता।

जिन लोगों का अस्तित्व सदा से युद्ध द्वारा तथा युद्ध के लिये ही रहा था उनसे सफलतापूर्वक हथियार छीन लिये गये थे, लेकिन उनकी युद्ध-प्रवृत्ति का उपयोग राजा की हाईलैंड सैनिक टुकड़ी में कर लिया गया था जिसने साम्राज्य की रक्षा के लिये विदेशी उपनिवेशों में, जो अब अंग्रेजों तथा स्कॉट लोगों तथा गाएल व सैक्सनों के अधिकार में हैं, एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। दक्षिण के ताल्लुकेदारों (लेअर्ड्स) की ही भांति चीफ़्स भी ज़मींदार बन गए थे और तब से न्याय तथा प्रशासन व्यक्तिगत अथवा किसी गणजाति विशेष की सम्पत्ति न होकर राजा तथा राष्ट्र की सम्पत्ति हो गए थे। उपरोक्त वर्णित सामाजिक संरचना के क्रान्तिकारी परिवर्तनों को स्वीकार करना इसी बात को दर्शाता था कि उनका इस काल में घटित होना अवश्यम्भावी था। 'विद्रोह' के कुछ समय बाद तक अत्याचारों तथा उत्पीड़न का काल रहा; इसमें व्यक्ति के कबीले

तथा चीफ्स के प्रति अत्यधिक भक्ति भाव का चित्रण स्टीवेन्सन की 'किडनेप्ड' नामक पुस्तक में मार्मिक रूप से किया गया है लेकिन समाज की पुरानी मृत्त अवस्था की ही पुर्नस्थापना का प्रयत्न नहीं किया गया था; जब भूतपूर्व जैकोबाइटों को स्वदेश लौट आने की अनुमति मिल गई और नई व्यवस्था के अन्तर्गत उन्हें उनकी ज़मींदारी लौटा देने की बात भी निश्चित हो गई तब उनका संघर्ष भी समाप्त हो गया था। जिस जनजातीय प्रदेश को निषिद्ध कर दिया गया था उसके पुनरुद्धार से बाधाएं हटा ली गईं क्योंकि उसकी भावनाएं समाज तथा उसकी व्यवस्था की विरोधी नहीं रही थीं।

इसी दौरान हाईलैन्ड्स में प्रेस्बिटेरियन धर्म प्रचारक तथा स्कूलों के अध्यापक भी सेवा कार्य कर रहे थे और वे लोग प्रशासक अधिकारियों की अपेक्षा 'गाएल' से प्रारम्भ से ही अधिक कुशलता तथा सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार कर रहे थे। पहाड़ी लोगों की बुद्धि तथा कल्पना द्वारा किये जाने वाले कार्यों को, जो कि उनकी बेसमझ प्रकृति का ही परिचय देते थे, स्कूल के कार्य ने एक नवीन दिशा प्रदान की थी। लिखने पढ़ने का कार्य हाईलैंड्स में प्रमुखतया स्कॉटिश समाज द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षा देने के लिये प्रारम्भ किया गया था, जो महारानी ऐन्नी के शासनकाल से शुरू हुआ था लेकिन उसे व्यापक सफलता केवल 'कुल्डोन' के बाद कबीलों की समाप्ति के लिये प्रारम्भ किये गये अभियानों के बाद ही मिल सकी थी। स्कॉटिश समाज का एकीकरण, हाईलैंड्स के द्विभाषी प्रदेश बने रहने के बावजूद, धार्मिक तथा शैक्षणिक आधार पर केवल शताब्दी के अन्तिम काल में हुआ था।

उन घाटियों में, जहांकि रोमन कैथोलिक धर्म काफी प्रचलित था उसको किसी प्रकार की आंच नहीं आई, लेकिन प्राचीन अन्धविश्वासी मूर्तिपूजावाद अवश्य समाप्त हो गया। इस शिक्षा आन्दोलन से हाईलैंड्स में, आर्थिक परिवर्तन भी निकट रूप में सम्बन्धित था। जनजातीय व्यवस्था में अनुपजाउ पहाड़ी प्रदेश जितनी जनसंख्या को आरक्षण दे सकता था लोगों की जनसंख्या उसकी तुलना में कहीं अधिक थी। प्रत्येक 'चीफ़' की महत्वाकांक्षा अपने किसानों से अधिकाधिक लगान वसूल करना ही नहीं थी वरन् वह अपनी सेना की भी वृद्धि चाहता था और जनजातियां सामयिक तथा निर्धनता की आदी हो चुकी थी तथा जिन स्थानों पर 'गाएलिक' भाषा नहीं बोली जाती हो वहां जाकर बसने की वे लोग कल्पना भी नहीं कर सकते थे। लेकिन यह नया युग आप्रवास (एमिग्रेशन) के लिये अधिक प्रेरणाप्रद सिद्ध हुआ। 'चीफ़' के स्वयं को एक शान्त स्वभाव वाले 'ज़मींदार' के रूप में परिवर्तित कर लेने पर उसकी आकांक्षा सेना को संख्या में वृद्धि करने की अपेक्षा धन एकत्र करना अधिक हो गई। और उसके संत्रासित असामी नई सड़कों तथा स्कूलों के माध्यम से पहाड़ी प्रदेश के बाहर समुद्र पार के बनिक संसार से भी परिचित हो गये। निष्क्रमण अथवा स्थानान्तरण की प्रवृत्ति इस प्रकार बढ़ने लगी और लोग अधिकांश केनेड़ा में बसने के

लिये जाने लगे, और स्वदेश में छोटे-छोटे लगान वाले खेत भेड़ों के चरागाह में बदलने लगे। सन् सत्तर की दशाब्दी में हाईलैंड्स तथा 'द्वीपों' से काफी लोग विदेश गये थे, सन् १७८६-१७८८ में भी सन् १७८२-८३ के भयंकर अकाल के कारण पुनः काफी जन-संख्या स्वदेश से बाहर चली गई। पुरातन व्यवस्था में ऐसे दुर्भिक्ष अनेकों बार पड़े थे लेकिन इसके कारण लोगों ने स्वदेश त्याग नहीं किया था, क्योंकि आदिवासियों को, वे 'कहां जाएं', 'किधर जाएं' इसका कोई ज्ञान नहीं था।

कुछ जिलों में आजकल जमींदार स्वयं लोगों को निष्कासित कर निष्क्रमण (एमीग्रेशन) को प्रोत्साहन देते थे। लेकिन कुछ अन्य स्थानों पर वे आलू की खेती के प्रचलन द्वारा तथा कभी निष्क्रमण-प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने वाले एस. पी. सी. के. के स्कूलों तथा अध्यापकों का विरोध कर लोगों की स्थानान्तरण प्रवृत्ति को मन्द कर उन्हें स्वदेश में ही रोके रखने का भी प्रयत्न करते थे। ये स्कूल तथा अध्यापक जमींदारों पर बहुधा ही आरोप लगाया करते थे कि वे लोगों को स्वदेश में ही रहने को बाध्य कर अपने प्रति उनकी अधीनता तथा अज्ञान में निरन्तर वृद्धि करते रहते हैं। वास्तव में हाईलैंड निवासी अच्छे जीवन की आशा तभी कर सकता था जबकि वह समुद्र पार जाता अथवा कम से कम पहाड़ी क्षेत्र से बाहर चला जाता। और विदेश प्रस्थान के पूर्व उसके लिये अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक था, जो धर्म प्रचारक स्कूलों के माध्यम से ही उसे सुलभ हो सकता था।

अंग्रेजी भाषा तथा गाएलिक बाइबिल ही उन्हें कष्टदायक स्थितियों से मुक्ति का मार्ग प्रदान करती थीं। हाईलैंड निवासियों की स्वतन्त्र प्रकृति को समाप्त करने की अपेक्षा ईसाई स्कूल उन्हें अपनी स्वतन्त्र प्रकृति को कार्यान्वित करने का ही मार्ग दिखाते थे। सबल एवं साहसी लोग अंग्रेजी भाषा के ज्ञान से समुद्र पार के विशद संसार का प्रवेशद्वार पा लेते थे और जो लोग इस दृष्टि से पीछे रह जाते थे उनके लिये ये स्कूल बाइबिल के स्वतन्त्र अध्ययन की प्रेरणा देते थे।[१]

इंगलैंड तथा स्कॉटलैंड की वाणिज्य एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं के 'संघ' के कारण ही हाईलैंड्स की क्रान्ति, ब्रिटिश साम्राज्य में स्कॉटवासियों के सहयोग से उप-निवेशों की वृद्धि ग्लासगो के अटलान्टिक पार के देशों से होने वाला व्यापार तथा क्लाइडसाइड का औद्योगीकरण सम्भव हो सका था। कृषीय क्रान्ति की भांति ये परिवर्तन भी प्रमुखतया शताब्दी के उत्तरार्ध की ही विशेषता थे लेकिन इस काल में वे अधिक तीव्रता से घटित हुए।

सन् १७०७ के 'संघ' के समय ग्लासगो १२,५०० की जनसंख्या वाले एक व्यापार केन्द्र तथा विश्वविद्यालयीय शिक्षा-केन्द्र होने के साथ ही हाईलैंड जनजातियों के विरुद्ध

---

[१] मिस एम. जी. जोन्स, दि चैरिटी स्कूल मूवमेंट ऑफ़ दि एट्टीन्थ सेन्चुरी अध्याय VI।

एक पश्चिमी ईसाई सभ्यता के प्रचार का भी प्रमुख केन्द्र था; उसके नागरिक अपने प्रेस्बिटेरियन स्वभाव के अनुकूल कठोर संयमवादी, सादगीपसन्द, मितव्ययी तथा अत्यधिक शान्त स्वभाव के लोग थे; इस नगर के वैली निकोल जारवी जैसे महत्वपूर्ण नागरिक भी अन्य साधारण नागरिकों की ही भांति, तथा उन्हीं के बीच शहर के मध्य भाग में बने साधारण प्रकार के घरों में रहते थे। लेकिन सन् १८०० में कुछ क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए : ग्लासगो की जनसंख्या ८०,००० हो गई तथा जीवनचर्या एवं धन की दृष्टि से उनमें स्तर-भेद भी स्पष्ट दिखाई देने लगा, साथ ही पहले की भांति कोई भी वर्ग अत्यधिक चर्च प्रेमी तथा शराब से परहेज़ करने वाले वर्ग विशेष के रूप में खड़ा न रह सका। धनिक लोगों की सुन्दर बस्तियां तथा निर्धनों की नई गन्दी बस्तियां आसपास की भूमि पर समान रूप से फलती फूलती रहीं। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि के अनुकूल दुकानें खुल गई थीं जिनमें इंगलैंड, यूरोप तथा अमरीका की आयातित वस्तुएं सजी रहती थीं; लोग पालकियों में सवार होने लगे थे, संगीत, ताश, गेंद आदि के मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा था और अंग्रेजी साहित्य और शराब जहां धनिकों के हिस्से में आ गए थे, हाईलैंड की व्हिस्की गरीबों की सेव्य थी। प्रोफेसर एडमस्मिथ की शैक्षणिक सेवाओं द्वारा विश्वविद्यालय को यूरोप-व्यापी ख्याति मिल गई थी।

अमरीका तथा वेस्टइंडीज से होने वाले तम्बाकू तथा कपास के व्यापार ने वस्तुतः केवल ग्लासगो को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण 'क्लाइडसाइड' को इंगलैंड के किसी भी पर्याप्त विकसित केन्द्र की ही भांति उद्योग तथा वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बना दिया था; उपरोक्त वर्णित सामाजिक परिवर्तनों के ये प्रमुख कारण थे; इन परिस्थितियों ने विश्व को नवनिर्मित 'लॉर्ड्स' के वर्ग से आधुनिक एंजिन के आविष्कर्ता के रूप में जेम्स वॉट की एक महत्वपूर्ण देन पहले ही दे दी थी। आयरिश मज़दूरों के आगमन से ग्लासगों की गन्दी बस्तियां निकृष्टतम हो गई थीं और स्कॉटलैंड उनके कारण कष्टप्रद स्थिति को प्राप्त होने लगा था।

शताब्दी के अन्तिम बीस वर्षों में लैनार्क, रेनफ्रयू तथा आयर जैसे गांवों में कपड़ा बनाने वाले कारखानों की संख्या बढ़ने लगी थी जिनके परिणामों की चर्चा गाल्ट ने सन् १८२१ में प्रकाशित अपनी 'एनल्स ऑफ़ दि पैरिश' नामक लघु कथा कृति में जो जार्ज तृतीय के शासनकाल में स्कॉटलैंड में होने वाले मानवीय परिवर्तनों का एक जीवन चित्र प्रस्तुत करती है, पर्याप्त मात्रा में की है।

संघ द्वारा स्कॉटिश-अमरीकन व्यापार के खोल दिये जाने से पूर्वी तट (ईस्टकोस्ट) के नगरों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था। हां, लीथ तथा डुन्डी और बाल्टिक तथा जर्मन बन्दरगाहों के बीच प्राचीनकाल से चले आ रहे व्यापार पर 'नेवीगेशन एक्ट' के रूप में निर्धारित ब्रिटिश वाणिज्य नीति जिसका उद्देश्य यूरोप से होने वाले जमे जमाए व्यापार की अपेक्षा उपनिवेशों की वृद्धि के लिए अमरीका से व्यापार बढ़ाना अधिक था, का कुप्रभाव ही अधिक पड़ा।

दूसरी ओर स्कॉटिश लौह उद्योग का प्रारम्भ भी सर्वप्रथम पूर्वी तट पर ही हुआ था। स्टर्लिंग तथा एडिनबरा के मध्य स्थित कैरन में लोहे की खानें, कोयला तथा जल-शक्ति प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। सन् १७६० में स्थापित 'कैरन कम्पनी' ने काफी प्रगति की थी, इस कम्पनी द्वारा बनाई गई प्रारम्भिक वस्तुओं में 'कैरोनेड' नामक बन्दूक, जिसका उपयोग समुद्री यात्राओं में किया जाता था, काफी उपयोगी सिद्ध हुई थी। स्कॉटलैंड के लौह उद्योग का प्रारम्भ जो अगली शताब्दी में काफी विशालकाय होगा शुरू में इसी कोटि का था।

लेकिन 'स्कॉटिश ईस्ट-कोस्ट' के नगरों में जिस नगर ने अठारहवीं शताब्दी में सबसे अधिक प्रगति की वह एडिनबरा था। वह केवल राजनैतिक राजधानी ही नहीं वरन् राष्ट्र की वैधानिक, बौद्धिक तथा फैशन की भी राजधानी था, और आज के समृद्ध तथा मानसिक रूप से जागरूक स्कॉटलैंड में कानून, फैशन तथा बौद्धिक आयाम सभी तीव्रतर गति से प्रगति कर रहे थे। इसके अतिरिक्त लोथियन्स की कृषि व्यवस्था जोकि आज बहुचर्चित है, पश्चिम की कृषि को भी पीछे छोड़ चुकी थी। वाल्टर स्कॉट की युवावस्था का दक्षिण-पूर्वी स्कॉटलैंड वस्तुतः सम्पन्न ग्रामों तथा एडिनबरा में केन्द्रस्थ मानसिक शक्ति का देश था। स्कॉटिश राजधानी सम्पूर्ण यूरोप में अपने दार्शनिकों—ह्यूम, रॉबर्ट्सन तथा डुगाल्ड स्टेवार्ट के कारण विख्यात थी; उसके वकील तथा विद्वान अद्वितीय व्यक्तित्व वाले प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। इन व्यावसायिक व्यक्तियों के साथ ही भूमि सुधार तथा जंगलों की वृद्धि करने में संलग्न क्षेत्रीय कुलीन जनों तथा भद्र लोगों ने जिस सुन्दर समाज की रचना कर डाली थी उसे रायबर्न जैसे स्वदेशी कलाकार की कृतियों द्वारा अमरत्व प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था।

लेकिन यह सत्य है कि इस स्वर्णकाल में स्कॉटलैंड की राजनैतिक चेतना मृत-प्रायः हो गई थी। कॉकबर्न के शब्दों में अब वहां "स्वतन्त्र, राजनैतिक संस्थाएं समाप्त हो गई थीं" : निस्सन्देह 'संघ' के समय से 'रिफार्म बिल' तक, ह्विग तथा टोरी के कालों में राजनैतिक संस्थाओं का विकास नहीं हो पाया था, लेकिन जहां तक जैकोबाइटिज्म सक्रिय था वहां तक एक रुग्ण राजनैतिक जीवन अवश्य विद्यमान था—सत्ता के विरुद्ध निरन्तर विद्रोह बना रहता था। सन् १७९० के क्रान्तिकारी आन्दोलन के पूर्व, जिसे कि राज्य ने निरंकुशतापूर्वक तत्काल दबा दिया था, सन् १७४६ के बाद से जैकोबाइटों द्वारा किये जाने वाले आन्दोलन भी समाप्त हो गये थे। पिट्स के मित्र डुन्डास के राज्यकाल में, जैसा कि सुधारक लोग व्यंग्यपूर्वक कहा करते थे, स्कॉटलैंड की स्थिति किसी महान पुरुष की हवेली के द्वार स्थित निवास की भांति हो गई थी। लेकिन वस्तुतः राजनीति ही सब कुछ नहीं होती। बर्न्स व स्कॉट की भूमि के सामाजिक, बौद्धिक तथा कल्पना जगत् में, तथा राजनैतिक उपद्रवों में कोई तालमेल न बैठ सका था। यह विविधताप्रधान जीवन वस्तुतः निजी साधनों द्वारा मौलिक रूप में ही विकसित

हुआ था, यद्यपि स्कॉटलैंड के इंगलैंड से निकट सम्बन्ध थे और इंगलैंड से उसने काफी कुछ ग्रहण किया था। लेकिन उसने जितना ग्रहण किया था उससे अधिक चुका भी दिया था। एडमस्मिथ ने ग्रेटब्रिटेन के राजनेताओं के लिये नीतियों का निर्धारण किया था। और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कई वर्षों तक जब 'ले ऑफ़ दि लास्ट मिंस्ट्रेल' तथा 'मारमिओन' जैसी पत्रिकाएं हमारे द्वीप में 'रूमानी' विचारधारा को प्रवाहित कर रही थीं 'एडिनबरा रिव्यू' जैसे अ-रूमानी पत्र का साहित्यिक तथा दार्शनिक आलोचना के क्षेत्र में इंगलैंड में एक छत्र शासन था। स्कॉचमैन के प्रयत्नों द्वारा शीघ्र ही इसका एक विरोधी त्रैमासिक प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया। कुछ वर्षों तक ब्रिटिश साहित्य जगत् में एडिनबरा का लन्डन की तुलना में किसी भी प्रकार कम स्थान नहीं था।

भौतिक रूप में भी, एडिनबरा अपने पुराने कलेवर से एक नये स्वरूप को विकसित कर चुका था। कुएनुमा गलियों की अस्वस्थ स्थिति तथा हाई स्ट्रीट की ऊंची मंजिलों को, जहां पहले स्कॉटलैंड के अनेकों महापुरुष अपने परिवार सहित रहा करते थे, त्याग कर सन् १७८० के बाद 'प्रिन्सेस स्ट्रीट' के पार नये क्षेत्रों में बनाने गये सुन्दर हवादार मकानों में चले आए थे। नवीन एडिनबरा के विकास का प्रारम्भ वास्तव में सन् १७६७ में हुआ था। सातवीं मंजिल के लिये, जिसमें पर्याप्त प्रकाश भी नहीं हो पाता था, पन्द्रह पौंड वार्षिक किराया देकर रहने की अपेक्षा सम्मानित लोग अब अच्छे तथा सुविधाजनक मकान के लिये सौ पौंड किराया देने में भी नहीं झिझकते थे। इसी प्रकार देहात में भी खुले स्थानों पर बनी ऊंची तथा मीनार नुमा इमारतों की जगह, जिनमें कभी स्थानीय जागीरदार लोग रहा करते थे, वृक्षों से आच्छादित प्रकाशवान् जॉर्जियन प्रकार की इमारतें बनने लगी थीं। लेकिन स्कॉटलैंड में भवन निर्माण कला को कभी भी वह महत्व प्राप्त न हो सका जो शताब्दियों तक इंगलैंड में प्राप्त था। काफी सुधारों के बावजूद, विशेष रूप से लोथियन्स के पाषाणनिर्मित सुन्दर खेतों को छोड़कर, दक्षिणी ब्रिटेन की तुलना में उत्तरी ट्वीड का भवन निर्माण स्तर की दृष्टि से औसत से भी काफी नीचे दर्जे का था। लोलैंड्स में भी एक कमरे वाले कई ऐसे मकान थे जिनमें मनुष्य तथा गाय को एक साथ रहना पड़ता था और ग्लासगो तथा एडिनबरा की कई मंजिली गन्दी बस्तियों की दशा तो सम्पन्न लोगों द्वारा उन्हें त्याग दिये जाने पर और भी खराब हो गई थी। फिर भी इस शताब्दी में आवास व्यवस्था की प्रगति शिक्षा, भोजन तथा कपड़ों की तुलना में कम होते हुए भी काफी थी।[1]

अठारहवीं शताब्दी में स्कॉटलैंड के चिन्तन तथा व्यवहार-प्रणाली में हुए तीव्र

---

[1] स्कॉटलैंड तथा इंगलैंड के श्रमिक वर्गों के लिये सन् १८२० के आसपास की गई आवास व्यवस्था का तुलनात्मक चित्रण प्रो० क्लैपहम की 'इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ़ माडर्न इंगलेंड', I, पृ० २१-४१ में रोचक ढंग से किया गया है।

परिवर्तनों के बावजूद उनमें किसी भी प्रकार की फ्रांस की समकालीन विचारधाराओं की भांति चर्च विरोधी प्रवृत्ति नहीं पनपी। इसका कारण वास्तव में यह था कि समय के साथ-साथ स्कॉटलैंड के पादरी लोग अपनी विश्व-दृष्टि को अधिकाधिक व्यापक बनाते जा रहे थे। प्रेस्बिटेरियन कट्टरता, जो सन् १६८८ की क्रान्ति के तुरन्त बाद अत्यधिक बढ़ गई थी, पादरियों की नई पीढ़ी के आगमन पर अपेक्षाकृत शिथिल हो गई। सहनशीलता, शिक्षा, अंग्रेजी प्रभावों तथा युग की मांगों का लोगों की विश्व-दृष्टि पर काफी प्रभाव पड़ा था और वह निरन्तर विकसित हो रही थी। जादू-टोना करने वालों को सजा देने का कार्य समाप्त कर दिया गया था। इसी समय इंगलैंड के चर्च में चल रहा सहिष्णुता आन्दोलन स्कॉटलैंड के उदारतावादी (मॉडरेट्स) पादरी वर्ग की विचारधारा के अत्यधिक निकट था। इतिहासकार राबर्ट्सन (१७२१-१७९३) के उदार नेतृत्व में चर्च-सभा (चर्च-एसेम्बली) एक शान्ति प्रधान दिशा की ओर अग्रसर हो रही थी।

इस सम्भावना का होना स्वाभाविक ही था कि कुछ उदारतावादी (मॉडरेट्स) अत्यधिक उदारता के पक्षधर हो जाते और उनके भाषणों को सुनने वाले कुछ आलोचकों की यह शिकायत भी स्वाभाविक थी कि उनके व्याख्यान धार्मिक विश्वासों से बहुधा अलग हट कर केवल नैतिकता की चर्चा पर अधिक केन्द्रित हो जाते थे। कुछ समय बाद पुनः परिवर्तन हुआ और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में डा. चामर्स (१७८०-१८४७) के प्रयत्नों के कारण एवांजेलिज्म की स्कॉटिश धर्म-व्यवस्था में पुनः स्थापना हो गई। लेकिन चामर्स की धार्मिक आस्था का स्वरूप अब निरंकुशतावादी संकुचित स्वरूप नहीं था : उस पर भी वस्तुतः उदारतावाद का प्रभाव पड़ा था।

अठारहवीं शताब्दी में भी अल्पसंख्यक बिशपों की स्थिति में काफी परिवर्तन हुए। सन् १७०७ में संघ (यूनियन) के समय बिशप-संप्रदाय को, जो व्यवहार में जैकोबाइटों की ही भांति था और अपने राजा चर्च की पुनर्स्थापना का प्रयत्न कर रहा था, अवैधानिक घोषित कर दिया गया था, इस दल के सदस्य 'प्रार्थना-पुस्तक' (प्रेयर-बुक) का उपयोग नहीं करते थे और उनका धर्म भी प्रेस्बिटेरियन-संस्थान का ही एक उदार-स्वरूप बन गया था। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया वे धर्म से अधिकाधिक पृथक तथा राष्ट्रीय राजनीति के अधिकाधिक निकट आते गये। जैकोबाइटवाद की समाप्ति पर वे लोग जार्ज तृतीय की वफ़ादार प्रजा बन गये और उन्होंने अंग्रेजों की भांति प्रार्थना-पुस्तक (प्रेयर-बुक) को अंगीकार कर लेने पर अपने अन्य स्कॉट देश-वासियों से पृथक एक अलग धार्मिक सम्प्रदाय का निर्माण कर लिया। उनकी संख्या में कमी-वृद्धि होती रहती थी। ऐन्नी के शासनकाल में स्कॉटलैंड के अनेक भागों में उनके चर्च से जनसामान्य घनिष्ट रूप से सम्बन्धित थे, इस कारण कानून के विरुद्ध उनके विद्रोही होने पर भी उन्हें जिला-चर्चों में कार्य करने से नहीं रोका गया। लेकिन

जैसे ही इन पदाधिकारियों की पीढ़ी समाप्त हुई उनका स्थान प्रेस्बिटेरियन पादरियों ने ग्रहण कर लिया।

दूसरी ओर बिशपवादी लोगों की स्थिति एक महत्वपूर्ण दृष्टि से काफी सुधर गई थी। इंगलिश विद्रोहियों की भांति उनके कार्यो को सह्य नहीं समझा गया था। उनकी स्थिति हर प्रकार से दुविधाजनक स्थिति थी जो कानून की अपेक्षा स्थानीय जनमत तथा शक्ति के उपयोग पर अधिक निर्भर करती थी। सन् १७१२ में वेस्ट-मिस्टर पार्लियामेंट के टोरियों ने स्कॉटलैंड के लिये 'टालरेशन-एक्ट' पास किया जो 'संघ' निर्माण के एक प्रतिफल के रूप में औचित्यपूर्ण भी था लेकिन प्रेस्बिटेरियन लोग उसे प्रचलित व्यवस्था पर होने वाले कुठाराघातों की एक भूमिका ही समझते रहे।

लेकिन, कुछ सप्ताहों बाद ही स्कॉटिश चर्च के प्रसंग में ब्रिटिश संसद ने एक और आपत्तिजनक हस्तक्षेप किया। सन् १७१२ में 'पेट्रोनेज' (संरक्षण) प्रणाली की पुनःस्थापना कर दी गई जिसमें निजी स्वत्वाधिकारियों को वृत्ति पर पादरी नियुक्त करने का अधिकार दे दिया गया। एंग्लिकन चर्च के कारण अंग्रेज लोगों के लिये इस प्रकार की संरक्षण प्रणाली में कोई विशेष दोष नहीं था लेकिन स्कॉटलैंड के धार्मिक तथा सामाजिक इतिहास पर आगामी १५० वर्षो तक इस प्रणाली का काफी प्रभाव पड़ा।

ज़िला-चर्चो में पादरियों की प्रजातांत्रिक नियुक्ति-प्रणाली को कट्टर प्रेस्बिटेरियन लोग धर्म के लिये घातक समझते थे; और इसके अतिरिक्त बहुत से ऐसे संरक्षकों के रवैये के कारण भी जो उदारतावादियों अथवा जैकोबाइटों का समर्थन करते थे, एक व्यावहारिक खतरा भी था। इन कारणों से क्रान्ति के समय स्कॉटिश-संसद ने कानून बना कर इस संरक्षण व्यवस्था को समाप्त कर दिया था : सन् १६९० के अधिनियम के अनुसार प्रोटेस्टेन्ट लोगों को पादरी की नियुक्ति के लिये किसी व्यक्ति का नाम प्रस्तावित करना पड़ता था, यदि धर्म-सभा उससे असहमत हुई तो वह 'प्रेस्बिटेरी' को इस विषय में अपनी अपील प्रस्तुत करती थी और प्रेस्बिटेरी का निर्णय सर्वमान्य तथा अन्तिम समझा जाता था। लेकिन सन् १७१२ में वेस्टमिंस्टर की सर्वोच्च संसद ने इस कानून को उसके 'संघीय-संधि' के विपरीत होने के कारण बदल दिया। नियुक्ति का अधिकार प्रौढ़ संरक्षकों को, बशर्ते कि वे रोमन कैथोलिक न हों, दे दिया गया।

यद्यपि इस नये कानून का व्यापक विरोध हुआ लेकिन उसके लागू हो जाने के बाद से एक पीढ़ी तक कोई खास परिणाम न निकला। लेकिन अन्त में काफी क्रान्तिकारी परिणाम हुए। राज्य-कानून से आबद्ध प्रतिष्ठित चर्च से अनेकों प्रेस्बिटेरियन संगठनों के पृथक् हो जाने का मूल कारण संरक्षण व्यवस्था थी। इंगलैंड में जिस प्रकार के सम्प्रदाय पनप रहे थे उसी प्रकार के स्कॉटलैंड में भी पनप रहे सम्प्रदायों के प्रति स्कॉटिश लोग विद्वेषी हो उठे थे और 'एस्टेब्लिशमेंट' (प्रतिष्ठित चर्च) का विरोध

करने वाले कई पृथक् चर्च बन गए थे, जो 'एस्टेब्लिशमेंट' का विरोध तो करते थे लेकिन विचारों तथा संस्कारों में लगभग उसी प्रकार के थे।

संरक्षण-व्यवस्था (पेट्रोनेज) की पुनःस्थापना ने चर्च में उदारतावादी-दल (मॉडरेट-पार्टी) के उत्थान में भी काफी सहायता की। अठारहवीं शताब्दी में कट्टरतावादियों के गिरजों में उदारतावादी पादरियों की नियुक्ति के लिये संरक्षण के अधिकारों का उपयोग किया जाता था और कट्टरतावादी यद्यपि उनके प्रवेश का विरोध करते थे लेकिन उनके उदारतावाद का लाभ भी उठाते थे। गाल्ट की 'एनल्स ऑफ़ दि पैरिश' पुस्तक के पाठक यह कभी न भूलेंगे कि जार्ज तृतीय के शासनकाल में श्री बालह्विदर का प्रवेश इसी प्रकार हुआ था—"मेरी नियुक्ति क्योंकि संरक्षक द्वारा की गई थी और लोग मेरे विषय में कुछ भी नहीं जानते थे, लोगों के हृदय मेरे प्रति एक आक्रोश से भरे हुए थे।" पुराने कैलविनिज्म की कट्टरता के आलोचकों का यह कथन कि स्कॉट लोग 'पादरी-ग्रस्त लोग' थे, वस्तुतः अतिशयोक्तिपूर्ण कथन था। इसकी अपेक्षा यह कहना कि उनके पादरी गण 'सामान्यजन से अधिक नियन्त्रित होते थे,' अधिक उपयुक्त होगा। सम्प्रदाय के अधिक श्रद्धालु लोग अपने पादरी की धर्म-प्रतिबद्धता सतर्कतापूर्वक देखते थे। अठारहवीं शताब्दी में कई पादरियों ने अपनी लोकप्रियता की कीमत पर भी स्कॉटिश धर्म को उदारतावादी स्वरूप देने का भरसक प्रयत्न किया।

उन्नीसवीं शताब्दी में सन् १७१२ के 'पेट्रोनेज एक्ट' से उत्पन्न होने वाली परिणाम श्रृंखला में एक गम्भीर कड़ी चामर्स के नेतृत्व में फ्री चर्च के पृथक हो जाने के रूप में जुड़ी जो स्कॉटलैंड के आधुनिक इतिहास (सन् १८४३) के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य—'धार्मिक स्वतन्त्रता'— का प्रतीक थी। अन्त में सन् १८७५ में महारानी ऐन्नी के शासनकाल में जो निर्णय इतनी अगम्भीरतापूर्वक ले लिया गया था उसे समाप्त कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप स्कॉटलैंड चर्च के विभाजित पक्षों के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह एकीकरण हमारे अपने ही समय में सन् १९२१ के कानून द्वारा राज्य द्वारा आध्यात्मिक क्षेत्र में चर्च की सत्ता को सर्वोच्च स्वीकार कर लिये जाने तथा उसकी स्वाधीनता की स्थापना के बाद सम्भव हुआ।

अठारहवीं शताब्दी में स्कॉटलैंड की जनसंख्या दस लाख (लगभग) से १६५२००० हाईलैंडवासियों के निष्क्रमण को आयरलैंडवासियों की आगमन संख्या के बराबर मान लेने पर उपरोक्त संख्या वृद्धि को जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि माना जा सकता है। मृत्यु-संख्या में हुई कमी के कारण जिस प्रकार अंग्रेजों की जनसंख्या में आज वृद्धि हुई है उसी प्रकार पिछले युगों की तुलना में स्कॉटलैंड की इस तीव्र जनसंख्या-वृद्धि को स्वाभाविक ही माना जा सकता है। वस्तुतः यह वृद्धि जीवन-स्तर में हुई वृद्धि तथा चिकित्सा विज्ञान में हुई प्रगति के कारण हुई, जिसमें वे जार्ज तृतीय के काल में इतने समर्थ हो चुके थे कि अंग्रेजों को भी प्रशिक्षण दे सकते थे।

अठारहवीं शताब्दी में यद्यपि स्कॉटलैंड की जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई लेकिन वह इतनी अधिक नहीं थी कि उसकी आर्थिक समृद्धि को प्रभावित कर सके। सन् १७०७ में इस देश की उत्पादन करों से प्राप्त आय जहां ३०००० पौंड थी वहां सन् १७९७ में लगभग १३,०००० पौंड हो गई थी।

स्कॉटलैंड की छोटी कठिनाइयां समाप्त हो गई थीं। लेकिन उसे अब भी एक कठिन अवस्था को पार करना था। नैपोलियन से हुए युद्धों के कारण खाद्यान्नों की कीमतें काफ़ी बढ़ गई थीं और इसके साथ ही सामान्य रूप से अनेक कष्ट उत्पन्न हो गए थे। सन् १७९९ तथा १८०० में पुनः महंगाई का सामना करना पड़ा, इस समय 'जई का मूल्य दस शिलिंग प्रति स्टोन (एक वजन) तक पहुंच गया था, टॉमस कार्लाइल के पिता ने लिखा है कि प्रत्येक मज़दूर भोजन करने की अपेक्षा किसी छोटी नदी पर जाकर बिना किसी शिकायत के तथा केवल अपनी स्थिति को प्रदर्शन से बचाने भर के लिये पानी पीकर अपना काम चला लेता था। लेकिन एक शताब्दी पूर्व विलियम के शासन-काल में जिस प्रकार लोग बड़ी संख्या में मृत्यु को प्राप्त हो रहे थे उस प्रकार इस काल में इतनी संख्या में लोग नहीं मरे कि उसके कारण जनसंख्या में कोई भारी कमी हुई हो।[१]

---

[१] अपने पिता के संस्मरणों से सम्बन्धित जेम्स कार्लाइल की पुस्तक (रेमिनिसेन्सेज़) के उत्तरार्ध में स्कॉटलैंड के अठारहवीं शताब्दी के कृषक जीवन विषयक अनेक तथ्य संकलित हैं। लैंगहोम में जेम्स कार्लाइल ने 'एक बार चोरी छिपे लाई गई तम्बाकू के ढेर को आग लगाते हुए देखा था। नंगी तलवारें लिये हुए घुड़सवार उसे चारों ओर से घेरे हुए थे, कुछ बूढ़ी औरतें अपने बूढ़े हाथों से ढेर में से थोड़ी तम्बाकू निकाल लाती थीं और वे घुड़सवार उन्हें कुछ नहीं कहते थे।' पश्चिमी क्षेत्रों की काम धन्धा करने वाली औरतें जिनमें कार्लाइल की माँ भी सम्मिलित थीं छोटे-छोटे भट्टी के 'पाइपों' द्वारा तम्बाकू पिया करती थीं।

अध्याय १५

कोबेट का इंगलैंड (१७९३-१८३२)

[१]

नगर तथा ग्राम में परिवर्तन—कारखाने—श्रमिक-वर्ग की स्थिति—उपनिवेशों की स्थापना—शिक्षा—लुडिटीज़ (गर्म दल के सदस्य)—श्रमिक-संघ।

(फ्रांस से युद्ध, १७९३-१८१५; वाटरलू, १८१५; पीटरलू १८१९; 'सुधार-बिल' (रिफार्म-बिल), १८३१-१८३२)।

इंगलैंड में अठारहवीं शताब्दी के आत्मसन्तुष्ट तथा आत्म-विश्वासपूर्ण परम्परानुगामी युग तथा पीटरलू और धान्यदाहों के अशान्त, और बायरन तथा कोबेट के युग के बीस वर्ष का काल (१७९३-१८१५) क्रान्तिकारी तथा नेपोलियन शासित फ्रांस के साथ युद्धों का काल था।

हमारे सामाजिक विकास के इस नाजुक समय में यह दीर्घकालीन युद्ध अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। आर्थिक जीवन छिन्न-भिन्न हो गया था। गरीबों की कष्टप्रद स्थिति तथा अधिकारों के प्रति सहानुभूति होते हुए भी जैकोबाइट विरोधी-प्रतिक्रिया के कारण सुधार के सभी प्रस्तावित कार्य-क्रमों को युद्ध के वातावरण ने समाप्त कर डाला था और औद्योगिक तथा सामाजिक प्रगति के मार्ग में बाधा उपस्थित हो गई थी। नये उद्योगपतियों तथा बेढंगे मकान बनाने वालों की तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये आधुनिक गन्दी बस्तियां बनने लगीं जिन पर जनता का कोई नियन्त्रण लागू नहीं किया जा सका। तुरन्त द्रव्य-लाभ के उद्देश्य से प्रेरित होकर आधुनिक औद्योगिक जीवन तथा वातावरण को एक सस्ते तथा गन्दे ढांचे में ढ़ाल दिया गया। नगर योजना, सफाई तथा आवश्यकताओं के प्रति इन नव विश्व निर्माताओं के मन में किसी प्रकार की कल्पना नहीं थी, अभिजात वर्ग अपना अलग संसार रच कर उसमें आनन्द का जीवन बिता रहा था—उसकी दृष्टि में गृह-निर्माण, सफाई तथा औद्योगिक वस्तुस्थिति से सरकार का कोई सम्बन्ध होना कतई आवश्यक नहीं था। बड़े-बड़े शहरों का विकास वस्तुत: अठारहवीं शताब्दी के लन्दन की भांति और भी खराब ढंग से हुआ होता लेकिन नेपोलियन के युद्ध से उत्पन्न हुई परिस्थितियां उत्तर के इन औद्योगिक नगरों के कु-विकास में तथा नये उद्योगपतियों व कर्मचारियों के सम्बन्धों में अधिक

सहायक सिद्ध न हो सकीं। बिना इस प्रश्न पर विचार किये हुए कि किस प्रकार की जीवन प्रणाली श्रेष्ठ होगी, लोगों की बनी बनाई जीवन-पद्धति में परिवर्तन लाने के जो उपकरण प्राप्त हो गये थे उनका वे खुलकर उपयोग करने लगे।

आलस्य तथा भ्रष्टाचार के कारण मध्ययुगीन जीवन की पूर्णता तथा जनभावना से संयुक्त नागरिक जीवन की परम्परा से नगर-निगम का सम्बन्ध विच्छेद हो चुका था, औद्योगिक बस्तियों के असम्बद्ध तथा अनियोजित विकास की ओर नगर के उच्चकुलतन्त्र अथवा धनिक-तन्त्र का जो अपने पारस्परिक कर्त्तव्यों को भुला देने के साथ ही नये आव्हानों के प्रति जागरूक रह पाने की सामर्थ्य भी खो चुका था, कोई प्रभाव नहीं पड़ा। और स्वाभाविक रूप में जब नगर के बाहरी क्षेत्रों में उसका काफी विस्तार होने लगा तब भी उस क्षेत्र के मजिस्ट्रेट ने उस अनियोजित निर्माण कार्यों के विस्तार पर नियंत्रण स्थापित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

वाटरलू के युद्ध के समय इंगलैंड के ग्राम्य क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ा था, अधिकांश शहर सुन्दर थे। औद्योगिक क्षेत्र यद्यपि प्रकृति प्रधान क्षेत्रों का ही एक लघु भाग थे और उस पर हावी नहीं हो सके थे लेकिन दुर्भाग्य से लोगों ने उन्हें ही भावी आदर्शों के रूप में ग्रहण कर लिया था। इस नये प्रकार की नगर रचना का व्यापक रूप में अनुकरण किया गया क्योंकि वह सहज था और यह घातक अनुकरण अगले सौ वर्षों में तब तक चलता रहा जब तक कि अधिकांश अंग्रेज तंग गलियों के निवासी नहीं बन गये। उन्नीसवीं शताब्दी में आगे चलकर शासन ने, जिसका गठन स्थानीय चुनावों द्वारा प्रजातांत्रिक रूप में किया जाता था तथा व्हाइट-हाल जिसे केन्द्रीय रूप में नियन्त्रित भी करता था, धीरे-धीरे इस ओर ध्यान देना अपना कर्त्तव्य समझा और तब निस्सन्देह स्वास्थ्य, सुविधाओं एवं शिक्षा के क्षेत्र में काफी कार्य किये गये। लेकिन इन उपयोगितावादी सुधारों के बावजूद गन्दगी उससे अभ्यस्त नागरिक जीवन का एक भाग बनी रही क्योंकि लोग सदा से जिस स्थिति के आदी हो चुके थे उससे परे साधारणतः कोई कल्पना नहीं कर पाते थे।

नेपोलियन द्वारा छेड़े गये युद्धों की अवधियों में बार-बार होने वाली नाके बन्दियों के कारण व्यापार वस्तुतः एक जुआ बन चुका था। उत्पादन को हर प्रकार प्रोत्साहित किया जाता था लेकिन किसी प्रकार की सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं हो पाता था। इंगलैंड के सामुद्रिक नियन्त्रण तथा अन्य देशों की तुलना में मशीनें बनाने के उद्योग में उसने जो क्षमता अर्जित कर ली थी उसने उसे अमरीका, अफ्रीका तथा सुदूर-पूर्व की कई मंडियों पर एक छत्र अधिकार दिला दिया था। लेकिन कूटनीति तथा युद्ध के कारण यूरोप के बाजार ब्रिटिश माल के लिये बारी-बारी से खुलते तथा बन्द होते रहते थे। किसी मित्र देश की सेना के लिये कपड़े तथा जूते बनाने का कार्य एक वर्ष जहां अंग्रेज मजदूर करते थे दूसरी बार नेपोलियन की 'महाद्वीपीय व्यवस्था' (कान्टीनेन्टल-सिस्टम) के

अन्तर्गत आ जाने के कारण वह देश फ्रांस से सम्बद्ध हो जाता था। सन् १८१२-१८१५ में व्यर्थ ही अमरीका से छेड़े गये युद्ध का भी व्यापार पर खराब प्रभाव पड़ा। एक ओर उपभोक्ता वस्तुओं की मांग तथा दूसरी ओर उनके उत्पादन के लिये रोज़गार में लगाए गए मज़दूरों के बीच जब तब उत्पन्न होने वाले तीव्र असन्तुलन के कारण इंगलिश श्रमिक वर्ग की कठिनाइयां काफी बढ़ गई थीं; वाटरलू के युद्ध की समाप्ति व्यापक स्तर पर उत्पन्न होने वाली बेरोज़गारी की स्थिति तो अत्यन्त भयानक थी।

युद्ध का एक प्रभाव यह भी पड़ा कि यूरोप को अनाज भेजा जाना बन्द हो गया और परिणामस्वरूप घनी जनसंख्या वाले इस द्वीप में खाद्य-सामग्रियों के मूल्य स्थिर हो गये। युद्ध के पहले सन् १७९२ में गेहूँ का मूल्य जहां ४३ शिलिंग प्रति 'क्वार्टर' (एक वजन) था सन् १८१२ में जब नेपोलियन ने मास्को के लिये प्रस्थान किया था, यह मूल्य १२६ शिलिंग प्रति 'क्वार्टर' तक पहुंच गया था। यद्यपि इस मूल्य वृद्धि के कारण ज़मींदारों, किसानों तथा भूमिकर वसूल करने वालों को अवश्य कुछ लाभ पहुंचा था लेकिन देहातों तथा शहरों दोनों ही क्षेत्रों की जनता के लिये बढ़ी हुई कीमतों पर रोटी खरीदना अत्यन्त कठिन हो गया था। युद्ध के बीस वर्षों में कृषि ने बढ़ी हुई कीमतों से इस प्रकार सानुकूलन स्थापित कर लिया था कि युद्ध की समाप्ति तथा शान्ति की स्थापना हो जाने पर सहसा ही नई परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को बदल पाना उसके लिये अत्यन्त कठिन हो गया और परिणामस्वरूप अनेक किसान बरबाद हो गये और लगान की राशि नहीं चुकाई जा सकी। ऐसी स्थिति में उपभोक्ताओं की अपेक्षा कृषि की रक्षा तथा संरक्षण प्रदान करने के लिये सन् १८१५ में 'कॉर्न लॉ' (खाद्यान्न-अधिनियम) बनाया गया। इस अधिनियम का शहरी क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की दल नीति से विमुक्त हो कर सभी वर्गों ने तीव्र विरोध किया। इस सन्दर्भ में संसद (पार्लियामेंट) के ज़मींदार सदस्यों की यह आम शिकायत थी कि जिस समय वे "सदन" में प्रस्तावित अधिनियम के पक्ष में अपना मत देने जा रहे थे 'रुपया उधार देने वाले बेरिंग नामक व्यक्ति के भड़काने वाले भाषणों से तथा लन्दन के लार्ड मेयर द्वारा दिये गये असत्य वक्तव्यों से' उत्तेजित असभ्य भीड़ ने उन पर वहशियाना आक्रमण किये थे। (द्रष्टव्यः सन् १८५१ में सर आर. हडसन द्वारा सम्पादित पुस्तक—'नोट्स', पृष्ठ ५०)। सन् १८४६ में जबकि खाद्यान्न अधिनियमों (कार्न-लॉज़) को रद्द कर दिया गया था अगली पीढ़ी तक के लिये कृषि-संरक्षण के प्रश्न ने इंगलैंड में एक विभेद उत्पन्न कर दिया था तथा ग्रामीण एवं नागरिक जीवन के जिन विभेदों को औद्योगिक क्रान्ति प्रत्येक वर्ष अधिकाधिक तथा तीव्र बनाती जा रही थी वे राजनैतिक गतिविधियों से सम्बद्ध हो गये थे; नगरीय जनता का जहां कृषि से सम्बन्ध विच्छेद हो रहा था ग्रामीण औद्योगिक उत्पादन से असम्बद्ध हो रहे थे।

महारानी ऐन्नी के युग में इंगलैंड की यात्रा करते समय डिफो आर्थिक तथा

सामाजिक पक्षों के जिस सामंजस्य को देखकर प्रसन्न हुआ था वह अब समाप्त हो चला था, और उसका स्थान अब नगर तथा ग्राम, अमीर तथा ग़रीब के बीच उत्पन्न परस्पर विरोधी स्वार्थों से उत्पन्न द्वंद्वात्मक स्थितियां ग्रहण कर रही थीं। डिफो के सौ वर्ष बाद पुनः विलियम कोवेट ने देहाती क्षेत्रों की घोड़े पर यात्रा की थी और उसने दूसरे ही लक्षणों को देखा—शोषित लोग धनी शोषणकर्ताओं की एक शक्तिशाली पंक्ति के विरुद्ध अपना मोर्चा जमा रहे थे। सम्भवतः वास्तविकता यही थी की कि निर्धन लोग हमेशा से निर्धन रहे थे और उनका दुरुपयोग किया गया था लेकिन इस युग में अन्य लोगों के साथ उन्हें स्वयं भी अपनी दुर्गति का भान हो गया था और वे स्वयं को शोषकों से पृथक अपने वर्ग को अलग संगठित करने लगे थे। भूतकाल में निर्धनता एक व्यक्तिगत अभिशाप थी लेकिन अब एक सामूहिक आक्रोश का कारण बन चुकी थी। यह वास्तव में अठारहवीं शताब्दी में उद्भुत मानवतावादी प्रवृत्तियों के विरुद्ध था। फ्रेन्च क्रान्ति से उत्पन्न इंगलैंड ने आतंकपूर्ण आक्रोश के कारण मानवतावादी प्रवृत्तियां कुछ क्षणों के लिये अवश्य ओझल हो गई थीं लेकिन नयी शताब्दी में दीर्घ काल तक आर्थिक परिस्थितियों के कारण होने वाले मानवीय शोषण की पहले की भांति उपेक्षा कर पाना कठिन हो गया। इस अर्थ में कोवेट का कथन निस्सन्देह महत्वपूर्ण था।

युद्ध ने निर्धनों को सबसे अधिक कष्ट दिया था। ज़मींदार वर्ग किसी भी दूसरे काल में इतना समृद्ध अथवा केवल अवकाश का ही उपभोग करने वाला सुखी वर्ग नहीं हो पाया था जितना कि तब था। समाचार-पत्रों में युद्ध का वर्णन अवश्य छपता था लेकिन उनके महलों में उसकी पहुंच नहीं हो पाती थी। मिस आस्टीन की परिचित महिलाओं में जो सदैव स्कॉट अथवा बायरन के नये काव्य संग्रह की प्रतीक्षा किया करती थीं ऐसी कोई नहीं थी जिसने कभी यह जानने का प्रयत्न किया हो कि इस आपत्काल में मि. थार्प अथवा मि. वर्ट्राम देश की सेवा के लिये क्या करने जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह था कि उन सुखी दिनों में राष्ट्रीय जीवन की सुरक्षा के लिये समुद्री सेना पर्याप्त शक्तिशाली थी। जब नेपोलियन यूरोप पर चढ़ाई कर रहा था, छैलछबीले लोगों की सनकें तथा फिजूलखर्चियां व्यूब्रुमेल के दिनों में चोटी तक पहुंच गई थीं, और अंग्रेजी काव्य तथा प्राकृतिक दृश्यों की चित्रकारी अपने चरमोत्कर्ष पर थी। वर्ड्सवर्थ ने जिसका हृदय शान्तिकाल में फ्रेन्च क्रान्ति से आन्दोलित हो उठा था, दीर्घकालीन युद्ध की परिस्थितियों में अपना सन्तुलन पुनः प्राप्त कर लिया और दार्शनिक काव्य की रचना प्रारम्भ कर दी : 'अन्तहीन विक्षोभ के भी अन्तस् में शान्ति बसती है।' ये पंक्तियां ऐसी मनः स्थिति की परिचायक हैं जिसकी कल्पना भी आधुनिक काल के इस सर्वव्यापी महायुद्ध में कर पाना कठिन होगा।

फ्रांस से होने वाले युद्ध में आधे समय तक इंगलैंड ने यूरोप में अपनी कोई सेना

नहीं भेजी थी और सम्पूर्ण प्रायःद्वीप में चल रहे उस युद्ध में जो सात चढ़ाइयां की गई थीं उसमें भी ४०,००० से कम ही ब्रिटिश सैनिक मरे थे : सभी वर्गों को अधिक प्राण हानि नहीं उठानी पड़ी थी। यद्यपि मि. पिट के आयकर के प्रति काफी खीझ थी लेकिन अनाज की बढ़ी हुई कीमतों के साथ लगान भी बढ़ गया था और इस प्रकार ज़मींदारों के जीवन स्तर में कोई अन्तर नहीं आया। इंगलैंड के 'भद्र लोगों' ने नेपोलियन के छक्के छुड़ा दिये थे· अतः उन्हें तथा पेशेवर लोगों को विजय प्राप्त करने के लिये जो प्रशंसा तथा सम्मान प्राप्त हुआ उसके वे वास्तव में अधिकारी थे; इस विजय के कारण अगले 'महायुद्ध' तक के लिये शांति का वरदान मिल गया था। लेकिन भद्र लोगों ने वस्तुतः युद्ध से लाभ भी उठाया था और इसीलिये शान्ति स्थापित हो जाने के बाद के सुधारवादी पीढ़ी ने अकृतज्ञतापूर्वक ऐसे लोगों का बहिष्कार भी कर दिया था—

"इन अगौरवमय सिनसिनेता"[१]

झुंडों को देखो,

युद्ध उगाने वाले कृषकों और खेत के तानाशाहों को देखो,

उनके हल का एक अंश भाड़े पर आये सिपाहियों के हाथ में तलवार सा झूलता है,

उनके खेतों में एक अन्य भूमि का लहू खाद बन गया है,

अपने खलिहानों में पूर्ण सुरक्षित ये 'सैबाइन' कृषक अपने अनुजों को युद्ध के लिये भेजते हैं।

ऐसा क्यों ? शायद अर्थ प्राप्ति के लिये ?

प्रत्येक वर्ष उन्होंने रक्त और पसीना लिया और लाखों अश्रुपूरित चेहरों के आंसू निचोड़े, किस लिये ? धन के लिये ?

उन्होंने गर्जनाएं की, शराब पी और दावतें की, और शपथ ली कि हम इंगलैंड के लिये अपने प्राणों की आहुति देंगे,—

फिर क्यों जीवित रहे ? धन के लिये ?

(बायरन, दि एज ऑफ़ ब्रॉन्ज, १८२३)

युद्ध वस्तुतः जहां धनिकों की सम्पन्नता में और अधिक वृद्धि करने वाला तथा दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले मजदूरों के लिये एक दीर्घकालीन विपत्ति के रूप में प्रकट हुआ था, 'समाज के 'मध्यवर्गीय लोगों' के लिये वह एक जुआ बन गया था : 'वैनिटी फेयर' के बूढ़े ऑसबोर्न की भांति जहां एक व्यापारी अधिक समृद्ध हो गया,

---

१ कार्यनिवृत्त देश भक्त जिसे संकट के समय देश के लिये फिर बुलाया जाय।

मि. सेडले की भांति दूसरा निर्धन हो गया। कुल मिलाकर इन 'व्यापारियों के देश' को यूरोप में अपने बाज़ार बनाने तथा करों के भार को कम करने के लिये शान्ति तथा सुरक्षा की अधिक आवश्यकता थी। लेकिन नेपोलियन के समक्ष आत्मसमर्पण कर देने का भाव उनमें नहीं आया। रुपया उधार देने वाले बैंकर लोग तथा प्रतिष्ठित व्यापारीगण जैसे धनीमानी व्यक्ति तथा उनके परिवार, अनुदार दलीय (टोरी) लोगों के समाज में सम्मिलित होते थे, विवाह करते थे तथा उनसे अपने लिये संसद की सीटें तथा सेना के उच्च पद क्रय किया करते थे, और इस प्रकार केवल उच्चस्तरीय राजनीति में ही भाग लिया करते थे। लेकिन बहुत से नये प्रकार के उत्पादनकर्ताओं (चाहे वे स्वयं हों अथवा उनके पिता) का जन्म या तो जमींदार वर्ग से हुआ था अथवा श्रमिक वर्ग से, और अधिकांशतः वे विरोधी स्वभाव के ही लोग थे; कारखानों के वातावरण ने उनमें अभिजात वर्ग के प्रति एक घृणा का भाव भर दिया था। ये लोग युद्ध, गौरव तथा ऐसे किसी भी कार्य से लगाव महसूस नहीं करते थे जिससे कि उनका स्वार्थ न सिद्ध होता हो। इस प्रकार के लोग इंगलैंड के लिये और अधिक सम्पत्ति का संचयन कर रहे थे, लेकिन स्थानीय अथवा केन्द्रीय किसी भी प्रकार की सरकार में उनका कोई भाग नहीं था, और उस अभिमानी वर्ग से जो कि इनकी उपेक्षा करता था ये ईर्ष्या भी करते थे। युद्ध के कारण जिन लोगों को वास्तव में यातना भोगनी पड़ी थी उनके प्रति इनकी तनिक भी सहानुभूति नहीं थी, और अपने कर्मचारियों की दयनीय स्थिति की ओर उनसे लाभ प्राप्त करने वाले जमींदार तथा कृषकगण जिस प्रकार सहानुभूति रहित दृष्टि से देखते थे यह नया वर्ग भी उनकी ओर उसी दृष्टि से देखता था। यह युग वास्तव में निहित स्वार्थों द्वारा विभाजित युग था जो किसी बाहरी दुश्मन के आक्रमण के समय उत्पन्न एकता को छोड़कर साधारणतः भ्रातृत्व जन्य एकता से शून्य था।

लेकिन इस सबके आधार पर ही हमें वास्तविक असन्तोष की मात्रा को, विशेष रूप से युद्ध के पूर्वार्ध में, इतना बढ़ा चढ़ा कर नहीं देखना चाहिये। टॉम पैने तथा फ्रेन्च क्रान्ति द्वारा अनुप्रेरित प्रजातान्त्रिक आन्दोलन को जनमत तथा राजकीय नियन्त्रणों ने सन् नब्बे तथा शताब्दी के अन्य उत्तरार्ध वर्षों में दबा दिया था : मजदूरों की उत्तेजित भीड़ ने बर्मिघम तथा मैनचेस्टर के प्रार्थना स्थलों तथा सुधारवादियों के निवास स्थानों को घेर लिया था और डरहम के खान मजदूरों ने टॉम पैने का पुतला जला डाला था। श्रमिक वर्ग में वस्तुतः असन्तोष कष्टप्रद यथार्थ स्थितियों के कारण धीरे-धीरे उत्पन्न हुआ था, और अनेक वर्षों तक उसका स्वरूप राष्ट्र व्यापी न होकर वर्ग के केवल कुछ भागों तथा प्रान्त तक ही सीमित था। जैकोबिन-विरोधी आन्दोलन के दमन के समय जबकि एक सुधारक की अपेक्षा आततायी होना अधिक सुविधाजनक माना जाता था, अधिकांश अंग्रेज स्वयं को स्वतन्त्र मान कर गर्व का अनुभव करते थे। ट्राफलगर के वर्ष में लन्दन की नाट्यशालाओं का भ्रमण करते समय अमरीका के एक

प्रतिष्ठित वैज्ञानिक की यह टिप्पणी ध्यान आकर्षित करती है : "आज की संध्या नाट्यशालाओं की दर्शकदीर्घाओं से लोगों ने इस भावना के चित्रण पर कि यदि कोई ग़रीब व्यक्ति ईमानदार है तो इंगलैंड में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो उसे किसी भी प्रकार से दबा सके काफी प्रशंसा व्यक्त की। इस घटना में स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये वह सक्रिय लगाव देखा जा सकता है जो कि उन दिनों निम्नतम स्तर के लोगों में भी विद्यमान था।[1]

उपरोक्त कथन से यह अवश्य लगता है कि वह 'भावना' कुछ अधिक आशावादी की भावना थी, लेकिन साथ ही उसे 'दर्शकदीर्घा' से इतनी प्रशंसा प्राप्त हुई, यह तथ्य निश्चय ही महत्वपूर्ण है।

कई दक्षिणी हल्कों में रोटी तथा पनीर मजदूरों के प्रमुख खाद्य हो गये थे और इनके अतिरिक्त वे लोग बियर (जौ की शराब) अथवा चाय का भी प्रयोग कर लेते थे। कई लोग आलू की खेती भी कर लेते थे, लेकिन माँस उन्हें यदाकदा ही मिल पाता था। युद्ध के कारण हुई मूल्य वृद्धि तथा मजदूरी में कमी से कई जिलों के निर्धन ग्रामीणों को भूख का शिकार हो जाने की जो आशंका उत्पन्न हो गई थी कम से कम उसका उपाय कर लिया गया था, भले ही उस उपाय से अन्य हानियां क्यों न हुई हों। मई सन् १७९५ में बर्कशायर के मजिस्ट्रेटों को, रोटी के मूल्य में वृद्धि हो जाने के कारण मजदूरी (वेतन) में भी अनुरूप वृद्धि किये जाने के लिये न्यूबरी के एक उत्तरी भाग स्पीनहमलैंड में विचार विमर्ष के लिये आमन्त्रित किया गया था। जब तक मूल्यों में होने वाली वृद्धि को देखते हुए वास्तव में इस कठिन नीति को लागू कर पाने के लिये हठधर्मी किसानों के विरोध को शान्त कर पाना कठिन था, लेकिन सैद्धान्तिक दृष्टि से यह 'उपाय' ही एक मात्र उपयुक्त उपाय था। यदि इस उपाय अथवा नीति को बर्कशायर में तथा सम्पूर्ण इंगलैंड-में लागू किया जा सका होता तो आधुनिक सामाजिक इतिहास के द्वारा एक सुखपूर्ण मोड़ प्राप्त कर लेने की पर्याप्त सम्भावना थी। यही एक सही तरीका था और पुरानी प्रथा तथा वर्तमान कानून ने भी इसी को स्वीकार किया था। दुर्भाग्य से जो अधिकारी (जे. पी.) इस सुकार्य के लिये स्पीनहमलैंड आये थे उनसे वेतन वृद्धि की अपेक्षा वेतन में पैरिश चर्च की राशि का कुछ अंश मिला कर राहत प्रदान करने की नीति को अपनाने का अधिक आग्रह किया गया। उन्होंने एक सूची प्रकाशित की जिसके अनुसार प्रत्येक निर्धन तथा उद्यमी व्यक्ति को अपने वेतन के अतिरिक्त 'पैरिश' से एक निश्चित राशि प्राप्त कर लेने की सूचना दी गई थी, इस सूची में यह भी स्पष्ट किया गया था कि अमुक राशि वह अपने लिये ले सकता है तथा अमुक अपने परिवार के लिये; रोटी का मूल्य उस समय एक शिलिंग

---

[1] बी. सिलीमैन्स, ट्रैवल्स इन इंगलैंड इन १८०५, न्यूयार्क १८१०, I पृ० २५२।

था। रोटी के मूल्य में होने वाली वृद्धि के साथ अनुदान की राशि में भी वृद्धि होना स्वाभाविक था। सुविधानुसार की जाने वाली इस आय वृद्धि को, जिसे 'स्पीन हैमलैंड एक्ट' के नाम से जाना जाता था, मजिस्ट्रेट लोग बारी-बारी से एक के बाद एक क्षेत्र में तब तक लागू करते गये जब तक कि यह कुप्रणाली इंगलैंड के आधे ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से नवविकसित क्षेत्रों में—पूरी तरह से क्रियान्वित न कर दी गई। उत्तरी क्षेत्रों में इस प्रणाली को लागू नहीं किया गया क्योंकि इस क्षेत्र के गांवों में उनके कारखानों तथा खदानों के निकटवर्ती होने के कारण मजदूरी (वेतन) का निर्धारण प्रतियोगिता के आधार पर होता था।

वेतन के अतिरिक्त सहायतार्थ दी जाने वाली राशि से अपने खेतों पर काम करने वाले श्रमिकों को वेतन दे पाने में भूमिधर किसानों को काफी सहायता मिल जाती थी—इस राशि के लिये कोष एकत्र करवाने में उस क्षेत्र के छोटे आत्मनिर्भर व्यक्ति बड़े आदमियों को चन्दा देते थे और साथ ही श्रमिकगण पूरे समय काम करने पर भी इस प्रणाली द्वारा निर्धनता की ओर ढकेल दिये जाते थे। सभी लोगों पर नैतिक दृष्टि से इसका प्रभाव खराब ही पड़ता था। बड़े भूमिधारी किसान, श्रमिकों की मजदूरी बढ़ाने से साफ इनकार कर देते थे और इस प्रकार इस प्रणाली की आड़ लेकर अपने स्वार्थों को सुरक्षित बनाए रखने में सफल हो जाते थे, स्वावलम्बी वर्ग कम मजदूरी अथवा वेतन के लिये पक्ष लेता था और दीनहीन श्रमिकों में आलस्य तथा अपराधवृति जोर पकड़ती जा रही थी। सन् १८३० में एक अमरीकी लेखक ने सच ही लिखा था : "इंगलैंड में कंगाल (पॉपर) शब्द का प्रयोग, विशेष रूप से कृषि प्रधान क्षेत्रों में, उस वर्ग के लिये किया जाता था जो अपने हाथों से मजदूरी कर के केवल जीवनयापन भर के लिये ही अर्जन कर पाता था।[1]

लेकिन उस समय सोचा जा रहा था कि वेतन (मजदूरी) की सहायक राशि जनसंख्या की वृद्धि का महत्वपूर्ण कारण रही है और माल्थस भी इस आशंका से सचेत करने वाले विचारों को प्रवाहित कर रहा था लेकिन वास्तव में यह धारणा सत्य नहीं

---

[1] सन् १७९२ से १८३१ के बीच डॉरसेट के क्षेत्र में निर्धन अधिनियम (पुअर ला) पर होने वाला खर्च २१४ प्रतिशत बढ़ गया था, अपराध सम्बन्धी मुकदमों पर होने वाले व्यय में २१३५ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी; और इन खर्चों के प्रसंग में जनसंख्या की वृद्धि केवल ४० प्रतिशत ही थी। (विक्टोरिया काउन्टी हिस्ट्री, डोरसेट, II, २५९)। सन् १८१३ में सम्पूर्ण इंगलैंड में निर्धन सहायता के लिये एकत्र राशि जहां सत्तर लाख थी, अन्य कार्यों के लिये स्थानीय करों द्वारा एकत्र राशि केवल पन्द्रह लाख की थी।

थीं। अठारहवीं शताब्दी की भांति उन्नीसवीं शताब्दी में भी जनसंख्या की वृद्धि वास्तव में जन्मदर की वृद्धि के कारण नहीं वरन् मृत्यु-संख्या में कमी होने के कारण हुई थी। सन् १८०१-१८३१ के बीच इंगलैंड की जनसंख्या एक करोड़ दस लाख से बढ़ कर एक करोड़ साठ लाख पचास हजार हो गई थी और वस्तुतः इस वृद्धि का कारण स्पीनहमलैंड के मजिस्ट्रेट नहीं वरन् ग्रेटब्रिटेन के चिकित्सकों की सेवाएं थीं। युद्ध काल में खाद्यान्नों के मूल्य में वृद्धि से जहां श्रमिकों के दारिद्रय में वृद्धि हुई वहां उससे जमींदारों, लगान देने वाले बड़े किसानों को लाभ पहुँचा और कुछ समय के लिये मुआफीदार तथा पट्टेदार किसानों को भी फायदा हुआ।

लेकिन वाटरलू के युद्ध के बाद अनाज के मूल्य में भारी कमी हो जाने के कारण छोटे किसानों की स्थिति पुनः प्रभावित हुई। उन पर स्पीनहमलैंड व्यवस्था का आर्थिक दृष्टि से काफी भार पड़ गया, क्योंकि अनेकों दक्षिणी क्षेत्रों में विशेषतः विल्टशायर में, बहुत से किसान जो अपने काम के लिये श्रमिकों का उपयोग नहीं करते थे उन्हें भी अन्य बड़े प्रतिस्पर्धी किसानों द्वारा रखे गये श्रमिकों के वेतन को पूरा करने के लिये निर्धन-सहायता का आर्थिक भार उठाना पड़ता था। इसके अतिरिक्त छोटे किसानों को बंधे बंधाये छोटे खेतों तथा कुटीर उद्योग के निरन्तर ह्रास के कारण काफी कष्ट उठाना पड़ता था।

लेकिन इस सबके बावजूद भी हमें परिवर्तन की तीव्रता एवं गति के विषय में अतिशयोक्तिपूर्ण रूप में कुछ भी नहीं कहना चाहिये। सन् १८३१ की जनगणना के अनुसार कृषि-कार्य में संलग्न दस लाख से कुछ कम परिवारों में से १४५,००० भू-स्वामियों अथवा किसानों के परिवार थे जो कृषि के लिये मज़दूर नहीं रखते थे, जबकि भाड़े पर मजदूरी के लिये ६८६,००० परिवार उपलब्ध थे। कहने का अभिप्राय यह है कि 'सुधार-अधिनियम' (रिफार्म-बिल) के अन्तिम काल में कृषि से सम्बन्धित सर्वहारा वर्ग की संख्या आत्म-निर्भर कृषकों की संख्या से अढ़ाई गुणा अधिक थी। इसके अतिरिक्त छोटे कृषकों का एक ऐसा वर्ग भी बच रहा था जिसकी संख्या लगभग उतनी ही अधिक थी जितनी कि मजदूर लगाकर खेती कराने वाले लोगों की थी। लेकिन कृषि-भूमि का अधिकांश भाग बड़े किसानों के पास था और खुले खेत तथा सामान्याधिकार भूमि (कॉमन्स्) समाप्त प्रायः हो चुकी थी।

युद्ध तथा उसके प्रभावों के समाप्त हो जाने पर, वास्तविक वेतन-आय के सांख्यकीय आंकड़ों से पता चलता है कि समूचे देश के भूमि-मजदूरों की औसत स्थिति सन् १८२४ में उतनी खराब नहीं थी कि जितनी कि तीस वर्ष पूर्व थी।[१] कुछ क्षेत्रों में तो उसकी स्थिति निश्चित रूप से काफी अच्छी थी। लेकिन दक्षिणी ग्रामों में, जो कि कारखानों और खानों से काफी दूर थे और इस कारण जहां कृषि-मजदूरों तथा

---

[१] द्रष्टव्य—क्लैपहम, (इका.) हिस्ट्री ऑफ़ माडर्न इंगलैंड, I, पृ० १२५-१३१।

कारखानों व खानों के मजदूरों के वेतन में किसी प्रकार की प्रतियोगिता नहीं हो पाती थी और विशेष रूप से वहां जहां वेतन-दरों को जानवूझकर नीचे रखने के लिये कम वेतन दिया जाता था तथा जहां किसान मिट्टी के वने अपने कच्चे मकान के लिये उसे नौकर रखता था, मजदूरों के जीवन स्तर में काफी ह्रास हुआ था। उसे वेतन का कुछ भाग अनाज तथा सड़ी हुई वियर (शराव) के रूप में लेने के लिये वाध्य किया जाता था। उन क्षेत्रों में दंगों तथा आगजनी के रूप में लोगों के कष्ट एवं यातनाएं अभिव्यक्ति पाते थे। पुराने समय में जव जीवन इतना कठिन नहीं था श्रमिक लोग किसान के खेत पर ही रहा करते थे और उनके खाने पीने का प्रवन्ध भी किसान के साथ ही होता था। निस्सन्देह इसका अवश्य ही यह अर्थ था कि मजदूर अपने मालिक पर इस समय भी उतना ही आश्रित था जितना कि वाद के काल में उसे मालिक द्वारा दी गई एक काम चलाऊ तंग कुटिया में गुजारा करने के लिये उस पर आश्रित होना पड़ता था। लेकिन इस आश्रितता स्थिति का एक पक्ष यह भी था कि मालिक तथा मजदूर के वीच वैयक्तिक निकटता स्थापित हो जाती थी और वर्गगत दूरी कम हो जाती थी। कोवेट ने उस पुराने मजदूर की चर्चा की है जो मालिक के साथ उसके जैसा ही भोजन करता था, हां इतना अवश्य था कि मालिक स्वयं कुछ तेज तथा अच्छे प्रकार की 'वियर' का प्रयोग कर लेता था जो उसके नौकर को उपलब्ध नहीं हो पाती थी।

'ग्रेट रिफार्म विल' (सुधार-अधिनियम) के लागू होने के कुछ मास पूर्व सन् १८३० के जाड़ों में थेम्स के दक्षिणी क्षेत्रों के क्षुवित भूमि-मजदूरों ने अपना वेतन अढ़ाई शिलिंग (आधा क्राउन) प्रतिदिन करवाने के लिये एक प्रदर्शन किया था। लेकिन न्यायाधीशों ने उनसे इसका जो वदला लिया वह भयंकर था: तीन उपद्रवियों को फांसी पर लटका दिया गया और चार सौ वीस लोगों को उनके परिवारों से विलग कर अपराधियों के रूप में आस्ट्रेलिया निष्कासित कर दिया गया। यह आंतकित करने वाला जुल्म यह दर्शाता है कि जवकि राजनैतिक क्षेत्र जैकोवाइन-विरोधी भूत से मुक्त हो चुका था और 'सुधार' (रिफार्म) शब्द राजा के परामर्शदाताओं का एक तकिया कलाम वन चुका था तव भी उच्चवर्ग तथा निर्धनों के वीच एक वड़ी खाई विद्यमान थी। (हेमाण्ड, विलेज लेवरर, अध्याय ११ तथा १२)।

इस सवके वावजूद लेकिन थेम्स के दक्षिणी क्षेत्रों के मजदूरों की इस दुर्दशा को सम्पूर्ण इंगलैंड के ग्रामीण क्षेत्र की विशेपता मानना निश्चय ही भूल होगी। उत्तरी क्षेत्रों में और विशेप रूप से उन सभी क्षेत्रों में जहां कि औद्योगिक जीवन तथा खानों का विकास हो रहा था, खेतीहर मजदूरों का पारिश्रमिक भी काफी अच्छा था, निर्धन-सहायता के लिये लिया जाने वाला शुल्क भी कम था और निर्धन-सहायता प्राप्त करने वालों की भी संख्या कम थी। पिछली शताब्दी की तुलना में यदि सभी क्षेत्रों तथा वर्गों को सम्मिलित कर लिया जाए तो रहन-सहन का औसत स्तर निश्चित रूप से

उन्नत था। केवल कोबेट ने ही नहीं बल्कि अन्य लेखकों ने भी शिकायत भरे ढंग से यह कहा है कि अपने रहन-सहन का परित्याग कर किसान अपने से उच्च लोगों का अनुकरण करने लगे थे, धातु के बर्तनों की जगह चीनी के बर्तनों में भोजन करने लगे थे तथा टमटम में अथवा शिकारी कुत्तों की सवारी में बैठने लगे थे। यह अच्छा था अथवा बुरा यह वस्तुतः दृष्टिकोणों पर निर्भर करता है, लेकिन इतना अवश्य है कि उनके 'रहन-सहन का स्तर निश्चत रूप से उन्नत हो गया था।'[1]

और निम्न ग्रामीण वर्गों में स्थान, समय तथा परिस्थितियों के अनुसार काफी सुख तथा समृद्धि छा गई थी। पिछड़ी पीढ़ी के लोगों में बेविक, वर्ड्सवर्थ तथा कोबेट के बचपन के संस्मरणों से तथा नई शताब्दी के लोगों में जैसा कि हॉविट के विवरण से पता चलता है बच्चों का जीवन झाड़ियों और वनप्रान्तरों में खेलते हुए मधुरता पूर्वक व्यतीत होता था। विलियम हॉविट, जार्ज बॉरो तथा अन्य लेखकों की, जिन्होंने कि अठारहवीं शताब्दी के दूसरे तथा तीसरे दशकों में अपना जीवन साधारण लोगों के साथ ही खेतों, गलियों और झोंपड़ी में बिताया था, कृतियों के आधार पर ऐसा अनुमान होता है कि उस समय स्वास्थ्य तथा आह्लाद बहुत व्यापक रूप से जन समाज में थे

---

[1] कृषक के जीवन में घटित हुए परिवर्तनों की चर्चा वाटरलू के समय भी हुई थी और उसके तीस वर्ष बाद भी जैसा कि सन् १८४३ में लिखे गये इन काव्यांशों से पता चलता है, चर्चा होती रही :

"पुरानी शैली :
पति; हल चलाना,
पत्नी; गाय का दूध निकालना,
पुत्री; सूत कातना,
पुत्र; खलिहान जाना,
और आपका किराया पक्का हो जाएगा।
नयी शैली;
पति; हिसाब जोड़ना,
पुत्री; प्यानो बजाना,
पत्नी; नवजाकत और मनोरंजन,
पुत्र; ग्रीक और लेटिन का अध्ययन,
और आप अफसर बन जाएंगे।"

लार्ड एर्नले (इंगलिश फॉर्मिंग, पृष्ठ ३४७) ने इन आरोपों की, जो कि केवल असत्य ही नहीं वरन् कृषीयविपदाओं की चर्चा कर पाने में अपर्याप्त भी थे, कटु आलोचना की है; वे लिखते हैं कि किसानों की कठिनाइयों की इस व्याख्या का स्वरूप 'उतना ही पुराना है जितनी कि पहाड़ियां', और सन् १५७३ में टसर ने अपना काम छोड़कर शिकार के लिये जाने वाले किसानों को कुछ सुझाव भी दिये हैं।

और साथ ही था वहुत कठिन जीवन।[1] लेकिन गांव के खेलकूद तथा परम्पराओं और प्रकृति से उनके निकट सम्बन्ध का, जिसमें रात को झाड़ियों में खरगोश पकड़ने का शौक भी सम्मिलित है, गरीव ग्रामीणों की स्थिति दर्शाने के लिये किस प्रकार तथ्यों के रूप में उपयोग किया जाए यह एक समस्या है। इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में जीवन की विविधताओं को एक साधारणीकृत सूत्र में किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है यह भी विचारणीय है।

सन् १७७१ में आर्थर यंग ने विकसित होती हुई यात्रा की सुविधाओं के कारण ग्रामीण युवकों तथा युवतियों के लन्डन जाकर बसने की वढ़ती हुई प्रवृत्ति के प्रति खेद प्रकट किया था। लेकिन अव सभी ग्रामीण क्षेत्रों से हजारों की संख्या में लोग लन्डन के अतिरिक्त अन्य नगरों की ओर भी आकर्षित हो रहे थे। यह निष्क्रमण प्रक्रिया उद्योगों, कपड़ा मिलों तथा खानों वाले उत्तरी क्षेत्र में अधिक तीव्र थी। सन् १८०१ से १८३१ तक की जनसंख्या सम्वन्धी आंकड़ों से पता चलता है कि उत्तरी क्षेत्र के कुछ जिलों की जनसंख्या में पहले से ही प्रति दस वर्षों में भारी कमी हो जाती थी। यद्यपि इंगलैंड के प्रत्येक ग्राम पर यह वात लागू नहीं होती; और भले ही इस शताब्दी के प्रथम तीस वर्षों में ग्रामीण जनसंख्या में कोई अन्तर न दिखाई दे, लेकिन अनेक ग्रामीण नवयुवक उपनिवेषों अथवा अमरीका या अपने ही देश के वाणिज्यीय तथा औद्योगिक केन्द्रों में जाकर वस रहे थे।

जनसंख्या में निरन्तर होती आ रही वृद्धि के कारण इंगलैंड के गांवों में ही वने रह कर प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपना भरण-पोषण कर पाना असम्भव हो गया था। जितनी भूमि को कृषि के काम में लिया जा सकता था ले लिया गया था, सभी सम्भावनाएं पूर्ण हो चली थीं। और कई पारम्परिक व्यवसाय समाप्त हो गये थे। वहुत से राष्ट्रीय उद्योग, जैसे कपड़ा उद्योग, जिन्हें ट्यूडर के युग में तथा मध्यकाल में वाहर से लाकर गांवों में स्थापित किया गया था अव देहाती क्षेत्रों के वाहर स्थानान्तरित किये जा रहे थे। अव ग्राम अधिकाधिक कृषि-आश्रित होते जा रहे थे, ग्राम-वाजार में विक्री के लिये उपभोक्ता-वस्तुओं का उत्पादन तो वन्द हो ही गया था, अपनी निजी खपत के लिये भी थोड़ी ही वस्तुओं का उत्पादन किया जा रहा था।

यातायात के विकास तथा सड़कों में सुधार हो जाने से पहले तो जमींदार स्त्री ने और उसके वाद कृषक-गृहणी ने, तथा सबके वाद कुटीरवासी स्त्री ने नगर के वाजार से उन्हीं वस्तुओं को खरीद कर लाना प्रारम्भ किया जिनका उत्पादन पहले

---

[1] हॉविट की 'रूरल लाइफ़ इन इंगलैंड' तथा 'वॉयज कन्ट्री वुक' नामक कृतियों में सन् १८०२ से १८३८ तक के अनुभवों को प्रस्तुत किया है। वॉरो की लैवेन्ग्रो नामक कृति में सन् १८१० से १८२५ तक के अनुभवों का चित्रण किया गया है।

गांव में अथवा जागीर में ही किया जाता था। और अब बहुधा ही गांवों में ऐसी दुकानें खोल दी गई थीं जिनमें स्थानीय खपत के लिये विदेशों तथा नगरों से वस्तुएं आयात की गई थीं। अपनी आवश्यकताओं के लिये स्थानीय रूप में वस्तुओं का उत्पादन करने वाले आत्मनिर्भरता प्रधान ग्राम का स्वरूप भूतकालीन स्मृति भर बन कर रह गया था। एक-एक करके सभी शिल्पकार समाप्त हो रहे थे—कपड़ा बुनने तथा खेती के औजार बनाने वाले, दर्जी, फर्नीचर निर्माता, चक्की वाले, जुलाहे और कभी-कभी बढ़ई तथा मकान बनाने वाले कारीगर भी दिखाई नहीं देते थे और विक्टोरिया की अन्तिम शासन-अवधि में कहीं-कहीं एक मात्र लुहार ही शिल्पी के नाम पर शेष बच रहा था जो घोड़ों की नाल बनाने के निरन्तर ह्रासोन्मुख व्यावसायिक स्थिति के कारण यात्रियों की बाइसिकलों के ट्यूब-टायर की मरम्मत करके अपना भरण-पोषण करने लगे थे। छोटे उद्योगों तथा हस्त उद्योगों की संख्या में कमी होने से ग्रामीण जीवन ऊबपूर्ण हो गया था तथा कम-स्वावलम्बी अभिवृत्तियों को जन्म दे रहा था और इस प्रकार राष्ट्रीय जीवन का मुख्य स्रोत होने की अपेक्षा बचे खुचे पानी का एक बन्द गड्ढा भर बन कर रह गया था। कई प्रकार से शहरी जीवन द्वारा उसकी जीवन शक्ति का शोषण किये जाने के कारण ग्राम की जीवन शक्ति में वास्तव में निरन्तर ह्रास होता जा रहा था। सम्पूर्ण शताब्दी पर चलने वाली इस ह्रास प्रक्रिया की नींव वस्तुत: वाटरलू तथा 'सुधार-बिल' (रिफॉर्म-बिल) की बीच की अवधि में पड़ी थी।

लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में वास्तव में इंगलैंड का ग्राम समुद्रपारीय देशों के लिये श्रेष्ठ उपनिवेशवादी भेजने में काफी समर्थ सिद्ध हुआ था। ये लोग काफी समय तक घर से बाहर रह कर काम करने तथा कष्ट झेलने के काफी अभ्यस्त थे और जंगलों में वृक्ष गिराने, हस्त उद्योगों तथा खेती करने के लिये सदैव तत्पर रहते थे। स्त्रियां बड़े परिवारों की देखभाल करने में समर्थ थीं।

युद्धोत्तर इंगलैंड की परिस्थितियां उपनिवेषीकरण के वृहद् आन्दोलन में काफी सहायक सिद्ध हुईं। जनसंख्या के जिस आधिक्य को देखकर माल्थस के समकालीन लोग आतंकित हुए थे, उसके अतिरिक्त आर्थिक तथा सामाजिक यातनाएं, जमींदारों और बड़े किसानों के आधिपत्य के प्रति स्वच्छन्दता प्रिय लोगों के मनों में उत्पन्न होने वाला रोष, वस्तुत: इन सभी कारणों ने कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में ब्रिटिश भाषा-भाषी तथा समान परम्परा वाले लोगों को वहां बसा कर एक और ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना में काफी सहायता की थी। कैनेडा जाकर बसने वाले एक व्यक्ति ने लिखा है कि यहां 'हम स्वतन्त्र हैं और अपने अधिकारों की चर्चा करने में यहां हमें किसी प्रकार का भय नहीं होता। एक दूसरे व्यक्ति के अनुसार हमें न तो नियंत्रण-कर्ताओं की ही आवश्यकता होती है और न किन्हीं विशेषाधिकारों की'। स्कॉटलैंड-वासी भी जिनमें हाईलैन्डवासी तथा लोलैन्डवासी दोनों ही सम्मिलित हैं समान हैं और

दोनों ही ने एक कैनेडियन परम्परा को विकसित कर लिया है। जंगल काटकर आवास वना लिये गये तथा इस उपजाऊ भूमि में अनाज तथा मनुष्य दोनों ही की संख्या तथा मात्रा में आनुपातिक वृद्धि होती रही। उन्नीसवीं शताव्दी के प्रारम्भिक दशकों में आस्ट्रेलिया में पूंजीपति चरागाह मालिकों ने वड़े पैमाने पर भेड़ों तथा दुधारु पशुओं के 'फार्मों' की स्थापना की और इस प्रकार उपक्रमी व्यक्तियों के लिये एक नये आकर्षक व्यावसायिक क्षेत्र को आरम्भ किया। न्यूजीलैंड का उपनिवेश कुछ समय वाद ही वन गया था और गिवन वेकफील्ड तथा एंग्लिकन तथा स्कॉटिश प्रेस्विटेरियन कमेटियों के उत्साहपूर्ण धार्मिक प्रयत्नों के फलस्वरूप उसका व्यवस्थित गठन सन् १८३७ तथा १८५० के मध्य हुआ था। हेनरी वंश तथा विक्टोरियाकालीन व्रिटेन-वासी या तो प्रमुखतः ग्रामवासी था अथवा ग्राम से विस्थापित व्यक्ति था : उसे मुख्य रूप से उस नगरवासी की भांति कि जो खेती करने में एकदम असमर्थ है अथवा किसी एक व्यवसाय की जगह अन्य व्यवसायों को ग्रहण करने में समर्थ नहीं होता, शहरी उत्पत्ति नहीं माना जा सकता। वह अव भी जीवन की कठिनाइयों को झेलने में सक्षम है तथा अवसरों और आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को ढाल सकता है।

इस रूप में 'राष्ट्रों' की व्रिटिश कामनवेल्थ की स्थापना ठीक समय पर ही हो गई थी। लेकिन जिस समय अनेक अंग्रेज ग्रामवासी समुद्र पार के देशों में जा रहे थे उसी समय अन्य अनेकों ग्रामीण स्वदेश में ही औद्योगिक केन्द्रों की ओर आकर्षित हो रहे थे। नेपोलिनीय युद्धों के दौरान यह स्वदेशी स्थानान्तरण विशेष रूप से दिखाई देता था। 'कोयले तथा लोहे' का युग प्रारम्भ हो चुका था। एक नई जीवन व्यवस्था प्रारम्भ हो रही थी और जिन परिस्थितियों में वह उत्पन्न हो रही थी वह नये प्रकार के तनावों को जन्म देने वाली थी।

औद्योगिक केन्द्रों को प्रवास करने वाले लोग जिस पुरानी ग्रामीण व्यवस्था को छोड़कर आ रहे थे वह वास्तव में अनुदारवादी सामाजिक संरचना तथा नैतिक वातावरण से वोझिल थी, और इन नये स्थानों पर उन्हें अव उपेक्षित कूड़े की भांति एक ओर फेंक दिया गया था जिस पर स्वभावतः जल्दी ही फफूंद छा गई और अव वह पदार्थ एक ज्वलनशील पदार्थ के रूप में परिवर्तित हो गया था। साधारणतया खाने-कपड़े तथा पारिश्रमिक विपयक स्थिति उनकी पिछली कृषकीय दशा से अच्छी थी। और खेतिहर मजदूरों जिनकी कि आय का एक भाग निर्धन-सहायता कोप से प्राप्त होता था—की अपेक्षा उन्हें अव अधिक आत्मनिर्भरता प्राप्त थी। लेकिन औद्योगिक केन्द्रों की ओर होने वाले इस जनसंख्या के स्थानान्तरण से जहां कुछ लाभ हुआ वहीं हानियां भी हुईं। जंगलों, खेतों तथा झाड़ियों के सुन्दर दृश्यों तथा ग्रामीण जीवन की अविस्मरणीय प्रथाओं—गांव की हरियाली और उसके हरे-भरे प्रान्तर में होने वाले खेल-कूद, खलिहानों में जाकर रहना, भोज, मई-दिवस (मे-डे) के उत्सव आदि—के सुखद मानवीय आवरण ने युग-दीर्घ निर्धनता की दारुणता को सह्य वना

दिया था। ये बातें खानों अथवा कारखानों, अथवा केवल मुंह भर छिपाने के लिये बनाए गये ईंट के मकानों की लम्बी कतारों में सम्भव नहीं हो पाती थीं। गांव की पुरानी झोंपड़ियां निस्सन्देह सुन्दर होते हुए भी हानिकर थीं। फिर भी उनके प्रति लोगों में एक आसक्ति का ऐसा भाव था जो शहरी मकानों के प्रति उत्पन्न नहीं हो सकता था। वर्ड्सवर्थ की 'पुअर सुसान' इसी कारण नगर के अपने निष्कासित जीवन में देहाती झोंपड़ी का स्मरण करती है : 'वही एक मात्र ऐसा आवास है जिसे वह प्यार करती है' अपने आवास के प्रति ऐसी अनुरक्ति कामगारों के लिये बनाये गये आज के आदर्श निवासों के लिये भी जागृत नहीं हो पाती।

शहरी क्षेत्रों में सबसे गन्दे मकान आयरलैंड से आकर बसने वाले लोगों के थे। ये लोग जिन ग्रामीण वस्तियों से यहां आये थे वे निकृष्टतम इंगलिश गांव से भी अधिक खराब थीं और उसी अनुपात में उनका रहन-सहन भी गन्दा था। आयरिश *किसान के प्रति अंग्रेजों का जो व्यवहार रहा था उसका यहां लगातार प्रतिशोध लिया* जा रहा था। लेकिन स्वच्छता की दृष्टि से औद्योगिक क्षेत्रों के लिये सबसे खराब समय उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय की अपेक्षा मध्यकाल था, क्योंकि उसी समय कई नये मकानों की वर्षों से सफाई तथा मरम्मत न हो पाने के कारण वे गन्दे ढांचों में परिवर्तित होते जा रहे थे।

खान मजदूरों की ही भांति कारखानों में काम करने वाले मजदूर खान अथवा कारखाने के मालिक के नौकरों की हैसियत से अलग मकानों में रहते थे और मालिक सुविधा-सम्पन्न निजी मकान तथा एक पृथक सामाजिक वातावरण में अलग रहता था; पुरानी ग्रामीण व्यवस्था में स्थिति दूसरी ही थी—प्रत्येक खेत अथवा फार्म पर एक, दो अथवा आधे दर्जन लोग अपने भू-स्वामी से निकट के वैयक्तिक सम्बन्ध बनाए हुए एक साथ रहते थे जहां गृह-वधू भोजन बनाती थी और सभी अविवाहित जन भोजन करते थे। प्रत्येक फार्म पर यही व्यवस्था थी।

कारखानों में काम करने वाले इस उपेक्षित जन-समुदाय के लिये उनके ग्रामीण पारस्परिक सुविधाओं तथा प्रथाओं से विलग हो जाने पर यहां किसी भी प्रकार के कल्याण कार्यों अथवा मनोरंजन-सुविधाओं द्वारा उसकी क्षति-पूर्ति नहीं की जा सकी। चर्च अथवा राज्य ने उनकी कोई चिन्ता नहीं की, किसी भी भद्र महिला ने उन्हें अपने परामर्श तथा कम्बलों की सहायता प्रदानकर कृतार्थ नहीं किया, मदिरापान के अतिरिक्त उन्हें और कोई भोग-सामग्री प्राप्य नहीं थी और एक दूसरे से वार्तालाप के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति भी उनकी दुख-कथा को सुनने वाला नहीं था। इस स्थिति में आन्दोलन की आग में उनका ईंधन की भांति सुलग उठना स्वाभाविक था। जीवन में उन्हें, एवांगेलिकल धर्म अथवा क्रान्तिकारी राजनीति का आश्रय प्राप्त करने के अतिरिक्त न तो कोई आशा ही दिखाई देती थी और न रूचि ही थी।

कभी-कभी ये दोनों संयुक्त भी हो जाते थे क्योंकि कई विद्रोही उपदेशक स्वयं क्रान्तिकारी विचारों को प्रसारित किया करते थे। लेकिन जिस राजनैतिक अनुदारतावाद से 'वेस्लेयन' आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था उसकी शक्ति समाप्त नहीं हो पाई थी और अब भी वह एक नियंत्रक के रूप में कार्य कर रहा था। फ्रेंच इतिहासकार एली हैलेवी जिसने उन्नीसवीं शताब्दी का इंगलिश इतिहास लिखा है, के मतानुसार इस आर्थिक विघटन तथा सामाजिक उपेक्षा के युग में इस देश को हिंसात्मक क्रान्ति से बचाने वाला प्रमुख कारण एवांगेलिकल धर्म का शक्तिशाली प्रभाव था : 'साहित्यकार एवांगेलिकल मतानुयायियों से जहां उनके संकीर्ण पवित्रतावाद के कारण घृणा करते थे, वैज्ञानिक उनकी बौद्धिक अपरिपक्वता के कारण उनसे घृणा करते थे। फिर भी, उन्नीसवीं शताब्दी में एवांगेलिकल धर्म ने अंग्रेजी समाज को एक नैतिक गठन अवश्य ही प्रदान किया। एवांगेलिकल मतानुयायियों के प्रभाव के कारण ही ब्रिटिश अभिजात वर्ग को एक 'स्टोइक' (निस्पृह) सम्मान प्राप्त हुआ, बेढंगे प्रदर्शनों तथा व्यभिचार में लिप्त वर्गों से जो श्रेष्ठिजन उभर कर सामने आए थे उन्हें संयम प्राप्त हुआ, तथा सर्वहारा वर्ग को कुछ गुणी तथा आत्म नियंत्रण युक्त श्रमिकों का नेतृत्व प्राप्त होना संभव हो सका था। इस प्रकार से एवांगेलिकल सम्प्रदाय एक ऐसी अनुदारतावादी शक्ति का रूप था जिसने क्रान्तिकारी शक्तियों से उत्पन्न असन्तुलन के खतरे को समाप्त कर दिया था। (हैलेवी, 'हिस्ट्री ऑफ़ इंगलिश पीपल' अनुवाद : ई. आई. वाटकिन, III पृ० १६६)।

लेकिन वाटरलू के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलनों के उदय तथा सफलता को लोकप्रिय धर्म के नियंत्रणों तथा अन्य सुखद प्रभावों के अतिरिक्त एक और कारण भी है। यह सत्य है कि उसका सभी औद्योगिक क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ा था, लेकिन उद्योग-प्रधान क्षेत्र सम्पूर्ण इंगलैंड का वास्तव में अत्यन्त छोटा भाग था। सन् १८१९ में औद्योगीकरण से उत्पन्न स्थितियां केवल औद्योगिक क्षेत्रों तक ही सीमित थीं—लंकाशायर के कपड़ा उद्योग क्षेत्र से बाहर उनका प्रभाव नहीं पड़ सका था, अतः छः अधिनियमों (सिक्स एक्ट्स) तथा पीटरलू के समय आम जनता का दमन कर थोड़े समय के लिये क्रान्ति आन्दोलन को दबाना सम्भव हो गया था। यद्यपि भविष्य अब उद्योग-व्यवस्था से ही सम्बद्ध था लेकिन वर्तमान में इंगलैंड का श्रमिक वर्ग पुरानी व्यवस्था के अनुसार ही कार्य कर रहा था—चाहे वह कृषीय क्षेत्र की हो या उद्योगों से सम्बद्ध हो, घरेलू नौकरी हो अथवा समुद्री जीवन से सम्बन्धित हो, पीटरलू एक महत्वपूर्ण घटना थी। मैनचेस्टर के कपड़ा उद्योग में ज़मींदारों के दमन ने जैकोबिन विरोधी अनुदारतावाद के प्रति उदित होती हुई नई पीढ़ी के मन में एक वितृष्णा उत्पन्न कर दी थी। लेकिन वास्तव में पीटरलू से केवल दक्षिणी लंकाशायर का ही एक वर्ग आहत हुआ था और इस वर्ग को उस समय के इंगलैंड की एक सामान्य विशिष्टता नहीं माना जा सकता।

मि. पिकविक का समय 'प्रथम सुधार बिल' (फर्स्ट रिफार्म बिल) का समय था जिसे संक्रान्तिकाल की संज्ञा दी जा सकती है—इसमें पुरानी तथा नई आर्थिक प्रणालियों का समिश्रण था और इस मिश्रण में भी पुरानी व्यवस्था की ही प्रधानता थी। खेतों पर काम करने वाले मजदूरों तथा छोटे-छोटे कारखानों में काम करने वाले उद्यमी लोगों की संख्या खान-मजदूरों तथा कारखानों में काम करने वाले लोगों की तुलना में अधिक थी। इसके अतिरिक्त लोगों के घरों पर काम करने वाले नौकरों की संख्या काफी अधिक थी। इस शताब्दी के तीसरे दशक में घरों पर काम करने वाली नौकरानियों की संख्या ही कपड़े के कारखानों में काम करने वाले पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों की कुल संख्या से 'पचास प्रतिशत अधिक थी।' (क्लैपहम, I, पृ० ७३) घरेलू नौकरों की व्यावसायिक एवं आर्थिक दशाओं का अध्ययन आर्थिक अथवा सामाजिक इतिहासकारों ने बहुत थोड़ा किया है और इस प्रकार का अध्ययन वास्तव में कठिन भी अत्यधिक था क्योंकि मालिकों की दशाओं के साथ नौकरों की स्थितियां भी सभी घरों में एक सी नहीं थीं। जैसा कि हम सभी जानते हैं, श्री सैमुअल वेलर अपने वर्ग के सुविधा प्राप्त व्यक्ति थे जिन्हें कम काम करने पर भी अधिक प्राप्ति हो जाती थी। वह स्वयं तथा मैरी (न्यूपकिन्स की नौकरानी) यद्यपि 'रिफार्म-बिल' से प्रसन्न थे लेकिन विचारों में क्रान्ति प्रिय व्यक्ति नहीं थे।

इसी प्रकार कारखानें अथवा घरेलू नौकरी की सम्भावना से दूर अकुशल लोगों का एक बड़ा वर्ग और था जो साधारण मजदूरों के रूप में इधर-उधर स्थानान्तरित होता रहता था और नहर खोदने,[१] सड़क बनाने का काम करता था—उनकी अगली पीढ़ी रेलों के लिये सुरंगें बनाने का काम भी करने लगी थी। उत्तरी क्षेत्र में अधिकांश आयरिश लोग इसी वर्ग में थे, लेकिन दक्षिण में अधिकांश आयरिश इंगलिश गांवों में अतिरिक्त (सरप्लस) कामगारों के रूप में ही काम करते थे और इस क्षेत्र में उन्हें कारखानों तथा खानों में भी मजदूरी मिल पाना अत्यन्त कठिन था। कुछ उच्च वेतन प्राप्त इंजीनियर इन अप्रशिक्षित मजदूरों के दलों में अधिकारी नियुक्त किये गये थे और रेलवे निर्माण कार्यों तथा सुरंगें बनाने के लिये तो उनकी संख्या तथा वेतन में और भी वृद्धि कर दी गई थी। लेकिन कुल मिलाकर ये मजदूर अपने कार्य में बहुत ही कम कुशल तथा अज्ञ थे और औद्योगिक क्षेत्र के अन्य नवोदित वर्गों की तुलना में इन्हें वेतन भी बहुत थोड़ा मिलता था। ये लोग वास्तव में इस नये युग के घुमन्तू प्राणी थे और इनकी पूंजी केवल उनकी शारीरिक शक्ति थी।

इन अकुशल मजदूरों से प्रशिक्षित इन्जीनियरों तथा मिस्त्रियों की स्थिति नितांत भिन्न थी। मशीन को सुधारने तथा बनाने वाले लोग ही वास्तव में

---

१ ये श्रमिक 'नेवीज़' कहलाते थे और इसी आधार पर स्थानीय नाविकों के लिये भी शब्द का प्रयोग होने लगा था।

'औद्योगिक क्रान्ति' के श्रेष्ठजन (एलीट) तथा अंगरक्षक थे। उन्हें अपने अन्य सहयोगी मजदूरों की अपेक्षा वेतन भी अधिक मिलता था, वे बुद्धिमान भी अधिक थे और शिक्षा आन्दोलन में भी अगुआ थे मालिक भी उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखता था क्योंकि तकनीकी ज्ञान में उनकी अधिक जानकारी होने के कारण मालिक को बहुधा ही उनसे परामर्श करते समय उनके सम्मुख झुकना पड़ता था। प्रगति तथा आविष्कार के क्षेत्र में वे सबसे आगे थे और इस नये युग का नेतृत्व करने में आनन्द का अनुभव करते थे। इस प्रकार के कार्यकर्ताओं को टाइनेसाइड का स्टीफेन्सन कहा जा सकता है—वास्तव में स्टीफेन्सन, जिसने कि रेलवे एंजिन का आविष्कार किया था, सत्रह वर्ष की आयु में साक्षर हुआ था और उसके विकास में 'मध्यवर्ग' का कोई भी भाग नहीं था।

वास्तव में कोयला खानों तथा कपड़े के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के प्रारम्भिक इतिहास की पुनर्रचना करना उतना कठिन नहीं है जितना मिस्त्रियों तथा इन्जीनियरों के इतिहास की रचना करना, क्योंकि ये लोग समूचे देश में बिखरे हुए थे और किसी एक क्षेत्र में उनका विकास नहीं हो पाया। लेकिन मिस्त्रियों तथा इन्जीनियरों के जीवन को देखे बिना औद्योगिक क्रान्ति के आदि काल तथा कुसमय का चित्रण अत्यन्त अस्पष्ट होगा। इस युग में जिस आदर्श का उदय हो रहा था वह वास्तव में 'स्वावलम्बन' था जिसके प्रभाव में अनेकों कमजोर तथा कम सौभाग्यशाली लोग उपेक्षित रह जाते थे, लेकिन मालिकों तथा मध्यस्थता करने वाले लोगों के दलाल-वर्ग के अतिरिक्त भी कुछ ऐसे वर्ग थे जिन्हें इस व्यक्तिवादी नैतिक बौद्धिक विचारधारा से लाभ पहुंचा और उन्होंने अपने पुरुषार्थ का प्रदर्शन भी किया।

सामान्य वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से यांत्रिकी के अध्ययन द्वारा 'प्रौढ़ शिक्षा' को सर्वप्रथम मान्यता मिली, और मध्य-वर्ग के कुछ बुद्धिजीवियों ने इस मांग को पूरा करने में अपना सहयोग भी दिया। यह आन्दोलन अंशतः व्यावसायिक तथा उपयोगितावादी आन्दोलन था और अंशतः बौद्धिक तथा आदर्शात्मक उत्तरी क्षेत्रों का अपेक्षाकृत श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का वर्ग तटस्थ वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक संयुक्त था। सन् १८२३ में डा. बर्कबेक द्वारा स्थापित स्कॉटलैंड का यांत्रिकी प्रशिक्षण केन्द्र (मेकेनिक्स इन्स्टीट्यूट) सम्पूर्ण इंगलैंड में प्रचलित हो गया। यांत्रिकी प्रशिक्षण के प्रसार की इस चिनगारी को हैनरी ब्रोहम की प्रचारवादी तथा संगठनात्मक प्रतिभा ने, अपने सर्वश्रेष्ठ जन सेवाकाल में संसद तथा देश हित के लिये उसकी भावी आवश्यकताओं की चर्चा कर तथा वास्तविक 'विरोध' की भूमिका अपना कर इस चिनगारी को एक हवा दी थी और वह भड़कने लगी थी। पीकॉक जैसे कुछ आत्मतृप्त पुरातनवादी विद्वान अपने इस 'विद्वान मित्र' तथा उसके 'वाष्पीय-बुद्धिवादी समाज' ('स्टीम इन्टेलेक्ट सोसायटी') की हंसी उड़ा सकते हैं लेकिन वास्तव में यह नया युग ऑक्सफोर्ड तथा

कैंब्रिज की चारदीवारी में बन्द केवल शास्त्रवादी विद्वत्ता की भांति सामान्यजन के उपयोग से पृथक नहीं रह सकता था।

इन यांत्रिकी प्रशिक्षण संस्थाओं की सफलता से, जिनका कि वार्षिक शुल्क एक गिनी था यह स्पष्ट हो गया कि चाहे अन्य श्रमिक वर्गों का कुछ भी बने लेकिन औद्योगिक क्रान्ति से मिस्त्रियों तथा इन्जीनियरों को अवश्य ही लाभ पहुंचा था। 'फ्रांसिस प्लेस' तथा रेडिकल टेलर' ने जैकोबिन विरोधी स्थितियों से उत्पन्न आतंक द्वारा एक पीढ़ी पूर्व जिन श्रमिक वर्गों का दमन हो गया था उनके स्व-शिक्षण के प्रारम्भिक प्रयत्नों के पुनरागमन को भली-भांति देखा था; लेकिन सन् १८२४ में आठ सौ से नौ सौ की संख्या में सम्मानित प्रतीत होने वाले मिस्त्रियों को रसायन शास्त्र के एक व्याख्यान को सुनते हुए देखकर उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उस वर्ष 'मैकेनिक्स' मेगज़ीन की १६००० प्रतियां बिक गईं थीं और १५०० श्रमिकों में से प्रत्येक ने लन्डन इन्स्टीट्यूट को एक गिनी शुल्क भी भेजा था। व्यापक ज्ञान का प्रकाशन अब सस्ती पुस्तकों तथा पत्रिकाओं द्वारा होने लगा था और जिज्ञासु विद्यार्थी उनका उपयोग करने लगे थे।

जिस समय प्रौढ़-शिक्षा और स्व-शिक्षा का प्रचलन बढ़ रहा था, लन्डन विश्व-विद्यालय की स्थापना (१८२७) पर भी इस उद्देश्य का पर्याप्त प्रभाव पड़ा था। ऑक्सफोर्ड तथा कैंब्रिज से जिन धर्म निरपेक्षतावादियों तथा विरोधियों को वंचित कर दिया गया था उन्होंने संगठित होकर राजधानी में एक और शिक्षण संस्था की स्थापना कर डाली थी और—उसके पाठ्यक्रम में जहां धर्मशास्त्रीय अध्ययन को सम्मिलित नहीं किया वहीं अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को भी धर्मशास्त्रीय परीक्षा से मुक्त कर दिया था। इस नवजात विश्वविद्यालय का रुझान आधुनिक विषयों तथा विज्ञान के अध्ययन की ओर था। विशुद्ध शास्त्रीय (क्लासिकल) पाठ्यक्रम को चर्च तथा राज्य संगठन का भाग माना जाता था। इस उपयोगितावादी मनोवृत्ति का नगर के असुविधाग्रस्त वर्गों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। लन्डन विश्वविद्यालय की स्थापना यद्यपि एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक घटना थी लेकिन उस समय उसका वास्तविक महत्व उस पर किये जाने वाले साम्प्रदायिकतावाद तथा पक्षपात के दोषारोपणों के कारण विलीन हो गया था।

प्राथमिक शिक्षा को धार्मिक तथा साम्प्रदायिक झगड़ों से जो विरोधियों की संख्या बढ़ जाने के कारण इस युग की विशेषता हो गए थे, लाभ तथा हानि दोनों ही हुए थे। लेकिन चर्च के पक्ष धर लोग किसी भी प्रकार अपने प्राप्त अधिकारों एवं सुविधाओं से वंचित नहीं होना चाहते थे। एक ओर शिक्षा के लिये जनता का पैसा इसलिये नहीं लिया जा सकता था कि चर्च के अनुसार वह पैसा केवल राज्य-धर्म के संरक्षण में ही खर्च किया जा सकता था और विरोधी लोग इस शर्त पर उस सहायता को स्वीकार नहीं करना चाहते थे और दूसरी ओर विरोधी सम्प्रदाय 'डे-स्कूल्स' (दिवसीय पाठशालाएं) तथा 'सण्डे स्कूल्स' (रविवारीय पाठशालाएं) चलाने के लिये

जनता से अधिकाधिक धन प्राप्त करने के लिये परस्पर होड़ भी करते थे। मिस ब्रोन्टे की 'शर्ले' नामक कृति के पाठकों को प्रतिस्पर्धी पाठशालाओं द्वारा आयोजित दावतों का दृश्य (अध्याय XVII) याद होगा, जब चर्च पाठशाला के बच्चे 'पादरी तथा एक स्त्री के नियंत्रण में', 'रूल ब्रिटेनिया' की धुन पर तेज चाल से सकड़ी गली में मार्च करते हुए गुजरते थे और विरोधी स्कूल के बच्चे भी अपने नियंत्रकों के साथ मन्द धुन में गीत गाते हुए गुजर जाते थे। इस स्थिति में पुरानी अंग्रेजी राजनीति, धर्म एवं शिक्षा की ही जड़े थीं।

'ब्रिटिश तथा विदेशी स्कूल सोसायटी' ह्विग सम्प्रदाय तथा अन्य विरोधियों के संरक्षण में बिना किसी सम्प्रदाय विशेष का पक्ष लिये राष्ट्रीय स्तर पर बाइबिल की शिक्षा प्रदान कर रहा था, जबकि चर्च-सम्प्रदायवादी 'नेशनल सोसायटी फॉर दि एड्यूकेशन ऑफ़ दि पुअर' नामक प्रतिष्ठान द्वारा इंगलैंड के चर्च के सिद्धान्तों के अनुसार उनका प्रतिकार कर रहे थे। प्रथम प्रकार के 'राष्ट्रवादी' अथवा चर्च पाठशालाएं इंगलैंड के गांवों में शिक्षा के आम साधन थे।

यद्यपि आज की तुलना में उस समय की शिक्षण व्यवस्था में कई कमियां थीं, लेकिन उस समय, अर्थात् वाटरलू के समय, सभी श्रेणियों के लोगों को बाइबिल का पर्याप्त ज्ञान था और इसी कारण आधुनिक कागजी ज्ञान की विसंगतियों की तुलना में उस समय लोगों की कल्पना शक्ति को भी कहीं अधिक बल मिला।

नई औद्योगिक स्थिति के विकास के साथ, जिसमें एपेरेन्टिसशिप तथा परसेवी शिल्पकार और मालिक के वैयक्तिक सम्बन्धों को समाप्त करना भी निहित है, उस स्थिति में जबकि वेतन निर्धारण की ट्यूडर काल से चली आ रही परम्परा को राज्य ने समाप्त घोषित कर दिया था, श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिये ट्रेडयूनियन' का हस्तक्षेप आवश्यक था। लेकिन जैकोबिन विरोधी काल (१७९२-१८२२) में राजनैतिक अथवा विशुद्ध आर्थिक उद्देश्यों में से किसी के भी लिये मजदूरों का कोई संगठन बनाना 'राजद्रोह' समझा जाता था। आश्चर्य केवल यही है कि मालिकों की सहायता करने वाली राज्य की इस भूमिका ने किसी भी प्रकार के हिंसात्मक उपद्रव अथवा रक्तपात को जन्म नहीं दिया। लेकिन इसके कारण 'ल्यूडाइट' अर्थात् गर्म-दलीय प्रवृत्तियों को अवश्य ही बढ़ावा मिला।

नेपोलियन युद्धों के मध्यकाल में बेरोजगारी, निम्न वेतन तथा भुखमरी नाटिंघमशायर, यार्कशायर तथा लंकाशायर के औद्योगिकों में एक साधारण बात हो गई, और इसका प्रमुख कारण नवस्थापित यंत्रों का प्रभाव था। सन् १८११-१८१२ में 'ल्यूडाईट्स' ने नियोजित रूप से मशीनी ढांचों को तोड़ना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि 'ल्यूडाइट' संगठन के कुछ आयरिश सदस्यों में हिंसा की प्रवृत्ति भी थी लेकिन उससे किसी गम्भीर विद्रोह की आशंका नहीं थी और उनका भय भी केवल इसी

कारण से अधिक था कि द्वीप में प्रभावशाली पुलिस का अभाव था। इस कारण मशीनों की रक्षा तथा उपद्रवी भीड़ के दमन के लिये सैनिकों को नियुक्त करना पड़ा। नागरिक पुलिस के अभाव ने राजनैतिक तथा सामाजिक तनावों को और बढ़ा दिया और परिणामस्वरूप पीटरलू की दुर्घटना घटित हुई। पील द्वारा नीले कोटधारी, ऊंचा टोप पहनने वाले तथा डंडाधारी रक्षकों की टुकड़ी की सन् १८२९ में की गई स्थापना इस दृष्टि से काफी सहायक सिद्ध हुई। पहली बार इस रक्षक दल का गठन लन्डन क्षेत्र में किया गया था और वहां इस नवीन पुलिस दल ने 'सुधार बिल' आन्दोलन के समय दो वर्ष बाद ब्रिस्टल तथा अन्य नगरों की भांति आन्दोलनकारियों द्वारा लन्डन को विनष्ट होने से बचाया था अन्यथा लन्डन की पचास वर्ष पूर्व गॉर्डन संघर्षों से जो दशा हो गई थी उस प्रकार की दशा हो सकती थी। जैसे-जैसे पील द्वारा संगठित पुलिस का समूचे देश में प्रसार होने लगा इंगलैंड के दैनिक जीवन से पुराना भय एवं आतंक समाप्त होने लगा।

लेकिन मशीन तोड़ने के अतिरिक्त भी सन् १८१२ के आन्दोलन का एक पक्ष था। 'ल्यूडाइट्स' ने संसद में याचिका प्रस्तुत कर वैधानिक तरीकों से यह भी मांग की कि एलिजाबेथ के शासनकाल से ही चले आ रहे कुछ अधिनियमों को राज्य द्वारा मजदूरों के काम की अवधि तथा वेतन के निर्धारण के लिये तुरन्त कार्यान्वित किया जाना चाहिये।[1] यह मांग पूर्णतया उचित मांग थी और इस प्रसंग में तो और भी उचित थी कि ये पुरानी अधिनियम—धाराएं अपने हितों की रक्षार्थ मजदूरों द्वारा बनाए जाने वाले संगठनों को रोकने के लिये केवल आंशिक रूप से ही लागू की जाती थीं : और हाल ही में 'पिट्स कॉम्बीनेशन एक्ट ऑफ़ १८००' द्वारा मजदूर संगठनों के विरुद्ध स्थिति और भी दृढ़ हो गई थी। ये कानून आदर्श रूप में मालिकों तथा मजदूरों दोनों ही के संगठनों पर लागू होते थे लेकिन यथार्थतः मालिकों को अपने संगठन बनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी जबकि मजदूरों पर हड़ताल आदि के लिये मुकदमा चलाया जाता था। सन् १८१३ में संसद ने एलिजाबेथ कालीन अधिनियमों में संशोधन किया जिसके द्वारा मजिस्ट्रेटों को न्यूनतम वेतन निर्धारित करने के भी अधिकार प्राप्त हो गये।

मजदूरों को वेतन, काम के घंटों तथा कारखाने की दशा के प्रसंग में एक ओर राज्याश्रय से वंचित रखना और दूसरी ओर अपनी मांगें मनवाने के लिये संगठित न होने देना निस्सन्देह अनुचित था। यह वास्तव में अहस्तक्षेप नीति (लैसे-फेयर) नहीं थी बल्कि मालिकों को स्वतन्त्रता देना तथा मजदूरों का दमन करना था। अहस्तक्षेप

---

[1] वास्तव में सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से ही मजिस्ट्रेटों द्वारा मजदूरों के अधिकतम वेतन निर्धारण से मजदूरों को कोई लाभ नहीं होता था।

नीति के प्रभावशाली समर्थक विद्वान, जैसे रिकार्डो, इस प्रसंग में मजदूरों की ओर थे और श्रमिक संघ (ट्रेड यूनियन) को वैधानिक मानने की मांग कर रहे थे।

अन्त में सन् १८२२ के वाद से जैकोविन-विरोधी आन्दोलन शान्त होने लगा था गृह मन्त्रालय में पील के साथ ही सरकार की दमन नीति में अन्तर आने लगा था और सन् १८२४-१८२५ में नये युग की मांग के अनुसार 'हाउस ऑफ़ कॉमन्स' जोसेफ ह्यूम तथा फ्रांन्सिस प्लेस के प्रयत्नों से 'पिट्स कॉम्बीनेशन एक्ट' के संशोधन तथा 'श्रमिक-संघ' को वैधानिक मानने के लिये तैयार हो गया था। इसके वाद से अनेक श्रमिक संगठन तथा सामूहिक गतिविधियां तेजी से पनपने लगी थी और 'कॉम्बीनेशन एक्ट' के बने रहने पर, जिसकी कि आशंका हो सकती थी, क्रान्ति को टाल दिया गया।

यह नहीं मान लेना चाहिये कि वर्ग संघर्ष इंगलैंड में निरपेश रूप में विद्यमान था अथवा सभी मालिक अपने कामगारों अथवा उनकी कठिनाइयों के प्रति उदासीन थे। मालिकों में एक प्रवुद्ध वर्ग ऐसा भी था जिसने श्रमिक संघों को वैधानिक मानने में पर्याप्त सहयोग दिया। और नैपोलियन के युद्धों के दौरान उपक्रमी उद्योगपति सर रावर्ट पील वड़े ने जो एक होनहार पुत्र के पिता थे, कारखानों में वच्चों के राज्यारक्षण के लिये, विशेप रूप से गरीव नौसिखियों के लिये जिन्हें दास वना कर रखने की प्रथा काफी वढ़ गई थी, आन्दोलन चलाया था। निस्सन्देह सर रावर्ट भी, जिन्होंने कि स्वयं १५,००० मजदूरों को काम के लिने अपने यहां नियुक्त कर रखा था, एक अंश तक अपने प्रतिद्वन्द्वियों की निर्लज्ज प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित करने के इच्छुक थे। लेकिन 'सुधार-विल' के पहले के फैक्ट्री अधिनियम न केवल अपने क्षेत्र में अत्यधिक सीमित थे, वल्कि उन्हें कार्यान्वित करने वाली प्रशासन व्यवस्था के अभाव में मृत प्राय भी हो गये थे।

दुर्भाग्य से शताव्दी के प्रारम्भिक काल में मजदूर वर्ग के हित में राज्य के नियंत्रण की कल्पना व्रिटेन के शासकों के अनुकूल नहीं थी। रावर्ट ओवन ने प्रशासकों के सामने जव अपना यह प्रस्ताव रखा कि वह अपनी 'न्यू लैनार्क मिल्स' को विश्व के सम्मुख यह आदर्श प्रस्तुत करने के लिये तैयार है कि नवीन उद्योग व्यवस्था में किस प्रकार स्वस्थ एवं उच्चस्तर का वातावरण वनाया जा सकता है, काम के घंटे, वेतन, कल्याण कार्यों, शिक्षा तथा कामगारों के जीवनस्तर में प्रगति की जा सकती है, तो उसके प्रस्ताव पर प्रशासकों ने कोई ध्यान नहीं दिया। ओवन का यह भी आग्रह था कि ऐसा प्रवन्ध राज्य द्वारा सभी कारखानों में किया जा सकता है। लेकिन लोग न्यू लैनार्क मिल्स की प्रशंसा करते हुए भी उसका अनुकरण करने के लिये तैयार नहीं थे। इस आधुनिक विचारधारा को कि वातावरण ही मनुष्य के चरित्र की रचना करता है और उसे वह नियंत्रित कर सकता है, ओवन ने शीघ्रता से ग्रहण कर लिया था और अव उसका प्रसार भी कर रहा था, लेकिन अन्य लोग उसे पूरी तरह नहीं

समझ पा रहे थे। जिस महान अवसर को उसकी दृष्टि ने देख लिया था वह तब तक ओझल ही रहा जब तक कि इस शताब्दी के मन्द विकास क्रम में राज्य ने कारखानों के नियंत्रण एवं कामगारों के जीवनस्तर सम्बन्धी प्रश्नों को जिन्हें कि ओवन तथा कासलरीघ की 'कैविनेट' के सामने बार-बार विचाराधीन रखता आ रहा था स्वीकार नहीं कर लिया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में कुछ तो 'फ़ैक्ट्री एक्ट्स' के कारण तथा कुछ 'श्रमिक संघ' की गतिविधियों के कारण कारखानों में कामगारों के जीवनस्तर में काफी वृद्धि हुई थी लेकिन कुछ ऐसे श्रमसाध्य घरेलू व्यवसाय जैसे पोषाक उद्योग जिन्हें कि कारखानों पर लागू होने वाले नियंत्रणों के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं किया जा सका था, अभी कुछ समय के लिये दमनकारी स्थितियों में थे—स्त्रियों की दशा इन उद्योगों में विशेष रूप से शोचनीय थी।

युद्धोत्तरकाल में हो रहे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं के यथातथ्य चित्रण के लिये हमें इस धारणा को विलकुल छोड़ देना होगा कि 'औद्योगिक क्रान्ति के पूर्व श्रमिक वर्गों की आर्थिक दशा कुल मिला कर काफी खराब थी और औद्योगिक क्रान्ति के पूर्व श्रमिक वर्गों की नये प्रकार की कठिनाइयों के प्रति काफी आक्रोश था और विगत की अपेक्षा उनकी शिकायतें मुखरित भी अधिक हुईं फिर भी कुल मिला कर उनकी आर्थिक दशा काफी गिरी हुई थी। इस काल के आर्थिक इतिहास पर सर्वाधिक अधिकार प्राप्त व्यक्ति प्रो. क्लैपहम के अनुसार 'यह कथन कि श्रमिकों की स्थिति में पीपल्स चार्टर के लेखन काल से 'ग्रेट एक्जीबीशन' काल के बीच निरन्तर ह्रास होता रहा' सही नहीं है। 'यह तथ्य कि सन् १८२०-१ में मूल्य में कमी हो जाने के बाद से सामान्यत: लोगों की क्रय-क्षमता क्रान्ति तथा नेपोलियनिक युद्धों की पूर्व स्थिति की अपेक्षा निश्चित रूप से अधिक थी प्रचलित स्थिति के इतना विरुद्ध है कि उसकी चर्चा यदा कदा ही किसी ने की है; वेतन और मूल्यों पर सांख्यिकी-अधिकारियों द्वारा किये गये कार्य को सामाजिक-इतिहासकारों ने निरन्तर उपेक्षित ही रखा है'। (प्रिफेस टु दि 'इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न ब्रिटेन)।'

यह सत्य भी है और महत्वपूर्ण भी, लेकिन केवल मजदूरी की क्रय-क्षमता ही सम्पूर्ण मानवीय सुख नहीं है, बहुतों के लिए जीवन की सुविधाएं और मूल्य उनके ग्रामीण पूर्वजों द्वारा मुक्त सुविधाओं और मूल्य की तुलना में कम थे।

अध्याय १६

कोबेट कालीन इंगलैंड (१७६३-१८३२)

[२]

नया युग और नारी—कोष-नियंत्रक—धर्म—पोत परिवहन—नौ सेना तथा स्थल सेना—आखेट सम्बन्धी घटनाएं—खेल के नियम—मानवता।

कारखानों की व्यवस्था तथा पूंजीवादी कृषि प्रणाली के कारण स्त्रियों की व्यावसायिक स्थिति में अनेकों परिवर्तन हुए जिसके फलस्वरूप पारिवारिक जीवन में भी काफी अन्तर आया और आगे चलकर स्त्री-पुरुष सम्वन्धों पर भी काफी प्रभाव पड़ा।[1]

मनुष्य के इतिहास के प्रारम्भिक चरणों में स्त्रियां तथा बच्चे कुछ उद्योग अपने घर में ही चलाते थे और स्टुअर्ट तथा हेनरीकालीन इंगलैंड में कुटीर उद्योगों का काफी विकास हुआ। मशीनों के आविष्कार के कारण सहसा ही घरेलू उद्योग में हुए ह्रास का निर्धन जनता के जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में एक परिणाम यह प्रकट हुआ कि स्त्रियों में वेरोजगारी काफी बढ़ गई, और जिस ग्रामीण परिवार की आर्थिक स्थिति को स्त्री तथा बच्चे अपने सहयोग द्वारा सन्तुलित रखते थे उस पर कुठाराघात हो गया और परिवार का विखंडन प्रारम्भ हो गया।

कारखानों की ओर प्रस्थान भी एकदम सम्भव नहीं हो सका और अनेक स्थितियों में तो तनिक भी नहीं हुआ। नेपोलियन के युद्धों के समय कुटीर उद्योगों के ह्रास के कारण स्त्रियों की परम्परागत अर्जन प्रणाली समाप्त हो गई और पुरुषों के साथ उन्हें खेतों पर काम के लिये जाना पड़ा। वड़े पूंजीपति किसान स्त्रियों के झुंड के झुंड खुरपी चलाने और निराई के लिये काम पर लगाने लगे। इस प्रकार का रोजगार देहाती स्त्रियों के लिये केवल सामयिक रोजगार ही था जो फसल कटाई के समय समाप्त कर दिया जाता था। लेकिन स्पीनहमलैंड के समय वड़े कृषक स्त्रियों को पूरे वर्ष के लिये रोज़गार देते थे क्योंकि नई चकवस्ती के कारण वन्द खेतों में काफी तैयारी और निराई की आवश्यकता होती थी और निर्धन-कोष के लिये ली जाने वाली राशि का

---

[1] इस प्रसंग की कई वातें डा. इवी पिंचवेक की 'वीमेन वर्कर्स एन्ड दि इन्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन, १९३०' नामक पुस्तक में उपलब्ध हैं।

अनुपात भी यदि स्त्री-पुरुष दोनों कमाने वाले हों तो कम ही होता था, और साथ ही स्त्री के कमाने पर मालिक को पुरुष को वेतन भी कम देना पड़ता था। यह एक कुचक्र था : वस्तुस्थिति यह थी कि उस समय पति का वेतन इतना नहीं था कि वह समूचे परिवार के भरण-पोषण का बोझा ढो सके और इसी कारण पत्नी तथा पुत्रियों को खेत पर मजदूरी के लिये विवश होकर प्रतिस्पर्धी बनना पड़ता था। जब उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भूमि-मजदूरों का पारिश्रमिक कुछ और बढ़ा और कृषि कार्य सम्बन्धी मशीनों का उपयोग किया जाने लगा तभी स्त्रियों की नियुक्ति में पुनः पहले की भांति कुछ कमी आई।

पुरानी व्यवस्था में अनेक ग्रामीण स्त्रियां हल चलाने, घर की गाय अथवा शूकर की देखभाल करने, खरीदारी करने अथवा लघुस्तरीय स्थानीय व्यापार को चलाने में सक्रिय भाग लेती थी : प्राचीन इंगलैंड में, आज के फ्रांस की भांति, पत्नी बहुधा ही अपने पति के साथ एक साथी अथवा सहयोगी की भूमिका निभाती थी। लेकिन बड़े फार्मों तथा वृहत् स्तरीय व्यापार की वृद्धि ने स्त्रियों को इन पारम्परिक कार्यों से पृथक् कर दिया जिसके कारण जहां कुछ स्त्रियां निष्क्रिय होकर भद्र महिलाओं (लेडीज) के रूप में ढल गई, अन्य स्त्रियां या तो खेतों पर अथवा कारखानों में मजदूरी करने लगीं और कुछ अन्य मजदूर पत्नी के रूप में अपना सारा समय केवल घर की देखभाल में लगाने लगीं।

जैसा कि अधिकांश मानवीय परिवर्तनों में हुआ करता है इसमें भी कुछ हानि तथा लाभ दोनों ही निहित थे। अब घर कोई छोटा उद्योग-स्थल नहीं था अतः अधिक आरामदायक, शान्त तथा स्वच्छ था : उदाहरणार्थ, घरेलू स्तर पर कपास को खेतों से उठाने और साफ करने का कार्य अब कारखानों के जिम्मे चला गया था और इससे अनेकों गृहवधुएं पहले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न थीं और अनेकों घर सुखदायी स्थलों में परिवर्तित हो गये थे।

इसके अतिरिक्त, जो स्त्रियां कारखानों में काम करने जाती थीं यद्यपि उन्हें जीवन के कुछ बहुमूल्य पक्षों से हाथ धोना पड़ा लेकिन इसके बदले उन्हें स्वाधीनता अवश्य प्राप्त हुई। जो धन कमाती थीं उस पर उन्हीं का अधिकार था। कारखाने में काम करने वाली स्त्री का एक निजी आर्थिक महत्व था जिसे कालान्तर में अन्य स्त्रियां ईर्ष्या की दृष्टि से देखती थीं। स्वतन्त्रता प्राप्ति की आकांक्षा से सम्बन्धित यह ईर्ष्या केवल कारखानों में काम करने वाली लड़कियों तक ही सीमित नहीं थी। उच्च-वर्गों की स्त्रियां भी इसका अनुभव करती थीं। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में अवकाश जीवी वर्ग (लेजर्ड क्लास) की ब्रोन्टे बहिनें तथा फ्लोरेन्स नाइटइंगेल जैसी युवतियां भी यह अनुभव करने लगी थीं कि कारखानों में कमाने वाली स्वावलम्बी स्त्रियां 'भद्र महिला' के लिये भी एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत कर रही हैं।

विक्टोरियाकालीन 'भद्र महिला' तथा उसकी रीजेन्सी कालीन माता के पास बहुधा करने के लिये कुछ नहीं था सिवाय इसके कि पुरुष उन्हें स्वीकार करे और धन दे, और वे पुरुष की इच्छानुसार अपना निजी अर्जन करने वाली स्वावलम्वी नारी के अनुरूप पूर्णता प्राप्त करने में लगी रहती थीं।[1] इसमें कोई सन्देह नहीं की अवकाश जीवी महिलाओं की निरन्तर वढ़ती हुई संख्या ने साहित्य एवं कला को संरक्षण प्रदान करने में तथा पठनशील जनता की वृद्धि में पर्याप्त सहयोग दिया था। और कुछ अवकाश जीवी महिलाएं—जैसे, जेन आस्टीन, मेरिया एजवर्थ तथा हन्ना मूर इतनी शिक्षित भी थीं और उनके पास इतना समय भी था कि स्वयं अच्छी कलाकार तथा लेखिकाएं बन गईं। यह एक अच्छी वात थी। लेकिन कई नवयुवतियां, जो कि स्कॉट तथा वायरन के रूमानी काव्यों में अत्यधिक विभोर रहती थीं और इन कवियों की नायिकाओं का अनुकरण भर करती रहती थीं, वे निस्सन्देह अवकाशातिरेक से पीड़ित थीं। कला और साहित्य में प्रकट होने वाले फैशन, जीवन-पद्धति को, और कभी-कभी शालीन वर्गों के वाह्य आवरण को भी, प्रभावित करते थे। स्कॉट रचित नकली-मध्ययुगीन तथा प्रेमातुर नायक द्वारा पूजित नायिका के आदर्श तथा वायरन रचित स्त्री के 'सुल्तानी' रूप ने भविष्य में अत्यधिक प्रचलित हो जाने वाले निरर्थक तथा वनावटी स्त्रीत्व को उभारने में काफी सहयोग दिया।

जैसे-जैसे उच्चवर्ग अधिकाधिक धनी होते गये और ग्रामीण अभिजातवर्ग शहरी प्रभाव में आता गया, लड़कियों के लिये पाठशाला में 'गवर्नेस से पढ़ना और उसके वाद घर के काम काज में जितना कम हो सके भाग लेना और अधिकांश ड्राइंग रूम में ही वैठना आत्म गौरव का विषय वन गया। मिस ऑस्टीन के उपन्यासों में जिनमें महिलाएं छोटे से उच्चवर्ग का ही प्रतिनिधित्व करती हैं, वे कविता पढ़ने, गपशप करने और अभिजात लोगों के आकर्षण-केन्द्र वनने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करतीं। बड़े राजनैतिक परिवारों में निस्सन्देह स्थिति दूसरी थी : लेन्सडाउन अथवा हालैंड हाउस में स्त्री की जीवन-चर्या इतनी सीमित तथा उवाने वाली कदापि नहीं थी।

इसके अतिरिक्त, नृत्य को छोड़कर 'भद्र महिलाओं' को शारीरिक व्यायाम के लिये भी उत्साहित नहीं किया जाता था। इस काल में शिकार तो वहुत ही कम महिलाएं खेलती थीं, विक्टोरियाकालीन कठिन युग में, जैसाकि पंच के चित्रों तथा ट्रोलोप के उपन्यासों में दिखाया गया है, महिलाओं में शिकार का शौक एक अधिक

---

[1] विक्टोरियाकालीन 'मैरिड वीमेन्स प्रापर्टी एक्ट्स' अधिनियम वनने के पूर्व विवाहोपरान्त स्त्री की सम्पत्ति पर स्वतः ही पति का अधिकार हो जाता था। यह आश्चर्य ही था कि यह कानून विवाह के समय आदान-प्रदान होने वाले इन धार्मिक शव्दों के प्रसंग में कि 'मैं अपना सभी कुछ तुझे अर्पित करता हूं' एक अन्तर्विरोध उत्पन्न करता था।

आम बात हो गई। इस पूर्ववर्ती युग की महिला से यही अपेक्षा की जाती थी कि वह सूती-ऊनी कपड़ों में ही अपनी देह को वेष्टित रखे। जब एलिजावेथ वेनेट गीले मौसम में तीन मील पैदल चलकर 'दुखते हुए टखनों, गन्दे मोजों और थकान से हांफते हुए लाल चेहरा लिये, नीदरफील्ड पहुँची तो श्रीमती हर्स्ट तथा मिस बिंगले ने इसे अनुचित समझ कर उसे रोक लिया था। उत्तर में भी सन् १८०१ में वर्ड्सवर्थ ने एक कविता लिखी थी जिसका शीर्षक : 'देहात से दूर तक पैदल यात्रा करने वाली 'भद्र महिला,' जिसकी भर्त्सना की गई थी। और इस कविता में उसने उसे धीरज बंधाने का प्रयत्न किया था। यह एक विसंगति थी क्योंकि समाज के कम कृत्रिमता-पूर्ण वर्गों में अपने काम पर आने जाने में स्त्रियां काफी दूर तक पैदल चला करती थीं; वेल्स की स्त्रियां तो प्रत्येक वर्ष वेल्स से लन्डन तक और वापिस राजधानी के निकट के फल के बगीचों में मौसमी रोजगार के लिए पैदल ही यात्रा करती थीं।

उच्चवर्ग की स्त्री निरन्तर शक्तिहीन हो रही थी और जीवन के वैविध्य से उसे लगातार विलग किया जा रहा था और इसका कारण पुरुष की सम्पन्नता में वृद्धि और कृत्रिमताओं की समृद्धि था। पुराने आत्मनिर्भर जमींदार घरानों में, जहां घर में और वाहर करने के लिए बहुत से काम थे, अच्छे परिवारों की जैसे पास्टन्स तथा वरनीज़ की, महिलाओं के जिम्मे कई काम सौंपे जाते थे। लेकिन अब आलस्यपूर्ण जीवन भद्र महिला के जीवन की एक प्रमुख विशेषता बन गया था।

निस्सन्देह, सम्पन्न परिवारों में भी कुछ स्त्रियां स्वयं को सक्रिय बनाए रखती थीं और पुराने ढंग के कुछ न कुछ उपयोगी काम करती रहती थी; और हन्नामूर जैसे कुछ अन्य परिवारों की स्त्रियां समाज सुधार तथा बौद्धिक कोटि के आधुनिक कार्य सम्पन्न करती थीं। लेकिन इस नई शताब्दी के लिये वास्तविक खतरा 'आश्रित' अथवा 'आरक्षित' भद्र-महिला के मिथ्या आदर्श से है। और इंगलैंड जैसे प्रदर्शन-प्रिय समाज में, जहां निम्नवर्गीय लोग उच्चवर्गों का सदैव अनुकरण करते हैं, फैशन सम्वन्धी मिथ्या आदर्श निम्न बुर्जुआवर्ग से भी जो कि अब नगरों की सीमान्तीय वस्तियों में भी विकसित हो रहा था, फैल गया।

देहाती क्षेत्रों में भी धनी किसानों की पत्नियों को गृह कार्य के लिये अनुपयुक्त नाजुक 'भद्र-महिलाओं' के रूप में देखना प्रारम्भ हो गया था। पुराने काल में कृषक पत्नी सदैव (जैसी कि वह आज भी है) अत्यधिक व्यस्त गृहणी थी, घर की देखभाल से लगाकर खेत की देखभाल तक में वह भाग लेती थी। दुग्धशालाओं में देखभाल का भार वह स्वयं उठाती थी, दूध निकालने वाली को तड़के ही उठा देना और देर तक स्वयं मक्खन अथवा पनीर बनाने के कार्य में जुटे रहना उसकी विशेषता थी। पश्चिमी क्षेत्र को, जहां से कि पनीर तथा मक्खन लन्डन पहुँचता था, दुग्ध व्यापार से विशेष आर्थिक लाभ होता था और इसमें स्त्री का भाग अत्यन्त महत्वपूर्ण था। दूसरे

व्यवसायों में, जैसे खेती में, गृहिणी गृह-कार्यों से ही अधिक सम्बद्ध थी। उसे केवल अपने परिवार के लिए ही भोजन नहीं बनाना पड़ता था बल्कि वहीं रहने वाले तथा उसकी रसोई में ही भोजन करने वाले मजदूरों के लिए भी भोजन की व्यवस्था उसी को करनी पड़ती थी। वह वास्तव में कठोर परिश्रम करने वाली तथा कम विश्राम करने वाली. स्त्री थी।

लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ये घरेलू स्थितियां नये प्रकार के बड़े और घेरेदार खेतों के बन जाने से काफी बदल गई थीं। खेत पर काम करने वाले मजदूरों की संख्या काफी बढ़ गई थी और इस कारण अपने मालिक के साथ ही रहने और भोजन करने की सुविधा उन्हें उपलब्ध नहीं थी। कोवेट के अनुसार, इस नये धनी किसान के घर का स्तर अब ऐसा नहीं था कि गंदे जूतों वाला श्रमिक उसमें प्रवेश पा सकता। बड़े किसानों ने अपनी पत्नियों को गृह-कार्यों से मुक्ति दिलाने तथा भद्रता के प्रदर्शन के लिए अलग से नौकर रख लिए थे। यह कहा जाता था कि इन किसानों की लड़कियों को गृह-कार्यों की शिक्षा देने तथा दुग्धशाला सम्बन्धी कार्यों में निपुण बनाने की अपेक्षा नृत्य सीखने, फ्रेन्च बोलने तथा वीणा बजाने की शिक्षा के लिए 'बोर्डिंग स्कूल' भेजा जाने लगा।

लेकिन यह पूर्णतया केवल धनी-मानी किसान-परिवारों तक ही सीमित था जिनमें से कुछ तो निस्सन्देह धीरे-धीरे भद्र-लोगों की श्रेणी में आते जा रहे थे। कृपक वर्ग में वास्तव में कई स्तरों के लोग थे। उत्तरी क्षेत्र के किसान 'भद्र-लोगों' का उस प्रकार से अनुकरण नहीं करते थे जिस प्रकार कि स्पीनहमलैंड के किसान करते थे, उत्तरी क्षेत्र का कृपक-मजदूर दक्षिणी क्षेत्र के सर्वहारा की अपेक्षा अधिक स्वाधीन था और उसमें तथा उसके मालिक में सामाजिक पार्थक्य उतना स्पष्ट नहीं था; जंगली गड़रियों के विषय में यह बात और भी सत्य है। फिर समूचे इंगलैंड में अब भी ऐसे हजारों फार्म (खेत) थे जहाँ परिवार की स्त्रियाँ सभी प्रकार के कामों में हाथ बंटाती थीं और कई स्थानों पर तो नौकरों अथवा मजदूरों का भरण-पोषण भी मालिक के ही परिवार में होता था।

इस काल की स्त्रियों की चर्चा करते समय वेश्याओं की एक बड़ी संख्या का उल्लेख भी आवश्यक है। वास्तव में वेश्यावृत्ति सभी युगों में रही है और उसके परिणाम एवं स्तर में देश की जनसंख्या तथा धन के साथ ही वृद्धि भी होती रही है। उद्धार कार्य के अतिरिक्त, जो उन दिनों पादरी लोग कर रहे थे, इस सम्बन्ध में कभी कुछ नहीं किया गया था। इस रोग ने, जिस पर जनता का कोई नियंत्रण नहीं था, नगरों को पूरी तरह ग्रस्त कर लिया था, गली-गली से अर्ध रात्रि में उठने वाली चीख-चिल्लाहटों ने लोगों का जीवन दूभर कर दिया था। धनी-मानी वर्गों की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा से रखैल स्त्रियों की संख्या तथा स्थिति में, जिन्होंने कि अठारहवीं शताब्दी के

समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, काफी गिरावट आ गई। लेकिन इसी कारण सामान्य वेश्याओं की मांग बढ़ गई थी; उनसे गुप्त सम्बन्ध रखने पर प्रतिष्ठा को उतना खतरा नहीं था जितना कि खुले आम रखैल रखने पर अब उत्पन्न हो गया था। कठोर नैतिक आचारों के कारण, जिनकी रचना और रक्षा में माता-पिताओं का भी काफी भाग था, किसी प्रकार एक बार लड़की के वेश्यावृत्ति अपना लेने पर सामान्य जीवन में पुनः लौट पाने की अनुमति नहीं मिल पाती थी। और किसी अकेली स्त्री को अपनी आर्थिक दशा के कारण भी इस व्यवसाय को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ता था। कुटीर उद्योग के ह्रास से कई अनाथ लड़कियों को भूख के आगे मस्तक झुका देना पड़ता था। कम वेतन और कठोर श्रम वाले अव्यवस्थित उद्योगों में भी वेश्यावृत्ति के प्रति आकर्षण था। कुल मिला कर नियमित वेतन तथा सामान्यतः अच्छी स्थिति वाले कारखानों से, यद्यपि उद्योगीकरण की आलोचना करने वाले काफी समय तक इससे इनकार करते रहे हैं, नैतिक स्तर अधिक समुन्नत था। नई शताब्दी के अगले वर्षों में जैसे-जैसे वेतन तथा परिस्थितियां अच्छी होती गई नियुक्त स्त्रियों की आर्थिक दशा तथा स्वाभिमान भी उन्नत होते गये।

नया युग एक बड़े अवकाश-जीवी वर्ग को अस्तित्व में ला रहा था—जिसका न न तो भूमि से, व्यवसायों से या उद्योगों से ही कोई सम्बन्ध था और न व्यापार से ही। नैपोलियन के युद्धों के बाद के वर्षों में सूद पर रुपया उठाने वाले सेठों (फन्ड होल्डर्स) के बारे में काफी चर्चा थी कि वे बिना परिश्रम किए ही अपनी साख से ही जीवन का आनन्द उठाते थे।

विलियम तृतीय के शासनकाल से ही राष्ट्रीय ऋण में प्रत्येक युद्ध के कारण होने वाली वृद्धि जैसे-जैसे हर दस वर्ष के बाद बढ़ती जाती थी, देश पर उसका अधिकाधिक कुप्रभाव पड़ रहा था। लेकिन वास्तव में यह ऋण ब्रिटेन की बढ़ती हुई वित्तीय शक्ति से कभी भी अधिक नहीं हुआ था, और उस पर दिया जाने वाला सूद भी स्वदेश में ही खर्च हो जाता था। जार्ज तृतीय के शासनकाल के प्रारम्भ में धन उधार देने वाले सेठों की संख्या १७,००० कूती गई थी, और कुल कर्ज का सातवां भाग उस समय विदेशों में विशेष रूप से डच व्यापारियों में, रुका हुआ था। लेकिन वाटरलू के बाद अब ब्रिटेन की विपुल राशि का मात्र पच्चीसवां भाग ही विदेशियों के पास बचा था। सन् १८२९ की राजकीय सांख्यिकी के अनुसार सेठों की संख्या २७,५८३९ हो गई थी, जिनमें से २५०,००० छोटे सेठ थे जिनमें से प्रत्येक को २०० पौंड अथवा उससे भी कम वार्षिक व्याज मिलता था।[1]

इससे पर्याप्त संख्या में परिवारों को वसूल हो पाने वाले धन का वितरण सम्भव

---

[1] हालेवी, हिस्ट्री ऑफ़ इंगलिश पीपुल (पेलिकन एड.) II, पृ० २०४-२१२

हो सका था। ऐसे तीस समूह थे; यह हिसाव लगाया गया है कि सन् १८०३ में रुपया उधार देने वाले सेठों को राज्य द्वारा व्याज में दी जाने वाली राशि का पांचवा भाग जनता के खाते में दे दिया जाता था। यह सम्भव ही था कि अधिकांश सेठ इन साधनों द्वारा अतिरिक्त आय कर रहे थे, लेकिन इनमें से कुछ लोग एकदम निष्क्रिय रह कर भी अपनी छोटी पूंजी को सावधानी से कर्ज पर चढ़ा कर प्रतिष्ठापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे जिनमें अविवाहित स्त्रियां, जिनकी चर्चा श्रीमती गेस्केल ने क्रैनफोर्ड में की है, विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

कोबेट ने इन सेठों को जनता के कर हड़प कर जाने वाले रक्त पिपासु कह कर भत्सर्ना करते समय तथा 'राष्ट्रीय कर्ज' को जब्त कर लेने की मांग करते समय यह नहीं सोचा कि अपनी इस मांग द्वारा वह कितने छोटे-छोटे अनआक्रमक प्राणियों के विनाश की मांग कर रहे हैं। कुल मिला कर वह उनसे इसलिए भी घृणा करते थे कि उनके कारण लन्डन का 'Wen' कष्टप्रद हो रहा था, मिड्लसेक्स की कृषीय भूमि को दफना कर बड़े व्यापारियों तथा कर्ज देने वाले सेठों के मकान बनाये जा रहे थे। कोबेट का रुझान चूंकि अपने पुराने जमींदारी देहात की ओर अधिक था उसे यह जड़ विहीन कृत्रिम समाज और असुन्दर मकानों के अम्बार से उत्पन्न होने वाला दृश्य तनिक भी न सुहा सका। लेकिन ऐसे ही नगरों और लोगों से भावी इंगलैंड का सम्बन्ध अधिक था।

ब्राइटन जिसे जॉर्ज चतुर्थ का संरक्षण प्राप्त था और जो पैविलियन के निर्माण के लिये भी मशहूर था, उसका लन्डन से घनिष्ट सम्बन्ध था। कोबेट लिखता है 'इस प्रक्रिया को भी देखिए, ब्रिटेन नगर ससेक्स में समुद्र की ओर लन्डन से पचास मील है और स्टॉक दलालों ने इस स्थान को अनुकूल स्थान मान कर चुना था। यह नगर इस प्रकार बसा हुआ है कि तड़के ही यदि कोई गाड़ी यहां से रवाना न हो तो लन्डन दोपहर तक पहुँचती है—स्टॉक-दलालों के बड़े पार्सल स्त्रियों एवं बच्चों सहित ब्रिटेन में ही रहते हैं। वे गाड़ी में आगे पीछे उछलते रहते हैं और ब्राइटन में ही स्थायी रूप से रहते हुए स्टॉक दलाली को चेंज ऐली में चलाते हैं। (रूरल राइड्स, मई ५, १८२३)।

शताब्दी के प्रथम तीस वर्षों में एवांगेलिकल धर्म के केवल उच्चवर्ग तक ही सीमित न रहकर सभी सामाजिक वर्गों में प्रवेश कर जाने से लोगों की जीवन-प्रणाली तथा विचारों में कई परिवर्तन आए थे, यह आन्दोलन वास्तव में निम्न तबकों से प्रारंभ होकर ऊपर की ओर फैला था। जैसा कि हम देख चुके हैं अठारहवीं शताब्दी के इंगलैंड में मानवतावादी कार्यों, वैयक्तिक आचरण तथा कर्तव्यनिष्ठा से पूरित सक्रिय व्यक्तिवादी प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है, लेकिन उदारतावादी चर्च (एस्टेब्लिश्ड चर्च) पर अथवा सुखी वर्गों के स्वच्छन्द जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ सका था। लेकिन जब इन वर्गों ने अपने अधिकारों तथा सम्पत्ति को

नहर (चैनल) पार की जैकोबिन विचारधाराओं से खतरा उत्पन्न होते देखा तब फ्रेन्च 'आस्तिकवाद तथा नास्तिकवाद' से उत्पन्न प्रतिक्रिया ने भद्र वर्ग में 'गम्भीरता' का वातावरण बनाने में काफी सहायता की। अब धर्म में उदासीनतावाद तथा उदारतावाद को विद्रोही तथा अराष्ट्रीय समझा जाने लगा और परिणामस्वरूप लोगों के आचार-व्यवहार में भी अनर्गलता अथवा मनोविनोद प्रधान जीवन से पाखंड अथवा नेकी की ओर परिवर्तन होने लगा। पारिवारिक प्रार्थनाओं का एक व्यापारी से लेकर देहाती घर के भोजन-कक्ष तक में आयोजन किया जाने लगा। 'रविवासरीय धार्मिक क्रियाओं' का पुनरुत्थान हुआ। सन् १७६८ में 'एनुअल रजिस्टर' के अनुसार 'निम्न श्रेणियों को आश्चर्य ही था कि इंगलैंड के सभी भागों में चर्च के अहाते गाड़ियों से भरे रहते थे। इस नये दृश्य ने देहाती लोगों में यह जानने की उत्सुकता भर दी थी कि आखिर मामला क्या है।'

धर्म के प्रति इस गम्भीर परिवर्तन की पृष्ठभूमि में जैकोबिन विरोधी आतंक के अतिरिक्त और कोई बात नहीं थी, और खतरा टल जाने पर यह प्रवृत्ति भी समाप्त हो सकती थी। लेकिन सन् १८१५ में पुनः शान्ति हो जाने पर भी यह धार्मिक गाम्भीर्य ज्यों का त्यों बना रहा और उसके बाद प्रकट होने वाली उदारतावादी प्रतिक्रिया से इसने समझौता भी कर लिया। विक्टोरियाकालीन भद्र पुरुष और उसका परिवार अपने आचरण एवं व्यवहार में होरेस वालपोल तथा चार्ल्स फॉक्स के समय के अगम्भीर पूर्ववर्तियों की अपेक्षा अधिक धार्मिक तथा अपने विचारों में अधिक शान्त और गम्भीर थे। उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलैंड के सभी वर्गों ने मिलकर उस देश को एक मजबूत प्रोटेस्टेन्ट राष्ट्र बना लिया था; उनमें से अधिकतर धर्म-प्रतिबद्ध थे और कई (जिनमें उपयोगितावादी तथा नास्तिकवादी भी शामिल थे) नैतिकता के प्रति जो कि 'प्योरिटन' स्वभाव का एक गुण तथा दोष दोनों ही था—काफी गम्भीर थे। निर्धारित नैतिक मूल्यों के पालन तथा साथ ही व्यापार में लाभ अर्जित करने की परस्पर विरोधी एवं संकटपूर्ण स्थिति में इस नये युग के लोग जीवन की अन्य सम्भावनाओं को भूल गये थे। इस व्यक्तिवादी व्यावसायिकता और व्यक्तिवादी धर्म ने मिल कर स्वावलम्बी तथा विश्वसनीय लोगों की एक नई श्रेणी को, जो अनेक प्रकार से अच्छे नागरिकों की श्रेणी थी लेकिन अगली पीढ़ी के एक आलोचक ने जिसे 'फिलिस्टीनों' की श्रेणी के नाम से प्रसिद्धि दी थी, जन्म दिया था। कला अथवा सौन्दर्य की न तो मशीनी कारखानों के लिये और न एवांगेलिकल धर्म के लिये ही कोई उपयोगिता थी, अतः उन्हें उत्तरी क्षेत्र के औद्योगिक नगरों के निर्माताओं ने स्त्रैण प्रवृत्तियां मान कर उपेक्षित कर दिया था।

समाज के निम्न वर्गों में फ्रांस के रिपब्लिकन नास्तिकवाद के भय से पिछले किसी युग की अपेक्षा वेस्लेयन आन्दोलन को सन् १७९१ में उसके प्रवर्तक की मृत्यु के बाद

से फैलने में काफी मदद मिली। मेथाडिस्ट चर्चों ने न केवल अपनी सदस्य संख्या सैंकड़ों से हज़ारों तक वढ़ा ली वरन् वैपटिस्ट जैसे पुराने विरोधी सम्प्रदायों में भी मेथाडिस्ट भावना का प्रसार कर दिया। फ्रेन्च-क्रांति के समय प्रीस्टले तथा उपयोगितावादियों की उदारतावादी तथा उग्र विचारधारा अनुदार अथवा कट्टर कहे जाने वाले अन्य वैमत्य प्रधान सम्प्रदायों में भी कुछ अंशों तक प्रवेश कर गई थी। लेकिन इस उदारतावादी प्रभाव को शताव्दी के अन्त में प्रकट होने वाली प्रतिक्रियाओं ने नष्ट कर दिया, और उसके स्थान पर संकीर्ण एवं कठोर एवांगेलिकलवाद का आधिपत्य स्थापित हो गया। इस प्रकार अनेकों विद्रोही सम्प्रदायों ने पुनः शुद्धिकरण की प्रेरणा ग्रहण की और ईसाई धर्म का प्रचार औद्योगिक क्षेत्रों में करना प्रारम्भ कर दिया। यह एक ऐसा कार्य था जिसे करने के लिये उस समय 'एस्टेव्लिश्ड चर्च' के पास न तो कोई उत्साह ही शेष था और न कोई संगठन ही था।

युद्ध की समाप्ति के समय जिस नये विद्रोही प्रभाव का प्रसार हो रहा था वह वास्तव में फ्रांस-विरोधी था और मूलतः अनुदारतावादी था, इसलिये शासनकर्ता-वर्गों ने इसके वढ़ते हुए प्रभाव और वढ़ती हुई सदस्य संख्या को जिस शंकालु दृष्टि से देखा जा सकता था उसकी अपेक्षा कम ही खतरे की स्थिति समझा। रोमन कैथोलिक्स तथा नागरिक समानता के लिये उनके पुर्नधिकार ज्ञापन के प्रति आम अवहेलना ने उस समय के अनुदार (टोरी) उच्चवर्ग तथा नये एवांगेलिकल प्रभाव में आवद्ध विद्रोही सम्प्रदायों के वीच नया सम्वन्ध स्थापित कर दिया जिसके कारण अभिजात वर्गीय ह्विग लोगों को, जिनमें कि अठारहवीं शताव्दी की अभिवृत्तियां शेप थीं, काफी क्षोभ हुआ। लेकिन जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ और जैकोविन विरोधी आतंक शान्त हुआ, असंशोधित और सुविधा सम्पन्न चर्च-एस्टेव्लिशमेंट को कई शक्तिशाली विद्रोही सम्प्रदायों का सामना करना पड़ा। ये सभी विद्रोही सम्प्रदाय धार्मिक भावना से ओतप्रोत थे और अपने सौ वर्ष पुराने पूर्ववर्तियों की भांति न तो अशक्त थे और न केवल सहनशीलता को ही अच्छा समझते थे।

एस्टेव्लिशमेंट तथा असन्तुष्टों (डिसेन्ट) के वीच तथा जैकोविन विरोधियों व उदारतावादियों (लिवरल) के वीच के मतभेदों को एक धार्मिक (एवांगेलिकल) दल वनाकर तथा उसे 'चर्च' में स्थान दिला कर समाप्त कर दिया गया था। इसकी विशेपता अगली पीढ़ी के 'ऑक्सफोर्ड आन्दोलन (मूवमेंट)' की भांति पादरीवाद का पोपण नहीं थी। चर्च के पादरियों में सवसे अधिक कर्मठ निस्सन्देह एवांगेलिकल ही थे लेकिन उनकी प्रवृत्तियां चर्च संस्था की रक्षा से कम तथा मानव सेवा के कार्यों से अधिक सम्वद्ध थीं और साथ ही वे अपने पादरीत्व के अधिकारों के प्रति भी विशेप चिन्ता नहीं करते थे। चार्ल्स साइमन तथा कैंव्रिज के आइजक मिल्नर को छोड़ कर सभी प्रमुख 'सन्त' (सेन्ट्स) (एवांगेलिकल पादरी सामान्यतः 'सन्त' ही कहलाते थे) साधारण जन थे—विल्वर फोर्स स्वयं, वक्स्टन्स तथा क्लैपहम 'सेक्ट' सभी इसी श्रेणी के व्यक्ति थे।

अंग्रेज भद्र पुरुषों में सबसे अधिक शक्तिशाली प्रकार का व्यक्ति, इस नये युग में बहुधा एवांगेलिकल होता था। सेना उन्हें सम्मान की दृष्टि से तथा भारत भय तथा कृतज्ञता की दृष्टि से देखता था। स्टीफेन्स परिवार की भांति परिवारों के मध्य से 'डाउनिंग स्ट्रीट' स्थायी प्रशासन सेवा (सिविल सर्विस) तथा औपनिवेशिक प्रशासन पर शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों में उनका प्रभाव निरन्तर बढ़ता गया।

धार्मिक करुणा की अभिव्यक्ति के रूप में मानवतावादी कार्य उनकी एक प्रमुख विशेषता थी। दास प्रथा के उन्मूलन के लिये वे अपने एवांगेलिकल साथियों, वेस्लेयान तथा अन्य विरोधियों (डिसेन्टर्स) के साथ ही नहीं वरन् स्वतन्त्र चिन्तकों तथा उपयोगितावादियों से भी सहयोग के लिये तत्पर थे। विलबरफोर्स ने खिन्नतापूर्वक यह स्वीकार किया था कि चर्च के पादरियों में उस समय प्रचलित शुष्क तथा उच्च अनुदार दल ने दासता विरोधी आन्दोलन के मार्ग में या तो बाधाएं उत्पन्न की थीं या तटस्थ रहे थे, जबकि विद्रोहियों तथा अनीश्वरवादी सुधारकों ने इस आन्दोलन में अपना पूरा सहयोग दिया। और उसका पक्ष लेते हुए पुराने स्वतन्त्र चिन्तक बेन्थम ने कहा था : 'यदि दासता विरोधी होने का अर्थ 'सन्त' होना है तो मैं सन्त होना स्वीकार करता हूँ।' इन्हीं संयुक्त शक्तियों ने—एवांगेलिकल चर्च, विरोधी (डिसेन्टर) तथा उग्र स्वतन्त्र-चिन्तन—ने मिल कर 'ब्रिटिश' तथा फॉरन स्कूल सोसायटी में गरीबों की शिक्षा के लिये कार्य किया था, और अगली पीढ़ी में शैफ्ट्सबरी के फैक्ट्री कानून में सहायता की थी।

इस प्रकार के परस्पर सम्बन्धों तथा पारम्परिक दल एवं साम्प्रदायिकता के ह्रास का अर्थ यही था कि जन-मानस अधिक सक्रिय तथा स्वाधीन हो चला था। अब कई लोग स्वैच्छिक विषयों पर चिन्तन तथा कार्य कर रहे थे, ह्विग अथवा टोरी अभिजात वर्ग के फायदे के लिये ही केवल भीड़ को प्रभावित करना उन्हें सन्तोषप्रद नहीं मालूम देता था। संगठित जनमत की इस नवीन शक्ति ने सन् १८०७ में, निहित स्वार्थों तथा जैकोबिन-विरोधी प्रतिक्रिया के बीच, 'दास-व्यापार' को समाप्त करवा दिया। इस आन्दोलन को पहली विजय के बाद ही समाप्त नहीं हो जाने दिया गया वरन् सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के गुलामों को स्वाधीन करने का बीड़ा भी उठा लिया गया। सन् १८२० तथा १८३० के बीच इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये फॉवेल बक्सटन ने आन्दोलन का नेतृत्व किया और सन् १८३३ में जिस वर्ष कि विलबरफोर्स की मृत्यु हुई थी, विजय भी प्राप्त की।

इस प्रकार विलबरफोर्स को अपने महत् उद्देश्य की सफलता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। फ्रेंच क्रान्ति के बाद कुछ समय तक राजनीति तथा फैशन के क्षेत्र में अत्यधिक अलोकप्रिय हो जाने पर भी वह अपने महत् मानवतावादी लक्ष्य से नहीं डिगा था।

वह इस उद्देश्य के लिये किसी भी दल, वर्ग अथवा धर्म के लोगों के साथ काम करने को सदैव तैयार रहता था। वह एक बुद्धिमान तथा उत्साही व्यक्ति था और एक आन्दोलनकर्ता के नाते उसे वक्तृत्वशक्ति तथा समाज को सम्मोहित कर लेने की क्षमता भी प्राप्त थी। हमारे द्विदलीय सार्वजनिक जीवन में 'क्रासवेन्च राजनीतिज्ञ' होने का वह एक ज्वलन्त उदाहरण था। यदि उसे किसी पद की इच्छा होती तो जो कुछ उसने किया वह सम्भव न होता। यदि वह मानवता के बदले किसी दल से स्वयं को बांध पाता तो, प्राप्त सम्मान तथा क्षमताओं को देखते हुए, वह आसानी से प्रधान मंत्री के रूप में पिट् का उत्तराधिकारी नियुक्त हो सकता था। इस प्रकार की ख्याति और सत्ता के परित्याग ने उसे स्मरणीय हो पाने का गौरव अवश्य प्रदान किया।

गांव तथा नगर के मध्यवर्ग पर दासता विरोधी आन्दोलन तथा विल्वरफोर्स के नेतृत्व का प्रभाव स्वयं में ही एक अत्यन्त उत्कृष्ट वस्तु थी जिसने विश्व को एक नई देन तथा अंग्रेजों को उनकी सर्वश्रेष्ठ वस्तु दी थी। पूरी एक पीढ़ी तक, दासताविरोधी आन्दोलनों का यह मसीहा यॉर्कशायर के चुनाव क्षेत्र से हर बार चुना जाता रहा था। यदि वह चाहता तो अपने शेष जीवनकाल के लिये भी वह इस चुनाव क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त हो सकता था। उन दिनों सभी मुआफीदारों को मतदान के लिये कैथेड्रल नगर आना पड़ता था। जैसा कि सन् १८०७ के एक पत्र से पता चलता है मतदाताओं से भरी हुई नौकाएं नदी पर (हल से) चली जा रही हैं और सैकड़ों मतदाता पैदल ही यात्रा करते हैं। 'वेन्सले डेल से आये हुए प्रमुखतया मध्यवर्ग के लोगों के एक और वड़े दल को एक समिति के लोग सड़क पर मिलते हैं और पूछते हैं : श्रीमान् आप किस दल से सम्वद्ध हैं ?' दल के नेता का उत्तर था "हम केवल विल्वरफोर्स—व्यक्ति से ही सम्वन्वित हैं।" रविवार को जवकि यार्क मिस्टर का पक्ष मुआफीदारों (जिन्हें लगान नहीं देना पड़ता) से खचाखच भरा था विल्वरफोर्स लिखता है, मुझे उस समय जोसिआ के शासनकाल में, मन्दिर (टेम्पल) में महान् यहूदी-पर्व का स्मरण हो आया।'

विल्वरफोर्स तथा दासता-विरोधी लोगों ने इंगलिश जीवन तथा राजनीति में जनमत को प्रशिक्षित करने तथा भड़काने वाले नये तरीकों का आविष्कार किया था। तथ्यों तथा तर्कों का प्रस्तुतिकरण; वगीचों में काम करने वाले हब्शियों आदि के जीवन को सुखी जीवन वता कर भ्रमित करने वाले विरोधियों को ठीक-ठीक उत्तर देना; चन्दा देना; जन सभाएं करना—ये सभी प्रचार-विधियां यद्यपि आज काफी प्रचलित हो चुकी हैं लेकिन उस समय ये नई तथा अपरिचित थीं। क्वेकर्स के शान्त वल को लम्वी चुप्पी के वाद सक्रिय रूप देकर जन जीवन में उतार कर दलबद्ध राजनीतिज्ञों का ध्यान आकर्पित कर लिया गया था। विल्वरफोर्स की कार्य-प्रणाली का वाद में कई संगठनों तथा समितियों ने अनुकरण किया, जिनमें इंगलिश जीवन के प्रमुख पक्ष—राजनैतिक, धार्मिक, समाज सुधारक तथा सांस्कृतिक सभी सम्मिलित थे। हर तरह के प्रश्न पर जन-आन्दोलन तथा जन-विचार लोगों की आदत वन गये। प्रत्येक प्रकार

के उद्देश्य के लिये ऐच्छिक संघों का निर्माण, उन्नीसवीं शताब्दी के इंगलैंड के सामाजिक जीवन का एक अविच्छिन्न भाग बन गया जिससे राज्य प्रेरित कार्यों के अभाव से उत्पन्न कई शून्य अन्तराल भर दिये गये।

ब्रिटेन का व्यापारिक समुद्री बेड़ा, जिसने शाही नौ सेना के साथ मिलकर बोनापार्ट की महत्वाकांक्षाओं को धूल में मिला दिया था, संसार में अतुलनीय था। जॉर्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०) के समय उसकी कुल वहन-क्षमता बीस लाख पचास हजार टन थी और सन् १८२१ में यद्यपि डोवर और कैलाइस के बीच सवारियों के लिये स्टीमरों का उपयोग होने लगा था जिससे अनुकूल मौसम में यात्रा तीन अथवा चार घंटों में ही पूरी हो जाती थी लेकिन मालवाही जहाज़ हवाओं और पतवारों के सहारे ही चलते थे। समुद्र तथा भूमि दोनों ही पर वाष्प युग का धीरे-धीरे आविर्भाव हो रहा था। लेकिन इन्जीनियरिंग की प्रगति से बन्दरगाहों तथा कार्य-विधियों में पहले ही से पर्याप्त अन्तर आ चुका था। सन् १८०० से १८३० के बीच 'ट्रिनिटी हाउस' ने इंगलैंड के तटों पर प्रकाश-स्तम्भों (लाइट हाउस) तथा तैरते हुए प्रकाश का प्रबन्ध कर दिया था; प्रत्येक नगर में जहां कि जहाज ठहरते थे नौकागारों (डॉक्स) का निर्माण किया जा रहा था। यद्यपि 'पूल' अब भी पुल के समान ऊंचे मस्तूलों से नदी में घिरा हुआ था लेकिन लन्डन में फिर भी नौकागार व्यवस्था का प्रबन्ध तेज़ी से किया जा रहा था। मारगेट तथा ब्राइटन की भांति दर्शकों को समुद्र तट पर अवकाश बिताने के लिये घाटों का निर्माण कर मनोरंजन की भी व्यवस्था की जा रही थी।

ब्रिटेन और अन्य देशों के व्यापार की दृष्टि से थेम्स के मुहाने का महत्व अब भी सर्वाधिक था। 'रिफॉर्म-बिल' के पूर्वदिवस पर देश के चौथाई जहाज़ों का प्रबन्ध तथा पंजीयन, जिनमें ईस्ट इन्डिया कम्पनी के वे जहाज़ भी शामिल थे जो उन्होंने अन्तरीप (केप) का चक्कर लगा कर भारतवर्ष तथा चीन के समुद्र तक पहुंचने के लिये बनाये गये थे, लन्डन में ही होता था; न्यूकासल जहां २०२,००० टन तक का प्रबन्ध था और प्रमुखतया लन्डन को कोयला लाने वाले जहाज़ ही रहते थे दूसरे नम्बर का बन्दरगाह था; मुख्यतः अमरीका से व्यापार करने वाला लिवरपूल बन्दरगाह जहां १६२,००० टन के जहाज़ थे, तीसरी श्रेणी का बन्दरगाह था; और सदरलैंड तथा व्हाइट हैवन, जो प्रमुखतया पूर्वी व पश्चिमी तटों से कोयले का व्यापार करते थे, क्रमशः चौथी और पांचवी श्रेणी के बन्दरगाह थे; हल में ७२,००० टन तक का प्रबन्ध था; और किसी भी अन्य इंगलिश बन्दरगाह में ५०,००० टन से अधिक की व्यवस्था नहीं थी। क्लाइडसाइड में ८४,००० का प्रबन्ध था (क्लैपहम, इक. हिस्ट. मॉडर्न ब्रिटेन, I, पृ० ३-८)।

युद्ध के दिनों में शाही नौसेना के व्यापारी बेड़े तथा मछेरे, व्हेल मारने वाले तथा तस्करों व अन्य सागर-सम्बन्धित लोगों से सम्बन्ध को सर्वाधिक महत्व प्राप्त था।

दोनों के सम्बन्ध काफी अव्यवस्थित तथा जबरन भरती किये गये सैनिकों की उछृंखलता को प्रकट करते थे। शाही सेना में स्थिति इतनी आकर्षक नहीं थी कि लोग स्वेच्छा से भरती होते, इसलिये सैन्य बल बढ़ाने के लिये अनिवार्य सेवा का नियम होना स्वाभाविक था। लेकिन जिस रूप में इस अनिवार्यता अथवा बल का प्रयोग किया जाता था वह निकृष्ट था। लुई XIV के विरुद्ध छेड़े गये युद्ध के समय एड्मिरल की ओर से नाविकों की एक सूची बनाने का प्रस्ताव रखा गया था जिससे कि उचित रूप में जबरन सैनिकों को चुना जा सके लेकिन यह कार्यान्वित न हो सका। सम्पूर्ण अठारहवीं शताब्दी में राज्य की निष्क्रियता इस सन्दर्भ में ठीक ही सिद्ध हुई; नौसेना के साहसी युग में भी इस निष्क्रियता का परिणाम अच्छा हुआ। नेलसन के समय भी जबरन भरती किये गये सैनिकों का आतंक तटों तथा बन्दरगाहों में व्यापक रूप से फैला हुआ था। नाविकों तथा भूमि पर कार्य करने वाले लोगों को बन्दरगाहों में खड़े हुए जहाजों अथवा समुद्र में यात्रा करते हुए पोतों, तड़कों, शरावघरों, और यहां तक कि शादी अथवा भोज के समय चर्च में एकत्रित होते समय जबरन सैनिक बना लेने के लिये शाही अफसरों के नेतृत्व में सैनिक टुकड़ियाँ सजधज कर निकला करती थीं। इससे एक व्यापक अन्याय तथा दुःखपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती थी, परिवार विनष्ट अथवा विखंडित हो जाते थे और अधिकांश अनुपयोगी रंगरूट ही उपलब्ध होते थे।[1]

शाही जहाज पर एक बार पहुँच जाने के बाद सैनिक के पास अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाने के सिवाय और कुछ न था। ठेकेदारों द्वारा दिया जाने वाला भोजन बहुधा अच्छा भोजन नहीं होता था और सरकारी वेतन भी अपर्याप्त था। इस दृष्टि से कुछ सुधार केवल स्पिटहेड तथा सन् १७९७ में 'नोर' की खतरनाक क्रान्तियों के बाद ही हुआ था। उसके बाद ही नाविकों की स्थिति में पीढ़ियों पहले देश के सत्ताधारियों से झगड़ा करने के बाद नौसेना के अफसरों ने अपने जो सुझाव मनवा लिये थे उनके अनुसार सुधार किया गया। नेलसन स्वयं के अपने सैनिकों से सम्बन्ध सौहार्दता के उदाहरण थे। लेकिन यह भी उल्लेखनीय है कि जिन नौसैनिकों ने सेंट विन्सेन्ट, कैम्परडाउन तथा नील में ब्रिटेन को बचाया था, उनमें से अनेक अपने उत्कृष्ट सेवाकाल के मध्यकाल में विद्रोही रह चुके थे। उनकी कठिनाइयों तथा अनुशासनहीनता और कर्मण्यता की परस्पर विरोधी स्थिति अव्याख्येय नजर आती है, लेकिन वास्तव में उसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि इन लोगों को वास्तव में यह विश्वास था कि यद्यपि इन्हें काफी दुर्व्यवहार को सहन करना पड़ा है लेकिन फिर भी राष्ट्र को

---

[1] श्रीमती गैस्केल की 'सिल्वियाज लवर्स' पुस्तक में सन् १८०० के आसपास के ह्विटबाई का चित्रण किया गया है, जिसमें जबरन भरती करने वाली सैनिक टुकड़ियों को कार्य-विधि का ग्रीनलैंड तथा आर्कटिक सागर के ह्वेल पकड़ने वाले अंग्रेजों के संदर्भ में काफी उल्लेख किया गया है।

उन पर गर्व है, नेलसन के नौसैनिकों को देखते ही नागरिकों की दृष्टि में स्नेह तथा गर्व का भाव उमड़ पड़ता था। देश चाहे कितनी ही निर्ममता से उनका उपयोग क्यों न करता हो लेकिन उन्हें अपने रक्षकों के रूप में ही देखता था और वे इसे भली-भांति जानते थे।

जिन नौसैनिक अफसरों से नेलसन अपने साथी चुना करता था वे यद्यपि अब भी कभी-कभी अपनी इच्छा को ही सर्वोपरि समझकर झगड़ा कर बैठते थे लेकिन पुरानों की अपेक्षा वे साधारणतः अधिक सन्तोषजनक थे। स्टुअर्ट के समय नौसेना-संस्था को मटियाली पोशाक वाले निम्नवर्गीय कप्तानों (जिन्हें समुद्र का अच्छा ज्ञान था) तथा जहाजी बेड़े को आदेश देने वाले फैशनपरस्त कुलीनों के पारस्परिक संघर्ष से काफी हानि उठानी पड़ी थीं। यह समय वहुत पहले ही बीत चुका था। अब नौसेना-अधिकारी सामान्य भद्र परिवारों से ही सम्वन्धित थे (नेलसन स्वयं एक निर्धन पिता का पुत्र था) जिन्हें किशोरावस्था में ही समुद्री जीवन व्यतीत करने को भेज दिया गया था, इनमें पूर्ववर्ती निम्नवर्गीय कप्तानों (टारपॉलिन) के व्यावहारिक अनुभवों तथा प्रशिक्षण एवं शिक्षितों के विचारों तथा आचरण का अद्भुत संगम हुआ था। मैन्सफील्ड पार्क में फैनी के भाई विलियम तथा 'परशुएशन' के कप्तान वेन्टवर्थ इस नयी नौसैनिकों की कोटि के अधिकांश आकर्षणों के प्रतीक थे। लेकिन नेलसन तथा कॉलिंगवुड के जहाजी बेड़ों में सभी प्रकार की विचित्रताओं तथा चरित्रों के लोग थे जिनका चित्रण उनमें से ही एक ने कैप्टन मैरियट की अमरकृति पीटर सिम्पल तथा मि. मिडशिप मैन ईजी में किया है।

नैपोलियन से युद्ध के कुछ अन्तिम वर्षों में थोड़े समय के लिये देश में नौसेना की अपेक्षा स्थल सेना अधिक लोकप्रिय हो गई थी। ट्रैफलगर में प्राप्त हुई विजय से 'तूफानों से पिटे हुए जहाज' युद्ध में सम्मुख न आकर पार्श्व में चले गये थे और वहीं से उन्होंने अपना सहयोग दिया था। सन् १८१२ से १८१५ तक गांवों और नगरों में सैनिकों को लेकर जाने वाली सम्मानित गाड़ियों से सालामनाका, विटोरिया अथवा वाटरलू के समाचार मिलते रहते थे और स्थल सेना की लोकप्रियता इससे इतनी बढ़ी कि उसकी तुलना केवल बीसवीं शताब्दी के जर्मन युद्धों में मिली लोक-प्रियता से ही की जा सकती है। वस्तुतः तब एक प्रकार से सम्पूर्ण राष्ट्र ने ही सेना का रूप धर लिया था।

लेकिन वेलिंगटन की नेना के पीछे फ्रान्स की सेना (जिससे युद्ध किया जा रहा था) की भाँति सम्पूर्ण राष्ट्र का समर्थन नहीं था। उसमें निम्न वर्गों से आए सैनिकों—(जिन्हें वेलिंगटन यह मानते हुए भी कि 'हमें उन्हें अच्छे साथियों के रूप में ही देखना चाहिये, वे निस्सन्देह अच्छे लोग हैं,' 'भूमि का दलदल' कहा करता था)—को आदेश देने के लिए कुलीनों को नियुक्त किया जाता था। (स्टेन होप्स कन्वरसेशन्स

विद दि ड्यूक ऑफ़ वेलिंगटन, संस्क. १८८६, पृ० १४, १८)। उन्हें भरती करने के प्रमुख कारणों में बेरोजगारी, शराबखोरी और किसी स्त्री अथवा भूमि-कानून को लेकर उनका झगड़ालू स्वभाव था। ऐसे असंस्कृत लोगों पर नियंत्रण रखने के लिए चावुक का प्रयोग आवश्यक समझा जाता था और इससे सुसंस्कृत तथा आत्मसम्मान युक्त लोग सेना में भरती होने से कतराते थे। प्रायःद्वीपीय-युद्ध (पेनिन्सुलर वार) के प्रारम्भिक वर्षों में वेलिंगटन के सभी प्रयत्नों के बावजूद ब्रिटिश सैनिक लूट मार से बाज नहीं आते थे, लेकिन वे फ्रेन्च सैनिकों की भांति, जिन्हें विजितों को लूटने के लिए नेपोलियन स्वयं उकसाता था, खराब नहीं थे। सन् १८१४ में जब हमारी सेनाएं फ्रांस में पहुँच गई थीं तब वे पूर्ण अनुशासित थीं और उनका आत्मसम्मान तथा यूरोप में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ तथा अपने देश में लोकप्रिय मानना उस खराब सामाजिक व्यवस्था के लिये जिस पर कि ब्रिटिश सेना आधारित थी, एक गौरव की ही बात थी।

नौसेना की अपेक्षा स्थल सेना के अधिकारी अधिकांशतः कुलीन वर्ग से ही सम्बद्ध थे। वेलिंगटन की ही भांति उनमें से अधिकांश घर पर फैशन तथा राजनीति का नेतृत्व करने वाले अभिजात परिवारों के सदस्य थे, वैनिटी फेयर के जार्ज ऑसबर्न की भांति कुछ अन्य ऐसे धनी बुर्जुआ वर्ग के सदस्य थे जो अपने सैनिक पद को धन देकर खरीद सकते थे और कुलीन वंशधरों के साथ घुल मिल सकते थे। ऐसे सैनिक अधिकारियों तथा अधीन-सिपाहियों के बीच एक बहुत बड़ी सामाजिक दूरी थी—फैशनपरस्त तथा मद्यप अधिकारी इस प्रकार के निजी सैनिकों (प्राइवेट सोल्जर्स) की व्यापक उपेक्षा करते थे। सन् १७९३ में जिस समय युद्ध छिड़ा था सेना में फैले भ्रष्टाचार तथा व्यापक अकार्यकुशलता की परीक्षा हुई थी और निम्न-देशों (लो कन्ट्रीज) में किये गये आन्दोलनों द्वारा उनका पर्दाफाश किया गया था। कुछ वर्ष पूर्व ही, जब कि कोवेट को सार्जेन्ट मेजर का सम्मानित पद दिया गया था, उसने देखा कि उसकी रेजीमेन्ट का क्वार्टर मास्टर 'जो सैनिकों के लिए खाद्य सामग्रियां दिया करता था' चौथाई भाग स्वयं अपने लिये बचा कर रख लेता था,' और जब कोवेट ने इस भ्रष्ट आचरण का उद्घाटन करना चाहा तब उसे पता लगा कि यह स्थिति सेना में सभी स्थानों पर विद्यमान है; अधिकारियों के बदले से बचने के लिये, जो कि अपनी कार्य-प्रणाली में ऐसी बाधा को सहन करने के लिये तैयार नहीं थे, उसे अमरीका भाग जाना पड़ा।

जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ता गया, सर राल्फ एबरक्रोम्बी, सर जॉन मूर तथा वेलिंगटन ने धीरे-धीरे इस स्थिति में कुछ सुधार किया; और ब्रिटिश अधिकारी में कर्त्तव्यपरायणता तथा सेना में अनुशासन का संचार हुआ। लेकिन कुप्रबन्धित तथा सुप्रबन्धित दोनों ही प्रकार की रेजीमेन्टों में निजी सैनिकों (प्राइवेट्स) की देखभाल तथा नियंत्रण सेना का आधार माने जाने वाले 'जॉन-कमीशन्ड' अधिकारियों (सारजेन्टों) के

हाथ में सौंप दिया गया था। रेजीमेन्ट स्तरीकरण पर आधारित एक ऐसा समाज था जिसे इंगलिश ग्रामीण जीवन (जहां से कि सैनिक तथा अधिकारीगण आए थे) के सामाजिक विभेदों का जवाब माना जा सकता है। यह देखा गया है कि जब एटन से लाया गया नया प्रशिक्षार्थी देखभाल और प्रशिक्षण के लिये कलर-सारजेन्ट को सौंपा जाता था तब दोनों के सम्बन्ध को देख कर ऐसा ही लगता था जैसे बचपन के दिनों में, जब वृद्ध आखेट रक्षक उसे शिकार के लिये जंगल में ले जाकर शिकार का प्रशिक्षण देता था, तब लगता था।

हमारे इस असैनिक प्रकृति वाले राष्ट्र में सैनिक अधिकारियों में किसी प्रकार की तीव्र व्यावसायिक भावना नहीं थी। यद्यपि आरक्षक दल (गार्ड्स) के कुछ छैल-छबीले जब युद्ध के मैदान में वर्षा से बचने के लिये, जिस प्रकार सेंट जेम्स स्ट्रीट में क्लब के बाहर छाता लगा लिया करते थे, छाता लगाते थे तब ड्यूक उन पर काफी क्रोधित होता था फिर भी ड्यूक से लेकर निम्नपदीय सैनिकों तक में काम से निवृत्त हो जाने के बाद तत्काल असैनिक पोषाक धारण कर लेने की एक आम प्रवृत्ति थी। सैनिक-कर्म को केवल कुछ ही अधिकारी आजीविका का प्रमुख साधन मानते थे; निस्सन्देह यह स्थिति सेवाकाल में कदम-कदम पर अपने पद के लिये चुकाये जाने वाले मूल्य को देखते हुए लाभदायक नहीं थी। वास्तव में यह जीवन में कुछ अनुभव प्राप्त करने; बड़े से बड़े शिकार की अपेक्षा अधिक दुस्साहसी तथा रोमांचकारी आखेट का स्पेन जाकर आनन्द लेने; सर्वश्रेष्ठ समाज में प्रवेश लेने; अपनी युवावस्था के अनुकूल देश की कुछ सेवा करने का ही मार्ग था। प्रायःद्वीपीय (पेनिन्सुलर) युद्ध ने अनेकों अच्छे अंग्रेज अधिकारियों को जन्म दिया था और कई महान सैनिक परम्पराओं का विकास किया था, लेकिन किसी स्थायी प्रकार की अंग्रेजी सैनिक-जाति अथवा सैनिक संगठन का निर्माण कर पाने में वह समर्थ नहीं हुआ। शान्ति स्थापना के बाद अधिकांश सैनिक अधिकारी गांव में अपने पारिवारिक कर्त्तव्य निर्वाह तथा सुख-सुविधाओं का आनन्द उठाने, ग्रामीण पादरियों से भेंट करने अथवा नगर के फैशनपरस्त तथा राजनैतिक जीवन में भाग लेने के इच्छुक हो उठे। इंगलैंड की सेना वास्तव में फ्रांस, स्पेन तथा प्रशा की सेना की भांति असैनिक (नागरिक) सत्ता की प्रतिद्वन्द्वी नहीं थी; कुछ कुलीन लोग ही समय बिताने के लिये आंशिक रूप से राजनीति में भाग लेते थे।[१] दीर्घकालीन युद्ध के कारण दो परिवर्तन घटित हुए थे जो यह दर्शाते थे कि राष्ट्र ने आखिरकार वर्तमान सेना को एक आवश्यक राष्ट्रीय संस्था मान लिया था: सैनिक टुकड़ियों के आवास के लिये बैरकें बनवा दी गई थीं और अस्तव्यस्त रूप में नागरिकों

---

१ लैवेंग्रो के आरम्भिक अध्यायों में, जिसका काफी अच्छा विवरण उपलब्ध है, जार्जबॉरो के पिता, उस अधिकारी के लिये जिनके लिये सैनिक जीवन ही सर्वस्व था और जिसे फैशन से किसी प्रकार का लगाव नहीं था, एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

के मकानों में सैनिकों का रहना समाप्त हो गया था जिससे नागरिक जनता तथा सैनिकों दोनों ही को काफी राहत मिली। इसके साथ ही, ज़िलों की स्थानीय सेना को देश की सुरक्षा पंक्ति नहीं माना जाने लगा—उसका उपयोग प्रशिक्षित जवानों के एक ऐसे अतिरिक्त दल के रूप में किया जाने लगा कि जिससे आवश्यकता पड़ने पर स्थायी सुरक्षा-सेना के लिये सहायता ली जा सकती थी। यह पुराना विचार कि द्वीप का सुरक्षा भार शायर (काउन्टी मंडल) की 'संवैधानिक' सेना को सौंप दिया जाए और यह विचार कि 'वर्तमान सेना' का उपयोग अस्थायी और खतरनाक है, अब सौ वर्ष से भी अधिक पुराना और लगभग समाप्तप्राय हो चुका था।

वाटरलू के बाद, एक छोटी सेना को रखा गया था लेकिन युद्ध की समाप्ति के साथ ही उसकी लोकप्रियता भी समाप्त हो गई थी। यद्यपि उसे अब संविधान के लिये किसी खतरे के रूप में नहीं देखा जाता था, फिर भी आर्थिक मितव्ययिता द्वारा प्रेरित इस नये युग की सेना-विरोधी विचारधारा उसे एक अनावश्यक आर्थिक भार ही समझती थी। फिर नव उदित सुधारकों के प्रभाव के कारण भी उसे एक अभिजात चोंचला माना जाने लगा। वास्तव में स्थिति ऐसी ही थी भी, लेकिन सुधारक लोग उसका प्रजातंत्रीकरण करने अथवा सुधार करने की अपेक्षा उसमें कटौती करना और भूखा रखना अधिक पसन्द करते थे। इस बीच सम्मानित श्रमजीवी वर्ग सेना में नौकरी करना यदि अपमानजनक नहीं तो कम से कम विफल जीवन का द्योतक अवश्य समझने लगे थे। उन्नीसवीं शताब्दी कई पीढ़ियों तक के लिये क्योंकि अधिक सौभाग्यशाली तथा युद्धादि से सुरक्षित सदी सिद्ध हुई थी यह माना जाने लगा था कि जब तक नौसेना पर्याप्त सशक्त एवं दक्ष है स्थल सेना की उपेक्षा की जा सकती है। और चूंकि वह अब भी एक अभिजातवर्गीय संस्था थी, प्रजातन्त्र के विकास के साथ-साथ वह मध्यवर्ग तथा श्रमिक वर्ग में अधिकाधिक अलोकप्रिय होती गई। ब्रिटिश स्वातन्त्र्य के साक्ष्य रूप में यह माना जाने लगा कि अन्य यूरोपीय देशों की भांति यहां सम्पूर्ण राष्ट्र को ही सैनिक शिक्षा देना आवश्यक नहीं माना जाना चाहिये। स्वतन्त्रता की यह नयी एवं विचित्र परिभाषा 'अधिक धन तथा शान्ति से उत्पन्न ग्रन्थि थी।' इस सुरक्षित शताब्दी में यह ग्रन्थि इतने गहरे पैठ चुकी थी कि बीसवीं शताब्दी में पुनः खतरा उत्पन्न होने पर इसे उखाड़ पाना अत्यन्त कठिन सिद्ध हुआ।

स्पेन में वेलिंगटन द्वारा किये गये आक्रमणों के समाचारों को उस राष्ट्रव्यापी उत्साह एवं प्रतीक्षा के साथ नहीं सुना गया जितना कि घुड़दौड़ तथा पुरस्कार जीतने की होड़ के विवरणों को सुना जाता था। सड़कों तथा यातायात के साधनों में सुधार के साथ-साथ, आखेट केवल स्थानीय रुचि का विषय न रह कर उच्च तथा निम्न दोनों ही वर्गों के लिये देशव्यापी रुचि का विषय बन गया। घुड़ दौड़ में यद्यपि स्टुअर्ट काल से ही लोगों की रुचि रही थी और उसे शाही संरक्षण भी प्राप्त होता रहा था लेकिन मुष्टि-युद्ध (मुक्केबाजी) का स्वरूप जार्ज द्वितीय कालीन अविकसित आदिम रूप

न होकर रीजेन्सी कालीन राष्ट्रव्यापी महत्व का विषय हो गया था। जिस प्रकार आज इंगलैंड के प्रजातन्त्र के अच्छे पक्षों का परिचय किसी 'टेस्ट मैच' अथवा 'कप टाई' के समय पूर्ण समानता पर आधारित दर्शकों की भीड़ को देख कर मिलता है—जहां सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेद भाव के एकत्र होते हैं, उसी प्रकार पूर्ववर्ती युग के नानावर्णी सामाजिक ढांचे तथा कठोर तौर तरीकों का परिचय 'अखाड़े' (दि रिंग) को प्रदान किये जाने वाले संरक्षणत्व में मिलता था।

मल्ल युद्ध के लिये तारीख की घोषणा हो जाने पर द्वीप के सभी भागों से गाड़ियों, घोड़ों तथा पैदल यात्रियों के झुंड के झुंड गन्तव्य स्थल के लिये रवाना हो जाते थे। इन दर्शकों की भीड़ कभी-कभी तो बीस हज़ार तक पहुंच जाती थी। एक प्रकार से लोगों का मनोरंजन के लिये यों जमा होना किसी त्यौहार का सा दृश्य उपस्थित करता था। लेकिन इस राष्ट्रीय सम्प्रदाय के पुरोहित अथवा पादरी अभिजात वर्गों के फैशन परस्त सदस्य होते थे, वे ही इन उत्सवों का सभापतित्व करते करते थे और उग्र तथा हिंसक भीड़ पर आतंक द्वारा नियंत्रण बनाए रखते थे। ये सम्मानित तथा फैशनपरस्त लोग ही इन पहलवानों को संरक्षण दिया करते थे। इन हृष्ट-पुष्ट पहलवानों में, जिनका पेशा ही 'यंत्रणा' सहना तथा 'यंत्रणा' देना हो गया था, बदमाशों की अपेक्षा जार्ज द्वितीय के समय में ब्राउटन जैसे 'ब्रिटिश मल्ल युद्ध के पिता' और बाद के कालों में बेल्चर, टॉमक्रिब तथा टॉम स्प्रिंग जैसे सम्मानित तथा भले प्रकार के व्यक्ति अधिक थे। उनके ये अभिजात संरक्षक उन्हें गाड़ी अथवा टमटम में उसे हांकते हुए अखाड़े तक पहुंचाने में गर्व का अनुभव करते थे। इसी प्रकार घुड़ दौड़ के लिये घोड़ों का लालन-पालन भी इन फैशनेबुल लोगों का ही शौक था। वास्तव में इन अभिजातों का संरक्षण मिले बिना इस प्रकार की मनोरंजन सामग्री का आकर्षण निष्प्राण हो जाता और सारा आयोजन थर्टेल जैसे हत्यारों तथा निम्न प्रकार के लोगों के दर्शकों की भीड़ में उपस्थित रहने के कारण एक धोखाधड़ी तथा बर्बरता का केन्द्र बन जाता। जनता द्वारा शर्त में लगाए गये इतने अधिक रुपये को देखकर कुलीन संरक्षकों को बैठने के स्थान तथा अखाड़े का ईमानदारी से संचालन करना एक चुनौती जन्य कठिन कार्य हो जाता था। फैशनेबल जॉकी क्लब के नियमन के बिना घुड़ दौड़ का आयोजन भी इतना बदनाम हो गया होता कि उसका और आगे चल पाना सम्भव न होता। विक्टोरिया के प्रारम्भिक काल में अखाड़ों को इसी दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा, उस समय मिली भगत में लड़ी जाने वाली कुश्तियां तथा जय-विक्रय एक साधारण बात हो गई थी। इन होड़बद्ध कुश्तियों में, नये विकसित होने वाले मानवतावाद तथा उस युग की धार्मिकता के कारण—जो कि दो जानवरों को ही परस्पर लड़ाना जब हेय तथा निषिद्ध समझती थी तब मनुष्यों की तो बात ही क्या, शीघ्रता से ह्रास होने लगा। हाल ही में दस्ताने पहन कर जो कुश्तियां पुनः लड़ी जाने लगी हैं उनका स्वरूप अधिक प्रजातांत्रिक तथा अमरीका व सर्वदेशीयतावाद (कॉज्मोपोलिट-

निज्म) से प्रभावित है। इसमें जार्ज तथा रीजेन्ट जैसे फैशन का नेतृत्व करने वाले लोगों के समय में होने वाली कुश्तियों का रंग नहीं है।[1]

जिस समय मुक्का-द्वन्द्व इतना लोकप्रिय था, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है कि उस समय साधारण नागरिक भी जब परस्पर झगड़ते थे तो किस प्रकार एक दूसरे पर मुक्का तानते होंगे; लैवेन्ग्रो तथा पिकविक पेपर्स के पाठक इससे भली भांति परिचित हैं। निस्सन्देह सन् १८३६ में किकेन्स ने सैमवेलर के रूप में जिस अत्यधिक लोकप्रिय पात्र का चित्रण किया था वह उसे यदि किसी दूसरे व्यक्ति को युद्ध में पछाड़ पाने वाला इतना समर्थ एवं शक्ति सम्पन्न पात्र न बनाता तो शायद ही उसे इतना लोकप्रिय बना पाता।

इस शताब्दी में जैसे-जैसे मानवतावाद, एवांगेलिकलिज्म तथा प्रतिष्ठा की भावना बलवती होती गई और अखाड़ों की भर्त्सना होने लगी, लोगों में परस्पर द्वंद्व करने की प्रवृत्ति भी घटती गई, और यह निस्सन्देह एक सेवा थी। अठारहवीं शताब्दी में द्वंद्व छुरे अथवा कटारों से लड़ा जाता था तथा उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में पिस्तौलों द्वारा लड़ा जाता था। इस युग में जैसे-जैसे अभिजात वर्ग के महत्व में कमी तथा बुर्जुआ वर्ग के महत्व में वृद्धि होने लगी तथा सैनिक की अपेक्षा नागरिक, और उससे

---

[1] कुश्तियों और अखाड़ों के इस स्वर्णकाल के विषय में लॉर्ड एलथ्रोप ने अपनी वृद्धावस्था में एक मित्र से कहा था कि 'मुक्केबाजी के लाभ के प्रति उनका विश्वास इतना अधिक है कि वे इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते रहे हैं कि क्या प्रत्येक कुश्ती में सम्मिलित होना उनका एक सार्वजनिक कर्त्तव्य नहीं है। उनका मत है कि छुरे बाजी की घटनाएं इसलिये घटित होती हैं कि मुक्केबाजी जैसे पुरुष प्रधान स्वभाव को हतोत्साहित किया जा रहा हैं। इन होड़-बद्ध कुश्तियों का प्रत्यक्ष-दर्शी विवरण देते हुए उन्होंने बताया कि एक बार हम्फ्रीज़ ने मैन्डोजा को पांच छः बार लगातार हराया और ऐसा लगता था कि उसकी हार अब निश्चित है लेकिन उसे जब यह मालूम हुआ कि ज्यूज़ ने इसके लिये शर्त बदी है उसने तुरन्त पासा पलट दिया। उन्होंने गुली और चिकन की लड़ाई के बारे में भी काफी कुछ बताया। वह कैसे ब्रिकहिल पहुंचा और सराय के दरवाजे के पास जिस समय खड़ा था कैसे एक सुन्दर टमटम में लॉर्ड बायरन उसका दल और प्रशिक्षक जैक्सन उस समय वहां पहुंचे, और फिर कैसे उन सबने एक साथ भोजन किया; दूसरे दिन कुश्ती हुई—लोग द्वन्द्व पोषाक में एक दूसरे पर आक्रमण करने लगे; जब पहला दौर समाप्त हुआ उस समय लोगों पर यह प्रभाव छूट चुका था कि निस्सन्देह यह होमर की काव्य वस्तु बनने योग्य है, यह सब उसने प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है।

भी अधिक धार्मिक प्रवृत्तियों को बल मिलने लगा, धीरे-धीरे द्वंद्व करने की प्रवृत्ति में भी कमी होती गई। लेकिन वास्तविक परिवर्तन वस्तुतः 'सुधार बिल' (रिफार्म-बिल) के समय ही प्रारम्भ हुआ। वास्तव में इस समय तक बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी अपने विरोधियों अथवा प्रतिस्पर्धियों से द्वंद्व किया करते थे। सन् १८२९ में, तत्कालीन प्रधानमंत्री वेलिंगटन ने, जो कि एक पुराने ढंग के व्यक्ति थे, लार्ड विंचिलसी को बुलाकर पिस्तौल-द्वन्द करना आवश्यक समझा था। पिट ने भी टियर्नी से तथा कैनिंग ने कासलरीग से पिस्तौल-द्वन्द्व किया था; लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल में प्रधानमंत्रियों तथा अन्य भद्र-जनों के इस प्रकार के निम्न स्तरीय कर्म पर, जिससे उनकी प्रतिष्ठा को आघात होता था, जनता के नये नैतिक मूल्यों ने पाबन्दी लगा दी।

शताब्दी के इन आरम्भिक वर्षों में एक लोकप्रिय कला 'रंगीन चित्रों' (कलर्ड प्रिंट) का काफी विकास हुआ। जिस प्रकार से आज हमारी कल्पना पर फोटोग्राफी तथा फिल्म का पर्याप्त शासन है उसी प्रकार से उस युग की सौंदर्य चेतना पर कलर्ड-प्रिन्ट कला का पूर्ण आधिपत्य था। दुकानों की खिड़कियां राजनैतिक स्थितियों तथा व्यक्तियों से सम्बन्धित रंगीन-व्यंग्य-चित्रों (कार्टून्स) से भरी होती थीं, ये चित्र रोलैन्डसन के सशक्त सामाजिक कथानकों तथा गिलैरी की प्रतिभा से ओतप्रोत थे। अन्य लोकप्रिय चित्र-कथानक, पारम्परिक वीरत्व प्रदर्शन करने वाले, प्राय:द्वीपीय युद्ध तथा यूरोप की युद्ध-घटनाओं, जिनमें रूस की बर्फ में जमे हुए फ्रांसीसी सिपाही अथवा दुश्मन से लड़ते हुए हमारे जहाजी बेड़े को दिखाया गया था, से सम्बन्धित थे। शान्त रंगों में एकरमैन के सुन्दर चित्र ऑक्सफोर्ड तथा कैंब्रिज महाविद्यालयों के पारिवारिक गौरव को दर्शाते थे। लेकिन, इस सबके अतिरिक्त ये चित्र भारत तथा अफ्रीका के जंगलों में किये जाने वाले शिकार मैदानी शिकार तथा घर से बाहर के दैनिक जीवन का ही दिग्दर्शन अधिक कराते हैं। हमारी पीढ़ी को पिछले युग का ज्ञान कराने में ये चित्र, जिन्हें सुरक्षित रखा गया है और जिनकी प्रतिलिपियां भी तैयार की जाती हैं, काफी सहायक हैं। इन चित्रों द्वारा सराय के अहाते में टमटम की सवारी (जिसमें मोटा युवक चालक के पीछे वाली सम्मानित गद्दी पर और भारी भरकम मध्य-आयु वाला व्यापारी उससे पीछे तथा लाल कोट धारी रक्षक सबके पीछे बैठता था) के रवाना होने पर बरामदों में दर्शकों की जो भीड़-भाड़ हो जाया करती थी उसे देखने के लिये इकट्ठी हो जाती थी, उससे हम अब भी परिचित हैं। फिर खुली सड़क पर उससे होड़ लगाने का प्रयत्न, कुत्ता गाड़ियों की आपसी होड़ तथा उस टमटम से मैकाडैम की साफ सतह पर लगने वाली दौड़ और बर्फ अथवा बाढ़ में यात्रियों के घिर जाने पर साहस की अनुभूति होना—ये सब इन चित्रों में सुरक्षित हैं। फिर खेत के किसी भाग में छिपे हुए तीतर का कुत्तों की सहायता से शिकार करते हुए शिकारी, झाड़ी से जंगली मुर्गों को खदेड़ कर निकालते हुए कुत्ते, परिश्रमी शिकारियों द्वारा बर्फ में बतख अथवा हंस की खोज—ये सभी इन चित्रों में थे।

उन दिनों का शिकार केवल विलास की ही वस्तु नहीं थी। कठोर परिश्रम तथा स्पार्टावासियों की सी आदतों का होना शिकार के लिये एक आवश्यक शर्त थी। शिकार के प्रति यह आकर्षण नेताओं को घर से वाहर जनता के वीच आ सकने की सामर्थ्य प्रदान करता था और द्वंद्व से लेकर काव्य तक के क्षेत्र में जो लोग प्रतिमानों का निर्धारण करते थे उन्हें जंगलों, झाड़ियों और वंजरों, तथा फैशन का नेतृत्व करने वाले लोगों से पृथक् शहरी जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षित कर उनका यह प्रकृति प्रेम उन्हें सृजन प्रेरणाएं देता था।

इस प्रकार से, अप्रत्यक्ष रूप से शिकार के प्रति इस आकर्षण ने सभ्यता को उत्कृष्ट देन दी है। लेकिन दुर्भाग्य से यह युद्ध वढ़ाने तथा पड़ोसियों के वीच अमैत्री भाव वढ़ाने के लिये भी उत्तरदायी रहा है। लेकिन शिकार से सम्वन्धित कानून केवल कुछ अभिजातवर्गीय लोगों को छोड़कर अन्य लोगों को सुविधाएं नहीं देता था। इस कानून के अनुसार, किसी भी व्यक्ति के लिये आखेट का क्रय-विक्रय कानून-विरुद्ध था और इसका परिणाम यह हुआ कि पेशेवर शिकारियों की कीमतें काफी वढ़ गईं, और किसी भी व्यक्ति के लिये, जो यदि स्वयं जमींदार अथवा जमींदार का ज्येष्ठ पुत्र नहीं है शिकारगाह के मालिक द्वारा आमन्त्रित किये जाने पर भी शिकार खेलना नियम विरुद्ध मान लिया गया। इस असुविधाजनक कानून से निस्संदेह 'डेप्यूटेशन' प्रक्रिया द्वारा त्राण प्राप्त हो सकता था। और सन् १८३१ में, ड्यूक ऑफ़ वेलिंगटन के विरोध के वावजूद ह्विग विधायकों ने इस कानून को समाप्त कर दिया। ड्यूक ऑफ़ वेलिंगटन इस कानून का पक्ष इसलिये लेता था क्योंकि उसे विश्वास था कि सिर्फ इन कानूनी प्रतिवन्धों द्वारा ही आखेट को देहातों तक सीमित रखा जा सकता है। उसका यह विचार ठीक उसी प्रकार का था कि सड़ांधभरा आरक्षित नगर ही भद्र लोगों को राजनीति में ला पाने का एक उपाय है। वास्तविक स्थितियों ने यह सिद्ध कर दिया कि दोनों ही दशाओं में उसका यह विचार निराशावादी था। लेकिन सन् १८१६ के नये कानून के अनुसार यदि कोई निर्धन व्यक्ति अपने परिवार के लिये खरगोश पकड़ने जाता और रात्रि को यदि उसे जाल लिये देख लिया जाता तो उसे सात वर्ष के लिये जेल की सजा दी जा सकती थी। वे गुंडे निस्संदेह कम सहानुभूति के पात्र थे जो दलवद्ध होकर शहर से आखेट स्थलों में घुस आते थे और विरोध करने वाले किसी भद्र व्यक्ति अथवा रखवाले पर अपनी वन्दूकें तान देते थे। इस प्रकार की छुटपुट लड़ाइयां एक आम वात हो गई थी।

इसका सवसे खराव पक्ष जंगली मुर्गों की सुरक्षित निधि से सम्वन्धित है; मुर्गों की रक्षा के लिये कुछ वन्दूक धारी जंगल में छिपे रहते थे और भोले-भाले घुमक्कड़ों के साथ ही कुछ दूसरे रक्षकों को भी अपना निशाना वना डालते थे। जव तक कि संसद ने सन् १८२७ में इस क्रिया को गैरकानूनी नहीं करार दिया अंग्रेज जज इस कुख्यात प्रथा को कानूनी मान्यता प्रदान करते रहे। मानवतावादी विचारधारा ने उन लोगों का भी पक्ष लेना प्रारम्भ कर दिया था जिनके विरुद्ध कि आखेट-कानूनों को लेकर उसने

संघर्ष में विजय प्राप्त की थी। जैसे-जैसे ये कानून उदार होते गये और उनको ठीक से कार्यान्वित किया जाने लगा, आखेट-पशुओं की रक्षा एक अपेक्षाकृत सहज कार्य हो गया और उसमें बदनामी की आशंका भी कम हो गई।

उन्नीसवीं शताब्दी की गति के साथ-साथ जैसे-जैसे कोबिन-विरोधी भावना घटती गई, मानवतावादी विचारधारा को एक के बाद एक क्षेत्र पर विजय मिलती गई; आक्रोश के साथ-साथ अतीत का क्रूर स्वभाव भी शान्त होता गया और सहृदयता की प्रधानता जो कभी-कभी भावुकता की सीमाओं को भी स्पर्श करने लगती थी, बढ़ती गई। इस लोकप्रिय भावना वाले नवीन युग की दुर्बलताओं तथा शक्तियों का प्रतिनिधित्व चार्ल्स डिकन्स कर रहे थे, उनका विकास लन्डन की गलियों में पनपने वाली कठोर स्कूली शिक्षा द्वारा हुआ था। इस दशक में कई अपराधों के लिये दिये जाने वाले मृत्युदंड प्रधान विधान में 'ज्यूरीज' के आग्रह से—जो मृत्युदंड वाले अपराधों के लिये अपराधियों को पकड़ने तक से मना कर देते थे—संशोधन किया जा रहा था। एल्डन का युग समाप्त हो रहा था तथा बेन्थम व ब्राउथम का युग प्रारम्भ हो रहा था। हब्शियों को दास बना कर रखने की प्रथा के विरुद्ध चल रहे आन्दोलन ने लोगों के हृदय में एक अपूर्व उत्साह भर दिया था।

भावनाओं में प्रकट होने वाला यह अन्तर पिछले सभी युगों की तुलना में एक महत्व-पूर्ण सुधार था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जीवन के सभी पक्षों में, और विशेषकर बच्चों से किये जाने वाले व्यवहार में, मानवतावादी प्रभाव स्पष्ट अधिक हो गया था। वास्तव में जिस यांत्रिक उत्थान पर उन्नीसवीं शताब्दी गर्व करती है उसकी अपेक्षा मानवतावाद की प्रगति उसके लिये अधिक गौरव प्रद है, क्योंकि गलत हाथों द्वारा मशीनों का प्रयोग मानवता को ही समाप्त कर सकता है।

अध्याय १७

दो सुधार बिलों के बीच का काल (१८३२-१८६७)

हम चाहें तो सन् १८३२ के ग्रेट रिफार्म बिल तथा उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त के बीच की अवधि को 'विक्टोरिया युग' के नाम से पुकार सकते हैं, लेकिन वास्तव में इस काल में आर्थिक परिस्थितियों, सामाजिक प्रथाओं तथा बौद्धिक वातावरण में इतने तीव्र परिवर्तन घटित हुए थे कि हमें केवल इसलिये ही कि इस अवधि के साठ से अधिक वर्षों तक एक ही महारानी (१८३७-१९०१) का शासन रहा था, इन वर्षों को एक समान नहीं समझ लेना चाहिए। यदि इंगलैंड के विक्टोरिया युग को वास्तविक एकत्व देना हो तो वह दो शासनात्मक स्थितियों में मिल सकता है : प्रथम, उस समय कोई भी महायुद्ध नहीं चल रहा था और किसी भी प्रकार की बाहरी विपत्ति की आशंका नहीं थी, और दूसरे, इस सम्पूर्ण काल में प्यूरिटन वातावरण के कारण गम्भीर धार्मिक चिन्तन तथा आत्म संयम की प्रधानता थी। इस धार्मिक गम्भीरता ने उन विरोधियों को भी प्रभावित किया जिन्होंने पिछले युग की अन्तिम अवस्था में केवल नैतिकता को ही नहीं वरन् ईसाई धर्म के मूल विश्वासों के आगे भी वैज्ञानिक खोजों तथा डार्विनवाद से प्रभावित होकर प्रश्न चिन्ह लगाए थे। फिर इन नये विचारों से प्रभावित एवांगेलिकलों द्वारा प्रारम्भ किये गये 'हाई चर्च' आन्दोलन को भी प्यूरिटन-वादी संस्कार विरासत में मिले थे। इसी कोटि के एक एंग्लो-कैथोलिक मि. ग्लैडस्टोन ने अपने वैमत्य प्रधान (नॉन-कनफर्मिस्ट) अनुयायियों को काफी प्रभावित किया, इसका प्रमुख कारण यह था कि वक्ता तथा श्रोता दोनों ही जीवन को (जिसमें राजनीति तथा विदेश नीति दोनों ही सम्मिलित थे) व्यक्तिगत धर्म का ही भाग मानते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के इन अन्तिम सत्तर वर्षों के काल में, राज्य समान रूप से इस विपुल जनसंख्या वाले द्वीप की नयी औद्योगिक स्थितियों के अनुरूप नये-नये कार्यों को अपनाता जा रहा था। लेकिन विक्टोरिया-युग की वास्तविक शक्ति तथा अच्छाई इन परिस्थितियों के महत्वपूर्ण होने पर भी उनमें कम, तथा प्यूरिटन परम्पराओं—जिन्हें वेस्लेयन तथा एवांगेलिकल आन्दोलनों ने पुनर्शक्ति प्रदान की थी—द्वारा व्यक्ति के चरित्र में जिस आत्मानुशासन तथा आत्मविश्वास का आविर्भाव हुआ था उसमें अधिक थी। सभी वर्गों के प्रमुख लोगों में 'स्वावलम्बन' एक अत्यन्त प्रिय आदर्श बन गया था। बीसवीं शताब्दी में आत्मानुशासन तथा आत्मविश्वास अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं और साथ ही पुरानी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता अथवा विश्वासों का स्थान राज्य के हस्तक्षेप अथवा कार्यों द्वारा सामाजिक मुक्ति की अर्ध-धार्मिक मांग ने ले लिया है। निस्संदेह

विज्ञान ने पुरानी धार्मिक मान्यताओं की उपेक्षा कर दी है लेकिन वास्तव में अब भी इंगलैंड की सशक्तता एवं दुर्बलता को बिना धार्मिक इतिहास का सहारा लिये समझ पाना अत्यन्त कठिन है। दो जर्मन युद्धों (१९१९-१९३९) के बीच के बीस वर्षों में यद्यपि नैतिकता विषयक मान्यताओं का व्यक्ति के चरित्र पर उतना प्रभाव नहीं रहा था लेकिन विक्टोरिया कालीन धार्मिक मान्यताओं के उत्तराधिकारी अब भी विदेश नीतियों तथा नि.शस्त्रीकरण को लेकर उन देशों की वास्तविकताओं के प्रसंग में भी, जो कि कभी प्यूरिटन नहीं रहे तथा नीति को जिन्होंने नैतिकता के प्रश्न से सदैव पृथक् कर देखा था, धार्मिक नियंत्रण की मांग करते थे।

नैपोलियन के युद्धों के समय तथा उनकी समाप्ति पर जो शान्ति स्थापित हुई उस काल में एवांगेलिकल पादरी वर्ग 'चर्च एस्टेब्लिशमेंट' का एक महत्वपूर्ण भाग बन गया, और अन्य भागों में जिसकी कमी थी उसमें उन्होंने एक नवीन शक्ति तथा उत्साह का संचार किया। चार्ल्स साइमन, जो राजा का साथी था और होली ट्रिनिटी कॉलेज कैंब्रिज का मिनिस्टर था, की सेवाओं (१७५९-१८३६) ने एवांगेलिकलवाद को चर्च अनुशासन के अनुकूल बनाने में काफी मदद की। यदि साइमन न होता तो एवांगेलिकल पादरी वर्ग चर्च की व्यवस्था तथा पैरिश व्यवस्था का उल्लंघन कर देता और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये वेस्ले का अनुसरण करते हुए घुम्मड़ों का एक सम्प्रदाय गठित कर विरोधियों के खेमें में ढ़ल जाता। यदि यह आन्दोलन इस नयी शताब्दी में भी चलता रहता तो इंगलैंड का चर्च सम्भवतया १८३० के लगभग 'सुधार' की आंधी में गिर गया होता। लेकिन साइमनवादी पादरियों ने विरोधियों (डिसेन्टर्स) से मित्रता होते हुए भी चर्च की रक्षा की और उसके आत्मोन्नति वाले पक्ष के पुनःस्थापन में काफी सहायता की।[1]

एवांगेलिकल्स को छोड़कर रीजेन्सी के अधीन जो चर्च था उसका स्वरूप जार्ज तृतीय के प्रारम्भिक वर्षों के समय के चर्च जैसा ही था, अन्तर केवल इतना था कि उसका धार्मिक-उदारतावादी पक्ष साइमनवादी प्रभावों के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की आत्मजागृति से सम्बन्धित नहीं था और जैकोबिनविरोधी कट्टरता में ढल गया था। अठारहवीं शताब्दी की ही भांति अब भी एस्टेब्लिशमेंट के पादरी गण अमीर तथा ग़रीब वर्गों में बंटे हुए थे। बिशप, कैथेड्रल के पादरी लोग सुविधा सम्पन्न वर्ग के लोग थे, उन्हें यह स्थान चर्च के लिए कुछ कार्य करने के पुरस्कार स्वरूप नहीं वरन् पारिवारिक पक्षपात अथवा आभिजात्य-सम्बन्धों के कारण मिला था। पैरिश-क्षेत्र में बहुधा कम वेतन-प्राप्त ग़रीब उप-पादरी बेमन से काम किया करते थे। इस क्षेत्र

---

[1] साइमन एंड चर्च आर्डर, कैनन चार्ल्स स्मिथस वर्कवेक लेक्चर्स, कैम्ब० प्रेस, १९४०।

में न तो कुलीन लोग ही कभी आते थे और न उन्हें लेडी कैथेरीन डि वॉर द्वारा ही किसी प्रकार की मान्यता प्राप्त थी। यह सब अठाहरवीं शताब्दी के लिये, जबकि किसी चर्च अथवा राज्य में किसी पद को जनहित की दृष्टि से नहीं भरा जाकर केवल पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया जाता था, काफी सुविधाजनक था। लेकिन इस नये सुधारवादी युग में जनमत यह मांग करने लगा कि जिस पद के लिये व्यक्ति को वेतन मिलता है उसके लिये उसे कुछ काम भी करना चाहिये। गन्दगीयुक्त नगर (रॉट्न वॉरो) से लेकर चर्च में चढ़ाये जाने वाले भोग तक, प्रत्येक संस्था में कठोर वेन्थेमाइट जांच-पड़ताल का पूरा दखल था 'इसकी क्या आवश्यकता थी ?'

फिर एस्टेब्लिशमेंट के पादरी इस कारण अलोकप्रिय भी थे कि अन्य किसी भी वर्ग अथवा व्यवसाय की अपेक्षा वे 'हाई टोरी' दल से उसके पतन के समय भी सम्बद्ध रहे। विरोधी (नॉन-कनफर्मिस्ट्स) तथा स्वतन्त्र विचारों वाले भयानक रैडिकल लोग यद्यपि एक दूसरे को परस्पर नहीं चाहते थे लेकिन धार्मिक सुविधा-सम्पन्न वर्गों के प्रति विशेष पक्षपात का विरोध करने के लिये वे परस्पर संगठित हो गये थे। सन् १८२६ में कैंब्रिज के जॉन स्टर्लिंग जैसे युवा विद्वानों ने प्रत्येक गांव के पादरी को अत्यन्त क्रूर व्यक्ति की संज्ञा दी थी जिन्हें सुधार-विरोधियों तथा निरंकुशता की सत्ता के लिये युद्ध करने को वहां रखा गया था।

गांव के सुसम्बन्वित निरंकुश-व्यक्ति का एक और उपयुक्त विवरण डीन चर्च से उद्धृत किया जा सकता है (दि ऑक्सफोर्ड मूवमेंट, पृ० ४, १०)।

'जिन दिनों संचार (कम्यूनिकेशन) अत्यन्त कठिन तथा अनियमित था, उसने इंगलैंड के देहाती जीवन के जिस स्थान की पूर्ति की थी वह और कोई भी नहीं कर सका था। अपने पैरिश का वह पिता, शासक, डॉक्टर, वकील, मजिस्ट्रेट, शिक्षक सभी कुछ था और कोई भी उसके आगे कुकर्म तथा विद्रोह करने का साहस नहीं कर सकता था। यद्यपि पादरी की भूमिका को पूर्णतया उपेक्षित नहीं कर दिया गया था—लेकिन उसे धुंधला देने से कुछ लाभ भी अवश्य हुआ था।'

डीन चर्च ने गांव के ऐसे वर्दीधारी भद्र लोगों की भी चर्चा की है जो शिकारी कुत्तों और बन्दूकों के साथ शिकार खेलते, नृत्य करते, खेती करते थे और कुकर्म किया करते थे उसने उन बहुवादियों (प्लूरलिस्ट्स) का भी उल्लेख किया है जो 'चर्च से बाहर केवल अपने भाग्य निर्माण तथा परिवारों को सम्पन्न बनाने में ही जुटे रहते थे।'

ऐसी दशा में इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि रैडीकल प्रेस; व्यंग्य लेखों, लेखों तथा रेखा चित्रों द्वारा एंग्लिकन पादरियों पर जिस भयानक रूप में आक्रमण करता था वैसा लांग पार्लियामेंट के दिनों को छोड़कर और कभी नहीं हुआ था। सन् १८३१ में जब हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स में 'स्प्रीचुअल पियर्स' ने 'रिफार्मबिल' के पक्ष में दो

के विरुद्ध इक्कीस मत दिये तब उनकी अलोकप्रियता शीर्ष पर पहुंच चुकी थी। उसी वर्ष शीतकाल में सुधारवादियों की भीड़ ने बिशप लोगों के महलों को जलाने और गाड़ियों पर पत्थर फेंकने में काफी मज़ा लिया।

घबराये हुए चर्च के पादरियों तथा उनके प्रफुल्लित शत्रुओं दोनों ही ने यह मान लिया था कि सन् १८३३ की संशोधित संसद का पहला काम, इसके पूर्व कि चर्च को उखाड़ दिया जाए, विरोधियों (डिसेन्टर्स) को स्वीकृत शिकायतों को दूर करना होगा। टोरी साउदे ने लिखा है कि 'कोई भी मानवीय साधन एस्टेब्लिशमेंट को पतन के खतरे से नहीं टाल सकते।' लिबरल कन्जरवेटिव (उदार-अनुदारतावादी) रगवी के डा. एरनॉल्ड ने लिखा है कि 'आज जो चर्च की स्थिति है उसे देखते हुए कोई भी मानवीय शक्ति उसे नहीं बचा सकती।' लेकिन तब से एक शताब्दी बीत गई है और केवल आयरिश तथा वेलस क्षेत्रों में असामान्य वृद्धि को छोड़कर एस्टेब्लिशमेंट अपनी आय-सम्पत्ति तथा राज्य से उसके सम्बन्धों को उसी प्रकार बनाए हुए है और इसके लिये उसे किसी प्रकार के विरोध का भी सामना नहीं करना पड़ता। विरोधियों (डिसेन्टर्स) की प्रकट कठिनाइयां भी रिफार्म-बिल के पास हो जाने पर दस वर्षो के भीतर ही तुरन्त दूर हो जाने की अपेक्षा पचास वर्षों तक उसी प्रकार बनी रहीं।

धार्मिक क्रान्ति की आशंका को दूर कर दिया गया और चर्च की अलोकप्रियता के प्रमुख कारणों को मैत्री एवं शान्तिपूर्ण ढंग से दूर कर दिया गया। संसद ने पादरियों में असमान धन वितरण की प्रक्रिया में काफी सुधार कर दिया था और अब पादरी धार्मिक कार्यों की ओर पुनः लौटने लगे थे जिसके कारण साधारण लोगों ने भी चर्च का पक्ष लेना तथा उसकी स्थानीय गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था।

चर्च के सुधार के लिये संसद द्वारा निर्धारित कार्यों को अनुदारवादी नेता पील ने ह्विग राजनीतिज्ञ के सहयोग से पूरा किया। नये ऑक्सफोर्ड आन्दोलन से सम्बद्ध लोगों ने चर्च की आय में राजकीय हस्तक्षेप का विरोध किया था लेकिन इस कार्य के लिये और कोई दूसरी व्यवस्था भी नहीं थी, फिर ब्लोमफील्ड जैसे एपिस्कोपल बेन्च के बुद्धिमान सदस्यों ने एक्लेसियास्टिकल कमीशन तथा उसके सुझाव पर सन् १८३६ तथा १८४० में बनने वाले संसदीय अधिनियमों (एक्ट्स ऑफ़ पार्लियामेंट) विषयक कार्यों में ह्विग तथा टोरी राजनीतिज्ञों के साथ सहयोग भी किया था।

इन अधिनियमों ने चर्च-सम्पत्ति के वितरण के दोषों को दूर कर दिया, और आंशिक रूप में ग़रीब तथा अमीर पादरियों के विभेदों को भी समाप्त कर दिया लेकिन जैसा कि ट्रोलोप के उपन्यासों के पाठकों को भलीभांति याद होगा ये विभेद पूर्णतया समाप्त नहीं हो सके थे। बहु-अधिकारवाद को कानून समाप्त कर दिया गया,

पादरियों को एक से अधिक चर्च अथवा एक से अधिक सम्पत्ति में हिस्सा बंटाने से वंचित कर दिया गया। कैथेड्रल के पादरी संख्या तथा सम्पत्ति दोनों ही में कम हो गये। इस प्रकार प्रति वर्ष तीस हजार एक सौ पौंड की बचत हुई जिसे ग़रीब पादरियों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने में खर्च कर दिया गया। बिशप-क्षेत्र (डायोसीस) की सीमाओं में परिवर्तन कर दिया गया और उत्तर के नवीन औद्योगिक क्षेत्र की जनसंख्या को प्रभावित करने के लिये मैनचेस्टर तथा राइपन में नये बिशप-क्षेत्रों की स्थापना की गई। एपिस्कोपल राजस्व की असमानताओं को समाप्त करने के प्रयत्न किये गये तथा बड़ी आयों को लघु आय कर दिया गया।

इन सुधारों के परिणामस्वरूप अब चर्च को पुराने भ्रष्टाचार का सहभागी नहीं माना जाने लगा। तीक्ष्ण व्यंग्य करने वाले कार्टून अब बिशप, डीन तथा प्रेस्बिटेरीज़ को ग़रीबों का शोषण करने वाले मोटे तथा सांसारिक मानवीय आकार में चित्रित नहीं करते थे।

अब चर्च ने युग की आत्मा से प्रेरणा ग्रहण कर पैरिश व्यवस्था के मध्ययुगीन भूगोल के साथ अपने रचनात्मक कार्यों को और जोड़ लिया था। नये पैरिशों तथा औद्योगिक क्षेत्रों में गिरजों की तब तक स्थापना होती रही जब तक कि धर्म विरोधियों (नॉन-कनफर्मिस्ट) की गतिविधियों के आगे उन्हें झुक न जाना पड़ा। बिशप ब्लोमफील्ड ने बाहरी लन्डन में गिरजों के निर्माण के लिये काफी धन एकत्र किया, वास्तव में उस समय राजकीय कोष से चर्च निर्माण का कार्य स्थगित हो गया था। टोरियों की संसद ने ऐन्नी के शासनकाल में चर्च निर्माण के लिये कर लगाना स्वीकार कर लिया था और वाटरलू के बाद पुनः कर लगने लगा था। लेकिन सन् १८३२ के बाद से कोई भी सरकार कर दाता को किसी ऐसे कार्य के लिये कर देने को बाध्य न कर सकी थी।

नये चर्च-निर्माण की तो बात ही क्या विद्यमान चर्चों की रक्षा के लिये भी पैरिशवासियों को चर्च-कर (चर्च-रेट) देने के लिये बाध्य करना अत्यन्त कठिन था और यह स्थिति अगली पीढ़ी तक तब तक चलती रही जब तक कि उसे जहां-जहां विद्रोहियों (डिसेन्टर्स) का प्रभाव था—विशेष रूप से उत्तर के औद्योगिक क्षेत्रों में—वहां तीव्र विरोध का सामना न करना पड़ा। रोचडेल में, सन् १८४० में जब इस बात के लिये मत गणना की गई थी कि चर्च-कर वसूल किया जाय अथवा नहीं लोग इतने उत्तेजित हो गये थे कि व्यवस्था बनाए रखने के लिये संगीन धारी सेना को तैनात करना पड़ा था।

तब से, विकास कार्यों तथा नये निर्माण कार्यों के लिये जिस प्रकार स्वतन्त्र गिरजे (फ्री चर्चेज) सदा से करते आ रहे थे उसी प्रकार 'चर्च को भी धन एकत्ररनेक के लिये ऐच्छिक-अनुदानों का आश्रय लेना पड़ा था और एंग्लिकन स्कूल तो, जो उस समय

समूचे देश की प्राथमिक शिक्षा का प्रमुख भाग थे, ऐच्छिक अनुदानों पर लगभग पूरी तरह निर्भर करते थे।

ह्विग सरकार ने भी चर्च द्वारा वस्तु रूप में लिये जाने वाले कर की अत्यन्त अलोकप्रिय प्रणाली को जो पुरातन काल से विद्रोहियों (डिसेन्टर्स) की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण कृषक समुदाय के रोष का पात्र थी, समाप्त कर दिया था और इससे चर्च की अलोकप्रियता में ही कमी हुई थी। फसल के समय गाया जाने वाला यह गीत—

'हमने पादरी को ठगा था
अच्छा ही किया,
अब फिर ठगेंगे—
कि 'विकार को क्या
अधिकार है कि वह हमारी फसल
का दसवां भाग ले ले ?'

एंग्लो-सैक्सन इंगलैंड जितनी प्राचीन भावना को ही अभिव्यक्त करता है। वस्तु-कर (टिदे) लगानदार कृषक से बहुधा वस्तु (फसल) रूप में लिया जाता था : शूकर शावकों में से दसवां बच्चा पादरी का भोजन बन जाता था और फसल का दसवां भाग भी उसके खलिहान में पहुंचा दिया जाता था। सुधार (रिफार्मेशन) के काफी पहले तक आपसी कटुता और वैमनस्य का यह प्रमुख कारण था। कवि चॉसर ने उस अच्छे पादरी की काफी प्रशंसा की है जो लोगों पर वस्तु-कर (टिदे) नहीं लादता था।

सन् १८३६ के 'टिदे कम्यूटेशन अधिनियम' ने इस प्राचीन शिकायत को हल कर डाला था। इस कानून ने वस्तु रूप में कर उगाहने की प्रणाली को समाप्त कर दिया था। अब यह कर भूमिकर में परिवर्तित हो गया था। सन् १८९१ में यह कर लगान के रूप में लिये जाने वाले अप्रत्यक्ष कर को छोड़कर लगानदार किसान की अपेक्षा भू-स्वामी से ही वसूल किया जाता था और इस प्रकार लगान देने वाला किसान इसके सीधे रूप में प्रभावित नहीं होता था। ज़मींदार लोग जो सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में पादरियों से सम्बन्धित थे यह कर चुकाने में उनका उस तीव्रता से विरोध नहीं करते थे जितना कि उनके लगान देने वाले आसामी किसान किया करते थे। कम्यूटेशन अधिनियमों के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में निस्संदेह शान्ति स्थापित हो गई थी। केवल हमारे समय में ही सन् १९१८ के बाद, जब बहुत से किसानों ने खुद ज़मीन खरीद ली और स्वयं भू-स्वामी बन गये और उन पर चर्च का कर लगाया जाने लगा तब नया आन्दोलन शुरू हुआ, जिसके फलस्वरूप चर्च के विकास को गौण मान कर उन्हें नई राहत दी गई।

दूसरी शिकायत सन् १८३६ के विवाह कानून द्वारा दूर हो गई। सन् १७५३ के लॉर्ड हार्डविक्स मैरिज एक्ट के अनुसार इंगलैंड के चर्च के पादरी को छोड़कर और

कोई भी पादरी किसी का विवाह सम्पन्न नहीं करा सकता था; यह वास्तव में 'प्रोटेस्टेन्ट डिसेन्टर्स' और उससे भी अधिक रोमन कैथोलिकों का घोर अपमान था। सन् १८३६ के अधिनियम ने कैथोलिक अथवा प्रोटेस्टेन्ट चर्चों को इस शर्त के साथ कि वहां होने वाले विवाहों की सूचना रजिस्ट्रार को दे देने पर वे कानून से प्रतिबद्ध होंगे, उन्हें विवाह कराने की स्वीकृति प्रदान कर दी गई। वास्तव में इस कानून में नये युग की मांग को स्वीकार करते हुए सांख्यकीय आंकड़ों तथा ठीक सूचना की प्राप्ति के उद्देश्य से जन्म, मृत्यु तथा विवाहों की जानकारी रखने वाले अधिकारियों-रजिस्ट्रारों—की नियुक्ति का भी प्रावधान था। इंगलैंड के चर्च को भी विवाह कराने का समान अधिकार था लेकिन उसके लिये भी इस शर्त का पालन करना आवश्यक था कि पादरी विवाह की सूचना सिविल रजिस्ट्रार को अवश्य भिजवा देगा। पुराने धार्मिक आचरण तथा आधुनिक धर्म-निरपेक्ष 'राज्य' के बीच होने वाला यह कानूनी समझौता आज भी इंगलैंड पर लागू होता है।

इन अनेकों सुधारों ने उन सभी भयानक आक्रमणों से जिसकी कि भविष्यवाणी दोस्तों तथा दुश्मनों, सभी ने समान रूप से की थी, चर्च की पर्याप्त रक्षा की। फिर भी, राजनैतिक तथा सामाजिक विभाजनों का आधार काफी अंशों में धर्म ही था। प्रत्येक नगर तथा गांव में प्रमुख अनुदारवादी माने जाने वाले लोग चर्च के ही आदमी थे और उनके अत्यन्त सक्रिय विरोधी ह्विग तथा लिबरल (उदारवादी) या तो डिसेन्टर्स थे या पादरी विरोधी (एन्टी क्लेरिकल्स्) लोग थे। निम्न-मध्यवर्ग तथा मजदूर वर्ग एक ही उपासना गृह (चैप्ल) तथा धार्मिक कार्यों में समान रूप से भाग लेते थे। उन्नीसवीं शताब्दी की राजनीति सम्प्रदायों तथा वर्गों, दोनों ही से समान रूप में सम्बन्धित थी। समाज की ये दरारें उसी रूप में बनी रही क्योंकि सन् १८३२ के बाद चर्च-कर (चर्च रेट्स), कब्रिस्तान तथा आक्सफोर्ड व कैंब्रिज में प्रवेश सम्बन्धी डिसेन्टर्स की शिकायतों को दूर कर पाने में ह्विग असफल रहे थे। आने वाले काफी समय तक इंगलैंड में वर्ग-चेतना की अपेक्षा 'चर्च तथा उपासना-गृहों (चैप्ल) की चेतना' अधिक प्रबल थी।

इंगलैंड के अधिक पुराने क्षेत्रों में—कह सकते हैं 'बारसेटशायर' में, पादरी लोग अब भी उच्चवर्ग के प्रभाव तथा संरक्षण में थे। लेकिन कुछ अन्य भागों में बहुत से पादरी ऐसे पैरिशों (पादरी-प्रदेशों) में भी कार्य कर रहे थे जहां औद्योगिक क्रान्ति के कारण उत्पन्न वर्गों के भौगोलिक विभाजन की वजह से उच्चवर्गीय लोगों की संख्या या तो बहुत ही थोड़ी थी या बिलकुल नहीं थी। गांव के निरंकुश पादरी की तुलना में यहां एक ऐसे गन्दी बस्ती (स्लम) वाले पादरी का जन्म हो रहा था जिसके कार्य तथा विचार दोनों ही पहले से कुछ भिन्न प्रकार के थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवर्ती दशकों में चर्च तथा धार्मिक जीवन की सशक्तता

के कई कारण थे। किसी सम्प्रदाय विशेष से पृथक् सामान्यत: प्रत्येक पादरी यह जानता था कि उसे इस नाजुक समय में दृढ़ता से काम लेना चाहिये। शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों की अपेक्षा इस समय चर्च के लोगों पर एवांगेलिकल प्रभाव काफी व्यापक था: 'चर्च के निम्नवर्गीय लोग' (लो चर्चमैन) एवांगेलिकलों को इसी नाम से जाना जाता था—पिछली शताब्दी के सहज जीवन की तुलना में अब रविवासरीय धार्मिक कार्यों (सैबाथ ऑब्जरवेन्स) की प्रथा तथा कानून द्वारा पालन कराने में काफी शक्ति सम्पन्न थे। फिर साथ ही आक्सफोर्ड द्वारा प्रसारित सन् १८३० तथा ४० के एंग्लो-कैथोलिक आदर्श भी सम्पूर्ण देश के विचारों एवं व्यवहारों पर अपनी छाप जमाते जा रहे थे। इन सभी दृष्टियों से, 'पचास तथा साठ' वाले दशकों के चर्च के धार्मिक चित्र से ट्रोलोप के 'बारसेटशायर' उपन्यासों के पाठक भली भांति परिचित हैं। जो नगर एकान्त में नहीं पड़ गये थे वहां फ्रेडरिक डेनिसन मौरिस तथा चार्ल्स किंग्जले का एक 'व्यापक चर्च सम्प्रदाय कार्य कर रहा था जिसकी प्रमुख रुचि श्रमिक वर्गों की शिक्षा तथा जीवन में थी जिसे 'क्रिश्चियन सोश्यलिस्ट' सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता था। इस सम्प्रदाय का प्रमुख प्रेरणा स्रोत थॉमस कार्लाइल था जो स्वयं कभी किसी चर्च से सम्बद्ध नहीं रहा। यद्यपि ब्राड चर्च सम्प्रदाय के पास जन शक्ति का अभाव था लेकिन उसकी कार्य-प्रणाली तथा विचारों ने कई कट्टर पादरियों को भी (यद्यपि वे सर्वप्रथम तो इस सम्प्रदाय के विचारों तथा 'समाजवाद' से चौंके ही थे) काफी प्रभावित किया। इस प्रकार इंगलैंड के चर्च ने सशक्त विरोध तथा वाद-विवाद के बावजूद भिन्न-भिन्न विचारधाराओं तथा जीवन पद्धतियों को अन्त में अपना कर, जिसके कि हम आज पूरी तरह आदी हो चुके हैं, एक अनेक पक्षीय संगठित स्वरूप को विकसित कर लिया।

सन् १८४५ में न्यूमैन के धर्म-परिवर्तन के बाद से, आक्सफोर्ड आन्दोलन, जिसके प्रसार के लिये उसने इतना कुछ किया था, दो पृथक् धाराओं में विभाजित हो गया। एक शाखा, जिसका निर्देशन पूसे तथा केब्ले कर रहे थे, प्रतिष्ठित चर्च में एंग्लो-कैथोलिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार करती रही।[1] और दूसरी शाखा, जिसका नेतृत्व न्यूमैन

---

[1] 'एंग्लोकैथोलिसिज्म' यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अवश्य ही एक नवीनता थी लेकिन एंग्लिकन इतिहास में आगे चल कर वह नवीनता नहीं रही। नॉन ज्यूरर्स तो निश्चित रूप से तथा लॉडियन पादरी भी 'शायद' 'एंग्लोकैथोलिक' कहलाते थे : आक्सफोर्ड के ट्रैक्टेरियन्स उनके जैकोबाइटवाद को छोड़कर नॉन-ज्यूरर्स से काफी मिलते थे। दो आयरिश चर्च के पादरी बिशप जेब तथा एलेक्जेन्डर नॉक्स आक्सफोर्ड आन्दोलन द्वारा उन्हें राष्ट्रीय महत्व प्राप्त होने से एक पीढ़ी पहले तक एंग्लो-कैथोलिक सिद्धान्तों को अपनाते रहे थे। एंग्लो-कैथोलिक उपासना के

और बाद में मैनिंग ने किया, रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय, जिसे इंगलैंड में काफी पहले ही दबा दिया गया था, के पुनरुत्थान का प्रयत्न करते रहे। सन् १८२६ के कैथोलिक इमेंसीपेशन एक्ट द्वारा समान अधिकार मिल जाने पर तथा इंगलैंड आने वाले आयरिश लोगों द्वारा यह धर्म स्वीकार कर लिये जाने पर, रोमन सम्प्रदाय संख्या तथा प्रभाव दोनों ही दृष्टियों से शक्ति सम्पन्न होता गया। लेकिन तब भी सन् १८५० में प्रोटेस्टेन्ट राष्ट्र, जैसाकि पोप द्वारा इंगलैंड में क्षेत्रीय पादरियों की नियुक्ति के प्रति तथाकथित, 'पैपल आक्रमण' के रूप में प्रकट हुए व्यापक विरोध से स्पष्ट है, इस सम्प्रदाय को सहन नहीं कर सका था।

इस बीच जैसे-जैसे नई औद्योगिक व्यवस्था में मजदूर वर्ग तथा मध्यवर्ग संख्या, धन, राजनैतिक शक्ति तथा सामाजिक सम्मान की दृष्टि से अधिकाधिक शक्ति प्राप्त करते गये विरोधियों (नॉम्नकनफर्मिस्ट्स) की शक्ति बढ़ती गई। सन् १८६० तथा ७० के बीच जब मैथ्यू एरनॉल्ड ने इंगलिश समाज के सम्मुख उसका असली रूप रखा तब उसने सबसे अधिक नॉनकनफर्मिस्ट 'फिलिस्टीन्स' के प्रति घृणा दर्शायी थीं, जिन्हें कि उसके आक्सफोर्ड संस्कार तनिक भी पसन्द नहीं कर पाये थे, इन लोगों में एरनॉल्ड को उनकी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ ऐसे लोग मिल गये थे जिन्हें अपनी पुरानी इंगलिश स्वतन्त्रता तथा नई उपलब्ध सम्पत्ति पर अभिमान था लेकिन 'माधुर्य एवं प्रकाश' (स्वीटनेस एंड लाइट) के अभाव में रोगग्रस्त समुदाय की सामाजिक तथा बौद्धिक आवश्यकताओं का कोई ज्ञान नहीं था। लेकिन इस नयी व्यवस्था के धनी-मानी उद्योगपतियों में से कई ने अधिक फैशनेबल 'एस्टेब्लिश्ड चर्च' की सदस्यता ग्रहण कर ली और स्वयं को उभार कर अथवा वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा वे उच्चवर्ग के सदस्य बन गये। इस प्रकार समाज एक 'मिश्रित समाज बनता जा रहा था।'

एक और कवि रॉबर्ट ब्राउनिंग, जो आक्सफोर्ड से सम्बद्ध नहीं था, इसे अपेक्षाकृत अधिक अच्छी तरह से समझ रखा था कि प्यूरिटन धर्म ने ग़रीबों तथा कठोर परिश्रम करने वाले वर्गों के जीवन को कौन सी सुविधाएं प्रदान की थीं। और मैथ्यू एरनॉल्ड के सॉनेट 'ईस्ट लन्डन' की दृष्टि से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि वह भी इस स्थिति को समझ गया था।[१]

विक्टोरिया के शासनकाल के पूर्वार्ध में इंगलैंड की उत्पादन क्षमता तथा सम्पत्ति में होने वाली तीव्र वृद्धि तथा उसके कारण उत्पन्न परम्पराविहीन मध्यवर्ग तथा

संस्कारात्मक पक्ष इस शताब्दी में केवल आगे चलकर ही विकसित हुए : यह आक्सफोर्ड मूवमेंट के असली स्वरूप की विशेषता नहीं थी।

[१] विलियम लॉ मैथीसन, इंगलिश चर्च रिफॉर्म १८१५-४०; डीन चर्च, दि आक्सफोर्ड मूवमेंट, प्रिट्रैक्टेरियन आक्सफोर्ड, लेखक डब्लू. टकवेल, मैथ्यू एरनॉल्ड, कल्चर एंड एनार्की।

अपरिपक्व सर्वहारा वर्ग ज्ञान दीप्ति के लिये शिक्षा के विकास की भी अपेक्षा कर रहा था। सन् १८७० में जबकि ग्लैडस्टोन की सरकार ने शिक्षा को राज्य के अधीन लेने का प्रस्ताव कर इस बात की चिन्ता किये बिना कि धार्मिक शिक्षा के प्रश्न पर 'चर्च' तथा 'डिसेन्ट' (विरोधी)—दोनों प्रतिद्वन्द्वी—एक दूसरे का गला काटने पर उतारु हो जाएंगे, जिस साहस का परिचय दिया था उससे पूर्व दुर्भाग्य से कोई भी सरकार ऐसा साहस नहीं कर पायी थी। सन् १८४१ में सर जेम्स ग्रैहम ने ब्रौघम को लिखा था : इस देश में धर्म उसकी प्रगति के लिये सबसे अधिक बाधक है, जो शिक्षा की आधार भूमि है। भीरु सरकार ने जो कुछ करने का प्रयत्न किया वह केवल विभिन्न स्वेच्छित मंडलों द्वारा संचालित स्कूलों की इमारतों के लिये वर्ष के अन्त में अनुदान स्वरूप बीस हज़ार पौंड दे देने तक सीमित था। यह १८३३ में प्रारम्भ किया गया था और कुछ हेर-फेर प्रत्येक वर्ष कर दिया जाता था। इस धर्मार्थ दान के वितरण के लिये प्रीवि-काउन्सिल की एक समिति नियुक्त कर दी गई थी जो राज्य-अनुदानित स्कूलों का निरीक्षण करती थी और इस कार्य के लिये एक स्थायी सचिव भी नियुक्त कर लिया गया था। वर्तमान शिक्षा मन्त्रालय का उद्‌गम इसी शैशव अवस्था में हुआ था। सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिये ऐसी निरीक्षण व्यवस्था को स्वीकार करना एक आवश्यक शर्त थी और यह शर्त प्रत्येक क्षेत्र पर काफी पहले ही से लागू होती आ रही थी। सन् १८३३ के फैक्ट्री अधिनियम द्वारा फैक्ट्री इन्सपेक्टरों की नियुक्ति हुई थी और इन्हीं से स्कूल इन्सपेक्टरों का विकास हुआ, और इसके कुछ समय बाद ही खानों के निरीक्षकों (माइन्स इन्सपेक्टरों) की नियुक्ति हुई। सरकारी निरीक्षण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही थी, और एक ऐसे समय का आना अवश्यम्भावी होता जा रहा था जब देश की लगभग आधी गतिविधियों पर सरकारी नियंत्रण स्थापित हो जाता।

इस बीच, इस सर्वाधिक धनी राज्य के लिये शिक्षा पर बीस हज़ार पौंड का व्यय करना कोई खास बात नहीं रह गई थी। प्रसियन राज्य तो सभी प्रस्यावासियों की शिक्षा की व्यवस्था कर रहा था। जर्मनी के शासक उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अपनी प्रजा को शिक्षा तो दे रहे थे लेकिन सरकार में हिस्सा बंटाने तथा राजनैतिक गतिविधियों के लिये उन्हें स्वतन्त्रता नहीं दी गई थी। अंग्रेजी राज्य ने सामान्यजन को पर्याप्त राजनैतिक स्वतन्त्रता तथा सरकार में भी कुछ भाग प्रदान कर रखा था लेकिन शिक्षा के लिये निजी धार्मिक अनुदानों पर आश्रित छोड़ रखा था। केवल सन् १८६७ के रिफार्म अधिनियम द्वारा जब नगर के श्रमिक वर्गों को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ तभी राजनीतिज्ञ लोग यह कह पाए कि 'हमें अपने मालिकों को शिक्षित बनाना चाहिये।'

जिस समय सामान्य लोगों की प्राथमिक शिक्षा के लिये इतनी अपर्याप्त व्यवस्था थी, 'पब्लिक स्कूल व्यवस्था' के माध्यम से धनी लोगों की माध्यमिक शिक्षा काफी प्रगति कर रही थी।

शताब्दी के प्रारम्भ में माध्यमिक स्कूल तीन प्रकार के थे : (१) फैशनेबल 'पब्लिक स्कूल' (जो निजी स्कूल थे) जैसे एटन, विन्चेस्टर तथा हैरो। इनकी संख्या कम थी, पाठ्यक्रम पुराने प्रकार का था और साथ ही इन स्कूलों में अनुशासन की समस्या भी बनी रहती थी। दूसरे, निजी अकादमियां (प्राइवेट एकेडेमीज़) थीं जहां फैशन विरोधी डिसेन्टिंग मध्यवर्ग वैज्ञानिक तथा आधुनिक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करता था और यहां अनुशासन भी ठीक था, और अन्तिम प्रकार उन अनुदान प्राप्त पुराने 'ग्रामर-स्कूलों' का था जिनमें से अनेक उपेक्षा तथा भ्रष्टाचार—जो अठारहवीं सदी की सरकारी संस्थाओं की एक विशेषता बन चुकी थी—के कारण समाप्तप्राय: हो गये थे।

इंगलैंड की बढ़ती हुई शक्ति तथा समृद्धि को तथा इस शताब्दी को आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जिस बहुमुखी नेतृत्व की आवश्यकता थी उसे देखते हुए माध्यमिक शिक्षा का विस्तार अत्यन्त आवश्यक था। और यद्यपि कुछ सीमा तक इसकी पूर्ति भी हुई थी लेकिन वह अप्रत्याशित रूप में ही थी जिसके कई महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम भी निकले। यह सोचा जा सकता था कि इस 'सुधार' प्रधान तथा प्रजातांत्रिक पद्धति वाले युग में अनुदान प्राप्त ग्रामर स्कूलों की संख्या तथा स्वरूप में राजकीय हस्तक्षेप द्वारा यदि प्रगति हो तो विभिन्न वर्गों वाले कुशाग्र-बुद्धि बच्चे उसी प्रकार एक साथ अध्ययन कर सकते थे और अच्छे परिणाम दर्शा सकते थे जिस प्रकार कि ट्यूडर तथा स्टुअर्टकालीन ग्रामर स्कूलों में होता था। लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल में मैनचेस्टर के प्रभावशाली स्कूलों को छोड़कर साधारणत: ग्रामर स्कूलों को विशेष महत्व नहीं मिला। साथ ही मत विरोधी अकादमियां, जो विगत शताब्दी में काफी उपयोगी सिद्ध हुई थीं, अब समाप्त हो चली थीं। अब फैशन केवल 'पब्लिक स्कूलों' का ही था जो एटन, वेस्टमिंस्टर, विन्चेस्टर तथा हैरो के पुराने आदर्शों पर आधारित थे और रगबी इनका विशेष रूप से आदर्श माना जाने लगा था।

यह प्रगति अंशत: एक ही व्यक्ति के प्रयत्नों के फलस्वरूप अकस्मात् ही हुई थी। सन् १८३० की दशाब्दी में रगबी का हेडमास्टर डा. टॉमस एरनॉल्ड एक महान् शिक्षा सुधारक था। धर्म तथा चर्च प्रार्थना को पर्याप्त महत्व देना, कक्षानायक की प्रणाली का प्रचलन, शारीरिक दंड, मद्यपान, दुराचार तथा 'बियर गार्डन' जैसे पब्लिक स्कूलों की अनुशासनहीनता की समाप्ति के सफल प्रयत्नों के द्वारा उसने व्यापक रूप से प्रभावित करने वाले आदर्श की स्थापना की थी। पुराने प्रतिष्ठानों में सुधार कर दिया गया और नयों को प्रतिस्पर्धा की भावना के आधार पर प्रारम्भ कर दिया गया। खेलकूद का संगठित रूप, जिस पर कि एरनॉल्ड ने खास जोर नहीं दिया था, स्वत: ही प्रकट हो गया जिसने पब्लिक स्कूलों के जीवन को काफी प्रभावित किया और आक्सफोर्ड तथा कैंब्रिज तक में लोकप्रिय हो गये।[1]

---

[1] 'एरनॉल्ड' द्वारा लाए गये सुधारों तथा खेलकूद के संगठित आयोजनों के पहले

सुधारे गये पब्लिक स्कूलों द्वारा समाज के मध्यवर्ग ने अपने लड़कों के लिये शासनाधिकार प्राप्त 'उच्चवर्ग' में प्रवेश पाने का मार्ग खोज लिया था। पुराना भू-स्वामी वर्ग, पेशेवर लोग तथा नये उद्योगपति, सभी ने इकट्ठे शिक्षा प्राप्त की थी और सभी का एक विस्तृत आधुनिक अभिजात वर्ग बन गया था, यह वर्ग राजकीय आवश्यकताओं की पूर्ति तथा विक्टोरियाकालीन इंगलैंड तथा सम्पूर्ण साम्राज्य के नेतृत्व के लिये संख्या में काफी बड़ा था।

कई दृष्टियों से पब्लिक-स्कूल काफी सफल थे और इन आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। यद्यपि इन स्कूलों ने आक्सफोर्ड तथा कैंब्रिज व टेनीसनकालीन सम्पूर्ण इंगलैंड के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास की पृष्ठभूमि का निर्माण किया था लेकिन जिन विषयों की इनमें शिक्षा दी जाती थी वे प्रतिष्ठित पुस्तकों (क्लासिक्स) के ज्ञान तक ही सीमित होने के कारण इस नये युग की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ नहीं थे। पब्लिक स्कूलों के छोटे घेरे में, जहां कि लड़के स्वयं अपने समाज का निर्माण तथा नियंत्रण करते थे, चरित्र काफी दृढ़ता प्राप्त कर लेता था लेकिन अपने साथियों के प्रति वफादारी की तुलना में बौद्धिक विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं मिलता था। डा. आरनॉल्ड की मृत्यु के लगभग बीस वर्ष बाद उसके आलोचक पुत्र मैथ्यू ने इंगलिश प्रशासक वर्ग को 'बर्बरों' की संज्ञा दी थी : पब्लिक स्कूल 'पृथ्वी के आदिवासी, सशक्त पुत्रों' के गुणों तथा दुर्गुणों दोनों ही की रक्षा करते थे।

उच्च, उच्च-मध्यवर्ग तथा व्यावसायिक वर्गों का पब्लिक स्कूलों में समन्वय हो गया था और इसी का दूसरा पक्ष यह था कि पृथक् शिक्षा-प्रणाली द्वारा शेष राष्ट्र से वे कट गये थे। सामाजिक विभाजन की प्रवृत्ति, जिसे आधुनिक बड़े नगरों में 'वर्गों

माता-पिता को अपने लड़कों को किन उपायों द्वारा अनुशासित करना पड़ता था इसका विवरण काउपर की टाइरोसिनियम (१७८५) नामक कृति में प्राप्त हो सकता है :

"यदि आपका लड़का पियक्कड़ या शिक्षा से जी चुराता हो, आवारा, जिद्दी हो या ये सभी कुछ एक साथ हो, तो उसे लड़कों की भीड़ में बुला कर अनुभव एकत्र करने के लिये छोड़ देना चाहिये—इस भीड़ में कुछ लड़के जहां शोर-शराबा करने वाले शैतान बालक हों, कुछ बड़े लोग हों तथा दस में से पांच आवारा तथा शैतान लोग भी हो सकते हैं। वहां वह सोलह साल की आयु होने के काफी पहले ही यह सीख जाएगा कि लेखक बड़ी ही उपयोगी वस्तु होता है। स्कूल में केवल किताबों के सतही नियम भर ही सिखाये जाते हैं, असली शिक्षा आम स्थानों पर अनुभव से ही मिलती है।" सामाजिक इतिहास के अध्येता के लिये यह सम्पूर्ण कविता काफी उपयोगी है।

के अनुसार पृथक-पृथक स्थान मिलने के कारण काफी बल मिला था, इस शिक्षा-प्रणाली द्वारा और तीव्र हो गई। फिर, पब्लिक स्कूलों का खर्चा, भी ग्रामर स्कूल तथा डे-स्कूल की अपेक्षा कहीं अधिक था। मध्यवर्ग तथा व्यावसायिक वर्गों के परिवारों पर एक स्वयं-आरोपित वृहद भार बन गया। और निस्सन्देह इसी कारण शताब्दी के अन्त में समाज के उत्कृष्ट वर्गों में भी स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या में दुखद ह्रास होने लगा।

आधुनिक इंगलैंड की सफलताओं और असफलताओं, दोनों ही के अधिकांश भाग के लिये पब्लिक स्कूलों को पर्याप्त रूप में उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। ये स्कूल वस्तुतः इंगलिश स्वभाव तथा प्रवृत्ति द्वारा अचेतन रूप से विकसित हो उठे थे और विदेशों में भी उनका सफलतापूर्वक अनुकरण किया जाने लगा था।

शताब्दी के बीच के वर्षों में लड़कियों की माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था समुपयुक्त नहीं थी। उन्हें अपने भाइयों की खर्चीली शिक्षा के आगे बलिदान होना पड़ता था। इसमें तथा अन्य क्षेत्रों में नारी का उत्थान विक्टोरिया-शासनकाल के अन्तिम तीस वर्षों (इंगलैंड में स्त्री जाति का उत्थान इसी काल में हुआ था) तक के लिये टल गया गा।

बावजूद इसके कि मैथ्यू आरनॉल्ड ने उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग की 'बर्बर' तथा 'फिलिस्तीनों' जैसे तीक्ष्ण शब्दों द्वारा आलोचना की थी वे स्वयं भी इसी परिवेश के भविष्य द्रष्टा तथा कवि थे, और बावजूद इसके कि उन्होंने हमारी माध्यमिक शिक्षा को 'संसार की सबसे निकृष्ट शिक्षा-प्रणाली' माना था। सत्य यही है कि उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलैंड की उच्च-संस्कृति विविध, ठोस तथा सम्पूर्ण समुदाय के एक बहुत बड़े भाग पर आच्छादित थी। निस्सन्देह संसार में आने वाली कई शताब्दियों तक इतनी उन्नत तथा व्यापक संस्कृति का अवतरण कदाचित् ही हो।

उन्नीसवीं शताब्दी के बीच के वर्षों में औद्योगिक परिवर्तन के कारण पहले ही से एक व्यापक असंस्कृतता का प्रसार हो रहा था जिसका बीजारोपण उच्च साहित्यिक संस्कृति के अन्तर्विरोध रूप में नवविकसित पत्रकारिता, ग्रामीण जीवन की अवनति तथा जीवन के यंत्रीकरण द्वारा काफी पहले हो चुका था। वैज्ञानिक शिक्षा के आगमन से मानवता का उन्मूलन अवश्यम्भावी हो गया था। लेकिन उन्नीसवीं सदी के मध्य में शिक्षा अब भी वैज्ञानिक की अपेक्षा मानवता प्रधान थी और यद्यपि इसमें कुछ गम्भीर व्यावहारिक हानियां भी निहित थीं लेकिन इससे कुछ काल के लिये एक महान सभ्यता की रचना हुई जिसका आधार ऐसी विद्वता थी जिसके अठारहवीं शताब्दी की अपेक्षा कहीं अधिक पाठक थे, और यह सभ्यता उन दिनों की अपेक्षा, जब बॉइल्यू तथा पोप सुरुचि सम्पन्नता का आदर्श माने जाते थे कहीं अधिक विविधता प्रधान तथा विषय वस्तु एवं शैली की दृष्टि से कैथोलिक भी थी। साहित्य एवं विचार तथा समाज

और राजनीति दोनों ही दृष्टियों से यह युग अभिजाततन्त्र से प्रजातन्त्र तथा व्यक्तिपरक सत्ता से लोक-मत के बीच की संक्रान्त अवस्था थी; साहित्य एवं चिन्तन के लिये यह स्थिति अन्त तक लाभप्रद रही।

गम्भीर ऐतिहासिक कृतियां भी एक बड़े पाठक वर्ग को ध्यान में रख कर लिखी जाती थीं और अपने उद्देश्य में सफल होती थीं, यह विशेषता केवल मैकाले की ही नहीं थी वरन् एक आम बात थी। धार्मिक वाद-विवाद, नैतिकता विषयक टिप्पणियों तथा कट्टर सम्प्रदायों के प्रति शंकालू होकर किसी अधिक उपयुक्त सम्प्रदाय की खोज आदि से उत्पन्न वातावरण में कार्लाइल, रस्किन तथा इन मैमोरियम के लेखक को लेखन तथा कल्पना का पर्याप्त आधार मिल गया था और मरणोपरान्त भी जितनी ख्याति बायरन को नहीं मिल सकी थी उतनी वर्ड्सवर्थ को अपनी वृद्धावस्था में ही प्राप्त हो गई थी। दूसरी ओर समाज के इस आलोचनात्मक विश्लेषण की दोषप्रदता तथा उसमें कुछ सुधार की आवश्यकता ने डिकेन्स, थैकरे, श्रीमती गेस्केल तथा ट्रोलोप जैसे लेखकों को प्रेरित किया तथा लोकप्रियता भी प्रदान की। और व्यक्ति के अधिकारों (जिनमें स्त्री के अधिकारों को भी पर्याप्त महत्व दिया गया था) के विषय में ब्रोन्टे बहिनों ने लिख कर फ्लोरेन्स नाइटइंगेल से कम कार्य नहीं किया है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने 'लिबर्टी' (१८५६) तथा 'सब्जेक्शन ऑफ़ विमेन' (१८६६) में पारस्परिक बन्धनों पर आघात कर व्यक्ति (स्त्री तथा पुरुष) के अधिकारों का पक्ष लेते हुए वैचारिक तथा जीवन की स्वतन्त्रता पर इस प्रकार बल दिया कि उसे विक्टोरिया के शासनकाल की प्रारम्भिक तथा अन्तिम अवस्थाओं के बीच की धुरी माना जा सकता है।

विज्ञान का वह पक्ष जो मानवतावाद के अत्यधिक निकट था, अर्थात् प्रकृति की निकट से की गई स्निग्ध व्याख्या, एक और ऐसा स्रोत था जिसने इस काल के साहित्य को प्रेरणा तथा व्यापक प्रभाव-क्षमता प्रदान की। अठारहवीं शताब्दी के उत्तर काल में सेलबोर्न के ह्वाइट ने और वेविक तथा अन्य नये तथा व्यावसायिक प्रकृतिवादियों ने अपने देशवासियों को उस प्रकृति से प्रेम करना सिखाया जिसकी गोद में उन्होंने जन्म लिया था। शताब्दी के अन्त में प्रकृति के प्रति यह अभ्यस्त अनुरक्ति गर्टन, टर्नर तथा कॉन्स्टेबल के चित्रों तथा वर्डस्वर्थ और कीट्स की कविताओं में और अधिक मुखरित हुई। सन् तीस, चालीस और पचास की अगली पीढ़ियों में डिविंट, डेविड कॉक्स, एड्वर्ड लियर तथा अन्य कई लोग और भी प्राकृतिक चित्रण करने वाले प्रतिभाशाली चितेरों की सूची में जुड़ गये, ये लोग पानी के रंगों द्वारा भी इतनी शीघ्रता से चित्र नहीं बना सके कि जनता की मांग को पूरा कर पाते। काव्य के क्षेत्र में विक्टोरिया युग के अधिकांश भाग पर टेनीसन का एक छत्र साम्राज्य था। उसकी प्रभाव-क्षमता उसके प्राकृतिक चित्रण की सशक्तता, सुन्दरता तथा सटीकता में निहित थी।

अपनी सर्वोत्कृष्ट स्थिति में टेनीसन प्राकृतिक जगत् के अवलोकनों में एक अदृष्ट

तथा अलौकिक चमक पैदा कर देता था। इसी कारण विक्टोरिया कालीन लोगों पर, जो शब्द-चमत्कार तथा प्रकृति के प्रति अनुरक्त थे, टेनीसन का प्रभाव सहज ही पड़ गया। टेनीसन के सूक्ष्म प्रकृति चित्रण से टॉमसन के स्थूल ऋतु चित्रण टेनीसन के पूर्व जिससे मध्यवर्गीय पाठक वृन्द अत्यधिक प्रभावित था—का प्रभाव कम हो गया था। विक्टोरिया युग के प्रारम्भिक काल में क्रैनफोर्ड की महिलाओं ने टेनीसन के विषय में सुन रखा था कि 'यह युवक मुझे आकर कहता है कि प्रभूर्ज कलियां (ऐश बड्स) श्याम वर्णी हैं, और मैं पाती हूं कि मुझे वे श्याम ही प्रतीत होने लगती हैं।'

इसी पाठक वर्ग पर रस्किन का प्रभाव भी, जो सन् चालीस की शताब्दी में सहसा ही उभर आया था और फिर अनेक वर्षों तक बना रहा, इसी प्रकार का था। मॉडर्न पेन्टर्स नामक पुस्तक में, जिसे इंगलिश प्राकृतिक चित्रण के पक्ष-पोषण के लिए, विशेष रूप से टर्नर के चित्रों को आधार बना कर तथा प्रि-राफेलाइट्स के बचाव पक्ष के रूप में लिखा गया था, लेखक ने इस गद्य पुस्तक में बड़े ही सुन्दर तथा उत्कृष्ट ढंग से बादलों, पहाड़ों तथा हरियाली का ईश्वर प्रदत्त सामग्री के रूप में विश्लेषण किया है। इन चित्रों के सत्यान्वेशी गुणों की परख में हो सकता है कि उसने कोई गलती की हो लेकिन कम से कम इसका श्रेय तो उसे देना ही होगा कि अपने देशवासियों को उनकी आल्प्स और इटली की यात्रा के लिये तथा अपने ही देश के परिचित जंगलों और मैदानों में विचरण के लिये एक नई दृष्टि दी थी।

यूरोप में, जहां अब अपेक्षाकृत अधिक शांति थी और नानावर्णी सुन्दरता की प्रधानता थी, और जिसका न तो इतना अधिक यंत्रीकरण ही हुआ था और न राष्ट्रों के पारस्परिक घृणा भाव से उत्पन्न युद्ध की सीमाएं ही खिंची थी इंगलैंडवासियों के लिये एक बृहद् क्रीड़ा स्थली था, वहां लोग अपने नव अर्जित धन का उपयोग करने तथा आनन्द मनाने के लिये—पहाड़ों के अभियान, स्विट्जरलैंड के कुसुमित चरागाहों की सैर, नीदरलैंडस, इटली तथा फ्रान्स की स्थापत्य कला, चित्रशालाओं तथा प्राकृतिक दृश्यावलियों के दर्शन के लिये घूमा करते थे। इस काल के अंग्रेज यात्री को इतिहास, साहित्य तथा प्राकृतिक विज्ञान की कुछ जानकारी अवश्य होती थी जिसके द्वारा प्राकृतिक तथा मानवीय जगत् के अवलोकन तथा गुण ग्राहकता में उसे सहायता मिलती थी।

फिर ब्रिटेन की नयी रेल व्यवस्था ने पहाड़ी हवा तथा प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेने के लिये सैलानियों के लिये स्कॉटलैंड के पहाड़ी स्थलों (हाईलैंड्स) तक पहुँचने की भी व्यवस्था कर दी थी। धनी लोगों के पास अपने निजी जंगल भी थे जहां वे हेमन्त ऋतु में अपने अतिथियों के साथ पशु-पक्षियों की क्रीड़ाओं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेते थे। महारानी तथा उनके पति एलबर्ट द्वारा बालमोरल से जंगली प्रदेशों तक की यात्रा ने तथा एलबर्ट द्वारा किये गये हिरण के शिकार और लैन्डसीअर द्वारा बनाए गए उसके चित्र ने हाईलैंड के दृश्यों को सभी अंग्रेज वर्गों में

काफी लोकप्रिय बना दिया था और अब वे स्कॉट की प्रेमानुभूतियों वाले प्राकृतिक प्रान्तरों को स्वयं जाकर देखने लगे थे।

इस प्रकार शताब्दी के वर्षों में विक्टोरिया की प्रजा में इतिहास तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति अभिरुचि जागृत हो गई थी। वे प्राचीन साहित्य के अध्ययन तथा अपने युग के श्रेष्ठ साहित्य के सृजन में पारंगत थे और इस प्रकार एक महान साहित्यिक सभ्यता का सृजन तथा उपभोग कर रहे थे। हमारे इन पूर्वजों ने यद्यपि समुद्र तथा भूमि को पार कर रोम की जल प्रणाली तथा गोथिक गिरजों (कैथेड्रल्स) को प्रशंसाभाव से देखा था लेकिन उन्होंने स्वयं शोचनीय इमारतों का ही निर्माण किया और उसमें केवल दैनिक उपयोग के सामान जैसे फर्नीचर आदि को ही जमा लिया था। इस रूप में रीजेन्सी तथा प्रिन्स कॉनसोर्ट के कालों के बीच की अवधि में लोगों की अभिरुचि का ह्रास एक आश्चर्य की वस्तु थी। अत्यधिक सुसंस्कृत तथा शिक्षित वर्ग भी उतने ही खराब थे जितना कि कोई अन्य वर्ग : ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के कॉलेजों के डोन्स के आदेशानुसार विलियम बटरफील्ड तथा एल्फ्रेड वाटरहाउस के समय भीमकाय इमारतों का निर्माण आज केवल कष्टप्रद ही प्रतीत होता है।

इस युग की एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति यह भी थी कि अच्छे व्यवस्था योग्य महलों को गिराया जा रहा था और उनके स्थान पर ऐसे ग्रामीण और सौन्दर्य शून्य भवनों का निर्माण कराया जा रहा था जहां कि इंगलैंड के अत्यधिक समृद्ध क्षेत्रों वाले अमीर लोग लन्दन से आने वाले अपने मेहमानों को सुख-सुविधा दे सकें। उनके अधिक सुरुचि सम्पन्न उत्तराधिकारियों का, जिनके पास कि अब बैंक में थोड़ा ही रुपया शेष था, अपनी निर्धनता तथा इस भार के लिये अपने अंग्रेजों को कोसना स्वाभाविक था।

विक्टोरियन दृष्टि के इस स्थापत्य विषयक धुंधलेपन के कारणों की खोज इतनी सहज नहीं है। लेकिन प्रमुख पादरी के रूप में रस्किन ने क्योंकि बड़े बेढंगे धार्मिक आधारों पर उस सम्पूर्ण पुनर्जागरण (रेनासा) की परम्परा को, जिसकी कि अंग्रेजी भवन निर्माण कला एक महत्वपूर्ण भाग थी, बेकार सिद्ध कर दिया था अतः आंशिक रूप में उसे इसके लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। धीरे-धीरे उसका प्रभाव समाज में व्यापक रूप धारण करता गया और उन लोगों तक भी पहुँच गया जो उसकी पुस्तकों की एक भी पंक्ति पढ़ना पसन्द नहीं करते थे, और उन लोगों तक भी, जिनका विश्वास था कि गोथिक चमत्कारों तक सीमित रहना ही सर्वश्रेष्ठ है। इस प्रकार भवन-निर्माण कला का वास्तविक रहस्य तथा अनुपात की चेतना लुप्त होती गई। दूसरी ओर इस ह्रास के लिये औद्योगिक क्रान्ति को एक कारण माना जा सकता है : भवन-निर्माण तथा अन्य धंधों का यंत्रीकरण तथा कला का ह्रास निस्सन्देह इसका एक प्रमुख आंतरिक कारण था। भवन-निर्माण की स्थानीय प्रणाली को, जो स्थानीय सामग्री के प्रयोग पर निर्भर करती थी, रेलों द्वारा पहुँचायी जाने वाली कारखानों में

वनी सस्ती ईंटों, पट्टियों आदि के द्वारा स्थानापन्न कर दिया गया और इस प्रकार वंश-परम्परा से चले आ रहे हस्तकौशल तथा क्षेत्रीय परम्परा को एक तीव्र आघात लगा। लेकिन अब भवन-निर्माण आधुनिक विधि द्वारा मकानों के बृहद् स्तरीय उत्पादन में रूपान्तरित हो गया था। मशीनों से बना फर्नीचर भी इतना ही खराब था। मोटी हत्येदार आराम कुर्सियां अधिक आरामप्रद हो सकती हैं, नये मकान अधिक सुविधा-जनक हो सकते हैं, लेकिन सौन्दर्य नाम की इनमें कोई वस्तु शेष नहीं रह गई थी।

सन् चालीस, पचास और साठ के दशकों में चित्रकला अब भी एक महान कला एवं व्यवसाय मानी जाती थी और उसकी मांग भी काफी थी। और उसका कारण यह था कि पारिवारिक चित्रों, प्रसिद्ध चित्रों की प्रतिलिपियां तथा प्रकृति के सुन्दर दृश्यों तथा पुरानी इमारतों के चित्र बनाने के लिये फोटोग्राफी का अभी इतना विकास नहीं हो पाया था कि वह चित्रकला का स्थान ग्रहण कर ले। रोम तथा यूरोप की अन्य सुन्दर राजधानियों में अच्छे तथा बुरे सभी प्रकार के चित्रकारों की एक बड़ी संख्या रहती थी जो प्राकृतिक दृश्यों तथा पुराने ग्राहकों के चित्र बना कर अंग्रेज यात्रियों को देते थे और वे उनकी यात्रा की स्मृति ताजा रखने के लिए उन चित्रों को अपने साथ स्वदेश ले आते थे। व्यावसायिक दृष्टि से इस समय रॉयल एकेडेमी अपने चरमोत्कर्ष पर थी—नये मिल मालिकों अथवा उत्पादनकर्त्ताओं को उनके आलीशान भवनों की सजावट के लिये व्यक्तियों तथा प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों और ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं की बिक्री किया करती थी। रस्किन के महत्व प्राप्त कर पाने में आंशिक रूप में यह भी एक कारण था कि यह व्यापार इतना व्यापक हो गया था। जिस प्रकार किसी समय 'एडिनबरा' तथा 'क्वार्टरली' पत्रिकाओं का साहित्य जगत् में एक छत्र आधिपत्य था उसी प्रकार रस्किन ने भी आज कला जगत पर अपना एक छत्र शासन स्थापित कर रखा था। आर. ए. की शिकायत की नकल (पैरोडी) इस प्रकार बनाई गई थी :

मैं केवल चित्र बनाता हूं
कोई शिकायत नहीं सुनता,
और मैं शुष्क होने लगूं
और वहशी रस्किन
उन्हें अपने जंगली दांतों में चबा डाले
और पूर्व इसके कि तब उनका कोई भी
ग्राहक बनना पसन्द न करे
मैं उन्हें बेच देता हूं।

धार्मिक तथा सामाजिक शक्तियों के जिन संयुक्त खतरों से रिफॉर्म-बिल के तुरन्त पूर्व के काल में एस्टेब्लिशमेन्ट के पादरी वर्ग को आशंकित होना पड़ गया था, वही

खतरे अब पुराने म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन्स को, जिनसे कि चर्च के स्वार्थ सम्बन्धित थे, आशंकित कर रहे थे।[1] लेकिन चर्च की भांति, पुराने नियम (कॉलियापोरेशन्स) आत्म-सुधार कर पाने में उतने ही सामर्थ्यहीन थे जितने कि पार्लियामेन्टरी रॉट्न बॉरोज जिनसे कि उनका निकट का सम्बन्ध था। 'रॉट्न बॉरोज' की समाप्ति पर सन् १८३५ के म्यूनिसिपल रिफॉर्म अधिनियम द्वारा निरर्थक नगरीय स्वायत्तशासन समाप्त कर दिया गया।

नये वर्गों को तुरन्त सत्ता हस्तान्तरित हो जाने के कारण, इस कानून का नगरों के जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा और कुछ प्रभाव ऐसे भी थे जिनकी कोई पूर्व-कल्पना नहीं की जा सकी और इन्हीं के आधार पर अगले सौ वर्षों में सभी वर्गों—विशेष रूप से गरीबों के उपकार के लिये सामाजिक सेवा की दृष्टि से एक महान नगरपालिका के ढांचे की रचना की गई। सन् १८३५ में कोई भी उस दिन की कल्पना नहीं कर सका था जब कि 'नयी नगरपालिकाएं' केवल सड़कें ठीक करने तथा उन पर प्रकाश की व्यवस्था करवाने तक ही सीमित न रह कर मकानों के निर्माण कार्य, क्षेत्र की स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यों का भी नियंत्रण करेंगी; उद्योगों तथा वाणिज्य की भी व्यवस्था करेंगी; तथा लोगों की शिक्षा का भी प्रबन्ध करेंगी।

जिस तत्काल परिवर्तन ने समकालीन लोगों को प्रभावित किया वह नगरपालिका सम्बन्धी अधिकारों (जो कुछ अधिकार उन दिनों थे) का स्थानान्तरण था, जिसमें टोरी (अनुदार) वकीलों, पादरियों तथा कुलीन लोगों के एजेन्टों के पुराने निगमों पर स्थापित आधिपत्य की उपेक्षा कर दी गई थी। नगर प्रशासक के नये तरीकों में यद्यपि 'माधुर्य एवं प्रकाश' ('स्वीटनेस एण्ड लाइट') का अभाव था लेकिन उनमें शक्ति अवश्य थी और वे सुधारों का भी स्वागत करते थे, फिर इसके अतिरिक्त यह तथ्य कि उन्हें समयानुसार प्रजातांत्रिक रूप में चुना गया था, मतदाताओं के हितों को ध्यान में रखने की प्रेरणा देता था। सन् १८३२ के म्यूनिसिपल रिफॉर्म बिल में संसद के लिये मतदान का अधिकार केवल 'दस पौंड वाले परिवारों' तक ही सीमित था लेकिन इस क्रान्तिकारी म्यूनिसिपल रिफॉर्म बिल में, जो सभी कर देने वालों को मतदान का अधिकार प्रदान करता था, उसका अनुकरण नहीं किया गया। श्रमिक वर्गों को नये बॉरोज में कम से कम स्थानीय चुनावों में तो अधिकार प्राप्त था ही। इस प्रकार नागरिक प्रशासन एकदम नये हाथों में चला गया था, इसके अतिरिक्त बड़े नागरिक क्षेत्रों में न्यायपालिका (ज्यूडीश्यरी) के पदों पर राजा की ओर से कार्य करने वाली

---

[1] इन सम्बन्धों पर रॉयल हिस्टोरिकल सोसाइटी फॉर १९४० में संकलित 'ए लेसेस्टर इलेक्शन ऑफ़ १८२६' नामक लेख में प्रकाश डाला गया है। हेलेवी की हिस्ट्री ऑफ़ इंगलिश पीपल (अर्नेस्ट वेन, वाटकिन'स ट्रान्सलेशन, १९२७), III, पृ० २१७-२२० भी द्रष्टव्य है।

ह्लिग सरकारों द्वारा मत विरोधियों तथा नये प्रकार के मध्यवर्गीय नागरिकों की नियुक्ति की जाने लगी थी। इंगलैंड के नगरों में अब 'पीटरलू मजिस्ट्रेटों' की और नियुक्तियां नहीं होती थीं।

सन् १८३२ का रिफार्म बिल तथा उसी के क्रम में १८३५ के म्यूनिसिपल रिफार्म बिल, दोनों ने नगर तथा ग्रामीण जीवन के भेद को, जिसको कि आर्थिक शक्तियां पहले ही से स्पष्ट करती आ रही थीं, और अधिक तीव्र कर दिया। विक्टोरिया कालीन इंगलैंड में दो विरोधी सामाजिक व्यवस्थाएं कार्य कर रही थीं—ग्रामीण क्षेत्रों का अभिजाततन्त्र तथा बड़े शहरों का प्रजातंत्र ग्रामीण क्षेत्रों तथा छोटे बाजारों वाले कस्बों में अब भी ऐसे भद्र लोगों का ही आधिपत्य था जिनके आगे कि सभी वर्ग शीश झुकाते थे। लेकिन नगरों में एक भिन्न प्रकार की मूल्य व्यवस्था के अन्तर्गत एक दूसरे ही प्रकार के व्यक्ति का शासन था और मध्यवर्ग हो अथवा मजदूर वर्ग सभी प्रजातांत्रिक प्रणाली के अंग थे।

आर्थिक कारणों से तथा रेलों की प्रगति के कारण नगरों का नया समाज पुराने ग्रामीण समाज पर तब तक हावी होता रहा जब तक कि बीसवीं शताब्दी में नगरीय चिन्तन तथा विचारों और प्रशासन ने उसे पूरी तरह निगल नहीं लिया। लेकिन यह एक लम्बी प्रक्रिया थी जबकि बीसवीं शताब्दी एक संक्रान्ति-युग था। सन् १८४६ के कॉर्न लॉज़ में हुए संशोधन से न तो कृषि को एक दम समाप्त ही कर दिया गया और न गांवों तथा कस्बों के अभिजात प्रशासन को ही समाप्त किया गया। अगली पीढ़ी तक, जब तक कि इंगलैंड के बाजार में अमरीकी अनाज तथा पशुओं का आगमन नहीं हुआ था वहां की कृषि विकसित होती रही थी और उससे संलग्न सामाजिक व्यवस्था भी यथारूप रही।

लेकिन वास्तव में कृषि में असीमित क्षमताओं का अभाव था; शताब्दी के मध्य-काल में वह अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी और अब और अधिक भूमि का विस्तार सम्भव नहीं था। दूसरी ओर औद्योगिक तथा वाणिज्य में होने वाली क्रान्ति भी शक्ति प्राप्त कर रही थी और नगरों की सम्पदा तथा जनसंख्या में प्रत्येक दस वर्ष बाद तीव्र वृद्धि दिखाई देती थी। सन् १८५१ की जनगणना के अनुसार इंगलैंड की लगभग आधी जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में थी, 'यह एक ऐसी स्थिति थी जो शायद इससे पहले किसी महान् देश में संसार के इतिहास में कभी उत्पन्न नहीं हुई। (क्लैपहम, I, पृष्ठ ५३६) और क्योंकि इस प्रक्रिया (नगरीकरण) की कहीं कोई सीमा नहीं दिखाई देती थी अतः इसे भविष्य का ही एक अंग माना जा सकता है। जॉन बुल अब एक ग्रामीण किसान नहीं रह गया था, उसका नगरीकरण हो जाने के बाद क्या उसे, पंच के कार्टूनों को छोड़कर, जॉन बुल कहा जा सकता है?

नयी शहरी परिस्थितियां जिनमें कि सन् १८५१ में इंगलिश लोगों की इतनी बड़ी जनसंख्या रह रही थी, अन्त में लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगीं और लोग

उनके उपचार की आवश्यकता को महसूस करने लगे। खुले देहाती क्षेत्रों की पारम्परिक जीवन प्रणाली, जिसे कि एक वात्याचक्र ने झकझोर डाला था, वहां स्वच्छता और आवास व्यवस्था के नियंत्रण की आवश्यकता कम महसूस होने लगी : वहां झोंपड़ियों की खराब अवस्था होने पर भी शहरों की तुलना में मृत्यु दर काफी कम थी। लेकिन नगरवासियों की संख्या के वढ़े हुए अनुपात के वावजूद सन् १७८० तथा १८१० में मृत्यु दर में काफी कमी हुई थी, उसे १८१० तथा १८५० में और नियंत्रित कर लिया गया था। सम्पूर्ण द्वीप में फिर उतनी मृत्यु-संख्या कभी नहीं वढ़ी जितनी कि अठारहवीं सदी के प्रारम्भिक काल में बढ़ी थी, लेकिन विज्ञान तथा चिकित्सा सेवाओं की प्रगति के वावजूद उसमें और अधिक कमी नहीं हो सकी। (देखिये पृष्ठ ३४२) इसका मुख्य कारण औद्योगिक क्षेत्रों में गन्दी बस्तियों (स्लम्स) की वृद्धि तथा प्रति वर्ष उनकी स्थिति में निरन्तर ह्रास का होते रहना था।

जन-स्वास्थ्य के संरक्षण, दुकानदारों पर लागू होने वाले नियमों तथा म्यूनिसिपल रिफार्म एक्ट सन् १८३५ के अनुसार करदाताओं द्वारा चुने गये निर्माताओं तथा कर लेने वालों से सम्वन्धित नीतियों को लेकर टोरी तानाशाहों के आलस्य में, जिन्हें कि स्थानच्युत कर दिया गया था, कोई सुधार नहीं हुआ। फिर भी १८४० के दशक में गन्दी वस्तियों के मालिकों तथा गन्दे मकान वनाने वालों पर नियंत्रण कर पाने की दिशा में व्यक्ति स्वातन्त्र्य के दर्शन के प्रभाव के कारण कोई प्रगति नहीं हुई और वे व्यापक सुख-सुविधा के नाम पर अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को आगे ठेलते रहे। 'प्रगति' के ये अगुआ एक कमरे में कई परिवारों को भर कर, अथवा उन्हें तहखानों में डालकर, मकान वनाने में सस्ती तथा अपर्याप्त सामग्री का उपयोग कर तथा नालियों की व्यवस्था न कर अथवा इससे भी वुरी स्थिति उत्पन्न कर—गन्दी नालियों को पानी की टंकी से जोड़ कर, स्थान तथा धन की वचत कर लेते थे। लॉर्ड शैफ्टसवरी ने लन्डन के हर कोने में एक ऐसा कमरा खोज निकाला था, और ऐसा कमरा भी ढूंढ लिया था जिसके फर्श के नीचे ही गन्दा कुआ वना था। इसे हमें सौभाग्य की ही वात मानना चाहिये कि हैजे की वीमारी सर्वप्रथम उसी वर्ष आई जिस वर्ष कि 'रिफार्म-विल' वना और उसके वाद फिर सन् १८४८ में आई, इस वीमारी के कारण समाज ने अपनी आत्मरक्षा के लिये स्वच्छता का पालन करना आरंभ कर दिया था। उस समय के एक लोकप्रिय पत्र में पूरे पृष्ठ का एक व्यंग्य चित्र छपा था जिसमें मि. पंच को शहर के गन्दे नाले पर ध्यानावस्थित मुद्रा में वैठे हुए हैमलेट के रूप में दिखाया गया था—कल्पना किसी वड़े आदमी (एल्डरमैन) के अवशेषों को तव तक क्यों नहीं ढूंढ पाती जव तक कि वे उसके अभिरक्ष्यों (वार्ड) को विषाक्त नहीं बना देते?

जन स्वास्थ्य सम्वन्धी कानून (पब्लिक हैल्थ एक्ट) सर्व प्रथम १८४८ में वना था। और उसके वनने में हैजे की महामारी तथा एडविन चाडविक, जो पुअर लॉ

कमिश्नर्स के सेक्रेटरी के नाते तथ्यों को भली भांति समझ सके थे, दोनों ही का हाथ था।

उसने लिखा है : "जेल पहले अपनी गन्दगी तथा रोशनदानों की कमी के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध थे, लेकिन इंगलैंड की सबसे खराब जेलों का वर्णन जो हॉवर्ड ने किया है (जिन्हें कि वह यूरोप के निकृष्टतम जेल मानता है) उनसे मैंने और डा. ऑरनोट ने एडिनबरा तथा ग्लासगो के जिन जेलों का निरीक्षण किया था वे कहीं अधिक गन्दे थे। हॉवर्ड ने जिन जेलों का विवरण दिया है उनसे अधिक गन्दगी, अधिक शारीरिक यंत्रणा और नैतिक विघटन लिवरपूल, मैनचेस्टर अथवा लीड्स तथा मेट्रोपोलिस के कई बड़े भागों में भूमि के नीचे तहखानों में रहने वाली जनसंख्या में मिलेगा।" लेकिन १८४८ के जन स्वास्थ्य अधिनियम को जो कि कार्य की अनिवार्यता के बदले अनुमति प्रदान करने पर अधिक बल देता था, अगले बीस वर्षो तक नगरपालिकाओं द्वारा कार्यान्वित नहीं किया जा सका। केवल सन् १८७० के दशक में ही इस अधिनियम को कार्यान्वित करने के लिये हुई स्थानीय स्वशासन समिति (लोकल गवर्नमेंट बोर्ड) की स्थापना तथा जोसेफ़ चैम्बरलेन के उत्थान के साथ बर्मिंघम के समाज सुधारक नगरपालिकाध्यक्ष (मेयर) के प्रयत्नों द्वारा एक नवीन युग का आगमन हुआ। इसके बाद नगरपालिकाओं ने अपने प्रजातांत्रिक गठन का परिचय देते हुए व्यापक स्तर पर जन हित के कल्याण कार्य किये, जबकि राज्य (स्टेट) अनिवार्य स्तर निर्धारण के प्रति ही आग्रह करता रहा। सन् सत्तर के दशक-वर्षो के पूर्व आवास व्यवस्था तथा स्वच्छता सम्बन्धी सुधारों के कारण न तो मृत्यु संख्या कम हुई और न शताब्दी के अन्त तक इंगलैंड के शहरों में स्वच्छता को लेकर कोई अपेक्षित प्रगति हुई।

लेकिन इस सदी के मध्यवर्ती वर्षों में भी कुछ प्रगति अवश्य हुई थी। लॉर्ड शैफ्टसबरी ने, ऐच्छिक अनुदानों द्वारा कुछ आदर्श मकानों का निर्माण करवाया था और हैजे जैसी महामारी से उनकी रक्षा क्षमता ने संसद को आम मकानों के निरीक्षण के लिये १८५१ में अधिनियम बनाने के लिये प्रेरित भी किया, इसके साथ ही स्वास्थ्य और प्रकाश के पुराने शत्रु अर्थात् खिड़कियों पर लगाये जाने वाले कर, को भी समाप्त कर दिया गया। उस वर्ष, जबकि बृहद् प्रदर्शनी (ग्रेट एक्जीबीशन) की कांच की ऊंची आकर्षक छत को हाइड पार्क पर आच्छादित किया गया था और संसार ने इंगलैंड की सम्पन्नता, प्रगति और ज्ञान को प्रशंसा की दृष्टि से देखा था, एक और 'प्रदर्शनी' उस पथ की भी आयोजित की जा सकती थी जहां कि गरीब लोग रहा करते थे, इससे विदेशी दर्शकों को इस नवीन युग के उन खतरों का भी पता चल सकता था जो कि उसमें निहित थे। विदेशी गन्दी बस्तियां (स्लम्स) भी उतनी ही निकृष्ट थीं लेकिन यूरोपीय देशों में बहुत कम जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों के प्रभाव से अभी अलग हो सकी थी।

यदि हम उन लोगों से, जिन्हें कि असन्तुलित राजनैतिक अर्थव्यवस्था (पोलिटिकल

इकॉनामी) के शिकार हुए लोगों से सहानुभूति थी प्रश्न करें तो हमें 'इकानामिस्ट' समाचार-पत्र में मई १८४८ में चाडविक के पब्लिक हेल्थ अधिनियम के विषय में प्रकाशित यह टिप्पणी ही प्राप्त होगी कि :

'कष्ट तथा बुराई प्रकृति प्रदत्त वस्तुएं है, उनसे मुक्ति असम्भव है और बिना उनमें निहित उद्देश्यों को समझे कानून बनाकर उन्हें दूर करने के आतुर प्रयत्न सदा भलाई के स्थान पर केवल बुराई उत्पन्न करते हैं।' विचारधाराएं (डॉक्ट्राइन्स); चाहे वे किसी भी प्रकार की हों, मनुष्य जाति के कम से कम आधे दुःखों के कारण रही हैं, लेकिन सौभाग्य से इस काल के अंग्रेज केवल विचारधाराएं ही नहीं बनाते रहे थे, बल्कि 'टेन आवर्स बिल' तथा 'पब्लिक हेल्थ एक्ट' जैसे कानूनों की भी, उस समय के प्रचलित व्यक्ति स्वातन्त्र्य (लैसे फेयर) विषयक सिद्धान्तों के बावजूद, रचना की गई थी।[1]

इस बीच, यद्यपि जन स्वास्थ्य में कोई प्रगति नहीं हुई थी लेकिन सामान्य व्यवस्था जरुर स्थापित हो गई थी। सर रॉबर्ट पील द्वारा नागरिक पुलिस संस्था का, जिसमें कि लोग नीले कोट तथा ऊंचे टोप (जिनके स्थान पर बाद में लोहे के टोप (हेलमेट) पहने जाने लगे थे) पहनते थे, प्रचलन मेट्रोपोलिटन क्षेत्र में सन् १८२९ में किया गया था। लेकिन वैयक्तिक स्वतन्त्रता तथा सम्पत्ति एवं वैयक्तिक सुरक्षा की कामना करने वाले लोग लन्डन के प्रभावशाली पुलिस के सिपाहियों (बॉबीज) को अन्यत्र भी रखवाना चाहते थे। सन् १८५६ से प्रत्येक जिले और क्षेत्र में एक पुलिस दल का रखा जाना अनिवार्य हो गया, जिसके आर्थिक प्रबन्ध तथा अनुशासन की व्यवस्था अंशतः जहां स्थानीय प्रशासन के अधीन थी, अंशतः राष्ट्रीय प्रशासन से सम्बन्धित थी। डॉगबेरी तथा वरजेस के चौकीदार (वाचमैन) सदा के लिये हटा दिये गये थे, व्यक्ति तथा सम्पत्ति की रक्षा बिना उसकी स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप किये सम्भव थी और समाओं तथा हुल्लड़बाजी पर शान्तिपूर्वक तथा पीटरलू के विपरीत सैनिक दस्तों की सहायता लिये बिना ही उन पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता था।

दोनों सुधार बिलों (१८३२-१८६७) के बीच की अवधि को 'कोयले तथा लोहे' का युग कह सकते हैं जो इस समय अपनी चरम अवस्था में था—दूसरे शब्दों में कह सकते हैं, यह 'रेलों का युग' था।

संसार को रेलों की देन इंगलैंड ने ही दी थी। रेल का जन्म वास्तव में बड़ी मात्रा में कारखानों तथा घरेलू कार्य के लिये खान से कोयला लाने के लिये किये गये प्रयोगों के फलस्वरूप हुआ था। सन् १८२० के दशक में कोयले को लकड़ी अथवा लोहे की

---

[1] क्लैपहम, I, पृ० ५३६-५४७; फे, सी. आर., ग्रेट ब्रिटेन फ्रॉम एडम स्मिथ टु दि प्रेजेन्ट डे, पृ० ३६२-३६५; इका. हिस्ट. रिव्यू, अप्रेल १९३५, पृ० ७१-७८, ग्रिफिथ, पॉपुलेशन प्रॉब्लम्स ऑफ़ दि एज ऑफ़ माल्थस, पृ० ३९-४२।

पटरियों पर घोड़ों अथवा स्थिर एंजिनों, अथवा जॉर्ज स्टीफेन्सन के वाष्पचालित एंजिन (लोकोमोटिव) के प्रतिस्पर्धी प्रयत्नों को लेकर काफी विवाद रहा था। इन प्रयत्नों में 'लोकोमोटिव' की विजय हुई थी और इसके कारण केवल सामान लाने ले जाने के अनपेक्षित क्षेत्र का द्वार ही नहीं खुल गया था वरन् यात्रियों के आने जाने का मार्ग भी निकल आया था। इससे केवल नहरी आवागमन को ही नहीं वरन् अन्य गाड़ियों को भी काफी धक्का लगा, मि. वेलर का पुराना और खास धन्धा समाप्त हो गया था। कोयला-क्षेत्र में जो छोटे-छोटे रेल मार्ग बने थे उनकी सन् तीस और चालीस के दशकों में समूचे द्वीप के लिये राष्ट्रीय व्यवस्था के रूप में परिणति हो गई, यह विकास सन् १८३६-३७ तथा १८४४-४८ में रेलों पर जो खर्च किया गया था तथा सोच विचार किया गया था उसका परिणाम था।

सन् तीस के दशक में रेल मार्ग को प्रोत्साहित करने वाले तथा उसके विकास में धन लगाने वाले लोगों में अनेक डिसेन्टर्स थे—विशेषतः मिडलैंडस् तथा उत्तर अर्थात पीजेज़, क्रोपर्स तथा स्टर्जेस के शांति तथा सादगी में विश्वास करने वाले 'मित्र मंडल' के सदस्य लोग (क्वेकर्स) थे। ब्रैडशा का मूल रेलवे टाइम टेबल सन् १८३९ में मानव जाति के एक सहायक 'मित्र' (फ्रेन्ड) द्वारा प्रसारित किया गया था; बीसवीं शताब्दी के पूर्व तक 'ब्रैडशा' के बाहरी आवरण पर जनवरी आदि के बदले क्वेकर्स द्वारा निर्धारित महीने के नाम जैसे 'प्रथम मास' आदि छपे होते थे।

लेकिन सन् चालीस के दशक में जॉर्ज हडसन के नेतृत्व में, जिसे 'रेलों के राजा' (रेलवे किंग) कह कर भी पुकारा जाता था, आम जनता रेलों के प्रति अत्यधिक आकर्षित हो चुकी थी और कई असफल तथा झूठी कम्पनियों को धन देकर खो चुकी थी। Feames de la Pluche, Esq., सम्बन्धी थैकरे की डायरी में धमाके और टकराने का विनोदपूर्ण ढंग से उत्तेजनापूर्ण वर्णन किया गया है। यद्यपि मूर्ख लोग मूर्ख बन चुके थे, लेकिन इस सबके समाप्त हो जाने पर सफल लोगों की एक बड़ी पंक्ति बच गई थी। हडसन केवल एक धोखा देने वाला व्यक्ति ही नहीं था, सम्पूर्ण इंगलैंड पर उसने अपनी छाप छोड़ी थी। सन् १८४३ में ग्रेट ब्रिटेन में लगभग २००० मील रेल-मार्ग बन चुका था, सन् १८४८ में ५००० मील तक पहुंच गया था।[1]

इसके बाद से भारी सामान लाने-ले जाने तथा लम्बी यात्रा के लिये साधारणतः रेलों का ही उपयोग किया जाने लगा था। जन सेवा तथा समृद्धि के क्षेत्र में आवी

---

[1] ट्रॉलोप की डा. थोर्न नामक पुस्तक में सर रोगर स्कैचर्ड को स्वदेश तथा विदेश में अंग्रेजों के सहयोग से होने वाले रेलों तथा इन्जीनियरिंग (यन्त्र-विज्ञान) के विकास वाले इस सशक्त काल के एक 'स्वनिर्मित व्यक्ति' के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है। काल्पनिक स्कैचर्ड के स्थान पर अधिक सम्मानित तथा वास्तविक इन्जीनियर की जीवनी के लिये 'जॉन ब्रन्टन, स बुक' कैम्ब. प्रेस, १९३९ देखने योग्य है।

शताब्दी तक प्रगति होते रहने के बाद अधिकांश नहरों को बर्बाद कर दिया गया और उनमें से कई को तो स्थानीय रेलवे कम्पनियों ने उन्हें काटने के उद्देश्य से ही समाप्त कर दिया। प्रमुख सड़कें भी अब राष्ट्र की धमनियों के रूप में नहीं रही थीं। घोड़ा-गाड़ियों के साथ ही डाक गाड़ियां तथा अभिजात परिवारों के लिए उपयोग में आने वाली भारी गाड़ियां भी दिखाई नहीं देती थीं। राजधानी में अब सहज प्रकार की गाड़ियां, जैसे 'लैन्डाउ' 'विक्टोरिया' आदि ही दिखाई देती थीं। सम्पूर्ण देश में यह युग तांगों (दो पहियों और एक घोड़े वाली गाड़ी), खुली छत वाली बग्घियों, टट्टू-गाड़ियों तथा कुत्ता-गाड़ियों का था। यात्रियों तथा सामान दोनों ही के उपयोग के लिये घोड़ा-गाड़ियों का प्रयोग रेल-यातायात के लिए सहयोगी ही सिद्ध हुआ और इसी कारण पनपा भी। सभी जगह रेल नहीं थी और फिर 'रेलवे स्टेशन तक पहुँचने के लिये भी' उनकी आवश्यकता थी। छोटी सड़कों की संख्या बढ़ती गई और बड़ी सड़कें मोटर कार का आविष्कार होने के पूर्व तक सुनसान होती गईं।[१]

रेलों के विकास के साथ ही टेलीग्राफ़ (तार) का भी विकास हुआ, उसका जन्म ही एक प्रकार से नई रेल प्रणाली की सहायता के लिये हुआ था। सन् १८४८ तक १८०० मील का रेल मार्ग, अर्थात् कुल रेल-मार्ग के एक तिहाई भाग को, टेलीग्राफ तारों से सज्जित कर दिया गया था। सन् १८४६ में बनी दि इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ कम्पनी ने १८५४ तक लन्डन में अपने सत्रह कार्यालय स्थापित कर लिये थे जिनमें से आठ रेलवे क्षेत्र में थे। सन् १८४७ में विश्वविद्यालय के कुलपति (चान्सलर) पद के चुनाव के लिये प्रिन्स कनसोर्ट का नाम प्रस्तावित करने के लिये कैम्ब्रिज के सदस्य गणों जैसे पुरातन वादी लोगों ने भी टेलीग्राफ का उपयोग किया था।

जिन वर्षों में रेल व्यवस्था तथा इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ का विकास हुआ उन्हीं दिनों डाक-प्रणाली (पैनी पोस्ट) भी विकसित हुई; इसकी स्थापना निःस्वार्थ सेवक तथा उद्योगी रोलैन्ड हिल के प्रयत्नों के फलस्वरूप हुई थी जिसे अव्यवस्थित प्रशासन सेवा तथा राजनीतिज्ञों की उदासीनता तथा विरोध का सामना करते हुए भी जन साधारण का सहयोग मिल गया था। इस महान परिवर्तन के पूर्व जो गरीब लोग अपने काम की तलाश में स्वदेश अथवा विदेश की यात्राएं किया करते थे वे अपने माता-पिता तथा मित्रों से अत्यधिक डाक व्यय के कारण यदाकदा ही समाचारों का आदान-प्रदान कर

---

[१] सेमूर की 'पिकविक' पुस्तक के द्वितीय अध्याय में घोड़ा-गाड़ियों की पंक्ति का वर्णन सन् तीस के दशक में उनकी आदिम अवस्था को दर्शाता है जिसमें चालक का स्थान ऊपर होने की बजाय छत के नीचे एक तरफ हट कर हुआ करता था। सन् चालीस के बाद से रेल, पोषाक तथा सामाजिक प्रथाओं में हुए परिवर्तनों को पंच के चित्रों में देखा जा सकता है।

पाते थे। सस्ते डाक टिकट की व्यवस्था के लिये रोलैण्ड हिल की योजना ने मानव इतिहास में गरीबों को सबसे पहली बार अपने बिछुड़े हुए स्नेही जनों से पत्राचार की सुविधा प्रदान की थी। और क्योंकि व्यापारियों को भी यह सस्ती योजना एक वरदान सिद्ध हुई तथा डाकखाने द्वारा अपना लिये जाने के बाद इससे उन्हें आर्थिक लाभ भी काफी हुआ, संसार के प्रत्येक सभ्य देश ने इस प्रणाली को अंगीकार कर लिया था। इस महान सुधार कार्य में राज्य को एक प्रमुख भूमिका अदा करनी थी लेकिन विचार से लेकर नेतृत्व तक सभी कुछ एक व्यक्ति की ही कर्मण्यता तक सीमित रहे; हां उसे जनमत का समर्थन अवश्य प्राप्त था।

सन् चालीस के दशक में द्वीप में होने वाली रेलों की तेज प्रगति के बाद नौकाओं में भी पतवारों की जगह वाष्प शक्ति का उपयोग किया जाने लगा और इंगलैंड की व्यापारिक जहाजरानी में लकड़ी के स्थान पर लोहे का उपयोग किया जाने लगा। सन् १८४७ तक हमारे वाष्पचालित जहाजों की संख्या बहुत थोड़ी थी और तीन लाख टन के व्यापारिक यातायात के आगे इन जहाजों की कुल भार-वहन क्षमता केवल ११६,००० की थी। लेकिन सन् पचास और साठ के दशकों में बड़े समुद्री जहाजों के लिए वाष्प का अधिकाधिक प्रयोग किया जाने लगा था और पहले लोहे का और बाद में उनमें फौलाद का प्रयोग किया जाने लगा था। इंगलैंड में लोहे और फौलाद के बढ़ते हुए उत्पादन तथा उत्पादन के लिये धातु तथा वाष्प शक्ति के उपयोग से यह परिवर्तन घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित था। सन् १८४८ में ब्रिटेन सम्पूर्ण विश्व में उत्पादित ढलवां लोहे (पिग आइरन) का लगभग आधा भाग पैदा करता था: अगले तीस वर्षों में यह उत्पादन तिगुना हो गया था। स्टेफोर्डशायर, वेल्स तथा टाइनेसाइड का उत्तर-पूर्वी इंगलैंड तथा मिड्ल्सब्राड भी लौह-उत्पादक क्षेत्र थे जो अब वैज्ञानिक आविष्कारों के माध्यम से फौलाद युग में अग्रणी बन गए थे।[१]

विक्टोरियाकाल के मध्य में इस प्रगति से प्राप्त होने वाली सम्पदा ने मजदूर वर्ग के एक बड़े भाग का वेतन बढ़ा कर सामाजिक समस्या के दबाव को काफी हल्का कर दिया था, और श्रमिक संगठनों (ट्रेड यूनियन्स) तथा सहकारिता आन्दोलन ने राष्ट्रीय लाभ के समान वितरण में काफी सहायता की थी।

इस राष्ट्रीय लाभ की राशि निस्सन्देह काफी अधिक थी। केलिफोर्निया तथा आस्ट्रेलिया में हुई स्वर्ण की खोज ने उस व्यापार की प्रगति को, जिसके द्वारा कि

---

[१] क्लपैहम (II, ५१५) लिखता है कि पीटरमैन के जनसंख्या विषयक मानचित्र में जो सन् १८५१ में तैयार किया गया था और जिसमें औद्योगिक स्थलों को भी दर्शाया गया था, उसमें मिड्ल्सब्राड, अथवा बॅरो, स्कारथिफ अथवा न्यूपोर्ट किसी भी स्थान को लौह उद्योग के केन्द्र के रूप में नहीं दिखाया गया था। उस समय के बाद उनका विकास काफी तेजी से हुआ।

इंगलैंड को वाणिज्य तथा उद्योग दोनों ही क्षेत्रों में अन्य देशों से आगे होने का सौभाग्य मिला था, एक ऐसे युग में पहुँचा दिया था जिसमें वह इस शताब्दी के मध्यवर्ती वर्षों में ही अपने परिश्रम का फल प्राप्त कर सकता था। सन् १८७० में यूनाइटेड किंगडम का विदेशों से होने वाला व्यापार, फ्रांस, जर्मनी तथा इटली के सम्मिलित व्यापार से भी अधिक हो गया था और यूनाईटेड स्टेट्स (अमरीका) की तुलना में तीन अथवा चार गुणा अधिक था।

जिस समय ये महान औद्योगिक तथा व्यापारिक विकास अत्यधिक तीव्र गति से आगे बढ़ रहा था, ब्रिटेन की कृषि व्यवस्था भी धन की प्रचुरता तथा खेती के यंत्रों के अधिकाधिक प्रयोग द्वारा प्रगति कर रही थी। अनाज अधिनियमों (कॉर्न लॉज) के सन् १८४६ में रद्द हो जाने से यद्यपि मूल्य स्थिर हो गये थे, लेकिन कृषि की प्रगति में इससे अगली पीढ़ी तक के लिये कोई बाधा नहीं उत्पन्न हुई और इसका कारण यह था कि अमरीका अभी इंगलैंड को विपुल मात्रा में खाद्यान्न देने को तैयार नहीं था। सन् १८५१ में कुल रोटियों की खपत के एक चौथाई भाग का ही विदेशों से आयात होता था।

खाद्यान्न अधिनियम का रद्द होना मैनचेस्टर तथा शहरी जनता के लिये विजय की बात थी और इससे निस्सन्देह उद्योगों को बल ही प्राप्त हुआ। लेकिन इससे तत्काल किसी भी आर्थिक अथवा सामाजिक क्रान्ति को बल नहीं मिला। नगर यद्यपि प्रजातांत्रिक व्यवस्था से सम्बद्ध थे लेकिन देहात अब भी जमींदारी वर्ग, तथा उनके सहयोगियों तथा उनके अनुगामी लगान देने वाले किसानों के हाथ में था जिनकी गतिविधियां पिछली पीढ़ी की अपेक्षा सन् साठ के दशक में अधिक सशक्त थीं। देहाती गृहस्थ जीवन, जिसमें शिकार तथा राजनैतिक व साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन काफी हुआ करता था। इन आयोजनों में सहज मनोरंजकता अठारहवीं शताब्दी की अपेक्षा—जबकि जमींदार से इन आयोजनों के लिये अनुमति प्राप्त करना आवश्यक था—अधिक थी, यद्यपि नैतिक संयमों की ओर से अधिक ध्यान दिया जाता था। देहाती क्षेत्रों में जनमत के आधार पर अब भी किसी सरकार का गठन नहीं हुआ था। प्रशासन तथा न्याय सम्बन्धी अधिकार अब भी जमींदार वर्ग से चुने गये 'शान्ति' के समर्थक सम्मानित न्यायाधीशों के ही हाथ में थे। पुरातनकाल से चला आ रहा जमींदार वर्ग के मजिस्ट्रेटों का शासन अब भी चल रहा था, अन्तर केवल इतना था कि समाचार पत्रों तथा युग की मांगों के अनुसार अब वह हेनरी काल की अपेक्षा अधिक आलोचना का विषय बन गया था।

रेलों के कारण शहर तथा गांव की निरन्तर घटती हुई दूरी तथा खेती के कामों में भी वैज्ञानिक ज्ञान तथा मशीनों के प्रयोग के कारण धनी शहरी आबादी वाले इस छोटे द्वीप के, जिसने सभी ग्रामीण परम्पराओं से स्वयं को एकदम मुक्त कर लिया था,

पुराने ग्रामीण जगत् में प्राचीन प्रथाओं, आचार-विचारों तथा स्थानीयता के पृथकत्व शहरी शक्तियों के आगे समर्पण अब मात्र कुछ समय की ही दूरी प्रतीत होती थी। लेकिन वह समय अभी नहीं आया था। सन् साठ और सत्तर के बीच इस परिवर्तन क्रम के पूर्ण हो पाने के लिये अभी दो बातों की कमी थी—ब्रिटिश कृषि व्यवस्था का आर्थिक विखंडन तथा शहरी शिक्षा का सार्वभौमिक प्रसार अभी बाकी था।

जिस समय विक्टोरिया सिंहासनारूढ़ हुई 'बृहद भू-सम्पति' [व्यक्तिगत] ('ग्रेट एस्टेट') व्यवस्था पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित हो चुकी थी। अन्तिम स्टुअर्ट राजाओं के समय से ही खुद-काश्त करने वालों तथा छोटे भूस्वामियों के हाथ से अधिकाधिक भूमि ऐसे बड़े जमींदारों के पास जा रही थी जिनके वैवाहिक सम्बन्ध अब नये शहरी धनिकों से होने लगे थे और ये लोग बड़ी-बड़ी अचल सम्पत्तियां एकत्र कर तथा देहात में विश्राम स्थल बनवा कर उनकी श्रेणी में गिने जाने लगे थे। छोटे ज़मींदार समाप्त हो गये थे और उनके महल किराये पर उठा दिये गये थे; मुआफीदारों की संख्या भी पहले से काफी कम हो गई थी; मध्यमस्तरीय तथा बड़ी सम्पत्तियां (एस्टेट्स) एक सामान्य बात हो गई थी।

लेकिन भू-सम्पत्तियों (एस्टेट्स) के बड़े आकार धारण कर लेने का यह अर्थ नहीं था कि उसी अनुपात में खेतों का आकार भी बढ़ गया। फिर भी औसतन वे पहले से अवश्य ही बड़े हो गये थे। लेकिन आम तौर पर उन खेतों की संख्या ही अधिक थी जिन्हें कि अकेला परिवार बिना श्रमिकों की सहायता के जोत सके। और निस्सन्देह ऐसे खेतों की संख्या आज भी काफी अधिक है—खास तौर से उत्तर के चरागाही जिलों में यह इस कारण और भी है कि मशीनों ने जनशक्ति की आवश्यकता को कम कर दिया है।[1]

अब तक जो भूमि सन् १८४६ के खाद्यान्न अधिनियम के रद्द हो जाने के बाद बीस वर्ष बाद तक बेकार पड़ी हुई थी उस पर बाड़ लगा कर अब खेती की जाने लगी

---

[1] सन् १८५१ में पांच एकड़ से कम वाली जमीन को छोड़ देने पर इंगलैंड तथा वेल्स में खेतों का आकार इस प्रकार था :

क्रम	आकार-एकड़	खेतों की संख्या	कुल एकड़
१	५-४९	९०,१००	२, १२२, ८००
२	५०-९९	४४,६००	३, २०६, ५००
३	१००-२९९	६४,२००	११, ०१५, ८००
४	३००-४९९	११,६००	४, ३६०, ९००
५	५००-९९९	४,३००	२, ८४१, ०००
६	१००० तथा उससे अधिक	७७१	१, ११२, ३००

क्लैपहम, इका. हिस्ट. ऑफ़ ब्रिटेन, II, पृ० २६४।

थी। द्वीप में ऐसे लोगों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही थी जो मुख्यतया अपने द्वारा उपजाए अन्न पर ही निर्भर करते थे। सन् पचास के दशक में खनिज स्वर्ण की खोजों के कारण मूल्य में वृद्धि हो गई थी। सन् साठ के दशक में, जिस समय यूरोप तथा अमरीका में युद्ध छिड़ रहा था, इंगलैंड में शान्ति थी। अब भी पशुओं की संख्या में काफी प्रगति हुई। सिंचाई तथा खाद की व्यवस्था में हुई प्रगति से, एक जिले के बाद दूसरे जिले और एक गांव के बाद दूसरे गांव में यांत्रिक हल के प्रचार से, रॉयल एग्रीकल्चरल सोसाइटी द्वारा किये गये कार्यों से, बड़े जमींदारों द्वारा अपनी भू-सम्पत्ति के विकास के लिये अधिकाधिक धन खर्च करने तथा उसमें गर्व का अनुभव करने से—इन सभी बातों से लॉर्ड पामरस्टन के इंगलैंड में अधिकाधिक भूमि पर खेती की जाने लगी थी। सन् साठ के दशक में आक्सफोर्ड के पहाड़ी स्थलों की, जहां कि वह अपने मित्र आर्थर क्लफ के साथ बीस वर्ष पहले आ चुका था, पुनः यात्रा करने पर मैथ्यू आरनोल्ड को कृषि के 'अव्यवस्थित विकास' के कारण नहीं वरन् उसके अज्ञान-पूर्ण प्रसार के कारण चिन्तित होना पड़ा।

'मैं इन ढलानों से परिचित हूँ,
और मैं नहीं तो इन्हें फिर और कौन जानेगा ?
लेकिन इस स्नेहिल पर्वतांचल की
छांह-भरी घाटियों में किसी समय
कीलदार कांटों के ही साथ खड़े थे
श्वेत तथा वासन्ती फूलों वाले घने जंगली वृक्ष,
और दूर बार-बार थाम लेते थे दृष्टि को
मीनारवत खड़े वृक्षों की परिधि पर
झूमते हुए फूल-गुच्छ,
और अब नीचे
हर हरे भरे किनारे पर पहुँच चुकी है
हलवाहे किशोरों की टोली
और पिछली विरासत के अनाथ शिशु;
इधर उधर किसी कोने में
यदा कदा चमक उठते हैं गुलाब'।

विक्टोरिया के सिंहासनरूढ़ होने के समय खुले खेतों, की हदबन्दी तथा छोटे पट्टीदार (स्ट्रिप) खेतों की व्यवस्था की समाप्ति (कुछ को छोड़कर) तो एक पूर्ण तथ्य ही बन चुकी थी। लेकिन 'लोक साधारण भूमि' (कामन्स) की हदबन्दी कभी पूर्ण नहीं हो पाई थी और सन् १८४५ के 'जनरल एन्क्लोजर अधिनियम' के अनुसार इस कार्य को पूरा किया जा रहा था।

साधारण भूमि (कॉमन लैंड) की हदबन्दी का कार्य, जो पिछली कई शताब्दियों से कई झगड़ों तथा शिकायतों तथा साथ ही द्वीप के उत्पादन में होने वाली अभिवृद्धि

का कारण रहा था—अन्त में सन् १८६५ तथा १८७५ के दशक में स्थगित कर दिया गया। यह परिवर्तित हो रहे सामाजिक सन्तुलन की विशेषता थी कि सामूहिक भूमि की घेरेबन्दी को अन्त में ग्रामीण किसानों के विरोध के कारण नहीं बल्कि शहरी जनता द्वारा इस आधार पर किये गये विरोध के कारण, कि उसे खेल के मैदानों तथा ग्राम्य अंचलों में छुट्टियों में प्राप्त होने वाले आमोद-प्रमोद से वंचित किया जा रहा था स्थगित कर देना पड़ा। सामूहिक भूमि को सुरक्षित रखने वाले संघ (दि कॉमन्स प्रिजर्वेशन सोसायटी) ने बची हुई सामूहिक भूमि की समाप्ति का अंशतः समाप्त हो रहे गांव के सामान्य जन के हित का सहारा लेकर तथा प्रमुखतया आम जनता के स्वच्छ जलवायु के अधिकार की आड़ लेकर विरोध किया था। बर्कहैमस्टेड कॉमन (१८६६) के बड़े युद्ध तथा एपिंग फॉरेस्ट की रक्षा ने एक नये युग को जन्म दिया था। भूमि की घेरेबन्दी इंगलैंड में अपना कार्य कर चुकी थी और अधिक की अब कोई सम्भावना भी नहीं थी (क्लैपहम, I, ४५० नोट, ४५४; II, २५८-९)।

सन् १८६० तथा सत्तर के पूर्व के वर्षों में निरन्तर प्रगति करती हुई कृषि ने विविध प्रणालियों को प्रश्रय दिया था—लोथियान्स में वैज्ञानिक स्कॉट्स की भांति पूर्ण यांत्रिक कृषि से लेकर ससेक्स की बैलों द्वारा की जाने वाली खेती तक सभी प्रणालियों का विविध रूप इनमें सम्मिलित था। पिछले दो सौ वर्षों में खुले तथा भेड़ों के उपयोग में आने वाले जिन भू-खंडों को बड़े चौकोर खेतों में परिवर्तित कर दिया गया था उनमें आधुनिक वैज्ञानिक रीति से यांत्रिक कृषि का प्रयोग सहज ही हो गया, जैसे कैम्ब्रिजशायर में पश्चिम तथा दक्षिण पूर्व की भूमि, जिसे अनन्त काल से आवलयित कर रखा था उसे अब भी पुरानी झाड़ियों को काटकर बाड़ द्वारा ऐसे बेडौल छोटे-छोटे सीमांकित खेतों में ढाल दिया गया था जिससे कृषि की प्रगति में बाधा उत्पन्न होती थी। लेकिन लगभग सभी स्थानों (शायर) पर या तो मिट्टी के अलग होने के कारण या आर्थिक तथा सामाजिक अतीत में भिन्नता होने के कारण प्रणालियों की भिन्नता भी विद्यमान थी।

खेतों पर काम करने वाले श्रमिकों की दशा, विशेष रूप से दक्षिण में, सन् तीस तथा सन् चालीस के अकालग्रस्त वर्षों में, जबकि उन्हें वृत्ति देने वाला किसान स्वयं ही विपत्ति में था, काफी खराब थी। और खेतों तथा कारखानों में सभी जगह जब सन् १८३४ के नये निर्धन कानून (न्यू पुअर लॉ) द्वारा ग़रीब मजदूरों को मिलने वाली बाहरी सहायता को समाप्त कर दिया गया (निस्सन्देह सभी स्थानों पर ऐसा नहीं हुआ था) तथा जनता से आर्थिक सहायता ग्रहण करने के लिये प्राथियों को 'वर्कहाउस टेस्ट' (अनाथाश्रम की परीक्षा) में सफल होना अनिवार्य हो गया तब उन पर निस्सन्देह एक विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा था। निर्धन अधिनियम (पुअर लॉ) के कमिश्नरों की, जिन्हें कि इस अधिनियम के अन्तर्गत अधिकार प्राप्त थे, ऐसी ही निर्दय उपयोगितावादी तर्क प्रणाली थी। एक अत्यन्त भयंकर रोग का यह एक अत्यन्त कठोर उपचार था: पारिश्रमिक के अतिरिक्त निर्धन सहायता स्वीकार किये जाने की स्पीनहमलैंड की नीति

के कारण पारिश्रमिक की दर कम बने रहने के अतिरिक्त काम में लगे हुए श्रमिकों को कंगाल भी हो जाना पड़ा था, फिर यह नीति निर्धन-कोष में कर देने वालों का और भी शोषण कर रही थी। (देखिए पृष्ठ ४६६)। समाज को रोगमुक्त कर उसकी रक्षा के लिये शल्य क्रिया आवश्यक थी लेकिन बिना मूर्च्छाद्रव का प्रयोग किये चाकू चलाना अत्यन्त कष्टप्रद होता है। खेतों अथवा कारखानों में रोजगार की अपेक्षा निर्धन अथवा अनाथ आश्रमों के जीवन को कम आकर्षक बनाना ही कमिश्नरों का मुख्य उद्देश्य था, लेकिन चूंकि उस समय वे न्यूनतम पारिश्रमिक के विधान द्वारा रोजगार को आकर्षक न बना सके अतः बाध्य होकर उन्हें निर्धन-आश्रमों की सुख-सुविधा में कमी करनी पड़ी। फिर इसके अतिरिक्त वयस्क कामगारों की समस्याओं में अधिक उलझ जाने के कारण ये आयोग (कमीशन्स) बूढ़ों, बच्चों तथा अपंगों के साथ अपेक्षित कोमलता तथा न्यायोचित व्यवहार भी नहीं कर सके।

डिकेन्स का 'ओलिवर ट्विस्ट' निर्धन-आश्रमों की व्यवस्था पर ही एक प्रहार है; और विक्टोरिया कालीन संवेदनशील लोगों ने इस पर अनुकूल प्रतिक्रिया भी व्यक्त की। नये निर्धन कानून को नगर तथा ग्राम दोनों ही स्थानों के श्रमिक वर्गों ने एक उत्पीड़क अधिनियम के रूप में ही ग्रहण किया था, और निस्सन्देह अधिकांश में वह ऐसा था भी। लेकिन इसने एक केन्द्रीय व्यवस्था की रचना कर डाली थी जिसका पुरानी स्थानीय स्वायत्तता को भंग कर निर्धनों के कष्ट निवारण हेतु उपयोग किया जाने लगा था और उसे एक ऐसे राष्ट्र व्यापी स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया गया था जिसमें किसी प्रकार की लज्जाजनक कोई भी बात नहीं थी। निर्धन अधिनियम को प्रथम कमिश्नरों ने जो राष्ट्रीय तथा केन्द्रीकृत रूप प्रदान किया था उससे आगे चलकर परोपकार सम्बन्धी कार्यों द्वारा, जो कि अधिकाधिक अनुभवों तथा वैज्ञानिकता को स्वीकार करते रहने के कारण निरन्तर अधिकाधिक मानवतावादी होते गये थे, सुझाये गये सुधारों को व्यवहृत करने में काफी सुविधा हुई। सन् १८३४ में निर्धन अधिनियम (पुअर लॉ) के अपूर्ण तथा कठोर होने के कारण वह अपनी सीमाओं में बौद्धिक रूप से ईमानदार था, और उसके सुधार के बीजाणु भी उसी में निहित थे।

इसका कारण यह था कि नये निर्धन-अधिनियम के लिये जिस व्यवस्था का गठन किया गया था वह व्यक्ति-स्वातन्त्र्य की नीति (लैसे फेयर) पर आधारित न होकर उसकी विरोधी स्थिति पर खड़ी की गई थी। यह एक विशुद्ध बेन्थमवादी स्थिति अर्थात् जनमत तथा अधिकारीतन्त्र के समन्वय के सिद्धान्त पर आधारित थी; बेन्थम ने अपने 'कॉन्स्टीट्यूशनल कोड' में इसका सुझाव दिया था। तीन सरकारी कमिश्नरों (केन्द्रीय सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिकारी) का कार्य निर्धन अधिनियम को कार्यान्वित करवाने के लिये नियमों की रचना करना तथा उन्हें लागू करवाना था। लेकिन इन नियमों को व्यवहार में लाना वास्तव में स्थानीय प्रजातांत्रिक संगठनों—संरक्षक-मंडलों—का कार्य था। पादरी प्रदेशों के प्रत्येक 'संघ' का

प्रशासन 'निर्धनों के ऐसे संरक्षक-मंडलों' द्वारा चलाया जाता था जिनका गठन मत गणना के आधार पर निर्धन कोष के लिये कर देने वालों द्वारा सम्पादित होता था। शीर्ष के केन्द्रीकृत अधिकारीतन्त्रीय प्रशासक तथा स्थानीय रूप से जनतांत्रिक पद्धति द्वारा गठित संरक्षक-मंडल, दोनों ही बैन्थमवादी विधि को स्वीकार करते हुए तथा उस सरकारी प्रणाली को, जिसमें कि देहात के भद्र लोग ही शांति-संरक्षक न्यायाधीशों के रूप में अवैतनिक रूप से कार्य किया करते थे, हटा कर स्थानापन्न किये गये थे।

लेकिन सन् १८३४ का नया निर्धन-अधिनियम ग्रामीण क्षेत्र के प्रशासन के लिये प्रयुक्त की जाने वाली एक संशोधित प्रणाली का एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण आरंभ था। इसकी कठोरता ने, विशेष रूप से परिवारों को परस्पर पृथक् करवा देने में जो[1] इसका भाग था उसने, निर्धन ग्रामीण लोगों के हृदय में बैन्थमवादी सुधारों के प्रति एक अरुचि उत्पन्न कर दी थी, और साथ ही उन्हें पुरानी प्रशासन विधि से, जिसमें कि शान्ति-रक्षक न्यायाधीशों का भाग अत्यन्त प्रमुख था, समझौता करवाने को बाध्य कर दिया, इसके बाद से यह पारम्परिक प्रशासन विधि अगले पचास वर्षों के लिये पुनः सत्तारूढ़ हो गई। नये निर्धन-अधिनियम ने भले ही स्थानीय शासन में परिवर्तन के मार्ग सुझाये हों लेकिन वह अत्यधिक अलोकप्रिय था।

ह्विग तथा टोरी जमींदारों ने ग्रामीण क्षेत्रों पर अधिकार जताने वाले निर्धन-अधिनियम के प्रशासनीय पक्ष को क्यों चुपचाप स्वीकार कर लिया? केवल निर्धन-अधिनियम के प्रसंग में ही उन लोगों ने ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय अधिकारीतन्त्र तथा प्रजातांत्रिक व्यवस्था का अतिक्रमण मान लिया था। इसका कारण स्पष्ट है। गांवों

---

[1] सन् १८३८ में एक लोकप्रिय लेखक विलियम हॉविट ने अपनी पुस्तक रूरल लाइफ़ ऑफ़ इंगलैंड (II, पृ० १३१) में देहाती जीवन के सामान्य आनन्दों का विवरण देने के बाद लिखा है: मैं कई बार ईश्वर को इसके लिये धन्यवाद देता हूं कि गरीब सदा किसी निश्चित वस्तु के प्रति ही आकर्षित होता है तथा उसकी प्रशंसा करता है, उसके दैनिक पारिवारिक जीवन में एक ऐसी स्नेह सिक्तता की प्रधानता होती है जिससे अनेकों प्रकार के सहज तथा वास्तविक आनन्दों का उद्‌भव होता है, कम से कम इस देश में किसी ऐसी निरंकुश शक्ति ने उस प्रकार से यहां हस्तक्षेप करने का साहस नहीं किया है जिस प्रकार कि दासता प्रधान देशों में करती रही है और इसीलिये पति-पत्नी, मां-बाप-बच्चों, बहिन-भाई के परस्पर सम्बन्ध अटूट बने रहे हैं और पारिवारिक आकर्षण भी यथावत् रहा है। लेकिन हमारे नये निर्धन-अधिनियमों ने इस ईश्वर प्रदत्त सुरक्षा पर आघात किया। और जब तक कि एक सुदृढ़ राष्ट्रीय भावना के द्वारा इन शक्तियों को सत्ताहीन नहीं बना दिया जाता, प्रत्येक परिवार के लिये किसी भी दुर्भाग्य पूर्ण क्षण में निर्धनता की चपेट में आकर विघटित हो जाने की आशंका बनी ही रहेगी।'

के भद्र लोगों की इस परिवर्तन से स्पष्ट स्वार्थ सिद्धि होने वाली थी। पारिश्रमिक की कमी को पूरा करने के लिये कर-वसूली की पुरानी व्यवस्था में दी जाने वाली निर्धन-कर की राशि में निरन्तर वृद्धि होती जा रही थी और निराशावादी लोग तो यह भविष्यवाणी भी करने लगे थे कि अन्त में यह व्यवस्था सम्पूर्ण साम्राज्य की लगान-आय को ही निगल जाएगी। ह्विग पादरियों ने विधेयक को 'कृषि राहत कार्य' के रूप में प्रस्तुत किया था और पील तथा वेलिंगटन ने उसी रूप में स्वीकार भी कर लिया। वेलिंगटन के आदेश पर संसद सदस्यों (लार्ड्स) ने इस अलोकप्रिय विधेयक को उखाड़ फेंकने की इच्छा का विवश होकर दमन कर लिया।

सन् पचास तथा साठ के दशकों में कृषि तथा उद्योग की बढ़ती हुई समृद्धि से मजदूरों तथा किसानों दोनों ही को काफी राहत मिली थी। सन् १८७० के तुरन्त बाद कृषि सम्बन्धी पारिश्रमिक एक ऐसे बिन्दु तक पहुंच पाने की कई वर्षों तक कोई सम्भावना नहीं थी। अच्छे तथा बुरे दोनों ही समयों में उत्तरी क्षेत्रों के खेतीहर मजदूरों का पारिश्रमिक दक्षिणी क्षेत्रों की अपेक्षा पड़ोसी कोयला खानों तथा अच्छा पारिश्रमिक देने वाले उद्योगों के कारण अधिक था। यॉर्कशायर के वेस्ट राइडिंग क्षेत्र में कृषि कार्यों का पारिश्रमिक प्रति सप्ताह चौदह शिलिंग था जबकि विल्ट्स और सफॉक में यही पारिश्रमिक सात शिलिंग था। (क्लैपहम, *I*, पृ० ४६६-४६७, II, पृ० २८६ सारणी)।

जिन श्रमिकों को बन्द सामूहिक भूमि तथा खुली भूमि को छोड़ जाने के लिये बाध्य कर दिया गया था उन्हें नई भूमि दिलवा दी गई थी और सेवा भाव युक्त जमींदारों, पादरियों तथा बड़े किसानों ने उन्हें आलू के खेत प्रदान करने की भी व्यवस्था कर दी थी। उन्नीसवीं शताब्दी में कृषि-मजदूरों के लिये आलू उपजाना अत्यन्त उपयोगी था। लेकिन भूमि देने का कार्य मन्द गति से चल रहा था जिसका अर्थ केवल ढाढस बंधाने से अधिक और कुछ नहीं था।

सन् पचास और साठ के वर्षों में जिस समय कृषि प्रगति कर रही थी, पत्थर की छतों तथा दो अथवा तीन शयन कक्षों वाले ईंट के सुन्दर भवनों का बड़े भू-स्वामियों द्वारा अपने सम्पत्ति क्षेत्रों में, विशेष रूप से ड्यूक ऑफ़ बेडफोर्ड जैसों के जागीर-क्षेत्रों में, निर्माण करवाया जा रहा था। असुन्दर भवनों में उन अनेक पुराने निवास स्थानों को गिना जाता था जो मिट्टी तथा प्लास्टर से बने थे और जिनमें केवल दो ही कमरों की व्यवस्था थी। 'निकृष्ट कोटि के मकान छोटे-छोटे निजी खेतों पर बने सामान्यतया वे छोटे मकान थे जिनमें केवल उनका मालिक ही रहता था।' बड़े खेतों पर बने मकान केवल आकार में ही बड़े नहीं थे बल्कि छोटी कुटियाओं की तुलना में उनमें रहने का स्थान भी अधिक था। सर्वश्रेष्ठ कोटि के मकानों का निर्माण भू-स्वामियों द्वारा हाल ही में किया जाने लगा था। जहां किसी बड़े खेत (फार्म) पर दो सौ वर्षों

का पुराना मकान खड़ा था वह पुराने समय में किसी ज़मींदार का मकान रहा था। (क्लैपहम II, पृ० ५०५-५१२)।

अंग्रेज ज़मींदार यदि निःस्वार्थ सेवा भाव वाले नहीं तो कम से कम केवल मुनाफाखोर 'वणिक वृत्ति' वाला व्यक्ति भी नहीं था। 'हवेलियों' से प्राप्त होने वाले किराये से उनकी देख-रेख तथा टूट-फूट का खर्चा भी मुश्किल से निकल पाता था। निस्सन्देह उस समय स्वार्थी ज़मींदार काफी थे और अधिकांशतः उनमें श्रमिकों का जीवन स्तर उन्नत करने के प्रति ऐसी कोई सहानुभूति भी नहीं थी जैसी कि अच्छा पारिश्रमिक दिलवाने के लिये कृषि-संघों का गठन कर (१८७२-१८७३) जोसेफ आर्च ने दर्शायी थी। लेकिन इंगलैंड के ग्रामीण ज़मींदारों ने ग्राम तथा ग्रामवासियों के लिये काफी कुछ किया था, जबकि आयरलैंड के ग्रामवासी ज़मींदारों ने इंगलैंड के शहरी भू-स्वामियों की भांति लोगों के श्रम का शोषण ही अधिक किया। शहर की जिस गन्दगी में नगर का सम्पत्तिधारी भूस्वामी फंस गया था उसके कारण नगरवासी समाजवादी तथा परिवर्तनवादी लोग सभी 'भूस्वामियों' को हेय दृष्टि से देखने लगे थे जिससे ग्राम सम्बन्धी समस्याओं तथा भूस्वामियों के बीच की खाई निरन्तर बढ़ने लगी।

इस प्रकार अगले दशक में सहसा ही आपत्काल उत्पन्न हो जाने के पूर्व सन् १८७० के लगभग जब ब्रिटिश कृषि व्यवस्था अपने चरमोत्कर्ष तक पहुंची थी उस समय उसकी आधार शिला भूस्वामी तथा कृषक के सम्मिलित स्वामित्व की एक ऐसी अभिजात सामाजिक व्यवस्था थी जिसने यद्यपि उत्पादन के क्षेत्र में काफी उपलब्धियां कीं लेकिन लाभार्जन का बहुत ही थोड़ा अंश खेतिहर मजदूर को प्रदान किया। यद्यपि यह सत्य है कि उसे यूरोप के अन्य कृषि-मजदूरों की तुलना में अधिक पारिश्रमिक प्राप्त हुआ था लेकिन इंगलिश स्तर अथवा मानकों की दृष्टि से वह पर्याप्त नहीं था। इसी प्रकार यह भी सच है कि यूरोप के अधिकांश खुदकाश्त करने वाले किसानों की अपेक्षा उसकी आर्थिक स्थिति अधिक अच्छी थी। यह भी सत्य है कि इंगलैंड में कई छोटे खेतों (फार्मों) में पारिवारिक स्तर पर ही खेती की जाती थी। लेकिन जिस प्रकार किसी समय इंगलैंड में (और आज अन्य यूरोपीय देशों में) स्वाधीन किसानों की अकृषक लोगों की तुलना में कहीं अधिक संख्या थी वह स्थिति आज नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १८७५ के बाद जब 'फ्री ट्रेड' ने ब्रिटिश कृषि व्यवस्था की प्रगति को आघात पहुंचा कर अपने हितों को प्राप्त किया, उस समय शहरी मतदाता ग्रामीण जीवन के ह्रास के प्रति इस कारण कोई ध्यान नहीं दे रहा था कि ग्रामों का सम्बन्ध अभिजात व्यवस्था से था। अधिकांश अंग्रेज स्वतन्त्र तथा स्वाभाविक आर्थिक परिवर्तन के नाम पर राष्ट्रीय विपदा के बढ़ते हुए कदमों को सन्तोष की दृष्टि से देख रहे थे।

सन् १८३२ के सुधार विधेयक (रिफार्म-बिल) के पारित हो जाने के तुरन्त बाद ही उत्तर के औद्योगिक क्षेत्र में जीवनयापन सम्बन्धी कठिनाइयों—विशेष रूप से काम के घंटों को लेकर—मजदूरों ने एक तीव्र आन्दोलन छेड़ दिया था। यॉर्कशायर में एक सीमा तक इसमें परिवर्तनवादी (रैडिकल) तथा अनुदारतावादी (टोरी) दोनों ही सहयोग कर रहे थे। वेस्टमिंस्टर में इस आन्दोलन में सभी दलों ने भाग लिया और सन् १८३३ में ह्विग सरकार ने इसे कानूनी रूप प्रदान कर दिया। देश के प्रमुख नेता, ओस्टलर, सैडलर तथा शैफ्ट्सबरी, अनुदारवादी थे और साथ ही एवांगेलिकल भी थे यद्यपि इस आन्दोलन के पीछे औद्योगिक जन स्वयं कार्य कर रहे थे फिर भी एवांगेलिकल मानवतावाद ने शिक्षित नेतृत्व जिसमें अधिकांश परिवर्तनवादियों का नेतृत्व था, प्रदान करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। लेकिन देहात के अनुदार (टोरी) भद्र लोग इस आन्दोलन के विरोधी नहीं थे और इसका कारण यह था कि उद्योगपतियों के नये श्रीमन्त वर्ग के प्रति वे ईर्ष्यालु थे। खाद्यान्न अधिनियमों द्वारा गरीबों के रक्त शोषण के लिये इंगलैंड के भद्र-जनों द्वारा किये गये प्रयत्नों के प्रति जो विरोध हो रहा था उससे जमींदारों में एक क्रोध की लहर फैल गई थी; और यद्यपि उनके पूर्वजों ने ऐसी ल्यूडाइट शिकायतों की 'जैकोबिनवादी' कह कर खिल्ली उड़ाई थी लेकिन इन ज़मींदारों ने कारखानों की स्थिति पर आक्रमण करते हुए इसका उत्तर देना ही उचित समझा। सम्पन्न लोगों के पारस्परिक मतभेदों से उत्पन्न दरार ने श्रमिक को उनके ही घर में झांक कर देखने तथा अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाने में पर्याप्त सहायता की। और इस वर्गगत आरोपों-प्रत्यारोपों की पृष्ठ-भूमि में एवांगेलिकलों द्वारा केन्द्रित युग की एक ऐसी विशुद्ध मानवतावादी विचारधारा विद्यमान थी जिसे किसी धार्मिक सम्प्रदाय अथवा राजनैतिक दल तक ही सीमित नहीं माना जा सकता।

राजनीति में मानवतावादी भावना कोई अधिक शक्तिशाली नहीं थी। सन् १८३३ में इसके प्रभाव से साम्राज्य में दासता को समाप्त करने के लिये ब्रिटिश कर दाता ने दो करोड़ पाउन्ड की कर राशि प्रसन्नतापूर्वक देना स्वीकार कर लिया और वह समाप्त हो गई। उसी वर्ष देश के कपड़ा कारखानों में बच्चों को भी श्रम-यन्त्रणा से मुक्त कर दिया।

फैक्ट्री अधिनियम के प्रोत्साहकों ने यह देखा था कि बच्चों को लेकर मानवता की दुहाई सरलतापूर्वक दी जा सकती है।

मोन्स हैलेवी लिखते हैं : "यह सत्य है कि कार्यकर्ता काम के घंटों में कमी उन बच्चों के लिये नहीं करा रहे हैं कि जो मालिक की कठोरता की अपेक्षा उसके अत्याचारों के अधिक शिकार हैं बल्कि स्वयं अपनी सुविधा के लिये करा रहे हैं। लेकिन कारखानों में काम करने वाले बच्चों की संख्या अपेक्षाकृत इतनी अधिक थी कि बच्चों

के समय में तो कमी कर दी जाय और वयस्कों के समय में कमी न हो यह अस्वाभाविक था। ओस्टलर ने यद्यपि बच्चों के नाम पर ही इंगलिश मध्यवर्ग की सहानुभूति प्राप्त की लेकिन उसका वास्तविक उद्देश्य वयस्क श्रमिक को ही वैधानिक आरक्षण दिलाना था।" (हैलेवी, हिस्ट. इंग. पीप्ल, अनूदित, वाटकिन, III, पृ० १११)।

लार्ड एलथ्रोप के सन् १८३३ के फैक्ट्री अधिनियम द्वारा बच्चों तथा वयस्कों के काम के घंटों को सीमित कर दिया गया और अधिनियम के कार्यान्वयन हेतु ऐसे निरीक्षकों (इन्स्पेक्टर्स) की नियुक्ति भी की गई जिन्हें देखभाल के लिये किसी भी कारखाने में प्रवेश कर निरीक्षण का अधिकार प्राप्त था। उनकी नियुक्ति का सुझाव कुछ भले कारखाना-मालिकों ने स्वयं ही दिया था। क्योंकि वास्तव में समस्या बुरे मालिकों की नहीं बल्कि उन माता-पिताओं की थी जो अपने बच्चों की कमाई पर निर्भर करते थे और जिनके इस व्यवहार का समुचित निरीक्षण आवश्यक था। फिर अच्छे मिल मालिक यह चाहते थे कि बुरे मालिक जिस प्रकार पहले के अधिनियमों का भी उल्लंघन करते रहे हैं उस प्रकार अब न करें क्योंकि इससे भले मालिकों को भी हानि उठानी पड़ती थी, और इसके लिये वे राजकीय हस्तक्षेप की अपेक्षा करते थे।

सन् १८३३ में बच्चों को प्रदान किये गये इस विशेषाधिकार से आगे चलकर दस घंटे वाले विधेयक (टेन आवर्स बिल) का जन्म हुआ। कारखाना-अधिनियम सम्बन्धी यह दूसरा संकट सन् १८४४-४७ की अवधि में खाद्यान्न अधिनियमों (कॉर्न लॉज) के साथ-साथ प्रकट हुआ, और उस बड़े झगड़े का सम्पर्क प्राप्त कर अधिक विकट हो गया। दस घंटे वाले विधेयक (टेन आवर्स बिल) द्वारा कपड़ा मिल में काम करने वाले स्त्री-पुरुषों के दैनिक कार्य-काल को सीमित कर दिया गया था, क्योंकि वयस्क लोग अकेले काम नहीं कर सकते थे इसलिये सभी को केवल दस घंटे काम करना होता था। कार्य-काल के इस प्रकार सीमित हो जाने की कामगारों की वर्षों से इच्छा थी और यह तीव्रतम विरोधों का भी विषय रहा था। संसद में इस विषय पर बहुत ही विचित्र ढंग से मतदान हुआ था। उदारदलीय लोगों में—मेलबॉर्न-कोब्डेन तथा ब्राइट ने जहां इस विधेयक का विरोध किया, रसेल, पामरस्टोन तथा मेकॉले इसके पक्ष में थे। और अनुदारदलीय सदस्यों में भी इस पर मतभेद नहीं था, पील जहां इस विधेयक के कट्टर विरोधी थे अधिकांश आरक्षणवादी (प्रोटेक्शनिस्ट) जमींदारों ने इसके पक्ष में मत दिया। लेकिन लोकसभा (हाउस ऑफ़ कॉमन्स) में इस विधेयक को अन्त में पारित कराने का श्रेय फ़ील्डेन को है, जो 'इंगलैंड के कपड़ा उद्योग का सबसे बड़ा व्यक्ति था। लेकिन जिस व्यक्ति ने हाउस ऑफ़ कॉमन्स में विधेयक को प्रस्तावित करने का साहस किया' वह इंगलैंड का सबसे बड़ा रुई की कताई करने वाला उद्योग-पति फील्डन था, 'और जिस व्यक्ति ने संसद में विधेयक के पक्ष में जनमत बनाने का प्रयत्न किया वह भी एक मजदूर के स्तर से उठ कर उसी उद्योग में एक उद्योगपति बन गया था।' (हैमॉण्ड लार्ड शैफ्ट्सबरी, पृष्ठ १२१ एंड पैसिम)।

जिस प्रकार सन् १८३२ के रिफार्म बिल को मताधिकार के विस्तारित क्षेत्र के लिये उत्तरदायी माना जा सकता है उसी प्रकार सन् १८३३ तथा १८४७ के फैक्ट्री अधिनियम उन सभी नियमों तथा धाराओं के आधार माने जा सकते हैं जो सभी औद्योगिक क्षेत्रों की स्थितियों तथा काम के घंटों का नियंत्रण करती हैं। कारखानों की जिस व्यवस्था ने सम्पूर्ण प्रजाति के स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन को विनाश की ओर धकेला उसी ने धीरे-धीरे लोगों की आर्थिक स्थिति को इस स्तर तक ले आने में, कि काम करना सम्भव हो सके, एक महत्वपूर्ण भाग अदा किया। घरेलू काम काज की प्रणाली का निरीक्षण कर पाना उतना सहज नहीं था जितना कि कारखानों की देख रेख कर पाना सहज हो गया। रॉबर्ट ओवन ने कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों के उत्कृष्ट जीवन का जो स्वपन देखा था और जिसे उसने अपनी न्यू लेनार्क मिल्स में यथार्थ रूप दिया वही सौ वर्षो की अवधि में अधिकांश औद्योगिक जगत का मानक सिद्ध हो गया। और सन् १८३३ तथा १८४७ में अर्थात् उस काल में कि जो व्यक्ति-स्वातन्त्र्य (लैसे फेयर) की विचारधारा से आक्रान्त था और जब किसी ऐसे प्रयास का बहिष्कार स्वाभाविक था इसके लिये कुछ प्राथमिक निर्णय लिये गये। एक बार किसी प्रकार लोगों की भावनाओं को स्पर्श कर देने तथा आर्थिक लाभ पहुँचा देने के बाद केवल किसी विचार-धारा के आधार पर उन्हें वशीभूत कर पाना अत्यन्त दुरूह कार्य है। जैकोबिन-विरोधी काल में, पिछली पीढ़ी ने, जो केवल गरीबों का रक्त शोषण ही चाहती थी, 'लैसे फेयर' के केवल उन्हीं पक्षों को चुना था जिनसे उनके स्वार्थ की सिद्धि होती थी, और अन्य पक्षों की उपेक्षा कर दी थी। अब इस प्रक्रिया को बदला जा रहा था : उसी लोकसभा (हाउस ऑफ़ कॉमन्स) ने जिसने खाद्यान्न अधिनियमों को 'लैसे फेयर' के नाम पर रद्द कर दिया था अब उसी विचारधारा के विरोध में टेन आवर्स बिल पारित किया। वास्तव में किसी भी काल में, सभी क्षेत्रों में एक साथ लैसे फेयर नीति लागू नहीं हुई थी। बेन्थमवाद एक प्रकार से कई बातों में इसके बिलकुल विपरीत था और समाज के विरोधी हितों में सामंजस्य उत्पन्न करने तथा नियंत्रण स्थापित करने के लिये राजकीय विभागों के गठन की मांग की थी।

सन् १८४७ के टेन आवर्स बिल के बाद के वर्षो में कारखानों के नियमन के सिद्धान्त को अधिनियमों की एक शृंखला द्वारा कपड़ा कारखानों के अतिरिक्त अन्य उद्योगों पर भी लागू कर दिया गया था। और कोयला खानों में काम करने वाले स्त्री बच्चों की सैकड़ों वर्ष पुरानी निराशाजनक स्थिति के उद्घाटित होने पर लार्ड शैफ्ट्सबरी ने सन् १८४२ में खान अधिनियम (माइन्स एक्ट) बनवाया जिसके द्वारा दस वर्ष से कम आयु वाले बच्चों (स्त्री-पुरुषों) को भूमि के नीचे किसी प्रकार के काम पर लगाना निषिद्ध कर दिया गया। सन् १८५० के अधिनियम द्वारा वयस्क पुरुष-श्रमिकों को भी खान निरीक्षण व्यवस्था (माइन्स इंस्पेक्टोरेट) द्वारा आरक्षण प्रदान

कर दिया गया, और धीरे-धीरे खानों में सुरक्षा का प्रवन्ध करवाना भी राज्य का दायित्व हो गया।

मालिकों द्वारा सफाई करने वाले छोटे वच्चों के व्यापक दुरुपयोग—जिन्हें लम्वे व्रुश के प्रयोग के स्थान पर चिमनी साफ करने के लिये ऊपर चढ़ाया जाता था—को जनता में काफी धिक्कारा गया, लेकिन उसका कोई फल नहीं निकला। सन् १८७५ में शैफ्ट्सवरी ने अपनी डायरी में लिखा था : 'एक सौ दो वर्ष पूर्व जोनास हैनवे नामक सहृदय व्यक्ति ने इस क्रूर असमानता को जनता के समक्ष उद्‌घाटित किया था लेकिन फिर भी इंगलैंड तथा आयरलैंड के अनेक भागों में विभिन्न वर्गों के हजारों लोगों की जानकारी में तथा उनकी पूर्ण सहमति से यह क्रूर स्थिति अव भी ज्यों की त्यों वनी है।' उसी वर्ष शैफ्ट्सवरी के प्रयास से एक अधिनियम लागू किया गया और इस प्रकार इस रोग का उपचार सम्भव हुआ। सन् १८४० तथा १८६० के पिछले अधिनियमों की स्थानीय अधिकारियों, मजिस्ट्रेटों तथा निजी परिवारों ने मृत्त-पत्र की भांति उपेक्षा कर दी थी। (हैमॉन्ड, लॉर्ड शैफ्ट्सबरी, अध्याय १५)।

सन् १८६४ में चिमनी-साफ करने वालों के अविनियम की अपरिपक्व रचना पिछले वर्ष चार्ल्स किंग्जले की 'वाटर वेवीज' नामक कृति, जिसमें लेखक ने वालक टॉम तथा उसके मालिक ग्रिम्स के सम्वन्धों का चित्रण किया था, के प्रकाशन के वाद सम्भव हुआ था। वच्चों के दु:ख-सुख की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिये डिकेन्स ने पहले ही अपना काफी योगदान कर दिया था, उसकी 'वाटर वेवीज' नामक कृति ने इसके अतिरिक्त भी काफी कुछ किया था, इसमें ऐसी कल्पनाओं तथा चमत्कार का सृजन हुआ था जिसके प्रति वयस्क तथा वच्चे दोनों ही काफी आकर्पित हुए थे। वच्चों के खेलों, कल्पनाओं तथा विचारों में रुचि होना उस युग की इसी विशेषता का द्योतक था कि वह पारिवारिक जीवन तथा वच्चों के लालन-पालन के वारे में काफी चिन्तित था। शताव्दी के वीच के वर्षों में ग्रिम तथा एन्डरसन की परी कथाओं ने यूरोप से प्रसारित होकर इंगलैंड को पूर्णरूपेण प्रभावित कर लिया था। लड़के और लड़कियों के लिये लिखी जाने वाली कथा पुस्तकों की संख्या निरन्तर वढ़ती गई। ऐसी पुस्तकों का प्रणयन जिनमें वच्चों के साथ वड़े भी रुचि ले सकें इसी युग का आविष्कार था। पिछली शताव्दी में ग्यूलिवर तथा रोविनसन क्रूसो नामक कथा पुस्तकों तथा अलिफ लैला के किस्सों में यद्यपि वच्चे भी रुचि लेते थे लेकिन वास्तव में ये वयस्क स्त्री-पुरुषों के लिये ही लिखी गई थीं। लेकिन सन् १८५५ में थैकरे ने 'रोज एंड दि रिंग, ए फायरसाइड पैन्टोमाइम फॉर ग्रेट एंड स्माल चिल्ड्रन' पुस्तक प्रकाशित की तथा उसके दस वर्ष वाद क्राइस्ट चर्च के डीन की छोटी वच्ची के लिये 'लेविस कैरोल' द्वारा 'एलाइस' नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इस विशिष्ट प्रकार के साहित्य की उच्चतम कृतियों का तभी से

अनेक लेखकों ने, जिनमें स्टीवेन्सन, बैरी तथा एंड्र्यू भी सम्मिलित थे, अनुकरण प्रारम्भ कर दिया।

बच्चों के प्रति इस व्यापक सहानुभूति के कारण विक्टोरिया कालीन अंग्रेजी साहित्य ने वास्तविक सभ्यता को एक महत्वपूर्ण देन दी है। लेकिग जैसा कि बच्चों द्वारा चिमनी साफ कराये जाने वाली स्थिति के दीर्घकाल तक बने रहने से सिद्ध होता है ऐसी सहानुभूति का स्वरूप व्यापक अथवा सार्वभौमिक नहीं था। बच्चों की उपेक्षा तथा दुरुपयोग एक कठोर सत्य था। गन्दी बस्तियों की गलियों में ही अधिकांश बच्चे खेलते थे, उनमें से कुछ को यद्यपि सन् १८७० तक स्कूल भी उपलब्ध थे लेकिन इस शताब्दी के मोड़ लेने के पूर्व तक कहीं भी खेल केन्द्रों की व्यवस्था नहीं थी। बच्चों के प्रति क्रूरताओं को रोकने के लिये सन् १८८४ से पहले तक किसी भी संस्था का जन्म नहीं हुआ था, हां इस वर्ष के बाद से इस प्रकार की संस्था ने पचास लाख से अधिक क्रूरता सम्बन्धी मामलों को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से निपटाया था। उन्नीसवीं शताब्दी में बच्चों पर कोड़ों की मार लगाने की प्रवृत्ति, जिसका कि भूतकाल में शिक्षा सुधारकों ने युगों तक बहिष्कार किया था, धीरे-धीरे स्वतः समाप्त हो गई। बड़े शहरों के विकासक्रम में बढ़ती हुई गन्दगी, धुएं और कुहासे के वातावरण में कई दिशाओं में जीवन का मानवीकरण किया जा रहा था।

डिजरायली के इस विख्यात कथन में कि इंगलैंड, निर्धन तथा अमीर राष्ट्रों में विभाजित है काफी सत्यता थी। लेकिन उक्ति वैचित्र्य प्रधान काव्यांश की भांति यह केवल अर्ध-सत्य ही था। विक्टोरिया कालीन इंगलैंड के औद्योगिक क्रान्ति ने अत्यधिक धनी तथा अत्यधिक निर्धन लोगों के बीच की आर्थिक खाई को काफी बढ़ा दिया था और गांवों तथा कस्बों के स्थान पर, जहां कि जीवन की कुछ सामान्य बातें सभी वर्गों में समान थीं, बड़े नगरों को प्रतिष्ठित कर तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों को पृथक-पृथक स्थानों पर बसा कर उनके भेद भाव को और अधिक तीव्र कर दिया था। लेकिन औद्योगिक परिवर्तनों ने सुख-सुविधा तथा सम्पन्नता की दृष्टि से कई स्तरों पर प्रतिष्ठित मध्य-वर्गों की संख्या में भी काफी वृद्धि कर दी थी और कुछ अच्छे तकनीकी वर्गों जैसे इन्जीनियरों आदि के वर्गों के जीवन-स्तर को गन्दी बस्तियों में रहने वालों तथा अप्रशिक्षित (अनस्किल्ड) मजदूरों की तुलना में कहीं अधिक ऊंचा उठा दिया था। दो ही नहीं यहां और भी कई 'राष्ट्र' थे, और यदि दो ही मानें जाएं तब भी डिजरायली के लिये दोनों के बीच विभाजन रेखा खींच पाना अत्यन्त कठिन होगा।

दैनिक पारिश्रमिक पाने वाले मजदूरों के जीवन स्तर में सन् पचास तथा साठ के दशकों में होने वाला सुधार आंशिक रूप से उन सौभाग्यशाली वर्षों में सम्भव हो सका था जब कि वाणिज्य ने काफी प्रगति की थी और इंगलैंड सम्पूर्ण विश्व का एक औद्योगिक केन्द्र बन गया था, और इसके लिये आंशिक रूप में जहां संसद द्वारा पारित

सामाजिक अधिनियम भी उत्तरदायी थे अंशत: पारिश्रमिक बढ़ाने तथा अन्य दोषों को समाप्त करवाने के लिये मजदूर-संघ (ट्रेड-यूनियन) द्वारा किये गये प्रयत्न भी सम्मिलित थे। श्रमिक वर्ग के ही उच्च स्तरों जैसे इन्जीनियर वर्ग तथा अन्य प्रशिक्षित वर्गों में मजदूर-संगठन सम्बन्धी गतिविधियां अधिक शक्तिशाली थीं।

इसी काल में सहकारिता आन्दोलन (कोऑपरेटिव मूवमेंट) का भी काफी विकास हुआ, इस आन्दोलन ने जहां उपभोक्ताओं का विक्रेताओं द्वारा किये जाने वाले शोषण को दूर करने में सहायता की वहीं वाणिज्य प्रशासन तथा स्वायत्तशासन की कार्य-विधियों में श्रमिक वर्गों को प्रशिक्षण प्रदान करने में भी काफी योगदान दिया। इसका जन्म चौवीस चार्टरवादियों (चार्टिस्ट) तथा रोचडेल के ओवनवादी कार्यकर्ताओं के प्रयत्नों से हुआ था जिन्होंने सन् १८४४ में टोड (T'owd) लेन में 'रोचडेल पायोनियर्स' के एक विक्रय केन्द्र की स्थापना की थी। कई बड़े सहकारी प्रयत्न जहां असफल हो चुके थे यह प्रयास तो उनकी तुलना में एक अत्यन्त विनम्र प्रयास था। लेकिन इन लोगों ने रॉबर्ट ओवन के स्वप्नों को साकार करने के लिये सौभाग्य से ठीक योजना पर कार्य प्रारम्भ किया। बाज़ार भाव पर वस्तुओं का विक्रय करना तथा अतिरिक्त लाभ को सदस्यों में उनके शेयरों की राशि के अनुपात में विभाजित कर देना उनका मुख्य सिद्धान्त था। इससे एक ओर जहां लाभ अर्जन की प्रवृत्ति पर नियंत्रण स्थापित हुआ वहीं क्रय-विक्रय के संचालन में प्रजातांत्रिक कार्य-प्रणाली का भी प्रचलन हुआ। इस प्रकार सहकारिता आन्दोलन ने शताब्दी की समाप्ति के पूर्व अत्यधिक प्रगति कर ली थी।

सन् पचास की दशाब्दी में इस आन्दोलन की व्यावहारिक सफलता के लिये वही उत्साह एक कारण था जिसके आदर्शात्मक पक्ष का प्रचार ओवन के शिष्य होलयोक के नेतृत्व में धर्म-निरपेक्षतावादियों (सेक्यूलरिस्ट्स) ने तथा फ्रेडरिक डेनिसन मौरिस और विशेष रूप से 'टॉम-ब्राउन्स स्कूलडेज़' के लेखक टॉम ह्यूस की प्रेरणा से ईसाई समाजवादियों (क्रिश्चियन सोश्यलिस्ट्स) ने किया था। सामान्य दूकानदारों द्वारा इस आन्दोलन के बहिष्कार के प्रयत्नों से इसे शक्ति ही अधिक प्राप्त हुई। सन् सत्तर के दशक में सहकारी समितियों ने अपने मूल कार्य के अतिरिक्त एक अच्छे पैमाने पर उत्पादन का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया था।

वास्तव में सहकारिता आन्दोलन का महत्व उसके आर्थिक पक्ष की अपेक्षा कहीं अधिक था। इसने श्रमजीवी लोगों के मनों में यह भावना उत्पन्न कर दी थी कि 'राष्ट्र के प्रति कुछ उनका भी दायित्व है।' उन्हें पारस्परिक सहायता का तथा व्यापार किस प्रकार किया जाता है इसका प्रशिक्षण इस आन्दोलन से प्राप्त हुआ था और साथ ही समितियों से सम्बद्ध हो जाने के कारण आत्मोन्नति तथा शिक्षा ग्रहण करने की भी प्रेरणा मिली थी। जैसाकि इस आन्दोलन के इतिहासकार ने लिखा है : 'इससे आर्थिक बचत में जितनी सहायता और प्रोत्साहन मिलता है उससे अधिक उसके सदस्यों पर

बौद्धिक तथा नैतिक प्रभाव पड़ा है जिसके कारण लाखों मजदूर-परिवारों में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आ गया है और ग्रेट ब्रिटेन के सामाजिक रूपान्तरण में इसका एक महान् योगदान है।'

जिन उपलब्धियों के द्वारा नया ब्रिटेन औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न रोगों का उपचार करना चाह रहा था अर्थात् सहकारिता, कारखानों से सम्बन्धित अधिनियम, श्रमिक संघवाद (ट्रेड यूनियनिज्म) आदि द्वारा, वे सभी औद्योगिक क्रान्ति की ही भांति अपने जन्म एवं स्वरूप की दृष्टि से ब्रिटिश थे।

उन्नीसवीं शताब्दी का द्वितीय चतुर्थ भाग एक ऐसा युग था जब कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के विषय में यह निश्चय किया जा रहा था कि लोग ब्रिटेन से वहां जाकर बसें और ये देश राष्ट्रों के स्वतन्त्र ब्रिटिश कॉमन वेल्थ संघ के अंग बन जाएं।

ब्रिटेन की बढ़ती हुई जनसंख्या, जिसकी कि माल्थस ने काफी आलोचना की थी, के कारण तथा कृषक-वर्ग की दु:खद दशा के कारण इन वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों से अनेक लोग उन उपनिवेशों में जाकर बसने लगे थे जिन्हें कि आधुनिक साम्राज्य के पुनर्निर्माण का आधार कहा जा सकता था। गिबन वेकफील्ड ने अपने प्रचार कार्यों द्वारा अपने देशवासियों को इस प्रकार समझाना चाहा था कि हमारी आर्थिक कठिनाइयों का हल केवल बढ़ती हुई आवादी के निष्क्रमण से ही सम्भव हो सकता है और उपनिवेशों को केवल व्यापार स्थलों के रूप में नहीं वरन् नवीन ब्रिटिश राष्ट्रों के रूप में भी विकसित किया जा सकता है। आधुनिक कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड की ओर जाने वाली जनसंख्या के व्यवस्थित निष्क्रमण का श्रेय गिबन को काफी है।

उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलैंड के सुख शान्तिपूर्ण जीवन तथा 'प्रगति' सिद्धान्त को अर्थात् एकरेखीय प्रगति ही इतिहास का एक मात्र नियम है—विक्टोरिया कालीन इंगलैंड का यह विश्वास प्रर्याप्त अंशों में इस कारण था कि वाटरलू युद्ध के सौ वर्षों बाद तक इंगलैंड को किसी प्रकार के युद्ध में नहीं उलझना पड़ा। क्रिमियन युद्ध (१८५४-१८५६) को इसका अपवाद नहीं माना जा सकता। वास्तव में इस युद्ध को श्याम सागर (ब्लैक सी) पर किये गये एक मूर्खतापूर्ण अभियान की ही संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि वास्तव में तीन वर्ष पूर्व हाइड पार्क में हुई वड़ी नुमाइस (ग्रेट एक्जीबीशन) के समय शान्तिवादी वार्ताओं के वावजूद अंग्रेज इस शान्ति से ऊब चुके थे और यही ऊब उनके इस अभियान का कारण थी। बुर्जुआ प्रजातन्त्र ने जिसका कि कुछ समाचार-पत्रों ने काफी पक्ष लिया था बालकन ईसाइयों के विरुद्ध तुर्की शासन की ओर से प्रचंड रूप ग्रहण कर लिया था और यह स्थिति अगली पीढ़ी के समय उन्हीं शक्तियों द्वारा ग्लैडस्टन के नेतृत्व में उलटी कर दी गई थी। हमने क्रिमियन युद्ध को लड़ा था लेकिन जैसे ही विदेशों पर आक्रमण करने की वृत्ति संतुष्ट हुई उसे तत्काल समाप्त भी कर दिया। हमारे सामाजिक इतिहास का यह एक तथ्य है कि विदेश नीति अब धीरे-धीरे राजनीतिज्ञों के ही अधिकार की वस्तु न होकर आम जनता

की रुचि का भी विषय बन गई थी। राजनीतिज्ञ लोग अधिक मूर्ख थे या जनता, इसका निर्णय कर पाना, कठिन है।

लेकिन क्रिमियन युद्ध का एक लाभप्रद परिणाम अवश्य निकला अर्थात् प्रशिक्षित स्त्रियों के व्यवसाय रूप में श्रीमती गैम्प की संस्था से भी एक अधिक अच्छी नर्सिंग संस्था का विकास हुआ। फ्लोरेन्स नाइटइंगेल की अद्भुत व्यक्तिगत सफलता ने क्रिमियन सेना के अधिकारियों को अस्पताल की पुरानी व्यवस्था के आधुनिकीकरण के लिये प्रेरित किया : ये लोग पहले बालाक्लावा बन्दरगाह से सेबास्टोपोल के पूर्व की छावनी तक की थोड़ी दूरी के लिये भी रेल मार्ग का प्रबन्ध तब तक करने को तैयार नहीं थे। जब तक कि युद्ध समाचार भेजने वाले संवाददाता जनमत को अपने लेखों द्वारा इनके विरुद्ध नहीं उकसा देते। नर्सिंग व्यवसाय की गम्भीर आवश्यकता को भी क्रिमियन-युद्ध के समाचार के रूप में नागरिक जीवन तक पहुंचाया गया था और इसके तुरन्त बाद ही चिकित्सा-सेवा में एक नये युग का आविर्भाव हो गया। इसके अतिरिक्त नर्सिंग के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी फ्लोरेन्स नाइटइंगेल के उपक्रमों से स्त्रियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिये इस विचार का काफी प्रचार हुआ। स्कॉट तथा बायरन के युग में आदर्श नारी का स्वरूप कुछ भिन्न था—उससे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह शारीरिक श्रम से मुक्त रह कर तथा पुरुष का अवलम्ब ग्रहण कर अपने नारित्व को चरितार्थ करे। लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल के उत्तरार्ध में एक दूसरे ही प्रकार का विचार जड़ें जमाने लगा, और वह था कि उच्च-मध्यवर्ग की स्त्रियां खास कर अविवाहितों को स्वावलम्बी होने तथा संसारोपयोगी होने का भी कुछ प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिये।

क्रिमियन युद्ध का अन्य छोटे क्षेत्रों पर भी काफी प्रभाव पड़ा। भद्र वर्ग द्वारा अस्सी वर्षों तक निषिद्ध रहने के बाद अब पुनः सेबास्टोपोल के सामने की सैनिक खाइयों में आदर्श-नायकों का अनुकरण कर सैनिकों ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया था। और इसी कारण उच्च वर्गों से लगभग दो सौ वर्षों तक गायब रहने के बाद अब पुनः लोगों के चेहरों पर दाढ़ियां प्रकट होने लगी थीं। विक्टोरिया शासनकाल के बीच के वर्षों में सभी वर्गों में औसतन लोग दाढ़ी रखने लगे थे तथा पाइप पीने लगे थे।

यह युग 'मासंलतावादी ईसाईवाद', तनावों तथा शीतल स्नानों का युग था। संगठन प्रधान खेल, विशेषकर क्रिकेट तथा फुटबाल का स्कूलों, विश्वविद्यालयों तथा ग्राम जीवन में काफी प्रचार हो रहा था। पैदल चलना तथा पर्वतों पर अभियान करना इस सशक्त तथा खिलाड़ी नई पीढ़ी की प्रमुख विशेषताएं थी; स्त्रियों को भी अब पैदल चलने में किसी रोक-टोक का सामना नहीं करना पड़ता था। अभी 'लॉन टेनिस' का युग प्रारम्भ नहीं हुआ था और जब तक घेरदार घाघरों का फैशन था तब तक उसकी सम्भावना भी काफी कम थी। लेकिन भद्रवर्गीय महिलाएं तथा पुरुष छोटे-छोटे घास के मैदानों में क्रिकेट (गेंद का खेल) खेला करते थे।

क्रिमियन युद्ध जिस एक वस्तु को उत्पन्न करने में असमर्थ रहा वह सेना में सुधार करना था। यद्यपि यह तथ्य स्पष्ट हो चुका था कि प्रायःद्वीप (पेनिन्सुला) युद्ध की सैनिक परम्परा का पालन करते हुए सैनिकों ने इस युद्ध में भी अपने गौरव की रक्षा की थी लेकिन वास्तव में यह भी एक तथ्य था कि अच्छे नेतृत्व, अच्छे नये सैनिकों, अच्छे भोजन तथा अच्छे संगठन का इस बार काफी अभाव था। लेकिन इस बार जो गौरव-रक्षा में थोड़ी बहुत कमी आ गई थी उसे सेना ने अगले वर्ष भारतीय विप्लव के समय, जबकि स्वावलम्बन तथा वैयक्तिक उपक्रम विषयक विक्टोरिया कालीन मूल्य अपने चरमोत्कर्ष पर थे—पुनः प्राप्त कर लिया था। लेकिन किसी भी रूप में उस युग के सुधारकों की सेना में तनिक भी रुचि नहीं थी। ये लोग उसे सभ्य राष्ट्र के लिये अनावश्यक तथा एक व्यर्थ की अभिजात्य संस्था मानते थे। सेना में सुधार कर रक्षा व्यवस्था को और अधिक दृढ़ करने की अपेक्षा ये लोग उसमें कटौती कर पैसा बचाने के प्रति अधिक चिन्तित थे।

केवल १८५९ में नेपोलियन तृतीय के तथाकथित बुरे इरादों को लेकर (यद्यपि नेपोलियन की हार्दिक इच्छा इंगलैंड के साथ मैत्री की ही थी) एक भयपूर्ण वातावरण व्याप्त हो गया था। और इसके फलस्वरूप द्वीपवासियों की सतत अतत्परता के आगे इस आतंकपूर्ण वातावरण ने क्षण भर के लिये एक विराम चिन्ह लगा दिया था; स्वयं सेवक बनाने का आन्दोलन उठ खड़ा हुआ और व्यापारियों तथा उनके नौकरों को उस काल की नागरिक तथा वैयक्तिक चेतना के अनुसार अवकाश के समय कवायद करवाने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया था। लेकिन सन् १८७० के फ्रेंको-प्रश्यन युद्ध, जिसके कारण कि जनता में विदेशी गतिविधियों के प्रति एक स्पष्ट चेतना व्याप्त हुई थी, से पूर्व नियमित सेना में किसी प्रकार के सुधार का यत्न नहीं किया जा सका था। और सौभाग्य से इस अवसर पर आतंक के वातावरण ने कार्डवेल नामक प्रसिद्ध सुधारों को जन्म दिया था जिसके अन्तर्गत सैनिक अधिकारियों के पदों (कमीशन) को क्रय कर लिये जाने तथा अतिरिक्त सेना के गठन के लिये अल्पकालीन सैनिकों को भर्ती कर लेने की प्रणाली को समाप्त कर दिया गया था।

अध्याय १८

महारानी विक्टोरिया के शासनकाल का उत्तरार्द्ध (१८६५-१६०१)

किसी राष्ट्र के राजनैतिक इतिहास से पृथक् सामाजिक इतिहास के लेखन में एक कठिनाई उन निर्धारक घटनाओं तथा निश्चित तिथियों की जानकारी का अभाव है जिनके आधार पर कि परिवर्तन-क्रम का निरुपण सम्भव होता है। स्त्री-पुरुषों की सामाजिक प्रथाएं तथा आर्थिक परिस्थितियां, विशेष रूप से आधुनिक काल में, सदैव संक्रमणशील रही हैं, लेकिन वे पूर्णतया तथा आकस्मिक रूप से कभी परिवर्तित नहीं होतीं। किन्तु प्राचीन अर्वाचीन को इस प्रकार आच्छादित करता है कि बहुधा ही यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि व्यवहार अथवा विचार में इसके लिये इस पीढ़ी को उत्तरदायी माना जाए अथवा अगली पीढ़ी को, यह एक जटिल समस्या हो जाती है।

लेकिन कुल मिलाकर विक्टोरिया कालीन इंगलैंड में लोगों की प्रवृत्तियों में सन् साठ सत्तर की शताब्दियों के अन्तिम वर्षों में कुछ स्पष्ट परिवर्तन घटित हुए थे। यद्यपि अब भी कुछ पुराने चिन्ह विद्यमान हैं लेकिन अब वे उतने प्रभावशाली नहीं हैं। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में अभिजाततन्त्र विद्यमान है और वहां की सभाओं-समारोहों तथा लन्डन के समाज में उनका काफी प्रभाव है; बुर्जुआ 'स्वावलम्बन' तथा सीमित ईमानदारी के गुणों से युक्त व्यक्तिवादी व्यापारी अभी भी फल-फूल रहा है। लेकिन ये वर्ग आज उतने महत्वपूर्ण नहीं रहे हैं जितने कि पामरस्टोन तथा पील के समय थे; और जिन विचारों अथवा जिस विचारहीनता का ये प्रतिनिधित्व करते हैं उन्हें 'निम्न-स्तरीय रैडिकलों' के अतिरिक्त अन्य लोग भी चुनौती दे रहे हैं। सभी प्रकार के वर्गों और क्षेत्रों में सामाजिक प्रथाओं तथा धार्मिक विश्वासों पर होने वाली बहस विक्टोरिया के आरम्भिक शासनकाल के जमे जमाए आचारों एवं सम्प्रदायों का उन्मूलन कर रही है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपनी 'लिबर्टी' (१८५६) नामक कृति में इसी पारम्परिक मतावलम्बन के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है और इसके बारह वर्ष बाद यह रवैया आम लोगों का एक प्रचलित रवैया बन गया था। यह युग वास्तव में एक उदार तथा स्पष्ट वक्ता युग है जिसके अधिकांश प्रतिनिधि न तो अभिजातवर्गीय लोग हैं और न दूकानदार; विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्त अध्येता अथवा बुद्धिमान प्रशिक्षित

व्यवसायी, मिल, डार्विन हक्सले तथा मैथ्यू ऑरनोल्ड, जार्ज इलियट तथा ब्राउनिंग—दाढ़ी वाले भद्र बुद्धिवादी लोग जिनके पारिवारिक जीवन का डु मारियर 'पंच' में चित्रण किया करता था—के पाठक गण ही उसका प्रतिनिधित्व करते थे।

प्रजातंत्र, अधिकारीतन्त्र, संघवाद ये सभी सैकड़ों शाखाओं-प्रशाखाओं में शान्त भाव से प्रगति कर रहे थे। विगत पीढ़ी से सन् सत्तर के दशक को जो परिवर्तन पृथक् करते हैं उनमें से कुछ का उल्लेख स्थिति पर कुछ प्रभाव डाल सकता है। अंग्रेजों के ईसाई धर्म को व्यापक रूप से नहीं लेकिन फिर भी डार्विनवाद काफी प्रभावित कर रहा था, सन् १८७१ में ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज में धर्मनिरपेक्ष रूप में लोगों को प्रवेश दिया जाने लगा था; धार्मिक धारणाओं के स्थान पर शैक्षणिक जगत में शास्त्रों तथा गणित के अतिरिक्त विज्ञान तथा इतिहास की प्रतिष्ठा भी काफी बढ़ रही थी; सन् १८७० में राजकीय सेवा (सिविल सर्विस) में प्रवेश पाने के लिये प्रतियोगितात्मक परीक्षा एक सामान्य बात हो गई थी जिससे कि अधिकारीतंत्रीय व्यवस्था में योग्यतम व्यक्ति ही प्रवेश पा सकें, नगरों के कामगारों को सन् १८६७ के सुधार विधेयक (रिफॉर्म-बिल) द्वारा संसद के लिये मताधिकार प्राप्त हो गया था, और इसके तीन वर्ष बाद फॉरेस्टर्स अधिनियम द्वारा सभी के लिये प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था भी हो गई थी, १८७१-१८७५ के अधिनियम द्वारा अपनी बढ़ती हुई शक्ति के अनुरूप ही श्रमिक संघों को नये अधिकार प्राप्त हो गये, वाणिज्य प्रशासन के क्षेत्र में पुरानी पारिवारिक कम्पनियों के स्थान पर सीमित दायित्वों वाली कम्पनियां प्रतिष्ठित होने लगी थीं; स्त्रियों का सामाजिक एवं व्यावसायिक उत्थान मिल की 'सब्जेक्शन ऑफ़ विमेन' (१८६९) नामक कृति में बताई गई दिशा की ओर हो रहा था; ऑक्स-फोर्ड तथा कैम्ब्रिज में स्त्रियों के लिये पृथक कॉलेजों की स्थापना हो गई थी और नारी माध्यमिक शालाओं में काफी सुधार कर दिया गया था; विवाहित स्त्रियों की सम्पत्ति विषयक अधिनियम ने, यदि उसके पास अपना धन है तो उसे पति की आर्थिक निर्भरता से मुक्ति प्रदान कर दी थी : 'यौन समानता' को सैद्धान्तिक आधारों पर मान्यता दी जाने लगी थी और सभी वर्गों में उन्हें अधिकाधिक व्यवहृत किया जाने लगा था। स्त्रियों को राजनैतिक क्षेत्र में मिला मताधिकार पर्याप्त रूप में उसे सामाजिक क्षेत्र में प्राप्त हो चुके मताधिकार की ही परिणति था।

लेकिन सन् सत्तर के दशक की वह एक घटना, जिसका भविष्य पर अपरिमेय प्रभाव पड़ा, वह अंग्रेजी कृषि व्यवस्था का सहसा ही लड़खड़ा जाना था।

सन् १८७५ के बाद से कृषि में घटित हुआ यह ह्रास बढ़ता गया। अनुकूल मौसमों की एक श्रृंखला ने ह्रास की इस प्रारम्भिक स्थिति को निरन्तर बढ़ावा दिया, लेकिन इसका कारण वास्तव में अमरीकियों द्वारा अकृषित भूमि को कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित कर अंग्रेजी बाजार में अन्न पहुँचाना था। नये कृषि यन्त्रों द्वारा मध्य-पश्चिम

(मिडल-वैस्ट) के कृषक एक वड़े क्षेत्र की जुताई कर अन्न उपजाने में समर्थ हो गये थे; नयी रेल-व्यवस्था इस उपज को वन्दरगाहों तक पहुँचा देती थी और नये जहाज उसे अटलांटिक पार तक ले जाते थे। अंग्रेजी कृषि-व्यवस्था अमरीकी कृषि की अपेक्षा अधिक विज्ञानाधारित तथा अधिक पूंजी सम्पन्न थी, लेकिन इस स्थिति में उसके दोषों की मात्रा भी कम न थी। सस्ते तथा सहज तरीकों से वड़ी मात्रा में होने वाले अन्न उत्पादन से जमींदारों के वड़े खेतों पर पिछले दो सौ वर्षों से प्रयुक्त खर्चीले तरीकों द्वारा की जाने वाली खेती पर काफी भार पड़ा था। ब्रिटिश भूमिधारी अभिजात वर्ग का सुदूर अमरीका के प्रजातांत्रिक कृपकों द्वारा उखाड़ फेंका जाना आर्थिक परिस्थितियों के परिवर्तन का ही एक परिणाम था। और इससे भी अधिक महत्व-पूर्ण परिणाम यह था कि इंगलैंडवासियों का जीवन प्रकृति से विलग हो गया था, जवकि पिछले सभी युगों में लोगों की कल्पना तथा मानस को निर्मित करने में प्रकृति का महत्वपूर्ण भाग था।

यूरोप के अन्य राज्यों में, जहां अव भी कृषि का सामाजिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान था और लोग उसे स्वीकार करते थे वहां अमरीकी खाद्यान्न को देश में नहीं आने दिया जाता था। लेकिन इंगलैंड में न तो इस प्रकार की कोई नीति ही निर्धारित हो सकी थी और न उस पर कोई विचार ही किया जा रहा था। स्वतन्त्र व्यापार (फ्री ट्रेड) को ही समृद्धि का कारण मानना, वाह्य जगत् से होने वाले व्यापार को जिसके विषय में यह विश्वास था कि हमारी शक्ति एवं सम्पदा उसी के कारण सुरक्षित है उसमें किसी भी प्रकार के परिवर्तन की अनिच्छा, नगरों का ग्रामों पर कुछ संख्या की दृष्टि से तथा उससे भी अधिक वौद्धिक तथा राजनैतिक नेतृत्व की दृष्टि से आधिपत्य, सन् चालीस के क्षुधा-ग्रस्त दशक की स्मृतियां —जवकि खाद्यान्न अधिनियमों (कार्न लॉज) के कारण गरीवों के लिये रोटी के मूल्य काफी वढ़ गये थे—इन सभी परिस्थितियों के कारण ग्रामीण जीवन की रक्षा का कोई भी प्रयत्न सम्भव न हो सका। और इस सव की तुलना में विक्टोरिया कालीन लोगों ने भावी युद्धों के लिये अन्न उत्पादन की आवश्यकता पर और भी कम ध्यान दिया। वाटरलू का युद्ध जीतते के वाद, सुरक्षा-कालीन दो पीढ़ियों के वाद तक, ऐसा प्रतीत होता था कि 'विगत युद्धों और अतीत की कटु स्मृतियों की भांति, राष्ट्र पर आ सकने वाली भयानक विपत्ति की आशंका भी समाप्त हो गई थी। सन् १८४६ में डिजरायली ने खाद्यान्नों के स्वतन्त्र व्यापार (फ्री ट्रेड) की अवश्यम्भावी परिणति के रूप में कृषि-व्यवस्था के विनाश की भविष्यवाणी कर दी थी। तीस वर्षों तक तो डिजरायली की वातें ठीक प्रतीत नहीं हुईं। लेकिन अव सहसा ही वे उचित लगने लगीं—और अव वह प्रधान-मंत्री वन गया था। फिर भी उसने इस सम्वन्ध में कुछ नहीं किया और 'कॉव्डन का अभिशाप', अंग्रेजी कृषि-व्यवस्था को ग्रस्त करता रहा। पूर्व (ओरिएन्टल) की नीतियों में ही समग्र रूप से उलझ जाने के कारण ये वृद्ध

महानुभाव स्वदेश पर हावी हो रही इस युग की प्रवृत्तियों का विरोध नहीं कर सके। एक प्रकार से इन्होंने स्वयं को इन प्रवृत्तियों के अनुकूल ढाल लिया था। राजनीतिज्ञों ने कृषि के भविष्य के प्रति उदासीनता का ही व्यवहार किया क्योंकि इसमें बेरोजगारी जैसी कठिन समस्या का प्रवेश नहीं हुआ था।

जिस प्रकार से बेरोजगार खान मजदूर बन्द खान के चारों ओर चक्कर लगाते रहते थे खेतिहर मजदूर उस प्रकार से अपनी खेती समाप्त हो जाने पर अपनी भूमि पर आश्रित नहीं रह पाते थे। कृषि-श्रमिक के बेरोजगार हो जाने पर अथवा उसका पारिश्रमिक कम हो जाने पर वह नगरों में जाकर काम की खोज करने लगता था। या फिर वह समुद्रपार के देशों की ओर प्रस्थान कर जाता था क्योंकि संयुक्त राज्य अमरीका तथा उपनिवेश अब भी बढ़ती हुई जनसंख्या के आयात का स्वागत कर रहे थे। एक वर्ग के रूप में अंग्रेज कृषक मजदूर अपनी भूमि को छोड़कर चले जाने के विचार के प्रति काफी अभ्यस्त हो चुका था। वह दूसरों के लिये जोते गये खेतों से उस प्रकार अपनत्व अनुभव नहीं कर सकता था जिस प्रकार कि आयरिश कृषक अपनी उस भूमि से अपनत्व का अनुभव करता था जिससे कि वह अपने परिवार के लिये भोजन प्राप्त करता था और जिस पर कि उसका अधिकार भी था। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण अंग्रेज को नगरों तथा वहां उपलब्ध अवसरों व पारिश्रमिक के बारे में भी काफी जानकारी थी। हमारी जनता में जीवन को उन्नत करने की जो प्रबल इच्छा पाई जाती है वह उसमें भी विद्यमान थी और इसलिये उसे अपने बचपन का स्थान छोड़कर बाहर जाने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं थी।

इस बीच जमींदारों तथा बड़े किसानों ने, जिनकी कि भूमि से पृथक होने की न तो इच्छा थी और न शक्ति ही, उन्हें इससे सबसे अधिक हानि हुई और वह इसकी व्यर्थ शिकायत करते रहे। इसका मुख्य कारण यह था कि इंगलैंड पर उनका राजनैतिक प्रभुत्व समाप्त हो चुका था। सन् सत्तर तथा अस्सी के दशक के उदारवादी तथा अनुदारवादी बुद्धिजीवी स्वतन्त्र वाणिज्य के सिद्धान्त (फ्री ट्रेड डॉक्ट्राइन) के समर्थक थे : उनका विश्वास था कि यदि कोई उद्योग जैसे कृषि, प्रतिस्पर्धापरक हो जाए तो उससे अन्य उद्योगों को भी लाभ पहुंचेगा और इस प्रकार से सभी औद्योगिक क्षेत्र उन्नत हो जाएंगे। लेकिन ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था मानव-कल्याण के समूचे क्षेत्र को प्रभावित नहीं करती। सैद्धान्तिक जगत् में ही विचरण करने वाले यह देखना भूल गये कि अन्न उद्योगों की भांति कृषि एक उद्योग न होकर एक ऐसी जीवन-प्रणाली थी जिससे कुछ मानवीय तथा आध्यात्मिक मूल्य भी जुड़े थे, अतः किसी अन्य उद्योग द्वारा उसे स्थानापन्न कर पाना अत्यन्त कठिन था।

सन् १८७५ से ह्रास की जो दशाब्दी प्रारम्भ हुई उसमें गेहूं का उत्पादन इंगलैंड में लगभग दस लाख एकड़ कम हो गया। सन् १८८१ में मजदूरों की संख्या दस वर्ष

पहले की संख्या से लगभग कई लाख कम हो गई थी, जबकि यह निष्क्रमण का केवल आरंभ ही था। पश्चिमी प्रदेश मध्यभूमि तथा उत्तर की खाद्यान्न उपजाने वाली भूमि में घास उगने लगी थी, लेकिन पशुधन में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं हुई थी और वह भी तब जब कि भेड़ों के स्थान पर लोग दुधारू पशुओं को अधिक पालने लगे थे। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा दक्षिणी अमरीका से जमे हुए गोश्त का आयात सन् अस्सी तथा नव्वे की दशाब्दियों की एक नूतन विशेषता थी। सन् १८६१-१८६६ से कृषि के पतन की एक और लहर उठी और वह १८७५-१८८४ के पतन से कम भयंकर नहीं थी। इस शताब्दी के अन्त तक इंगलैंड और वेल्स का खाद्यान्न उपजाने वाला क्षेत्र सन् १८७१ में जहां अस्सी लाख एकड़ के लगभग था अब वह साठ लाख एकड़ से भी कम हो गया था। स्थायी चरागाह की भूमि का क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया था, लेकिन दुधारू पशुओं तथा भेड़ों के मूल्य खाद्यान्नों की क़ीमतों के साथ ही गिरते रहे। और बावजूद इसके कि खेतिहर मजदूरों को सन् १८८४ में मतदान का अधिकार प्राप्त हो गया था वे नगरों अथवा समुद्रपारीय देशों में जाकर बसते रहे।

इंगलैंड की कृषि का अध्ययन करने वाले एक इतिहासकार ने विक्टोरिया के शासनकाल के अन्तिम दशकों का विवरण इस प्रकार दिया है:

"कोई ठोस सहायता कर पाने में विधानमंडल अक्षम था। भोजन ही एक प्रकार से विनिमय का माध्यम था जो विदेशी राज्य इंगलैंड में उत्पादित सामग्री की एवज़ में दिया करते थे और इसका सस्तापन निस्सन्देह श्रमजीवी समुदाय के लिये एक वरदानस्वरूप था। अपने स्वयं के साधनों पर ही निर्भर करने को बाध्य होने के कारण किसानों ने साहस तथा धैर्य के साथ संघर्ष किया। लेकिन आगे चलकर उन पर भार अधिक आने लगा। उत्पादन में जुटा हुआ वर्ग स्वदेश के अतिरिक्त सभी जगह अपने अन्न को खपाने के लिये बाज़ार की खोज करने लगा। धीरे-धीरे लोगों का उत्साह तथा उपक्रम भी मन्द पड़ने लगा, ज़मींदारों में सहायता करने की प्रवृत्ति तथा किसानों में उत्पादन शक्ति का अभाव होने लगा। दीर्घकालीन मन्दी के कारण मूल्यवान विकास कार्यों की गति भी अवरुद्ध हो गई। जलनिष्कासन प्रणाली व्यवहारतः समाप्त प्रायः हो गई। भू-स्वामी तथा भूमि पर खेती करने वाले, दोनों ही अपने विपरीत छोरों की घटती हुई आय द्वारा समान हुए जा रहे थे। भूमि की दशा दयनीय हो गई थी, मजदूरों की संख्या कम हो गई थी, सुरक्षित खाद्यान्न की मात्रा कम हो चली थी, और रोटी तथा खाद के देयक भी काफी घट गये थे। सबसे अधिक हानि उन खाद्यान्न का उत्पादन करने वाले ज़िलों में हुई जिनमें बृहद् स्तरीय भूखंडों में की जाने वाली खेती को सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई थी।" (अर्नले, इंगलिश फार्मिंग, पृ० ३७६)।

निस्सन्देह हानि काफी हुई थी क्योंकि अंग्रेजी कृषि प्रणाली में जो विशेषतः खाद्य पदार्थों—खास कर गेहूं तथा संसार की सर्वश्रेष्ठ भेड़ों के उत्पादन से सम्बन्धित थी,

काफी पूंजी लगी हुई थी और इन वस्तुओं का उत्पादन इंगलैंड के कई भागों में काफी मंहगा पड़ता था। भूमि पर अन्य वस्तुओं के उत्पादन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया था। हॉप (एक प्रकार का फल) का उत्पादन बहुत ही सीमित भू-क्षेत्र में विशेष रूप से केन्ट में ही किया जाता था। लेकिन आलू की खेती कुल कृषि-क्षेत्र के केवल दो प्रतिशत भू-भाग में ही की जाती थी। फलों अथवा सब्जियों के उत्पादन को लेकर भी पर्याप्त प्रयत्न नहीं किये गये थे।

किसान अथवा राज्य कोई भी यथेष्ट प्रयत्नों का परिचय नहीं दे रहे थे। केवल सन् १९१४-१९१८ के युद्ध के बाद ही राज्य ने व्यापक स्तर पर जंगलों के पोषण की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया। जिन ज़मींदारों ने अठारहवीं तथा प्रारम्भिक उन्नीसवीं शताब्दी में परिश्रमपूर्वक वृक्षारोपण किया था उनकी रुचि भी जंगल के व्यापार में समाप्त प्रायः हो गई थी क्योंकि सरकार को अब युद्ध-पोतों के निर्माण के लिये *बलूत के बड़े-बड़े लट्ठों की आवश्यकता नहीं रही थी। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार* की इमारती लकड़ी स्कैन्डीनेविया तथा उत्तरी अमरीका से ऐसे मूल्य पर प्राप्त होने लगी थी जिसने कि स्वदेशी उत्पादनकर्त्ता को हतोत्साहित ही अधिक किया। आधार-स्तम्भों तथा इमारती लकड़ी की आवश्यकता पूर्ति आयात द्वारा होती थी।

वाणिज्य मानकों की अपेक्षा सौन्दर्यात्मक दृष्टि से देखने पर सन् १८८० में इंगलैंड किसी भी अन्य देश की तुलना में अपने इमारती वृक्षों पर गर्व कर सकता था। नये जंगल (न्यू फॉरेस्ट) तथा डीन के जंगल जैसे इक्के-दुक्के जंगलों को छोड़कर सभी जंगल समाप्त हो चुके थे। फिर भी ऊंचाई से देखने पर भूखंड वृक्षविहीन बंजर नहीं प्रतीत होता था। वृक्ष-झुंड या तो देहाती क्षेत्र में सिलसिलेवार बाड़ की झाड़ियों से दिखाई देते थे या सुन्दरता के लिये रोपे गये उद्यान-वृक्षों की भांति दिखाई देते थे और या फिर आखेट स्थलों पर आच्छादित गाछों से प्रतीत होते थे। भू-सम्पत्ति के एजेन्ट लोग इमारती लकड़ी में रुचि न होने के कारण बेकार के वृक्षों को हटाने, जंगल की छंटनी करने तथा उचित समय पर लकड़ी काट कर बेचने को ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। देवदारु नस्ल के वृक्षों को अधिक उगाया जा रहा था और इसी प्रकार उस समय की रुचि के अनुसार एक सदाबाहर किस्म की झाड़ी को भी अधिक प्रश्रय दिया जा रहा था। द्वीप के अधिकांश भागों में दोनों ही किस्में विदेश से आई थीं लेकिन उन जंगली मुर्गों के पालन के लिये ये वृक्ष तथा झाड़ियां उपयुक्त स्थान प्रदान करते थे जिन्हें कि युवक किपलिंग उस समृद्धि और शांति की मदहोशी के रूप में घृणा करता था जो इंगलैंड में सभी स्थानों पर व्याप्त थी और जो किसी भी दिन एक बड़े विद्रोह को जन्म दे सकती थी।

कृषि की दशा इंगलैंड की राजकीय नीति की अदूरदर्शिता का ही परिचय देती थी। वे उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा उन्हीं समस्याओं को सुलझाने में

रुचि ले रहे थे जिन्हें लेकर कि पहले से ही दवाव महसूस किया जा रहा था। लेकिन इन सीमाओं में वे पामरस्टोनी युग के अपने आत्मसंतुष्ट पूवजों की अपेक्षा अधिक सक्रिय सुधारकर्त्ता थे : उन्होंने नागरिक सेवा, स्थानीय प्रशासन, शिक्षा, विश्वविद्यालय और एक सीमा तक सेना में भी काफी सुधार किये थे।

इसका कारण यह था कि सन् पचास और साठ की दशाब्दियों की आत्मसंतुष्टि और निश्चयात्मकता का भाव कुछ अंशों तक समाप्त हो चुका था। विगत के उन भाग्यशाली दिनों में अंग्रेजों ने उन देशों के लिये उत्पादन कार्य किया था जो औद्योगिक यंत्रों की दृष्टि से इंगलैंड से अब भी एक पीढ़ी पीछे थे। जहां तक सैन्य शक्ति का प्रश्न है नेपोलियन तृतीय के शासनकाल की तुलना में न तो वह अधिक दुर्धर्ष ही थी और न अधिक शत्रुभावयुक्त ही थी। सन् १८४८ जो कि यूरोपीय क्रान्ति तथा प्रतिक्रिया (कॉन्टीनेन्टल रिवोल्यूशन तथा रिएक्शन) का वर्ष था, में मैकाले के देशवासी यह सोचने में काफी सुख प्राप्त करते थे कि धन, स्वतन्त्रता तथा व्यवस्था की दृष्टि से हमारा देश अन्य किसी भी देश से आगे था और इस कारण कम सुखी देशों की ईर्ष्या का पात्र था। फ्रांस और प्रश्या के वीच सन् १८७० में हुआ युद्ध सर्वप्रथम घटी एक चौंकाने वाली घटना थी। और आगामी तीस वर्षों के दौरान उत्पादन के क्षेत्र में अमरीका और जर्मनी ने इतनी क्षमता का अर्जन कर लिया था कि वे हमसे प्रतिद्वन्द्विता करने लगे। अमरीका की अत्यधिक प्राकृतिक क्षमताओं ने तथा जर्मनी की दूर दृष्टि सम्पन्न सरकार द्वारा आयोजित वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा ने प्रत्येक वर्ष हमारी स्थिति को अधिकाधिक अशक्त ही किया। इस स्थिति का सामना करने के लिये हमारी स्वतन्त्रतावादी विचारधारा, स्वतंत्र वाणिज्य (फ्री ट्रेड) तथा व्यक्तिवादी स्व-सेवा ही अकेले पर्याप्त नहीं थे। इसके प्रति आंशिक चेतना ने तकनीकी शिक्षा में कुछ सुधार अवश्य किया। और 'समुद्र पार की हमारी भूमि' में निहित हमारे हितों को भी आगे वढ़ाने के लिये इसने सन् नव्वे की दशाब्दी में साम्राज्यवादी आन्दोलन का श्री गणेश किया, और साथ ही पामरस्टोनी युग के अन्त में हुए अमरीकी गृह युद्ध के दौरान हमारे राजनैतिक वर्गों ने उस देश के प्रति जितना सम्मानजनक रवैया अपनाया था उसकी अपेक्षा इस वार अधिक मैत्री भाव इस जागरुकता के कारण प्रकट हुआ। इस नये युग का प्रजातांत्रिक इंगलैंड अमरीका तथा तथाकथित 'उपनिवेशों' जैसे कैनेडा तथा आस्ट्रेलिया दोनों ही को, समझ पाने में अधिक सक्षम था।

इस नवीन स्थिति ने जर्मनी में भी हमारे उन हितों को काफी आगे वढ़ाया जिन्हें कि सन् १८७० तक हमारे देशवासी भुलाते आ रहे थे। इसी वर्ष मैथ्यू आरनोल्ड की 'फ्रेंडशिप्स गारलैंड' तथा जार्ज मेरेडिथ की 'हैरी रिचमन्ड' नामक कृतियों ने इंगलैंड को चेतावनी दी थी कि यूरोप के ट्यूटोनिक हृदय में राष्ट्रीय शिक्षा तथा राष्ट्रीय अनुशासन एक ऐसी नवीन शक्ति को अवतरित कर रही है जो कि हमारे देशवासियों द्वारा सहज ही में जीती गई, किन्तु अल्पसुरिक्षत तथा असमान रूप से वितरित सम्पत्ति को ईर्ष्या की दृष्टि से देखती

है। साथ ही रस्किन ने कला और प्रकृति के व्याख्याता के रूप में जो प्रभाव तथा लोकप्रियता अर्जित की थी उसका उपयोग उसने अपनी नवअर्जित समाज की मसीहाई की भूमिका में खुलकर किया और इस रूप में उसने सौंदर्य के विनाश में प्रयुक्त हमारी सम्पत्ति के विरुद्ध तथा उसके असमान वितरण के विरुद्ध भी जिसके कारण कि धनिक तथा निर्धन दोनों ही वर्ग समान रूप से भ्रष्ट हो रहे थे, उसका खुलकर प्रयोग किया।

शताब्दी के अन्तिम वर्षों तक श्रमिक वर्ग में किसी भी प्रकार का शक्तिशाली समाजवादी आन्दोलन आरम्भ नहीं हो सका था, लेकिन अहस्तक्षेप नीति (लैसे फेयर) के प्रति असन्तोष काफी पहले से बढ़ता आ रहा था। जॉन स्टुअर्ट मिल की मृत्यु सन् १८७३ में हो गई थी और नव्य-उदारतावादी दर्शन का आलेख वह अगली पीढ़ी को सौंप गया था जिसने उसके बाद के युग के आचार-विचार को काफी प्रभावित किया। मिल की विचारधारा अर्ध समाजवादी विचारधारा थी। उसने प्रत्यक्ष करों, विशेष रूप से उत्तराधिकारों पर करों की मांग कर, धन के अधिक औचित्यपूर्ण वितरण को प्रेरित किया था, प्रभावशाली राष्ट्रीय तथा स्थानीय अधिकारीतन्त्र के माध्यम से सामाजिक अधिनियमों को लागू करा कर जीवन की परिस्थितियों को श्रेष्ठतर बनाने की चेष्टा की थी; पुरुषों तथा स्त्रियों को न केवल संसद के लिये वरन् स्थानीय प्रजातांत्रिक संगठनों के लिये भी मताधिकार की व्यवस्था का प्रबन्ध किया था। मिल के विचार में प्रजातंत्र तथा अधिकारीतन्त्र दोनों ही व्यवस्थाओं को साथ करना था, और मिल तथा उसके दर्शन का युग बीत जाने के बाद भी अधिकांशतः इसी दिशा में आधुनिक इंगलैंड की सामाजिक संरचना का निर्माण हुआ था।

लेकिन इंगलैंड की कृषि के ह्रास तथा अन्य देशों पर उसके औद्योगिक क्षेत्र में नेतृत्व की समाप्ति के बावजूद; और बावजूद इस चेतना के कि यद्यपि विक्टोरिया के शासनकाल की अन्तिम तीस वर्षीय अवस्था यद्यपि में कुल मिलाकर सभी समुदायों की स्थिति अच्छी थी और ये वर्ष देश की आर्थिक समृद्धि के वर्ष थे उसकी नगरीय जीवन की परिस्थितियों में तथा सामाजिक व्यवस्था में सभी कुछ श्रेष्ठ नहीं था यह चेतना भी निरन्तर बढ़ रही थी। सन् १८८७ तथा १८९७ में हुई महारानी की जयन्तियों को सभी वर्गों ने गर्व तथा कृतज्ञतापूर्वक मनाया था और इसका कारण अंशतः उन दुर्भिक्षपूर्ण स्थितियों से त्राण मिल पाना था जो महारानी के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में व्याप्त थीं और जिन्हें 'सन् चालीस की क्षुधित दशाब्दी' के रूप में जाना जाता था। इस काल में लोग विनम्र थे, गलियां सुरक्षित थीं, जीवन मानवीय था, स्वच्छता का तेजी से विकास हो रहा था और मजदूरों के मकान यद्यपि अब भी खराब दशा में ही थे लेकिन पहले की अपेक्षा उनकी दशा निस्सन्देह अच्छी थी। काम की स्थितियों में काफी सुधार हो गया था, पारिश्रमिक की राशि बढ़ गई थी, तथा काम के घंटों में कमी हो गई थी। लेकिन बेरोजगारी, बीमारी तथा वृद्धावस्था के विषय में राज्य

नियमित रूप से कुछ नहीं कर सका था और मजदूरों पर अब भी इनका आतंक व्याप्त था।

पील तथा ग्लैडस्टन द्वारा प्रचारित स्वतन्त्र वाणिज्य वित्त (फ्री ट्रेड फाइनेन्स) द्वारा अप्रत्यक्ष करों की राशि में कमी हो जाने के कारण गरीबों के सिर से करों का भार काफी कम हो गया था। फिर भी सन् अस्सी की दशाब्दी में आयकर की राशि में दो पैंस प्रति पाउण्ड से लेकर मात्र छः पैंस अर्ध पैनी का अन्तर था। अतिरिक्त कर को सम्मिलित न करने पर, अब, अर्थात् सन् १९४१ में, यह राशि दस शिलिंग है।

मुक्त-व्यापार (फ्री ट्रेड) को गरीबों को भार मुक्त करने के अतिरिक्त समुद्र पारीय देशों से होने वाले व्यापार तथा हमारी जहाजरानी के विकास का भी श्रेय था। यहां तक कि हमारे तटीय व्यापार के द्वार भी, सभी देशों के जहाजों के लिये उन्मुक्त कर दिये गये थे लेकिन स्वच्छन्द प्रतिस्पर्धा के कारण विदेशी व्यापारी उसके एक प्रतिशत का भी मात्र अर्धांश प्राप्त कर सका था और सन् अस्सी की दशाब्दी में इस तटीय व्यापार का आकार, जिसमें देश में काम आने वाले कोयले का विशाल परिणाम भी सम्मिलित था, हमारे सम्पूर्ण समुद्रपारीय वाणिज्य की तुलना में कहीं अधिक विशाल था। फिर भी संसार के विभिन्न सागरों को इंगलैंड के प्रमुख मार्गों के रूप में ही देखना होगा। सन् १८८५ में संसार के एक-तिहाई समुद्री जहाजों—जिनमें वाष्पचालित जहाज भी सम्मिलित थे—का लेखा-जोखा ब्रिटिश रजिस्टर में मौजूद था। पालों तथा चप्पुओं से चलने वाले जहाजों की संख्या में कमी होती जा रही थी लेकिन तेज चाल वाले 'क्लिपर्स' जहाज बढ़ रहे थे; सन् १८८५ में समुद्र में चल रहे हमारे चप्पू वाले जहाजों का कुल वजन अब भी उतना ही था जितना कि सन् १८५० में था, लेकिन वाष्पचालित जहाजों का वजन तुलनात्मक दृष्टि से चालीस लाख टन अधिक था।

यद्यपि लंकाशायर की कपास के व्यापार से प्रमुखतया सम्बद्ध लिवरपूल का बन्दरगाह लन्दन की अपेक्षा अधिक वस्तुओं का निर्यात करता था किन्तु लन्दन के बन्दरगाह से सम्बद्ध जहाजों का कुल वजन मर्सी के जहाजों की अपेक्षा साठ प्रतिशत अधिक था। विशाल टेम्स तथा मर्सी के बन्दरगाहों का निर्माण सन् अस्सी के दशक में पूर्ण हो चुका था। रेल व्यवस्था के कारण समुद्रपारीय वाणिज्य की वृद्धि में काफी सहायता मिली थी लेकिन अठारहवीं शताब्दी में प्रारम्भ की गई बन्दरगाहों की संख्या में कमी होने की प्रक्रिया में इससे एक कड़ी और जुड़ी और उनकी संख्या में और अधिक कमी हो गई। ह्विटबाई, लंकास्टर, आइर तथा अन्य कई छोटे बन्दरगाहों की दशा अब फौवे, चेस्टर तथा किंक जैसे बन्दरगाहों की भांति हो गई थी। लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बारो बन्दरगाह रेल मार्गों की बदौलत सामान्य स्थिति से एक विशाल बन्दरगाह हो गया और ग्रिम्सबाई भी लगभग क्षुद्र स्थिति से विशालता

की सीमा का स्पर्श करने लगा था। एक बड़ी अन्धकारपूर्ण अवधि के बाद साउथेम्प्टन का भी पुनरुत्थान हो गया था और इसका कारण यह था कि यह नगर अब पी. तथा ओ. के पूर्व की ओर जाने वाले मार्ग का प्रमुख केन्द्र (हैडक्वार्टर्स) हो गया था। यद्यपि टेनीसाइड आर्म्सस्ट्रोंग एल्सविक के गौरवपूर्ण दिनों में स्वयं अपनी पूरी शक्ति के साथ बढ़ रहा था, कार्डिफ की जनसंख्या भी तिगुनी हो गई थी और उसने न्यूकासल के संसार के सबसे अधिक कोयला निर्यात करने वाले केन्द्र होने के दावे को भंग कर दिया था। औद्योगिक पुनर्निर्माण तथा वाणिज्य की पुनः प्रगति के लिये रेल मार्गों ने इतना योगदान किया था। लेकिन वास्तव में स्थिति यह नहीं थी कि 'रेलों' ने टेनीसाइड का निर्माण किया, बल्कि यह थी कि टेनीसाइड ने उन्हें बनाया था।' (क्लैपहम, II, ५१९-५२९)।

स्वतन्त्र व्यापार (फ्री ट्रेड) की ऐसी समृद्धिपूर्ण स्थितियों के बीच बहुत सी ऐसी उपभोग की वस्तुएं, जिन्हें सन् १८३७ में विलास-सामग्री के रूप में देखा जाता था, सन् १८९७ में आम आराम की वस्तुओं की कोटि में आ गई थीं। भोजन, कपड़ा, बिस्तर, फर्नीचर पिछले किसी भी युग की अपेक्षा आज अधिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। गैस तथा तेल के स्थान पर बिजली का प्रयोग होने लगा था। छुट्टी के दिनों में समुद्र तट पर घूमना निम्न मध्यवर्ग के ही नहीं वरन् श्रमिक वर्ग के एक विशाल भाग के लिये भी, विशेष रूप से उत्तरी क्षेत्र में, नियमित जीवन का एक भाग बन गया था। सन् १८७६ में ब्लैकपूल पहले ही लंकाशायर के कारीगर के लिये वार्षिक छुट्टी बिताने के लिये बोरो (नगर) के आकार तथा स्थिति का हो गया था और साथ ही वह लैन्ड्युडनो तथा 'आइल ऑफ़ मैन' को भी सहयोग देता था। दूरी पर स्थित कॉर्नवाल पर छुट्टी बिताने के लिये ईस्टर के दिनों में सम्पन्न लोग तथा अगस्त में साधारण लोग पहले से ही जाते रहे थे। गर्मियों में केस्विक तथा विन्डरमियर के आवास-गृह तथा लेक-डिस्ट्रिक्ट के खेत घुमक्कड़ परिवार दलों से भर जाते थे।

रेलों के प्रारम्भ होने के पूर्व वाले युग में भी लन्दन निवासी ब्राइटन के घाटों पर झुंड बना कर घूमने आया करते थे और मार्गेट की बालू पर चहल कदमी किया करते थे। अब इंगलैंड तथा वेल्स का समूचा तट 'घुमक्कड़ों' तथा वहां आकर ठहरने वालों के लिये खुला था। दूर के नदी नालों तथा मछली पकड़ने के स्थानों में, जहां कि नगर से आकर परिवार ठहरते थे तथा बच्चे तथा बड़े जहां स्नान करते और चट्टानों पर ज्वार में बह कर आए सीप शंक चुनते थे; यहां नगरवासी तथा ग्रामीण जीवन के बीच की दूरी किसी अंश तक कम हो जाती थी।

लेकिन जहां विभिन्न मौसमों में घर से बाहर आकर छुट्टी बिताने की बात काफी आम हो गई थी वहीं प्रत्येक सप्ताह के अन्त में नगर से बाहर समय बिताने की अभी

केवल शुरुआत ही थी। जिन लोगों के पास बड़े देहाती मकान थे वे अपने मेहमानों सहित वहां जाकर रहते थे लेकिन मध्यवर्गीय परिवार के लिये देहाती क्षेत्रों में छुट्टी विताने के लिये अलग से आवास-गृह यदाकदा ही उपलब्ध होते थे। परिवार के रोज चर्च जाने तथा व्यापार में उलझे होने के कारण लोगों को सप्ताह में सभी दिन शहर में ही रहना होता था।

स्त्रियां अधिक खेल प्रेमी तथा अच्छी पद यात्री होती जा रही थीं और इसका कारण यह भी था कि उनकी स्कर्ट्स कुछ छोटी तथा किफायती होती जा रही थी; घाघरों तथा लंबी पोशाकों के अदृश्य हो जाने के बाद सन् अस्सी के दशक में क्रोकिट (गेंद से खेला जाने वाला एक प्रकार का खेल) के स्थान पर भद्र पुरुष तथा स्त्रियां लॉन-टेनिस खेलने लगे थे। सन् नव्वे के दशक में जैसे ही ऊंची वाइसिकिल के स्थान पर दो छोटे पहियों वाली साइकिल का आगमन हुआ उसका भी काफी प्रचलन हो गया, इससे भी स्त्रियों के उत्थान में काफी सहायता मिली—वे साइकिल पर सवार होकर अकेले अथवा किसी पुरुष के साथ देहातों में भ्रमण करने लगीं। मोटर कार तथा मोटर वाइसिकिल का आम प्रयोग विक्टोरिया की मृत्यु के समय तक भविष्य के ही गर्भ में था।

जिस समय नगरवासी पैदल ही अथवा वाइसिकिल पर अपनी ही भूमि पर भ्रमण तथा खोज कर रहे थे, अन्य लोग फ्रांस, स्विटजरलैंड तथा इटली में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक संख्या में जाने लगे थे, वे पश्चिमी यूरोप, भूमध्यसागर तथा मिश्र के सर्वोत्कृष्ट होटलों के मुख्य आश्रयदाता थे। और टॉमस कुक की 'यात्राएं अनेक खर्चीले लोगों तथा मितव्ययियों को यूरोप भ्रमण का आनन्द देती थी। सन् साठ तथा सत्तर के दशकों में—लैली स्टीफेन्सन, ह्विम्पर तथा प्रोफेसर टिन्डाल के काल में अंग्रेज स्विस मार्ग-दर्शकों (स्विस गाइड्स) के साथ, जिन्हें कि वे पारिश्रमिक देते थे, वर्फीले तथा चट्टानी पहाड़ों पर अभियान किया करते थे और इस प्रकार उन्होंने आल्प्स की अनेक चोटियों पर विजय प्राप्त करली थी। शताव्दी के अन्तिम दशक में वेल्स तथा लेक डिस्ट्रिक्ट में चट्टानों पर चढ़ाई करना स्वदेश में ही रह कर एक बुद्धि-कौशल प्रधान अवकाश व्यतीत करने जैसा कार्य हो गया था।

जॉन बुचन ने अपने संस्मरणों में अपनी युवावस्था के समय के लन्डन के समाज का विवरण देते हुए दक्षिणी अफीका के सन् १८९९ के युद्ध का उल्लेख किया है :

'शताव्दी के इस मोड़ पर लन्डन अपनी जॉर्जियन प्रकृति से मुक्त नहीं हो पाया था महारानी विक्टोरिया के निधन के समय तक शासक वर्ग प्रकृति से अभिजाततंत्रीय था और अभिजातवर्गीय आचार-व्यवहारों का पोषण करता था। इस वर्ग के विशाल प्रासाद अब भी उसी प्रकार स्थित थे—आधुनिक प्रकार के सुन्दर आवास-स्थलों (फ्लैट्स) में उनका रूपान्तरण अब भी नहीं हो सका था। ग्रीष्म में यह नगर आनन्दोत्सवों का एक केन्द्र बन जाता था, प्रत्येक गवाक्ष फूलों से सज जाता, मार्ग नाना

प्रकार की सजावट-सामग्रियों से सज जाते तथा पार्क सुन्दर नर-नारियों तथा घोड़ों के प्रदर्शन स्थल बन जाते थे। आनुष्ठानिकता तथा औपचारिकता पीछे छूट गई थी, फ्रॉककोट तथा टोप केवल वेस्ट-एन्ड में ही पहनने की वस्तु नहीं रह गये थे बल्कि न्यायालयों तथा नगर में भी पहने जाने लगे थे। रविवार के दिन दोपहर बाद लोगों के घर जाकर भेंट करना एक नियमित दिनचर्या हो गई थी। वार्तालाप आज जिस प्रकार एक आकस्मिकता बन गया है उस प्रकार वह विगत दिनों में नहीं था, उन दिनों वार्तालाप एक कला समझी जाती थी जिसमें कुशलता प्राप्त व्यक्ति को सम्मान मिलता था। क्लब भी लोगों को काफी आकर्षित कर रहे थे, उनमें सदस्यता प्राप्त करने वाले अभ्यार्थियों की सूची काफी लम्बी थी, और जिन उपयुक्त लोगों को उनकी सदस्यता प्राप्त हो जाती थी वे इसे अपने लिये एक उपलब्धि समझते थे.........भूत की ओर देखने पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह युग अविश्वसनीय रूप से एक सुरक्षित तथा आत्म-सन्तुष्टि प्रधान युग था। जहां तक मुझे स्मरण है उस समय लोग सुसंस्कारित थे, जिनमें असभ्यता का लेप मात्र भी कोई अंश नहीं था और न वे इस नवीन शताब्दी के आविर्भाव के बाद जिस प्रकार लोग धन-पिपासु हो गये हैं उस प्रकार धन-उपासक थे।' (मेमोरी होल्ड दि डोअर, पृ० ६२-६४)।

फिर भी यह 'समाज मिश्रित होता जा रहा था' और डु मॉरियर के 'पंच' के चित्रों में सर जॉजियस मिडास की भांति ऐसे लोग जिनके पास धन के अतिरिक्त और अपना कुछ न था महारानी की मृत्यु के पूर्व लन्दन की चित्रशालाओं में लगभग बीस वर्षों तक प्रमुखता प्राप्त करते रहे थे। पुराने तथा अधिक निश्चित अर्थ में 'समाज' पामरस्टोन के युग में भी एक सीमित वर्ग तक ही केन्द्रित था, जिसमें केवल ह्विग तथा टोरी कुलीन महिलाओं की इच्छा से ही प्रवेश सम्भव था। लेकिन सन् अस्सी की दशाब्दी में 'समाज' का अर्थ कुछ अनिश्चित सा हो गया था जिसमें सम्भवतः उच्च तथा व्यावसायिक वर्ग भी सम्मिलित थे, हाइड पार्क में होने वाले प्रदर्शन में बार-बार इधर-उधर घूमकर चक्कर लगाने वाले अथवा लन्डन के भोज-आयोजनों में बतियाने वाले सुन्दर पोषाक धारी स्त्री-पुरुष भी सम्मिलित थे। फिर भी, जैसा कि जॉन बुचन ने सत्य ही देखा है, ये लोग कम से कम राजधानी में शताब्दी के अन्त तक तो एक अभिजातवर्गीय परम्परा और तौर-तरीकों को अपनाए ही हुए थे। वे प्रान्तों के सुसम्पन्न बुर्जुआ लोगों से भिन्न थे, जो यार्कशायर तथा लंकाशायर में औपचारिक भोजों के स्थान पर 'स्तरीय चाय पार्टियों,' को अधिक पसन्द करते थे।

सन् सत्तर तथा अस्सी के दशकों में व्यावसायिक तथा व्यापारिक वर्गों में और साथ ही श्रमिक वर्गों के परिवारों का आकार काफी बड़ा था, और बच्चों की मृत्यु संख्या कम हो जाने के कारण जनसंख्या भी काफी बढ़ती जा रही थी। नगर की स्वच्छता में वृद्धि होने के कारण तथा चिकित्सा विज्ञान के ज्ञान तथा उपचार में निरन्तर प्रगति होते रहने के कारण मृत्यु संख्या में काफी कमी हो गई थी। सन् १८८६ में मृत्यु संख्या से

जन्म-दर इंगलैंड में जहां १३.३ अधिक थी जर्मनी में उस समय १०.८ थी और फ्रांस में यह संख्या १.४ थी।

सन् १८७० के बाद श्रमिक वर्ग के परिवारों के माता-पिताओं को सभी जगह प्राथमिक शिक्षा की सुविधाएं प्राप्त थीं, लेकिन स्कूल के समय के अतिरिक्त गरीबों के बच्चे अब भी सड़कों पर आवारा घूमते रहते थे। मध्यवर्गीय परिवारों के लिये यह युग काठ के घोड़ों पर चढ़ने तथा कागज की नौकाएं बहाने का युग था : शिशु शालाएं तथा स्कूलों के कमरे सजीवता तथा ऐसी चहल-पहल का अहसास कराते थे जहां बच्चों में चरित्र अंकुरित होता है और यह तब तक चलता रहता था जब तक कि सभी भाई बोर्डिंग स्कूल में नहीं चले जाते और अपनी बहिनों के लिये छुट्टी के दिनों को छोड़ कर प्रसन्नता अथवा क्षोभ का और अधिक कारण नहीं बनते थे। अध्यापिकाएं, आयाएं, परिचारिकाएं तथा रसोइये अब भी काफी संख्या में नियुक्त थे और वेतन आदि विषयक उनकी मांगें भी अधिक नहीं थीं। उनमें से कई तो घर के सदस्यों की ही भांति ही रहते थे, अन्य आते-जाते रहते थे और उन्हें याद भी यदा-कदा ही किया जाता था। इनकी सेवाएं काफी श्रमसाध्य तथा अपरिहार्य होती थीं, क्योंकि ऊंचे तथा सकड़े मध्यवर्गीय मकानों में श्रम की कुछ बचत की जा सके ऐसी किसी वस्तु का वहां प्रबन्ध नहीं था, अनेकों परिचारिकाएं टबों में भरने के लिये गर्म पानी के बर्तन लिये सीढ़ियों पर लड़खड़ाती हुई नजर आती थीं, और प्रत्येक कमरे में कोयला पहुँचाने का काम करती थीं जिसका धुआं लन्डन के कुहासे को और अधिक घना बनाता रहता था।

सन् नव्वे के दशक में ही यह स्पष्ट हो पाया था कि परिवारों के आकार छोटे होने लगे हैं, सर्वप्रथम यह परिवर्तन उन व्यावसायिक वर्गों तथा मध्यवर्ग में घटित हुआ था जिन्हें 'पब्लिक स्कूलों' में एक भारी शुल्क अदा करना पड़ता था और उन सम्पन्न शिल्पियों के वर्ग में भी घटित हो रहा था जिन्हें अपने जीवन-स्तर को उच्चस्तरीय बनाये रखने के लिये संघर्ष करना पड़ रहा था। सन् १८७७ में ब्रॉडलॉफ़ तथा श्रीमती बेसेन्ट ने नव्य-माल्थसवादी परिपत्र के प्रकाशन के बाद सर्वप्रथम राष्ट्रीय स्तर पर परिवार-नियोजन की विधियों का विज्ञापन किया गया था। लेकिन जो गन्दी बस्तियों में रहने वाले लोग इन सुधारकों का लक्ष्य थे उन्होंने उनके सुझाव पर सबसे कम ध्यान दिया था। जो परिवार बच्चों का वांछित प्रकार से लालन-पालन कर सकने में सर्वाधिक समर्थ थे, दुर्भाग्य से वे, वे परिवार थे जो आगामी शताब्दी में 'प्रजातीय-आत्म-हत्या' में रत हो गये थे।

सन् सत्तर तथा अस्सी की दशाब्दियां केवल बड़े परिवारों का ही युग नहीं थीं बल्कि नैतिक तथा यौन सम्बन्धी विचारों के क्षेत्र में विशुद्धतावादी दशाब्दियां थीं जिनमें मानवीय प्रकृति की दुर्बलताएं नित्य-प्रति व्यवहृत होती रहती थीं। महारानी विक्टोरिया का न्यायालय कठोर नियमों का ही पक्षपाती था। अधिकांश ब्रिटिश

व्यापारियों का वास्तव में ईमानदार होना हमारी व्यापारिक समृद्धि का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण था। इस युग के लोकप्रिय नायक, जिनमें नायकत्व के निस्सन्देह सभी गुण विद्यमान थे—सर्वप्रथम तथा सर्वाधिक धार्मिक व्यक्ति थे : अफ्रीका की खोज करने वाले तथा धर्मावलम्बी लिविंगस्टन, सेवाधर्मी-सैनिक जनरल गॉर्डन, लॉर्ड शैफ्ट्सबरी तथा ग्लैडस्टन—इन सभी व्यक्तियों के लिये, जो परस्पर काफी भिन्न थे, जीवन का अर्थ केवल ईश्वरीय सेवा में निरत होता था।

लेकिन इन पुराने तथा रूढ़ धार्मिक विश्वासों पर, जो इन लोगों की दृष्टि में इतने अर्थपूर्ण थे, उस काल के 'नास्तिवादी' सफलतापूर्वक आक्रमण कर रहे थे। लेकिन दृष्टिकोण तथा भावनाओं की दृष्टि से ये 'नास्तिवादी' भी 'विशुद्धतावादी' (प्यूरिटन) ही थे। 'संस्कृति' के भविष्यद्रष्टा मैथ्यू ऑरनोल्ड ने 'चरित्र' को 'जीवन के तीन भागों' की दृष्टि से देखा था लेकिन 'चरित्र' की अवधारणा उनके निकट *संकीर्णता अथवा विशुद्ध नकारात्मकता की अवधारणा नहीं थी।* जार्ज इलियट के उपन्यासों को जो ख्याति प्राप्त हुई थी उसका श्रेय अधिकांश इसी तथ्य को है कि अनेकों लोगों ने उन्हें 'बुद्धिवादी नास्तिक चेतना को स्वीकार्य, आत्मोन्नति की प्रक्रिया तथा नैतिक मूल्यों की पुर्नव्याख्या' के कारण ही मान्यता प्रदान की थी। 'सार्टर' में कार्लाइल के मंत्र-वाक्यों ने अनेकों लोगों को एक अस्पष्ट किन्तु प्रभावशाली चिन्तन प्रदान किया था, जिनमें डार्विनवाद के प्रवल समर्थक वे हक्सले भी सम्मिलित थे जिन्होंने कि 'ल्यूथर एट वर्क्स' की भांति आक्सफोर्ड में ब्रिटिश एसोसिएशन की प्रसिद्ध बैठक में पादरी-विचारों का स्पष्ट उल्लंघन कर दिया था। लेस्ली स्टीफेन तथा जॉन-मॉरले द्वारा असत्य अन्धविश्वासों से समझौता कर लिये जाने से इनकार कर देना भी सत्रहवीं शताब्दी के विशुद्धतावाद की कट्टरता से युक्त था। लेस्ली स्टीफेन एक समय पादरी रह चुके थे और इसी प्रकार लोकप्रिय उदारतावादी इतिहासकार जे. आर. ग्रीन भी पादरी थे। साहित्य तथा चिन्तन के क्षेत्र में यह युग धर्म से पृथक् एक अर्द्ध-धार्मिक आन्दोलन का युग था।

'इसकी वहुपक्षी जिज्ञासा तथा सामर्थ्य, इसके आत्मविश्वास तथा तत्परता—इन सभी दृष्टियों से उत्तर मध्य विक्टोरिया कालीन संस्कृति यूनानी (ग्रीक) थी। बौद्धिक अभियानों तथा नैतिक अनुदारतावाद की ओर इसके रुझान इसे वास्तव में एथेनियन प्रकृति के निकट ले आता है। समकालीन लोगों द्वारा टेनीसन की निम्न पंक्तियों के अतिरिक्त कोई और पंक्ति भी इतनी अधिक उद्धृत हुई है इसमें मुझे सन्देह है :

ज्ञान निरन्तर अधिक से अधिकतर होता जाय, किन्तु उससे भी अधिक रहे हममें ईश्वराराधन और मन और आत्मा रहें समस्वर तथा सदा की भांति एक ही तान दोनों से निकले, किन्तु यह अधिक से अधिक व्यापकतर हो।

विक्टोरिया कालीन केन्द्रीय स्थायित्व के विस्तार के आदर्श को इतनी पूर्णता से और कोई शब्द अभिव्यक्त नहीं कर सकते। लेकिन क्या कोई इस बात का दावा कर सकता है कि ये पंक्तियां सोफोक्लीज का अनुवाद नहीं हैं?" (डेलाइट एंड शैम्पेन, पृ० २६४, जी. एम. यंग.)।

जीवन तथा चरित्र के प्रति विशुद्धतावादी दृष्टिकोण के विकास में विक्टोरिया कालीन बाइबिल धर्म ही मात्र एक कारण नहीं था बल्कि एंग्लो-कैथोलिक धर्म, जिसका उद्भव सन् तीस के दशक में चलाये गये ऑक्सफोर्ड आन्दोलन से हुआ था और अब उसका प्रसार भी काफी हो रहा था, भी एक कारण था और ग्लैडस्टन तथा सैलिसबरी जैसे लोग भी उसका प्रतिनिधित्व कर रहे थे। लेकिन ज़िला (पैरिश) पादरी वर्ग में एंग्लो-कैथोलीसिज़्म सर्वाधिक शक्तिशाली था। इन पादरियों में से कइयों को इस मत ने, तीव्रता से समाप्त होते हुए उन सामाजिक स्तरों पर जिन पर कभी 'एस्टेब्लिशमेन्ट के पादरी, प्रतिष्ठित थे स्वयं को प्रतिष्ठित करने के लिये एक इच्छा तथा आत्माभिमान प्रदान किया था। सामान्य मानवीय स्वभाव की अभिव्यक्ति पर एंग्लो-कैथोलिक प्रभाव ने अधिक नियम न लाद कर सुविधाएं प्रदान कर दी थी जिसमें 'सैबाथ' के अनिवार्य पालन का इतना आवश्यक न होना भी सम्मिलित था। यह कार्य एवांगेलिकल सम्प्रदाय नहीं कर सका था। 'इंगलिश रविवार' के पालन में होने वाले मन्द परिवर्तनों के अच्छे तथा बुरे दोनों ही प्रकार के प्रभाव पड़े थे। भूत की अट्टरताओं अथवा कठोरताओं तथा वर्तमान के स्वच्छन्द आचरणों के बीच की इस संक्रान्त अवस्था में कई परिवारों की इस क्रिया में कि वे अब भी यदि धार्मिक ग्रन्थों का पठन नहीं तो कम से कम अपना 'रविवारीय अध्ययन' अवश्य जारी रखे हुए थे, एक अच्छाई ही थी। सप्ताह में एक दिन, उपन्यासों तथा पत्रिकाओं को एक ओर रख कर अधिक स्थूल अथवा धर्मनिरपक्ष काव्य तथा इतिहास के साथ बाइबिल, पिलग्रिम्स प्रोग्रेस तथा पैराडाइस लॉस्ट जैसे गम्भीर साहित्य का भी अध्ययन किया जाता था।

केवल कुछ परिवर्तित रूप में रविवारीय अनुष्ठानों का ही पालन नहीं बल्कि शताब्दी के अन्त तक बाइबिल का पाठ तथा पारिवारिक प्रार्थनाएं भी नियमित रूप से प्रचलित थीं। अंग्रेजी जीवन पर पड़े चार्ल्स साइमिओन के प्रभाव से सम्बन्धित अपने अध्ययन में कैनन स्मिथ ने लिखा है:

"घर में एवांगेलिकल धर्म का पालन किया जाता था; और पारिवारिक पूजा के इस पुनरअभ्युदय में एक महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की थी। हां यह ठीक है कि यह पुनरुत्थान एक प्रकार से उच्च तथा मध्य वर्गों, विशेष रूप से मध्यवर्ग तक ही, सीमित था, लेकिन इन सीमाओं के अन्तर्गत ही इसका इतना अधिक प्रसार हुआ था कि सन् १८८९ में किंग्ज़ (कैम्ब्रिज) के प्रधानाचार्य ने उस कॉलेज के स्नातक-पूर्व कक्षाओं के विद्यार्थियों को सम्बोधित उपासना गृह में उनकी ऐच्छिक उपस्थिति के विषय में अपने

सूचना-पत्र में यह लिखा था कि : 'आप में से अनेक ऐसे परिवारों से यहां आए हैं जहां प्रार्थना करने की प्रथा रही है'···आज प्रार्थना की वह प्रथा विलीन हो चुकी है : यह केवल इस कारण ही नहीं हुआ कि विक्टोरियन करुणा का अन्त हो गया है बल्कि इसलिए भी हुआ है कि विक्टोरिया परिवार भी समाप्त हो चुका है।' (साइमिओन एंड चर्च ऑर्डर, चार्ल्स स्मिथ, १९४०, पृ० १९-२०)।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में इंगलिश धर्म का गठन आदेशात्मक प्रकार का था, लेकिन उसके मूल में ही स्थित कुछ दुर्बलताएं भी थीं जिन्हें वैज्ञानिक आविष्कारों के आन्दोलन ने काफी झकझोरा : समायोजन विरोधियों (नॉन-कनफर्मिस्ट्स), एवांगेलिकलों और कुछ कम अंशों में प्रतिष्ठित पादरियों, जैसे विशप सैमुअल विलबरफोर्स तथा मि. ग्लैडस्टन — इन सभी के लिये बाइबिल प्रेरणा स्रोत थी। चार्ल्स डार्विन वॉल्तेयर के उतना ही विपरीत था जितना कोई भी मनुष्य हो सकता था, मूर्ति-भंजक बनने की उसकी कोई अभिलाषा नहीं थी, चर्च को वह 'घृणित स्थान' नहीं समझता था, और उसकी मृत्यु के पश्चात् उसे ससम्मान दफ़न भी वेस्टमिनस्टर एबे में ही किया गया। लेकिन उसकी वैज्ञानिक शोध ने उसे जिन निष्कर्षों तक पहुँचाया था वे जेनेसिस के प्रारम्भिक अध्यायों से, जो अंग्रेजी बाइबिल के भी उतने ही अंश थे जितने कि न्यू टेस्टामेन्ट के थे, संगति स्थापित न कर सके थे। सामान्य रूप से विकासवादी विचार तथा 'मनुष्य बन्दर की सन्तान है' यह धारणा मनुष्य के उद्‌भव तथा ब्रह्माण्ड में उसकी केन्द्रीय स्थिति विषयक धार्मिक स्थापनाओं के प्रतिकूल था।

अत: धर्म-जगत् का सनातन स्थिति तथा अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये, खड्गहस्त हो जाना स्वाभाविक था। वैज्ञानिक लोगों की नई पीढ़ी का अपने सम्मानित नेता की रक्षा के लिये उठ खड़े होना और अपने इस अधिकार का प्रतिपादन करना कि चर्च की प्राचीन परम्पराओं से तथा सृष्टि की उत्पत्ति और विकास के बाइबल-सिद्धान्त से, के आग्रहों से मुक्त होकर अपने अनुसन्धानों द्वारा दर्शाए परिणामों को ही स्वीकार करने में उनकी आस्था है, भी स्वाभाविक था। यह संघर्ष सन् साठ-सत्तर तथा अस्सी की दशाब्दियों में निरन्तर चलता रहा। यह संघर्ष न्यू टेस्टामेन्ट सहित सभी प्रकार के चमत्कारों में निहित विश्वासों के विरुद्ध था। बुद्धिजीवी इस संघर्ष के कारण अधिकाधिक पादरी-विरोधी, धर्म-विरोधी तथा भौतिकतावादी होते जा रहे थे।

इस परिवर्तन तथा संघर्ष के युग में व्यक्तिगत तथा पारिवारिक अशान्ति जन्म लेने लगी थी; शिक्षित पुरुषों तथा स्त्रियों का संसार एक ऐसे वास्तविक विवाद का विषय बन गया था जिसे कि अंग्रेजों का स्वभावगत स्नेहिल समझौतावाद भी शान्त नहीं कर सका था।[१] बीसवीं शताब्दी में यह तूफान गुजर चुका है, पुराना संघर्ष

---

१ टेनीसन की बौद्धिक विचक्षणता जो किंग आर्थरस् नाइट्स के ईश-गान से पूर्व उसकी

समाप्त हो चुका है और उसमें खेत रहे पक्ष को दफ़ना दिया गया है। आस्था एवं अस्वीकार्य दोनों ही की अपनी पृथक् स्थिति है। सन् सत्तर की शताव्दी के वैज्ञानिक के भौतिकवाद को उतनी ही अमान्यता प्राप्त है जितना कि वाइविल में लिखित शाव्दिक सत्य अमान्य है। दोनों ही पक्ष यह स्वीकार करते हैं कि विश्व के सम्वन्ध में *सम्पूर्ण सत्य की खोज न तो प्रयोगशाला में ही कर पाना सम्भव है और न चर्च में ही* यह प्राप्त हो सकता है। लेकिन इसकी प्राप्ति कहां हो सकती है यह निश्चय कर पाना अत्यन्त कठिन है।

उन्नीसवीं शताव्दी के अन्तिम वर्षों में एंग्लिकन तथा प्रोटेस्टेन्ट चर्चों के अन्तर्गत कट्टरपंथी विश्वासों के दोलायमान हो जाने से उन लोगों के मध्य, जो किसी शंकाजन्य स्थिति में स्वयं को नहीं रखना चाहते थे, रोमन चर्च के आस्थावान तथा सम्पूर्ण ज्ञान के दावे को प्रचारित्त होने में काफी सहायता मिली। निम्न वर्गों में वाहर से आने वाले आयरिश लोगों, फैशनेवल तथा वुद्धिवादी उच्चवर्गों से मत परिवर्तन कर आने वाले लोगों तथा रोमन कैथोलिक लोगों में वढ़ती हुई जन्म-संख्या के कारण रोमन-सहधर्मचारिता (रोमन कम्यूनिअन) को, विक्टोरिया के शासन युग के अन्तिम समय में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया था।

उन्नीसवीं शताव्दी के उत्तरार्ध में पुरातत्वशास्त्र तथा इतिहास की तीव्र प्रगति हो रही थी और उनके अन्वेषणों से अन्धविश्वासों के विरुद्ध लगे विज्ञान के मोर्चे को काफी वल प्राप्त हुआ था। लेकी की हिस्ट्री ऑफ़ रेशनलिज्म (१८६५) तथा हिस्ट्री ऑफ़ सिविलिज़ेशन (१८७५) में व्यक्त वकल का अतिविश्वासी भौतिकवाद वस्तुतः उसी तीव्र प्रवाह के अंग थे जिसमें कि लोग अपने पुरातन विश्वासों से छूटे चले जा रहे थे। वौद्धिक जगत् में प्रतिष्ठित एक 'उदारतावादी' शैक्षणिक दल को, आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों को चर्च के एक छत्र अधिकार से मुक्त कराने के लिये काफी संघर्ष करना पड़ा था और सन् १८७१ का टेस्ट अधिनियम वनवाकर इस संघर्ष में उसने विजय भी प्राप्त कर ली थी। लन्दन तथा मैनचेस्टर के नये विश्वविद्यालय इस स्वाधीनता का अपने जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में काफी समय तक उपभोग कर चुके थे।[२]

प्रारम्भिक युवावस्था में रची गई कविताओं में व्यक्त हुई थी उस पर लोग व्यर्थ ही आघात करते हैं। उसकी इन मेमोरियन नामक कृति में जो सन् चालीस के वर्षों में लिखी गई थी और सन् १८५० में डार्विन की 'ओरिजिन ऑफ़ स्पेसीज' नाम ग्रन्थ के नौ वर्ष पूर्व, प्रकाशित हुई थी। इसमें आस्था एवं विज्ञान के वीच छिड़ने वाले उस संघर्ष की, जिसने आगामी युग को झकझोर डाला था, पूर्वकल्पना कर डाली थी।

२ वहुत से प्रादेशिक विश्वविद्यालयों की स्थापना इनके भी वाद में, वीसवीं शताव्दी

दो पुराने विश्वविद्यालय नयों के साथ इतने घुल मिल गये थे कि महारानी के शासनकाल की समाप्ति के पूर्व आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के कर्मचारी पादरियों की अपेक्षा सामान्यजन अधिक थे और उन्हें सदस्यता (फैलोशिप) बनाए रखते हुए भी अब विवाह की अनुमति भी दे दी गई थी। शैक्षणिक अध्ययन के अन्तर्गत भौतिक विज्ञान तथा मध्ययुगीन इतिहास व आधुनिक इतिहास का अध्ययन भी उसी तीव्रता के साथ किया जाने लगा था जिस प्रकार कि पुरातन मानवतावाद तथा गणित का अध्ययन किया जाता था। शताब्दी के अन्तिम दशकों में कैम्ब्रिज का प्रतिनिधित्व संसार के महान् वैज्ञानिक जैसे क्लर्क मैक्सवैल, रैले तथा युवक जे. जे. थॉमसन करते थे, आर्कडीकन कनिंघम आर्थिक इतिहास की नींव डाल रहे थे और मैटलैण्ड की प्रतिभा मध्ययुगीन लोगों के आम विचारों को कानून जैसे कठोर माध्यम द्वारा अभिव्यक्त कर रही थी। आक्सफोर्ड का परिवर्तन इससे भी अधिक तीव्र था; इस शासनकाल के प्रारम्भ में उस पर न्यूमैन तथा उसके विरोधियों का, जो संतों के चमत्कार प्रदर्शनों तथा पादरियों की सत्ता को लेकर सदैव झगड़ते रहते थे—प्रभाव रहा था। तीस वर्ष बाद विश्वविद्यालय का वातावरण दूसरा ही हो गया था जिसमें ढले व्यावहारिक एवं उदार चरित्र का प्रतिनिधित्व मास्टर आफ बैलिओल के रूप में जोवेट करते थे और स्टब्स तथा गार्डिनर की विद्वता अंग्रेजी संविधान के विकास की द्योतक बन गई थी; और टी. एच. ग्रीन ने नैतिक दर्शन की एक नवीन व्यवस्था का प्रारम्भ किया था।

विक्टोरिया के शासनकाल का उत्तरार्द्ध निःसन्देह एक ऐसा काल था जिसमें आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों का जनता की दृष्टि में काफी महत्व बढ़ा। उनका सुधार, विशेष रूप से शैक्षणिक पदों के लिये धार्मिक परीक्षा का अनावश्यक (१८७१) घोषित कर दिया जाना उस युग का सर्वाधिक राजनैतिक मामला था। सन् सत्तर की दशाब्दी के उदार-मानस तथा उच्चशिक्षा प्राप्त प्रशासक वर्ग, ह्रासोन्मुख अभिजात वर्ग अथवा उठते हुए धनिकतंत्र से अपना सम्बन्ध न जोड़कर विश्वविद्यालयों से अधिक सम्बद्ध था। ग्लैडस्टन ने राजकीय कार्यालयों में विशेष सुविधाओं के आधार पर नियुक्तियां समाप्त कर प्रतियोगिता एवं योग्यता को प्रश्रय दिया। पिछले युग के अभिजातवर्गीय राजनीतिज्ञों तथा पॉमरस्टोन को परीक्षकों के निर्णयानुसार लोगों की राजकीय सेवा में नियुक्ति करना भला नहीं लगता था। इस नवीन युग में विशेषाधिकारों की समाप्ति एक प्रकार से आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज की परीक्षा प्रणाली एवं उपाधियों की प्रतिष्ठा के प्रति सम्मान प्रदर्शन ही था, और इसका प्रभाव यह हुआ कि पहले की अपेक्षा अब विश्वविद्यालयीय लोगों तथा जनता के मध्य अधिक

के प्रारम्भिक वर्षों में हुई थी। सन् १९०२ के बालफोर विधेयक के पूर्व जिस लोकप्रिय माध्यमिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था की कमी थी वही इस बात का प्रमुख कारण थी कि नये विश्वविद्यालयों का विकास इतनी मन्द गति से हुआ।

घनिष्ट सम्वन्ध स्थापित हो गया। सामाजिक संरक्षण अथवा प्रभावशाली मित्रों की अपेक्षा अव से प्रशिक्षित बुद्धि का होना ही किसी नवयुवक की योग्यता का प्रमाणपत्र बन गया था। परीक्षा प्रणाली के दोषों, विशेष रूप से स्कूलों की शिक्षा पर पड़ने वाले कुप्रभावों के प्रति अभी जागरुकता नहीं उत्पन्न हो सकी थी, और न ये दोष उस समय इतने हानिकर ही सिद्ध हो सके थे।

लेकिन इस शासनकाल के अन्तिम वर्षों की विशेष उपलब्धि शायद राष्ट्रीय जीवन चरित्र कोष (डिक्शनैरी ऑफ़ नेशनल वायोग्राफी) की रचना थी। इस 'जीवनी कोष' की रचना किसी विश्वविद्यालय अथवा राज्य के तत्वावधान में नहीं की गई थी। इसके प्रणयन एवं प्रकाशन का पूर्ण श्रेय जार्ज स्मिथ नामक एक प्रकाशक को है जिसकी अनेक लेखकों से व्यक्तिगत मित्रता थी और इसी ने उसे इस महान् कार्य की प्रेरणा भी दी थी। यह कोष वाणिज्य-योग्यता, प्रवुद्ध जन भावना, तथा विक्टोरिया काल की व्यापक साहित्यिक एवं ऐतिहासिक विद्वत्ता के चरमोत्कर्ष का प्रतीक है। एक राष्ट्र के भूतकाल के विषय में यह एक ऐसा सर्वोत्कृष्ट उपलब्ध विवरण है जिसे आज तक कोई भी सभ्यता उत्पन्न नहीं कर सकी है।

इसे पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि प्रारम्भिक विक्टोरिया काल के धर्माचरणों के विरुद्ध हुए अंग्रेजी विद्रोह का सिद्धान्तों अथवा आचरण किसी भी दृष्टि से सुखवाद (हेडोनिज्म) से संबंध नहीं है। केवल सन् नव्वे की दशाब्दी में ही जिसे ह्रासोन्मुख युग (फिन डे स्यावल) कहा जाता था उसमें ही यदि अराजकता नहीं तो कम से कम अस्थिरता की ओर घटित हो रहे परिवर्तन को स्पष्ट देखा जा सका था, और इसका कारण निःसन्देह उन धार्मिक विश्वासों का लड़खड़ा जाना था जिनसे कि त्याग एवं संयम के नैतिक मूल्य सम्बद्ध थे। जव धर्म 'जन साधारण में व्याप्त विश्वासों, आचरणों तथा महत्वाकांक्षाओं से विलग हो 'व्यक्तिगत आवश्यकताओं' द्वारा निर्धारित होने लगा तब उन लोगों के आचरण पर, जिन्हें इसकी आवश्यकता नहीं थी, उसका प्रभाव शून्य हो जाना स्वाभाविक ही था।' रविवार को पारिवारिक प्रार्थनाओं तथा नियमित रूप से गिरजाघर जाने के कार्यक्रम से निवृत्त होकर जब लोग नगर के बाहर भ्रमण के लिये जाने लगे तथा घुड़-दौड़ तथा अन्य आमोद-प्रमोदों का आश्रय ग्रहण करने लगे उस समय इस संक्रमण का प्रिन्स ऑफ़ वेल्स (वाद में एडवर्ड सप्तम) ने सहानुभूति शून्य माता तथा अबुद्धिमत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली का विरोध कर नेतृत्व ग्रहण किया था। शताब्दी का यह अन्तिम दशक येलो वुक तथा 'कला, कला के लिये' का युग है। लेकिन इस युग के महानतम लेखक, मैरेडिथ, विलियम मॉरिस, स्टीवेन्सन तथा होज़मैन, कट्टर धार्मिकता का विरोध करने के वावजूद अपने-अपने ढंग से उतने ही 'गम्भीर' भी थे जितने कि प्रारम्भिक विक्टोरिया काल के लोग थे।

शिक्षित वर्गों में धर्म तथा विज्ञान के संघर्ष की पुनरावृत्ति चार्ल्स ब्रैडलॉफ़ के वास्तविकतावाद में प्रभावशाली ढंग से हुई थी, यद्यपि वह कुछ अपरिष्कृत रूप में थी। वह सार्वजनिक मंचों पर श्रमिकों के बीच भाषण देता था; और अन्तिम एवांगेलिकल पुनरुत्थान तथा मुक्ति सेना (साल्वेशन आर्मी), जिसकी स्थापना 'जनरल' बूथ ने की थी, ने वेस्ले का अनुकरण कर भूखे, बेघर, शराबी तथा अपराधियों की एक दीर्घ पंक्ति के मत परिवर्तन (कनवर्शन) को प्रेरित किया। आगामी युग की यह विशेषता थी कि 'साल्वेशन आर्मी' की कार्य प्रणाली पिछले विरोधी संगठनों की अपेक्षा अधिक रोमांचकारी थी। प्रोटेस्टैंट धर्म की सेवार्थ सड़कों पर बजने वाले बाजों तथा रंगीन पोशाक का प्रयोग एकदम नयी बात थी। यह कोई कम महत्वपूर्ण बात नहीं थी कि मुक्ति-सेना (साल्वेशन आर्मी) समाज सेवा तथा तिरस्कृत लोगों एवं गरीबों की आर्थिक स्थिति की देख-रेख करना ईसाई धर्म का कर्त्तव्य समझती थी। इसी कारण उसकी शक्ति आधुनिक अंग्रेजी जीवन का एक स्थायी अंग बन गई थी। केवल पुन: स्थापना पर ही उसका अस्तित्व निर्भर नहीं करता था।

धार्मिक तथा सामाजिक उद्देश्यों का मुक्ति-सेना ने जो समन्वय किया था उसी के अनुरूप एक और आन्दोलन पूर्ण-विरक्ति (टोटल एब्स्टेनेन्स) अथवा 'टीटोटलिज्म' का भी प्रारम्भ हुआ था। अत्यधिक मदिरा पान तथा शराब पर बेतहाशा खर्च करना शहरी जीवन का एक प्रमुख दोष बन चुका था जिसके कारण परिवारों का विनाश तथा अपराधों की वृद्धि हो रही थी; यह विनाश विशेष रूप से तब से प्रारम्भ हुआ था जब से कि बियर (हल्की शराब) का स्थान तेज शराब लेने लगी थी। हमारे चरित्र-चित्रणकर्त्ता इंगलिश स्वभाव के इस दु:खद पक्ष के सामने अपनी कला का दर्पण होगार्थ की 'जिन लेन' कृति से लेकर क्रिकशैंक की 'दि बॉटल एंड दि ड्रंकर्ड्स चिल्ड्रन' (१८४७-१८४८) के प्रकाशन तक, जिसकी दस हजार प्रतियां बिक चुकी थीं, रखते आ रहे थे। इसके बाद के वर्षों में सभी वर्गों की मद्यपान सम्बन्धी आदतों के विरुद्ध 'ब्लू रिबन आर्मी' ने एक सुसंगठित आक्रमण किया था जो पर्याप्त रूप में सफल हुआ था: पूर्ण विरक्ति की प्रतिज्ञा करने वाले अपने सीने पर एक नीला फीता पहनते थे जिससे कि जनता उनकी प्रतिज्ञा से अवगत हो सके और वे भी अपनी शपथ का निर्वाह कर सकें। सन् सत्तर के दशक में टेम्परेन्स दल, जिसका विरोधियों (नॉन कनफर्मिस्ट्स)[1] पर विशेष प्रभाव था, उदारतावादी राजनीति (लिबरल पॉलिटिक्स)

[1] लेकिन सभी धार्मिक संगठनों ने टेम्परेन्स आन्दोलन को गति दी थी। सन् १९०९ में इंगलैंड की टेम्परेन्स सोसाइटी के चर्च की सदस्य संख्या ६३९,२३३ थी। इन सदस्यों में से ११४,४४४ ने मद्यपान को पूर्णरूपेण त्याग देने की शपथ ले ली थी और ४८६,८८८ बालक-सदस्य थे। यह उल्लेखनीय है कि टेम्परेन्स सोसाइटीज़ बच्चों को मदिरा से उनका परिचय हो इसके पूर्व ही अपना सदस्य बना लेती थीं।

में एक शक्ति रूप बन गया था लेकिन मद्यपता का दमन करने के लिये उन्होंने जो वैधानिक प्रस्ताव रखे थे उनमें एक सनक विद्यमान थी जिसके कारण व्यावहारिक नियमों का बन पाना दीर्घकालीन अवधि तक मुल्तवी होता रहा था। इस आन्दोलन ने मदिरा-पान के समर्थकों की गतिविधियों को उत्तेजित कर अधिक संगठित कर दिया था; मदिरा बनाने वाली कम्पनियों के साझीदारों की एक बड़ी जमात सहायता के लिये उठ खड़ी हुई थी और शताब्दी के अन्तिम दशकों में उन्होंने उस अनुदार दल का समर्थन प्राप्त कर लिया था जिसने कि सन् १८८६ के बाद देश की सत्ता संभाली थी।

केवल शराब से परहेज करना ही नहीं बल्कि शराब तथा बिअर का उचित उपयोग भी बढ़ती हुई सुविधाओं तथा ऊब की मात्रा में कमी होने से बढ़ने लगा था; अन्य मनोरंजनों तथा अध्ययन, संगीत, खेलों, दृश्यावलोकन, साइकिल की सवारी आदि में छुट्टियों का समय व्यतीत करना तथा इस सब के अतिरिक्त फिर पारिवारिक सुख-शांति में वृद्धि तथा शिक्षा के प्रसार के कारण जीवन संतुलित हो चला था। फिर शराब बनाने वाली कम्पनियां भी धीरे-धीरे भय तथा लज्जा के कारण अपने अधीनस्थ मदिरालयों से सम्बन्धित नीति को प्रबुद्ध बनाने लगी थीं—ये स्थल सुन्दर बनने लगे थे तथा शराब के अतिरिक्त अन्य वस्तुएं भी बिक्री के लिये रखने लगे थे, ताकि ग्राहकों को हर चीज़ के लिये बाहर न जाना पड़े। और सन् १६०४ के 'बाल फोर लाइसेंसिंग' अधिनियम के कारण अन्त में इन मदिरा बिक्री केन्द्रों की संख्या को कम करने की व्यावहारिक विधि भी निकाल ली गई।

बीसवीं शताब्दी में मद्यपान को सिनेमा तथा बेतार के तार जैसे अन्य दुश्मनों का भी सामना करना पड़ रहा है; और प्रशिक्षित श्रमिकों को ही काम देने तथा यंत्रों के उपयोग के कारण—विशेष रूप से मोटर कार के चलाने में—भद्र तथा संतुलित व्यवहार एक अनिवार्य योग्यता बन गया है। लेकिन अब शायद मद्यपान से भी अधिक जुआ खेलने से हानि होती है। लेकिन महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के समय सभी सामाजिक वर्गों में मद्यपान का रोग आज की अपेक्षा तथा महारानी के शासन ग्रहण करने के समय की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक था।

विक्टोरिया के युग में विश्व पर फोटोग्राफी का काफी प्रभाव पड़ा था। सन् १८७१ में ही एक द्रष्टा के शब्दों में फोटोग्राफी बाद के वर्षों में गरीबों के लिये अब तक का सर्वश्रेष्ठ वरदान सिद्ध हुई थी। 'जिस किसी को भी निम्न वर्गों में पारिवारिक स्नेह के महत्व का ज्ञान है और जिसने उनके कमरे में छोटे-छोटे चित्रों की एक लम्बी पंक्ति को टंगे हुए देखा है, जिसमें पारिवारिक एकता तथा जीवन के विलग होते हुए पक्षों को—"कैनेडा गया हुआ पुत्र", "नौकरी पर बाहर गई हुई पुत्री", "फूलों की छाया में विश्राम कर रहा स्वर्ण केश बच्चा", "ग्रामवासी वृद्ध पितामह"—इन सबको स्मृति स्वरूप संजो कर रखा है, वह शायद मेरी इस अनुभूति को समझ सके कि जो

सामाजिक तथा औद्योगिक प्रवृत्तियां पारिवारिक स्नेह को विछिन्न कर रही हैं उनके निराकरण में सेवा भाव से किया जाने वाले किसी भी कार्य की अपेक्षा छः पैंनी वाले छाया-चित्रों का अधिक योगदान है।" (मैकमिलन'स मेगजीन, सितम्बर, १८७१)।

सबसे सस्ते तथा बिलकुल ठीक-ठीक चित्रण के क्षेत्र में फोटोग्राफी ने निस्सन्देह सभी वर्गों को मृत अनुपस्थित, विगत तथा घटनाओं और सम्बन्धों की तीव्र स्मृतियों को संजो पाने में पर्याप्त योगदान किया है।

कला पर पड़ने वाले इसके लाभकारी प्रभावों के बारे में निश्चय ही सन्देह किया जा सकता है। विगत काल में कई हजार चित्रकार व्यक्तियों के चित्र, घटनाओं, दृश्यों, तथा इमारतों के रेखांकन तथा प्रसिद्ध प्राप्त चित्रों की अनुकृति की आय पर आश्रित थे। अब से इस मांग की पूर्ति फोटोग्राफी करने लगी थी। चित्रकारिता के पेशे के महत्व को कम कर देने में तथा सूक्ष्म वास्तविकताओं के चित्रण में चित्रकला के पिछड़ जाने से उसे सैद्धांतिक तथा 'कला, कला के लिये' के क्षेत्र में किये जाने वाले बौद्धिक प्रयोगों का ही आश्रय ग्रहण करना पड़ा।

यदि विक्टोरिया-युग के अन्तिम काल की अंग्रेजी भाषा के स्वरूप की एलिजाबेथ के अन्तिम वर्षों की भाषा से तुलना की जाए तो उनमें कोई अन्तर नहीं दिखाई पड़ेगा : एक आधुनिक अंग्रेज सन् १६११ की बाइबिल को सरलता से समझ सकता है और शैक्सपीयर के मुहावरेदार कथोपकथनों को चॉसर की अपेक्षा अधिक सरलता से समझ सकता है। एलिजाबेथ तथा विक्टोरिया के बीच के तीन सौ वर्षों का काल लिखित वैचारिक आदान-प्रदान का युग था जिसमें शिक्षित उच्च वर्ग का वर्चस्व था और यह वर्ग भाषा की परम्परागत शब्द रचना तथा व्याकरण में किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोधी था। लेकिन एक दृष्टि से भाषा में परिवर्तन भी हुए थे—काव्य तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति—माध्यम से अब भाषा, विज्ञान तथा पत्रकारिता की अभिव्यक्ति की ओर अग्रसर हो चुकी थी। एलिजाबेथ कालीन कोई व्यक्ति यदि विक्टोरिया-कालीन समाचार-पत्र में छपे किसी लेख को पढ़ता अथवा आधुनिक शिक्षा प्राप्त लोगों के वार्तालाप को सुनता तो ऐसे दीर्घकाय शब्दों को सुनकर आश्चर्यचकित रह जाता जिन्हें अधिकांशतः लेटिन से काव्य के लिये नहीं बल्कि विज्ञान, पत्रकारिता तथा सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं पर होने वाली चर्चाओं-परिचर्चाओं के उद्देश्य से ग्रहण किया गया था : 'अपॉरट्यूनिस्ट' 'मिनिमाइज', 'इन्टरनेशनल', 'सैन्ट्रीफ्यूगल', 'कामर्श्यलिज्म', 'डिसेन्ट्रलाइज', 'आरगनिजेशन', शब्दों के अतिरिक्त प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में कुछ और अधिक उपयोगी लेकिन भारी भरकम तकनीकी शब्दों को भी लिया गया था।[1]

---

[1] दि इंगलिश लैंग्वेज (होम यूनिवर्सिटी लायब्रेरी, पृ० १२४) नामक कृति में मि. पियरसाल स्मिथ ने लिखा है : "कई प्रकार से विज्ञान भाषा का स्वाभाविक शत्रु

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'पूंजी' तथा 'श्रम' दोनों ही का विस्तार हो रहा था और दोनों ही के प्रतिद्वन्द्वी संगठन आधुनिक लीक पर पूर्णता प्राप्त कर रहे थे। प्रशिक्षित व्यावसायिक लोगों के सहयोग से इस परिवर्तन ने नये युग की प्रौद्योगिकीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर ली थी और इस प्रकार तकनीकी आविष्कर्ता के बाद दूसरी तथा तीसरी पीढ़ी के समय पारिवारिक फर्मों की उत्पादन-कुशलता का जिस प्रकार ह्रास होता जा रहा था उससे इसने इस युग को बचा लिया था। फिर इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत उपक्रमों से अलग एक कदम सामूहिकता तथा नगरपालिका एवं राज्य संचालित व्यापार की ओर भी बढ़ाया गया था। रेलवे कम्पनियां, जो यद्यपि अब भी निजी क्षेत्र में थीं और साझीदारों के हितों के लिये ही जो कार्य करती थीं, उनकी तुलना पुराने पारिवारिक व्यापार से नहीं की जा सकती। वास्तव में उनका अस्तित्व संसद् द्वारा पारित उन अधिनियमों के कारण था जो उन्हें सुविधाएं तथा राजकीय नियंत्रण के स्थान पर कुछ अधिकार ही देते थे। इसके साथ ही बड़ी नगरपालिकाएं भी व्यापार करती थीं और प्रकाश व्यवस्था, ट्रामों तथा करदाताओं को अन्य सेवाएं भी उपलब्ध कराती थीं।

सीमित दायित्वों वाली कम्पनियों के विकास तथा नगरपालिका द्वारा किये जाने वाले व्यापार के कई महत्वपूर्ण परिणाम निकले थे। पूंजी तथा उद्योगों के बृहद् स्तर पर ऐसे निर्वैयक्तिक आयोजन के कारण साझीदारों की संख्या तथा वर्ग के रूप में उनके महत्व में पर्याप्त वृद्धि हुई थी; राष्ट्रीय जीवन में यह पक्ष एक ऐसी अनुत्तरदायित्वपूर्ण सम्पदा का द्योतक था जिसका अस्तित्व भूमि तथा भू-स्वामी के कर्त्तव्यों से पृथक् हो चुका था; और वाणिज्य के उत्तरदायित्वपूर्ण प्रबन्ध से भी लगभग उतना ही पृथक् था। सम्पूर्ण उन्नीसवीं शताब्दी में, अमरीका, अफ्रीका, भारत, आस्ट्रेलिया तथा यूरोप के भागों का ब्रिटिश पूंजी द्वारा काफी विकास हो रहा था, और ब्रिटिश साझीदार इस प्रकार विश्वव्यापी औद्योगीकरण की प्रक्रिया में काफी लाभ उठा रहे थे। ऐसे बड़े 'आरामवादी' वर्गों को जिन्हें घर बैठे ही अपनी पूंजी से आय हो जाती थी और

है। भाषा, चाहे वह साहित्यिक कोटि की हो अथवा क्षेत्रीय बोलचाल की उसे अनेक प्रकार से सजीव तथा वैविध्यपूर्ण शब्दों के भंडार की आवश्यकता होती है—और ये शब्द ऐसे "विचार-चित्र" होने चाहियें जो हमारी अनुभव-क्षमताओं के निकट होने के साथ ही जिन वस्तु-रूपों का वे विवरण देते हों उनके साथ ही हमारी अनुभूतियों को भी आकार दे सकें। लेकिन विज्ञान अभिव्यक्ति की विविधता अथवा भावनाओं को तनिक भी चिन्ता नहीं करता, उसका आदर्श ऐसे बीजगणितीय (एलजेब्रिक) चिन्ह होते हैं जिनका उपयोग केवल विश्लेषण में ही किया जा सकता है, और इस कार्य के लिये किसी व्यक्तित्व विहीन मृत्त भाषा से कुछ अमूर्त तथा शुष्क शब्दों (पदों) को ग्रहण करना ही वह ठीक समझता है।"

जिनका साझीदारों की बैठकों में भाग लेकर प्रबन्धकों पर टीका टिप्पणी करने के अतिरिक्त समुदाय से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं था उनके अनेक आश्रय-स्थलों के रूप में बोर्नमाउथ तथा ईस्टबोर्न जैसे नगर उठ खड़े हुए थे। लेकिन दूसरी ओर 'साझीदार होने का अर्थ था अवकाश तथा स्वतन्त्रता की प्राप्ति जिसका आगे चल कर विक्टोरिया कालीन लोगों ने सभ्यता के विकास में उपयोग किया था।

लेकिन जिन 'साझीदारों' की चर्चा हम कर रहे हैं उन्हें अपनी कम्पनियों के कर्मचारियों के जीवन, विचारों अथवा आवश्यकताओं के विषय में कोई जानकारी नहीं थी और पूंजी तथा श्रम के परस्पर सम्बन्धों पर उनका प्रभाव भी अच्छा नहीं पड़ता था। कम्पनी की ओर से नियुक्त प्रबन्धक ही लोगों तथा उनकी मांगों के सीधे सम्पर्क में था लेकिन उसे पारिवारिक व्यापार के मुखिया की भांति जो अब समाप्त हो रहा था—अपने कर्मचारियों के बारे में व्यक्तिगत तथा निकटतम जानकारी नहीं थी। निस्सन्देह कुछ तो इन कम्पनियों अथवा व्यापार के आकार के कारण और कुछ नियुक्त कर्मचारियों की संख्या के कारण वैयक्तिक सम्बन्धों का हो पाना असंभव था। फिर भी सौभाग्य से, श्रमिक-संघों (ट्रेड यूनियन्स) की बढ़ती हुई शक्ति तथा संगठन के कारण—कम से कम प्रशिक्षित श्रमिकों में, यह स्थिति तो उत्पन्न हो ही गई थी कि एक मजदूर अपने नियुक्ति-दाता प्रबन्धकों से समानता के दर्जे पर बात कर सकता था। हड़ताल तथा तालाबन्दी के परस्पर कठोर नियंत्रण के कारण दोनों ही पक्षों को एक दूसरे की शक्ति को स्वीकार कर उचित आधारों पर समझौता करना आवश्यक हो गया था।

इन स्थितियों में राष्ट्रीय लाभ का वितरण दोनों ही वर्गों में अपेक्षाकृत ठीक-ठीक होने लगा था और असमान वितरण की सम्भावना कम हो गई थी। लेकिन पूंजी तथा श्रम तथा मालिकों एवं मजदूरों के बीच सामान्य जीवन में भी दूरी निरन्तर बढ़ती ही जा रही थी। यह तथ्य ही कि श्रमिक-क्षेत्रों में कल्याणकारी 'बस्तियों' का निर्माण समझदार मालिकों (बुर्जुआ) को यह दर्शाने के लिये किया जा रहा था कि गरीबों का जीवन किस प्रकार का है स्वयं में काफी महत्वपूर्ण है। अतः शताब्दी के अन्त में 'वर्ग संघर्ष' की अनिवार्यता को प्रकट करने वाले मार्क्सवादी सिद्धान्तों का प्रचलन स्वाभाविक था; फेबियन सोसाइटी द्वारा प्रवर्तित अपेक्षाकृत अधिक अवसरवादी संघवाद का प्रभाव और भी अधिक व्यापक था।

लेकिन अंग्रेज-श्रमिक को अधिक प्रभावित कर पाने में ये विचार अथवा सिद्धान्त व्यावहारिक होने के कारण अक्षम थे। सिद्धान्त की अपेक्षा व्यावहारिक आवश्यकता के कारण कानून के विरुद्ध श्रमिक-संघों की रक्षार्थ श्रमिकों को राजनीति में आना पड़ा था और उन्होंने अपने दल का गठन किया था। वास्तव में अंग्रेजी कानूनी अदालतों में दुर्भाग्य से उन स्वाधीन-पक्षों की खोज की प्रवृत्ति घर कर गई थी जो संसद् अधि-

नियमों द्वारा श्रमिक-संघों को प्रदान करना चाहती थी लेकिन वास्तव में उन्हें वे अधिकार कभी दिये ही नहीं गये। सन् १८२५ के अधिनियम द्वारा श्रमिक-संघों तथा अपने पारिश्रमिक में वृद्धि करवाने के लिये वनाये गये संगठनों को मान्यता प्रदान कर दी गई थी—संसद् तथा अन्य लोग भी कम से कम चालीस वर्षों से यही मानते आ रहे थे। लेकिन १८६७ में, वॉईलर वनाने वालों के मुकदमे में, माननीय मुख्य न्यायधीश तथा अन्य जजों ने यह निर्णय दिया कि 'व्यापार (ट्रेड) विरोधी होने के कारण' ये संगठन वैध नहीं हैं। सौभाग्य से उसी वर्ष के सुधार-विधेयक (रिफार्म-विल) द्वारा श्रमिक वर्गों को संसद् के लिये मतदान का अधिकार प्रदान कर दिया गया था और इस प्रकार राजनीतिज्ञों पर वैधानिक दवाव डाल कर अपनी कठिनाइयों को हल कराने में वे समर्थ हो गये थे। परिणामस्वरूप ग्लैडस्टोन द्वारा लाये गये सन् १८७१ के अधिनियम द्वारा, श्रमिक-संघों को उन्हीं के हितानुसार मान्यता मिल गई थी और १८७५ के डिजरायली के अधिनियम द्वारा शांतिपूर्ण विरोध का अधिकार भी उन्हें प्राप्त हो गया था।

इसके वाद, जव महानुभावों ने ट्रेड-यूनियन को अगली पीढ़ी तक के लिये अकेला छोड़ दिया, इस अवधि में यह आन्दोलन प्रशिक्षित लोगों से अप्रशिक्षित श्रमिकों में भी व्याप्त हो चुका था। सन् १८८९ में जॉन वर्न्स के नेतृत्व में लन्डन के गोदी कर्मचारियों की वड़ी हड़ताल में यह वात विशेष रूप से देखने में आई थी। शताव्दी के अन्त तक कई व्यावसायिक क्षेत्रों में श्रमिक संघ वन चुके थे और इंगलैंड के अधिकांश प्रदेशों में मजदूरों ने अपने पारिश्रमिक की रक्षा के लिये इस हथियार का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग भी किया। सन् १९०१ में जज-महानुभावों ने अपने निर्णयों द्वारा इस आन्दोलन पर पुनः प्रहार किया; पिछली संसदों के कार्यों को इन जजों ने पुनः अक्रिया कर दिया और यूनियन द्वारा की जाने वाली हड़तालों को अवैधानिक घोषित कर दिया। इस निर्णय की चुनौती को स्वीकार कर नवीन शताव्दी के प्रारंभ में संसद् में एक पृथक् मजदूर दल (लेवर पार्टी) का निर्माय किया गया और सन् १९०६ में एक अधिनियम वनाया गया जिसके अन्तर्गत श्रमिक-संघों को पर्याप्त कानूनी स्वतंत्रता प्रदान कर दी गई। लेकिन वास्तव में ये घटनाएं सामाजिक इतिहास के एक अन्य परिच्छेद की घटनाएं हैं जिन्हें विक्टोरिया कालीन इंगलैंड के अन्तर्गत नहीं देखा जा सकता।

शताव्दी तथा महारानी के शासन के अन्त के समय देहातों में 'सामन्तवादी' समाज का अस्तित्व वरकरार था, लेकिन वदलती हुई परिस्थितियां इंगलैंड के ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रजातंत्र के अभ्युदय का संकेत दे रही थीं और गांवों पर शहरी विचारों तथा शक्तियों का प्रभाव जमता जा रहा था। अगली पीढ़ी के समय, मोटर यातायात के विकास के साथ तो ग्रामीण क्षेत्रों में शहरीकरण की वाढ़ सी आ गई और इसके कारण सम्पूर्ण इंगलैंड ही नगरीय सभ्यता से आच्छादित हो उठा। लेकिन जिस

समय विक्टोरिया की मृत्यु हुई (१६०१) उस समय तक नगरीकरण की प्रक्रिया कुछ अधिक आगे नहीं बढ़ सकी थी; देहाती सड़कों तथा गलियों का स्वरूप अब भी वही था—सदियों पुरानी सुशुप्तता जिसे भंग किये बिना ही साइकिल सवार आनन्द प्राप्त कर लेते थे। गांवों के छोटे बड़े सभी 'मकान' जिनमें अब भी सप्ताहान्त में नगर से आकर अतिथि ठहरा करते थे और आखेट के आयोजन किये जाते थे, उसी प्रकार चल रहे थे; और कृषि-व्यवस्था का गठन भी पुरानी वैयक्तिक सम्पत्ति प्रणाली (एस्टेट सिस्टम) द्वारा किया जाता था।

लेकिन इन ग्रामीण गृहों तथा सम्पत्तियों की देखरेख का भार कृषि-कर से उतना सम्बन्धित नहीं रहा था जितना कि पहले कभी था; कृषि-कर वास्तव में अब अमरीका से आयातित सामग्री के कारण काफी कम हो गया था और अधिकांश किसानों पर बकाया ही बना रहता था। देहाती क्षेत्रों में स्थित इन आरामगाहों तथा अचल सम्पत्ति सम्बन्धी कार्यों के लिये अब धन मालिक के अन्य उद्योगों, अथवा दूर के नगरीय क्षेत्रों में स्थित उसकी भूमि से प्राप्त होता था। वह यद्यपि अब भी किसी ग्रामीण-क्षेत्र विशेष का ही एक भद्र पुरुष था लेकिन स्वयं पर व्यय होने वाली राशि के लिये केवल इतना ही पर्याप्त नहीं था, अतः अन्य स्रोतों पर ही निर्भर करता था।

इन परिस्थितियों में, इस प्रकार की सम्पत्ति व्यवस्था, सामन्तवादी होने पर भी, देहाती क्षेत्रों में इसलिये लोकप्रिय थी कि ह्रासोन्मुख कृषि की सहायता के लिये यह औद्योगिक क्षेत्रों से धन लाकर यहां लगाती थी और भूस्वामी तथा उसका परिवार गांव में शिक्षा का प्रसार तथा मैत्रीपूर्ण नेतृत्व प्रदान करता था।

लेकिन मोटर-कार के प्रचलन के पूर्व नई शताब्दी के प्रारम्भ में ग्रामीण जीवन नगरों से आने वाले समाचार-पत्रों, विचारों तथा यात्रियों के कारण अर्द्ध-शहरी अवस्था में परिवर्तित होने लगा था। प्रजातांत्रिक नगर तथा 'सामन्तवादी' ग्राम्य क्षेत्र का जो अन्तर विक्टोरिया के शासनकाल की मध्यावधि में ट्रोलोप के इंगलैंड की विशेषता बन गया था वह इस शताब्दी के अन्तिम दशकों में उतना स्पष्ट नहीं रहा। सन् १८७० के शिक्षा अधिनियम (एजूकेशन एक्ट) के परिणामस्वरूप अगली पीढ़ी के खेतिहर मजदूर तथा उनकी पत्नियां पढ़ना तथा लिखना सीख चुके थे। दुर्भाग्य से इस शक्ति का उपयोग उनमें देहाती जीवन के प्रति एक प्रबुद्ध रुचि उत्पन्न करने में नहीं किया गया। इस नयी शिक्षा का आविष्कार तथा निरीक्षण शहरी लोगों द्वारा किया जाता था जिसका उद्देश्य कृषकों की अपेक्षा कर्ल्क पैदा करना अधिक था। विक्टोरिया की मृत्यु के पूर्व, लोग गांव की मद्यशाला तथा झोंपड़ी में बैठकर डेली मेल समाचार पढ़ते थे। नगरीकरण का कुप्रभाव ग्रामीण जीवन की विशेषता बन गया था, और विशिष्ट स्थानीय परम्पराएं राष्ट्रव्यापी स्तर पर बाजारी रूप धारण करती जा रही थीं।

राजनैतिक क्षेत्र में भी नगर तथा ग्राम परस्पर घुलते-मिलते जा रहे थे। सन् १८८४ में खेतिहर मजदूर को संसद् के लिये मतदान का अधिकार प्राप्त हो गया था जबकि सन् १८६७ में उसके नगरवासी भाई को तो जहां यह अधिकार प्राप्त था उसे इससे वंचित कर दिया गया था। मतदान-पत्र के आधार पर, खेतिहर मजदूर अपनी इच्छानुसार किसी भी व्यक्ति को—चाहे वह भूस्वामी हो अथवा बड़ा किसान—मत दे सकता था। इसका प्रमाण नये मतदान विधेयक (फ्रेन्चाइज बिल) के अन्तर्गत होने वाले सन् १८८५ के आम चुनाव (जनरल इलेक्शन) में मिल चुका था। इस चुनाव में, जहां नगरों में अनुदार दलीय उम्मीदवारों को मत मिले देहाती क्षेत्रों ने अप्रत्याशित रूप से ज़मींदारों के विरोध में उदार दलीय व्यक्तियों को मतदान किया। जहां तक संसदीय चुनावों का प्रश्न है इंगलैंड के ग्रामीण जीवन पर ज़मींदारों का सदियों पुराना नियंत्रण अब वास्तव में समाप्त होता जा रहा था। इसका यह एक अवश्यम्भावी परिणाम ही था कि जिला स्तरीय स्वशासन का गठन भी चुनाव के आधार पर ही किया जाता।

अतः सन् १८८८ में स्थानीय स्वशासन अधिनियम (लोकल गवर्नमेंट एक्ट) ने चुनी गई जिला परिषदों (काउन्टी काउन्सिलों) को ही शांति के न्यायाधीशों के अधिनायकवादी प्रशासन के स्थान पर प्रशासनिक इकाई माना। न्यायाधीशों को केवल न्यायपालिका सम्बन्धी अधिकारों तक ही सीमित रखा और उनके प्रशासनिक अधिकार मतदान द्वारा गठित जिला परिषदों को सौंप दिये गये; इन परिषदों को कुछ वर्ष आगे चलकर नगरीय तथा ग्रामीण जिला (डिस्ट्रिक्ट) परिषदों के गठन से और अधिक शक्ति प्राप्त हो गई थी। इस प्रकार सन् १८३५ के नगरपालिका सुधार अधिनियम (म्यूनिसिपल रिफार्म एक्ट) द्वारा नगरों (बौरोज़) में भी प्रजातांत्रिक स्थानीय स्वशासन की स्थापना हो गई थी, यही सिद्धांत ग्रामीण जिलों पर भी लागू किया गया। यह भाग्य की विडंबना ही थी कि कृषकों को संसद् तथा स्थानीय स्वशासन के लिये मताधिकार उस समय प्राप्त हुआ था जबकि इंगलैंड के कृषकीय जीवन का अमरीका की प्रतिस्पर्धा तथा खाद्यान्नों के मूल्य में होने वाली गिरावट के कारण ह्रास प्रारम्भ हो गया था। यदि कृषि मजदूर गांवों में रहते तो वे भी अपने स्वशासन में कुछ हिस्सा बंटाते, लेकिन वास्तव में वे नगरों की ओर प्रस्थान करने लगे थे।

सन् १८३५ का म्यूनिसिपल रिफार्म अधिनियम केवल कुछ ही नगरों को प्रभावित कर सका था, लेकिन नगरीय स्वशासन व्यवस्था सन् १८८८ के स्थानीय स्वशासन अधिनियम के अन्तर्गत सम्पूर्ण इंगलैंड में लागू हो गई थी।

सन् १८३५ के विधायक राजधानी के प्रश्न पर चालाकी कर गये थे: वृहद् लन्डन, अर्थात् पुराने नगर के बाहर बसे हुए सम्पूर्ण लन्डन को प्रशासनिक संगठन में सम्मिलित किये बिना ही छोड़ दिया गया था। ५० वर्ष बाद अतिआच्छादित

अधिकारियों के झमेले द्वारा ही राजधानी में रहने वाले पचास लाख लोगों के मामलों को गलत ढंग से निपटाया जा रहा था। सन् १८८८ के स्थानीय स्वशासन अधिनियम ने इस पुरानी समस्या का उपचार किया। इस अधिनियम के अन्तर्गत लन्डन काउन्टी काउन्सिल (जिला परिषद्) की स्थापना हुई और तब से इसी संगठन द्वारा, केवल नगर के पुरातन क्षेत्र को छोड़कर जिस ऐतिहासिक महत्व का क्षेत्र मान कर लार्ड मेयर तथा बड़े लोगों (एल्डर मेन) की देख-रेख के लिये छोड़ दिया गया था, लन्डन प्रशासित होता था। विदेशी यद्यपि लॉर्ड मेयर से ही भेंट करने आते हैं, लेकिन लन्डन के स्वशासन का प्रमुख लन्डन काउन्टी काउन्सिल का अध्यक्ष (चैयरमैन) होता है।

स्थापना के तुरन्त बाद ही इस नवोदित लन्डन काउन्टी काउन्सिल ने सशक्त रूप से कार्य प्रारम्भ कर दिया था और प्रथम बीस वर्षों की अवधि में इसने समाज कल्याण की अनेकों नई योजनाओं को पूर्ण किया। और इसी काल में लन्डन स्कूल बोर्ड ने शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण प्रयोग किये और ये प्रयोग सन् १९०२ में शिक्षा अधिनियम जिसके अन्तर्गत कि शैक्षणिक कार्यों को लन्डन काउन्टी काउन्सिल में सम्मिलित कर लिया गया था, के बनने तक चलते रहे थे। स्थानीय शासन के क्षेत्र में, लन्डन जो अभी तक काफी पिछड़ा हुआ नगर ही था के इस क्रान्तिकारी कदम का श्रेय प्रगतिशाली (प्रोग्रेसिव) दल को था; यह दल काउंसिल के हर चुनाव में बहुमत से विजय प्राप्त करता आ रहा था। यह दल स्वयं को 'प्रगतिवादी' इसलिये कहता था कि जहां 'उदार दल' तथा 'श्रमिक दल' दोनों ही दलों से वह भिन्न था दोनों ही दलों से इसके निकट के सम्बन्ध भी थे। यह दल केवल नगरपालिका का ही चुनाव लड़ता था और इस कारण जो लोग संसद् के चुनाव में अनुदार दल को भी मत देते थे काउन्टी काउन्सिल के चुनाव में 'प्रगतिशाली' दल को चुन लेते थे। सन् 'नब्बे के दशक में लन्डन का आम मतदाता राष्ट्र की राजनीति में जहां अनुदार दलीय तथा साम्राज्यवादी था, अपने स्वयं तथा नगर के लिये प्रजातांत्रिक सामाजिक सुधार चाहता था। लन्डन में स्थानीय स्वशासन के प्रगतिवादी स्वरूप एवं वातावरण के कारण ही वहां फ़ेबियन सोसाइटी अपनी जड़ें जमा सकी थी। सिडनी वेब्स तथा ग्राहमवालास जैसे फ़ेबियन बुद्धिवादियों के नेतृत्व में लन्डन के स्थानीय स्वशासन ने काफी प्रगति की थी। लेकिन जिस लोकप्रिय व्यक्ति के नेतृत्व को 'श्रमिक दल' तथा 'उदार दल' के सहकार का प्रतिनिधि माना जा सकता है वह जॉन बर्न्स था। बैटरसी के जॉन बर्न्स की लन्डन के प्रति विशेष अनुरक्ति थी और उनका यह लन्डन-प्रेम उस पुराने नगर की गर्वानुभूति से जो पुरातन चहारदीवारी में घिरकर केवल ऐतिहासिक महत्व की ही वस्तु बन कर रह गया था स्पष्टतः पृथक था।

इसी कारण विक्टोरिया के शासनकाल के अन्तिम दशकों में स्वच्छता, प्रकाश,

यातायात, जन वाचनालयों तथा स्नानागारों और कुछ अंशों में आवास-व्यवस्था की दृष्टि से भी नगरों का काफी विकास हो रहा था। इस क्षेत्र में जोसेफ चैम्बरलेन के नेतृत्व में सन् सत्तर की दशाब्दी में बर्मिघम की नगरपालिका ने और बीस वर्ष बाद लन्डन की काउन्टी काउन्सिल ने जो प्रगति की थी उसका अन्य स्थानों पर भी व्यापक रूप से अनुकरण किया गया था। और केन्द्रीय सरकार ने नागरिकों के जीवन को उन्नत करने के लिये, सरकारी निरीक्षकों की सिफारिशों के अनुसार स्थानीय करों से होने वाली आय के अतिरिक्त भी नगरपालिकाओं को आर्थिक सहायता दी थी।

राज्य द्वारा समर्थित नगरपालिका-सुधार आन्दोलन के कारण एक बड़ी सामाजिक विपत्ति टल गई थी। विक्टोरिया के प्रारम्भिक शासनकाल की तुलना में अब मृत्यु-दर काफी कम हो गई थी, भौतिक सुविधाओं की दृष्टि से नगरीय जीवन अधिकाधिक अच्छा होता जा रहा था, और प्रारम्भिक शिक्षा का सभी जगह प्रसार हो गया था। फिर भी बीसवीं शताब्दी के लिये कई दृष्टियों से यह सब कोई विशेष सुखद विधि नहीं थी। अनियोजित रूप से विकसित हो रहे आधुनिक नगर में अभी आकार अथवा स्वरूप की काफी कमी है, इसे मानवीय आत्मा के पिंजरे की ही संज्ञा दी जा सकती है। आधुनिक इंगलैंड के नगरीय तथा ग्रामीण जीवन में पुराने ग्रामीण जीवन की भांति अथवा मध्ययुगीन यूरोप के नागरिक जीवन की भांति कल्पना का तनिक भी समावेश नहीं हो पाया है। उत्तर के औद्योगिक नगरों के लोगों में नागरिकता के प्रति स्वाभिमान तथा उच्चता की होड़ का स्वरूप सौन्दर्य प्रधान होने की अपेक्षा पूर्णरूपेण भौतिकतावादी आग्रहों से ग्रस्त था। धुआं और कालिख सभी आनन्दवर्धक तथा सौन्दर्य सर्जक प्रयासों को व्यर्थ सिद्ध कर देते थे।

व्यक्ति में एकता की भावना भर पाने तथा चरित्र निर्माण कर पाने में नये नगर अपनी विशालता के कारण असमर्थ थे। इन्हें एथेन्स, रोम, पेरूगिया, नूरेम्बर्ग, ट्यूडर कालीन लन्डन तथा हजारों अन्य पुराने नगरों की भांति भी न तो प्यार ही किया जा सकता था और न ये वैसे प्रतीत ही होते थे। इन विक्टोरिया कालीन नगरों की दशा इसलिये और भी खराब थी कि इनके लिये किसी भी प्रकार की योजना का निर्माण नहीं किया गया था। राज्य ने आधुनिक इंगलैंड के विस्तार के लिये भूमिदारों तथा पूंजीपतियों को मनमाने ढंग से मकान बनवाने की छूट दे रखी थी और जन-सुविधा तथा जन-कल्याण का बहुत ही कम ध्यान रखा गया था। लन्डन तथा अन्य नगरों के विशाल क्षेत्रों में बच्चों के आमोद-प्रमोद के लिये कोई खुला स्थान नहीं छोड़ा गया था, और वे अधिकांश अपने स्कूल के अहाते के बाहर गन्दी गलियों में ही खेला करते थे। लाखों लोग प्रगति से एक दम कट से गये थे और इसी प्रकार गन्दी गलियों के आदिवासी होकर इन्होंने मानवीय प्रतिष्ठा एवं सौन्दर्य चेतना को भी खो दिया था। नयी शिक्षा तथा नयी पत्रकारिता दोनों इन परिस्थितियों की उपज थे। ऐसी परि-

स्थितियों में जिस प्रजाति का लालन-पालन हुआ हो उसमें भले ही चरित्र सम्बन्धी कई गुण सुरक्षित रहे हों, पौष्टिक भोजन तथा अच्छी पोशाकों के कारण भले ही उसने अपने स्वास्थ्य का विकास कर लिया हो और जीवन के प्रति अधिक साहसी, प्रसन्नता तथा प्रमोदपूर्ण दृष्टि का विकास कर लिया हो, लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसे लोगों में कल्पनाशक्ति का ह्रास तथा व्यक्तित्व का धीरे-धीरे एक बंधे हुए ढर्रे में ढल जाना अवश्यम्भावी है।

बाद का विक्टोरिया-युग यद्यपि इस विपदाजन्य स्थिति से त्राण नहीं पा सका था लेकिन इसके प्रति उसमें चेतना अवश्य अंकुरित होने लगी थी। रस्किन ने नवोदित लेखकों तथा चिन्तकों की पीढ़ी में इस औद्योगिक सभ्यता के विरुद्ध, जिसके प्रति कि पिछली पीढ़ी को गर्व था, घृणा को उत्पन्न किया। विगत इतिहास की ओर देख कर इनका विचार था कि विगत युग आधुनिक लंकाशायर की तुलना में कहीं अधिक सुन्दर युग था : सन् १८८६ में विलियम मॉरिस ने अपनी 'दि अर्थली पेरेडाइस' नामक कृति में लिखा था :

'धूम्र आच्छादित उन छहों नगरों को भूल जाओ, भूल जाओ वाष्प की खुस-पुस और पिस्टन के शोर, वितृष्णा भरे नगर के विस्तार भूल जाओ; स्मरण करो ढाल पर उठते हुए अश्व-रव को और याद करो हरीतिमा की झालर से गुम्फित छोटे-स्वच्छ और सफेद लन्डन को...... ।'

लेकिन कल्पना के अतिरिक्त इतिहास के उन विगत पृष्ठों में पहुँच पाना कैसे सम्भव था।

१८७० का वर्ष शिक्षा की दृष्टि से एक नये मोड़ का शिलान्यास कर रहा था और इसलिए सामाजिक इतिहास में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक था। राष्ट्रीय महत्व की दृष्टि से शिक्षा केवल राजनैतिक कशमकश की वस्तु नहीं बल्कि धार्मिक सम्प्रदायों का अखाड़ा बन गई थी। मध्य-विक्टोरिया-काल में इंगलिश शिक्षा के पिछड़ जाने का प्रमुख कारण यह था कि इस अवधि में ह्विग अथवा टोरी कोई भी सरकार राजकीय कोष से राष्ट्रव्यापी स्तर की ऐसी किसी भी प्रणाली की व्यवस्था नहीं कर सकी थी जिसने कि विरोधियों (डिसेन्टर्स) तथा एस्टेब्लिश्ड चर्च के क्रोध को न भड़काया हो। सन् १८७० में ग्लैडस्टोन द्वारा उठाये गये साहसी कदम के पहले प्रत्येक सरकार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। धार्मिक तथा साम्प्रदायिक उत्साह के कारण निजी राशि से सम्पूर्ण देश में ऐच्छिक पाठशालाओं (वॉलन्टरी स्कूल्स) का एक जाल सा बिछा दिया गया था, लेकिन इन धार्मिक-प्रयत्नों एवं उत्साह के कारण ही राजनैतिक दल शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का प्रश्न बना पाने में भय का अनुभव करते थे।

इन ऐच्छिक स्कूलों में से अधिकांश, जो प्रारम्भिक शिक्षा का प्रमुख स्रोत थे, चर्च के सिद्धान्तों के आधार पर चलाये जाते थे : (एंग्लिकन) नेशनल सोसाइटी द्वारा स्थापित किये जाने के कारण इन स्कूलों को नेशनल स्कूल कहा जाता था। सन् १८३३ से उन्हें बहुत ही अल्प राशि का अनुदान दिया जा रहा था। सन् १८७० में ग्लैडस्टोन द्वारा लाया गया विधेयक वास्तव में डब्लू. ई. फोर्स्टर का, जो मूलत: क्वेकर होने पर भी कट्टर चर्च भक्त थे, का कार्य था। फोर्स्टर ने इस विधेयक में वर्तमान चर्च-स्कूलों तथा रोमन कैथोलिक स्कूलों को दिये जाने वाले राजकीय अनुदान की राशि दुगनी कर दी थी जिससे कि वे नवीन शिक्षा-प्रणाली का एक स्थायी भाग बन जाएं, साथ उसने देश के शैक्षणिक मानचित्र में राज्य नियंत्रित स्कूलों की स्थापना कर अन्य सभी रिक्त स्थानों को भी भर दिया था। इन नयी पाठशालाओं को बोर्ड स्कूल कहा जाता था। इन्हें स्थानीय करों से अनुदान देकर प्रजातांत्रिक रूप से चुने गये स्कूल बोर्डों के नियंत्रण में रखा जाता था। अधिकांश पुराने ऐच्छिक स्कूलों में, अर्थात् सभी नेशनल स्कूलों में, धार्मिक शिक्षा अनिवार्य थी। लेकिन नये बोर्ड स्कूलों में धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक शिक्षा वर्जित थी।

चर्च विरोधियों को इसी कारण यह आपत्ति थी कि इस प्रकार राज्य गांवों में चर्च स्कूलों को प्रोत्साहन दे रहा था और हर गांव में होता भी एक ही स्कूल था और सभी बच्चों को उसी में जाना पड़ता था। नगरों में बोर्ड के स्कूलों तथा चर्च-स्कूलों, दोनों ही प्रकार के स्कूलों की व्यवस्था थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ही थी कि अधिकांश गांवों में एक मात्र चर्च स्कूल ही थे और अन्य कोई भी विकल्प नहीं था। आज भी (१९४१) अधिकांश यही स्थिति है, लेकिन आज इसका उतना विरोध नहीं किया जाता क्योंकि चर्च तथा चर्च-विरोधियों के बीच का पहले वाला मनमुटाव अब काफी कम हो गया है और साथ ही सन् १९०२ के बालफोर अधिनियम द्वारा चर्च स्कूलों पर पर्याप्त अंशों में काउन्टी काउन्सिलों का नियंत्रण भी लागू कर दिया गया है।

सन् १८७० के धार्मिक समझौतों के अनुसार यह अच्छा ही हुआ कि इंगलैंड ने और अधिक देर न कर सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था को स्वीकार कर लिया अन्यथा आधुनिक देशों की तुलना में वह काफी पिछड़ गया होता। सन् १८७० तथा १८८० के बीच स्कूल के विद्यार्थियों की औसत उपस्थिति लगभग बारह लाख से बढ़कर पैंतालीस लाख तक पहुँच गई थी और प्रति छात्र व्यय-भार दुगना हो गया था।

लेकिन माध्यमिक शिक्षा[1] के लिये अब भी काफी कम कार्य हुआ है; प्राथमिक

---

[1] 'सन् १८९९ में माध्यमिक शिक्षा पर राजकीय कोष से प्रतिव्यक्ति इंगलैंड में होने वाले खर्च जहां केवल तीन फार्दिंग था, स्विटजरलैंड में एक शिलिंग एक पेनी तीन फार्दिंग था' बर्नार्ड एलेन की 'सर रॉबर्ट मोरेन्ट' कृति, पृ० १४१।

स्कूलों के सर्वश्रेष्ठ छात्रों को विश्वविद्यालयीय शिक्षा के लिये प्रोत्साहन दे पाने के लिये किसी प्रकार की छात्रवृत्ति का भी प्रबंध नहीं किया जा सका है प्रसिद्ध कॉकर्टन निर्णय द्वारा सन् १९०० में न्यायालयों ने यह घोषणा की कि १८७० के अधिनियम के अधीन करों द्वारा प्राप्त होने वाले धन को माध्यमिक अथवा उच्च किसी भी प्रकार की शिक्षा पर खर्च किया जा सकता है।

इस नियम में एक और दोष यह था कि स्कूल बोर्डों का क्षेत्र काफी छोटा था। किसी नगर अथवा गांव का स्कूल बोर्ड उसी क्षेत्र तक सीमित होने के कारण शिक्षा में किसी व्यापक दृष्टि को जन्म दे पाने में असमर्थ था। फिर उनके स्थानीय स्वरूप ने चर्च तथा चर्च-विरोधियों (डिसेन्ट) के संघर्ष को और भी अधिक तीव्र तथा व्यक्तिगत स्वरूप दे डाला था।

सन् १८७० के अधिनियम के इन दोषों को, महान समाज सेवी रॉबर्ट मोरेन्ट से प्रेरित होकर, सन् १९०२ में बने बालफोर के शिक्षा अधिनियम में दूर कर दिया गया था। इस अधिनियम द्वारा स्कूल बोर्डों को समाप्त कर दिया गया था और प्राथमिक तथा माध्यमिक दोनों ही प्रकार की शिक्षा के लिये प्रजातांत्रिक रूप में गठित काउन्टी काउन्सिलों तथा कुछ नगर परिषदों (बोरो काउन्सिल्स) को अधिकार सौंप दिये गये थे। आज हमारी प्रणाली इसी प्रकार की है। ये समितियां (काउन्सिल्स) उन्हीं की शिक्षा समितियों (एड्यूकेशन कमीटीज़) के सहयोग से शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों का संचालन करती हैं। काउन्टी एड्यूकेशन कमेटियों के बड़े क्षेत्र तथा व्यापक दृष्टि के कारण जो सुधार सम्भव हुआ उससे प्राथमिक शिक्षा को काफी लाभ पहुँचा। माध्यमिक शिक्षा तो इससे और भी अधिक लाभान्वित हुई थी, विश्वविद्यालयीय स्तर तक भी बालफोर के विधेयक द्वारा एक प्रभावकारी शृंखला स्थापित हो गई थी।

१८७० तथा १९०२ के शिक्षा अधिनियमों के बिना इंगलैंड मशीन तथा संगठन प्रधान आगामी युग में प्रतियोगिता के क्षेत्र में काफी पिछड़ गया होता और उसकी जनता नगर के अशिक्षित जन समूह के बीच में धंस गई होती—यह अशिक्षित नगर-समाज पुराने समय की अशिक्षित ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में कहीं अधिक निकृष्ट था। पुरातन युगीन ग्रामीण समाज में हलवाहों तथा शिल्पकारों के चरित्र एवं मानस पर प्रकृति, कृषिप्रधान जीवन तथा काम की पुरानी व्यवस्था का प्रभाव स्पष्ट अंकित था और उसी परिवेश में उसकी रचना भी हुई थी।

हमारी आधुनिक लोकप्रिय शिक्षा का प्रचलन वास्तव में एक ऐतिहासिक आवश्यकता थी और इस देश को उससे लाभ भी काफी पहुँचा लेकिन दूसरी ओर कुछ महत्वपूर्ण पक्षों में इससे निराश भी काफी होना पड़ा। इसके नागरिक उद्भव तथा स्वरूप के कारण ग्रामीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाने में वह असफल रही थी;

शिक्षा-वोर्ड वास्तव में ग्रामों की भिन्न आवश्यकताओं की प्रकृति को समझ ही नहीं पाया था। ग्राम्य क्षेत्रों से लोगों के निष्क्रमण को रोकने की अपेक्षा इस शिक्षा प्रणाली ने उसमें वृद्धि ही अधिक की थी। सामान्य रूप से इस शिक्षा ने यद्यपि पढ़ने वालों की संख्या में अवश्य वृद्धि की थी लेकिन कौन सी पुस्तक या कृति पढ़ी जाए तथा कौन सी न पढ़ी जाए यह विवेक जागृत कर पाने में वह असफल थी और इस कारण नव-शिक्षित लोग सस्ते प्रभावों तथा उत्तेजनात्मक विचारों के जल्दी ही शिकार वन जाते थे। परिणामस्वरूप साहित्य तथा पत्रकारिता का सन् १८७० से ही पतन आरम्भ हो गया था; लाखों अर्द्धशिक्षित तथा एक-चौथाई रूप में शिक्षित लोग ही ऐसे साहित्य तथा पत्रों के पाठक थे। पिछले युगों की भांति अब उच्च शिक्षा प्राप्त छोटा वर्ग साहित्यिक अभिरुचियों का स्तर निर्धारण नहीं करता था। बीसवीं अथवा इक्कीसवीं शताब्दी में निम्न कोटि की पत्रकारिता तथा साहित्य उच्च साहित्य को पूर्णरूपेण कव निगल पाता है यह देखना अभी शेप है। यदि ऐसा नहीं होता है तो इसका श्रेय माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के ऐसे परिष्कृत स्वरूप को ही देना होगा जिसका वहुसंख्यक स्नातक वर्ग अपनी अभिरुचि द्वारा उच्चस्तरीय पठन-सामग्री के सृजन को प्रोत्साहित कर सके।

इस पुस्तक का विषय-क्षेत्र केवल इंगलैंड के सामाजिक इतिहास तक ही सीमित है, इसमें ब्रिटिश कॉमनवेल्थ में सम्मिलित समुद्रपार के देशों तथा आश्रित क्षेत्रों की स्थिति को सम्मिलित नहीं किया गया है। लेकिन यदि इंगलैंड समुद्री व्यापार तथा साम्राज्य का केन्द्र न होता तो वहां का समाज दूसरे ही प्रकार का होता। सागर-जीवी लोगों के रूप में हम स्वयं पर काफी समय से गर्व करते आ रहे हैं और इस द्वीप के जीवन का यह एक अंग सा वन गया है। लेकिन जिस साम्राज्य के हम केन्द्र थे उसकी चेतना वास्तविकता से काफी पीछे रह गई है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक भी राष्ट्रीय गीतों में 'अच्छे और चुस्त छोटे द्वीप' की ध्वनि झंकृत होती रहती थी। लेकिन इस द्वीप को सामान्यतया उस साम्राज्य का, 'जिसमें कि सूर्य कभी अस्त नहीं होता था' अभी केन्द्र नहीं माना जाने लगा था। इस स्थिति को लोगों ने महारानी विक्टोरिया की दो जयंतियों (१८८७,१८९७) के समय, जव कि सुदूर द्वीपों से महारानी को वधाई देने के लिये आए हुए लोगों ने लन्डन की गलियों में अत्यन्त विस्मयकारी तथा प्रभावशाली ढंग से अपना प्रदर्शन किया था, स्पष्ट महसूस किया।

वैसे विगत कई पीढ़ियों से इंगलैंड के नगरों तथा गांवों पर समुद्रपारीय सम्वन्धों का काफी प्रभाव पड़ता रहा है। अठारहवीं शताव्दी में चाय तथा तम्वाकू उसी प्रकार राष्ट्र की खाद्य सामग्री वन गये थे जिस प्रकार कि गोमांस तथा वियर थे।

और सत्रहवीं शताब्दी से ही असन्तुष्ट तथा साहसी लोग समुद्र पार के देशों, में पहले अमरीकी उपनिवेशों में, फिर संयुक्त राज्य, कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी अफ्रीका, जाकर बसते रहे थे। यह सत्य है कि उन्नीसवीं शताब्दी तक अपना देश त्याग कर सदा के लिये विदेश चले जाने वाले लोगों के विषय में कोई समाचार ज्ञात नहीं होता था। लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल में जबकि प्रवासियों का ज्वार विदेशों की ओर पहले की अपेक्षा अधिक वेग से बढ़ रहा था, डाक टिकटों द्वारा परिवार के स्वजनों के लिये 'उपनिवेशों में रह रहे अपने उस प्रवासी पुत्र' से—जो अब अक्सर कुछ उपार्जन के बाद अपने साथ धन लेकर लौटता था और समानता एवं स्वावलम्वन वाले इन देशों की कहानियां सुनाता और स्नेह पूर्वक अपने पुराने मन्दगामी दिनों के प्रति क्रोध दर्शाता था—सम्पर्क बनाए रखना काफी सहज हो गया था। इसी प्रकार मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग साम्राज्य के विषय में अपने से अधिक 'उच्च स्तर' के लोगों के बराबर ही जानते थे और संयुक्त राज्य के विषय में तो, जैसा कि १८६१-१८६५ में हुए गृह-युद्ध के समय यह पर्याप्त स्पष्ट हो चुका था, उन्हें इन 'उच्च स्तरीय' लोगों से भी अधिक जानकारी थी। लेकिन व्यावसायिक वर्ग तथा उच्चवर्ग भी उपने जीवन को उन्नत करने के लिये राज्य, व्यापार तथा बड़े शिकारों की तलाश में अफ्रीका और भारत के प्रत्येक कोने में पहुँच चुके थे। सभी सैनिकों को भी भारत के बारे में काफी जानकारी हो चुकी थी।

इस प्रकार समुद्र पार के देशों में अर्जित किये गये वैविध्यपूर्ण अनुभव विक्टोरिया कालीन इंगलैंड के प्रत्येक नगर तथा प्रत्येक गांव में पहुँचते जा रहे थे। ट्यूडर के समय से ही उच्च भूमि के गांवों पर समुद्र का काफी प्रभाव पड़ा था, इन गाँवों में से कोई भी ज्वार चढ़े समुद्र से सत्तर मील से अधिक दूरी पर स्थित नहीं था। और अब पुराने पोत चालन के अनुभवों में उपनिवेशों का अनुभव और सम्मिलित हो गया था। कुछ दृष्टियों से हमारे द्वीप वासियों को सबसे कम द्वीपीय कहा जा सकता है। यूरोप वासियों को हम इसलिये द्वीपीय प्रतीत होते थे कि हम प्रायद्वीपीय भूमि के भाग नहीं थे। लेकिन हमारे अनुभव और हमें उपलब्ध अवसर अन्य देशों के निवासियों की अपेक्षा अधिक थे।

विक्टोरिया कालीन समृद्धि और सभ्यता की प्रगति का एक कारण यह भी था कि इस शताब्दी के महायुद्धों तथा कई गम्भीर राष्ट्रीय खतरों से यह देश मुक्त रहा था। नौसेना के आरक्षण में सुरक्षित इंगलैंड वासी जीवन की सभी समस्याओं को, जो वास्तव में अस्थायी तथा स्थानीय परिस्थितियों की ही उपज थीं, सुरक्षा एवं शान्ति से ही प्राकृतिक व्यवस्था का एक अंग मानकर सुलझाने का प्रयत्न करते थे। अंग्रेजी भाषा भाषी अमरीका को छोड़ कर कोई भी बड़ा देश विचार एवं व्यवहार की दृष्टि से

विक्टोरिया कालीन इंगलैंड की तुलना में अधिक सभ्य नहीं था। मध्य वर्ग तथा श्रमिक वर्ग के लोग युद्ध कालीन परिस्थितियों को छोड़ कर सेना में नौकरी करना अच्छा नहीं समझते थे। यह एक अनुचित दृष्टिकोण था जो अपराधवाद (क्रामियन) तथा वोर युद्धों की पूर्वकालीन स्थिति के रूप में जिंगोवाद (दम्भपूर्ण देश भक्त की नीति) के आकस्मिक झटकों का रूप ग्रहण कर उठ खड़ा होता था और अनेक समानधर्मी अभि-वृत्तियों को उत्पन्न कर देता था। लेकिन ट्रॉफलगर तथा वाटरलू के सौ वर्षों वाद तक इसके कारण किसी प्रकार के कुपरिणाम नहीं निकले। क्योंकि समुद्र पर हमारा अधिकार था और समुद्र ही मानवीय कर्मों की जन्मस्थली था। कुल मिला कर समुद्री जीवन तथा विश्व के सागर-तटों को लेकर जो हमारी श्रेष्ठता थी उसका उन्नीसवीं शताब्दी में शान्ति, सद्भावना तथा स्वतन्त्रता के प्रसंग में पर्याप्त उपयोग किया गया। यदि हमारी इस श्रेष्ठता का उपयोग अन्यथा किया जाता तो शायद मानव जाति को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।

विक्टोरिया कालीन इंगलैंड के निश्चिन्त लोग सैनिक रूप से सुसज्जित प्रायद्वीप (यूरोप) की आन्तरिक गतिविधियों तथा प्रक्रियाओं से परिचित नहीं थे। उन्हें आस्ट्रेलिया, अमरीका तथा अफ्रीका के वारे में मानवीय एवं व्यापारिक दृष्टि से अधिक जानकारी थी। यूरोप वास्तव में उसकी आल्प्स पर्वतमाला, चित्रशालाओं तथा पुरातन नगरों के कारण अंग्रेजों के लिये एक आमोद स्थल ही था। यद्यपि हमारा साम्राज्य समुद्र पार तक व्याप्त था लेकिन वास्तव में हम यूरोपीय न होकर एक द्वीप वासी ही थे। और नाविकों की अपेक्षा भी हम सैनिक ही अधिक थे। यूरोपीय राजनीति की हमारी अवधारणा भी शक्ति अथवा राष्ट्रीय सुरक्षा के अर्थ में न हो कर इस वात पर आधारित थी कि हम रूस अथवा तुर्की की सरकारों, नैपोलियन तृतीय अथवा इटली के पुनर्जागरण को पसन्द करते हैं अथवा नापसन्द करते हैं। कभी हमारी यह सहानुभूति उचित दिशा की ओर ले जाती थी तो कभी गलत दिशा की ओर भी अग्रसर कर देती थी। लेकिन किसी भी रूप में इस प्रसंग में हमारी कोई राष्ट्रीय सैन्य नीति नहीं थी। अंग्रेजों की दृष्टि में विदेश नीति वास्तव में उदारता-वादी (लिवरल) तथा अनुदारतावादी (कन्ज़रवेटिव) नीतियों की ही एक शाखा थी जिस पर भावनाओं, तथा रुचि-अरुचि का पर्याप्त प्रभाव था, अस्तित्व के प्रश्न से यह पक्ष सम्वन्धित नहीं था।

विक्टोरिया काल में इस प्रकार की अभिवृत्ति को किसी गम्भीर खतरे का सामना नहीं करना पड़ा। लेकिन जैसे ही इस शताब्दी का अन्त हुआ सभी मानवीय पक्षों में एक क्रान्तिकारी आन्तरिक परिवर्तन घटित हो उठा। इंजिनों का आविष्कार हो चुका था और इसके स्थानगत दूरी को कम करने वाले पक्ष का उद्घाटन भी होने

वाला था। मोटरकार, मोटर लॉरी, पनडुब्बी, टैंक, हवाई जहाज विश्व को शान्ति तथा युद्ध दोनों ही दृष्टियों से एक नये युग में प्रवेश देने वाले थे। और इंगलैंड पर इस विकास का अत्यधिक प्रभाव पड़ने वाला था क्योंकि असम्पर्क की स्थिति से उसे जो लाभ प्राप्त थे वे समाप्त होने वाले थे। समुद्र पर अब केवल जहाजों का ही आधिपत्य नहीं रह गया था, हवाई जहाज किसी भी शान्तिपूर्ण द्वीप की हजारों वर्ष पुरानी नीरवता को भंग कर सकते थे। इस प्रकार की नयी परिस्थितियों में यूरोप की शक्ति के प्रति हमारा उपेक्षात्मक रवैया, तथा हमारा पूर्ण असैनिक जीवन, नयी आवश्यकताओं के अनुरूप सैन्य शक्ति में वृद्धि के प्रति उदासीनता—यदि यह सब इसी प्रकार चलता रहा तो हमारे अस्तित्व को एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

शान्ति के समय में भी बीसवीं शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों में मोटर-गाड़ी द्वारा सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में जो क्रान्ति हुई थी वैसी इससे पहले रेलों तथा मशीनों द्वारा भी सम्भव नहीं हो सकी थी। रेलों के युग में, जिसमें घोड़ा-गाड़ी तथा साइकिलों की यात्रा भी सम्मिलित है, स्थानीय तथा प्रान्तीय विभेद यद्यपि तेजी से विलीन हो रहे थे लेकिन कुल मिला कर इस समापन प्रक्रिया का क्षेत्र सीमित ही था। लेकिन नूतन परिस्थितियों में इंगलैंड ने एक विशाल अनियोजित उपनगरीय क्षेत्र का विकास कर डाला था। मोटर यातायात ने द्वीप के विकास पर राज्य के नियंत्रण की आवश्यकताओं को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से इस समस्या को दैवयोग तथा आवास निर्माता की शोषण वृत्ति के ही भरोसे छोड़ दिया गया। अतुलनीय गति से परिवर्तित हो रही परिस्थितियों के अनुरूप यह राजनैतिक समाज तुरन्त अपनी कार्यविधियों में परिवर्तन उत्पन्न नहीं कर सका था।

लेकिन इस नवीनतम युग के कुछ अच्छे पक्ष भी हैं। नई शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों में जो प्रगति हुई थी विशेष रूप से शिक्षा[१] तथा समाज सेवा के क्षेत्र में, वह मानवीय बुद्धि की क्षमताओं को देखते हुए पर्याप्त थी। जिस वर्ष महारानी विक्टोरिया का निधन हुआ था उसकी तुलना में सन् १९३९ में श्रमिक वर्ग की आर्थिक दशा कहीं अधिक अच्छी थी।

---

१ वाटरलू के युद्ध में विजय एटन के खेल के मैदानों में नहीं बल्कि इंगलैंड के हरे-भरे गांवों में प्राप्त की गई थी। १८ जून, १८१५, को जिन सैनिक पदाधिकारियों ने युद्ध में भाग लिया था, वे यद्यपि कम शिक्षित थे लेकिन उनमें देहात में पले ग्रामीण के सभी गुण विद्यमान थे। आज हम शिक्षित तथा नगरवासी हैं। आर. ए. एफ. के हवाबाज निस्सन्देह ग्रामीण वातावरण की उत्पत्ति नहीं हो सकते। यदि हम इस युद्ध में विजय प्राप्त करते हैं तो निस्सन्देह उसका श्रेय प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओं को ही होगा (१९४१)।

शान्ति एवं युद्ध दोनों ही स्थितियों में अब भावी इंगलैंड का स्वरूप किस प्रकार का होगा इस विषय में इतिहासकार सामान्यजन से अधिक कुछ भी कह पाने की स्थिति में नहीं है। और इस शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हुए हैं वे निस्सन्देह अब से कुछ ही समय बाद नितांत भिन्न दिखाई देने लगेंगे और इस प्रकार एक दूसरे ही ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के अंग बन जाएंगे। इसलिये इंगलैंड के सामाजिक इतिहास के समापन के लिये सबसे उपयुक्त स्थल महारानी विक्टोरिया का निधन तथा रेल युग की समाप्ति ही हो सकता है।
